कुर्आन का पैग़ाम

तफ़्सीर फ़ारूक़ी

कुर्आन मजीद की आसान हिन्दी तफ़्सीर या व्याख्या

भाग-4

सन्देश

मुफ़क्किरे इस्लाम ह़ज़रत मौलाना सय्यद

अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी (अ़ली मियाँ रह़०)

अनुवाद एवं व्याख्या

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

(अध्यक्ष, जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

जमअ़ीयत पयामे अम्न,

नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ–20 (यू0पी0) इण्डिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम– *तफ़्सीर फ़ारूक़ी (कुर्आन मजीद की आसान हिन्दी तफ़्सीर या व्याख्या)*

अनुवाद और व्याख्या– *मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी*

कम्पोज़ीटर– *इरफ़ान अहमद*

संस्करण– *तीसरा संस्करण*

पुस्तक संख्या– **3000**

वर्ष– **2018**

हदिया (मूल्य)– **600**

प्रकाशक– *जमअ़ीयत पयामे अम्न*

Writer **Mufti Mohd-Sarwar Farooqui Nadwi**

S. No. **3000**

Publisher: **Jamiat Payam-e-Amn**
Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India-20

Website. **www.islamicjpamn.com**

Mobile– **0091– 9919042879, 9984490150**

E–Mail– **ataullah2012@gmail.com**

मिलने के पते

1. मजलिसे तह़क़ीक़ात व नशरियात, नद्वतुल उ़लमा, पोस्ट बाक्स नं० 119 (लखनऊ) **(0522–2741529)**
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मुह़म्मद अ़ली रोड, भिन्डी बाज़ार, मुम्बई **(0522–2741539)**
3. अल् फ़ुरक़ान बुक डिपो, नज़ीराबाद-31 (लखनऊ) **(9936635816)**
4. सुब्हानिया बुक डिपो, नया मुह़ल्ला, जबलपुर, मध्य प्रदेश **(9424708020)**
5. सत्य फ़ाउन्डेशन 182 ग्रीन लैण्ड कैम्पस, पोखरपुर, कानपुर **(9935044343)**
6. मकतबः शबाब जदीद, नदवा रोड, लखनऊ **(9198621671)**

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

इस (तफ़्सीर फ़ारुक़ी भाग-4) में पारा नं० (12) सूरः अल् हूद आयत नं० (18) से पारा नं० (17) सूरः ह़ज आयत नं० (29) तक की पूरी तफ़्सीर है।

पवित्र क़ुर्आन को पाक साफ़ (वुज़ू करके) शुद्ध होकर आदर के साथ अ़मल की नियत से ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उच्चारण का भी ख़्याल रखें।

क़ुर्आन के व्याख्या की शुरुआ़त पेज नं० 22 से 579 तक है। उस से पहले विषय सूची और उ़लमा के संक्षिप्त लेख और प्राक्कथन है।

इस तफ़्सीर के भाग-एक में विश्व प्रसिद्ध उ़लमा के संक्षिप्त सन्देश जैसे-ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली ह़सनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी, मौलाना मुह़म्मद सालिम क़ासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुह़म्मद सई़दी मज़ाहिरी, मौलाना सई़दुर्रहमान आज़मी नदवी, मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रह़मान हिलाल उ़स्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुफ़्ती अ़तीक़ अह़मद क़ासमी, मौलाना ख़ालिद साह़ब ग़ाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल क़ादिर मज़ाहिरी, मौलाना अ़ब्दुल्लाह ह़सनी नदवी (रह़०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुह़ीबउल्लाह क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली आदि की तस्दीक़ मौजूद है और प्राक्कथन में क़ुर्आन का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है। इन सब का मुकम्मल लेख भाग-एक के अन्त में दिया गया।

दो शब्द

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

यह अनुवाद एवं व्याख्या इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान एवं दाअ़ी-ए-इस्लाम मुफ़स्सिरे क़ुर्आन 'ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' जो हिन्दी और अ़रबी दोनों भाषाओं का ज्ञान रखते हैं। इनकी दीनी शिक्षा क़ारी, आ़लिम, फ़ाज़िल व मुफ़्ती की है और संस्कृत से आचार्य हैं। जिनके क़लम से लगभग **200** से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिसमें उर्दू भाषा में लफ़्ज़ी (शाब्दिक) तर्जुमः और हिन्दी में तीस्वें पारः की तफ़्सीर और यह सात भागों में 'तफ़्सीर फ़ारूक़ी' क़ाबिले ज़िक्र है, जिसे हर तबक़े के लोगों ने इस की आसान भाषा की वजह से पसन्द किया, जो घरों और मस्जिदों में पढ़ी जाती है। जिसके कई एडीशन प्रकाशित करने का शर्फ़ ह़ासिल हो चुका है। इस के तर्जुमः व तफ़्सीर की मुख्य विशेषता इस तरह़ हैंः-

तर्जुमः की विशेषता-

इस के तजुर्मे में 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' का वह मक़्बूल तर्जुमः है जिसके **2016** तक बीस एडीशन से ज़्यादा छप चुके हैं, इसकी भाषा बहुत सरल है जिसको मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम, कम पढ़ा हो या ज़्यादा हर वर्ग आसानी से समझ लेता है।

तफ़्सीर की विशेषता-

(1) यह तफ़्सीर मुस्लिम हो या व ग़ैर दोनों को सामने रखते हुए आ़म बोलचाल की भाषा में लिखी गई है, ताकि कम पढ़े लिखे लोग भी इस से फ़ायदा उठा सकें।

(2) तफ़्सीर में ह़दीस और मोअ़तबर (अथैन्टिक) उलमा की तफ़्सीरों से ही फ़ायदा उठाया गया है।

(3) इस में रोज़ (प्रतिदिन) पढ़ने के ह़िसाब से लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः फिर अलग-अलग आयतों की तफ़्सीर बयान की गई है।

(4) इस में पहले पूरी सूरः का खुलासा (संक्षेप) और उसके विषय, फिर लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः उसके बाद हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर, जिसमें सबसे पहले उस आयत का शाने नुज़ूल (नाज़िल होने के वक़्त की ह़ालत) फिर उस आयत से सम्बन्धित ह़दीस, और मोअ़तबर उ़लमा की तफ़्सीर की रौशनी में तफ़्सीर, फिर मसायल, एह़काम, और साइंसी तह़क़ीक़ के साथ ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से होने वाले सवालों का बेहतर तरीक़े से जवाब और उस से मुतअ़ल्लिक़ फ़ज़ायल जो सह़ी ह़दीसों से साबित है ज़िक्र किया गया है।

नोट- इस तरह यह एक मुफीद तोहफ़ा तमाम इन्सानों की रहनुमाई के लिए पेश किया जाता है जिस पर चन्द मशहूर उ़ल्मा जैसे- ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली ह़सनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी, मौलाना मुह़म्मद सालिम क़ासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुह़म्मद सईद मज़ाहिरी, मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी नदवी, मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रह़मान हिलाल उ़स्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुफ़्ती अ़तीक़ अह़मद क़ासमी, मौलाना ख़ालिद साह़ब ग़ाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल क़ादिर मज़ाहिरी, मौलाना अ़ब्दुल्लाह ह़सनी नदवी (रह़०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुहीबउल्लाह क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली आदि की तस्दीक़ के प्रमाणित सन्देश संक्षेप में मौजूद हैं।

25 सितम्बर **2016** प्रकाशक

विषय सूची

विषय — पृष्ठ सं०

मुफ़क्किरे इस्लाम, 'हज़रत मौलाना सय्यद अबुल् हसन अ़ली नदवी' (रह०) के क़लम से 11

प्रख़्यात विश्व विद्धानों का इस तफ़्सीर पर संक्षिप्त लेख जैसे 13

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी, मौलाना मुहम्मद सालिम क़ासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुहम्मद सईदी मज़ाहिरी, मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी नदवी, मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रहमान हिलाल उ़स्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुफ़्ती अ़तीक़ अहमद क़ासमी, मौलाना ख़ालिद साहब ग़ाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल क़ादिर मज़ाहिरी, मौलाना अ़ब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुहीबउल्लाह क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली।

प्राक्कथन 19

विषय — पृष्ठ सं०

भाग-11
सूर-ए-हूद की व्याख्या
आयत नं० 18 से पूरी सूरः

अनुवाद *(आयत नं० 18 से 31 तक)* 23
व्याख्या *(आयत नं० 18 से 31 तक)* 24

अनुवाद *(आयत नं० 32 से 43 तक)* 28
व्याख्या *(आयत नं० 32 से 43 तक)* 29

अनुवाद *(आयत नं० 44 से 60 तक)* 32
व्याख्या *(आयत नं० 44 से 60 तक)* 33

अनुवाद *(आयत नं० 61 से 76 तक)* 38
व्याख्या *(आयत नं० 61 से 76 तक)* 39

अनुवाद *(आयत नं० 77 से 90 तक)* 44
व्याख्या *(आयत नं० 77 से 90 तक)* 45

अनुवाद *(आयत नं० 91 से 109 तक)* 50
व्याख्या *(आयत नं० 91 से 109 तक)* 51

अनुवाद *(आयत नं० 110 से 123 तक)* 56
व्याख्या *(आयत नं० 110 से 123 तक)* 57

विषय — पृष्ठ सं०

भाग-12
सूर-ए-यूसुफ़ की व्याख्या

तफ़्सीर सूरः यूसुफ़ 63
आयत के नाज़िल होने का ज़माना 63
हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का सपना 63

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 18 तक)* 66
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 18 तक)* 67

अनुवाद *(आयत नं० 19 से 32 तक)* 73
व्याख्या *(आयत नं० 19 से 32 तक)* 74

दोनों का दरवाज़े की तरफ़ दौड़ना 76
शहर की औ़रतों का लअ़न-तअ़न 81

अनुवाद *(आयत नं० 33 से 42 तक)* 84
व्याख्या *(आयत नं० 33 से 42 तक)* 85

हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की दुआ़ 85
जेल में क़ैदियों का ख़्वाब 87
मतलब बताने से पहले तौह़ीद की दअ़वत 88
दोनों क़ैदियों के सपने का निचोड़ 90
हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का जेल में रहना 90

विषय	पृष्ठ सं०
अनुवाद *(आयत नं० 43 से 53 तक)*	92
व्याख्या *(आयत नं० 43 से 53 तक)*	93
मिस्र के बादशाह का ख़्वाब	93
जेल के बाहर आने से इन्कार	94
हिक्मतें	96
अनुवाद *(आयत नं० 54 से 66 तक)*	98
व्याख्या *(आयत नं० 54 से 66 तक)*	99
बादशाह का आप को दोबारा ज़िम्मेदार बनाना	99
हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों का मिस्र आना	102
वतन की ओर वापसी	103
हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों का वादा	104
अनुवाद *(आयत नं० 67 से 79 तक)*	106
व्याख्या *(आयत नं० 67 से 79 तक)*	107
हज़रत याकूब (अ़लै०) का बेटों को वसीयत	107
हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का दोबारा मिस्र पहुँचना	108
बिन्यामीन के सामान से पैमाने का निकलना	110
कुछ सवालों के जवाबात	110
हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का दरख़्वास्त करना	111
अनुवाद *(आयत नं० 80 से 82 तक)*	113
व्याख्या *(आयत नं० 80 से 82 तक)*	114
हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों का मश्वरा	114
वालिद को चोरी का क़िस्सा बताना	116
हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों की माफ़ी	117
पूँजी क्या थी?	118
तक़्वा और सब्र की हक़ीक़त	119
मग़्फ़िरत की दुआ़	120
अनुवाद *(आयत नं० 93 से 111 तक)*	122
व्याख्या *(आयत नं० 93 से 111 तक)*	123
हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का कुर्ता और बीनाई	124
वालिदैन और भाईयों का सज्दः	125
सज्दः तअ़ज़ीमी	126
सपने के बारे में ज़रुरी मालूमात	127
कुछ ख़्वाबों की तअ़बीरें (मतलब)	129
दूध का सपना	129
नहर का सपना	129

विषय	पृष्ठ सं०
काली औ़रत का सपना	129
अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों पर शुक्र	130
इस्लाम पर मरने और नेक लोगों में शामिल रहने की दुआ़	130
हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की रिसालत	131
ख़ुलासा (संक्षेप)	132
हठधर्मियों का हाल	135
अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बुलाना	135
रसूल इन्सान ही थे	136
मुजरिमों को अ़ज़ाब	137
अ़क़्ल वालों के लिए नसीहत	138
भाग-13 सूर-ए-रअ़द की व्याख्या	
तफ़्सीर सूरः रअ़द	140
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 11 तक)*	141
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 11 तक)*	142
अल्लाह की निशानियाँ	144
अनुवाद *(आयत नं० 12 से 26 तक)*	148
व्याख्या *(आयत नं० 12 से 26 तक)*	149
अनुवाद *(आयत नं० 27 से 43 तक)*	155
व्याख्या *(आयत नं० 27 से 43 तक)*	157
भाग-14 सूर-ए-इब्राहीम की व्याख्या	
तफ़्सीर सूरः इब्राहीम	165
नाज़िल होने का ज़माना	165
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 12 तक)*	166
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 12 तक)*	167
अनुवाद *(आयत नं० 13 से 27 तक)*	173
व्याख्या *(आयत नं० 13 से 27 तक)*	174

विषय पृष्ठ सं०

अनुवाद *(आयत नं० 28 से 41 तक)* 180
व्याख्या *(आयत नं० 28 से 41 तक)* 181

अनुवाद *(आयत नं० 42 से 52 तक)* 186
व्याख्या *(आयत नं० 42 से 52 तक)* 186

भाग-15 सूर-ए-हिज्र की व्याख्या

तफ़्सीर सूरः हिज्र 191

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 25 तक)* 192
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 25 तक)* 193

अनुवाद *(आयत नं० 26 से 50 तक)* 199
व्याख्या *(आयत नं० 26 से 50 तक)* 200

अनुवाद *(आयत नं० 51 से 77 तक)* 203
व्याख्या *(आयत नं० 51 से 77 तक)* 204

हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को ख़ुशख़बरी 204

अनुवाद *(आयत नं० 78 से 99 तक)* 208
व्याख्या *(आयत नं० 78 से 99 तक)* 209

भाग-16 सूर-ए-नह़्ल की व्याख्या

तफ़्सीर सूरः नह़्ल 215

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 16 तक)* 216
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 16 तक)* 217

चौपाये अल्लाह तआ़ला का इनूआ़म हैं 219
ताज़ा गोश्त 222
समुद्री तिजारत 223

अनुवाद *(आयत नं० 17 से 32 तक)* 224
व्याख्या *(आयत नं० 17 से 32 तक)* 225

अनुवाद *(आयत नं० 33 से 50 तक)* 230
व्याख्या *(आयत नं० 33 से 50 तक)* 231

तमाम नबियों की दअ़वत 232

विषय पृष्ठ सं०

हिज़्रत करने वालों से वादा 233
जाफर बिन अबी तालिब की तक़्रीर 234
कुर्आन और बयान 235
मुन्किरीन-ए-ह़दीस की तर्दीद 235
कुर्आनी हुक्म और ह़दीस 236

अनुवाद *(आयत नं० 51 से 65 तक)* 239
व्याख्या *(आयत नं० 51 से 65 तक)* 240

अनुवाद *(आयत नं० 66 से 77 तक)* 245
व्याख्या *(आयत नं० 66 से 77 तक)* 246

अनुवाद *(आयत नं० 78 से 90 तक)* 252
व्याख्या *(आयत नं० 78 से 90 तक)* 253

अनुवाद *(आयत नं० 91 से 105 तक)* 258
व्याख्या *(आयत नं० 91 से 105 तक)* 259

अनुवाद *(आयत नं० 106 से 128 तक)* 264
व्याख्या *(आयत नं० 106 से 128 तक)* 266

भाग-17 सूर-ए-बनी इस्राईल की व्याख्या

तफ़्सीर सूरः बनी इस्राईल 275

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 15 तक)* 276
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 15 तक)* 277

बैतुल् मक़्दिस का सफ़र और इमामत 278
पचास नमाज़ें 279
सह़ीह़ बुख़ारी की तफ़्सील 280
ह़ज़रात अम्बिया (अ़लै०) से मुलाक़ात 281
अल् बैतुल् मअ़मूर और सिद्रतुल् मुन्तहा 282
पाँच नमाज़ें 283
नमाज़ के साथ और दो इनूआ़म 284
मेअ़राज में दीदारे इलाही 284
क़ुरैश का झुठलाना 285
बैतुल् मक़्दिस 285
मेअ़राज के सफ़र की चीज़ें 286
क़ब्र में नमाज़ पढ़ते हुए देखना 286

विषय	पृष्ठ सं०
होंठ कैंचियों से काटे जाना	287
अपने सीने को नाख़ून से छीलना	287
सूदख़ोरों की बद्हाली	287
खाल कैंचियों से काटे जाना	287
एक शैतान का पीछे लगना	288
फ़रिश्तों का पचना लगाने की ताकीद	288
मुजाहिदीन का सवाब	288
सर पत्थरों से कुचला जाना	288
ज़कात न देने वालों की सज़ा	289
सड़ा हुआ गोश्त खाने वाला	289
लकड़ियों का बड़ा गट्ठर	289
बैल का छोटे से सूराख़ में दाख़िल होना	289
जन्नत की ख़ुशबू	289
दोज़ख़ की आवाज़	290
बाबुल् हिफ़्ज़	290
पहले आसमान पर जहन्नम के दरोग़ा से मुलाक़ात	290
दूध, शहद और शराब	290
सिद्रतुल् मुन्तहा क्या है?	292
जन्नत और नहर कौसर	292
बुर्राक क्या और कैसा	292
बैतुल् मक़्दिस से आसमानों पर	293
हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से सवाल	293
हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और नमाज़	295
नमाज़	295
काफ़िरों का जवाब	296
बनी इस्राईल को बर्बाद करने वाले	299
अनुवाद *(आयत नं० 16 से 30 तक)*	305
व्याख्या *(आयत नं० 16 से 30 तक)*	306
वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म	308
माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक	311
माँ-बाप जन्नत या दोज़ख़ का ज़रिया	311
अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी	311
वालिद जन्नत के दरवाज़ों में से बेहतर दरवाज़ा है	312
बाप की दुआ़ ज़रूर क़ुबूल होती है	312
माँ-बाप के एह़तिराम की मिसालें	312
रिज़्क़ और उ़म्र का बढ़ना	313
माँ-बाप के लिए मेह़नत	313

विषय	पृष्ठ सं०
माँ-बाप की ख़िद्मत नफ़्ली जिहाद से अफ़्ज़ल	314
हिजरत की बैअ़त के लिए वालिदैन को नसीह़त	314
माँ-बाप की ख़िद्मत और नफ़्ली ह़ज व उ़मरह	315
वालिदैन को सताने की सज़ा	316
वालिदैन की नाफ़रमानी बड़े गुनाहों में से है	316
ख़िद्मत पर जन्नत	317
माँ-बाप की तरफ़ घूर कर देखना	317
माँ-बाप को गाली देना	318
माँ-बाप के लिए दुआ़ और इस्तिग़्फ़ार	318
माँ-बाप के लिए दुआ़-ए-मग़्फ़िरत	318
रिश्तेदारों पर ख़र्च करने का हुक्म	319
अनुवाद *(आयत नं० 31 से 44 तक)*	323
व्याख्या *(आयत नं० 31 से 44 तक)*	324
औलाद को क़त्ल न करो	324
ज़मीन पर इतराना	330
अंगों का ज़िना	331
अनुवाद *(आयत नं० 45 से 58 तक)*	336
व्याख्या *(आयत नं० 45 से 58 तक)*	337
अनुवाद *(आयत नं० 59 से 70 तक)*	342
व्याख्या *(आयत नं० 59 से 70 तक)*	343
अनुवाद *(आयत नं० 71 से 85 तक)*	348
व्याख्या *(आयत नं० 71 से 85 तक)*	349
अनुवाद *(आयत नं० 86 से 99 तक)*	355
व्याख्या *(आयत नं० 86 से 99 तक)*	356
कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की माँग	357
अनुवाद *(आयत नं० 100 से 111 तक)*	361
व्याख्या *(आयत नं० 100 से 111 तक)*	362

भाग-18
सूर-ए-कहफ़ की व्याख्या

तफ़्सीर सूरः कहफ़	368
अनुवाद *(आयत नं० 1 से 16 तक)*	369
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 16 तक)*	370

विषय	पृष्ठ सं०
अस्ह़ाबे कहफ़ और अस्ह़ाबे रक़ीम	371
अस्ह़ाबे कहफ़	372
अस्ह़ाबे कहफ़ का ग़ार (गुफ़ा) में दाख़िल होना	373
अस्ह़ाबे कहफ़ का तफ़्सीली वाक़िआ़	374
अस्ह़ाबे कहफ़ की बातचीत	375
पूरी क़ौम को छोड़ दिया	375
आपसी मश्वरह से ग़ार में दाख़िल होना	376
अनुवाद *(आयत नं० 17 से 28 तक)*	377
व्याख्या *(आयत नं० 17 से 28 तक)*	378
ग़ार (गुफ़ा) के ह़ालात	378
खाना लाने के लिए शहर भेजना	381
अस्ह़ाबे कहफ़ की तअ़दाद	385
वादा करते वक़्त इन्शाअल्लाह	386
अस्ह़ाबे कहफ़ का ज़माना	389
रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ज़िक्र करने वालों के साथ बैठने का हुक्म	390
अनुवाद *(आयत नं० 29 से 44 तक)*	392
व्याख्या *(आयत नं० 29 से 44 तक)*	393
जन्नत के लिबास और ज़ेवर का ज़िक्र	395
दो शख़्सों की मिसाल	396
अनुवाद *(आयत नं० 45 से 53 तक)*	400
व्याख्या *(आयत नं० 45 से 53 तक)*	401
क़ियामत में मुजरिमीन की ह़ैरत	401
आदम को सज्दः	404
अनुवाद *(आयत नं० 54 से 78 तक)*	407
व्याख्या *(आयत नं० 54 से 78 तक)*	409
झगड़ालू हुज्जत बाज़ और ज़ालिम	409
ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और ह़ज़रत ख़िज़िर का वाक़िआ़	412
ह़ज़रत ख़िज़िर से मुलाक़ात	414
ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का वादा	415
ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का एतिराज़	415
एक लड़के का क़त्ल	416
आपस में जुदाई	416

विषय	पृष्ठ सं०
अनुवाद *(आयत नं० 79 से 101 तक)*	418
व्याख्या *(आयत नं० 79 से 101 तक)*	419
ह़ज़रत ख़िज़िर का ह़क़ीक़त बताना	419
कश्ती (नाव) का तख़्ता	420
लड़के का क़त्ल	420
दीवार को सीधी करना	420
अहम बातें	421
जुल्क़रनैन के लिए दीवार	428
जुल्क़रनैन क्यों कहा जाता था	429
पश्चिम का सफ़र	430
पूर्वी दिशा का सफ़र	431
तीसरा सफ़र	432
याजूज-माजूज से ह़िफ़ाज़त के लिए दीवार	432
दीवार की तअ़मीर	432
याजूज-माजूज का निकलना	434
याजूज-माजूज का फ़साद	435
याजूज-माजूज की बीमारी	435
ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) का ज़मीन पर उतरना	436
मुसलमानों की रुह़	436
क़ियामत के क़रीब	436
याजूज-माजूज की तअ़दाद	437
एक ह़ज़ार में एक जन्नती होगा	437
सद्दे जुल्क़रनैन	438
आदम की औलाद	439
अनुवाद *(आयत नं० 102 से 110 तक)*	440
व्याख्या *(आयत नं० 102 से 110 तक)*	440
काफ़िर के लिए ख़सारा और अ़मल बेवज़न	441
हर तरह़ की साह़िबी का ख़ात्मा	442
ईमान और नेक आ़माल वालों का ठिकाना	443
अल्लाह तआ़ला के गुण	444
इन्सान होना रिसालत व नुबूव्वत के ख़िलाफ़ नहीं	445
अपने रब की अ़िबादत	445

भाग-19
सूर-ए-मरयम की व्याख्या

तफ़्सीर सूरः मरयम 448

विषय पृष्ठ सं०

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 26 तक)* 449
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 26 तक)* 450

अनुवाद *(आयत नं० 27 से 50 तक)* 457
व्याख्या *(आयत नं० 27 से 50 तक)* 458

अनुवाद *(आयत नं० 51 से 70 तक)* 465
व्याख्या *(आयत नं० 51 से 70 तक)* 466

अनुवाद *(आयत नं० 71 से 98 तक)* 472
व्याख्या *(आयत नं० 71 से 98 तक)* 473

भाग-20 सूर-ए-ताहा की व्याख्या

तफ़्सीर सूरः ताहा 481

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 24 तक)* 482
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 24 तक)* 483

अनुवाद *(आयत नं० 25 से 48 तक)* 488
व्याख्या *(आयत नं० 25 से 48 तक)* 489

अनुवाद *(आयत नं० 49 से 76 तक)* 494
व्याख्या *(आयत नं० 49 से 76 तक)* 495

अनुवाद *(आयत नं० 77 से 94 तक)* 501
व्याख्या *(आयत नं० 77 से 94 तक)* 502

अनुवाद *(आयत नं० 95 से 114 तक)* 506
व्याख्या *(आयत नं० 95 से 114 तक)* 507

अनुवाद *(आयत नं० 115 से 135 तक)* 512
व्याख्या *(आयत नं० 115 से 135 तक)* 513

भाग-21 सूर-ए-अम्बिया की व्याख्या

तफ़्सीर सूरः अम्बिया 521

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 20 तक)* 522
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 20 तक)* 523

विषय पृष्ठ सं०

अनुवाद *(आयत नं० 21 से 41 तक)* 528
व्याख्या *(आयत नं० 21 से 41 तक)* 529

अनुवाद *(आयत नं० 42 से 70 तक)* 535
व्याख्या *(आयत नं० 42 से 70 तक)* 536

अनुवाद *(आयत नं० 71 से 88 तक)* 542
व्याख्या *(आयत नं० 71 से 88 तक)* 543

अनुवाद *(आयत नं० 89 से 112 तक)* 549
व्याख्या *(आयत नं० 89 से 112 तक)* 550

भाग-22 सूर-ए-ह़ज की व्याख्या

तफ़्सीर सूरः ह़ज 557

अनुवाद *(आयत नं० 1 से 13 तक)* 558
व्याख्या *(आयत नं० 1 से 13 तक)* 559

अनुवाद *(आयत नं० 14 से 29 तक)* 564
व्याख्या *(आयत नं० 14 से 29 तक)* 565

मस्जिदे ह़राम में अ़िबादत से रोकना 568
ह़ज के मौसम में किराया वसूलना 569
गुनाह के इरादे पर पकड़ 570
ह़रम में गुनाह 570
कअ़बः की तअ़मीर (निर्माण) 571
क़ुर्बानी का गोश्त 576
कअ़बः पर कोई ग़ालिब (प्रभावी) नहीं हो सकता 578
ह़ज के फ़रायज़ 578

सन्देश

विश्व इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान तथा प्रसिद्ध श्रेष्ठ विचारक (मुफ़क्किरे इस्लाम)

ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी (रह०) के शुभ क़लम से-

अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन, वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सय्यिदिल्मुर्सलीन, मुह़म्मदिन व अ़ला आलिही व अस्ह़ाबिही अज्मअ़ीन

मुसलमानों के ज़िन्दग़ी की तमाम अ़िबादतों में नमाज़ ही वह अहम और बुनियादी रूकून है जिसे दिन में पाँच बार फ़र्ज़ (अनिवार्य) किया गया है। अल्लाह का बन्दा जब अपने पालनहार के सामने बन्दगी के लिए खड़ा होता है तो सबसे पहले उस ज़ात की तअ़रीफ़ और बेशुमार नेअ़मतों का शुक्रिया अदा करता है जो उसके पालनहार ने उस पर किये हैं, यह वह परवरदिगार है जो केवल मुसलमानों का पालने वाला ही नहीं बल्कि तमाम मख़्लूक़ को ज़िन्दगी और रिज़्क़ देने वाला और सबसे ज़्यादा उन पर रह़म करने वाला है। उसी ने तमाम मख़्लूक़ को अपनी क़ुद्रत से पैदा किया और उसी का ह़ुक्म सब पर जारी होता है।

इस दुनिया की हर चीज़ उसी की मुह़ताज है,वह एक है उसका कोई साझीदार नहीं,वही सीधी राह दिखाता है। कोई मुसलमान जब भी नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो वह सूरः फ़ातिह़ा को बार-बार पढ़ता और सुनता है कि इसमें पूरे क़ुर्आन मजीद के पैग़ाम की रुह़ और ख़ुलासा है। इस सूरः के अन्दर तमाम इन्सानी तब्क़ात की ज़रूरतों और ख़्वाहिशों के इख़्तिलाफ़ के बावजूद हर गिरोह और शख़्स की तस्कीन (तसल्ली) का सामान मौजूद है। इस मुख़्तसर सूरः में ज़िन्दगी का पैग़ाम है, उम्मीद और ख़ुशख़बरी है उस इन्सान के लिए जिसको हर तरफ़ से धुत्कारा जाता है, हर तरफ़ से तक्लीफ़ों और आ़ज़्माइशों के तूफ़ान में जो घिरा हुआ है। माल, कुव्वत, मन्सब और सेहत इसका साथ छोड़ देते हैं। मह़बूबतरीन औलाद भी काम नहीं आती। ऐसा कमज़ोर व मुह़ताज इन्सान सूरः फ़ातिह़ा पढ़ कर अपने दिली एह़सासात व जज़बात की तर्जुमानी करता है, वह उस रब से मदद माँगता है जो तमाम मख़्लूक़ का पालनहार है। जो रोज़े जज़ा का मालिक है। वही अ़िबादत का ह़क़्दार है, वही सीधी राह दिखाता है।

जहाँ तक मुसलमानों का तअ़ल्लुक़ है उनके बच्चों और नई नस्ल के लिए और दीनी मर्क़ज़ों के लिए और मदारिस और फ़ायदे उठाने वालों के लिए, क़दीम अर्सा से उर्दू में इस्लाम के मबादी व तअ़लीमात से वाक़िफ़ कराने के लिए बहुत सी किताबें और रिसाले लिखे गये, जिनसे बहुत फ़ायदा पहुँचा। जब तक फ़ारसी का रिवाज था 'माला बुद्दमिन्हु' जैसी किताबें लिखी गईं फिर 'तअ़लीमुल् इस्लाम' के नाम से

कई मुस्तनद उ़ल्मा ने बहुत सी कुतुब व रसायल लिखे जो इब्तिदाई मदारिस में और कम पढ़े लिखे ह़ल्क़ों में रायज और मक़्बूल हैं, और उनसे हज़ारों बल्कि लाखों बच्चों और कम इस्तेअ़दाद के लोगों ने फ़ायदा उठाया, और दीन का इल्म मालूम करने और उन पर चलने का तरीक़ा सिखाया, और मुस्लिम दाअ़ीयाने इस्लाम की कोशिश और ख़ुद फ़ित्रते सलीम के तक़ाज़ा और हिदायते रब्बानी से हिन्दुस्तान की ग़ैर मुस्लिम आबादी और हमारे हमवतन पड़ोसियों में से हर इलाक़े में बहुत सी जगह सैकड़ों की तअ़दाद में और बहुत सी जगह हज़ारों की तअ़दाद, और बाज़ जगह गाँव के गाँव और इलाक़े में अपने इरादा व अख़्तियार और अपने क़ल्बो इन्साफ़ से दीने इस्लाम को क़ुबूल किया।

वक़्त की एक अहम ज़रूरत थी जिसको अ़ज़ीज़ुल क़द्र 'मोलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' ने अन्जाम दिया और वक़्त की एक ज़रूरत और दीन की तफ़्हीम व तब्लीग़ व तर्बियत का एक मुतालबा और तक़ाज़ा पूरा किया। इससे पहले बहुत से किताबचे इनके क़लम से हिन्दी में आ चुके हैं जिनसे हमारे ग़ैर मुस्लिम भाईयों को ख़ासतौर से इस्लाम के बारे में मुफ़ीद मालूमात ह़ासिल हुई।

इस बात की बड़ी ज़रूरत है कि आसान हिन्दी ज़बान में ऐसी किताबें बकस्रत तैयार की जाएँ, ताकि इस मुल्क में सदियों से रहने वाले शहरी एक दूसरे के मज़हब,अक़ायद,तहज़ीब व तारीख़ से वाक़िफ़ हों, जिससे ग़लतफ़हमियाँ दूर हों और प्रेम व मुह़ब्बत और भाईचारगी में इज़ाफ़ा हो।

इस में मुसन्निफ़ ने पहले क़ुर्आन मजीद का तआ़र्रुफ़ इख़्तिसार से कराया है और बताया है कि क़ुर्आन ही एक ऐसी मह़फ़ूज़तरीन किताब है जो हर प्रकार की तहरीफ़ व तब्दीली से पाक है। जिसे अल्लाह तआ़ला ने इस क़ुर्आन की ह़िफ़ाज़त का ख़ुद वादा अपने ज़िम्मे लिया है। मुसन्निफ़ ने इन्सानी ज़िन्दगी से उसका तअ़ल्लुक़, फिर सूरः के तआ़र्रुफ़ के साथ उसके मफ़्हूम और उसकी तश्रीह़ की है, उम्मीद है कि यह मुफ़ीद होगा। अल्लाह पाक अ़ज़ीज़ेग्रामी की इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए।

अबुल ह़सन अ़ली नदवी

18 जमादिल् अव्वल **1419** हि०

नोटः- अल्ह़म्दुलिल्लाह क़ुर्आन मजीद के काम को मैंने ह़ज़रत मौलाना के मश्वरह से **1996** ई० में ही शुरु कर दिया था और आप की ज़िन्दगी में सूरः फ़ातिह़ा और तीस्वें पारे की तफ़्सीर छप चुकी थी। ऊपर की तह़रीर ह़ज़रत मौलाना ने उसी के मुक़द्दमे में यह दुआ़इया कलिमात तह़रीर फ़रमाये थे, जिसे शुरु में दर्ज किया गया है और बाक़ी उ़ल्मा की तहरीरें संक्षेप में दी गई हैं।

प्रख़्यात विश्व विद्धानों का इस तफ़्सीर पर संक्षिप्त लेख

तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं और दुरुद व सलाम की बारिश हो मोह़सिने आ़ज़म सय्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर, जिन्होंने क़ुर्आन मजीद की तअ़लीम दी और अल्लाह की रह़मतें नाज़िल हों तमाम सह़ाब-ए-किराम व आज तक के रावियों और उम्मत के उ़ल्मा-ए-किराम पर जिन्होंने क़ुर्आन करीम की तअ़लीम को अगली नस्ल तक मुन्तक़िल किया।

अल्लाह तआ़ला की मुझ पर बेशुमार नेअ़मतें हैं जिन में सब से बड़ी नेअ़मत यह है कि उस ने क़ुर्आन मजीद के समझने, सीखने, पढ़ने और लिखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई।

अल्ह़म्दु लिल्लाह "ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी" (रह़०) के मशवरे से मैंने 1996 ई० में ही क़ुर्आन मजीद का काम शुरु कर दिया था और लगभग 18 साल से इस काम में मुसल्सल मश्ग़ूल हूँ।

इस में सबसे पहले सूरः फ़ातिह़ा की तफ़्सीर प्रकाशित की गई, फिर तीस्वें पारे के अलग-अलग सूरतों की तफ़्सीर, फिर तीस्वें पारे की मुकम्मल तफ़्सीर, फिर पूरे क़ुर्आन मजीद का हिन्दी अनुवाद "क़ुर्आन का पैग़ाम" नाम से प्रकाशित हुआ, उसके बाद जैसे-जैसे तफ़्सीर का काम होता रहा, एक-एक भाग "तफ़्सीर फ़ारुक़ी" के नाम से प्रकाशित किया जाता रहा, जिस पर विश्व प्रसिद्ध क़ुर्आनी उलूम के माहिरीन से मुफ़ीद मश्वरे लिये जाते रहे और नाचीज़ की दरख़्वास्त पर वह अपने सन्देश से ह़िम्मत अफ़्ज़ाई भी फ़रमाते रहे।

अब जबकि अल्ह़म्दु लिल्लाह किसी ह़द तक तफ़्सीर का काम पाँच भागों में आने वाला है, इसलिए हम अपने असातिज़ा व मुह़सिनों के पैग़ामात को भाग पाँच में मुकम्मल तौर से, जो अलग-अलग भागों पर अलग-अलग तारीख़ों में लिखे गये थे, उसे भी शामिल कर रहे हैं, जिस से मुतालअ़ करने वालों को रहनुमाई भी होगी और हमारे सभी मुह़सिनों को उसका अ़ज्र भी मिलेगा।

चूंकि पैग़ामात की सूची लम्बी है इसलिए शुरु में केवल "ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अली ह़सनी नदवी" (रह़०) के सन्देश को पूरा शामिल करने के बाद हर एक के सन्देश से कुछ पंक्ति दर्ज की गई है। उस के बाद सभी बुज़ुर्गों के सन्देश भाग-एक के आख़िर में मुकम्मल तौर से दिये गये हैं जिस से मुतालअ़ करने वाले मुस्तफ़ीद हो सकते हैं।

यहाँ केवल नाम और उनके सन्देश की एक पंक्ति दर्ज की जाती है, जिससे इस की अहमियत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। जैसे-

(1) इस्लामी जगत के प्रख़्यात विद्वान एवं श्रेष्ठ विचारक ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी मद्दज़िल्लहुल्आ़ली के क़लम से-

'नाज़िम,' दारुल् उलूम, नदवतुल उल्मा, लखनऊ, व 'अध्यक्ष,' मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड (इण्डिया)

"हमारे अज़ीज़ 'मौलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' जो एक फ़ाज़िल शख़्स और अ़रबी व हिन्दी दोनों से अच्छी वाक़िफ़यत रखने वाले हैं, मेरे सामने इस वक़्त इन्हीं का हिन्दी तर्जुमः व तफ़्सीर क़ुर्आन है जिसको इन्होंने बड़ी मेह़नत व क़ाबिलियत से तैयार किया है।

उम्मीद है कि सारे मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम भाई जो हिन्दी ज़बान ही के ज़रिये ज़्यादा बेहतर समझ सकते हैं, इस तर्जुमे व तफ़्सीर से सह़ी फ़ायदा उठाएँगे।" मुसलमान ह़ज़रात तो अ़मल करने के लिए और

उसकी रहनुमाई में अपनी ज़िन्दगी संवारने के लिए और ग़ैर मुस्लिम भाई इस्लाम और क़ुर्आन की सही हक़ीक़त और तालीमात से वाक़िफ़यत हासिल करने के लिए। मेरी दुआ है कि यह तफ़्सीर मुफ़ीद और कामियाब साबित हो।

(2) इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी मद्दज़िल्लहुल्अ़ाली के क़लम से-

मुहतमिम, दारुल उलूम देवबन्द

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी के हिन्दी तर्जुमे पर मुल्क के मुतअ़द्दिद अकाबिर अहले इ़ल्म ने गहरी नज़र से तर्जुमः को देखकर अपनी पसन्दीदगी का इ़ज़्हार भी किया है, इसलिए उम्मीद है कि यह तर्जुमः न सिर्फ़ हिन्दीदाँ मुसलमानों के लिए; बल्कि उन बिरादराने वतन के लिए भी "क़ुर्आन के पैग़ाम" को समझने में मदद देगा, जो संजीदा और इन्साफ़ पसन्द हैं और क़ुर्आन पाक के पैग़ाम को समझना चाहते हैं। अल्लाह तआ़ला इन की ख़िद्मत को क़ुबूल फ़रमाए और मज़ीद दीनी ख़िद्मत की तौफ़ीक़ बख़्शे।

(3) इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद सालिम क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

मोहतमिम, "दारुल् उलूम वक़्फ़", देवबन्द व उपाध्यक्ष मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड इण्डिया

"पेशे नज़र तफ़्सीर "क़ुर्आन का पैग़ाम, "तफ़्सीर फ़ारूक़ी" बज़बान हिन्दी और इस तफ़्सीर के ज़रिये दअ़वत "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी" ने इ़ल्मी ज़ौक़-ए-सलीम, वक़ीअ़ दीनी सलाह़ियत, वसीअ़ मुतअ़ला और उ़लूमे क़ुर्आनी से इस्तिफ़ादह की राह अ़वाम व ख़वास के लिए खोल दी है।

उम्मीद है कि यह तफ़्सीर मुवल्लिफ़ीन, मुसन्निफ़ीन, मुह़क़्क़िक़ीन, मुक़र्रिरीन और मुदर्रिसीन के लिए एक क़ीमती इ़ल्मी तोह़फ़ा साबित होगी"।

(4) प्रख्यात विद्वान ह़ज़रत मौलाना सय्यद अरशद मद्नी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

उस्ताज़ ह़दीस, दारुल उ़लूम, देवबन्द व अध्यक्ष- जमअ़ीयतुल् उ़लम-ए-हिन्द (भारत)

"अब जबकि हिन्दी भाषा हमारे मुल्क की सरकारी भाषा है और उम्मत का एक बहुत बड़ा तब्क़ा उर्दू से दूर है। इस बात की सख़्त ज़रुरत है कि इस्लामी उ़लूम को हिन्दी भाषा में भी किया जाए।

यह बात क़ाबिले क़द्र है कि "मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी साह़ब" ने इस ज़रुरत को मह़सूस किया और ह़ज़रत थानवी (रह़०) के तर्जुमे को सामने रखते हुए हिन्दी भाषा में क़ुर्आन शरीफ़ का तर्जुमः व तफ़्सीर किया है, अगरचे यह फ़क़ीर अपनी मस्रूफ़ियत की वजह से इसको एक-एक शब्द नहीं देख सका, लेकिन ह़ज़रत थानवी (रह़०) के तर्जुमे को सामने रखना इस तर्जुमे व तफ़्सीर की सिक़ाहत (प्रमाण) के लिए काफ़ी है"।

(5) प्रख़्यात विद्वान ह़ज़रत मौलाना मुहम्मद सईदी मज़ाहिरी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

नाज़िम व मुतवल्ली मदरसा मज़ाहिरुल् उ़लूम (वक़्फ़) सहारनपुर (यू०पी०) इण्डिया

"मुझे यह मालूम होकर ख़ुशी हुई कि दारुल् उलूम नद्वतुल् उ़ल्मा, लखनऊ के एक आ़लिमे दीन "जनाब मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी" ग़ैर मुस्लिमों में दआ़वत व तब्लीग़ के लिए कोशाँ और फ़िक्रमन्द हैं, इस सिल्सिले में उन्होंने मुख़्तलिफ़ किताबें और किताब्चे भी मुरत्तब व शाया किये हैं।

इसी तरह़ उन्होंने क़ुर्आन करीम के दआ़वती उस्लूब को मद्देनज़र रखते हुए हिन्दी ज़बान में "तफ़्सीर फ़ारुक़ी" के नाम से बाबरकत सिल्सिला शुरु किया है, जिस का भाग एक मेरे पास बग़र्ज़ तक़रीज़ पहुँची है। अल्लाह तआ़ला मौलाना मोह़रत की इस कोशिश व काविश को शर्फ़ क़ुबूल और मक़ामे क़ुबूलियत अ़ता फ़रमाए"।

(6) प्रख्यात विद्वान तथा श्रेष्ठ साहित्यकार ह़ज़रत मौलाना सअ़ीदुर्रह़मान आज़मी नदवी मद्दज़िल्लहुल्आ़ली के क़लम से-

मुहतमिम- दारुल् उलूम नद्वतुल उ़ल्मा, लखनऊ व चान्सलर- इन्टीग्रल यूनिर्वसिटी, लखनऊ

"हमारे इस मुल्क में हिन्दी ज़बान में क़ुर्आन करीम के तर्जुमे मुख़्तलिफ़ इदारों और शख़्सियात की तरफ़ से शाए (प्रकाशित) हो कर मक़्बूल हो चुके हैं।

"लेकिन अभी तक किसी ऐसे आ़लिमे दीन की तरफ़ से जिसको हिन्दी ज़बान पर पूरी तरह़ उबूर ह़ासिल हो और वह अ़रबी ज़बान की रुह़ को समझ कर हिन्दी ज़बान में मुन्तक़िल करने की भरपूर सलाह़ियत (योग्यता) रखता हो, कोई काम न हो सका था"।

हमें इस बात का एतिराफ़ करने में निहायत ख़ुशी हो रही है कि हमारे ह़लक़-ए-नद्वतुल् उ़लमा की तरफ़ से यहाँ के आ़लिमे दीन 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' जो अ़रबी, उर्दू, हिन्दी के माहिर मायानाज़ अदीब (साहित्यकार) आ़लिम और सह़ाफ़ी (पत्रकार) क़ुर्आन करीम का हिन्दी ज़बान में एक निहायत ही क़ाबिले उसूक और अ़रबी ज़बान की रुह़ से क़रीब तर हिन्दी तर्जुमः व तफ़्सीर पेश कर रहे हैं।

(7) प्रख़्यात इस्लामी विश्व विद्वान ह़ज़रत मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी मद्दज़िल्लहुल आ़ली के क़लम से-

नाज़िम अल् मअ़ह्दुल् आ़ली इस्लामी ह़ैदराबाद व जनरल सेक्रेट्री इस्लामिक फ़िक़्ः अकेडमी, इण्डिया व सेकेट्री आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड

क़ुर्आन को एक पैग़ाम की शक्ल में, दआ़वती उस्लूब और आसान अन्दाज़ में पेश करने की ज़रुरत थी, चुनाँचे मुह़िब्बी फ़िल्लाह जनाब 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी' (सदर जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ) ने इसी अन्दाज़ में क़ुर्आन पाक के तर्जुमे व तश्रीह़ की कामियाब कोशिश की है।

इस तफ़्सीर में सब से पहले "सूरः का तआ़र्रुफ़" के उ़न्वान (शीर्षक) से हर रुकूअ़ का ख़ुलासा पेश किया है, फिर आयतों के तर्जुमे और हर आयत के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीर, अस्बाबे नुज़ूल, फ़ज़ीलत, ज़रुरी मसायल और आयत के पैग़ाम को बयान किया गया है। तफ़्सीर के दौरान ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ीअ़ साह़ब (रह़०) की "मआ़रिफ़ुल् क़ुर्आन" के अ़लावा अस्लाफ़ की मुतअ़द्दिद क़ुतुब तफ़्सीर से इस्तिफ़ादा

हैं। एक ख़ास बात इस तफ़्सीर की यह है कि हर आयतों के अलग-अलग नम्बर डाल कर आयतों की तश्रीह़ की गई है, ताकि लोग थोड़ा-थोड़ा वक़्त निकाल कर आसानी के साथ फ़ायदा उठा सकें और तल्बा व तालिबात भी अलग-अलग सबक़ के तौर पर इसे पढ़ सकें।

(8) ह़ज़रत मौलाना सय्यद वाज़ेह़ रशीद ह़सनी नदवी मद्दज़िल्लहुल्आ़ली के क़लम से-

(शिक्षा महासचिव (मुअतमद तअ़लीम) दारुल् उलूम, नदवतुल् उलमा, लखनऊ)

'मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब' जो आ़लिमे दीन होने के साथ-साथ हिन्दी के भी सनद याफ़्ता आ़लिम हैं। मौलाना सरवर साह़ब बहुत सी हिन्दी किताबों के मुसन्निफ़ हैं, और इससे पहले बहुत सी किताबों के तर्जुमे भी कर चुके हैं और अब तफ़्सीर का काम भी पूरा कर चुके हैं। अल्लाह तआ़ला इस कोशिश को क़बूल फ़रमाए और इसको क़ुर्आन फ़हमी का ज़रिया बनाए और हिदायत के मिलने का उनवान बनाए।

(9) ह़ज़रत मौलाना अब्दुल् क़ादिर साह़ब नदवी मज़ाहिरी गुजराती के क़लम से-

नायब मुहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उ़लमा, लखनऊ

हमारे अ़ज़ीज़े गिरामी 'मुफ़्ती मौलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' ने जो नदवा से सनद याफ़्ता होने के साथ हिन्दी से भी वाक़िफ़ हैं, वाक़िफ़ ही नहीं बल्कि मुसल्सल इस तरह के कामों में लगे रहने की वज़ह से अ़वाम में समझी जाने वाली हिन्दी जो हिन्दुस्तानी ज़बान है उससे भी वाक़िफ़ हैं इन्होंने इस काम को अपने ज़िम्मे लिया है और एक हद तक उसको पाये तक्मील तक पहुँचा कर इस के चार ह़िस्से शाए भी किया और अब पूरे क़ुर्आन की तफ़्सीर शाया करने जा रहे हैं जिस पर वह मुबारकबाद के मुस्तह़िक़ हैं।

(10) मुफ़स्सिरे क़ुर्आन ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती फ़ुज़ैलुर्रह़मान हिलाल उ़स्मानी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

रुक्न तासीसी (फ़ाउन्ड मेम्बर) आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड व सदर-दारुस्सलाम इस्लामी मर्कज़, मलियर कोटला पंजाब, अल् हिन्द

यह नाचीज़ "मोह़तरम मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी साह़ब" को इस अ़ज़ीम ख़िद्मत पर दिली मुबारकबाद पेश करते हुए उम्मीद रखता हूँ कि इन्शाअल्लाह इन की इस ख़िद्मत से हिन्दी जानने वाले तब्क़े को ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा पहुँचेगा।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि मौलाना की यह ख़िद्मते शर्फ़ क़ुबूलियत ह़ासिल करे।

(11) ह़ज़रत मौलाना सय्यद अब्दुल्लाह ह़सनी नदवी (रह़०) के क़लम से-

भूतपूर्व सहसम्पादक 'अर्राइद' व उस्तादे ह़दीस, दारूल उलूम नदवतुल उलमा (लखनऊ)

"हिन्दी में तर्जुमें की बहुत कमी थी, अगर तर्जुमें कुछ हुए भी तो उन में क़ुर्आनी तर्जुमें के आदाब का पूरा लिहाज अक्सर तर्जुमे करने वालों ने नहीं रखा, ज़रूरत थी कि कोई अच्छा हिन्दीदाँ जो अ़रबी से भी वाक़िफ़ हो इस काम को अन्जाम देता।

बड़ी ख़ुशी की बात है कि 'दारुल उलूम नदवतुल उलमा' के फ़ाज़िल "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी

साह़ब नदवी" ने मौलाना फ़तेह़ मुह़म्मद ख़ाँ साह़ब जालन्धरी के तर्जुमे को सामने रखते हुए हिन्दी में तर्जुमानी की कोशिश की है। अल्लाह तआ़ला इस तर्जुमानी व तफ़्सीर को क़बूल फ़रमाये और तमाम गुमराह लोगों के लिए इसको हिदायत का ज़रिया बनाए"।

(12) ह़ज़रत मौलाना शम्सुल ह़क़ साह़ब नदवी मद्दज़िल्लहुल्आ़ली

(प्रधान सम्पादक, तअ़मीर-ए-ह़यात व उस्ताज़ दारुल उ़लूम, नद्वतुल उ़ल्मा, लखनऊ)

हमें निहायत ख़ुशी व मसर्रत है कि नद्वतुल उ़ल्मा जिसकी बुनियाद ही इस पर पड़ी थी कि ह़ालात के रुख़ और माह़ौल को सामने रखकर काम किया जाए और उसके फ़ाज़िलों को वक़्त की ज़बान में बात करने का सलीक़ा सिखाया जाए ताकि वह दीन की ख़िद्मत का ह़क़ अदा कर सकें। इसके एक फ़ाज़िल मौलाना मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी ने अच्छी आसान हिन्दी ज़बान में कुर्आन करीम का तर्जुमः कर दिया है जो हमारी नई नस्ल के लिए ज़रुरी है और बिरादराने वतन तक, जिसकी रौशनी पहुँचाने का भी ज़रिया है। हमारी दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला इससे ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए।

(13) ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ज़करिया नदवी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

(उस्ताज़ ह़दीस व अ़मीद कुल्लियतुश्शरीआ़, दारुल उलूम नदवतुल उल्मा, लखनऊ)

अल्लाह ने मोह़तरम "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी" को हिन्दी से वाक़िफ़यत को इनके लिए इतना मुफ़ीद बना दिया है जिस का अन्दाज़ा करना इनकी किताबों और हिन्दी तर्जुमः कुर्आन पाक और हिन्दी "तफ़्सीर फ़ारूक़ी" को पढ़े बग़ैर मुश्किल है। कुर्आन मजीद की तफ़्सीर व तर्जुमः का काम ख़ासतौर से हिन्दी में बहुत मुश्किल है। हिन्दी पढ़ने वालों के मज़हब ज़ौक़ व मिज़ाज को सामने रखते हुए यह काम करना जितना ज़रूरी है उतना ही मुश्किल है लेकिन बस तौफ़ीक़ की ज़रूरत है जिस ने मौलाना से इतना बड़ा काम ले लिया है। इसके बहुत अच्छे नतीजे सुनने में आए हैं। अल्लाह तआ़ला मुफ़्ती साह़ब की उ़म्र और काम में बरकत अ़ता फ़रमाये और इनकी मेह़नत और कोशिशों को मज़ीद बार आवर करे।

(14) ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अ़तीक़ अह़मद क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

(उस्ताज़ फ़िक़्ः-दारुल उलूम नदवतुल उ़ल्मा, लखनऊ व नाज़िम मअ़ह्दुश्शरीआ़, लखनऊ)

हिन्दी ज़बान में इस्लामियात पर काम करने वालों में एक मोअ़तबर नाम जनाब "मौलाना मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी" का है, जो दारुल उलूम नद्वतुल् उ़ल्मा के होनहार फ़ाज़िल और हिन्दी ज़बान में बहुत सी किताबों के मुसन्निफ़ हैं, मुतवाज़ेअ़, मिलनसार और धुन के पक्के हैं, इन्होंने कुर्आन करीम का हिन्दी तर्जुमः किया है जिस के मुतअ़द्दिद एडीशन शाया कर चुके हैं।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि मौलाना मौसूफ़ की यह दीनी ख़िद्मात अल्लाह की बारगाह में मक़्बूलियत ह़ासिल करें और बन्दगाने ख़ुदा को इन से ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा पहुँचे।

(15) ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ख़ालिद साह़ब ग़ाज़ीपुरी नदवी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

उस्ताज़, ह़दीस, दारुल उलूम नदवतुल उ़ल्मा, लखनऊ व सदर जमअ़ीयतुल मआ़रिफ़, लखनऊ

अल्लाह का लाख-लाख एह़सान व करम है कि इस अहम ज़रुरत को पूरा करने के लिए हमारे फ़ाज़िल 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी' ने एक मुकम्मल तफ़्सीर बज़बान हिन्दी में बड़ी मेह़नत व लगन से तैयार

की है और हिन्दुस्तानी माहौल को सामने रखते हुए सलफ़-ए-सालिह़ीन के तरीक़े को पेशे नज़र रखते हुए हिन्दुस्तानी लोगों की ख़िद्मत में एक नादिर व नायाब क़ुर्आनी तोह़फ़ा पेश किया है।

(16) ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती नियाज़ अहमद साह़ब नदवी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली-

(उस्ताज़ ह़दीस व फ़िक़्ः व वकील कुल्लियतुश्शरीआ़ अर्थात सदर मुफ़्ती दारुल उलूम नद्वतुल उल्मा, लखनऊ)

'मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी साह़ब' जो उलूम-ए-शरीआ़ में माहिर, नदवे के होनहार फ़ाज़िल जिन की क़ुर्आनी उलूम पर अच्छी निगाह है। यह हिन्दू मज़हबी किताबों से भी वाक़िफ़यत रखते हैं और हिन्दू भाईयों के दर्मियान ख़ासतौर से हिन्दी ज़बान को ज़रिया बना कर दअ़वत का काम कर रहे हैं। इससे पहले इनका हिन्दी तर्जुमः क़ुर्आन का पैग़ाम नाम से कई एडीशन छप चुके हैं जो इनके मक़्बूलियत की दलील है।

चूँकि मैं इन्हें लगभग पन्द्रह बीस साल से दअ़वत के कामों में मशगूल देख रहा हूँ जो एक अच्छी फ़िक्र के हामिल हैं और अल्लाह तआ़ला इनके इसी जज़्बे की वजह से इन से बहुत से काम ले रहा है, जिसमें मदारिस, मकातिब और नौजवानों की तर्बियत भी शामिल है।

उम्मीद है कि हिन्दी जानने वालों के लिए यह तफ़ासीर मराज़ेअ़ की ह़ैसियत रखेगी। अल्लाह तआ़ला इस्तिफ़ादे की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

(17) ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहीबुल्लाह क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

(मुबल्लिग़ मदरसः रह़मानिया, दरभंगा, बिहार)

हमें इस बात का एतिराफ़ करने में ख़ुशी हो रही है कि "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब" एक आ़लिमी इदारे दारुल् उलूम नद्वतुल् उ़ल्मा से फ़ारिग़ होने के साथ संस्कृत और हिन्दी ज़बान से वाक़िफ़ हैं। जो बराबर तमाम इन्सानों को जहन्नम से निकाल कर जन्नत में ले जाने का काम करते हैं, जिसके लिए उन्होंने बड़ी तअ़दाद में इस्लामी लिट्रेचर तैयार किया है, जो एक सह़ाफ़ी और जमअ़ीयत पयामे अम्न के सदर हैं।

जनाब मौलाना 'मुफ़्ती सरवर फ़ारुक़ी नदवी' ने ख़ासतौर से इस मुल्क के हिन्दी तब्क़े वालों की तरफ़ से शुक्रिया के मुस्तह़िक़ हैं, जिन्होंने इन्सानी हिदायत का एक बड़ा तोह़फ़ा तैयार किया है।

(17) मोहतरम जनाब अन्सार अह़मद सिद्दीक़ी साह़ब के क़लम से-

अध्यक्ष हिन्दी विभाग इस्लामिया डिग्री कालेज, इन्दौर, एम०पी०

हमारे लिए बड़े गर्व एवं प्रसन्नता की बात है कि हमारे प्रिय मित्र जनाब 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' साह़ब ने हिन्दी भाषा में क़ुर्आन का अनुवाद और व्याख्या करने का बहुत महान प्रयास किया है। अल्लाह तआ़ला इन के इस प्रयास को सफ़ल बनाये यह हमारी दिली दुआ़ है और मुझे आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है कि हिन्दी जगत में सभी लोग इससे लाभ उठाएँगे।

नोट- अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि वह हमारे और हमारी नस्ल और पूरी उम्मत के लिए क़ुर्आन मजीद की तिलावत, ख़िद्मत और इशाअ़त को ज़िन्दगी का मक़्सद बना दे, ज़िन्दगी गुज़ारे तो बस क़ुर्आन और शारेअ़ क़ुर्आन के साये में और मौत आए तो इसी ख़िद्मत को अन्जाम देते हुए।

10 मुहर्रम 1436 हिज्री

मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी
दारुल् उ़लूम नद्वतुल् उ़ल्मा, लखनऊ
04-11-2014

izkDdFku

अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों की रहनुमाई के लिए, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर अपना क़लाम नाज़िल किया जिसे कुर्आन के रुप मे जाना जाता है। इसके विभिन्न अनुवाद व व्याख्याएँ हुयीं जिसमें इस कुर्आन के पैग़ाम की विशेषता संक्षेप में इस तरह़ है:-

"कुर्आन का पैग़ाम" (अनुवाद) की ख़ुसूसियत

1- कुर्आन के अनुवाद में आसान से आसान शब्दों का प्रयोग किया गया है ताकि मुस्लिम और गैर मुस्लिम दोनों, एक साथ समझ सकें, अगर कहीं वह शब्द, जो मुसलमानों के यहाँ बहुत प्रयोग होते हैं लेकिन हिन्दू भाई जानते भी नहीं। जैसे रह़मत, मग्फ़िरत आदि तो ऐसे शब्दों की हिन्दी, कोष्ठक में कर दी गई है।

2- इसमें यह भी ध्यान रखा गया है कि जो कुर्आन के शब्द है और उनके स्थान पर दूसरे शब्द भी हैं जैसे- ज़ालिम= अत्याचारी, करीब=समीप, अ़ज़ाब=यातना आदि, तो इस अनुवाद में वही शब्द प्रयोग किये गये हैं जो कुर्आनी होने के साथ समाज में भी बोले जाते हों।

3- अनुवाद में यह भी कोशिश की गई है कि अनुवाद मूल अ़रबी से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो, कहीं-कहीं ज़रुरत के अनुसार कोष्ठक में व्याख्या कर दी गई है और उन शब्दों से भी बचने की कोशिश की गई है जो हमारे ज़माने से पहले उचित थे, मगर आज वही शब्द दूसरे अर्थों में प्रयोग होने लगे हैं।

4- अनुवाद में विशेष रूप से मूल अ़रबी कुर्आन, फिर अब तक जितने भी अनुवाद हिन्दी, उर्दू, अ़रबी, इंग्लिश में हुए हैं, सबसे फ़ायदा उठाया गया है।

तफ़्सीर फ़ारुक़ी की ख़ुसूसियात

यह तफ़्सीर ख़ासतौर पर आ़म मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम लोगों के लिए तैयार की गई है। इसलिए ऐसे शब्द जो अ़वाम की समझ से बाहर हों नहीं लिखे गये और कोशिश इस तरह़ की गई है कि दर्स के तौर पर रोज़ाना एक-एक सबक़ पढ़ा जा सके। तफ़्सीर व तश्रीह़ में मोअ़तबर उ़लम-ए-मोह़क़्क़ीन और सलफ़ व सालिह़ीन की तफ़्सीरों से ही फ़ायदा उठाया गया है ।

1- यह आसान हिन्दी भाषा में सात भागों पर आधारित तफ़्सीर है।

2- यह तफ़्सीर मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम दोनों को सामने रखते हुए आम भाषा में लिखी गई है ताकि कम पढ़े लिखे लोग भी फ़ायदा उठा सकें।

3- तफ़्सीर में ह़दीस और मोअ़तबर (Authentic) उल्मा की तफ़्सीरों से फ़ायदा उठाया गया है।

4- इस में रोज़ (प्रतिदिन) पढ़ने के ह़िसाब से लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः फिर हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर बयान की गई है।

5- इस में सबसे पहले पूरी सूरः का खुलासा (संक्षेप) और उसके विषय, फिर लगभग दस-दस आयतों

का तर्जुमः उसके बाद हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर जिसमें सबसे पहले उसी आयत का शाने नुज़ूल (नाज़िल होने के वक़्त की ह़ालत) फिर उसी आयत से सम्बन्धित ह़दीस और मोअ़तबर उ़लमा की तफ़्सीर की रौशनी में तफ़्सीर, फिर मसायल, एह़काम और उसी आयत से सम्बन्धित नई साइंसी तह़क़ीक़ और ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से होने वाले सवालों का बेहतर तरीक़े से जवाब के साथ उस से मुतअ़ल्लिक़ फ़ज़ायल जो सह़ी ह़दीसों से साबित है ज़िक्र किया गया है।

6- इसमें अक्सर आयतों का शाने नुज़ूल ज़िक्र किया गया है ताकि ग़ैर मुस्लिम भाईयों के लिए क़ुर्आन के समझने में आसानी हो, लेकिन शाने नुज़ूल ज़िक्र करने का यह मतलब नहीं कि वह आयत केवल उसी समय या उन्हीं लोगों के लिए है बल्कि जब भी कहीं उस तरह़ के ह़ालात हों तो वह आयत रहनुमाई करेगी। इसलिए कि क़ुर्आन क़ियामत तक हर ज़माने के तमाम इन्सानों के लिए है। किसी भी आयत के शाने नुज़ूल (क़ुर्आन के अवतरित होने का कारण) से यह न समझा जाए कि यह तो केवल उसी ज़माने के लिए है और अब हम से यह बात नहीं कही जा रही है।

इसी तरह़ अल्लाह पाक अपनी शान के मुताबिक़ उन सभी ह़ज़रात को अज्र अ़ता फ़रमाए जिन्होंने किसी भी तरह़ का तआ़उन किया हो, जिस में विशेष रूप से मुह़म्मद आ़रिफ़ अलाना साह़ब के शुक्रगुज़ार हैं जिन्होंने अपनी वालिदा मरहूमा ज़ैनब साह़िबा के ईसाल सवाब के लिए इस भाग को छपवाने में ताउन किया। अल्लाह तआ़ला उन की मग़्फ़िरत फ़रमाए और क़ुर्आन के ख़ादिमों में शुमार फ़रमा कर क़ुर्आन की शिक्षानुसार अ़मल करने और सारी इन्सानी बिरादरी तक क़ुर्आन का पैग़ाम पहुँचाने की मुझे और मेरी नस्ल व पूरी उम्मत को तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। आमीन

मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल् उलूम नद्वतुल उ़लमा, लखनऊ
4 रबीउस्सानी, 15-01-2016

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

कुर्आन की व्याख्या अगले पेज से शुरू हो रही है

पवित्र कुर्आन को पाक साफ़ (वुज़ू करके) शुद्ध होकर आदर के साथ अ़मल की नियत से ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उच्चारण का भी ख़्याल रखें।

(भाग-11)

सूर-ए-हूद (सूरः नं. 11)

आयत नं० 18 से आख़िर तक

आयत नं० 18 से 31 तक

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ
اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۙ﴿۱۸﴾ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۹﴾ اُولٰٓئِكَ لَمْ
يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ؕ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ
السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿۲۰﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۱﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ
الْاَخْسَرُوْنَ ﴿۲۲﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۳﴾ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ
كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۫ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۲۵﴾
اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۶﴾ فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا
مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِىَ الرَّاْىِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ
يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَاٰتٰىنِىْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿۲۸﴾
وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّىْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا
تَجْهَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ
الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِىْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ ۖ اِنِّىْٓ
اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۱﴾

अनुवाद-

(18) और उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो अल्लाह पर थोप कर झूठ गढ़े, ऐसे लोग अपने रब के पास पेश होंगे, और गवाही देने वाले कहेंगे, "यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ गढ़ा था," सुन लो! ऐसे ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है। (19) जो अल्लाह की राह से रोकते और उसमें टेढ़ पैदा करना चाहते हैं, और वह आख़िरत का भी इन्कार करते हैं, (20) ये लोग धरती में क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते, और न अल्लाह के सिवा उनका कोई हिमाायती है! उनको दोगुना अ़ज़ाब दिया जाएगा, क्योंकि ये न तो सुनना गवारा कर सकते थे और न ही देखना; (21) यही हैं जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला और जो कुछ वे गढ़ा करते थे, उनसे ग़ायब हो गया। (22) बेशक वही आख़िरत में सबसे बढ़कर घाटे में रहेंगे। (23) रहे वे लोग जो ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे काम किये, और अपने रब की ओर झुके, वही जन्नत वाले हैं, उसमें वे हमेशा रहेंगे। (24) दोनों फ़िर्क़ों (पक्षों) की मिसाल ऐसी है जैसे एक अन्धा, एक बहरा हो, और एक देखने और सुनने वाला; क्या दोनों का ह़ाल एक जैसा हो सकता है, फिर तुम लोग समझते क्यों नहीं? (25) और 'हमने' 'नूह' को उनकी क़ौम की ओर भेजा (उन्होंने कहा), "मैं तुम्हें साफ़-साफ़ चेतावनी देने वाला हूँ; (26) यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मुझे तुम्हारे बारे में एक दर्दनाक अ़ज़ाब के दिन का डर है।" (27) तो उनकी क़ौम के सरदारों ने, जो काफ़िर थे, कहा, "तुम हमारे ही जैसे एक आदमी हो और यह भी देखते हैं कि बस कुछ ऐसे लोग ही तुम्हारे अनुयायी हैं जो हमारे यहाँ के नीच हैं, वह भी ज़ाहिर राय से, और हम अपने मुक़ाबले में तुम्हारे अन्दर कोई विशेषता नहीं पाते,

बल्कि हम तो समझते हैं कि तुम झूठे हो"। (28) उन्होंने कहा, "ऐ मेरी क़ौम यह तो बताओ, कि अगर मैं अपने रब की ओर से एक (रौशन) दलील पर हूँ, और 'उसने' अपनी खास रहमत से मुझे नवाज़ा हो, मगर वह तुम्हें दिखाई न दे रही हो, तो क्या हम ज़बर्दस्ती तुम्हारे सर चिपका दें और जबकि वह तुम्हें अप्रिय है? (29) और, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुम से इस काम पर कोई माल तो नहीं मांगता! मेरा अज्र (बदला) अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और मैं उन लोगों को जो ईमान ले आए हैं दूर करने वाला नहीं उन्हें तो अपने रब से मिलना है मगर मैं तुम्हें देख रहा हूँ कि तुम जिहालत किये जा रहे हो; (30) और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर मैं उन्हें दूर कर दूँ तो अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी मदद कर सकता है? भला तुम ध्यान क्यों नहीं देते। (31) और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न ही मुझे ग़ैब (परोक्ष) का इल्म है; और न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, और न मैं यह कह सकता हूँ, कि जिनको तुम नीची नज़र से देखते हो, उनको अल्लाह भलाई नहीं देगा, जो उनके जी में है अल्लाह उसे खूब जानता है, मैं अगर ऐसी बात कहूँ तब तो ज़ालिमों में हूँगा"।

आयत नं० 18 से 31 तक की व्याख्या

18-19 وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝

उन लोगों से बढ़कर अल्लाह के नज़्दीक ज़ालिम कौन हो सकता है जो इल्ज़ाम लगाते हुए कहते हैं कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं और उन की तराशी हुई मूर्तियाँ अल्लाह की शरीक हैं और क़ुर्आन अल्लाह का कलाम (ईशवाणी) नहीं है। क़ियामत के दिन ऐसे लोग बहुत ज़्यादा ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ अल्लाह के सामने पेश किये जाएँगे और फ़रिश्ते, अम्बिया-ए-किराम, मुबल्लिग़ीन और ख़ुद उन मुजरिमों के अअ़ज़ा (अंग) गवाही देंगे कि यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब (पालनकर्ता) के बारे में आरोप लगाया था, तो अल्लाह तआ़ला कहेगा कि ज़ालिमों पर अल्लाह की फिट्कार हो जो लोगों को अल्लाह की सीधी राह से रोकने के लिए उस में तरह़-तरह़ की शंकाएँ पैदा करते थे और वह ऐसा क्यों न करते उन्हें तो आख़िरत पर ईमान था ही नहीं क्योंकि जो आख़िरत पर ईमान रखता, वही सीधी राह अपनाता है और दूसरों को भी उस पर चलने की दअ़वत देता है।

20 اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ؕ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ۝

आयत नं० (20) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह इस बात से बेबस नहीं है कि इन्कार करने वाले और मुश्रिकों (शरीक करने वाले) को क़ियामत के आने से पहले दुनिया में ही अ़ज़ाब दे और उन का कोई यार व मददगार न हो जो इस अ़ज़ाब को उन से टाल सके। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने

फ़रमाया कि दुनिया में उन्हें इसलिए अ़ज़ाब नहीं दिया गया ताकि आख़िरत में उन्हें दो गुना अ़ज़ाब दिया जाए इसलिए कि दीने इस्लाम से उन की दुश्मनी इतनी थी कि न ह़क़ बात सुन सकते थे और न अल्लाह की आयतों में ग़ौर व फ़िक्र से काम लेते थे।

21-22 أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾

इस में उन्हीं काफ़िरों और मुश्रिकों के बारे में कहा गया है कि उन लोगों ने अल्लाह के बजाय झूठे बातिल मअ़बूदों की बन्दगी कर के बड़े ही नुक़्सान का सौदा किया है, वह झूठे मअ़बूद उन के कुछ भी काम न आएँगे और आख़िरत में उन से बढ़कर कोई घाटा उठाने वाला नहीं होगा कि जहन्नम उन का ठिकाना होगी, जहाँ एक सेकण्ड के लिए भी उन के अ़ज़ाब में कमी नहीं होगी।

23-24 إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

इस में बयान किया जा चुका है कि दुनिया का तालिब (इच्छुक) और आख़िरत का इच्छुक बराबर नहीं हो सकते। यहाँ आयत नं० (18) से (24) तक इसी बात को दूसरे अन्दाज़ में बयान किया गया है। पहले इन्कार करने वालों का ह़ाल बयान किया गया है और अब ईमान वालों का ज़िक्र हो रहा है। इस में अन्धे, बहरे, आँख और कान वाले की मिसाल देकर बताया जा रहा है कि जिस तरह़ यह लोग बराबर नहीं हो सकते हैं उसी तरह़ दुनिया के इच्छुक और आख़िरत के इच्छुक हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते हैं।

25-26 وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾ أَن لَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾

इस आयते करीमा में पाँच नबियों और उन की क़ौमों के वाक़िआ़त (क़िस्सों) की शुरुआ़त हो रही है और मक़्सद यह है कि इन्कार करने वालों को अन्दाज़ बदल कर इस्लाम की दअ़वत दी जाए और उन्हें बताया जाए कि अगर उन्होंने ह़क़ से मुँह फेरा तो उन का अन्जाम भी उन्हीं क़ौमों जैसा हो सकता है। यहाँ रसूलुल्लाह (सल्ल०) को भी तसल्ली देना मक़्सद है कि आप से पहले बहुत से अम्बिया-ए-किराम को उन की क़ौमों ने शारीरिक और मानसिक तक्लीफ़ें पहुँचाईं, लेकिन उन्होंने सब्र से काम लिया और अल्लाह का दीन पहुँचाते रहे, यहाँ तक कि उन क़ौमों के बारे में अल्लाह का फ़ैसला आ गया तो ऐ नबी! आप भी सब्र से काम लें और पैग़ामे ह़क़ लोगों तक पहुँचाते रहें और नतीजा अल्लाह पर छोड़ दें।

सब से पहले ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) को अल्लाह तआ़ला ने उनको अपनी क़ौम को दअ़वते इस्लाम देने के लिए नबी बना कर भेजा था। कहा जाता है कि वहाँ कुफ़्र व शिर्क और बुराई व फ़साद से ज़मीन भर गई थी। ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने उन से कहा कि मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से डराने के लिए भेजा गया हूँ। लोगों! अल्लाह के सिवा दूसरों की अ़िबादत (उपासना) न करो वरना मुझे डर है कि अल्लाह का दर्दनाक अ़ज़ाब तुम्हें अपनी गिरफ़्त में ले लेगा।

27 فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّاْيِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ۝

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की क़ौम के सरदारों ने उन की दअ़वत को रद्द कर दिया और उन के नबी होने में तीन क़िस्म का शक ज़ाहिर किया। पहला शक यह ज़ाहिर किया कि तुम हमारी ही तरह़ के इन्सान हो तो तुम नुबूव्वत के कैसे ह़क़्दार बन गये?

दूसरा सवाल यह था कि क़ौमों के सरदारों में से एक ने भी तुम्हारी पैरवी नहीं की, सिर्फ़ घटिया क़िस्म के लोगों ने तुम्हारी पैरवी की है जो कम अ़क़्ल और बेवक़ूफ़ हैं वह अच्छी और गहरी सोच समझ नहीं रखते। अगर तुम नबी होते तो सरदारे क़ौम तुम पर ईमान लाते और तीसरा सवाल यह था कि तुम में और तुम्हारे मानने वालों में कोई ऐसी ख़ूबी नज़र नहीं आती जो हम में न हो तो फिर नबी कैसे हो गये?

ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इन सवालों का जवाब लिखा है कि यह बातें क़ौमे नूह़ की जिहालत और कम अ़क़्ली की दलील थीं। इसलिए कि ह़क़ ह़क़ होता है चाहे उस के मानने वाले बड़े लोग हों या छोटे और तारीख़ यही बताती है कि ह़क़ को मानने वाले हमेशा ज़्यादा कमज़ोर लोग ही हुए हैं।

'ह़िरक्ल' ने अबू सुफ़्यान से जब नबी करीम (सल्ल०) के गुणों के बारे में सवालात किये तो उस का एक सवाल यह था कि उस के मानने वाले सरदाराने क़ौम हैं या कमज़ोर लोग? अबू सुफ़्यान ने कहा, कमज़ोर लोग, तो हिरक्ल ने कहा कि हमेशा नबियों की पैरवी करने वाले ऐसे ही लोग हुए हैं और यह जो उन्होंने कहा कि तुम्हारे मानने वाले ज़्यादा गहरी फ़िक्र वाले नहीं हैं तो यह भी कोई ख़ास बात नहीं है इसलिए कि अगर ह़क़ साफ़ हो और दिल का आईना रौशन हो तो आदमी एक पल के लिए भी शक व शुब्हा में नहीं पड़ता और ह़क़ को तुरन्त क़ुबूल कर लेता है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जब अपनी रिसालत का ए़लान किया तो ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने बिना किसी देरी के आप की आवाज़ पर लब्बैक कहा और इस्लाम में दाख़िल हो गये।

28 قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ۭ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ۝

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने उन की काफ़िराना बात को सुन कर कहा: "ऐ मेरी क़ौम के लोगों! अल्लाह तआ़ला ने मुझे अपने नबी होने की निशानी दी है। इन्सानी गुण में मेरा तुम्हारे साथ बराबर होना इस बात से हरगिज़ रुकावट नहीं है कि वह मुझे मक़ामे नुबूव्वत से नवाज़े। इस तरह़ मेरे मानने वालों का माली एतिबार (आर्थिक रूप) से कमज़ोर होना भी नुबूव्वत में रुकावट नहीं है, इसलिए कि इन्सानी अ़क़्ल और समझ में वह तुम्हारी तरह़ हैं और यह नुबूव्वत तो अल्लाह की रह़मत और फ़ज़्ल है जो उस ने मुझे दिया है। अगर तुम्हारे अन्दर देखने की योग्यता ख़त्म हो गई है और तुम ह़क़ को नहीं देख पा रहे हो तो मैं तुम्हें उसे क़ुबूल करने पर मजबूर नहीं कर सकता हूँ मेरा काम तो केवल बात पहुँचा देना है"।

29-30 وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَي اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۝ وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने उन से यह भी कहा कि मैं दअ़वत व तब्लीग़ के काम पर तुम से कोई बदला भी तो नहीं माँगता हूँ कि तुम्हें शुब्हा हो कि मैं दुनिया चाहने के लिए ऐसा कर रहा हूँ और तुम जो मेरे मानने वालों को घटिया कहते हो और मुझ से माँग करते हो कि मैं उन्हें अपने पास से भगा दूँ ताकि तुम लोग मेरी बात सुनो तो मैं ऐसा भी नहीं करुँगा, इसलिए कि ईमान लाने के बाद अल्लाह के नज़्दीक़ उन का मक़ाम बुलन्द हो गया है और जब वह अल्लाह से मिलेंगे तो मुझ से झगड़ेंगे कि ऐ रब! इन्होंने हमें अपनी मजलिस से निकाल दिया था। ऐ मेरी क़ौम के लोगों! ह़क़ीक़त यह है कि तुम लोग बहुत ही नादान हो तभी तो सोचते हो कि अगर ईमान ले आओगे तो हमारे कमज़ोर पैरोकारों (मानने वालों) के बराबर हो जाओगे।

ऐ लोगो! मैं तुम्हें दोबारा बताए देता हूँ कि अगर मैंने इन कमज़ोर मुसलमानों को अपनी मजलिस से निकाल दिया तो मुझे अल्लाह के अ़ज़ाब से कोई नहीं बचा सकेगा, इसलिए कि अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने के बाद अल्लाह के नज़्दीक उन का मक़ाम बुलन्द हो गया है और इन्हें सिर्फ़ इसलिए भगा देना कि यह ग़रीब और कमज़ोर हैं सरासर ज़ुल्म होगा।

31 وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۚ اِنِّىْٓ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

इस आयते करीमा में ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने इस तरफ़ इशारा किया है कि ऐ लोगो! मैं तुम्हारी तरह़ बशर (इन्सान) हूँ लेकिन अल्लाह ने मुझे रिसालत और वह्य से नवाज़ा है, मैं ऐसी बातों का दावा नहीं करता हूँ जो मेरे अख़्तियार से बाहर हैं। मैं दावा नहीं करता हूँ कि अल्लाह की रोज़ी के ख़ज़ानों का मैं मालिक हूँ और न इ़ल्म ग़ैब का दावा करता हूँ और न ही फ़रिश्ते होने का दावा करता हूँ। जब मैं ख़ुद ऐसा दावा नहीं करता हूँ तो फिर मेरे अन्दर उन ख़ूबियों के न होने पर मेरी नुबूव्वत का क्यों इन्कार करते हो? और जिन ग़रीब मुसलमानों को कमतर समझते हो उन के बारे में तुम्हारी तरह़ यह नहीं कहता कि अल्लाह उन्हें दुनिया व आख़िरत की भलाईयों में से उन के ग़रीबी की वजह से मह़रूम रखेगा। उन के अन्दर जो ख़ूबियाँ पाई जाती हैं उन्हें अल्लाह तआ़ला मुझ से और तुम से ज़्यादा जानता है। अगर मैं ऐसा कहूँगा तो मैं उन के ह़क़ में ज़ालिम हूँगा। इसलिए कि मैंने उन की इ़ज़्ज़त नहीं की और उन की शान के ख़िलाफ़ बात की। मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयत के आख़िरी ह़िस्से में इस तरफ़ इशारा है कि काफ़िरों ने ग़रीब मुसलमानों की तौह़ीन कर के ज़ुल्म किया था।

❐❐❐

आयत नं० 32 से 43 तक

قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَآ
اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۫ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ۝ وَ اُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ
اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَ وَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ
مُّغْرَقُوْنَ ۝ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۖ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ؕ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا
تَسْخَرُوْنَ ۝ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا
احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَ اَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝ وَقَالَ ارْكَبُوْا
فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۫ وَنَادٰى نُوْحُ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ
يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا
مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ۝

अनुवाद-

(32) उन्होंने कहा, ''ऐ नूह! तुम हम से झगड़ चुके और बहुत बहस कर चुके, अगर तुम सच्चे हो, तो जिसकी तुम हमें धमकी देते हो उसे हम पर ले ही आओ''। (33) कहा, ''वह तो अल्लाह ही अगर चाहेगा तो तुम पर लाएगा, और तुम हरा नहीं सकते; (34) और अगर मैं तुम्हारा भला भी चाहूँ (और) अल्लाह यह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, तो मेरा भला चाहना तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता, 'वही' तुम्हारा रब है और 'उसी' की ओर तुम्हें लौटना भी है''। (35) क्या यह कहते हैं कि, ''इन्होंने इस (कुर्आन) को गढ़ लिया है, कह दीजिए, ''अगर मैंने गढ़ लिया है तो मेरे ही ऊपर मेरा यह जुर्म होगा, और तुम जो जुर्म कर रहे हो मैं उससे बरी (मुक्त) हूँ''। (36) और 'नूह' के पास वह्य भेजी गई कि ''तुम्हारी क़ौम में से(और कोई) ईमान नहीं लाएँगे सिवाय उनके, जो लोग ईमान ला चुके; तो जो कुछ ये कर रहे हैं उनकी वजह से दुःखी न हो। (37) और नाव 'हमारे' सामने हमारे हुक्म के अनुसार तैयार करो, और 'मुझसे' उन लोगों के विषय में बात न करना जिन्होंने जुल्म किया है, इसलिए कि वे ज़रूर डुबो दिये जाएँगे। (38) और (नूह) नाव बनाने लगे, और उनकी क़ौम के सरदार जब भी उनके पास से गुज़रते तो उसका मज़ाक़ उड़ाते, उन्होंने कहा, "अगर तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो तो हम भी तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाएँगे जैसे तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो; (39) तो जल्द ही तुम को मालूम हो जाएगा कि किस पर अ़ज़ाब आने वाला है जो उसे रुसवा कर देगा, और किस पर हमेशा का अ़ज़ाब नाज़िल होगा?" (40) यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ गया, और तंदूर उबल पड़ा, तो 'हमने' कहा; 'हर नस्ल में से दो (नर और मादा) के जोड़े उसमें ले लो और अपने घर वालों को भी-सिवाय ऐसे व्यक्ति के जिसके बारे में बात तय हो चुकी हो और जो ईमान लाया हो उसे भी;'' मगर उनके साथ जो ईमान लाए थे, वे बहुत थोड़े ही लोग थे। (41) और कहा कि अल्लाह का नाम लेकर (उसी

के हाथ में है) इस का चलना और ठहरना, इसमें सवार हो जाओ बेशक मेरा 'रब' बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है।'' (42) और वह (नाव) उन्हें लेकर लहरों के बीच चलने लगी; पहाड़ जैसी मौजों में, और नूह ने अपने बेटे को पुकारा- और वह किनारे पर था- कि ''ऐ मेरे बेटे! सवार हो हमारे साथ, और काफ़िरों के साथ मत हो"। (43) वह बोला, "मैं अभी किसी पहाड़ की पनाह लिए लेता हूँ जो मुझे पानी से बचा लेगा,'' कहा, "आज अल्लाह के हुक्म से कोई बचाने वाला नहीं सिवाय उसके जिस पर 'वह' रहम करे"। इतने में दोनों के बीच मौज आ पड़ी और डूबने वालों के साथ वह भी डूब गया।

आयत नं० 32 से 43 तक की व्याख्या

32-34 قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۫ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

जब क़ौमे नूह के पास कुफ़्र व हठधर्मी पर क़ायम रहने की कोई दलील नहीं रही और हज़रत नूह (अ़लै०) की दलीलों के आगे उन्होंने अपने आप को बेबस पाया तो कहने लगे कि ऐ नूह! हम तुम्हारी बातों से तंग आ गये हैं। अगर तुम सच्चे हो तो जिस अ़ज़ाब का वादा करते आए हो उसे लाकर दिखा दो तो हज़रत नूह (अ़लै०) ने जवाब दिया कि यह मेरे अख़्तियार में नहीं है। जब अल्लाह चाहेगा अ़ज़ाब आएगा और उस वक़्त तुम उसे रोक न सकोगे और आयत नं० (34) में हज़रत नूह (अ़लै०) ने कहा कि अगर अल्लाह तुम्हें गुमराह और हलाक करना चाहेगा तो मेरा तुम्हें तौहीद (एकेश्वरवाद) की तरफ़ बुलाना और अ़ज़ाब से डराना कुछ भी फ़ायदा नहीं पहुँचाएगा।

35 اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ۝

क़ौमे नूह के इस बात के इन्कार से हज़रत नूह (अ़लै०) पर अल्लाह की तरफ़ से कोई वह्य नाज़िल नहीं हुई है। अल्लाह तआ़ला ने कहा कि आप उन इन्कारियों से कहिए कि अगर मैंने अल्लाह पर झूठी बात कही है तो उस की सज़ा भुगतने के लिए तैयार हूँ और अगर मैं सच्चा हूँ और तुम लोग मुझे झुठला रहे हो तो तुम लोग इस के झुठलाने की सज़ा पाने के लिए तैयार रहो और यह जान लो कि मैं तुम्हारे जुर्मों से बरी हूँ।

36 وَ اُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत नूह (अ़लै०) को ख़बर दे दी कि जो लोग अब तक ईमान ला चुके हैं उन के अ़लावा अब कोई ईमान नहीं लाएगा। इस के बाद आपने उन के हक़ में बद्दुआ़ कर दी कि ऐ अल्लाह! अब किसी काफ़िर (इन्कारी) को ज़मीन पर न रहने दीजिए।

37 وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَ وَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ۝

जब अ़ज़ाब का आना यक़ीनी हो गया तो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) को नाव बनाने का हुक्म दिया और इस की तअ़लीम दी ताकि वह और उन के मानने वाले मुसलमान तूफ़ान से बच सकें और काफ़िरों से निजात के लिए सिफ़ारिश करने से मना फ़रमा दिया इसलिए कि उन के बारे में अल्लाह का फ़ैसला हो चुका था कि उन्हें डुबो देना है।

ऐ़न- यानी आँख भी अल्लाह की सिफ़ात (एक गुण है) में से एक सिफ़त है जिस की कैफ़ियत (ह़ालत) हम नहीं जानते हैं लेकिन उस पर ईमान लाना वाजिब है।

38-39 وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۖ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّن قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۚ قَالَ إِن تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٩﴾

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) को नाव बनाते देखकर इन्कारी लोग कहने लगे कि नबी होने के बाद अब बढ़ई हो गये। कहा जाता है कि नाव बनाने का काम वह पानी से बहुत दूर एक मैदान में सख़्त गर्मी के ज़माने में करते थे, इसीलिए काफ़िरों ने उन से पूछा कि यह तुम क्या कर रहे हो? उन्होंने पहले से कश्ती (नाव) नहीं देखी थी तो उन्होंने कहा कि यह हमें लेकर पानी पर चलेगी तो वह हंसे और मज़ाक़ उड़ाने लगे, उन्होंने कहा कि अगर आज तुम मेरा मज़ाक़ उड़ा रहे हो तो उड़ा लो कल तूफ़ान के आने पर हम तुम्हारे डूबने का मज़ाक़ उड़ाएँगे, उस वक़्त तुम्हें मालूम हो जाएगा कि दुनिया में रुस्वाई वाला अ़ज़ाब और आख़िरत में हमेशा की आग का कौन ह़क़्दार है।

40 حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۖ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ ۚ وَمَا آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٤٠﴾

जब क़ौमे नूह़ की हलाकत का हुक्म आ गया और पानी उबलने लगा तो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) को हुक्म दिया कि ज़मीन पर पाये जाने वाले तमाम जानवरों और चिड़ियों के जोड़े नाव में रख लें और दूसरे मुसलमानों के साथ अपने सिर्फ़ उन रिश्तेदारों को सवार कर लें जो उन पर ईमान लाए हैं।

ह़ज़रत क़तादा और इब्ने जरीर के क़ौल के मुताबिक़ उन की तअ़दाद आठ थी। ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) उन की बीवी, उन के तीन बेटे और उन की बीवियाँ। उन का बेटा कन्आ़न और उन की बीवी उम्मे कन्आ़न मोमिन नहीं थे, इसीलिए उन के साथ कश्ती पर सवार नहीं हुए।

'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' के क़ौल के मुताबिक़ उन की तअ़दाद अस्सी (80) थी। उन में नूह़ के बेटे साम, ह़ाम, याफ़िस और इन तीनों की बीवियाँ थीं। उन्हीं में से एक शख़्स जुर्हम भी था, जिस के नाम से क़बीला जुर्हुम मशहूर हुआ जो ह़ज़रत हाजिरा और ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) के बाद मक्का में आकर आबाद हो गया था।

41 وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرِاهَا وَمُرْسَاهَا ۚ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٤١﴾

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने जब तूफ़ान को उमडते देखा तो अपने मुसलमान साथियों से कहा कि नाव

में सवार हो जाओ। यह अल्लाह के नाम से चलेगी और उसी के हुक्म के मुताबिक़ रुकेगी, बेशक मेरा रब माफ़ करने वाला, रहम वाला है, वह हमें ज़रूर इस तूफ़ान से निजात देगा।

42 وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۖ وَنَادٰى نُوْحُ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

जब हज़रत नूह (अ़लै०) और उन के मुसलमान साथी बिस्मिल्लाह कह कर सवार हो गये तो नाव पहाड़ों की तरह ऊँची मौजों के दर्मियान चलने लगी। उस वक़्त हज़रत नूह (अ़लै०) ने अपने बेटे को पुकारा जो काफ़िर होने की वजह से कश्ती में सवार नहीं हुआ था, कि ऐ मेरे बेटे! अब भी मौक़ा है कि हमारे दीन में दाख़िल हो जाओ और हमारे साथ कश्ती में सवार जो जाओ और काफ़िरों का साथ छोड़ दो।

43 قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ۭ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ۝

उस ने जवाब दिया कि मैं किसी पहाड़ पर जाकर पनाह ले लूँगा और डूबने से बच जाऊँगा तो हज़रत नूह (अ़लै०) ने कहा कि आज अल्लाह के अ़ज़ाब से केवल वही बच सकेगा जिस पर अल्लाह अपना रहम व करम फ़रमाएगा और उस का रहम आज केवल मोमिनों के साथ ख़ास है। बाप-बेटे के दर्मियान इस बातचीत के बाद एक बड़ी भयानक मौज उठी जिस ने कन्आ़न को अपनी लपेट में ले लिया और उसी में डूब कर मर गया।

आयत नं० 44 से 60 तक

وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَنَادٰى
نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ
غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنِّيْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ
بِهٖ عِلْمٌ ۭ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾ قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ
مَّعَكَ ۭ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٨﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ
وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛ فَاصْبِرْ ۭ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ
اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَي الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٥١﴾ وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ
ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاۗءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ
بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْۗءٍ ۭ قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا
اَنِّيْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٥٥﴾ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَي اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۭ مَا مِنْ دَاۗبَّةٍ اِلَّا
هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ۭ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ
وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـــًٔا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٥٧﴾ وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ
عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ عَادٌ ۭ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٥٩﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً
وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۭ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿٦٠﴾

अनुवाद-

(44) और कहा गया, '' ऐ धरती! अपना पानी निगल जा और ऐ आसमान तू थम जा'' इतने में पानी तह में बैठ गया, और फ़ैसला पूरा हो गया और वह (नाव) जूदी (पहाड़) पर टिक गई, और कह दिया गया कि ज़ुल्म करने वाले लोग दूर हो गये।'' (45) और नूह़ ने अपने रब को पुकारा, और कहा, ''ऐ मेरे रब! मेरा बेटा तो मेरे घर वालों ही में है और तेरा वादा सच्चा है और 'तू' सबसे बेहतर ह़ाकिम है"। (46) (अल्लाह ने) कहा, '' ऐ नूह! वह तुम्हारे घर वालों में से नहीं, क्योंकि उस के कर्म (आ़माल)बुरे थे, तो मुझसे ऐसी चीज़ों का सवाल न करो जिसकी तुम्हें ख़बर न हो; 'मैं' तुम्हें नसीह़त करता हूँ कि तुम नादानों में से न हो"। (47) (नूह) बोले, ''ऐ मेरे रब! मैं 'तुझ' से तेरी पनाह माँगता हूँ कि 'तुझसे' उस चीज़ का सवाल करुँ जिसका मुझे कोई इल्म न हो, अब अगर 'तू' ने मुझे माफ़ न किया और मुझ पर दया न की, तो मैं घाटे में पड़ कर रहूँगा"। (48) कहा गया, "ऐ नूह! 'हमारी' ओर से सलामती और उन बरकतों के साथ, (जो) तुम पर और उन गिरोहों पर होगी जो तुम्हारे साथ हैं; उतर आओ कुछ गिरोह ऐसे भी होंगे जिन्हें हम थोड़े दिनों का सुख देंगे, फिर उन्हें हमारी ओर से दुःख देने वाला अ़ज़ाब आ पहुँचेगा"। (49) यह ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें हैं जिनकी 'हम' आप की ओर वह्य कर रहे हैं इससे पहले न तो आप को उनकी ख़बर थी और

न आप की क़ौम को, अतः सब्र से काम लो, बेशक (भला) अंजाम तो परहेज़गारों ही का है। (50) और 'आ़द' की ओर उनके भाई 'हूद' को (भेजा), उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं, तुम तो केवल झूठ गढ़ते हो; (51) ऐ मेरी क़ौम! मैं इस पर तुम से बदले में कुछ मज़दूरी नहीं माँगता, मेरी मज़दूरी तो बस उसी के ज़िम्मे है 'जिसने' मुझे पैदा किया है, फिर क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते? (52) और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से अपने गुनाह माफ़ कराओ, फिर 'उसी से' तौबः करो, 'वह' तुम पर खूब बारिशें बरसाएगा और दिन पर दिन तुम्हारी शक्ति बढ़ाएगा, और मुजरिम बनकर मुँह न फेरो।'' (53) वे बोले, ''ऐ हूद! तुम हमारे सामने कोई स्पष्ट प्रमाण लेकर नहीं आए, और हम तुम्हारे कहने से अपने मअ़बूदों को नहीं छोड़ सकते, और न तुम पर ईमान लाने वाले हैं; (54) हम तो यही समझते हैं कि हमारे मअ़बूदों में से किसी की मार तुम पर पड़ गई है, उन्होंने कहा, ''मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ, और तुम भी गवाह रहो कि उनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं, जिनको तुमने साझीदार ठहरा रखा है; (55) अल्लाह के सिवा तुम सब मेरे साथ दाँव घात लगा कर देखो, और मुझे मोहलत न दो; (56) मैं तो अल्लाह ही पर भरोसा रखता हूँ 'वही' मेरा 'रब' है, और तुम्हारा भी, जितने भी जानदार हैं सबकी पेशानी (मस्तक) तो 'उसी' के हाथ में है, बेशक मेरा रब सीधी राह पर है; (57) तो अगर तुम मुँह फेरोगे, तो जो पैग़ाम देकर मैं भेजा गया था, वह मैं तुम्हें पहुँचा चुका, और मेरा रब तुम्हारी जगह दूसरी किसी क़ौम को लाएगा, और तुम 'उसका' कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, मेरा रब हर चीज़ पर निगराँ (संरक्षक) है"। (58) और जब 'हमारा' हुक्म (अ़ज़ाब का) आ पहुँचा, तो 'हमने' अपनी दया से हूद को, और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाए थे अपनी मेहरबानी से बचा लिया, और 'हमने' उन्हें भारी अ़ज़ाब से बचा लिया। (59) और ये आ़द हैं, जिन्होंने अपने 'रब' की आयतों से इन्कार किया, और रसूलों की नाफ़रमानी की और हर सरकश विरोधी के पीछे चलते रहे; (60) तो और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगी रही और क़ियामत के दिन भी, "सुन लो! कि 'आ़द' ने अपने 'रब' के साथ कुफ़्र किया (और) सुन लो! कि 'हूद' की क़ौम, 'आ़द' पर फिटकार हो।

आयत नं० 44 से 60 तक की व्याख्या

44 وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

जब तमाम ज़मीन पर बसने वाले डूब गये और कोई काफ़िर ज़िन्दा न रहा तो अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को हुक्म दिया कि जो पानी ऊपर उबल आया था उसे फ़ौरन पी जाए और आसमान को हुक्म दिया कि बारिश बरसाना रोक दे, चुनाँचे पानी सूख गया और अल्लाह का फ़ैसला पूरा हो गया जिस को बचाना चाहा बचा दिया और जिसे हलाक करना चाहा हलाक कर दिया। जब पानी कम होने लगा और पहाड़ों की चोटियाँ ज़ाहिर होने लगीं तो नाव ज़ूदी पहाड़ पर जाकर ठहरी, जो मूसल शहर के क़रीब है और अल्लाह की ओर से एलान हो गया कि अब ज़ालिमों से ज़मीन पाक हो गई।

'ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ल्दून' ने लिखा है कि अहले इ़ल्म का इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है कि तूफ़ान की वजह से ज़मीन पर रहने वाले सभी लोग हलाक हो गये थे और जो मुसलमान ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०)

के साथ नाव में सवार थे उन की भी कोई औलाद नहीं हुई सिर्फ़ ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) के तीनों बेटों से नस्ल चली, इसीलिए ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) 'आदम सानी' कहलाए।

45 وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۴۵﴾

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने मुह़ब्बत में आकर अपने रब से दुआ़ की और कहा कि ऐ मेरे रब! मेरा बेटा मेरे घरवालों में से है और तेरा वादा बरह़क़ है। कहा कि अपने घर वालों को भी कश्ती पर सवार कर लूँ ताकि सब तूफ़ान से बच जाएँ।

46 قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۫ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّيْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۴۶﴾

अल्लाह तआ़ला ने फिर ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) को अपना आख़िरी फ़ैसला बता दिया कि ऐ नूह़! वह ईमान नहीं लाएगा, इसलिए कि वह आप के घरवालों में से नहीं है। आप के घर वाले तो दीन व शरीअ़त के पाबन्द और नेक हैं और वह नेक नहीं है, इसलिए तूफ़ान से नहीं बचेगा।

इस के बाद अल्लाह ने ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) को तम्बीह की, कि जिस मक़्सद के पूरे तौर पर होने का आप को इ़ल्म न हो उस का अल्लाह से सवाल न कीजिए इसलिए कि ऐसा करना नादानों का काम होता है।

47 قَالَ رَبِّ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۴۷﴾

जब ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) को इस बात का इ़ल्म हो गया कि अल्लाह से उन का सवाल शरीअ़त के मुताबिक़ नहीं है और यह उन का वहम (धोखा) था कि मुम्किन है कन्आ़न मुसलमान बनकर कश्ती पर सवार हो जाए तो अपनी ग़ल्ती का इक़्रार किया और अल्लाह से मग़्फ़िरत व रह़मत की दुआ़ की।

48 قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴۸﴾

जब नाव जूदी पहाड़ पर ठहर गई तो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) से कहा कि अब आप सलामती (शाँति) के साथ नाव से ज़मीन पर उतर जाइए। आप पर और आप के कुछ साथी मुसलमानों पर अल्लाह की रह़मतों और बरकतों का साया रहेगा और उन में से कुछ की नस्लों में ऐसे लोग पैदा होंगे जो आगे चलकर कुफ़्र की राह अपनाएँगे और उन का मक़्सद दुनिया का ऐ़श व आराम हो जाएगा तो हम उन्हें उस से फ़ायदा उठाने का मौक़ा देंगे, मगर आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।

49 تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَاۤ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَاۤ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛؕ فَاصْبِرْ ؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۹﴾

इस आयत से नबी करीम (सल्ल०) के रिसालत की तस्दीक़ होती है। अल्लाह तआ़ला ने आप

(सल्ल०) को मुख़ातब करके फ़रमाया कि हज़रत नूह़ (अ़लै०) और उन की क़ौम के वाक़िआ़त (घटना) की ख़बर आप (सल्ल०) को और आप की क़ौम को बिल्कुल नहीं थी। यह सारी तफ़्सीलात आप को वह्य के ज़रिए मालूम हुई। यह दलील इस बात की है कि आप (सल्ल०) अल्लाह के नबी और रसूल हैं। इस के बाद अल्लाह ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को नसीह़त की कि दअ़वत व तब्लीग़ की राह में आप को जो तक्लीफ़ पहुँचे उस पर ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की तरह़ सब्र से काम लीजिए और इस यक़ीन के साथ अपनी ज़िम्मेदारी अदा कीजिए कि दुनिया में कामियाबी और आख़िरत में हमेशा की कामियाबी हम अपने उन्हीं बन्दों को देंगे जो तक़्वा (परहेज़गारी) की राह अपनाएँगे।

50 وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ۝

यहाँ से अल्लाह के दूसरे नबी ह़ज़रत हूद (अ़लै०) और उन की क़ौम के वाक़िये की शुरुआ़त हो रही है। अल्लाह तआ़ला ने क़ौमे आ़द की हिदायत के लिए ह़ज़रत हूद (अ़लै०) को भेजा था जो उन्हीं में से थे, यह लोग बुतों की पूजा करते थे। इन का वाक़िआ़ सूरतुल् अअ़राफ़ आयत नं० (65) से (75) तक तफ़्सील के साथ गुज़र चुका है।

ह़ज़रत हूद (अ़लै०) ने उन से कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगों! अल्लाह की अ़िबादत करो जिस के सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं और तुम जो उसे छोड़कर मूर्तियों की पूजा करते हो यह बहुत बड़ा ज़ुल्म है, इसलिए कि अल्लाह ने तुम्हें कभी नहीं कहा कि अपने हाथों से तराशे हुए बुतों की अ़िबादत (उपासना) करो।

51 يَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

ऐ मेरी क़ौम के लोगों! इस दअ़वत व तब्लीग़ के कामों पर मैं तुम से कोई उजरत (बदला) भी नहीं माँगता हूँ कि तुम्हें शुब्हा हो कि मैं किसी दुनियावी लालच से तुम्हें अल्लाह की तरफ़ बुला रहा हूँ। मेरा बदला तो वह अल्लाह देगा जिस ने मुझे पैदा किया है। क्या तुम्हें इतनी बात समझ में नहीं आती कि मेरी दअ़वत किसी लालच की बुनियाद पर नहीं है?

52 وَيَا قَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ۝

इस के बाद ह़ज़रत हूद (अ़लै०) ने उन्हें अल्लाह से तौबः व इस्तिग़्फ़ार की दअ़वत दी और कहा कि अगर तुम लोग शिर्क से तौबः कर लोगे और अल्लाह के दीन पर अ़मल करोगे तो वह तुम्हारे खेतों और बाग़ात में ख़ूब बारिश बरसाएगा और माल व औलाद के ज़रिये तुम्हारी ताक़त बढ़ा देगा। यह लोग खेतों वाले बाग़ात वाले और बड़ी ताक़त के मालिक थे, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ज़्यादती क़ुव्वत का वादा करके ईमान की तर्ग़ीब दिलाई।

इस के बाद कहा कि देखो! अगर तुम लोग मेरी बात का इन्कार करोगे और अपने हठधर्मी पर जमे रहोगे तो अल्लाह की निगाह में बड़े मुजरिमों में से हो जाओगे।

53 قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝

लेकिन उन्होंने घमण्ड की वजह से तमाम दलीलों का इन्कार कर दिया और खुले तौर पर झूठ बोलते हुए कहा कि ऐ हूद! चूंकि तुम अपनी सच्चाई पर अब तक कोई दलील नहीं पेश कर सके, इसलिए हम केवल तुम्हारी बातों में आकर अपने मअ़बूदों (उपास्यों) को नहीं छोड़ सकते और तुम पर ईमान नहीं ला सकते हैं।

54-55 اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ۭ قَالَ اِنِّىْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ۝

उन्होंने यह भी कहा कि हम तो यह समझते हैं कि तुम जो हमारे मअ़बूदों (उपास्यों) का ऐ़ब निकालते रहते हो, इसीलिए हमारे किसी देवता ने तुम्हें पागल होने की बद्दुआ़ (श्राप) दे दिया है, जिस के नतीजे में तुम ऐसी बहकी-बहकी बातें करते हो।

ह़ज़रत हूद (अ़लै०) ने उन्हें ऐसा जवाब दिया जिस से मालूम होता है कि उन्होंने उन काफ़िरों की बातों की कोई परवाह नहीं की और कहा कि उन का भरोसा सिर्फ़ अल्लाह पर है, वही मेरी ह़िफ़ाज़त करेगा और वह सब मिलकर भी मेरी कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे। इस के बाद कहा, मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम लोग भी गवाह रहो कि मैं तुम्हारे शिर्क से बिल्कुल बरी हूँ। अब तुम लोग अपनी पूरी ताक़त लगा दो और मेरे ख़िलाफ़ जो साज़िश करना चाहो करो और मुझे कोई मोहलत न दो।

56 اِنِّىْ تَوَكَّلْتُ عَلَي اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۭ مَا مِنْ دَاۗبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

उन्होंने अपनी बात दोहराते हुए कहा कि मैंने तो उस अल्लाह पर भरोसा कर लिया है जो मेरा और तुम्हारा रब है, इसलिए तुम मुझे कोई तक्लीफ़ नहीं पहुँचा सकोगे। ज़मीन पर पाये जाने वाले हर जानदार का वही मालिक है, वह हर एक पर कुद्रत रखता है, जिस तरह़ चाहता है करता है और मेरा रब अपने मुल्क व सल्तनत में बड़े अ़द्ल व इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करता है और मैंने उसी की पनाह ले ली है और वह ज़ुल्म को गवारा नहीं करता और तुम ज़ालिम हो, इसलिए वह तुम को मुझ पर ग़ालिब नहीं होने देगा।

57 فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ۭ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـــًٔا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝

ह़ज़रत हूद (अ़लै०) ने उन से फिर कहा कि मैंने तुम्हें दअ़वते तौह़ीद (अद्वैतवाद) पहुँचा दी है। इसलिए अगर तुम लोगों ने मुँह फेरा तो अब तुम्हारे पास कोई उ़ज़्र बाक़ी नहीं रहा, अल्लाह तआ़ला तुम्हें हलाक कर देगा और तुम्हारी जगह किसी दूसरी क़ौम को लाएगा जो तुम्हारे माल की मालिक बन जाएगी और तुम्हारे कुफ़्र या तुम्हारी हलाकत से अल्लाह की हुकूमत में कोई कमी नहीं आएगी, जो कुछ नुक़्सान होगा तुम्हारा होगा और मेरा रब तो हर चीज़ की निगरानी कर रहा है, कोई चीज़ भी उस के इ़ल्म से

बाहर नहीं है, इसलिए तुम्हारे सारे आ़माल उस की निगाह में हैं और वह तुम्हें उन की सज़ा ज़रूर देगा।

58 وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝

अल्लाह का अ़ज़ाब एक ऐसा तेज़ और ख़ौफ़नाक आँधी की शक्ल में आया जिस में कोई ख़बर न थी वह सात रात और आठ दिन तक चलती रही, तमाम काफ़िर या इन्कारी हलाक हो गये और अल्लाह ने ह़ज़रत हूद (अ़लै०) और उन के मुसलमान साथियों को बचा लिया वही क़ियामत के दिन उन्हें आग के अ़ज़ाब से भी निजात देगा।

59 وَتِلْكَ عَادٌ ۫ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝

यह लोग 'क़ौमे आ़द' के नाम से जाने जाते थे। इन्होंने अल्लाह के साथ कुफ़्र किया और दुनिया की निशानियों का इन्कार कर दिया था जो अल्लाह के वजूद पर दलील थीं और मुश्रिकाना आ़माल में अपने उन घमण्डी सरदारों की पैरवी की जो अल्लाह के बन्दों को रसूलों के झुठलाने पर उभारते थे।

60 وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۔ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۔ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۝

चूंकि उन्होंने अपने घमण्डी सरदारों की पैरवी में कुफ़्र व शिर्क की राह अख़्तियार की थी, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने बतौर सज़ा उन पर इस दुनिया में लअ़नत भेज दी और आख़िरत में भी हमेशा की लअ़नत के तौर पर जहन्नम के सुपुर्द किये जाएँगे। इस तरह़ लअ़नत और अल्लाह की रह़मत से दूरी उन के लिए हर ह़ाल में लाज़िम हो गई। अल्लाह तआ़ला ने उन पर लअ़नत भेज देने का ज़रिया बयान करते हुए दोबारा फ़रमाया कि यह सब कुछ इसलिए हुआ कि उन्होंने अपने रब का इन्कार कर दिया था। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने उन पर हमेशा के लिए हलाकत व बर्बादी की बद्दुआ़ भेज दी।

मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) ने लिखा है कि यह आयत ख़बर देती है कि अल्लाह तआ़ला क़ौमे आ़द से सख़्त ग़ज़बनाक (क्रोधित) था और उन से उस की नफ़रत आख़िरी ह़द को पहुँच चुकी थी।

आयत नं० 61 से 76 तक

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا
فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ۝ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ
اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ
مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۫ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ۝ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا
تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ۝ فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ
ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ۝ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ
الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝ وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا
كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ۝ وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ
حَنِيْذٍ ۝ فَلَمَّا رَآٰ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ۝ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ
فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ۝ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِيْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا
لَشَيْءٌ عَجِيْبٌ ۝ قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ
اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ۝ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ۝ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ
هٰذَآ ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ۝

अनुवाद-

(61) और 'समूद' की ओर उनके भाई 'सालेह़' को (भेजा) तो उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह ही की इ़बादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'उसी' ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और उस में आबाद कर दिया, तो तुम 'उसी से गुनाह माफ़ कराओ और 'उसी' से तौबः करो, बेशक मेरा 'रब' निकट है और दुआ़ओं का क़ुबूल करने वाला है''। (62) उन्होंने कहा, ''ऐ सालेह़! इससे पहले हम तुम से उम्मीदें रखते थे, क्या तुम हमें उनकी इबादत से रोकते हो जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते रहे हैं? और जिसकी ओर तुम हमें बुला रहे हो इसमें हमें बड़ा सन्देह है?'' (63) (सालेह़ ने) कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! क्या तुमने सोचा, अगर मैं अपने रब की ओर से प्रमाण पर हूँ और 'उसने' मुझे अपनी रह़मत से नवाज़ा हो, तो कौन है, जो अल्लाह की पकड़ से मुझे बचाएगा, अगर मैं 'उसकी' नाफ़रमानी करूँ; तो तुम इसके सिवा और क्या कर सकते हो कि मेरी तबाही में ज़्यादती कर दो?'' (64) और ''ऐ क़ौम! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की धरती में खाए, (चरती रहे), और इसे तक्लीफ़ न देना, वरना! जल्द ही तुम्हें अ़ज़ाब आ पकड़ेगा।'' (65) फिर उन्होंने उसकी कूँचे काट डालीं (अर्थात मार डाला), तब (सालेह़ ने) कहा, ''तुम अपने घरों में तीन दिन फ़ायदा उठा लो यह ऐसा वादा है जो झूठा न होगा।'' (66) फिर जब 'हमारा' हुक्म (अ़ज़ाब का) आ पहुँचा, तो 'हमने' अपनी रह़मत से स़ालेह़ को, और उनके साथ जो ईमान लाए थे उनको, अपनी मेहरबानी से (उस अ़ज़ाब से भी) बचा लिया,

और उस दिन की रुसवाई से भी, (बचाए रखा) बेशक तुम्हारा 'रब' ज़बर्दस्त, ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) है। (67) और जो ज़ालिम थे उन्हें एक भयंकर चीख ने आ पकड़ा, तो वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये; (68) मानों वे कभी वहाँ बसे ही न थे, सुन लो! कि 'समूद' ने अपने रब से कुफ़्र किया, ख़ूब सुन लो! कि 'समूद' (रह़मत से) दूर हो गये। (69) और 'हमारे' भेजे हुए (फ़रिश्ते) 'इब्राहीम' के पास ख़ुशख़बरी लेकर आए उन्होंने कहा, "सलाम हो," उन्होंने भी कहा, ''सलाम हो,'' फिर उन्होंने कुछ देर न की, कि एक भुना हुआ बछड़ा ले आए। (70) तो जब देखा कि उनके हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ रहे, तो उन्हें अजनबी समझा और दिल में उनसे डरे, वे बोले, ''डरो नहीं! हम तो लूत की क़ौम की ओर भेजे गये हैं।'' (71) और उनकी पत्नी भी खड़ी थीं, वह उस पर हँस पड़ीं, फिर 'हमने' उनको बशारत दी इस्ह़ाक़ और इस्ह़ाक़ के बाद याक़ूब की। (72) वह बोलीं, ''अरे! मेरे सन्तान होगी? जबकि मैं तो बूढ़ी हो चुकी हूँ, और यह मेरे पति भी बूढ़े हो चुके हैं, यह तो बड़ी अ़जीब बात है।'' (73) उन्होंने कहा, ''क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर तअ़ज्जुब करती हो? अल्लाह की रह़मत और बरकतें हों तुम पर, ऐ अह़्ले बैत! बेशक 'वही' तअ़रीफ़ के लायक़ और बड़ी शान वाला है"। (74) तो जब इब्राहीम की घबराहट दूर हो गई और उन्हें ख़ुशख़बरी भी मिल गयी तो लूत की क़ौम के बारे में 'हमसे' हुज्जत करने लगे; (75) बेशक इब्राहीम बड़े सहनशील, नर्म दिल, 'हमारी' ओर रूजूअ़ होने वाले थे। (76) "ऐ इब्राहीम! इन्हें छोड़ दो, तुम्हारे रब का हुक्म आ चुका है, और इन लोगों पर ऐसा अ़ज़ाब आने वाला है जो किसी तरह टल नहीं सकता"।

आयत नं० 61 से 76 तक की व्याख्या

61 وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَٰلِحًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ وَٱسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَٱسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوٓا۟ إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّى قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ۝

इस आयते करीमा से ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) और उन की क़ौम समूद का वाक़िआ़ शुरु होता है। यह वाक़िआ़ सूरतुल् अअ़राफ़ में आयात नं० (73) से (79) तक गुज़र चुका है। यह लोग 'मदायन' में रहते थे, जो तबूक और मदीना मुनव्वरह के दर्मियान था।

ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) ह़ज़रत हूद (अ़लै०) के सौ साल बाद भेजे गये थे और दो सौ साल से ज़्यादह ज़िन्दगी पाई थी।

ह़ज़रत हूद (अ़लै०) की तरह़ इन्होंने भी अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि तुम लोग केवल अल्लाह की अ़िबादत करो, जिस के अ़लावा तुम्हारा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं है, जिस ने तुम सब को मिट्टी से पैदा किया है {ह़ज़रत आदम (अ़लै०) को मिट्टी से बनाया और जो क़त्रा (बूँद) मनी (वीर्य) इन्सान की पैदाइश का ज़रिया है} और तुम्हें ज़मीन में आबाद किया और उसे आबाद रखने की तुम्हारे अन्दर योग्यता दी, इसलिए तुम लोग शिर्क से तौबः करो और अल्लाह की तरफ़ पलटो। अल्लाह बड़ा ही क़रीब है और अपने बन्दों की दुआ़ओं को क़ुबूल फ़रमाता है।

62 قَالُوا۟ يَٰصَٰلِحُ قَدْ كُنتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَآ ۖ أَتَنْهَىٰنَآ أَن نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ ءَابَآؤُنَا ۖ وَإِنَّنَا لَفِى

شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝

ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) की दअ़वते तौह़ीद को उन लोगों ने रद्द करते हुए कहा कि ऐ सालेह़! बचपन से तुम्हारी आ़दतों को देखकर हम ने उम्मीद लगा रखी थी कि तुम हमारे सरदार बनोगे और हमें तुम से फ़ायदा पहुँचेगा, अपने हर मामले में तुम से मश्वरे लिया करेंगे, लेकिन तुम्हारी बातें सुनकर हमारी उम्मीदों पर पानी फिर गया और हमें यक़ीन हो गया कि तुम्हारे अन्दर कोई भलाई नहीं है, जब ही तो तुम हमें उन देवी-देवताओं की अ़िबादत से रोकते हो जिन की हमारे बाप-दादा अ़िबादत करते आए हैं। तुम जिस तौह़ीद (एकेश्वरवाद) की दअ़वत हमें दे रहे हो उस की सच्चाई के बारे में हमारे दिलों में बड़ा शक है।

63 قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۫ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ۝

ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) ने कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगों! मैं अपने रब की ओर से नाज़िल किये गये दीने ह़क़ पर क़ायम हूँ और उस ने मुझे नुबूव्वत से नवाज़ा है। अब ज़रा बताओ तो सही कि अगर तुम्हें ख़ुश करने के लिए उस की नाफ़रमानी करूँ तो मुझे उस के अ़ज़ाब से कौन बचाएगा? तुम जो मेरी हिम्मत पस्त कर रहे हो और चाहते हो कि दअ़वत का काम छोड़ दूँ तो इस का नतीजा उस के सिवा क्या होगा कि मैं घाटे में पड़ जाऊँगा और अल्लाह के अ़ज़ाब का ह़क़्दार हो जाऊँगा।

64 وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ۝

इस आयत की तफ़्सीर सूरतुल् अअ़राफ़ आयत नं० (73) में गुज़र चुकी है। ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) ने जब उन्हें तौह़ीद की दअ़वत दी तो उन्होंने कहा कि अगर तुम ह़क़ीक़त में अल्लाह के नबी हो तो अल्लाह से कहो कि निशानी के तौर पर इस पहाड़ से ऊँटनी निकाल दे। उन्होंने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की, अल्लाह ने उन की दुआ़ क़ुबूल कर ली और पहाड़ से ऊँटनी निकल आई तब उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि अल्लाह ने मोअ़जिज़े के तौर पर तुम्हारी माँगों के अनुसार ऊँटनी भेज दी है, तुम लोग उसे न छेड़ो, यह अल्लाह की ज़मीन में जहाँ चाहेगी जाएगी, खाएगी, पियेगी, कोई इसे न छेड़े और न तक्लीफ़ पहुँचाए वरना तुम पर बहुत जल्द अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाएगा।

65 فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ۝

लेकिन उन बद्बख़्तों ने उन की एक न सुनी और उस ऊँटनी को क़त्ल कर दिया और उन की सरकशी (दुष्टता) आख़िरी सीमा को पहुँच गई तो ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) ने अल्लाह के हुक्म से उन से कहा कि अब तुम लोग तीन दिन तक अपने घरों में रहकर अपने अन्जाम का इन्तिज़ार करो, यह अल्लाह तआ़ला का आख़िरी फ़ैसला है। उन्होंने ऊँटनी को बुध के दिन क़त्ल किया था, उस के बाद

(जुमेरात, जुमअ़ और हफ़्ता) तीन दिन तक ज़िन्दा रहे, इत्वार के दिन सुबह़ के वक़्त अल्लाह का अ़ज़ाब उन पर नाज़िल हो गया।

66 فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَ مِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) और उन के मुसलमान साथियों को उस अ़ज़ाब से बचा लिया।

67 وَ اَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝

वह हैबत नाक और ख़तरनाक चीख़ थी जो आसमान से आई थी, जिस के असर से तमाम इन्कार करने वालों के जिस्मों (शरीर) पर कपकपी तारी हो गई और देखते ही देखते सभी मौत के घाट उतर गये।

68 كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ۝

और उनकी बस्तियाँ ऐसी वीरान और सुनसान हो गईं कि जैसे पहले वहाँ कोई रहता ही न था और उन के साथ ऐसा इसलिए हुआ कि उन्होंने अपने रब का इन्कार कर दिया। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने उन पर हमेशा के लिए लअ़नत व बर्बादी मुसल्लत कर दी। यह आयत ख़बर देती है कि अल्लाह तआ़ला क़ौमे आ़द की तरह़ क़ौमे समूद पर भी ग़ज़बनाक था।

(क़ौमे समूद की बस्तियाँ)

69 وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ۝

इस आयत में ह़ज़रत लूत (अ़लै०) और उन की क़ौम के वाक़िये को बयान किया गया है। ह़ज़रत लूत (अ़लै०) ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के भतीजे थे। क़ौमे लूत की बस्तियाँ शाम (सीरिया) के इलाक़े में थीं और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) फ़िलिस्तीन में रहते थे। अल्लाह तआ़ला ने जिन फ़रिश्तों को क़ौमे लूत को हलाक करने के लिए भेजा था वहाँ जाने से पहले ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के पास आए ताकि उन्हें बेटा इस्ह़ाक़ और पोता याक़ूब की ख़ुशख़बरी दें, यह फ़रिश्ते ह़ज़रत जिब्रईल, ह़ज़रत मीकाईल, ह़ज़रत इस्राफ़ील थे।

बाज़ इतिहासकारों का ख़याल है कि उन की संख्या नौ थी और बाज़ का ख़याल है कि उन की संख्या ग्यारह थी, उन्होंने ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) से अपने बात की शुरुआ़त सलाम से की यानी 'अस्सलामु

अ़लैकुम' कहा। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने उन के सलाम का बेहतर जवाब दिया और उन्हें मेहमान समझ कर बहुत ख़ुश हुए और खाने के लिए बछड़े का भुना हुआ गोश्त पेश किया।

70 فَلَمَّا رَآٓ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ۝

लेकिन जब देखा कि वह खाने के लिए हाथ नहीं बढ़ा रहे हैं तो दिल में उन के बारे में शुब्हा होने लगा और किसी अन्जाने ख़तूरे के आने से डर गये। इसलिए कि उस ज़माने में दस्तूर यह था कि मेहमान जब किसी बुराई की नियत से आता तो मेज़बान का खाना नहीं खाता था तब उन फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ इब्राहीम! आप न डरिए, हम अल्लाह के फ़रिश्ते हैं और क़ौमे लूत को हलाक करने के लिए भेजे गये हैं।

71 وَامْرَاَتُهٗ قَاۗىِٕمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَاۗءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ۝

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और उन की बीवी दोनों ही मेहमान की ख़िद्मत में लगे हुए थे। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) बैठे थे और 'सारह' खड़ी थीं, खाने की चीज़ें मेहमानों के सामने लाकर रख रही थीं। जब उन्होंने देखा कि हम ने तो मेहमान के लिए इतना सब कुछ किया, मगर यह कैसे मेहमान हैं कि हमारा खाना नहीं खा रहे हैं इसलिए वह भी डर गये, लेकिन जब उन्होंने अपनी ह़क़ीक़त बता दी तो उन के दिल से ख़ौफ़ जाता रहा और ख़ुशी और ह़ैरत की वजह से हँस पड़े कि जिन्हें वह इन्सान समझ रहे थे वह फ़रिश्ते निकले और ख़ुश हुए कि यह लोग किसी बुराई की नियत से उन के पास नहीं आए हैं।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि वह इस ख़बर पर ख़ुश हुए कि यह लोग 'क़ौमे लूत' को हलाक करने के लिए आए हैं जिन का शर फ़साद आख़िरी सीमा को पहुँच चुका था। जब ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और उन की बीवी 'सारह' को मालूम हो गया कि यह लोग अल्लाह के फ़रिश्ते हैं तब अल्लाह ने उन फ़रिश्तों के ज़रिये सारह (अ़लै०) को इस्ह़ाक़ की और इस्ह़ाक़ के बेटे याक़ूब की ख़ुशख़बरी दी।

72 قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِيْ شَيْخًا ۭ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيْبٌ ۝

उस वक़्त 'सारह' की उ़म्र नब्बे साल की थी और एक क़ौल के मुताबिक़ निन्यान्वें साल की थी और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) एक सौ या एक सौ बीस साल के थे। जब अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को हाजिरा (अ़लै०) के पेट से इस्माईल अ़ता किया तो 'सारह' ने तमन्ना की काश! उन्हें भी बेटा होता, लेकिन अपनी बड़ी उ़म्र की वजह से नाउम्मीद थीं। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला की रह़मत जोश में आई और उन्हें बेटे की ख़ुशख़बरी दी तो 'सारह' ने तअ़ज्जुब से उन फ़रिश्तों से कहा कि मुझे लड़का कैसे हो सकता है? मैं तो नव्वे साल की बुढ़िया हूँ और मेरे शौहर भी बूढ़े हैं। यह तो बड़ी अ़जीब व ग़रीब बात होगी कि बूढ़े और बूढ़ी के मिलाप से लड़का पैदा हो।

73 قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ۣ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ۭ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

फ़रिश्तों ने 'सारह' की ह़ैरत व तअ़ज्जुब को देखकर कहा कि तुम नबी की बीवी हो, तुम से यह बात छुपी नहीं है कि अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ुद्रत (सामर्थ्य) रखता है तो फिर यह तअ़ज्जुब

कैसा? अल्लाह तआ़ला का यही फ़ैसला और यही हुक्म है। तुम लोग नबी के घराने वाले हो, तुम पर अल्लाह की रह़मत और उस की बरकतों का नुज़ूल होता रहता है और अल्लाह तो हमेशा अपने बन्दों पर नेअ़मतों की बारिश करता रहता है ताकि वह उस की तअ़रीफ़ बयान करे और उस का शुक्र अदा करे और वह हमेशा अपने बन्दों पर एह़सान करता रहता है।

74-75 فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ۝
إِنَّ إِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ أَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ۝

जब ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के दिल से डर निकल गया और उन्हें बेटे और पोते की ख़ुशख़बरी मिल गई तो क़ौमे लूत की हलाकत के बारे में फ़रिश्तों से कहने लगे कि वहाँ 'लूत' और कुछ दूसरे मुसलमान भी हैं, उन का क्या ह़ाल होगा और उन का मक़्सद यह था कि इसी बहाने अल्लाह क़ौमे लूत से अ़ज़ाब को टाल दे, इसलिए कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) बड़े ही सहनशील और रह़मदिल थे, बुरा कहने वालों से बदला लेने में जल्दी नहीं करते थे और हमेशा अल्लाह से लौ लगाए रहते थे।

इस तरह़ फ़रिश्ते ह़ज़रत इब्राहीम के पास उस वक़्त आए जब वह खेत में काम कर रहे थे, काम से फ़ारिग़ होते ही अपनी कुदाल ज़मीन पर रख दी और दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने जवाब में **'सलाम'** कहा जो अफ़्ज़ल जवाब पर दलालत करता है।

76 يٰٓإِبْرٰهِيْمُ أَعْرِضْ عَنْ هٰذَآ إِنَّهٗ قَدْ جَآءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَإِنَّهُمْ آتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ۝

फ़रिश्तों ने ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) से कहा कि अब आप इस विषय पर कोई बात न कीजिए अल्लाह का फ़ैसला हो चुका है और उन पर अ़ज़ाब आकर रहेगा, कोई दुआ़ और कोई सिफ़ारिश इसे टाल नहीं सकती है।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत की तफ़्सीर में लिखा है कि इस से मालूम हुआ कि अच्छी औलाद अल्लाह तआ़ला की नेअ़मत है और अल्लाह के नाफ़रमानों का हलाक होना भी नेअ़मत है और जब किसी को कोई ख़ुशख़बरी मिले तो उसे अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए।

आयत नं० 77 से 90 तक

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّ قَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ۝ وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ قَبْلُ
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ
رَّشِيْدٌ ۝ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَ اِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ۝ قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى
رُكْنٍ شَدِيْدٍ ۝ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا
امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ۝ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا
وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ۝ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ۘ ۝ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ
شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَ الْمِيْزَانَ اِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ۝ وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝
بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ
اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ
رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝ وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ
بِبَعِيْدٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ۝

अनुवाद-

(77) और जब 'हमारे' भेजे हुए दूत (फ़रिश्ते) लूत के पास पहुँचे, तो वह (उनके आने से) घबराए और उनकी वजह से बहुत तंग दिल हुए और बोले ''आज तो बड़ी मुसीबत का दिन है; (78) और उनकी क़ौम के लोग दौड़ते हुए उनके पास आए, और पहले ही से कुकर्म (Homosex) किया करते थे, उन्होंने कहा, ऐ क़ौम! यह मेरी बेटियाँ हैं, यह तुम्हारे लिए पवित्र हैं, तो अल्लाह से डरो, मेरे मेहमानों के मामले में मुझे रूसवा न करो, क्या तुम में कोई भी भला आदमी नहीं?'' (79) उन लोगों ने कहा, ''तुम्हें तो मालूम है कि तेरे बेटियों की हमें कोई ज़रूरत नहीं, और तुम वह भी खूब जानते हो जो कुछ हम इरादा रखते हैं।''(80) उन्होंने कहा, ''क्या ही अच्छा होता कि मुझमें तुमसे मुक़ाबले की शक्ति होती, या कोई मज़बूत सहारा होता, जिसकी मैं पनाह लेता।'' (81) उन्होंने कहा, ''ऐ लूत! हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं, ये लोग तुम तक हरगिज़ नहीं पहुँच सकते; अतः तुम रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर निकल जाओ, और तुममें से पीछे कोई व्यक्ति पलट कर न देखे, मगर तुम्हारी पत्नी, कि उस पर भी वही आफ़त आएगी जो उन पर आएगी, उन के अ़ज़ाब का वक़्त सुबह के लिए निश्चित है, तो क्या सुबह़ क़रीब नहीं?'' (82) फिर जब 'हमारा' हुक्म आ पहुँचा तो 'हमने' उसको (उलट कर) नीचे ऊपर कर दिया, और 'हमने' कंकरीले पत्थर ताबड़ तोड़ बरसाए; (83) जिन पर तुम्हारे रब के यहाँ से निशान किये हुए थे और यह ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं। (84) और मदयन की ओर उनके भाई शुऐब को (भेजा) तो उन्होंने कहा, ''ऐ क़ौम! अल्लाह

की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं, और नाप तौल में कमी न करो, मैं तो तुम्हें अच्छी ह़ालत में देख रहा हूँ, मगर मुझे तुम्हारे बारे में एक ऐसे दिन के अ़ज़ाब का डर है, जो तुम को घेर कर रहेगा; (85) ऐ मेरी क़ौम! इन्साफ़ के साथ नाप और तौल को पूरा किया करो, और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो, और ज़मीन में फ़साद न फैलाते फिरो; (86) अगर तुम को यक़ीन हो तो अल्लाह का दिया हुआ नफ़ा तुम्हारे लिए है, अगर तुम ईमान वाले हो, और मैं तुम पर रखवाला नहीं हूँ!" (87) उन्होंने कहा, "ऐ शुऐब! क्या तेरी नमाज़ तुझे यही सिखाती है कि उन्हें हम छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप-दादा पूजते आए हैं, या हमें इस बात का अधिकार नहीं कि अपने माल जिस तरह चाहें इस्तेमाल (प्रयोग) करें? तुम बड़े नर्म दिल और समझदार हो।" (88) (शुऐब ने) कहा, "ऐ मेरी क़ौम! तुमने यह भी सोचा कि अगर मैं अपने रब की ओर से रौशन दलील पर हूँ और 'उसने' अपनी ओर से मुझे अच्छी रोज़ी भी प्रदान की हो, और मैं यह नहीं चाहता कि जिन बातों से मैं तुम्हें रोकता हूँ खुद उस को करूँ, मैं तो अपने बस भर केवल सुधार चाहता हूँ, और मुझे तौफ़ीक़ का मिलना अल्लाह ही से है 'उसी' पर मेरा भरोसा है, और 'उसी' की ओर मैं रुजूअ़ होता (पलटता) हूँ; (89) और ऐ मेरी क़ौम! मेरे ख़िलाफ़ तुम्हारा विरोध कोई ऐसा काम न करा दे कि तुम पर भी वही कुछ बीते जो 'नूह़' की क़ौम, या 'हूद' की क़ौम, या 'सालेह़' की क़ौम पर बीत चुका है, और लूत की क़ौम तो तुम से कुछ दूर नहीं; (90) और अपने रब से अपने गुनाह माफ़ कराओ फिर 'उसके' आगे तौबः करो, बेशक मेरा रब बड़ी रह़मत वाला, मुह़ब्बत वाला है।"

आयत नं० 77 से 90 तक की व्याख्या

77 وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّ قَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ۝

जब वह फ़रिश्ते ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) से रुख़सत होकर ह़ज़रत लूत (अ़लै०) के पास आए तो वह ख़ूबसूरत कम उम्र नौजवान की शक्ल में थे। ह़ज़रत लूत (अ़लै०) उन्हें इस ह़ाल में देखकर परेशान हुए और दिल में सोचा कि आज का दिन तो बड़ा ही मुश्किल दिन है, मैं इन मेहमानों को बदमाशों से कैसे बचा सकूँगा?

78 وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ۝

'क़ौमे लूत' को उन ख़ूबसूरत मेहमानों के आने की ख़बर मिली तो उन के साथ लवातत (Homo Sex) की नियत से बहुत ही तेज़ी के साथ दौड़ते हुए ह़ज़रत लूत (अ़लै०) के पास पहुँच गये, इसलिए कि मर्दों के साथ बद्फ़ेअ़ली करना उन की ख़बीस आ़दत थी और शर्म व ह़या नाम की कोई चीज़ उन के अन्दर बाक़ी नहीं रह गई थी।

जब उन्होंने उन मेहमानों के साथ वही बुरा काम करना चाहा तो ह़ज़रत लूत (अ़लै०) ने मेहमानों का बचाव करते हुए और बदमाशों को ख़ैर की नसीह़त करते हुए कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! यह मेरी बेटियाँ यानी क़ौम की बच्चियाँ मौजूद हैं, तुम लोग इन से शादी कर लो, दुनिया और आख़िरत हर

एतिबार से यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर रहेंगी।

देखो! अल्लाह से डरो, ज़िना और ख़बीस लवातत (Homo Sex) करके उस की नाफ़रमानी न करो और मेहमानों को हाथ लगा कर मुझे रुस्वा न करना। क्या तुम में कोई भी ऐसा आदमी नहीं है जो इस काम से बाज़ आ जाए और नेकी की राह अख़्तियार करे?

79 قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَ اِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ۝

उन बद्बख़्तों ने हज़रत लूत (अ़लै०) की नसीहत पर कोई ध्यान नहीं दिया और बेहयाई के साथ अपने ख़बीस इरादे का इज़्हार करते हुए कहा कि ऐ लूत! तुम पहले से जानते हो कि हम औ़रतों की ख़्वाहिश नहीं रखते हैं। तुम्हें ख़ूब मालूम है कि हम क्या चाहते हैं? हमें अपनी शहवत (Sex) पूरी करने के लिए यह कम उ़म्र ख़ूबसूरत लड़के चाहिए जो तुम्हारे पास मौजूद हैं।

80 قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْۤ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ۝

जब हज़रत लूत (अ़लै०) को यक़ीन हो गया कि यह बद्बख़्त उन के मेहमानों से ज़रूर छेड़-छाड़ करेंगे तो कहा, काश! मुझ में ताक़त होती या मेरे ख़ानदान के लोग यहाँ मौजूद होते तो मैं ज़रूर तुम्हें मार भगाता और अपने मेहमानों की हिफ़ाज़त करता। यहाँ पर हज़रत लूत (अ़लै०) ने अगर लोगों का सहारा ढूंढ़ा तो इस में कोई हर्ज नहीं है। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:-

وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ कि "अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे के ज़रिये दूर न करता तो ज़मीन में फ़साद फैल जाता।" (सूरः अल् बक़र, आयत नं० 251)

इसी तरह़ नबी करीम (सल्ल०) ने अन्सार व मुहाजिरीन से मदद माँगी थी ताकि अल्लाह का दीन दूसरों तक पहुँचा सकें।

81 قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْۤا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ۝

जब फ़रिश्तों ने उन की यह दर्द भरी बात सुनी और देखा कि उन की क़ौम के बदमाश लोग उन पर चढ़ आए हैं और वह मेहमानों की ओर से मुक़ाबिला करने में बेबस हो गये हैं तो अपनी ह़क़ीक़त ज़ाहिर कर दी और कहा कि ऐ लूत! हम आप के रब के फ़रिश्ते हैं, यह लोग आप को कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेंगे, आप रात के आख़िरी समय में जब लोग सो रहे हों अपने मुस्लिम साथियों को लेकर यहाँ से निकल जाइए ताकि कोई काफ़िर आप लोगों को यहाँ से निकलने में रुकावट न डाल सकें और जब उन पर अ़ज़ाब नाज़िल किया जा रहा हो तो उस समय आप लोग उन की चीख़ व पुकार सुनकर मुड़ कर न देखिएगा, ताकि कहीं उस अ़ज़ाब का असर आप तक न पहुँच जाए लेकिन आप की बीवी पर वह अ़ज़ाब ज़रूर नाज़िल होगा, इसलिए कि वह मानने वालों में नहीं है।

कहा जाता है कि सुबह़ के वक़्त रवाना होने वाले मुसलमानों के साथ वह भी थी, लेकिन जब उस

ने चीख़ व पुकार सुनी तो मुड़ कर देखने लगी कि अचानक आसमान से एक पत्थर आया और उसे हलाक कर दिया।

एक रिवायत के मुताबिक़ ह़ज़रत लूत (अ़लै०) के पास मेहमानों के आने की ख़बर बदमाशों को इसी औ़रत ने दी थी।

82-83 فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ۝ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ۭ وَمَا هِىَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ۝

जब अ़ज़ाब का वक़्त आ गया तो अल्लाह तआ़ला के हुक्म से ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने अपना पर क़ौमे लूत की पाँचों बस्तियों के नीचे दाख़िल करके उन्हें ज़मीन की सतह़ से बहुत ऊपर उठा दिया और फिर उलट कर ज़मीन पर पलट दिया, इस के बाद उन पर लगातार पत्थरों की बारिश कर दी, जिन पर अल्लाह की ओर से हर काफ़िर के नाम लिखे थे।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यह बस्तियाँ मक्का के मुश्रिकीन से कुछ ज़्यादा दूर नहीं हैं। जब मक्का वाले शाम के सफ़र पर रवाना होते हैं तो उन बस्तियों के निशानात अपनी आँखों से देखते हैं। उन्हें देखकर नसीह़त ह़ासिल करें कि कहीं इन्हें भी क़ौमे लूत की तरह़ अल्लाह का अ़ज़ाब पकड़ न ले। उन बस्तियों की जगह अब खारे पानी का समुद्र है कि उस का पानी कोई जानदार नहीं पी सकता है, उसे 'बह़रे लूत' भी कहते हैं और उस के आस-पास की ज़मीन बन्जर है जिसमें कुछ भी नहीं उगता है।

84 وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّىْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ۝

इस आयते करीमा से ह़ज़रत शुऐब (अ़लै०) और उन की क़ौम का ज़िक्र है। यह वाक़िआ़ सूरतुल् अअ़राफ़ में आयात नं० (85) से (93) तक तफ़्सील के साथ गुज़र चुका है। ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) ने पहले अपनी क़ौम को एक अल्लाह के अ़िबादत की दअ़वत दी, उस के बाद नाप-तौल में कमी करने से मना किया जो कुफ़्र के बाद उन की दूसरी बुरी सिफ़त थी। जब किसी से कोई चीज़ ख़रीदते तो बड़ा पैमाना इस्तेमाल करते और जब कोई चीज़ बेचते तो छोटा पैमाना इस्तेमाल करते। फिर कहा कि तुम्हें अल्लाह तआ़ला ने बहुत सी नेअ़मतों से नवाज़ रखा है, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे गुनाहों की वजह से यह नेअ़मतें तुम से छिन जाएँ और कोई दर्दनाक अ़ज़ाब तुम्हें अपनी गिरफ़्त में ले ले।

85 وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَاۗءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝

पहले नाप-तौल में कमी करने से मना फ़रमाया। अब उसी की ताकीद के तौर पर कहा कि जब लोगों के साथ ख़रीद व फ़रोख़्त का मामला करो तो इन्साफ़ का ख़याल रखते हुए पूरा नापो और तौलो। इस के बाद मज़ीद ताकीद (warning) के तौर पर कहा कि लोगों के हुक़ूक़ की अदाएगी में कमी न करो,

चाहे वह नाप तौल में हो या कोई और मामला हो और ज़मीन में फसाद न फैलाओ और **'फ़साद'** में हर वह अ़मल दाख़िल है जिस से अल्लाह की नाफ़रमानी होती हो (जैसे- शिर्क और अल्लाह के दीन से लोगों को रोकना) या बन्दों के हुक़ूक़ न दिये जा रहे हो। जैसे- चोरी करना, डाका डालना और नाप-तौल में कमी करना वग़ैरह।

86 بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝

आख़िर में ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) ने उन्हें नसीह़त की कि लोगों के हुक़ूक़ इन्साफ़ के साथ अदा करने के बाद तुम्हारे पास अल्लाह का दिया हुआ जो ह़लाल माल बच जाए वह उस माल से ज़्यादा बरकत वाला है जो नाप तौल में कमी करके और लोगों के हुक़ूक़ मार कर चोरी और डाका ज़नी के ज़रिये ह़ासिल किया जाए।

इस के बाद उन से कहा कि मैं तो अल्लाह के दीन का दाअ़ी हूँ अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर रहा हूँ तुम पर निगराँ मुक़र्रर नहीं किया गया हूँ कि तुम्हें ज़बरदस्ती बुरे आ़माल से रोक दूँ।

87 قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ۭ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ۝

ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) कसरत से नमाज़ पढ़ते और अल्लाह के ज़िक्र में मश्गूल रहते थे, इसलिए काफ़िरों ने उन की दअ़वत को ठुकराते हुए कहा कि ऐ शुऐ़ब! क्या तुम्हारी नमाज़ें तुम्हें हुक्म देती हैं कि हम उन मअ़बूदों (उपास्यों) को छोड़ दें जिन की हमारे बाप-दादा अ़िबादत करते थे या अपने माल के बढ़ावे के लिए जो कुछ हम करते आए हैं उसे छोड़ दें। तुम तो ख़ानदान और क़ौम में बहुत ही सूझ-बूझ वाले समझे जाते थे, फिर यह बहकी-बहकी बातें क्यों करते हो?

88 قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰي بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰي مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ۭ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۭ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝

ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) ने उन के कुफ़्र व हठधर्मी और मज़ाक का जवाब देते हुए कहा कि लोगो! अल्लाह ने मुझे इ़ल्म व नुबूव्वत की नेअ़मत से नवाज़ा है और मेरी ह़लाल रोज़ी में ख़ूब उस्अ़त अ़ता फ़रमाई है, तो क्या मेरे लिए यह मुनासिब है कि सिर्फ़ तुम्हें ख़ुश रखने के लिए अल्लाह की वह्य में ख़यानत करूँ? लोगों को शिर्क व ज़ुल्म से रोकना और सुधार की दअ़वत देना छोड़ दूँ? और मैं नहीं चाहता कि जिन कामों से तुम्हें रोकता हूँ वही मैं ख़ुद करूँ तुम्हें तो बुतों की अ़िबादत से मना करूँ और ख़ुद उस पर अ़मल न करूँ और मैंने जो तुम्हें ख़ैर के काम करने की दअ़वत दी है और बुराई से रोका है, तो मेरा मक़्सद तुम्हारा सुधार है और मुझे हर ख़ैर की तौफ़ीक़ देने वाला अल्लाह है। मेरा भरोसा तो केवल उसी पर है, ख़ुशी ग़म हर ह़ाल में मेरा ठिकाना सिर्फ़ वही है।

89 وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ۭ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ۝

उन्हें कुफ़्र व हठधर्मी से डराते हुए कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! मेरी दुश्मनी और मुख़ालिफ़त (विरोध) की वजह से अपने कुफ़्र व फ़साद पर इस्रार न करो वरना तुम पर भी अल्लाह का अ़ज़ाब उसी तरह़ नाज़िल हो जाएगा जिस तरह़ क़ौमे नूह़, क़ौमे हूद, क़ौमे सालेह़ और क़ौमे लूत पर तुम से पहले नाज़िल हो चुका है और क़ौमे लूत का ज़माना और उन का इलाक़ा तुम से कुछ ज़्यादा दूर नहीं है और उन पर अल्लाह तआ़ला का जो अ़ज़ाब आया वह तुम्हें मालूम है और इस का सब से बड़ा ज़रिया यह था कि उन्होंने कुफ़्र व हठधर्मी पर इस्रार किया और ह़ज़रत लूत (अ़लै०) की बात को ठुकरा दिया।

90 وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ۝

अ़ज़ाब से डराने के बाद उन्हें नसीह़त की कि वह बुतों की अ़िबादत से तौबः कर लें, अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब करें, तौह़ीद पर अ़मल करे और नाप-तौल में कमी करने से बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह बड़ा ही मेहरबान और अपने बन्दों से मुह़ब्बत करने वाला है। वह यक़ीनन उन्हें माफ़ कर देगा और उन पर रह़म करेगा।

आयत नं० 91 से 109 तक

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۖ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ
اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَاۗءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾ وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۭ
سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۭ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۭ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا
بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ
بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۭ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿٩٨﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ بِئْسَ
الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿٩٩﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَاۗىِٕمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ
عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَاۗءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۭ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿١٠١﴾ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ
اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ۭ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿١٠٢﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ۭ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ
النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿١٠٣﴾ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿١٠٤﴾ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿١٠٥﴾
فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿١٠٦﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَاۗءَ رَبُّكَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ
فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿١٠٧﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَاۗءَ رَبُّكَ ۭ عَطَاۗءً غَيْرَ
مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٨﴾ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَاۗءِ ۭ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَاۗؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ۭ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿١٠٩﴾

अनुवाद-

(91) उन्होंने कहा, "ऐ शुऐब! तुम्हारी बहुत सी बातें तो हमारी समझ में नहीं आतीं, और हम तो तुम को अपने बीच कमज़ोर ही देखते हैं, और अगर तुम हमारी बिरादरी के आदमी न होते, तो हम तुमको संगसार(पत्थर मार-मार कर ख़त्म) कर देते और तुम हम पर ग़ालिब (प्रभावी) नहीं हो"। (92) उन्होंने कहा, "ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरी बिरादरी', तुम पर अल्लाह से भी ज़्यादा है, कि अल्लाह को तुम ने पीछे डाल दिया! तुम जो कुछ भी कर रहे हो मेरा 'रब' सब अहाता किये हुए है; (93) और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो मैं भी कर रहा हूँ, जल्द ही तुम को मालूम हो जाएगा कि किस पर अ़ज़ाब आएगा, जो उसे ज़लील कर के रहेगा और कौन है जो झूठा है? और तुम भी इन्तिज़ार करो, तुम्हारे साथ मैं भी इन्तिज़ार करता हूँ।" (94) और जब 'हमारा' हुक्म (अ़ज़ाब का) आया, तो 'हमने' शुऐब को और उन लोगों को जो उन पर ईमान लाए थे, अपनी रह़मत से बचा लिया; और जो ज़ालिम थे उनको चिंघाड़ ने आ पकड़ा, तो सुबह को औंधे पड़े रह गये; (95) मानो वह वहाँ कभी बसे ही न थे, सुन लो! मदयन वालों को (रह़मत से) दूरी हुई जैसी दूरी समूद को हो चुकी थी।" (96) और 'हमने' मूसा को अपनी निशानियों और खुली दलील के साथ भेजा, (97) फ़िरऔ़न और उसके सरदारों की ओर तो वह लोग फ़िरऔ़न ही के हुक्म पर चलते रहे और फ़िरऔ़न का हुक्म ठीक न था; (98) वह क़ियामत के दिन अपनी क़ौम के आगे-आगे होगा और उनको आग में जा उतारेगा, और बहुत ही बुरा घाट है वह उतरने का; (99) और यहाँ (दुनिया में)

भी लअ़नत उनके पीछे लगी रही, और क़ियामत के दिन भी, बुरा बदला है जो उनको मिलेगा। (100) यह उन बस्तियों की कुछ ख़बरें हैं जो 'हम' आप से बयान करते हैं उनमें से कुछ क़ायम हैं और कुछ उजड़ गयीं। (101) और 'हमने' उन लोगों पर जुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने खुद अपने आप पर जुल्म किया, फिर जब आप के 'रब' का हुक्म आ गया; तो उनके वे मअ़बूद जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे उनके कुछ भी काम न आ सके, और उन्होंने विनाश के अ़लावा उनके लिए किसी और चीज़ में ज़्यादती नहीं की। (102) और आपके रब की पकड़ ऐसी ही होती है, जब 'वह' किसी ज़ालिम बस्ती को पकड़ता है, बेशक 'उसकी' पकड़ बड़ी दर्दनाक, बड़ी सख़्त होती है। (103) बेशक इसमें उस व्यक्ति के लिए निशानी है, जो आख़िरत के अ़ज़ाब से डरे यह ऐसा दिन होगा जिसमें सारे लोग इकट्ठा किये जाएँगे; और यही वह दिन होगा, जिसमें सब (अल्लाह के सामने) हाज़िर किये जाएँगे। (104) और 'हमने' उसको एक निश्चित समय तक के लिए ही रोक रखा है; (105) जिस दिन वह आएगा तो उसकी इजाज़त के बिना कोई व्यक्ति बात भी न कर सकेगा, फिर उनमें भी कुछ बदबख्त (अभागे) होंगे, और कुछ भग्यशाली। (106) तो जो बदबख्त होंगे वह आग में होंगे उसमें वे चीख़ और पुकार करेंगे। (107) हमेशा उसी में पड़े रहेंगे जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम है, मगर सिवाय उतना जितना तुम्हारा रब चाहे, बेशक तुम्हारा रब जो चाहता है कर डालता है; (108) और जो नेक लोग होंगे तो वे जन्नत में (जाएँगे) जहाँ वे हमेशा रहेंगे, जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम है, मगर जितना तुम्हारा रब चाहे, यह एक ऐसा उपहार है जो कभी न टूटेगा। (109) तो यह लोग जिनकी इ़बादत करते हैं उनके सम्बन्ध में तुम किसी तरह के धोखे में न पड़ना, जैसी पूजा पहले उनके बाप-दादा करते आए हैं, वैसी ही यह भी करते हैं; 'हम' तो इनका हिस्सा बिना किसी कमी के उनको पूरा-पूरा देने वाले हैं।

आयत नं० 91 से 109 तक की व्याख्या

91 قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۖ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ۝

उन्होंने मज़ाक़ के अन्दाज़ में कहा कि ऐ शुऐब! तुम्हारी बातें तो हमें समझ में नहीं आतीं, तुम मौत के बाद दोबारा उठाए जाने तौह़ीद (एकेश्वरवाद) और माल में ह़लाल व ह़राम की बातें करते हो, यह सब बातें क़ाबिले क़ुबूल नहीं हैं और तुम अपनी इन्हीं बातों की वजह से सब से कट कर अकेले रह गए हो, तुम्हारी कोई ह़ैसियत नहीं है। अगर तुम्हारी क़ौम का ख़याल न होता तो हम तुम्हें पत्थरों से मार-मार कर ख़त्म कर देते और तुम हमारी नज़र में कोई ह़ैसियत नहीं रखते कि तुम्हें रज्म (पत्थरों द्वारा हलाक) न करते। यह केवल तुम्हारी क़ौम का ख़याल है कि तुम्हें अब तक छोड़ रखा है इसलिए कि वह लोग हमारे दीन पर हैं।

92 قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَاۗءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝

ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) ने कहा कि मेरा ख़ानदान तुम्हारी नज़र में अल्लाह के यहाँ ज़्यादह इ़ज़्ज़त

वाला है। तुम लोगों ने उस के दीन, उस के हुक्म और उस की वह्य को ठुकरा दिया है और मेरे ख़ानदान के काफ़िरों का ख़याल कर के मुझ पर एहसान जता रहे हो। बेशक! मेरा रब तुम्हारे तमाम करतूतों को ख़ूब जानता है और वह तुम्हें इस की सज़ा ज़रूर देगा।

93 وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ۝

जब ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) उन की तरफ़ से बिल्कुल नाउम्मीद हो गए तो कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! तुम लोग अपने इन्कार की राह पर चलते जाओ और जो कुछ करना चाहो करो, मैं भी सब्र के साथ अपनी राह पर क़ायम हूँ। तुम लोग जल्द ही जान लोगे कि अल्लाह का अ़ज़ाब किस तरह़ अपनी गिरफ़्त में ले लेता है और अब तुम लोग अपनी हलाकत व बर्बादी का इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ। देखो! अब मालूम हो जाएगा कि कौन झूठा है।

94-95 وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ۝

जब अल्लाह का अ़ज़ाब ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) की क़ौम पर नाज़िल हुआ तो अल्लाह ने ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) और उन के मुसलमान साथियों को अपने करम से उन के ईमान की बदौलत उस अ़ज़ाब से बचा लिया और जिन लोगों ने कुफ़्र व हठधर्मी की वजह से अपने आप पर और लोगों का माल नाजायज़ तौर पर लेकर दूसरों पर ज़ुल्म किया था, उन्हें अल्लाह के अ़ज़ाब ने अपनी गिरफ़्त में ले लिया। वह अ़ज़ाब ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) की एक सख़्त चीख़ थी जिस के असर से उन की रुहें उन के जिस्मों से निकल गईं।

'सूरतुल् अअ़राफ़' और 'सूरः अ़न्कबूत' में आया है कि सख़्त ज़ल्ज़ला आया जिस से तमाम लोग हलाक हो गये, यह ज़ल्ज़ला ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) की तेज़ चीख़ का ही नतीजा था और यह अ़ज़ाब ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) की बस्ती वालों पर आया था।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) को 'ऐका' वालों के लिए भी नबी बनाकर भेजा था, उन्होंने भी नाफ़रमानी की तो अल्लाह ने उन्हें एक आग के ज़रिये हलाक कर दिया, जो आसमान से आई थी।

ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) की चीख़ का यह असर हुआ कि वह तमाम लोग अपने घरों में ही मर गये और इस तरह़ ख़त्म हो गये कि जैसे वहाँ कभी यह लोग आबाद ही नहीं थे। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने उन पर हमेशा के लिए हलाकत व बर्बादी मुसल्लत कर दी, जिस तरह़ क़ौमे समूद पर इस से पहले मुसल्लत कर दी थी, इसलिए कि उन के इलाक़े एक दूसरे के क़रीब थे। कुफ़्र व सरकशी और डाका ज़नी में भी एक जैसे थे और दोनों क़ौमें देहात में रहती थीं।

96-97 وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ۝

इस आयते करीमा से आयत नं० (98) तक ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और फ़िरऔ़न का वाक़िआ़ बहुत ही संक्षेप के साथ बयान किया गया है और यह सातवाँ वाक़िआ़ है जो इस सूरः में अम्बिया-ए-किराम और उन की क़ौमों के वाक़िआ़त के बारे में बयान हुआ है। **'आयात'** और سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ के माने को तय करने में मुफ़स्सिरीन की कई बातें हैं।

एक क़ौल यह है कि **'आयात'** का मतलब वह नौ निशानियाँ हैं जो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को दी थी और سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ का मतलब अ़सा-ए-मूसवी (लाठी) है जो नौ निशानियों में शामिल है, चूंकि उस की एक ख़ास हैसियत थी इसीलिए इस का ज़िक्र किया गया है और फ़िरऔ़न के साथ केवल उन सरदार क़ौम का ज़िक्र इसलिए किया गया है कि अ़वाम अपने तमाम कामों में उन्हीं सरदारों की पैरवी करते थे और सरदार अपने कुफ़्र व हठधर्मी में फ़िरऔ़न के तरीक़े पर चलते थे, जिस का हर मामला गुमराही लिए हुए था।

98 يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ۝

क़ियामत के दिन फ़िरऔ़न जहन्नम की तरफ़ जाते हुए अपनी क़ौम के आगे-आगे चलेगा, जिस तरह़ दुनिया में गुमराही की राहों पर चलने में उन से पेश-पेश रहता था यहाँ तक कि उन सब को जहन्नम में पहुँचा देगा।

इस आयत में फ़िरऔ़न को उस पहले जानवर से तश्बीह (संज्ञा) दी गई है जो तालाब से पानी पीने के लिए जाते वक़्त सब जानवरों से आगे होता है और उस के पैरोकार पीछे होते हैं और जहन्नम की आग को तालाब के पानी की तरह़ बताया।

अल्लाह तआ़ला ने इस के बाद फ़रमाया कि जहन्नम की आग बड़ा ही बुरा घाट होगा जहाँ वह लोग पहुँचेंगे, इसलिए कि पानी से प्यास बुझती है कलेजा ठंडा होता है और आग तो सीना को जला देती है और अन्तड़ियों को काट कर बाहर निकाल देती है।

99 وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ۝

जहन्नम जैसे बुरे ठिकाने का ह़ाल बयान करने के बाद बद्क़िस्मत फ़िरऔ़नियों का ह़ाल बयान किया जा रहा है कि अल्लाह की लअ़नत उन पर इस दुनिया में तो भेज दी गई थी, आख़िरत में भी उन पर लअ़नत बरसेगी यानी वह जहाँ भी होंगे अल्लाह की रह़मत से दूर होंगे।

100 ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ۝

अल्लाह तआ़ला ने सात अम्बिया-ए-किराम और उन की क़ौमों के वाक़िआ़त बयान करने के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) से फ़रमाया कि हम यह वाक़िआ़त इसलिए बयान कर रहे हैं ताकि आप कुफ़्फ़ारे मक्का को सुना दें, शायद कि वह उन के अन्जाम से नसीह़त ह़ासिल करें। उन बस्तियों में से बाज़ के खण्डरात अब भी बाक़ी हैं और बाज़ के निशानात मिट चुके हैं।

101 وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ۝

उन क़ौमों को हलाक कर के अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया क्योंकि कुफ़्र व गुनाह की वजह से उन्होंने ख़ुद अपने लिए हलाकत व बर्बादी का सामान किया और जब उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हुआ तो उन के झूठे मअ़बूद उन के कुछ भी काम न आए बल्कि दुनिया व आख़िरत में वही उन की बर्बादी का ज़रिया बने।

102 وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ۝

अल्लाह तआ़ला की हमेशा से यह सुन्नत रही है कि वह ज़ालिमों की ज़रूर पकड़ करता है, इसलिए ज़ालिमों को बुरे अन्जाम से डरते रहना चाहिए।

103-104 اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۝ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ۝

पिछली क़ौमों का दर्दनाक अन्जाम इस सूरः में बयान किया गया है ताकि इस में उन लोगों के लिए इ़बरत हो जो आख़िरत के अ़ज़ाब से डरते हैं क्योंकि इन से फ़ायदा वही लोग उठाएँगे और वह दिन ऐसा होगा जब तमाम इन्सान क़ियामत के मैदान में जमा किये जाएँगे और हिसाब व किताब के बाद अल्लाह तआ़ला हर एक को उस के अ़मल का बदला देगा।

105-108 يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ۝

क़ियामत के दिन कोई शख़्स भी अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर एक कलिमा न अपने दिफ़ा (बचाव) के लिए अपनी ज़बान से निकालेगा और न ही किसी की सिफ़ारिश में बोलेगा, लेकिन सूरः नह़ल आयत नं० (111) में आया है कि हर आदमी उस दिन अपनी निजात के लिए झगड़ा करेगा।

يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا और सूरः अनआ़म आयत नं० (23) में आया है कि मुश्रिकीन कहेंगे رَبَّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ कि "ऐ हमारे रब! हम लोग मुश्रिक नहीं थे।" इसलिए उ़ल्म-ए-तफ़्सीर ने इन दोनों क़िस्म की आयतों को इस तरह़ बयान किया है कि मैदाने मह़शर में लोगों के ह़ालात मुख़्तलिफ़ (भिन्न) होंगे, कभी तो किसी की ज़बान गुंग होगी और कभी कोई अपनी निजात के लिए झगड़ रहा होगा।

क़ियामत के दिन कुछ लोग ऐसे बद्बख़्त होंगे जिन का ठिकाना जहन्नम होगा और ग़म के मारे उन के सीनों से आहें उठ रही होंगी, वहाँ हमेशा के लिए रहेंगे। सिवाय यह कि अल्लाह किसी को अपने फ़ज़्ल व करम से इस में न डाले, यह कि नाफ़रमान लोगों को एक मुद्दत के बाद जहन्नम से निकाल

दे। ऐसी सूरत में कि فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا इबादत काफ़िर और मुसलमान गुनाहगारों सब को शामिल होगी और यह बात तो ह़दीस से साबित है कि अल्लाह पर ईमान रखने वाले जहन्नम से कभी न कभी निकाल दिये जाएँगे और उस दिन कुछ लोग ख़ुश क़िस्मत होंगे जिन्हें हमेशा के लिए जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा जिस की नेअ़मतें कभी ख़त्म न होंगी।

109 فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَٰؤُلَاءِ ۚ مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤُهُم مِّن قَبْلُ ۚ وَإِنَّا لَمُوَفُّوهُمْ نَصِيبَهُمْ غَيْرَ مَنقُوصٍ ﴿١٠٩﴾

इस आयत में रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा जा रहा है, लेकिन बताना दूसरे लोगों को है, जिन के दिल व दिमाग़ में मूर्तियों के झूठे मअ़बूद होने में किसी क़िस्म का शक हो। इसलिए कि आप (सल्ल०) इस क़िस्म के शक से क़तई तौर पर पाक थे। आयत का माना यह है कि आप इन्कारियों के मअ़बूदों (उपास्यों) के ग़लत होने में बिल्कुल शुब्हा न करें। उन के मअ़बूद (उपास्य) भी उन के बाप दादों के मअ़बूदों की तरह़ झूठे और ग़लत हैं और हम उन के बाप दादों की तरह़ उन्हें भी अ़ज़ाब देंगे और इस में कोई कमी नहीं करेंगे।

आयत नं० 110 से 123 तक

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝
وَ اِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ فَاسْتَقِمْ كَمَاۤ اُمِرْتَ وَ مَنْ تَابَ مَعَكَ وَ لَا تَطْغَوْا ؕ
اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَ لَا تَرْكَنُوْۤا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝
وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۝ وَ اصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا
يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَلَوْ لَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا
مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَاۤ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ وَ مَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا
مُصْلِحُوْنَ ۝ وَ لَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ لَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ۝ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَ لِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَ تَمَّتْ
كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَ كُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ
وَ جَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَ مَوْعِظَةٌ وَّ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَ قُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ۝ وَ انْتَظِرُوْا ۚ
اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝ وَ لِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَ تَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَ مَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

अनुवाद-

(110) और 'हम' मूसा को भी किताब दे चुके हैं फिर वे लोग उसमें भेद डालने लगे, अगर तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले ही निश्चित न कर दी गयी होती, तो उनके बीच कभी का फ़ैसला कर दिया गया होता, यह 'उसकी' ओर से शक में पड़े हुए डाँवाडोल हैं। (111) और (बेशक समय आने पर) हर-एक को, तुम्हारा 'रब' उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला ज़रूर देगा बेशक जो कुछ वे कर रहे हैं, 'उसे' उसकी पूरी ख़बर है। (112) सो जैसा तुम को हुक्म हुआ है जमे रहो और वह लोग भी जिन्होंने तुम्हारे साथ तौबः की, और हद से आगे न बढ़ना, जो कुछ भी तुम करते हो 'वह' उसे देख रहा है। (113) और उनकी ओर मत झुकना, जिन्होंने जुल्म किया, वरना आग तुम्हें आ लिपटेगी, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई न दोस्त होगा और न तुम्हारी मदद ही की जाएगी; (114) और नमाज़ क़ायम करो, दिन के दोनों सिरों पर, और रात के कुछ हिस्से में; बेशक नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं; उनके हक़ में यह चेतावनी है, जो चेतावनी को याद रखने वाले हैं; (115) और सब्र से काम लो क्योंकि अल्लाह अच्छे कामों का अज्र (बदला) बेकार नहीं करता। (116) तो तुम से पहले जो नस्लें गुज़र चुकी हैं, उनमें ऐसे भले समझदार क्यों न हुए, जो धरती में बिगाड़ से रोकते? उन थोड़े से लोगों के सिवा जिनको उनमें से 'हमने' बचा लिया, और जो ज़ालिम थे वह तो उसी ऐश के सामानों के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया था, और वे तो थे ही अपराधी। (117) और आप का रब तो ऐसा नहीं है कि बस्तियों को नाहक़ तबाह कर दे, जबकि वहाँ के लोग नेकोंकार हों। (118) और अगर आपका रब चाहता तो 'वह' सारे लोगों को एक ही राह पर कर देता, मगर वे हमेशा विभेद करते ही रहेंगे; (119) सिवाय उनके कि जिन पर तुम्हारा रब रहमत करे, और इसीलिए 'उसने' उन्हें पैदा किया, और तुम्हारे रब की यह बात पूरी होकर रही कि 'मैं' जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों दोनों से भर

दूँगा"। (120) (ऐ मुहम्मद) और रसूलों के जितने क़िस्से 'हम' आप को सुनाते हैं, उसके ज़रिये 'हम' आप के दिल को मज़बूत करते हैं, इसमें आपके पास हक़ पहुँच गया, और ईमान वालों के लिए नसीहत और इब्रत (सबक़) है। (121) और जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कह दीजिए, "कि तुम अपनी जगह काम किये जाओ हम भी काम कर रहे हैं; (122) और तुम भी इन्तिज़ार करो और हम भी इन्तिज़ार करते हैं"। (123) और अल्लाह ही का है, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में छिपा है, और हर मामले का पलटना उसी की ओर है, तो 'उसी' की इबादत करो और 'उसी' पर भरोसा रखो, और जो कुछ तुम करते हो, उससे तुम्हारा 'रब' बेख़बर नहीं है।

आयत नं० 110 से 123 तक की व्याख्या

110 وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝

इसमें रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तसल्ली दी जा रही है कि हम ने हज़रत मूसा (अलै०) को तौरेत दिया था तो लोग उस के बारे में दो जमाअ़तों (समूहों) में बट गये, कुछ लोग उस पर ईमान लाए और कुछ लोगों ने उस का इन्कार कर दिया। इसी तरह कुछ लोगों ने इस में मौजूद हुक्मों पर अ़मल किया और कुछ लोगों ने अ़मल नहीं किया तो ऐ मेरे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! कुर्आन करीम के सिलसिले में भी कुफ़्फ़ार का रवय्या देखकर आप मायूस न हों। अगर पहले से अल्लाह का फ़ैसला न होता कि क़ियामत के दिन तक के लिए अ़ज़ाब को उन से दूर कर दिया जाए तो फ़ौरन ही उन का फ़ैसला कर दिया जाता।

आयत का एक दूसरा अर्थ यह बयान किया गया है कि अल्लाह की रहमत उस के ग़ज़ब पर भारी है, इसीलिए अल्लाह ने उन्हें ढ़ील दे दिया है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं की है। हक़ीक़त यह है कि इन्कारी कुर्आन के बारे में शक करते हैं।

111 وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ۭ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन अगली और पिछली तमाम उम्मतों को जमा करेगा, हर एक को उस के आ़माल का पूरा बदला देगा। अगर अच्छा अ़मल होगा तो अच्छा बदला देगा और अगर बुरा अ़मल होगा तो बुरा बदला देगा। उन का कोई काम भी अल्लाह से छुपा हुआ नहीं है चाहे छोटा हो या बड़ा, अच्छा हो या बुरा। आयत के इस हिस्से में नेक अ़मल करने वालों के लिए जन्नत का वादा और बुरे अ़मल करने वालों के लिए जहन्नम की धमकी है।

112 فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۭ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल और दूसरे मोमिन बन्दों को दीने हक़ पर हर हाल में साबित क़दम रहने का हुक्म दिया है, इसलिए दुश्मनाने दीन पर ग़ालिब आने का यही सब

से बड़ा ज़रिया है और अल्लाह के ख़िलाफ़ बग़ावत व सरकशी से मना किया गया है इसलिए कि हलाकत व बर्बादी का यही ज़रिया है। 'ह़सन बसरी' कहते हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, तैयार हो जाओ! इस के बाद आप हंसते हुए नहीं देखे गये। इसीलिए नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया था कि मुझे सूरः हूद ने बूढ़ा बना दिया। (तिर्मिज़ी)

और बग़ावत व सरकशी से मुराद जुल्म व ज़्यादती, अल्लाह ने जो हुदूद (सीमाएँ) मुक़र्रर की हैं उन से बढ़ना, अ़िबादतों में ज़्यादती करना और गुनाहों पर इस्रार करना है।

113 وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों को हुक्म दिया है कि वह उन लोगों की तरफ़ मायल (आकर्षित) न हों जिन्होंने शिर्क व गुनाह का काम करके ज़ुल्म की राह अपना ली है, इसलिए कि यह उन के मुश्रिकाना आ़माल से राज़ी होने की दलील होगी।

मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) ने इस आयत के बारे में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया है कि यहाँ ज़ुल्म से मुराद केवल शिर्क है और ज़ुल्म करने वालों से मुराद मुश्रिकीन हैं या ज़ुल्म से मुराद हर वह काम है जिस पर ज़ुल्म साबित होता है और ज़ुल्म करने वालों से मुराद मुश्रिक और ग़ैर मुश्रिक सभी हैं।

ह़ज़रत औ़फ़ी ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से पहला क़ौल नक़्ल किया है, लेकिन मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक हमेशा लफ़्ज़ आ़म मुराद होता है न कि ख़ुसूसी, लेकिन ऐसी सूरत में सवाल यह पैदा होता है कि नबी करीम (सल्ल०) की ह़दीसों से साबित है कि मुस्लिम हुक्मरान की इताअ़त करो चाहे वह ह़ब्शी क्यों न हो, जिस का सर किश्मिश की तरह़ हो।

दूसरी सह़ीह़ ह़दीसों में है कि जब तक वह नमाज़ क़ायम करें, खुला इन्कार न करें और अल्लाह की नाफ़रमानी का हुक्म न दें उन की फ़रमाँबरदारी वाजिब है।

अब अगर कोई शख़्स इन ह़दीसों के पेशेनज़र किसी ज़ुल्म करने वाले हुक्मरान की बात मानते हुए उस की हुकूमत में दीनी मसायल को क़ुबूल करता है, हुदूद को क़ायम करने में उस के साथ मदद करता है और मुसलमानों के मसायल को सामने रखते हुए दूसरे कामों को संभालने और चलाने में उस का साथ देता है तो क्या वह इस आयत में ज़ुल्म का ह़क़्दार होगा? उ़ल्मा ने इस का इन्कार किया है और कहा है कि अगर वह दिल से उस के ज़ुल्म की ताईद (समर्थन) नहीं करता है तो वह इस का ह़क़्दार नहीं होगा।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि यह आयते करीमा ज़ुल्म से मुमानिअ़त और उस पर अल्लाह की तरफ़ से धमकी की बड़ी दलील है, इसलिए कि जब ज़ुल्म करने वालों के लिए अपने दिल में नर्मी रखने वालों की सज़ा जहन्नम बताई गई है तो उन का ह़ाल क्या होगा जिन की ज़िन्दगी ज़ुल्म व बरबरयित में डूबी हुई है।

114 وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۭ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ۭ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۝

आयत नं० (112) में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) और मुसलमानों को दीन पर क़ायम रहने का हुक्म दिया है। चूंकि नमाज़ ईमान की जड़ है इसीलिए यहाँ इस का ज़िक्र ख़ुसूसी तौर पर आया है।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि वह दिन के शुरु और आख़िर में और आख़िरी पहर रात में नमाज़ पढ़ा करें। 'इब्ने जरीर' के नज़्दीक इस से मुराद फ़ज्र, मग़्रिब और रात की आख़िरी पहर की नमाज़ है।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि मुम्किन है यह आयत पंचगाना नमाज़ों से पहले नाज़िल हुई हो। जब तुलूअ़ शम्स (प्रातः काल) और ग़ुरूब शम्स (सांय काल) के पहले सिर्फ़ दो नमाज़ें वाजिब थीं और क़यामुल्लैल आप (सल्ल०) और तमाम मुसलमानों पर वाजिब था। इस के बाद आ़म मुसलमानों से क़यामुल्लैल का वाजिब होना ख़त्म हो गया और आप (सल्ल०) के लिए इस का वाजिब होना बाक़ी रहा, फिर कुछ दिनों के बाद एक क़ौल के मुताबिक़ आप (सल्ल०) से भी इस का वाजिब होना ख़त्म हो गया।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि नेकियाँ बुराईयों को ख़त्म कर देती हैं और चूंकि नेकियों में नमाज़ का दर्जा बहुत ही ऊँचा है इसलिए यह यक़ीनन बुराईयों को मिटा देती है।

इमाम अह़मद ने ह़ज़रत अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि०) से रिवायत की है कि जब किसी मोमिन से किसी गुनाह का काम हो जाता है और वुज़ू कर के दो रकअ़त नमाज़ पढ़ लेता है तो उस का वह गुनाह माफ़ कर दिया जाता है।

इस आयत के शाने नुज़ूल में 'इमाम बुख़ारी व मुस्लिम' वग़ैरह ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत की है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया और कहा कि मैं शहर के आस-पास के इलाक़े में एक औ़रत का इलाज कर रहा था तो उसे बिना छुए मुझ से गुनाह हो गया यानी मैंने उस का बोसा ले लिया। जैसा कि बाज़ रिवायतों में इस का साफ़ ज़िक्र है। आप मेरे बारे में अपना हुक्म फ़रमा दें, आप (सल्ल०) ख़ामोश रहे, वह आदमी जाने लगा तो आप ने उसे बुला लिया और यही आयत तिलावत फ़रमाई। यानी इस गुनाह के बाद तुम ने जो नेक अ़मल किया है उस ने इस गुनाह को ख़त्म कर दिया है। यह देखकर एक सह़ाबी ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या यह हुक्म उसी के साथ ख़ास है? तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यह तमाम मुसलमानों के लिए आ़म है।

इमाम मुस्लिम ने ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "आदमी जब तक बड़े गुनाहों से बचता रहेगा उस की हर दो नमाज़ें उन के दर्मियान के गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा बनती रहेंगी।" **(मुस्लिम)**

115 وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

आयत नं० (115) में नबी करीम (सल्ल०) को उन तमाम मशक़्क़तों पर सब्र की तल्क़ीन की गई है जो दअ़वत व तब्लीग़ की राह में पेश आएँ और ख़ासतौर से इन मशक़्क़तों पर जो नमाज़ों की पाबन्दी

और मह़दूद अवक़ात में उन की अदाएगी के लिए उठानी पड़े। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः ताहा आयत नं० (132) में फ़रमाया है وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا कि "आप नमाज़ों की अदाएगी पर सब्र करें और उस पर जमे रहें"।

116 فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ أُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝

यहाँ दोबारा उन पिछली उम्मतों की तबाही का सबब बयान किया जा रहा है जिन के वाक़िआ़त तफ़्सील के साथ ऊपर बयान किये जा चुके हैं। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इसलिए जड़ से काट दिया और मिटा दिया कि जब उन में गुनाह आ़म हो गया तो हलाक होने वालों में कोई ऐसा आदमी न था जो लोगों को भलाई का हुक्म देता और बुराई से रोकता, सिवाय उन चन्द लोगों के जिन को अल्लाह ने उस अ़ज़ाब से निजात दी। उन ज़ालिमों को अल्लाह तआ़ला ने ऐसा डुबो दिया कि आख़िरत से ग़ाफ़िल हो गये और दीनी, अख़्लाक़ी और समाजी घिनौने जरायम कर के अल्लाह की निगाह में मुजरिम बन गये तो इन आ़माल मुजरिमाना के सबब हलाक कर दिये गये।

117 وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّأَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ۝

इस आयते करीमा की तफ़्सीर दो तरह़ से बयान की गई है। एक तो यह कि अगर कोई मुश्रिक़ क़ौम आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ का ख़याल रखती है और ज़ुल्म व ज़्यादती नहीं करती, मज़बूत कमज़ोर का ह़क़ नहीं मारता तो केवल शिर्क की वजह से अल्लाह तआ़ला उसे हलाक नहीं करता। इस तरह़ हुकूमत कुफ़्र के साथ तो बाक़ी रहती है, लेकिन ज़ुल्म के साथ बाक़ी नहीं रहती। जब कोई क़ौम या हुकूमत ज़ालिम बन जाती है तो अल्लाह तआ़ला उसे ख़त्म कर देता है।

दूसरी तफ़्सीर यह बयान की गई है कि जब तक कोई क़ौम भलाई का हुक्म देती और बुराई से रोकती है अल्लाह तआ़ला शिर्क की वजह से उसे हलाक नहीं करता है इसलिए कि किसी क़ौम में तमाम बुराईयों की जड़ यह है कि उस के दानिश्वर लोग भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना बन्द कर दें।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः आले इ़मरान की आयत नं० (104) में फ़रमाया है-

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ أُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ कि "तुम में से एक जमाअ़त ऐसी होनी चाहिए जो भलाई की तरफ़ बुलाए और नेक कामों का हुक्म करे और बुरे कामों से रोके और यही लोग कामियाब होने वाले हैं और नबी करीम (सल्ल०) की सह़ीह़ ह़दीस में है कि अगर लोग बुराई को देखकर ख़ामोश रहेंगे और उसे बदलने की कोशिश नहीं करेंगे तो बहुत मुम्किन है कि अल्लाह का अ़ज़ाब उन को पकड़ ले।

118-119 وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ۝ إِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۚ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि वह इस बात पर पूरी क़ुद्रत रखता है कि

तमाम इन्सान को कुफ़्र या ईमान की सिर्फ़ एक राह पर इकट्ठा कर दे, सब को कुफ़्र पर जमा कर दे या सब को इस्लाम पर जमा कर दे, लेकिन उस ने ऐसा नहीं चाहा इसलिए ऐसा नहीं हुआ लोग इख़्तिलाफ़ (मतभेद) करते रहेंगे यहाँ तक कि क़ियामत आ जाएगी। अलबत्ता उन में जिन के ह़ाल पर अल्लाह ने रह़म किया वह अपने वक़्त के नबी के सह़ी दीन पर क़ायम रहे और उनकी नस्ल भी उन्हीं पर अ़मल करती रही, यहाँ तक कि नबी करीम (सल्ल०) अल्लाह का आख़िरी दीन लेकर दुनिया में तश्रीफ़ लाए तो उन्होंने उन की पैरवी की, उन पर ईमान ले आए और उन का साथ दिया तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दुनिया व आख़िरत की नेअ़मतों से नवाज़ा और यही लोग कामियाब कहलाए और अब तक जो भी कुर्आन व सुन्नत की इस राह पर है वह उन लोगों में से होगा जिन के ह़ाल पर अल्लाह ने रह़म किया।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उस ने इन्सानों को इसीलिए पैदा किया कि अ़क़ीदे (आस्था) के इख़्तिलाफ़ के नतीजे में उन की एक जमाअ़त जन्नत में जाए और एक जहन्नम में। इसलिए अल्लाह का यह फ़ैसला है कि वह नाफ़रमान जिन्नों और इन्सानों के ज़रिये जहन्नम को ज़रूर भरेगा।

120 وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

पिछले अम्बिया-ए-किराम और उन की क़ौमों के ह़ालात बयान करने का मक़्सद यह है कि नबी करीम (सल्ल०) की हिम्मत अफ़्ज़ाई की जाए और उन्हें बताया जाए कि कुफ़्फ़ारे मक्का आप के साथ जैसा मामला कर रहे हैं इस पर आप परेशान न हों। पिछली उम्मतों ने भी अपने नबियों के साथ ऐसा ही मामला किया था, लेकिन अल्लाह ने अपने रसूल की मदद की और उन को काफ़िरों पर विजय दी तो आप के साथ भी ऐसा ही होगा, मक्का वालों की तबाही होगी और आप को अल्लाह इ़ज़्ज़त वाला बनाएगा और दीन इस्लाम फैल कर रहेगा।

121-122 وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ۝ وَانْتَظِرُوْا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝

इन दोनों आयतों में मुश्रिकीने मक्का को सख़्त धमकी दी जा रही है कि अगर तुम दअ़वते इस्लाम को क़ुबूल नहीं करते हो और अपने कुफ़्र पर तुम्हें इस्रार है तो ठीक है, फिर तुम अपनी जगह जो चाहे करो, हम भी अपनी जगह इस्लाम पर जमे रहते हैं और तुम भी अपने बुरे अन्जाम का इन्तिज़ार कर लो, हम भी अल्लाह की ओर से मदद का इन्तिज़ार कर लेते हैं।

123 وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

इस आयते करीमा में भी अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली और कुफ़्फ़ारे कुरैश को धमकी दी है कि अल्लाह तआ़ला सब कुछ जानता है, इसलिए ऐ मेरे नबी! आप अल्लाह पर भरोसा कीजिए और उस की इ़बादत में लगे रहिए और काफ़िरों को उन के ह़ाल पर छोड़ दीजिए। अल्लाह उन के तमाम कामों को देख रहा है और उनकी उन्हें सज़ा देकर रहेगा।

(भाग–12)

सूर–ए–यूसुफ़

(सूरः नं.12)

तफ़्सीर सूरः यूसुफ़

नाम– इस का नाम सूरः यूसुफ़ इसलिए रखा गया है कि इस की अक्सर आयतों का सम्बन्ध ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से है।

आयत के नाज़िल होने का ज़माना–

यह सूरः मक्की है। इब्ने जौज़ी (रह़०) ने इस पर उ़ल्मा की सहमति नक़्ल की है, इसे सूरः हूद को मुकम्मल करने वाली भी कहा जाता है इसलिए कि सूरः हूद में सात अम्बिया-ए-किराम और उन की क़ौमों के वाक़िआ़त बयान किये जाने के बाद इस सूरः में ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का वाक़िआ़ तफ़्सील के साथ बयान किया गया है और इस के विषय भी लगभग वही हैं जो मक्की सूरतों के होते हैं यानी लोगों को अल्लाह तआ़ला की ओर दअ़वत देना और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की हिम्मत बढ़ाना और उन्हें तसल्ली देना कि अम्बिया-ए-किराम हमेशा ही आज़्माइशों से गुज़र कर अपनी दअ़वत में कामियाब होते रहें और यह कि जिस तरह़ ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने जेल में सख़्त आज़्माइशों से गुज़रने के बाद मिस्र की हुकूमत तक पहुँचे और उन के भाईयों को उन के पास पनाह लेनी पड़ी।

इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला अपने नबी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को भी कुफ़्फ़ारे कुरैश पर कामियाबी देगा और उन्हें आप के सामने घुटने टेकने पड़ेंगे और तारीख़ गवाह है कि ऐसा ही हुआ, फ़तेह़ मक्का के बाद कुफ़्फ़ारे कुरैश आप (सल्ल०) के पास जमा किये गए तो आप ने उनसे सवाल किया कि तुम मुझ से क्या उम्मीद रखते हो? मैं तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव करुँगा? उन्होंने कहा कि आप हमारे मेहरबान भाई हैं और मेहरबान बाप के बेटे हैं तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैं आज तुम्हें वही कहता हूँ जो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अपने भाईयों से कहा था कि आज तुम पर कोई पाबन्दी नहीं। जाओ! तुम सब आज़ाद हो।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का सपना

इस सूरः में ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के क़िस्से को 'अह़सनुल् क़सस' बताया गया है और साथ ही यह भी फ़रमाया कि इस से पहले आप इस क़िस्से को नहीं जानते थे। आप को इस का इ़ल्म केवल वह्य के ज़रिये हुआ है, लोगों को आप का बताना आप के नुबूव्वत की दलील है और कुर्आन मजीद के ह़क़ होने की भी। तस्दीक़ करने वाले जब सुनेंगे और ग़ौर करेंगे तो यह समझ लेंगे कि यह वाक़ई अल्लाह तआ़ला की किताब है। यह भी फ़रमाया कि हम ने कुर्आन को अ़रबी ज़बान में नाज़िल किया।

कुर्आन मजीद के पहले मुख़ातब (audience) अ़रब के लोग ही थे, उन्हें इस के समझने में कोई परेशानी न थी। अगर कुर्आन दूसरी भाषा में होता तो वह कह सकते थे कि यह ज़बान हमारी समझ में नहीं आती। जब कुर्आन अ़रबी में नाज़िल हुआ तो अ़रब वालों के लिए ज़रूरी था कि इस की तस्दीक़

(पुष्टि) करते, लेकिन जिन्हें ईमान लाना न था वह ज़िद और हठधर्मी ही पर अड़े रहे और इन्कार पर जमे रहे। यहूदियों के लिए नसीहत और समझने की बात थी, उन्हें हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का क़िस्सा मालूम था वह यह भी जानते थे कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने किसी से पढ़ा नहीं आप का कोई उस्ताद नहीं था जिस ने आप को पिछले नबियों के क़िस्से बताए हों। यह सब कुछ जानने के बावजूद आ़मतौर पर यहूदी (Generaly) इन्कारी रहे और उन में से कुछ ने सूरः यूसुफ़ सुनकर इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि एक यहूदी आ़लिम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया उस वक़्त आप सूरः यूसुफ़ तिलावत फ़रमा रहे थे। वह कहने लगा कि ऐ मुहम्मद (सल्ल०)! यह सूरः आप को किस ने सिखाई है? फ़रमाया कि यह सूरः मुझे अल्लाह तआ़ला ने सिखाई है, उसे बड़ा तअ़ज्जुब हुआ और यहूदियों के पास वापस पहुँच कर उस ने कहा कि अल्लाह की क़सम! वह इसी तरह क़ुर्आन पढ़ते हैं जैसा कि तौरेत में (बाज़ चीज़ें) नाज़िल हुईं, उस के बाद वह उन लोगों को अपने साथ लेकर आया।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुए तो आप को उन सिफ़ात से पहचान लिया जिन्हें वह जानते थे और मुहरे नुबूव्वत को भी आप के दोनों शानों के दर्मियान देख लिया। फिर आप का क़ुर्आन सुनने लगे कि आप सूरः यूसुफ़ तिलावत फ़रमा रहे थे, उन्हें भी तअ़ज्जुब हुआ और फिर उसी वक़्त मुसलमान हो गये। **(दुर्रे मन्सूर पेज 2 भाग 4)**

हज़रत याक़ूब (अ़लै०) के बेटे हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) थे {यह वही याक़ूब हैं जिन का लक़ब इस्राईल था, यह हज़रत इस्ह़ाक़ (अ़लै०) के बेटे थे और हज़रत इस्ह़ाक़ हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के बेटे थे।}

हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) अपने वालिद के छोटे बेटे और यह दूसरी बीवी से थे। इन का एक ह़क़ीक़ी भाई था, जिस का नाम बिन्यामीन बताया जाता है। पहली बीवी से भी हज़रत याक़ूब (अ़लै०) की औलाद थी उन में जो बेटे थे उन की संख्या दस थी। हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने एक दिन अपने वालिद से कहा कि मैंने यह ख़्वाब देखा है कि मुझे चाँद, सूरज और ग्यारह सितारे सज्दः कर रहे हैं, उन के वालिद के ज़ेहन में उस की यह तअ़बीर (Explanation) आ गई कि यूसुफ़ बुलन्दी वाला होगा और उस के ग्यारह भाई और माँ-बाप उसे सज्दः करेंगे।

हज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने अपने बेटे से कहा कि तुम यह ख़्वाब अपने भाईयों को न सुनाना, वह इस ख़्वाब को सुनकर ग्यारह की तअ़दाद पर ग़ौर करेंगे तो समझ लेंगे कि तुम को अल्लाह बुलन्दी देगा और वह लोग तुम्हारे मुक़ाबिले में कम रहेंगे, ख़्वाब की तअ़बीर से प्रभावित होकर अन्देशा है कि वह कोई ऐसी तद्बीर (चाल) न कर बैठें जिस से तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुँच जाए। (अल्लाह के हुक्म के सामने किसी की कोई तद्बीर (चाल) कामियाब नहीं हो सकती किसी को अच्छा लगे या न लगे बहरह़ाल वही होगा जो अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर होगा) अल्लाह तआ़ला जिसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाए वह ज़रूर बुलन्द होगा, लेकिन ह़सद (Jealous) करने वाले अपनी जिहालत और बेवकूफ़ी में शैतान के समझाने बुझाने

से उस के विरोध में तद्बीरें करते हैं, जिस की इ़ल्मी, अ़मली और मर्तबः की बुलन्दी का अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से फ़ैसला हो चुका होता है। यह मुख़ालिफ़ीन सब ज़लील होकर रह जाते हैं जिसे अल्लाह तआ़ला आगे बढ़ाए वह बढ़ कर ही रहता है। ह़सद (ईर्ष्या) बुरी चीज़ है, ह़ासिद अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी नहीं होता और चाहता है कि अल्लाह तआ़ला के फ़ैसले को रद्द कर दे।

ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने अपने बेटे को पहले तो यह नसीह़त की कि तू अपना सपना अपने भाईयों से बयान मत करना और फिर फ़रमाया कि मैं समझ रहा हूँ और यक़ीन कर रहा हूँ कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें चुन लेगा और तुम्हें ख़्वाब की तअ़बीर का इ़ल्म भी अ़ता फ़रमाएगा और तुम पर अपना इन्आ़म पूरा फ़रमाएगा जिस में नुबूव्वत का अ़ता फ़रमाना भी है। अल्लाह तआ़ला तुम पर और आले याक़ूब पर अपना इन्आ़म पूरा फ़रमाएगा जैसा कि इस से पहले तुम्हारे परदादा ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) पर और तुम्हारे दादा ह़ज़रात इस्ह़ाक़ (अ़लै०) पर इन्आ़म फ़रमाया था إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ (बेशक तुम्हारा रब इ़ल्म वाला ह़िक्मत वाला है) उस के फ़ैसले इ़ल्म और ह़िक्मत के मुताबिक़ हैं।

आयत नं० 1 से 18 तक

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ
اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝ قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰۤى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ۝ وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَاۤ اَتَمَّهَا
عَلٰۤى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖۤ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ
وَ اَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰۤى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ
وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَ اَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ
كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَالَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ۝ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَ يَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ
لَحٰفِظُوْنَ ۝ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ۝ قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ
عُصْبَةٌ اِنَّاۤ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْۤا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝
وَجَآءُوْۤ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَ تَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَاۤ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا
صٰدِقِيْنَ ۝ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ۝

अनुवाद-

(1) अलिफ़्- लाम्- रा। यह स्पष्ट किताब की आयतें हैं। (2) 'हमने' इस कुर्आन को अ़रबी में उतारा है ताकि तुम समझो। (3) 'हमने' जो यह कुर्आन आपके पास वह्य के ज़रिये भेजा है उसके ज़रिये आप को एक बहुत ही अच्छा क़िस्सा सुनाते हैं, और आप उससे पहले बेख़बर थे। (4) जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा, ''ऐ मेरे अब्बा जान! मैंने (सपने में) ग्यारह सितारे देखे, और सूर्य और चाँद; मैंने उन्हें देखा कि वे मुझे सज्दः कर रहे हैं"। (5) उन्होंने कहा, ''ऐ बेटे! अपना सपना अपने भाइयों को मत बताना, नहीं तो वे तेरे ख़िलाफ चाल चलेंगे, कि शैतान तो इन्सान का खुला दुश्मन है"। (6) और इसी तरह तुम्हारा 'रब' तुम्हें चुन लेगा, और तुम्हें अस्ल बातों की ह़क़ीक़त मालूम करना सिखाएगा और 'वह' अपनी नेअ़मत तुम पर और याक़ूब की सन्तान पर, उसी तरह पूरी कर देगा जिस तरह इससे पहले वह तुम्हारे बाप-दादा इब्राहीम और इस्ह़ाक़ पर पूरी कर चुका है, बेशक तुम्हारा रब इल्म वाला, ह़िकमत वाला है। (7) हाँ, यूसुफ़ और उसके भाइयों में सवाल करने वालों के लिए निशानियाँ हैं; (8) जब उन्होंने कहा, "यूसुफ़ और उसका भाई, हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्रिय है, हालाँकि हम एक पूरा जत्था (एक गिरोह) हैं, बेशक हमारे बाप खुली ग़लती पर हैं, (9) तो यूसुफ़ को क़त्ल करो, या उसको किसी जगह फेंक आओ ताकि तुम्हारे बाप का ध्यान तुम्हारी ही ओर हो जाए, उसके बाद तुम अच्छी हालत में हो जाओगे। (10) उनमें से एक कहने वाला बोल उठा, "यूसुफ़ को जान से न मारो, (अगर तुम्हें कुछ करना ही है) और उसको किसी अंधेरे कुएँ में डाल दो कि कोई राह चलता मुसाफ़िर उसे निकाल ले जाए, अगर तुम को करना हैं"। (11) (भाईयो ने) कहा, ''ऐ

हमारे अब्बा जान! आप को क्या हो गया है? कि यूसुफ़ के मामले में आप हम पर भरोसा नहीं करते हालाँकि हम तो उसके ख़ैरख़्वाह (हितैषी) हैं; (12) हमारे साथ कल उसे भेज दीजिए कि वह खाये-पिये और खेले-कूदे, और उसकी रक्षा के लिए हम तो हैं ही"। (13) (याकूब ने) कहा, "यह बात कि तुम उसे ले जाओ मुझे दुःखी कर देती है, कि कहीं ऐसा न हो कि तुम उसका ध्यान न रख सको और भेड़िया उसे खा जाए"। (14) वे बोले, "अगर उसको भेड़िया खा जाए हमारे पूरे जत्थे के होते हुए, तो हम बिल्कुल नाकारा होंगे"। (15) फिर जब वे उनको ले गये और तय कर लिया कि उन्हें अंधेरे कुएँ में डाल दें, और 'हमने' यूसुफ की ओर वह्य भेजी, कि "तुम इनको इनके इस व्यवहार को (एक वक्त) जतलाओगे और वह (तुमको) जान भी न पाएँगे"। (16) और वे अपने बाप के पास अ़िशा के वक़्त (शुरू रात में) रोते हुए आये, (17) बोले, "अब्बा जान! हम सब आपस में दौड़ने और एक-दूसरे से आगे निकलने में लग गये, और हम ने यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ दिया था, तो भेड़िया खा गया और आप तो हम पर भरोसा करेंगे नहीं! चाहे हम (कितने ही) सच्चे हों"। (18) और उनके कुर्ते पर झूठ-मूठ का खून लगा लाए, बोले, "हाँ तुम ने अपने आप से एक बात बना ली है, तो अब सब्र ही करना अच्छा है, जो बात तुम बता रहे हो उसमें अल्लाह ही से मदद चाहिए"।

आयत नं० 1 से 18 तक की व्याख्या

1 الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝

'हुरूफ़ मुक़त्तआ़त' के बारे में कहा जा चुका है कि उन का मतलब केवल अल्लाह तआ़ला ही जानते हैं। इस बारे में एक क़ौल यह है कि अल्लाह तआ़ला इस वाक्य (Sentence) के ज़रिये साबित करना चाहते हैं कि कुर्आन इन्हीं ह़र्फ़ (अक्षरों) से बना है जिन से इन्सानों का वाक्य पूरा होता है, लेकिन अहले अ़रब में से कोई भी ऐसा कलाम न ला सका। यह इस बात की दलील (Evidence) है कि कुर्आन अल्लाह का कलाम है।

الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ से मुराद कुर्आन करीम है। यह अल्लाह की वह किताब है जो ह़लाल व ह़राम, शरीअ़त के हुदूद और उन तमाम चीज़ों को बयान करती है जो इन्सान की ज़िन्दगी में पेश आते हैं।

2 اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने इस किताब यानी कुर्आन को अ़रबी ज़बान में इसलिए नाज़िल फ़रमाया कि सबसे पहले अ़रब वालों के सामने पेश किया गया। अगर किसी दूसरी ज़बान में नाज़िल हुआ होता तो बात पूरी न होती और अ़रब कहते कि यह हमारी ज़बान में नहीं है, इसलिए हम इस के मुख़ातब (Audience) नहीं हैं। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः फ़ुस्सिलत आयत नं० (44) में फ़रमाया है कि "अगर हम इस कुर्आन को किसी अज्मी ज़बान में नाज़िल करते तो अहले अ़रब कहते कि इस की आयतों को हमारी ज़बान में बयान क्यों नहीं किया गया?" और इसलिए भी यह कुर्आन अ़रबी ज़बान में नाज़िल हुआ कि यह दुनिया की वह ज़बान है जो अपने अन्दर गहराई लिए हुए है, इस के दामन में बड़ी उस्अ़त है जो

इन्सानी दिल व दिमाग़ में पाये जा सकते हैं।

ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह़०) कहते हैं कि दुनिया की अफ़्ज़ल किताब अफ़्ज़ल (श्रेष्ठ) ज़बान में, बाइ़ज़्ज़त रसूल पर, अमानतदार फ़रिश्ते के ज़रिये मुह़तरम ज़मीन पर, अफ़्ज़ल महीना यानी माहे रमज़ान में नाज़िल हुई, इसलिए इस किताबे अ़ज़ीम को हर एतिबार से कमाले शर्फ़ (श्रेष्ठता) ह़ासिल है।

3 نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝

कुर्आन करीम की इस सूरः में अल्लाह तआ़ला ने जो वाक़िआ़ बयान किया है उसे اَحْسَنَ الْقَصَصِ इसलिए कहा है कि इस का अन्दाज़ बहुत अच्छा और इस का उस्लूब साहित्य से भरा हुआ है और इस में जो ख़बरें बयान की गई हैं वह बिल्कुल सच्ची हैं और जो नसीह़तें और इ़ल्म व ह़िक्मत के जो मोती इस में बिखेरे गये हैं वह बड़े ही काम के और क़ीमती हैं।

नबी करीम (सल्ल०) इस वाक़िये के बारे में वह्य नाज़िल होने से पहले कुछ भी नहीं जानते थे। इसी न जानने को यहाँ आप के दर्जा की बुलन्दी की वजह से 'ग़फ़्लत' शब्द का प्रयोग किया गया है।

4 اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अपने बाप ह़ज़रत याकूब बिन इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम (अ़लै०) से अपना ख़्वाब इसलिए बयान किया कि वह उन के इ़ल्म को समझते थे और उन की मुह़ब्बत में डूबे हुए थे तो सोचा कि अपना ख़्वाब बयान कर दूँ। अगर इस में मेरा कोई नुक़्सान होगा तो वह इस से बचने में मेरी मदद करेंगे।

यहाँ ग्यारह सितारों से मुराद ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के ग्यारह भाई और सूरज व चाँद से मुराद उन के माँ-बाप हैं। जैसा कि आगे मालूम होगा कि इस ख़्वाब के चालीस साल बाद जब अल्लाह तआ़ला ने मिस्र में उन के वालिदैन और भाईयों को जमा किया तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की तअ़ज़ीम (सम्मान) में सब लोगों ने उन के सामने सज्दः किया जो ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) के दीन में जायज़ था, लेकिन अब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की शरीअ़त है इसमें किसी तरह़ का किसी के लिए सज्दः जायज़ नहीं, न तअ़ज़ीमी (सम्मानीय) न इ़बादती।

5 قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝

ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) के लिए इस ख़्वाब की तअ़बीर बिल्कुल साफ़ थी कि अल्लाह तआ़ला उन के उस बेटे को बड़ा मक़ाम अ़ता करेगा और उन के तमाम भाई उन से कमतर होंगे और एक दिन उन सब को उन के सामने झुकना पड़ेगा, इसीलिए डरे कि अगर इस ख़्वाब का उन के सौतेले भाईयों को पता चल गया तो उन्हें नुक़्सान पहुँचाने की कोशिश करेंगे। इस पर उन्हें नसीह़त की, कि यह ख़्वाब अपने भाईयों के सामने बयान न करें क्योंकि शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है, उस की पूरी कोशिश होगी कि उन के भाईयों को उन के ख़िलाफ़ उक्साये और उन्हें किसी ऐसी बात पर आमादा करे जो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के लिए नुक़्सानदेह हो।

मुफ़स्सिर 'इब्ने अ़रबी' लिखते हैं कि इस से यह बात मालूम हुई कि भाई और दूसरे रिश्तेदार ह़सद (ईर्ष्या) करते हैं और यह भी मालूम हुआ कि ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) ख़्वाब की तअ़बीर (मतलब) जान गये थे और उन पर उस का अच्छा असर पड़ा, इसलिए कि हर आदमी चाहता है कि उस का लड़का उस से अच्छा हो, लेकिन भाई अपने भाई के लिए ऐसा नहीं चाहता।

6 وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

यानी तुम्हारे इस सपने की तअ़बीर यह है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें अपना नबी बनाएगा और अपने तमाम बन्दों पर तुम्हें फ़ौक़ियत (श्रेष्ठता) देगा और उन्हें तुम्हारे लिए इस तरह़ कर देगा जिस तरह़ तुम ने सितारे, सूरज और चाँद को अपने सामने सज्दः करते देखा है और तुम्हें सपने की ह़क़ीक़त का इ़ल्म अ़ता फ़रमाएगा।

चुनाँचे 'क़ुर्तुबी' ने लिखा है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की तअ़बीर में तमाम लोगों से आगे बढ़ गए थे और तुम्हें बादशाहत के साथ इ़ल्म नुबूव्वत भी देगा या तुम्हें दोनों जहान की भलाईयाँ देगा और मुल्क व नुबूव्वत की नेअ़मतें तुम्हारे भाईयों, तुम्हारी औलाद और बाद में आने वाली नस्लों को भी देगा। जिस तरह़ उस ने इस से पहले तुम्हारे दादा ह़ज़रत इस्ह़ाक़ (अ़लै०) और परदादा ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को नुबूव्वत व रिसालत और दूसरी नेअ़मतों से नवाज़ा था। ह़ज़रत इस्ह़ाक़ (अ़लै०) को नुबूव्वत दी और ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) जैसा बेटा और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) जैसा पोता अ़ता किया और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को अपना ख़लील (सच्चा दोस्त) बनाया और आग से निजात दी।

7 لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) और उन के भाइयों के इस क़िस्से के बारे में अहले मक्का कुछ भी नहीं जानते थे और न रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ही इस की कोई ख़बर थी। अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को इस की ख़बर देने के लिए क़ुर्आन में यह सूरः नाज़िल फ़रमाई और आप (सल्ल०) ने फिर अहले मक्का के सामने इस की तिलावत की तो वहाँ के लोगों को इस का इ़ल्म हुआ। यह इस बात की दलील थी कि आप (सल्ल०) अल्लाह के नबी थे اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ में इसी तरफ़ इशारा है।

इस वाक़िये से तीन अहम बातें समझ में आती हैं:-

पहली बात तो यह है कि अल्लाह तआ़ला नुबूव्वत व रिसालत जिसे चाहता है अ़ता करता है।

दूसरी बात यह है कि अल्लाह तआ़ला अगर किसी को कोई नेअ़मत देना चाहे तो कोई उसे रोक नहीं सकता और अल्लाह तआ़ला जिस की ह़िफ़ाज़त करे उस का कोई एक बाल भी बिगाड़ नहीं सकता।

तीसरी बात यह है कि शैतान की चालों से अम्बिया भी महफ़ूज़ नहीं रहते, इसीलिए वह हर वक़्त उस की चालों से बचने के लिए अल्लाह से दुआ़ करते रहते हैं।

8 اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

उन्होंने कहा कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) और उस का सगा भाई 'बिन्यामीन' हमारे बाप की नज़र में हम से ज़्यादा मह़बूब हैं ह़ालाँकि हमारी तअ़दाद ज़्यादा है, हम ज़्यादा ताक़तवर हैं और बाप की ज़्यादा ख़िद्मत कर सकते हैं, इसलिए हम उन दो छोटे बच्चों से ज़्यादा मुह़ब्बत के ह़क़्दार हैं। ह़क़ीक़त यह है कि हमारे बाप की राय बिलकुल ही ग़लत है। भाईयों को ह़सद की वजह से सोचने की तौफ़ीक़ ही नहीं हुई कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से इस दर्जे मुह़ब्बत का सबब वह आसार थे जो उन में ज़ाहिर थे और वह ख़्वाब था जो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने देखा था, फिर जिस की ख़बर भाईयों को हो गई थी और बिन्यामीन से इसलिए मुह़ब्बत करते थे कि वह ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के सगे भाई और ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) के सब से छोटे लड़के थे और इन्सान अक्सर छोटे बच्चे की तरफ़ ज़्यादा मायल होता है।

9 اِقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝

भाईयों को ख़्वाब की ख़बर मिल चुकी थी। कहा जाता है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने बचपन की सादगी में आकर ख़ुद ही उन लोगों से बयान कर दिया था, चुनाँचे उन के ह़सद की आग भड़क उठी और उन के ख़िलाफ़ साज़िश करने लगे। उन्होंने शायद यह बात ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का मज़ाक़ उड़ाते हुए भी कही थी कि देखते हैं उस का ख़्वाब क्या करिश्मा दिखलाता है। उन का गुमान था कि जब वह ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को क़त्ल कर देंगे या किसी ऐसी नामालूम जगह में उसे डाल देंगे जिस का इ़ल्म उन के बाप को नहीं होगा और न ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) वहाँ से ख़ुद वापस आ सकेंगे तो उन के बाप ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के बजाए उन्हें अपनी पूरी मुह़ब्बत देने लगेंगे और वह लोग बाद में अपने गुनाह से अल्लाह के सामने तौबः कर लेंगे।

'इब्ने इस्ह़ाक़' कहते हैं कि उन का यह ज़ालिमाना फ़ैसला कई बड़े गुनाहों का पेश ख़ेमा (Back ground) था। उन्होंने रिश्ते का कोई ख़याल नहीं रखा, वालिदैन की नाफ़रमानी की, छोटे बच्चे पर रह़म नहीं खाया जिस ने कोई ग़ल्ती नहीं की थी और बूढ़े बाप के जज़्बात की क़द्र नहीं की और उन के छोटे बच्चे को उन से बेरह़मी के साथ अलग कर देना चाहा, अल्लाह उन्हें माफ़ करे।

10 قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝

कहा जाता है कि यह कहने वाला उन का बड़ा भाई था और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का नाम उस ने इसलिए लिया था कि भाईयों को उन पर कुछ रह़म आए और उन्हें क़त्ल न करें। उस ने कहा कि अगर तुम्हें यूसुफ़ को उस के बाप से जुदा करने पर इस्रार है तो तुम लोग उसे किसी ऐसे गहरे कुएँ में डाल दो जिस में पत्थर नहीं होता, कोई क़ाफ़िला वहाँ से गुज़रेगा और पानी के लिए जाएगा तो उन्हें यूसुफ़ मिल जाएगा जिसे वह ग़ुलाम बना लेंगे और अपने साथ ले जाएँगे। इस तरह़ तुम्हारा मक़्सद ह़ल हो जाएगा कि यूसुफ़ अपने बाप के पास दोबारा नहीं आ सकेगा।

11 قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ۝

इस आयत से पता चलता है कि ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने उन की आँखों में बुराई को देख लिया

था और भाँप गये थे कि वह लोग हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के बारे में कुछ अच्छा नहीं सोच रहे हैं।

12 اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَ يَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝

इसलिए कि अगर आप ने हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को इसी तरह़ एक जगह बन्द रखा तो उस के अन्दर निशात और ज़िन्दगी नहीं पैदा होगी और दूसरे नौजवानों की तरह़ मज़बूत और सेह़तमन्द नहीं होगा।

13 قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ۝

ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने उन के सामने दो उ़ज़्र पेश किये, एक तो यह कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की जुदाई उन्हें ग़मग़ीन बना देगी और दूसरा यह कि मुम्किन है वह लोग खेल-कूद और खाने-पीने में लग जाएँ और अचानक भेड़िया आकर ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को उठा ले जाए।

14 قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝

चूंकि दूसरे उ़ज़्र का तअ़ल्लुक़ ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की ज़िन्दगी से था, इसीलिए उन्होंने इसी को सामने रखते हुए जवाब दिया।

15 فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

वह लोग ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को ले तो गए थे यह कहकर कि इस का ख़याल करेंगे और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) उन के साथ खेलेंगे कूदेंगे, लेकिन अन्दुरुनी तौर पर उन्होंने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ (सहमति) कर रखा था कि उन्हें एक गहरे कुआँ में डाल देंगे।

सुद्दी और दूसरे मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि जूँ ही लोग ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) की आँखों से ओझल हुए उन्हें मारना पीटना और गाली देना शुरु कर दिया, फिर उस कुआँ के पास लाए जिस में उन्हें डाल देना पहले से तय कर रखा था, फिर रस्सी में बाँध कर उस में फेंक दिया। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को वह्य के ज़रिये इत्मिनान दिलाया ताकि उन की परेशानी दूर हो और उन्हें बता दिया कि वह उन्हें भाईयों की इस साज़िश से निजात देगा और वक़्त आएगा कि वह अपनी ज़बान से यह पूरा क़िस्सा उन्हें सुनाएँगे।

16 وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ۝

उन्होंने अपने बाप को धोका देने के लिए यह उ़ज़्र पेश किया ताकि उन्हें यक़ीन आ जाए कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) इस दुनिया से रुख़सत हो गए और धीरे-धीरे उन के दिल से ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की मुह़ब्बत निकल जाए और उन के भाईयों को पूरी मुह़ब्बत देने लगें और रात के वक़्त ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) के पास इसलिए आए ताकि दिन की रोशनी में उन का झूठ खुल न जाए उन की आँखों से झूठ को न पढ़ लें और रोकर उन्होंने यह बताना चाहा कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से उन्हें बेह़द मुह़ब्बत थी ताकि ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) के दिल में उन के बारे में कोई शुब्हा न गुज़रे।

17 قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ۝

यानी जैसा कि आप डर रहे थे, जब हम आपस में दौड़ का मुक़ाबिला कर रहे थे और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) हमारे कपड़ों और खाने-पीने के सामानों के पास बैठा था वाक़ई भेड़िया आया और उसे हलाक कर दिया और हम जानते हैं कि अगर हम आप के नज़्दीक सच्चे भी होते तो ऐसी ह़ालत में हमारी बात नहीं मानते तो आप हमारी बात कैसे मानेंगे जबकि आप पहले से ही ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के बारे में हम पर भरोसा नहीं करते थे।

18 وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ۝

उन्होंने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की कमीज़ को झूठे ख़ून में लतपत कर दिया और उसे अपने बाप के सामने रखकर कहा कि यह देखिए! ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की कमीज़ जो उस के हलाक हो जाने के बाद हमें मिली है, लेकिन ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने उन की बात नहीं मानी और कहा कि यह कहानी तुम ने अपनी तरफ़ से गढ़ ली है। तुम्हारे कहने के मुताबिक़ तो भेड़िया बड़ा ही अ़क़्लमन्द था कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को खा गया और उस की कमीज़ को नहीं फाड़ा।

अब मेरे लिए इस के सिवा और क्या रास्ता है कि अल्लाह की तक़्दीर पर सब्र से काम लूँ और अल्लाह तआ़ला से मदद माँगू कि वह तुम्हारे झूठ का पर्दाफ़ाश कर दे और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का सह़ी सालिम ज़िन्दा पाया जाना ज़ाहिर कर दे।

आयत नं० 19 से 32 तक

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ
مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ
وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۖ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝
وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ
لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّىْۤ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ
لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ۝ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ
مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّاۤ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ قَالَ هِىَ رَاوَدَتْنِىْ عَنْ نَّفْسِىْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ
قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ
دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ۝ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ وَاسْتَغْفِرِىْ لِذَنْۢبِكِ ۖ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ۝
وَقَالَ نِسْوَةٌ فِى الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ
اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَـًٔا وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ
اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ۝ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِىْ لُمْتُنَّنِىْ فِيْهِ ؕ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ
فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝

अनुवाद-

(19) और एक क़ाफ़िला आया तो उन लोगों ने अपने एक पानी लाने वाले को भेजा, उसने अपना डोल डाला, तो पुकार उठा, "अरे वाह! कितनी ख़ुशी की बात है, यह तो एक लड़का निकल आया," और उसको उसे व्यापार का माल समझ कर छिपा लिया, और जो वे कर रहे थे अल्लाह उसे जान रहा था। (20) और (व्यापारियों ने) उसे सस्ते दाम, गिनती के चन्द दिरहम, में बेच दिया और वे उसके मामले में बेपरवाह थे। (21) और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे ख़रीदा था, उसने अपनी पत्नी से कहा, ''इसको अच्छी तरह इज़्ज़त से रखना बहुत सम्भव है कि यह हमारे काम आए, या हम इसे बेटा बना लें।'' इस तरह 'हमने' यूसुफ़ को (मिस्र की) धरती पर जगह दी ताकि 'हम' उसे बातों की हक़ीक़त मालूम करना सिखाएं; और अल्लाह अपना हुक्म लागू कर के रहता है लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (22) और जब वह (यूसुफ़) अपनी जवानी को पहुँचा तो 'हमने' उसको हिकमत और इल्म दिया; और 'हम' नेक बन्दों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (23) और जिस औरत के घर में वह रहते थे, उसने उनको अपनी ओर मायल करना चाहा और, उसने दरवाज़े बन्द कर दिये, और बोली, ''जल्दी आओ'' उन्होंने कहा, ''अल्लाह की पनाह! वह (अर्थात तुम्हारे पति) तो मेरे आक़ा हैं उन्होंने मुझे अच्छा स्थान दिया है, बेशक ज़ालिम लोग कामियाब नहीं होंगे''। (24) और उस औरत ने उसका इरादा किया, और उन्होंने उसका इरादा किया, अगर वह अपने रब का स्पष्ट प्रमाण न देख लेते- (तो जो होता, वह होता) ऐसा इसलिए हुआ ताकि 'हम' उनसे बुराई और बेहयाई को दूर रखें- बेशक वह हमारे चुने हुए बन्दों में से थे। (25) और दोनों दरवाज़े की ओर दौड़े और औरत

ने उनका कुर्ता पीछे से फाड़ डाला, और दरवाज़े पर दोनों ने औ़रत के पति को मौजूद पाया, तो औ़रत बोल उठी, ''क्या सज़ा है उस व्यक्ति की जो तुम्हारे घर वाली के साथ बुराई का इरादा करे, उसका बदला इसके सिवा क्या होगा कि उसे क़ैद किया जाए, या दर्दनाक सज़ा दी जाए?'' (26) (यूसुफ़ ने) कहा, ''यही तो मुझे अपनी ओर मायल करना चाही थी, और उसी (औ़रत) के ख़ानदान से एक फ़ैसला करने वाले ने गवाही दी कि अगर उसका कुर्ता आगे से फटा है तो यह सच्ची है और वह झूठा है; (27) और अगर उसका कुर्ता पीछे से फटा है तो यह झूठी है, और वह सच्चा है।''(28) तो जब देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा था, (तो कहा,) ''यह तुम औ़रतों की चाल है, और तुम्हारी चालें बड़ी (ख़तरनाक) होती हैं; (29) यूसुफ़! इस मामले को जाने दीजिए, और ऐ औ़रत! तू अपने गुनाह की माफ़ी माँग, बेशक तू ही ख़ताकार है"। (30) और शहर की कुछ औ़रतें कहने लगीं, ''अ़ज़ीज़ की पत्नी अपने गुलाम को, अपनी ओर मायल करना चाहती है और उसकी मुहब्बत उसके दिल में घर कर गयी है, हम तो उसे खुली गुमराही में देख रहे हैं"। (31) तो जब (जुलैखा ने) इन औ़रतों की बातें सुनीं तो (जुलेख़ा ने) उन्हें बुला भेजा, और उनके लिए तकिया वाली मजलिस सजाई, और हर एक को एक-एक छुरी दे दी, और (यूसुफ़ से) कहा, "इनके सामने से निकल जाओ,'' जब उन औ़रतों ने उनको देखा तो उनका रोअ़ब ऐसा छा गया कि उन्होंने अपने ही हाथ घायल कर लिये, और पुकार उठीं! "अल्लाह की पनाह! यह इन्सान नहीं; यह तो कोई बुज़ुर्ग फरिश्ता है"। (32) (औ़रत) बोली, "यह वही है जिसके बारे में तुम मुझ को मलामत कर रही थीं, निश्चय ही मैंने इसे रिझाना चाहा था किन्तु यह बचा रहा, और अगर यह वह न किया जो मैं इससे कहती हूँ, तो यह ज़रूर क़ैद किया जाएगा और ज़लील होगा"।

आयत नं० 19 से 32 तक की व्याख्या

19 وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَأَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَأَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝

एक क़ाफ़िला जो शाम से मिस्र की तरफ़ जा रहा था वहाँ से गुज़रा और कुआँ के आस-पास पड़ाव डाला। क़ाफ़िला वालों के लिए पानी मुहय्या करना जिन लोगों की ज़िम्मेदारी थी उन्होंने जब अपना डोल कुएँ में डाल दिया तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने उसे पकड़ लिया, उन्होंने झांक कर देखा तो वह एक बच्चा था, बहुत ख़ुश हुए और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को तिजारत का एक सामान समझ लिया और क़ाफ़िला वालों से कहा कि हम ने कुआँ वालों से इसे ख़रीद लिया है।

इन्हीं ह़ालात को सामने रखते हुए अल्लाह ने आयत के आख़िर में धमकी के तौर पर फ़रमाया कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के इन तमाम ह़ालात से गुज़रने का जो लोग ज़रिया थे अल्लाह उन्हें ख़ूब जानता है कि किस तरह़ उन्होंने करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम को ग़ुलामी का तौक़ पहना दिया।

20 وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۭ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ۝

कहते हैं कि ताजिरों का वह क़ाफ़िला मद्यन से आया था। उन की मुलाक़ात एक दूसरे क़ाफ़िले से हुई जो मिस्र जा रहा था। उन्होंने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को उस क़ाफ़िले वालों के हाथ सिर्फ़ बीस दिरहम

में बेच दिया। जैसा कि 'इमाम अह़मद' 'तबरानी' और 'ह़ाकिम' ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत की है और चूंकि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) उन्हें बिना क़ीमत के मिल गये थे और वह नहीं जानते थे कि किस अ़ज़ीम इन्सान को वह बेच रहे हैं, इसीलिए उन्होंने क़ीमत की परवाह किये बिना चन्द पैसे में बेच दिया।

ऊपर की रिवायत में यह भी आता है कि जब ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) अपने ख़ानदान वालों के साथ मिस्र पहुँचे तो उन की तअ़दाद तीन सौ से ज़्यादा थी और जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के साथ वहाँ से निकले तो उन की तअ़दाद लगभग छः लाख से भी ज़्यादा थी।

21 وَقَالَ الَّذِي اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِيْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۪ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला का करम ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के साथ तो हर वक़्त रहा कि बेरह़म भाईयों के पंजे से निकाला, फिर कुआँ से निकाल कर नई ज़िन्दगी दी और अब उस का करम ख़ास देखिए कि मिस्र के ख़ज़ानों का वज़ीर (वित्त मंत्री) अ़जीज़े मिस्र उन्हें ख़रीद कर अपने घर लाया और अपनी बीवी ज़ुलैखा से कहा कि इस के खाने-पीने और इस की रिहाइश का अच्छा इन्तिज़ाम करो ताकि हम से जल्दी मानूस हो जाए और अपने आप को अपनों के दर्मियान महसूस करने लगे क्योंकि मैं इस की पेशानी में ख़ैर व बरकत के आसार पा रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि यह हमारे काम आएगा या हम इसे अपना बेटा बना लेंगे, इसलिए कि हमारी कोई औलाद नहीं है और बड़ा होकर मेरी जगह ह़ासिल कर लेगा और विज़ारत (मंत्री पद) के काम संभाल लेगा।

कहते हैं कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) जो काम करते उस में कामियाब होते और जब से 'अ़जीज़े मिस्र' के घर में क़दम रखा, उस की खेती और माल व तिजारत में ख़ूब बरकत होने लगी।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के साथ शुरु से लेकर अब तक जो कुछ हुआ अल्लाह की मर्ज़ी से हुआ और इसलिए हुआ ताकि अल्लाह उन्हें अ़जीज़े मिस्र के घर पहुँचा दे। फिर वह वाक़िआ़ जो ज़ुलैखा की ओर से हुआ कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) जेल जाएँ और अल्लाह उन्हें ख़्वाब की तअ़बीर सिखाएँ और फिर वह बादशाह के ख़्वाब की तअ़बीर बताकर मंत्री पद की कुर्सी पर पहुँच जाएँ। यह अल्लाह का फ़ैसला था जिसे बहरह़ाल होना था, लेकिन अक्सर लोग इस ह़क़ीक़त पर यक़ीन नहीं रखते कि अल्लाह के फ़ैसले में कोई दख़ल अन्दाज़ नहीं हो सकता है।

22 وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) के क़ौल के मुताबिक़ जब वह तेतींस साल के हो गये और इक्रिमा के क़ौल के मुताबिक़ पच्चीस साल के और एक तीसरे क़ौल के मुताबिक़ चालीस साल के तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मिस्र का बादशाह बना दिया, फिर अ़क्ल, फ़हम और नुबूव्वत से नवाज़ा।

'इब्ने जरीर तबरी' कहते हैं कि आयत के आख़िरी ह़िस्से وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝ में अगरचे हर भलाई

करने वाले के लिए अल्लाह का वादा है कि उन्हें वह अच्छा बदला देगा, लेकिन यहाँ मक़्सद नबी करीम (सल्ल०) के लिए हैं कि उन्हें अल्लाह तआ़ला मुश्रिकीने मक्का से निजात देकर उन पर फ़तेह़ देगा।

23 وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْۤ اَحْسَنَ مَثْوَايَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝

इस तरह़ ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के साथ मिस्र के घर में जो कुछ पेश आया उसे बयान किया जा रहा है। अ़जीज़े मिस्र की बीवी ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से बुरे काम का मुताल्बा किया और उस औ़रत के नाम की सराह़त इसलिए नहीं की कि उसका राज़ फ़ाश न हो जाए और अ़जीज़े मिस्र की बीवी के बजाए अल्लाह ने कहा कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को गुनाह पर उस औ़रत ने उक्साया जिस के घर में वह रहते थे, ताकि अन्दाज़ा लगाया जा सके कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के लिए वह कितनी मुश्किल घड़ी थी और वह पाकदामनी के किस बुलन्दी को छू रहे थे कि उस घर में रहने की वजह से ज़ुलैख़ा का बार-बार सामना होता रहा होगा और वह अपने हुस्न व जमाल का मुज़ाहिरा करती रही होगी ताकि उन्हें अपनी ज़ात में दिलचस्पी लेने पर उकसाए लेकिन ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) पर इन तमाम हथकंडो का कोई असर नहीं हुआ।

कहा जाता है कि उस ने ऐसा करने से पहले ख़ौफ़ और एह़तियात की वजह से सात दरवाज़े बन्द किये ताकि वहाँ तक किसी के पहुँचने का गुमान भी न हो सके। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की पाकदामनी की यह भी एक अ़ज़ीम दलील है कि ज़ुलैख़ा ने इन्सानों से ख़ौफ़ खाने का एक भी उ़ज़्र बाक़ी नहीं रखा था, इस के बावजूद उन के दिल में गुनाह का ख़याल तक नहीं गुज़रा।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने इस के जवाब में कहा कि मैं तुम्हारे इस गुनाह की दअ़वत से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँगता हूँ इसलिए कि यह तो ज़िना, जुर्म अ़ज़ीम, अमानत में ख़यानत है और उसे इस गुनाहे अ़ज़ीम से बाज़ रखने के लिए इस ख़यानत की सख़्ती बयान करते हुए कहा कि तुम्हें मालूम है कि मुझे किस के ख़िलाफ़ ख़यानत पर उभार रही हो? वह मेरा आक़ा अ़जीज़े मिस्र है जिस ने हर तरह़ मेरा ख़याल किया तो अब मेरे लिए यह किस तरह़ मुनासिब है कि उस की इ़ज़्ज़त से खेलूँ।

एक दूसरी तफ़्सीर यह बयान की गई है कि मेरे रब ने मुझ पर बड़ा एह़सान किया है, मुझे नई ज़िन्दगी दी और अ़जीज़े मिस्र के पास पहुँचा कर मेरी तमाम परेशानियों को दूर कर दिया। अगर मैंने ऐसा किया तो मैं ज़ालिम हूँगा और ज़ालिम कभी कामियाब नहीं होता।

24 وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ۝

दोनों का दरवाज़े की तरफ़ दौड़ना

इन आयात में अ़जीज़े मिस्र की बीवी की बद्नियती का ज़िक्र है। यह भी फ़रमाया कि ह़ज़रत यूसुफ़

(अ़लै०) अगर अपने रब की दलील न देख लिए होते तो वह भी इरादा कर लेते। अल्लाह तआ़ला ने उन को बचाया और बुराई और बेह़याई के काम से दूर रखा। अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी ने गुनाह करने का मज़बूत इरादा कर लिया था जो उस के अ़मल से साफ़ ज़ाहिर है, उस ने दरवाज़े बन्द कर लिए और साफ़ लफ़्ज़ों में هَيْتَ لَكَ (आ जा मैं तेरे लिए ह़ाज़िर हूँ) कह दिया।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को अल्लाह तआ़ला ने नुबूव्वत दी थी और पूरी उम्मत की इस पर सहमति है कि नबी से गुनाह नहीं हो सकता और गुनाह का इरादा करना भी गुनाह है, लेकिन क़ुर्आन मजीद में وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ के साथ وَهَمَّ بِهَا भी कहा। इस وَهَمَّ بِهَا का क्या मतलब है?

इस के बारे में बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ और मतलब यह है कि अगर वह अपने रब की दलील न देख लेते तो वह भी उस औ़रत के साथ अपनी जवानी का जोश पूरा करने का इरादा कर लेते, लेकिन उन्होंने अपने रब की दलील देख ली, इसलिए इरादा नहीं किया।

बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि وَهَمَّ بِهَا से गुनाह का इरादा करना मुराद नहीं है बल्कि इन्सानी कमज़ोरी की बिना पर जो मैलान हो जाता है वह मुराद है, उन्होंने इस दर्जे का इरादा नहीं किया था जो गुनाह के दर्जे में हो यूँ ही वस्वसा के दर्जे में ख़याल आ गया और मतलब यह होगा कि अगर वह अपने रब की तरफ़ से दलील न देख लेते तो मैलान (Attraction) के मुताबिक़ काम कर गुज़रते, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दलील दिखाई।

वह कौन सी दलील थी जो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने देखी? इस के बारे में मुफ़स्सिरीन ने कई बातें लिखी हैं। साह़िबे रूहुल् मआ़नी भाग 12 पेज नं० 214 ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया है कि इस मौक़े पर ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) की तस्वीर ज़ाहिर हो गई जिस ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के सीने पर हाथ मार दिया। (وذكره الحاكم ايضافى المستدرک भाग 2 पेज 346)

عن ابن عباس رضى الله عنهما قال مثل له يعقوب فضرب صدر فخر جب شهوته من انامله और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला ने जो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को इ़ल्म व ह़िक्मत से नवाज़ा था और नुबूव्वत दी थी بُرْهَانَ رَبِّهٖ से वही मुराद है। नुबूव्वत और अल्लाह का यक़ीन ही एक ऐसी दलील थी जिस ने उन्हें चौंका दिया और गुनाह से बचा लिया। यह बात दिल को लगती तो है लेकिन इस सूरत में راى के माने عرف लिया जाएगा यानी راى से ज़ाहिरी आँख नहीं बल्कि दिल की आँख, माने इ़ल्म व मअ़रिफ़त मुराद होगी।

ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) की तो बड़ी शान है। आ़मतौर पर अहले ईमान को यह बात ह़ासिल होती है कि जब कोई गुनाह की बात दिल में आता है तो दिल ठिठक कर रह जाता है और हर एक मोमिन के दिल में अल्लाह की ओर से नसीह़त करने वाला बैठा हुआ है।

ह़ज़रत नव्वास बिन समआ़न अन्सारी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक मिसाल बयान फ़रमाई और वह यह कि एक सीधा रास्ता है उस के सीधी ओर दो दीवारें हैं और उन दीवारों में दरवाज़े हैं जो खुले हुए हैं, उन दरवाज़ों पर पर्दे पड़े हुए हैं और उस रास्ते के शुरु में एक

दरवाज़ा है जिस पर एक पुकारने वाला खड़ा हुआ है। वह कहता है कि ऐ लोगों! तुम सब रास्ते में दाख़िल हो जाओ और इधर-उधर तवज्जोह न करो और रास्ते के ऊपर एक और पुकारने वाला है, जब कोई शख़्स उन दरवाज़ों में से किसी दरवाज़े को खोलना चाहता है तो वह कहता है कि तुझ पर अफ़्सोस है इसे मत खोल, अगर तू इस को खोलेगा तो इस में दाख़िल हो जाएगा (और यह तेरे हक़ में अच्छा न होगा।)

इस के बाद आप ने इस मिसाल को बयान फ़रमाया और बताया कि 'सिराते मुस्तक़ीम' इस्लाम है और दोनों तरफ़ जो दीवारें हैं यह अल्लाह की हुदूद (सीमाएँ) हैं और जो दरवाज़े खुले हुए हैं यह अल्लाह तआ़ला की हराम की हुई चीज़ें हैं और रास्ते के शुरु में जो पुकारने वाला है वह अल्लाह तआ़ला की किताब है और इस के ऊपर जो पुकारने वाला है वह अल्लाह तआ़ला की ओर से नसीहत करने वाला है जो हर मुस्लिम के दिल में है (رواه البيهقى فى شعب الايمان ص ۴۴۵ ج ۵)

जब हर मोमिन के दिल में नसीहत करने वाला मौजूद है तो हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) जैसे सिद्दीक़ (सच्चे) के दिल में होना ज़रूरी ही है।

25 وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَى الْبَابِ ۗ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

जब अ़जीज़े मिस्र की बीवी ने हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को अपने बुरे मक़्सद के लिए इस्तेमाल करना चाहा तो वह दरवाज़े की तरफ़ दौड़ पड़े पीछे से औ़रत भी दौड़ी, यहाँ तक कि उस ने हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के कुर्ते का पिछला दामन पकड़ लिया चूंकि भागते हुए आदमी का दामन पकड़ा था, इसलिए कुर्ता पीछे से फट गया।

हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) दरवाज़े की तरफ़ बढ़े तो दरवाज़ा बन्द पाया, लेकिन अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मदद हुई दरवाज़े खुलते चले गये। (इस से मालूम हुआ कि जब कोई शख़्स किसी गुनाह में मुब्तिला करने के लिए मजबूर किया जाए तो जहाँ तक मुम्किन हो अपनी कोशिश व ताक़त भर उस से बचे। जब सचमुच उस से बचने का इरादा करेगा और अपनी हिम्मत और क़ुद्रत भर उस की कोशिश करेगा तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इन्शाअल्लाह ज़रूर मदद की जाएगी।)

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने ऐसा ही लिखा है और बाज़ हज़रात ने यूँ फ़रमाया है कि सभी दरवाज़े उस औ़रत ने बन्द तो कर दिये थे, लेकिन किसी एक दरवाज़े में एक ऐसी खिड़की थी जिस के बारे में हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को ध्यान हुआ कि मैं इस से निकल सकता हूँ बहरहाल उन्होंने गुनाह से बचने की पूरी कोशिश की और इस कोशिश में अल्लाह तआ़ला ने उन्हें कामियाबी दी।

आगे पीछे दौड़ते हुए जब दरवाज़े पर पहुँचे तो उधर से इस औ़रत का शौहर आ रहा था उस से मुठभेड़ हो गई, औ़रतों की चालें तो मशहूर हैं अपने को बेक़ुसूर साबित करने के लिए औ़रत बोल पड़ी कि इस ने मुझ पर बद्नियती से हमला करने का इरादा किया है, इस को सज़ा दिया जाना ज़रूरी है

सज़ा भी उस ने ख़ुद ही तय कर दी कि इस को जेल में डाल दिया जाए या इस को सख़्त सज़ा दी जाए। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने भी अपनी सफ़ाई पेश करना ज़रूरी न समझा।

26-27 قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

उसने मुझे फ़ुसलाया और ग़लत काम करने का इरादा किया। (इस से मालूम हुआ कि अगर कोई शख़्स आरोप लगाए तो उस की सफ़ाई करना शाने बुज़ुर्गी के ख़िलाफ़ नहीं है बल्कि सफ़ाई देना ज़रूरी है क्योंकि मुजरिम बनकर रहना मोमिन की शान नहीं है। अपना बचाव करते हुए सही सूरत बयान करना चाहिए।)

सूरते ह़ाल देखकर अ़ज़ीज़े मिस्र ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को मुजरिम क़रार नहीं दिया, वह उन की नेक सीरत और योग्यता से वाक़िफ़ था, वह बरसों से उस के घर में रहते थे। उस के पेशेनज़र जो उन के ह़ालात देखे थे उन को सामने रखते हुए किसी तरह़ भी इस का मौक़ा न था कि वह उन को मुजरिम समझे और अपने बीवी की तस्दीक़ करे।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अपनी सफ़ाई पेश करते हुए जो यह फ़रमाया कि इस औ़रत ने ही मुझ से अपनी ख़्वाहिश ज़ाहिर की थी कि इस के पेशेनज़र औ़रत ही को मुजरिम समझना चाहिए था और मुम्किन है कि उस ने मुजरिम समझ भी लिया हो, लेकिन वह ख़ामोशी अख़्तियार कर गया। अल्बत्ता ग़ैब से एक गवाह निकल आया और वह उसी औ़रत के ख़ानदान में से था और वह बोल पड़ा और उस ने यूँ कहा कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के कुर्ते को देखो आगे से फाड़ा गया है या पीछे से? अगर पीछे से फाड़ा गया है तो समझ लिया जाए कि यह औ़रत अपने इस दावे में झूठी है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने मुझ पर ह़मला किया है और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) सच्चे हैं।

अगर उन का कुर्ता आगे से फाड़ा गया है तो समझ लिया जाए कि औ़रत सच्ची है और यह झूठ बोलने वालों में से है। अ़ज़ीज़े मिस्र को तो अस्ल सूरतेह़ाल समझने की ज़रूरत ही थी, उस ने तुरन्त ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के कुर्ते पर नज़र डाली देखा तो कुर्ता पीछे से फाड़ा गया था बस उस की समझ में आ गया और फ़ौरन उस के मुँह से यह बात निकली कि यह औ़रतों वाली मक्कारी है, यह कहकर उस ने अपनी औ़रत को झुठला दिया और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की तस्दीक़ कर दी।

गवाही देने वाले ने जो यूँ कहा था कि कुर्ता देखा जाए इस का मतलब यह था कि जब औ़रत ने अपनी ख़्वाहिश ज़ाहिर की और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अपनी जान गुनाह से बचाने की कोशिश की और राहे फ़रार अख़्तियार फ़रमाई और औ़रत ने उन के कुर्ते को पीछे से पकड़ कर खींचा तभी तो कुर्ता फटा उस के फटने का ज़ाहिरी सबब और कोई न था।

यहाँ जो यह सवाल ज़ेहन में आता है कि वहाँ तो एक ही औ़रत थी, जमअ़ (बहुवचन) क्यों प्रयोग हुआ। इस का जवाब यह है कि इस में औ़रतों के मिज़ाज की तरफ़ इशारा है, अकेली यही औ़रत मक्र व फ़रेब वाली नहीं है, अक्सर औ़रतें ऐसा करती हैं।

28 فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ۝

اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ۝ (बिलाशुब्हा तुम्हारा मक्र बड़ा है) उर्दू के मुहावरे में इस मक्र को औरतों के छल और चालों को कहा जा सकता है उन के बड़े-बड़े छल होते हैं कि इन्सान उन्हें देखकर हैरान रह जाता है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक मर्तबः ईद की नमाज़ के लिए जाते हुए औरतों से ख़िताब करते हुए फ़रमाया **ما رایت اذهب للب الرجل الحازم من احداکن** (होशमन्द आदमी की अक़्ल को ख़त्म करने में मैंने तुम से बढ़कर किसी को नहीं देखा।) **(रवाहुल् बुख़ारी भाग 1, पेज नं० 197)**

और एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

ما ترکت بعدی فتنة هی اضر علی الرجل من النساء (कि मैंने अपने बाद औरतों से बढ़कर कोई ऐसा फ़ित्ना नहीं छोड़ा है जो मर्दों के लिए नुक़्सान देने वाला हो) नुक़्सान देने में औरतों से बढ़कर हो।

(रवाहुल् बुख़ारी व मुस्लिम कमा फ़िल् मिश्कात पेज 267)

और एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

فاتقو الدنیا واتقو النساء فان اول فتنة بنی اسرائیل کانت فی النساء (कि दुनिया से बचो और औरतों से बचो) यानी इन दोनों को सोच समझ कर इस्तेमाल करना, इन के फ़रेब में न आ जाना) क्योंकि बनी इस्राईल का जो सब से पहला फ़ित्ना था उस की शुरुआत औरतों ही से हुई थी।) **(रवाहु मुस्लिम भाग 2, पेज 353)**

और एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया **النساء حبائل الشیطان** (कि औरतें शैतान के जाल हैं।) **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज 444)**

शैतान इन के ज़रिये बहकाता, गुमराह करता और गुनाहों पर आमादा करता है।

जिस गवाह ने गवाही दी उस ने यह तो नहीं कहा कि मैंने देखा कि औरत ने यूँ किया बल्कि उस ने एक ऐसी बात कह दी जो औरत के मुजरिम होने पर दलालत करती थी यानी कुर्ते का फटा होना इस को गवाही फ़रमायाः-

قال صاحب الروح و سمی شاهدا لانه تادیته فی ان ثبت بکلامه قول یوسف وبطل قولها وقیل سمی بذلک من حیث دل علی الشاهد وهو تخریق القمیص

मामले की सूरतेह़ाल समझने के बाद अज़ीज़े मिस्र ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की तरफ़ तवज्जोह की और उस ने दरख़्वास्त की।

29 يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ۖ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ۝

يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ऐ यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम! इस बात से बचना यानी इसे यहीं तक रहने देना और आगे मत बढ़ाना, किसी से न कहना। फिर अपनी बीवी से कहा وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ (कि तू अपने गुनाह के लिए इस्तिग़फ़ार कर) اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ (बिलाशुब्हा तू ख़ता करने वालों में से है) मामले की सूरतेह़ाल से और गवाही से साबित हो गया कि तू ही गुनाहगारों में से है। अस्ल गुनाह तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के बचने, परहेज़ करने और फ़रार की राह अख़्तियार करने की वजह से न हो सका, लेकिन

गुनाह के लिए जो उस ने पक्का और मज़बूत इरादा कर लिया था वह भी गुनाह ही था, फिर वह पीछे दौड़ी और पकड़ने की कोशिश भी की थी, लिहाज़ा अपनी नियत और अ़मल दोनों के एतिबार से गुनाहगार हुई।

'सह़ीह़ मुस्लिम' में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि आँखों का ज़िना देखना है और कानों का ज़िना सुनना है और ज़बान का ज़िना बात करना है और हाथ का ज़िना पकड़ना है और पांव का ज़िना चलना है, दिल ख़्वाहिश करता और आरज़ू करता है लेकिन शर्मगाह उसे सच्चा या झूठा कर देती है यानी गुनाह के आख़िरी ह़द का मौक़ा लग गया तो शर्मगाह से सादिर हो जाता है, मगर इस से पहले की कोशिशें गुनाह में शुमार हो जाती हैं। **(मिश्कातुल् मसाबीह पेज नं० 20)**

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि वह लोग तो मुसलमान नहीं थे फिर इस्तिग़्फ़ार करने के लिए क्यों कहा? 'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' लिखते हैं कि वह लोग अगरचे मूर्तियों को पूजते थे, लेकिन अपने पैदा करने वाले पर अ़क़ीदा रखते थे और यह भी समझते थे कि बहुत सी चीज़ें गुनाह हैं और उन गुनाहों की सज़ा भी मिलती है।

30-32 وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَّفْسِهِ ۖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا ۚ إِنْ هَٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذَٰلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهُ عَن نَّفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَا آمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِّنَ الصَّاغِرِينَ ﴿٣٢﴾

शहर की औ़रतों का लअ़न-तअ़न

'अ़ज़ीज़े मिस्र' ने तो मामले को वक़्ती तौर पर रफ़अ़-दफ़अ़ कर दिया और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से कह दिया कि इस क़िस्से को यहीं तक रहने देना आगे मत बढ़ाना, लेकिन ख़बर किसी तरह़ शहर की औ़रतों को पहुँच गई वह आपस में चर्चा करने लगीं कि देखो 'अ़ज़ीज़े मिस्र' की बीवी को क्या हुआ? बड़े घर की औ़रत है लेकिन अपने ग़ुलाम (नौकर) को अपना मतलब निकालने के लिए फुस्ला रही है। ग़ुलाम इसलिए कहा कि उस का शौहर ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को ख़रीद कर लाया था।

इस में इस तरफ़ इशारा था कि पहले तो यह औ़रत शौहर वाली है उसे अपने शौहर के अ़लावा किसी दूसरे की तरफ़ मायल होने की ज़रूरत क्या है, फिर मायल भी हुई तो किस पर जो उस के बराबर का नहीं न तो उ़म्र में बराबर, न मर्तबः में बराबर, दोनों में से कोई एक बराबरी भी होती तो कुछ बात थी قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا उस ग़ुलाम की मुह़ब्बत तो बुरी तरह़ उस के दिल में घर कर गई है, उसे इस मुह़ब्बत ने यह बात सोचने का मौक़ा ही न दिया कि मैं किस की तरफ़ मायल हो रही हूँ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ हमें इस में कोई शक नहीं कि वह खुली हुई गुमराही में पड़ गई है।

'अ़ज़ीज़े मिस्र' की बीवी को औ़रतों की बातें पहुँच गईं उन्होंने जो बातें कहीं थीं वह उस ने सुन लीं, उन की बातों को मक्र कहा क्योंकि वह ज़ाहिर में तो उसे बेवकूफ़ बना रही थी और अन्दर से उन का जज़्बा यह था कि हम इस पर लअ़न-तअ़न करेंगे तो अपनी सफ़ाई पेश करने के लिए हमें भी उस गुलाम को दिखा देगी। (ذکرہ صاحب الروح عن البعض)

बहरह़ाल जब 'अ़ज़ीज़े मिस्र' की बीवी को औ़रतों की बातों का इ़ल्म हुआ तो उस ने उन औ़रतों को बुलवा भेजा कि वह मेरे घर आएँ और कुछ खा पी लें, उन औ़रतों के बैठने के लिए उस ने अच्छे क़िस्म के बिस्तर बिछा दिये और तकिया लगा दिये ताकि वह आएँ तो तकिया लगा कर बैठ जाएँ। जब वह आएँ तो उन्हें बिठा दिया और उन के हाथों में एक छुरी दे दी।

छुरी देने का क्या मतलब था? इस के बारे में बाज़ लोगों ने कहा कि उस ने छुरियों के साथ खाने के लिए गोश्त भी दे दिया था क्योंकि गोश्त को दाँतों से नोच कर नहीं खाते थे बल्कि छुरी से काटते थे और एक क़ौल यह है कि सन्तरा की तरह़ कोई चीज़ खाने को दे दी थी ताकि वह उसे छुरी से काट कर खाएँ।

'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' ने ह़ज़रत 'इब्ने अ़ब्बास' ह़ज़रत 'इब्ने उ़मर' 'मुजाहिद' और 'क़तादा' (रज़ि०) से नक़्ल किया है कि ऐ़न उस वक़्त में जबकि उन औ़रतों के हाथ में छुरियाँ थीं और जो कुछ उन के सामने था उसे काटना ही चाहती थीं कि अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को आवाज़ दी कि आओ अन्दर से निकलो और इन औ़रतों के सामने आ जाओ, जब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) सामने आए तो उन के हुस्न व जमाल को देखकर वह औ़रतें दंग रह गईं और इस तरह़ ह़ैरान हुईं कि उन्हें यह भी ध्यान नहीं रहा कि हम क्या काट रही हैं सन्तरा वग़ैरह जो कुछ उनके सामने था उसे काटने के बजाए उन्होंने अपने हाथ ही काट डाले और कहने लगें कि حَاشَ لِلّٰهِ यह शख़्स इन्सान नहीं है बल्कि यह तो बड़े दर्जे का फ़रिश्ता ही है, यह उन औ़रतों ने इसलिए कहा कि फ़रिश्ते का बेमिसाल ह़सीन व जमील होना उन के यहाँ मशहूर था, जैसा कि शैतान की बद्सूरती को सभी जानते हैं।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को अल्लाह तआ़ला ने बहुत ज़्यादा हुस्न व जमाल अ़ता फ़रमाया था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब मेअ़राज की रात में आसमानों पर तश्रीफ़ ले गए तो वहाँ ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) से मुलाक़ातें हुईं। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की मुलाक़ात का ज़िक्र फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया اذا ھو قد اعطی شطر الحسن (यानी उन को आधा हुस्न दिया गया है।) **(रवाहु मुस्लिम, पेज नं० 91)**

जब औ़रतें ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को देखकर ऐसी ह़ैरान हुईं कि अपने हाथ काट डाले तो अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी उन औ़रतों से ख़िताब करते हुए बोल उठी कि तुम ने देखा यह गुलाम कैसा है? तुम मुझे इस के बारे में मलामत कर रही थीं अब अपना ह़ाल देख लो तुम तो उसे देखकर अपने हाथ ही काट बैठीं, यह बात कह कर उस औ़रत ने अपनी सफ़ाई पेश कर दी बल्कि अपनी मजबूरी ज़ाहिर कर दी, मैं आ़शिक़ न होती तो क्या करती वह तो चीज़ ही ऐसी है जिस पर फरेफ़्ता (मोहित) हुए बग़ैर रहा नहीं जा सकता।

'अ़ज़ीज़े मिस्र' की बीवी ने कहा कि वाक़ई मैंने अपना मतलब निकालने के लिए इसे फुसलाया था, लेकिन यह बच गया। इस तरह़ उस ने इस बात का साफ़ इक़रार कर लिया जिस का अपने शौहर के सामने इन्कार कर चुकी थी और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का बरी होना भी ज़ाहिर कर दिया और साथ ही यूँ भी कह दिया कि यह अभी मेरे फंदे से निकला नहीं है मेरी मांग बराबर जारी रहेगी। अगर इस ने मेरी बात न मानी और मेरे हुक्म पर अ़मल न किया तो इसे ज़रूर जेल भेज दिया जाएगा और इसे ज़रूर ज़िल्लत उठानी पड़ेगी।

आयत नं० 33 से 42 तक

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَیَّ مِمَّا یَدْعُوْنَنِیْۤ اِلَیْهِ ۚ وَ اِلَّا تَصْرِفْ عَنِّیْ كَیْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَیْهِنَّ وَ اَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِیْنَ ۝ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ
عَنْهُ كَیْدَهُنَّ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ۝ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰیٰتِ لَیَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِیْنٍ ۝ وَ دَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَیٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَاۤ
اِنِّیْۤ اَرٰىنِیْۤ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَ قَالَ الْاٰخَرُ اِنِّیْۤ اَرٰىنِیْۤ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِیْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّیْرُ مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِیْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِیْنَ ۝ قَالَ
لَا یَاْتِیْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖۤ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِیْلِهٖ قَبْلَ اَنْ یَّاْتِیَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِیْ رَبِّیْ ؕ اِنِّیْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا یُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ هُمْ
بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ وَ اتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ
عَلَیْنَا وَ عَلَى النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَشْكُرُوْنَ ۝ یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَیْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسْمَآءً سَمَّیْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ
وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝ یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ اَمَّاۤ اَحَدُكُمَا فَیَسْقِیْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَ اَمَّا الْاٰخَرُ فَیُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّیْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِیَ الْاَمْرُ
الَّذِیْ فِیْهِ تَسْتَفْتِیٰنِ ۝ وَ قَالَ لِلَّذِیْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِیْ عِنْدَ رَبِّكَ ۖ فَاَنْسٰىهُ الشَّیْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِی السِّجْنِ بِضْعَ سِنِیْنَ ۝

अनुवाद-

(33) (यूसुफ़ ने) कहा, ''मेरे रब! जिसकी ओर यह मुझे बुला रही है उससे तो क़ैद में रहना ही मुझ को ज़्यादा पसंद है, और अगर 'तू' इनकी चालों से मुझ को न बचाएगा, तो मैं इनकी ओर मायल हो जाऊँगा और जाहिलों में से हो जाऊँगा"। (34) तो उनके 'रब' ने उनकी सुन ली और उनसे औ़रतों की चालों को ख़त्म कर दिया बेशक 'वह' सुनने वाला, जानने वाला है। (35) फिर उन्हें, इसके बाद कि निशानियाँ देख चुके थे उनकी राय यही हुई कि इसे कुछ अवधि के लिए क़ैद ही कर दें। (36) और उनके साथ दो और नौजवान भी जेल खाने में दाख़िल हुए, उनमें से एक ने कहा, ''मैंने (सपना) देखा है कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ'' दूसरे ने कहा, ''मैंने देखा है कि मैं अपने सर पर रोटियाँ उठाए हुए हूँ जिनको परिन्दे खा रहे हैं, हमें इसकी तअ़बीर (स्वप्न फल) बता दीजिए कि हमें तो आप भले मालूम होते हैं"। (37) (यूसुफ़ ने) कहा, ''जो खाना तुम्हें मिलता है उसके आने से पहले ही मैं तुम्हें इसकी तअ़बीर (स्वप्नफल) बता दूँगा, यह उस इल्म में से है, जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है, मैंने उन लोगों के धर्मों को छोड़ दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते, और आख़िरत का भी इन्कार करते हैं; (38) और मैंने अपने बाप-दादा इब्राहीम, और इस्ह़ाक़, और याक़ूब के दीन को अपनाया, हम से यह नहीं हो सकता कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक करें; यह अल्लाह की मेहरबानी है हम पर और लोगों पर, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (39) ऐ जेल के साथियो! क्या अलग-अलग बहुत से रब अच्छे हैं, या अकेला अल्लाह ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली); (40) तुम 'उसके' सिवा जिसकी भी इबादत करते हो, वे तो बस नाम हैं, जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिये हैं, उनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा, सत्ता और अधिकार तो बस अल्लाह का है, 'उसने' हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो; यही सीधा (सच्चा) धर्म है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते; (41) ऐ जेल के साथियो! तुम में से एक तो अपने मालिक को शराब पिलाएगा, और दूसरा सूली पर चढ़ाया जाएगा और परिन्दे उसका सर नोंच कर खाएँगे, इस बात का फ़ैसला हो चुका है जिसको तुम पूछ रहे हो।''

(42) और (दोनों से) जिसके बारे में उसने समझा था कि रिहा हो जाने वाला है उससे कहा, "अपने मालिक के पास मेरी चर्चा करना"। मगर शैतान ने अपने मालिक के पास चर्चा करना भुलवा दिया, और (यूसुफ़) कई साल जेल ही में पड़े रहे।

आयत नं० 33 से 42 तक की व्याख्या

33-35 قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُم مِّن بَعْدِ مَا رَأَوُا الْآيَاتِ لَيَسْجُنُنَّهُ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٣٥﴾

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की दुआ़

पहले मालूम हो चुका कि 'अ़ज़ीज़े मिस्र' की बीवी ने अपने शौहर को क़रीब देखकर यह मश्विरा दिया था कि उसे जेल में डाल दिया जाए या दर्दनाक सज़ा दी जाए, फिर जब शहर की दूसरी औ़रतें ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का हुस्न व जमाल देखकर दंग रह गईं तो अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी ने उन से कहा कि देखो! तुम मुझ पर तअ़न कर रही थीं ख़ुद तुम्हारा क्या ह़ाल बना और साथ ही यह कह दिया कि अगर उस ने मेरी बात न मानी तो उस को जेल में जाना पड़ेगा।

इस तरह़ ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के सामने बज़ाहिर दो ही रास्ते थे। एक यह कि पहले की तरह़ उसी घर में रहते रहें जहाँ अब तक थे, वहाँ वही औ़रत थी जिस ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को बद्किरदारी के लिए इस्तेमाल करने का इरादा किया था, उस का इरादा ख़त्म नहीं हुआ था इसलिए उसने साफ़ कह दिया था कि अगर इस ने मेरी बात न मानी तो इस को जेल में जाना पड़ेगा, वह अपने फन्दे में फँसाने के लिए इस्रार कर रही थी। उस के घर में रहने से अन्देशा था कि कहीं गुनाह में मुब्तिला न हो जाएँ और दूसरा रास्ता यह था कि जेल में चले जाएँ। उन्होंने जेल में जाने को पसन्द किया और यह बेहतर समझा कि अ़ज़ीज़े मिस्र का घर छूट जाए ताकि ख़ुद अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी और दूसरी औ़रतों की तद्बीरों (चालों) और मक्कारियों से दूर हो जाएँ। चूंकि दूसरी औ़रतें भी हुस्न व जमाल को देखकर क़ायल हो गईं थीं इसीलिए यह भी ख़त्रा था कि वह अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी के साथ ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को गुनाह में इस्तेमाल करने की तद्बीरें बताने लगें या ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को फुसलाने लगें।

इसलिए ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अल्लाह तआ़ला से यूँ दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! यह औ़रतें मुझे जिस काम की दअ़वत दे रही हैं या आइन्दा दअ़वत देंगी मुझे उस में फंसने से यह महबूब और पसन्दीदा है कि जेल में चला जाऊँ और साथ ही यह भी अ़र्ज़ किया कि या अल्लाह! आप मेरी मदद फ़रमाइए और औ़रतों के मक्र व फ़रेब से दूर फ़रमाइए ताकि मेरी ह़िफ़ाज़त हो, अगर आप ने उन की चालबाज़ियों को ख़त्म न फ़रमाया और मुझे उन से न बचाया तो इन्सान होने की वजह से मैं उन की तरफ़ मायल

हो सकता हूँ फिर जाहिलों में शुमार हो जाऊँगा।

ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) गुनाहों से पाक थे और उन को पाक-साफ़ रखना अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से था। नुबूव्वत के पद पर रहते हुए गुनाह के होने का इम्कान (Possibility) तो न था, लेकिन फिर भी उन्होंने गुनाह से बचने के लिए दुआ़ की और अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ किया कि आप ही की ह़िफ़ाज़त मुझे महफ़ूज़ रख सकती है। अगर आप ने मेरी ह़िफ़ाज़त न फ़रमाई तो औ़रतों के इतना ज़्यादा पीछे पड़ने पर उन औ़रतों की तरफ़ मायल हो सकता हूँ, उन की तरफ़ मायल होना जाहिलों का काम है जो गुनाह को गुनाह जानते हुए गुनाह कर बैठते हैं।

قال صاحب الروح الذين لا يعلمون بما يعلمون لان من لا جلوى لعلمه فهو ومن لا يعلم سواء

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की दुआ़ अल्लाह तआ़ला ने क़ुबूल फ़रमाई और उन्हें औ़रतों के फ़ित्ने से बचा लिया यानी ऐसी सूरत पैदा फ़रमा दी कि उन्हें जेल में भेज दिया गया, जिस की सूरत यह हुई कि 'अ़ज़ीज़े मिस्र' और उस को मश्विरा देने वाले सोच-विचार करते रहे कि इस मस्ले का क्या ह़ल हो। तस्दीक (यानी निशानियाँ) और ह़ालात से तो यह पता चल रहा है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) बेगुनाह हैं, लेकिन शहर में जो चर्चा हो गया और बातें औ़रतों से निकल कर मर्दों तक पहुँच गईं उस को दबाने के लिए यही सूरत समझ में आती है कि एक ज़माने तक ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को जेल में रखा जाए, चुनाँचे उन्होंने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को जेल भेज दिया।

वह कौन सी निशानियाँ थीं जिन्हें देखकर ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को बरी होन का यक़ीन हो गया था? उन में से एक तो यही थी कि उन का कुर्ता पीछे से फटा था और दूसरे गोद के बच्चे का बोलना यह बहुत बड़ी निशानी थी। बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के जिस्म में भागने के वक़्त कुछ ख़राश भी आ गई थी यह भी एक निशानी थी और मुम्किन है और भी निशानियाँ रही हों जो ज़िक्र में नहीं आईं।

यहाँ यह बात क़ाबिले ज़िक्र है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने जो जेल में जाने की दुआ़ की वह अल्लाह तआ़ला ने क़ुबूल फ़रमा ली। अगर वह ह़िफ़ाज़त की दुआ़ करते तो जेल में गये बिना दूसरी तरह़ भी उन की ह़िफ़ाज़त हो सकती थी, अल्लाह तआ़ला को इस पर क़ुद्रत थी कि किसी दूसरी तरह़ से उन की ह़िफ़ाज़त का इन्तिज़ाम हो जाता लेकिन वक़्ती परेशानी की वजह से उन का दिमाग़ इस तरफ़ नहीं गया और अपनी ह़िफ़ाज़त के लिए जेल में जाने की दुआ़ कर ली।

'तफ़्सीर क़ुर्तुबी' भाग 9 पेज नं० 184 में है कि जब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने यह दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! जेल मुझे पसन्द है तो अल्लाह तआ़ला ने उन की तरफ़ वह्य भेजी कि ऐ यूसुफ़! तुम ने ख़ुद अपनी जान को क़ैद में रखवाने की दुआ़ कर ली, अगर तुम आ़फ़ियत की दुआ़ करते तो तुम को आ़फ़ियत दी जाती।

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक मुसलमान की अ़यादत की (बीमारी में देखने गये) जो बहुत ज़्यादा बीमार थे, उन की आवाज़ बहुत ज़्यादा कमज़ोर थी और पतले

दुबले हो गये थे, आप ने उन से फ़रमाया कि क्या तुम अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मैं अल्लाह तआ़ला से यह दुआ़ करता हूँ कि मुझे आख़िरत में जो अ़ज़ाब देना है तू उस के बदले में इसी दुनिया में तक्लीफ़ पहुँचा दे। यह सुनकर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, सुब्हानल्लाह! तुमने मुसीबत की क्यों दुआ़ की? तुम ने यह दुआ़ क्यों न की اَللّٰهُمَّ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ रावी कहते हैं कि उस के बाद उस शख़्स ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की, लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने उसे शिफ़ा दे दी। **(रवाहु मुस्लिम भाग 2, पेज नं० 343)**

एक और सह़ाबी ने दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! मुझे सब्र दीजिए। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तूने मुसीबत का सवाल किया (क्योंकि सब्र मुसीबत पर होता है) लिहाज़ा अब तू आ़फ़ियत का भी सवाल कर ले। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 214 तिर्मिज़ी)**

मोमिन बन्दों को हमेशा आ़फ़ियत ही का सवाल करना चाहिए। ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "तुम अल्लाह से माफ़ी का और आ़फ़ियत का सवाल करो क्योंकि ईमान की दौलत के बाद किसी को कोई ऐसी चीज़ अ़ता नहीं की गई जो आ़फ़ियत से बेहतर हो"। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 219 तिर्मिज़ी)**

अल्बत्ता ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की दुआ़ से यह नसीह़त ज़रूर मिलती है कि गुनाह से बचने का पुख़्ता अ़ज़्म व इरादा रखना चाहिए। गुनाह से बचने के सिल्सिले में अगर कोई तक्लीफ़ पहुँच जाने का अन्देशा हो तो बशाशत के साथ क़ुबूल कर ले और गुनाह न करे।

36 وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

जेल में दो क़ैदियों का ख़्वाब

जैसा कि ऊपर मालूम हुआ 'अ़ज़ीज़े मिस्र' के मश्विरा देने वालों ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को जेल भिजवा दिया। इसी मौक़े पर दो जवान भी जेल में दाख़िल हुए और इन के अ़लावा पहले से भी क़ैदी मौजूद थे। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) अल्लाह तआ़ला के नबी, अ़िबादत गुज़ार, ख़ुश अख़्लाक़, क़ैदियों के साथ अच्छी तरह़ पेश आते थे। सालिह़ीन के चेहरे पर तो नूर होता ही है यहाँ तो नूरे नुबूव्वत भी था और ज़ाहिरी हुस्न व जमाल भी बेमिसाल था, क़ैदी लोग दिलदादह हो गये यहाँ तक कि जेलर भी बहुत ज़्यादा प्रभावित हुआ और कहने लगा कि अगर मुझे अधिकार होता तो आप को जेल से रिहा कर देता। हाँ, इतना कर सकता हूँ कि आप को अच्छे तरीक़े पर रखूँ कोई तक्लीफ़ न पहुँचने दूँ।

(ذکرہ البغوی فی معالم التنزیل ص ۴۲۶ ج ۲)

यह दो जवान जो नये-नये इन्हीं दिनों जेल में दाख़िल हुए थे, उन के बारे में मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि मिस्र के कुछ लोगों ने बादशाह को क़त्ल करवाने का इरादा किया था, उन लोगों ने इन दोनों को

इस्तेमाल करना चाहा, उन में से एक बादशाह का ख़ास नौकर था जो उसे पीने की चीज़ें पिलाया करता था और दूसरा रोटी तय्यार करने वाला था। मन्सूबा बनाने वालों ने उन दोनों से कहा कि तुम खाने-पीने की चीज़ों में ज़हर मिलाकर बादशाह को खिला पिला दो, पहले तो दोनों ने बात क़ुबूल कर ली क्योंकि रिश्वत की पेशकश की गई थी, फिर एक नौकर जो पिलाने का काम करता था वह इन्कारी हो गया और रोटी वाले नौकर ने रिश्वत क़ुबूल कर ली और खाने में ज़हर मिला दिया।

जब बादशाह खाना खाने बैठा तो पिलाने वाले नौकर ने कहा कि आप खाना न खाइए क्योंकि इस में ज़हर है और रोटी वाले नौकर ने कहा कि आप पीने की कोई चीज़ न पीजिए क्योंकि इस में ज़हर है। बादशाह ने साक़ी से कहा कि तू यह जो कुछ मेरे पिलाने के लिए लाया है इस में से पी ले उस ने पी लिया तो कोई नुक़्सान न हुआ, फिर बादशाह ने रोटी वाले नौकर से कहा कि तू इस खाने में से खा ले वह इन्कारी हो गया। फिर वह खाना एक जानवर को खिलाया गया वह जानवर खाकर हलाक हो गया बादशाह ने पिलाने वाले और खिलाने वाले दोनों को जेल में भिजवा दिया (भेजना तो चाहिए था सिर्फ़ खिलाने वाले को लेकिन तह़क़ीक़ की वजह से साक़ी को भी भेज दिया।) उन दोनों को फ़िक्र पड़ी हुई थी कि देखो क्या होता है हमारी रिहाई होती है या जान जाती है?

इसी ज़माने में एक ने उन में से ख़्वाब देखा कि वह अंगूर में से शीरा निचोड़ रहा है जिस से शराब बनाई जाती है (यह ख़्वाब देखने वाला बादशाह का साक़ी था) और दूसरे शख़्स यानी (ख़ब्बाज़) ने यह ख़्वाब देखा कि वह अपने सर पर रोटियाँ उठाये हुए ले जा रहा है और उन रोटियों में से परिन्दे खाते जा रहे हैं। दोनों ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को अपना ख़्वाब पेश किया और तअ़बीर (सपने का सार) देने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की और साथ ही यूँ भी कहा कि आप हमें अच्छे आदमी मालूम होते हैं। अन्दाज़ा यह है कि आप की बताई हुई बात सह़ी होगी। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने उन की तअ़बीर बताने का इक़्रार कर लिया, लेकिन पहले तौह़ीद की दअ़वत दी। (من معالم التنزيل)

37-40

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَانِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ؕ اِنِّيْ
تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ مَا تَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا
تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

मतलब बताने से पहले तौह़ीद की दअ़वत

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से जब दोनों जवानों ने अपने-अपने ख़्वाब की तअ़बीर (मतलब) पूछा तो उन से फ़रमाया कि मैं खाना आने से पहले तुम्हारे ख़्वाबों की तअ़बीर (मतलब) बता दूँगा, लेकिन इस

से पहले तुम मुझे पहचानो कि मैं कौन हूँ? दाअ़ी का काम यही है कि वह अपने दअ़वत के काम के लिए तरीक़े सोचता रहे और रास्ता निकाले और ऐसे मौक़े पर तो ख़ासतौर से मौक़ा निकल आता है जब किसी बेराह को दाअ़ी की ज़रूरत पड़ जाए। जब वह अपनी ज़रूरत लेकर आए तो उस को ग़नीमत जाने और पहले अपनी दअ़वते ह़क़ दे।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने इसी पर अ़मल किया और मौक़ा बेहतर समझकर तौह़ीद की तब्लीग़ फ़रमा दी, बज़ाहिर यह ख़िताब उन दोनों लोगों के लिए था जिन्होंने तअ़बीर पूछा था, लेकिन ह़क़ीक़त में जेल के तमाम लोगों को तौह़ीद की दअ़वत देने का रास्ता निकल आया क्योंकि उन दो शख़्सों से जो बात फ़रमाई वह दूसरे क़ैदियों बल्कि जेल के लोगों से छिपने वाली न थी, इसीलिए ख़िताब में سميتم बहुवचन फ़रमाया سميتما द्विवचन नहीं फ़रमाया।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने पहले तो अपना तआ़रुफ़ कराया कि मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो अल्लाह को नहीं मानते और आख़िरत का इन्कार करते हैं बल्कि मैं अपने बाप ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) और दादा परदादा ह़ज़रत इस्ह़ाक़ व ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के दीन पर हूँ जो मुवह्हिद (अद्वैतवादी) और तौह़ीद के दाअ़ी और शिर्क से बहुत दूर थे, साथ ही शिर्क की बुराई अ़क़्ली तौर पर भी बयान फ़रमाई कि हमें यह किसी तरह़ जायज़ नहीं कि अल्लाह के सिवा किसी भी चीज़ को अल्लाह का शरीक बनाएँ। जब अल्लाह ने पैदा किया और वही रोज़ी देने वाला मालिक है और तुम जिन की अ़िबादत करते हो वह भी अल्लाह ही की मख़्लूक़ हैं तो फिर यह कौन सी अ़क़्लमन्दी की बात है कि ग़ैरुल्लाह की अ़िबादत की जाए और फ़रमाया कि यह जो अल्लाह ने हमें तौह़ीद का अ़क़ीदा दिया है और जो कुछ इ़ल्म अ़ता फ़रमाया है यह अल्लाह तआ़ला का हम पर फ़ज़्ल (कृपा) है और हम पर ही नहीं उन सब लोगों पर भी उस का फ़ज़्ल है जो हमारी बात मानें और हमारी तरह़ एक मालिक के मानने वाले हो जाएँ और हमारे साथ तौह़ीद की दअ़वत देने में शरीक हो जाएँ।

हर वह शख़्स जिसे अल्लाह ने कोई भी नेअ़मत अ़ता फ़रमाई हो उस के लिए ज़रूरी है कि अल्लाह तआ़ला का शुक्रगुज़ार हो, लेकिन बहुत से लोग शुक्र अदा नहीं करते।

शिर्क की बुराई बयान करते हुए ख़ुद उन्हीं पर एक सवाल डाल दिया और अ़क़्ली तौर पर उन्हें फ़िक्रमन्द बना दिया ताकि वह ग़ौर करें कि हम जो शिर्क में लगे हुए हैं यह अ़क़्ल के भी ख़िलाफ़ है। आप ने उन से फ़रमाया कि ऐ मेरे जेल के दोनों साथियों! तुम ही बताओ कि यह जो तुमने बहुत से देवता बना रखे हैं उन सब की अ़िबादत करना सह़ी है या केवल एक उपास्य ठीक है? सब के सामने माथा टेकते फिरो, सोने के बुत को भी सज्दः करो और चाँदी के बुत के सामने भी झुको और पीतल के बुत के सामने भी हाथ बाँध कर खड़े हो और पत्थर की मूर्ति के सामने भी साष्टांग करो, यह क्या समझदारी है? यह न नुक़्सान पहुँचा सकते हैं, न नफ़ा दे सकते हैं फिर इनकी अ़िबादत बेवकूफ़ी नहीं तो और क्या है? इसलिए सिर्फ़ अल्लाह ही की अ़िबादत करनी है मैंने अपनी बात कह दी तुम भी सोचो और ग़ौर करो।

फिर फ़रमाया कि तुम्हारे जो मअ़बूद (उपास्य) हैं यह सिर्फ़ नाम के हैं और ख़ुद ही उन को मअ़बूद (उपास्य) बना लिया है, उन्हें तो तुम्हारे अ़िबादत की ख़बर तक नहीं है। अल्लाह तआ़ला सब का ख़ालिक़ और मालिक है, हर फ़ैसला वही सह़ी है जो उस की तरफ़ से हो उस ने तो उन चीज़ों के मअ़बूद होने की कोई दलील नाज़िल नहीं फ़रमाई। यह जो ग़ैरुल्लाह की बातें हैं सब तुम्हारी अपनी बनाई हुई हैं। अल्लाह तआ़ला का तो यह हुक्म है कि सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करो और उस के अ़लावा किसी की अ़िबादत न करो यह सीधा रास्ता है, लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते वह अपनी जिहालत से शिर्क को अपनाए हुए हैं।

41 يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ۭ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ۝

दोनों क़ैदियों के सपने का निचोड़

अद्वैतवाद की दअ़वत देकर ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने उन दोनों जवानों के ख़्वाबों की तअ़बीर बताई। फ़रमाया कि देखो! तुम में से एक व्यक्ति अपने मालिक (बादशाह) को शराब पिलाएगा (यह वही शख़्स था जो बादशाह का साक़ी (पिलाने वाला) था जो पहले भी बादशाह को शराब पिलाया करता था) और उस के अ़लावा जो दूसरा आदमी है उस को सूली दी जाएगी।

यानी सूली पर लट्का कर क़त्ल किया जाएगा और सूली से उतारे जाने से पहले (जब वह लट्का रहेगा) उस के सर में से परिन्दे नोच-नोच कर खाते रहेंगे। तुम ने जो ख़्वाब पूछा है उस की यह तअ़बीर है, जो मैंने तअ़बीर दी इस के मुताबिक़ फ़ैसला होगा।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि जब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने उन दोनों को सपने का मतलब बता दिया तो वह कहने लगे कि नहीं, नहीं हम ने कोई ख़्वाब नहीं देखा। हम तो यूँ दिल्लग़ी के तौर पर सवाल लेकर आए थे। इस पर ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने फ़रमाया قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ जिस के बारे में तुम सवाल कर रहे थे अब तो वही फ़ैसला होगा जो तअ़बीर (सपने का सार) के ज़रिये बताया जाएगा। **(रुहुल् मआ़नी भाग 12, पेज नं० 242)**

42 وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۡ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ۝

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का जेल में रहना

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने दोनों जवानों के ख़्वाब का मतलब बयान कर दिया जिस में एक शख़्स के सूली दिये जाने का और एक शख़्स के जुर्म और जेल से आज़ादी का ज़िक्र था। जिस शख़्स के बारे में अपनी तअ़बीर (मतलब) के मुताबिक़ उन्हें यह ख़याल हुआ कि उसे निजात होगी उस से फ़रमाया कि रिहाई पाकर जब तुम अपने आक़ा के पास जाओ तो उस से मेरा ज़िक्र (वर्णन) कर देना कि जेल

में एक ऐसा शख़्स है।

कुसूरवार तो अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी थी, लेकिन जेल में ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को बन्द कर दिया गया जो बेकुसूर थे और यह ज़रूरी नहीं कि ऐसे मामलात की ख़बर बादशाह को भी हो और अगर उसे ख़बर भी हो तो यह ज़रूरी नहीं कि जिसे जेल में डाला गया है उस के बेकुसूर होने का इ़ल्म भी हो, इसलिए ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने मौक़ा मुनासिब जाना कि बादशाह को अपने गुणों से परिचित करा दें बिलावजह जेल में पड़ा रहना वह भी बिना किसी कुसूर के कोई अच्छी बात नहीं है।

जब कोई मुसीबत आ जाए उस पर सब्र करना चाहिए लेकिन उस मुसीबत से निकलने की कोशिश की जाए यह भी कोई गुनाह की बात नहीं है, इसलिए ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को जेल की मुसीबत से छुटकारे का एक ज़रिया मिला उसे इस्तेमाल फ़रमा लिया यानी जिस शख़्स के बारे में यह गुमान हुआ कि जेल से रिहाई पाकर अपने आक़ा की ख़िद्मत में फिर लगा दिया जाए उस से फ़रमाया कि तू अपने आक़ा से मेरा ज़िक्र कर देना कि जेल में ऐसा-ऐसा शख़्स है। वह शख़्स जेल से रिहा तो हो गया और आक़ा की ख़िद्मत में भी लग गया, लेकिन शैतान ने उसे भुला दिया कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का अपने आक़ा से ज़िक्र करे, लिहाज़ा ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) मज़ीद जेल में रहे।

कुर्आन मजीद में जो यह पानी فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ फ़रमाया, कितने साल जेल में रहना हुआ उस के बारे में अलग-अलग राय हैं। साह़िबे रूहुल् मआ़नी ने सात साल और बारह साल लिखे हैं। शब्द بِضْعَ (बिज़्अ़) तीन से लेकर नौ तक की संख्या को कहते हैं। कुर्आन के बयान से बहरह़ाल यह ज़रूर मालूम होता है कि ख़्वाबों का मतलब बता देने से निजात पाने वाले क़ैदी से अपनी बात कह देने के बाद भी चन्द साल जेल में रहे।

आयत नं० 43 से 53 तक

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَىٰ سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ سُنْبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ ۖ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ إِنْ
كُنْتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ﴿٤٣﴾ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۖ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعَالِمِينَ ﴿٤٤﴾ وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا
أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ ﴿٤٥﴾ يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ سُنْبُلَاتٍ خُضْرٍ
وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا ۖ فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا
مِمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ
فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ اللَّاتِي
قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدْتُنَّ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ ۚ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ
سُوءٍ ۚ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ الْآنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۖ أَنَا رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٥١﴾ ذَٰلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ
لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ ﴿٥٢﴾ وَمَا أُبَرِّئُ نَفْسِي ۚ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي ۚ إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥٣﴾

अनुवाद-

(43) और बादशाह ने कहा, ''मैंने (सपने में) देखा है कि 'सात मोटी गायों को सात पतली गायें खा रही हैं; और सात (अनाज की) बालियाँ हरी हैं और दूसरी (सात) सूखी, ऐ मेरे (दरबार के) सरदारो! मेरे सपने का अर्थ बताओ अगर तुम तअ़बीर स्वप्नार्थ बताना जानते हो।'' (44) (दरबारियों ने) कहा, ''यह परेशान सपने हैं, और हम ऐसे सपनों का अर्थ नहीं जानते।'' (45) और उन दोनों में से जो रिहा हो गया था, उसे एक मुद्दत के बाद बात याद आ गई तो वह बोल उठा, ''मैं आप को इसका अर्थ बताता हूँ, ज़रा मुझे (यूसुफ के पास) भेज दीजिए।'' (46) 'यूसुफ़' ऐ बड़े सच्चे! हमें (इस का अर्थ) बताइए, ''कि सात मोटी गायों को सात दुबली गाएँ खा रही हैं, और सात बालियाँ हरी हैं और सात बालियाँ सूखी, ताकि मैं लोगों के पास जाऊँ ताकि वे (इस का अर्थ) जान लें।'' (47) (यूसुफ़ ने) कहा, ''सात वर्ष तक तुम लगातार खेती करते रहोगे, तो जो (फसलें) काटो, उन्हें उनकी बाली में ही रहने देना सिवाय उस थोड़ी सी के, जो तुम्हारे खाने के काम आए, (48) फिर इसके बाद सात कठिन (वर्ष) आएँगे जो इस (पूँजी) को खा जाएँगे, जो तुम ने उन (वर्षों) के लिए पहले से इकट्ठा कर रखा होगा, सिवाय उस थोड़े-से हिस्से के जो तुम सुरक्षित कर लोगे; (49) फिर इसके बाद एक वर्ष ऐसा आएगा, जिसमें रहमत की वर्षा भेजी जाएगी और उसमें वे लोग रस निचोड़ेंगे। (50) और बादशाह ने हुक्म दिया कि (यूसुफ को) ''मेरे पास ले आओ! तो जब दूत उसके पास पहुँचा, तो उन्होंने कहा, तुम अपने मालिक के पास वापस जाओ और उनसे पूछो कि 'उन औ़रतों का क्या हाल है, जिन्होंने अपने हाथ घायल कर लिये, बेशक मेरा रब उनकी मक्कारी को भली-भाँति जानता है।'' (51) बादशाह ने उन औ़रतों से पूछा, ''तुम्हारा क्या मामला है, जब तुम ने यूसुफ को रिझाना चाहा था?'' उन्होंने कहा, "पाक है अल्लाह! हम ने उसमें बुराई की कोई बात नहीं पायी'' अज़ीज़ की पत्नी बोल उठी, "अब तो सच्ची बात ज़ाहिर ही हो चुकी है, मैंने ही अपनी ओर रिझाना चाहा था, बेशक वह तो सच्चा है।''

(52) (यूसुफ़ ने कहा) "यह इसलिए कि उसे (अज़ीज़ को) मालूम हो जाए कि मैं ने गुप्त रूप से विश्वासघात नहीं किया, और यह कि अल्लाह विश्वासघातियों को राह नहीं दिखाता। (53) और मैं अपने आप को पाक-साफ़ नहीं कहता क्यों कि नफ्स अम्मारा (जी) तो बुराई ही सिखाता है मगर यह कि मेरा रब जिस पर रहम करे, बेशक मेरा रब माफ़ करने वाला, रहम वाला है"।

आयत नं० 43 से 53 तक की व्याख्या

43-49 وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَىٰ سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ سُنْبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ ۖ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ
أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ﴿٤٣﴾ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۖ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعَالِمِينَ ﴿٤٤﴾
وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ ﴿٤٥﴾ يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي
سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ سُنْبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ ۙ لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا ۖ فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾
ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ
عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾

मिस्र के बादशाह का ख़्वाब

अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जब हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के जेल से रिहा होने का वक़्त आ गया तो बहाने के तौर पर मिस्र के बादशाह ने एक ख़्वाब देखा जो एक अ़जीब ख़्वाब था और वह यह कि सात मोटी-मोटी गाएँ हैं उन्हें सात दुबली गाएँ खा रही हैं और सात हरी बालीं हैं और इन के अ़लावा सात ऐसी बालीं हैं जो सूखी हैं, यह सूखी बालीं हरी बालियों पर लिपट रही हैं, उन के लिपटने से वह हरी बालीं भी ख़ुश्क हो गईं। बादशाह ने अपना ख़्वाब अपने दरबारियों से बयान किया और उन से कहा कि मेरे सपने का मतलब बताओ अगर तुम बताना जानते हो, वह लोग कहने लगे कि हमारे ख़याल में तो यह ख़्वाब बताने के लायक़ ही नहीं है, इधर उधर के ख़यालात हैं जिन के पीछे कोई हक़ीक़त नहीं है और हम तअ़बीर (मतलब) जानते भी नहीं हैं, आप ख़यालात की वजह से क्यों परेशान होते हैं। यह बातें उस शख़्स के कान में पड़ गईं जो जेल से रिहा होकर दोबारा बादशाह की ख़िद्मत में लगा लिया गया था, वह कहने लगा कि मैं एक ऐसे शख़्स को जानता हूँ जो इस ख़्वाब की सही तअ़बीर दे देगा, आप लोग मुझे भेज दें मैं इस ख़्वाब की तअ़बीर लेकर आता हूँ।

हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने जेल में जो ख़्वाब की तअ़बीर दी थी उस ने समझ लिया कि इस ख़्वाब की तअ़बीर वही साहब दे सकते हैं जिन्होंने हमारे ख़्वाब की तअ़बीर दी थी, उस शख़्स को लोगों ने रवाना कर दिया जेल में जाकर उस ने हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से मुलाक़ात की और बादशाह का ख़्वाब बताया और तअ़बीर की दरख़्वास्त की।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने बादशाह के ख़्वाब की तअ़बीर बता दी, वह शख़्स वापस आया और दरबारियों को ख़्वाब की तअ़बीर बताई जिस से बादशाह बहुत प्रभावित हुआ और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को बुला लिया जिस का आइन्दा आयात में ज़िक्र आ रहा है।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने जो बताया इस का ख़ुलासा यह है कि सात साल लगातार ऐसे आएँगे जिन में ख़ूब पैदावार होगी और फिर सात साल ऐसे आएँगे जिन में सूखा पड़ेगा। इस सूखा के ज़माने में पिछले सात सालों की इकट्ठा की हुई पैदावार को खा जाएँगे, सात मोटी गायों और सात हरी बालों से वह सात साल मुराद हैं जो ख़ूब हरे भरे होंगे और ख़ूब पैदावार का ज़माना होगा और सात दुबली गायों और सूखी हुई सात बालों से सूखा के सात साल मुराद हैं। इन सात सालों में पिछले सात सालों का इकट्ठा किया हुआ ज़ख़ीरा सब ख़त्म हो जाएगा, थोड़ा सा अगली पैदावार के लिए छोड़े रखोगे तो वही बच जाएगा। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने न सिर्फ़ सपने का मतलब बयान किया बल्कि सूखा के सात सालों की आर्थिक व्यवस्था पर क़ाबू पाने का तरीक़ा भी बता दिया और फ़रमाया कि पहले सात सालों में जो लगकर मेह़नत और कोशिश के साथ खेती करोगे जब उस खेती को काटो तो बस खाने की ज़रूरत भर ही बालियों में से दाने निकालना, बाक़ी उसी में लगी रहने देना और वजह उस की यह है कि बालियों के अन्दर जो ग़ल्ला रहता है उसे घुन नहीं लगता कीड़ा नहीं खाता।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने यह भी फ़रमाया कि सूखा के सात साल गुज़र जाने के बाद एक साल ऐसा आएगा जिस में ख़ूब बारिश होगी और उस की वजह से खेतियाँ भी ख़ूब होंगी और बाग़ों में भी ख़ूब फल आएँगे, उन फलों में अंगूर भी होंगे जिन्हें लोग निचोड़ कर शराब बनाएँगे।

बाज़ ह़ज़रात ने मतलब यह बताया है कि अंगूर ही को नहीं निचोड़ेंगे बल्कि दूसरी चीज़ों को भी निचोड़ेंगे। जैसे- ज़ैतून का तेल और तिल का तेल निकालेंगे आदि। मतलब यह है कि पैदावार फिर ख़ूब होगी।

50-53

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ
اَيْدِيَهُنَّ ۚ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ۝ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ
مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ۚ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۖ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝
ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ۝ * وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِيْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ
بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيْ ۚ اِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

जेल के बाहर आने से इन्कार

जब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने बादशाह के ख़्वाब का मतलब बता दिया और जो शख़्स मतलब पूछने के लिए आया था उस ने वापस जाकर बता दिया तो लोगों की समझ में बात आ गई और बादशाह ने समझ लिया कि वाक़ई यह मतलब बताने वाला कोई साह़िबे इ़ल्म है जो ख़्वाब के फ़न में माहिर है, उस

ने सिर्फ़ मतलब ही नहीं बल्कि आर्थिक व्यवस्था पर क़ाबू पाने का तरीक़ा भी बता दिया कि पहले सात साल की पैदावार को महफ़ूज़ रखना और दानों को बालों के अन्दर ही रहने देना ताकि उसे कीड़ा न खा जाए। इस पर बादशाह को हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की मुलाक़ात का शौक़ हुआ उस ने आदमी भेजा जिस ने हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के सामने बादशाह की ख़्वाहिश का इज़्हार कर दिया और यूँ कहा कि बादशाह ने आप को याद किया है और बुलवाया है।

इस पर हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने फ़रमाया कि मैं उस वक़्त तक जेल से न निकलूँगा जब तक यह बात साफ़ न हो जाए कि मुझे जिस की वजह से जेल में डाला गया है उस में किस का क़ुसूर था, उस से कहा कि तू वापस जा और बादशाह से तहक़ीक़ कर कि जिन औ़रतों ने अपने हाथ काट डाले थे उन से दर्याफ़्त करे कि उस मौक़े पर क्या हुआ था? उन का क़ुसूर था या मेरा क़ुसूर (अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी ने ख़्वाहिश की ही थी दूसरी औ़रतें भी हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का हुस्न व जमाल देखकर उन पर रीझ गई थीं।)

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि वह हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से कहने लगी थीं कि तू अपने सरदार की बात मान ले और बाज़ लोगों ने यह भी लिखा है कि उन में से हर औ़रत हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को अपनी तरफ़ बुलाने लगी और दअ़वत देने लगी। **(रूहुल् मआ़नी भाग 12, पेज नं० 335)**

जब हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की यह बात सुनकर क़ासिद (दूत) वापस आया और उस ने बादशाह से हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की बात नक़्ल कर दी तो उस ने औ़रतों से पूछा कि सही हालात बताओ वह क्या क़िस्सा है जिस में तुम हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की तरफ़ मायल हो रही थीं और उन्हें फुसला रही थीं? उन औ़रतों ने जवाब दिया हम ने हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) में ऐसी कोई बात नहीं देखी जिस की वजह से उन की तरफ़ कोई बुराई जोड़ सकें, अगर हम कोई ऐसी बात कह दें जो हक़ीक़त के ख़िलाफ़ हो तो इस का मतलब यह होगा कि हम अपनी बात को सच बताने के लिए अल्लाह तआ़ला की तरफ़ जोड़ रहे हैं कि यह बात अल्लाह के इ़ल्म में भी है।

अल्लाह का इ़ल्म तो सही है हम ऐसी बात कहकर ग़लत बात अल्लाह के इ़ल्म की तरफ़ कैसे जोड़ें? शब्द حَاشَ لِلّٰهِ में इसी बात को बताया गया है। जब उन औ़रतों ने हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को बरी होना ज़ाहिर कर दिया तो अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी बोल पड़ी कि इस वक़्त हक़ ज़ाहिर हो गया हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) बेक़ुसूर हैं, मैं क़ुसूरवार हूँ, मैंने उसे अपनी तरफ़ बुलाया और फुसलाया था।

हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने जो यह कहा هِيَ رَاوَدتُّنِي عَن نَّفْسِي (कि इस औ़रत ने मुझे फुसलाया) हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को जब इस का इ़ल्म हो गया कि शाही दरबार में मेरी बरात और इ़ज़्ज़त औ़रतों के अपने इक़रार से साबित हो चुकी है तो फ़रमाया ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ

कि मैंने जो जेल से निकलने में देर लगाई और सूरतेहाल की तहक़ीक़ करने के लिए बादशाह को आमादा किया, इस की वजह यह है कि अ़ज़ीज़े मिस्र को पता चल जाए कि मैंने उस के पीछे उस के घर में कोई ख़यानत नहीं की। وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ और यह भी मालूम हो जाए कि बेशक अल्लाह

तआ़ला ख़यानत करने वालों के फ़रेब को नहीं चलने देता।

(अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी ने जो ख़यानत की थी तह़क़ीक़ करने पर ख़ुद उस के अपने इक़रार से उस का ख़ायन होना साबित हो गया।)

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने फ़रमाया कि मैं अपने नफ़्स को भी बरी नहीं बताता, नफ़्स इन्सानी का काम ही यह है कि वह बार-बार बुराई का हुक्म देता है। हाँ, जिस पर अल्लाह रह़म फ़रमाए वह नफ़्स अम्मारा के शर से बच सकता है।

मेरा कमाल नहीं अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल हुआ उस ने मुझे बचा लिया चूंकि अपनी तअ़रीफ़ अच्छी बात नहीं है, इसलिए ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अपनी बराअत ज़ाहिर होने के साथ ही यह भी फ़रमाया कि मैं अपने नफ़्स को बरी नहीं बताता। सूरः नज्म (आयत नं० 32) में इर्शाद है فَلَا تُزَكُّوا أَنفُسَكُمْ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ अपने नफ़्सो की पाकबाज़ी बयान न करो। अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानता है कि किस ने तक़्वा अख़्तियार किया है।

ह़िक्मतें-

जब बादशाह का दूत आया तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने जेल से निकलने में जल्दी नहीं की, बल्कि इस वाक़िये की तह़क़ीक़ करने की फ़रमाइश की जो अ़ज़ीज़े मिस्र के घर में पेश आया था और उस की बीवी ने अपनी ग़ल्ती को ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के सर मंढ़ने की कोशिश की थी। इस में दो ह़िक्मतें थीं:-

पहली तो यह कि ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) का काम तब्लीग़ व इस्लाह़ का था, जिस शख़्स को तोहमत (आरोप) लगाई गई हो जब तक वह साफ़ न हो जाए और आरोप का झूठा होना ज़ाहिर न हो जाए उस वक़्त तक लोगों में तब्लीग़ प्रभावी नहीं हो सकती, लोग कहेंगे कि वाह मियाँ! तुम हमें तब्लीग़ करते हो और तुम्हारा अपना यह ह़ाल है।

यूँ तो हर मुसलमान को अपने आप को गुनाहों से और शुकूक व शुब्हात से दूर रखना और तोहमत (आरोप) से बचकर रहना चाहिए और अगर कोई तोहमत (आरोप) लग जाए तो जहाँ तक मुम्किन हो अपनी सफ़ाई की कोशिश की जाए क्योंकि आरोप लगा हुआ बनकर रहना कोई कमाल की चीज़ नहीं है और न कोई पसन्दीदा चीज़ है, ख़ासकर जो लोग दीनदारी में मशहूर हैं और दअ़वत का काम करते हैं तअ़लीम व तब्लीग़ के ज़रिये लोगों को ख़ैर की तरफ़ बुलाते हैं उन्हें अपनी पोज़ीशन साफ़ रखनी चाहिए।

अगर कोई शख़्स तोहमत (आरोप) लगा दे तो उस की सफ़ाई दे और ऐसी तद्बीर करे कि लोगों के सामने उस की ज़ात आरोपी न बनी रहे। बहुत से लोगों को इस तरफ़ तवज्जोह नहीं रहती वह कहते हैं कि लोगों के कहने से क्या होता है, झूठा अपने झूठ की सज़ा पा लेगा हमें सफ़ाई की क्या ज़रूरत है? यह उन लोगों की ग़ल्ती है क्योंकि पहली बात तो लोगों की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के ख़िलाफ़ है, लोगों को ग़ीबत और तोहमत में मुब्तिला रखना यह कोई अच्छी बात नहीं।

दूसरी बात यह है कि लोग ग़लत समझते हैं ऐसे ह़ाल में लोगों के पास दीनी बात लेकर जाएँगे तो

वह असर न लेंगे, अपना फ़ायदा भी इसी में है कि अपनी हैसियत को साफ़ सुथरी रखें और दूसरों का भी फ़ायदा इसी में है ताकि वह ग़ीबत से महफ़ूज़ हो जाएँ और उन्हें दाअ़ी की तरफ़ से जो बात पहुँचे उसे क़ुबूल करने में पसोपेश न रहे।

ख़ुसुसी लोगों को इस तरफ़ ज़्यादा तवज्जोह करनी चाहिए और दूसरी हिक्मत यह है कि हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को अन्दाज़ा था कि अल्लाह तआ़ला मुझे ज़रूर बड़ा मर्तबः अ़ता फ़रमाएगा। ख़्वाब में ग्यारह सितारों और चाँद सूरज का उन को सज्दः करना और जब भाईयों ने उन्हें कुएँ में डाल दिया था उस वक़्त अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उन पर वह्य का आना कि यह बात तुम उन्हें बताओगे, इस से ज़ाहिर था कि उन्हें दुनिया में भी कोई एज़ाज़ मिलेगा लेकिन साथ ही उन पर तोहमत (आरोप) भी लग गई थी। उन्होंने मुनासिब समझा कि मेरी हैसियत को जो धब्बा लगाया गया है वह दूर हो जाए, बादशाह जो बुला रहा है यह इ़ज़्ज़त के मिलने का पेश ख़ेमा (Back ground) मालूम होता है, लिहाज़ा जब मौक़ा मिल रहा है तो अपनी हैसियत को साफ़ कर देना चाहिए ताकि लोगों के दिलों में यह तकद्दुर (घृणा) न रहे कि अच्छा यह वही शख़्स है जिस के बारे में ऐसा-ऐसा मशहूर है। जब किसी ओ़हदे वाले के बारे में अ़वाम में इस तरह़ की बात फैली हुई हो तो ओ़हदा वाले के दिल में भी शक रहता है और काम करने में सन्तुष्टी नहीं होती।

आयत नं० 54 से 66 तक

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِيْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ
الْاَرْضِ ۚ اِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ۭ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ
اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ
مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْٓ اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٥٩﴾
فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ
فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا
الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾ قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ۭ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۠
وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ۭ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ۭ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ
اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ۭ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ
اِلَّآ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰي مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾

अनुवाद-

(54) और बादशाह ने हुक्म दिया, "उनको मेरे पास ले आओ! मैं उनको अपने लिए खास कर लूँगा," जब उसने उनसे बात चीत की तो कहा, "आज से तुम हमारे यहाँ दर्जे वाले और एतिबार वाले हो"। (55) (यूसुफ़ ने) कहा, ''देश के ख़ज़ानों पर मुझे नियुक्त कर दीजिए, इसलिए कि मैं रक्षक और इल्म वाला भी हूँ,'' (56) इस तरह हमने यूसुफ को उस ज़मीन (मिस्र) में सत्ता दे दिया, और उसमें जहाँ चाहें रहें, हम जिस पर चाहते हैं अपनी मेहरबानी भेजते हैं, और अच्छे काम करने वालों का अज्र बेकार नहीं होने देते। (57) और आख़िरत का बदला कहीं बेहतर है, जो लोग ईमान लाए और परहेज़गारी अपनाये। (58) और यूसुफ़ के भाई आए (और) उनके पास हाज़िर हुए, तो उन्हों ने उन्हें पहचान लिया, और वे उन्हें न पहचान सके। (59) और जब उनके लिए उनका सामान तैयार करा दिया तो कहा, ''तुम्हारे बाप की ओर से जो तुम्हारा एक (सौतेला) भाई (बिन्यामीन) है, उसे भी मेरे पास लाओ क्या तुम देखते नहीं, ''मैं पूरी नाप देता हूँ और मैं मेहमानदारी भी खूब करता हूँ? (60) फिर अगर तुम उसको मेरे पास न लाए, तो मेरे पास तुम्हारे लिए कोई माँप (ग़ल्ला) नहीं है, और न तुम मेरे पास आना। (61) उन्होंने कहा, ''हम उसके बारे में उसके बाप से चर्चा करेंगे और यह (काम) हम ज़रूर करेंगे।'' (62) और (यूसुफ़ ने) अपने नौकरों से कहा, ''इनका दिया हुआ माल इनके सामान में रख दो, ताकि जब यह लोग अपने घर वालों में जाएं तो उसे पहचान लें, (और) शायद कि यह वापस आएँ।''(63) फिर जब वे अपने बाप के पास वापस गये तो कहा, ''ऐ अब्बा जान! हम को ग़ल्ला देने से रोक दिया गया है, तो हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिए, ताकि हम ग़ल्ला लाएँ और हम ज़रूर इसकी रक्षा करेंगे।'' (64) (याकूब ने) कहा, ''क्या मैं इसके मामले में तुम पर वैसा ही भरोसा करुँ जैसा इससे पहले इसके भाई के मामले में तुम पर कर चुका हूँ? अतः अल्लाह ही सबसे अच्छा रक्षक है और 'वह' सबसे बढ़कर मेहरबान है।'' (65) और जब उन्होंने अपना सामान खोला, तो

उन्होंने अपना माल अपनी ओर वापस किया हुआ पाया, वे बोले, "ऐ हमारे बाप! हमें (और) क्या चाहिए, यह हमारा माल लौटा दिया गया है, अब हम अपने घर वालों के लिए फिर ग़ल्ला लाएँगे, और अपने भाई की रक्षा भी करेंगे, और एक ऊँट भर और अधिक लाएंगे यह अनाज थोड़ा है। (66) (याकूब ने) कहा, "मैं उसे तो तुम्हारे साथ हरगिज़ नहीं भेज सकता, जब तक तुम अल्लाह के नाम पर मुझ को पक्का वचन न दे दो कि तुम उसे मेरे पास ज़रूर लाओगे, सिवाए इसके कि तुम किसी घेरे में आ जाओ," जब उन्होंने उनसे वचन ले लिया तो याकूब ने कहा, "हमारे इस वचन पर अल्लाह निगहबान है"।

आयत नं० 54 से 66 तक की व्याख्या

54-57

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِيْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ﴿۵۴﴾
قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۵﴾ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ
مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ۚ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۷﴾

बादशाह का आप को दोबारा ज़िम्मेदार बनाना

मिस्र के बादशाह ने अपने सपने की तअ़बीर (मतलब) सुनते ही ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को अपने पास बुलाने की फ़रमाईश कर दी थी और इस मक़्सद के लिए दूत को उन के पास जेल में भेज दिया था, लेकिन ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने उस वक़्त तक जेल से निकलना गवारा न फ़रमाया जब तक अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी की लगाई हुई तोहमत से बरी होना साबित न हो जाए। इसीलिए क़ासिद से फ़रमाया कि जाओ अपने आक़ा से कहो कि मामले की तह़क़ीक़ करे और औ़रतों से पूछे कि सह़ी सूरते ह़ाल क्या है?

बादशाह ने औ़रतों से पूछा, उन्होंने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की बरात ज़ाहिर कर दी। अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी भी इक़्रारी हो गई कि मेरा क़ुसूर था, ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का क़ुसूर नहीं था। अब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के पास जेल में रहने की कोई वजह न थी, लिहाज़ा बादशाह ने जब दोबारा क़ासिद (दूत) भेजा तो उस के साथ तशरीफ़ ले आये।

बादशाह को पहले तो ख़्वाब की तअ़बीर (मतलब) मिल जाने की वजह से और फिर तअ़बीर में आर्थिक व्यवस्था की तरफ़ जो इशारा फ़रमाया था उस के जान लेने से और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के इस ह़ौसले से कि मैं बात की सफ़ाई होने तक जेल से नहीं जाऊँगा यह समझ लिया कि यह शख़्स कोई बड़ा आ़लिम (ज्ञानी) भी है, ख़्वाब के मतलब बताने में माहिर भी है और मुत्तक़ी व नेक भी और हिम्मत व ह़ौसला वाला भी है, लिहाज़ा इसे अपने पास बुलाना चाहिए और अपने मश्वरों और इन्तिज़ामी कामों को ख़ास दर्जा देना चाहिए। उस ने अपने आदमियों से कहा कि उस शख़्स को मेरे पास लेकर आओ मैं उसे ख़ालिस अपने लिए ही ख़ास कर लूँगा।

जब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) तश्रीफ़ लाए और बादशाह मिस्र से मुलाक़ात हुई तो आपस में बातचीत होने लगी, इस बातचीत से बादशाह के दिल में ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की और ज़्यादा क़ीमत व वक़अ़त बढ़ गई उसे जो अपने ख़्वाब का मतलब मालूम हुआ तो उस में यह बताया गया कि शुरु के सात साल अच्छे होंगे और उस के बाद वाले सात साल ऐसे होंगे जिन में क़ह़त (सूखा) पड़ेगा, इस के लिए बादशाह ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से मश्विरा किया। आप ने फ़रमाया शुरु के सात सालों में ख़ूब ज़्यादा खेती कराने और ग़ल्ला उगाने की तरफ़ तवज्जोह दी जाए और जो पैदावार हो उस में से ज़रूरत भर ही खाएँ पिएँ और जो बाक़ी बचे उसे मह़फ़ूज़ रखें और यह पहले बता चुके थे कि ग़ल्ला को बालों से न निकालें उसे उन्हीं में रहने दें और इसी तरह़ उस को इकट्ठा किया जाए।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने यह भी फ़रमाया कि यह सूखा सिर्फ़ तुम्हारे ही मुल्क में नहीं आस-पास के दूसरे मुल्कों में भी होगा, वहाँ के ज़रूरतमन्द ग़ल्ला लेने के लिए आप के पास आएँगे तो उस वक़्त आप उनकी ग़ल्ला से मदद भी करें और थोड़ी बहुत क़ीमत भी उन से वसूल करें। इस तरह़ सरकारी ख़ज़ाना में माल भी जमा हो जाएगा और लोगों की मदद भी हो जाएगी। मिस्र के बादशाह इस मश्वरे से बहुत ख़ुश और मुतमइन हुए लेकिन साथ ही उस ने यह भी सवाल किया कि इस मन्सूबे पर कैसे अ़मल होगा और कौन इस के मुताबिक़ अ़मल कर सकेगा?

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने इस के जवाब में फ़रमाया اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ कि मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कर दीजिए اِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ बेशक मैं ह़िफ़ाज़त करने वाला जानने वाला हूँ चूंकि मालियत का इन्तिज़ाम करने में ऐसी होशियारी की ज़रूरत होती है जिस से माल की ह़िफ़ाज़त हो सके, चोर भी न ले सकें और नीचे के लोग भी बेजा न उड़ा सकें और ग़लत जगह और बे-ज़रूरत भी ख़र्च न किया जाए। इसलिए ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने यह फ़रमाया कि मैं ह़िफ़ाज़त करने वाला हूँ और साथ ही यह भी फ़रमाया कि मैं अ़लीम हूँ यानी ह़िफ़ाज़त के तरीक़े भी जानता हूँ ख़र्च करने के मवाक़े से भी बाख़बर हूँ, ह़िसाब-किताब से भी वाक़िफ़ हूँ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ और इसी तरह़ हम ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को ज़मीन में (यानी सरज़मीने मिस्र में) يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ (वह उस में जहाँ चाहे अपना रहना सहना करे।)

نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ (हम जिसे चाहें अपनी रह़मत पहुँचा दें) अल्लाह तआ़ला की रह़मत जिसे शामिले ह़ाल हो जाए वह कैसी ही मुसीबत में हो मुसीबत से निकल कर अच्छी पोस्ट पर पहुँच जाता है। जब अल्लाह की तरफ़ से किसी के बुलन्द करने का फ़ैसला हो तो कोई चीज़ उसे रुकावट नहीं बन सकती وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (और हम अच्छे काम करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करते) मुह़सिनीन को दुनिया में भी नवाज़ देते हैं और आख़िरत में भी وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا يَتَّقُوْنَ (और आख़िरत का सवाब उन लोगों के लिए बेहतर है जो ईमान लाए और तक़्वा अपनाते हैं। इस में यह बता दिया कि दुनिया में अल्लाह तआ़ला मुह़सिनीन को जो कुछ इन्आ़म अ़ता फ़रमा दे बिलाशुब्हा वह अपनी जगह इन्आ़म है, लेकिन आख़िरत का सवाब अहले ईमान और अहले तक़्वा के लिए बेहतर है।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) मालियत के इन्तिज़ाम करने वाले (Finance Minister) तो बना ही दिये गए

थे, जैसा कि क़ुर्आन मजीद से मालूम हुआ। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि और भी ज़िम्मेदारियाँ बादशाह ने उन के सुपुर्द कर दी थीं और ख़ुद सन्यासी हो गया था।

यहाँ मुफ़स्सिरीन ने उसूली बात यह की है कि ख़ुद से ओ़हदा का तालिब न होना चाहिए और जो ओ़हदे का तालिब हुआ उसे ओ़हदा न दिया जाए। ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अमीर (अगुवा) बनने का सवाल न करना क्योंकि अगर तेरे सवाल करने पर इमारत तेरे सुपुर्द कर दी गई तो तू उस के सुपुर्द कर दिया जाएगा (यानी इस का नतीजा यह होगा कि तू जाने और वह जाने अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तेरी मदद न होगी) और अगर तुझे बिना सवाल के इमारत (अगुवई) दे दी गई तो उस पर तेरी मदद की जाएगी। **(बुख़ारी)**

एक ह़दीस में है (जिस के रावी ह़ज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं) कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया **انا والله لا نولی علی هذا العمل احد اساله ولا احد احرص علیه** (अल्लाह की क़सम! हम अपने काम पर ऐसे शख़्स को नहीं लगाते जो उस का सवाल करे या उस की ह़िर्स करे। **(बुख़ारी)**

जब मस्ला इस तरह़ से है तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अपने लिए ओ़हदे का मुताल्बा क्यों फ़रमाया? उ़ल्म-ए-किराम ने इस सवाल का यह जवाब दिया है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने लोगों की ख़ैर ख़्वाही के लिए ओ़हदे का सवाल किया, उन्हें मालूम था कि सात साल तक एक ज़बरदस्त क़ह़त आने वाला है। जब आ़म क़ह़त पड़ता है तो लोगों की बुरी ह़ालत होती है, एक दूसरे पर रह़म नहीं खाते अपने बच्चों तक को बेच कर खा जाते हैं, बादशाह काफ़िर है उस के लोग भी काफ़िर है, क़ह़त (सूखा) का सामना है इस में बड़े इन्तिज़ाम की ज़रूरत है, काफ़िरों से उम्मीद नहीं जो ग़रीबों पर रह़म खाएँ और कोई ऐसा शख़्स नहीं जो अर्थ-व्यवस्था का इन्तिज़ाम संभाल सके, लिहाज़ा उन्होंने इस ख़िद्मत के लिए अपनी ज़ात को पेश कर दिया यह तो ठीक है कि आ़म ह़ालात में ख़ुद से ओ़हदा तलब न किया जाए और जो ओ़हदा तलब करे उसे न दिया जाए लेकिन जहाँ कहीं ऐसी सूरत पेश आ जाए कि अगर महसूस करे कि मेरे अ़लावा फ़रायज़ को पूरा करने वाला कोई नहीं है और अल्लाह के दिये हुए इ़ल्म के ज़रिये मैं इस काम को अन्जाम देता रहूँगा तो ऐसे शख़्स के लिए न सिर्फ़ यह कि जायज़ है बल्कि वाजिब है कि ओ़हदे की ज़िम्मेदारी संभाल ले और आगे बढ़कर ले ले।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को अल्लाह ने इ़ल्म दिया था और इन्तिज़ाम के लिए जिस होशमन्दी की ज़रूरत होनी चाहिए मौजूद थी और साथ ही वह अल्लाह तआ़ला के नबी भी थे जिस से उन्हें हर वक़्त अल्लाह के मदद की उम्मीद थी और ओ़हदे पर रहकर तौह़ीद की इशाअ़त और तब्लीग़े ह़क़ का रास्ता खुलने का भी बहुत अच्छा मौक़ा था।

इसलिए उन्होंने न सिर्फ़ यह कि ओ़हदा क़ुबूल फ़रमा लिया बल्कि ख़ुद से उस का बोझ उठाने की पेशकश कर दी और बादशाह को मुतमइन (सन्तुष्ट) करने के लिए إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ भी फ़रमा दिया। इस से मालूम हुआ कि अपना इ़ल्म व फ़ज़्ल किसी ज़रूरत से ज़ाहिर किया जाए तो यह जाएज़ है बशर्ते कि इस में कोई नाम व नमूद न हो और अल्लाह की रज़ा मक़्सूद हो।

58-64

وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿۵۸﴾ وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ
قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْٓ اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿۵۹﴾
فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿۶۰﴾ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿۶۱﴾
وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۶۲﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ
اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿۶۳﴾ قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ۭ
فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۠ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۶۴﴾

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों का मिस्र आना

ख़ुशह़ाली के सात साल गुज़रने के बाद क़ह़त (सूखा) का ज़माना आ गया। यह क़ह़त सिर्फ़ मिस्र ही में न था बल्कि आस-पास के इलाक़ों में भी था। मुल्क शाम भी मिस्र के साथ मिलता है यहाँ भी क़ह़त (सूखा) था और ग़ल्ले की ज़रूरत थी।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के वालिद और भाई फ़िलिस्तीन में रहते थे जो शाम का एक ह़िस्सा है। उन लोगों को भी इ़ल्म हुआ कि मिस्र में ग़ल्ला मिलता है और ह़ुकूमत की तरफ़ से दिया जा रहा है, लेकिन ह़ुकूमत का यह देना मुफ़्त में नहीं है।

ग़ल्ला ह़ासिल करने के लिए ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाई भी मिस्र के लिए रवाना हो गये, साथ ही माल भी लिया ताकि उस के ज़रिये ग़ल्ला ह़ासिल कर सकें। वह ज़माना ऊँटों पर सवार होकर सफ़र करने का था यह लोग सफ़र कर के मिस्र पहुँचे, मालूम हुआ कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ग़ल्ला तक़्सीम करने के ज़िम्मेदार हैं, यह लोग भी ग़ल्ला ह़ासिल करने के लिए उन की ख़िद्मत में पहुँच गये जहाँ वह अन्दर के कमरे में तशरीफ़ रखते थे, जब उन के पास पहुँचे तो उन्होंने पहचान लिया कि यह तो मेरे भाई हैं, यह दस भाई थे जो पहली माँ से थे। {ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का ह़क़ीक़ी भाई बिन्यामीन उन के साथ नहीं था} भाईयों ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को नहीं पहचाना, उन्हें इस का गुमान भी न था कि जिसे हम ने कुआँ में डाल दिया था वह आज इतने बड़े ओ़हदे पर होगा।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने किसी तद्बीर से उन से यह कहलवा लिया कि हमारा एक भाई और है जिसे हम अपने वालिद के पास छोड़ आए और बाज़ ह़ज़रात ने यूँ लिखा है कि जब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने एक आदमी पर एक-एक ऊँट ग़ल्ला भर कर उन सब को दे दिया तो उन्होंने कहा हमारा एक बाप शरीक भाई है उस को हमारे वालिद ने इस वजह से हमारे साथ नहीं भेजा कि उन का एक बेटा गुम हो गया था उस से उन को दिली तक्लीफ़ हुई और अब उस भाई से उनको तसल्ली होती है इसलिए उस का ह़िस्सा भी दे दें यानी एक ऊँट भर ग़ल्ला ज़्यादा मिल जाए। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने फ़रमाया यह तो हमारे क़ानून के ख़िलाफ़ है, जो शख़्स ह़ाज़िर होता है हम उसी को देते हैं।

वतन की ओर वापसी-

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों ने जब ग़ल्ला ह़ासिल कर के अपने वतन को वापस होने लगे तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने फ़रमाया कि अब आना हो तो अपने भाई को भी ले आना। देखो! मैं पूरा नाप कर देता हूँ और मैं सब से ज़्यादा मेहमान नवाज़ी भी करता हूँ तुम्हारा वह भाई आएगा तो इन्शाअल्लाह उस को भी पूरा ह़िस्सा दूँगा और साथ में यह भी फ़रमा दिया कि अगर तुम उसे न लाए तो मेरे पास तुम्हारे नाम का कोई ग़ल्ला नहीं और तुम मेरे पास फिर मत आना, क़ह़त (सूखा) का ज़माना तो था ही एक ऊँट भर जो ग़ल्ला मिला था उस के बारे में वह जानते थे कि कितने दिन काम दे सकता है दोबारा आने की बहरह़ाल ज़रूरत पड़ेगी इसलिए उन्होंने कहा कि हम उस के वालिद से ख़ुशामद करके उन्हें राज़ी करेंगे कि अपने बेटे को हमारे साथ भेज दें और यह काम हमें ज़रूर करना है।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अपने लोगों से फ़रमाया कि यह लोग जो पूंजी लेकर आए हैं जिस के ज़रिये ग़ल्ला ख़रीदा है इन को बताए बग़ैर इन की रक़म इनके सामान में रख दें। उम्मीद है कि जब यह लोग अपने घरवालों के पास वापस पहुँचेगे और सामान खोलेंगे तो यह उन्हें नज़र आ जाएगी और उसे पहचान लेंगे कि यह तो वही है जो हम ग़ल्ला की क़ीमत देकर आए हैं, जब उस पूंजी को देखेंगे तो उम्मीद है कि फिर आएँगे।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने यह तद्बीर इसलिए की कि वह किसी तरह़ फिर वापस आएँ और अपने भाई को भी लेकर आएँ। पहली बात तो उन से आने का वादा लिया जिस भाई को छोड़कर आए हो उसे आइन्दा सफ़र में लेकर आना और दूसरे यह तम्बीह भी सुना दी कि अगर तुम उस भाई को न लाए तो तुम में से किसी को अपना ह़िस्सा भी न मिलेगा। तीसरे यह कि जो पूंजी उन्होंने ग़ल्ला की क़ीमत के तौर पर पेश की थी वह उन्हीं के सामान में रखवा दी।

उल्मा-ए-तफ़्सीर ने फ़रमाया कि यह उन्होंने इसलिए किया कि उन्हें इस का यक़ीन था कि उन के पास इस पूंजी के अ़लावा और माल भी होगा। मुम्किन है मज़ीद माल न हो, अगर यह माल वापस चला जाएगा तो इसी को लेकर दोबारा वापस आ सकेंगे और यह भी कहा जा सकता है कि जब उन्हें यह ख़याल होगा कि जिस शख़्स ने हमें ग़ल्ला दिया और पूंजी भी वापस कर दी वह बड़ा एह़सान करने वाला है। ऐसे शख़्स के पास तो जाना चाहिए और बाज़ ह़ज़रात ने यह भी कहा कि जब वालिद साह़ब को यह मालूम होगा कि हमारी पूंजी वापस आ गई है जो मिस्री ख़ज़ाने में दाख़िल होनी चाहिए थी और यह भूल कर आ गई होगी, लिहाज़ा ह़क़ के मुताबिक़ यह वहीं पहुँचानी चाहिए जहाँ से वापस आई। ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) को यह कहाँ बर्दाश्त हो सकता था कि किसी का ह़क़ उन की तरफ़ रह जाए लिहाज़ा वह अपने बेटों को दोबारा ज़रूर भेजेंगे और इस तरह़ से अपने ह़क़ीक़ी भाई बिन्यामीन से भी मुलाक़ात हो जाएगी।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि जब बादशाह को ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने ख़ुद ही मश्वरा दिया

था कि क़हत (सूखा) के ज़माने में ग़ल्ला पैसे से दिया जाएगा और इस में कोई अलग नहीं था तो फिर उन्होंने अपने भाईयों की पूंजी क्यों वापस कर दी? इस के बारे में बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इतनी पूंजी उन्होंने अपने पास से शाही ख़ज़ाने में जमा फ़रमा दी और दूसरा जवाब यह है कि उन्हें चूंकि इस बात का यक़ीन था कि वालिद (अ़लै०) इस पूंजी को ज़रूर वापस भिजवा देंगे इसलिए एक एतिबार से उधार देना हुआ बिल्कुल ही बख़्श देना न हुआ, बहरहाल जो भी सूरत हो अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) पाक थे, मासूम थे, ख़यानत से दूर थे, उन्होंने जो भी किया ठीक किया हम तक हर बात का पहुँचना ज़रूरी नहीं।

यह लोग ग़ल्ला लेकर वापस अपने वतन पहुँच गये और अपने वालिद से कहा कि अब्बा जी इस बार तो ग़ल्ला ले आए हैं, लेकिन जिस को ग़ल्ला देने का अधिकार है उस ने हमें ग़ल्ला देने की पाबन्दी लगा दी है। हाँ, सिर्फ़ एक सूरत में ग़ल्ला देने का वादा किया है कि हमारा यह भाई भी हमारे साथ जाए। इसलिए आप हमारे इस भाई (बिन्यामीन) को हमारे साथ भेज दीजिए ताकि हम ग़ल्ला ला सकें उस के हिस्से का तो ग़ल्ला मिलेगा ही हमारे हिस्से पर जो पाबन्दी लगा दी गई है वह भी दूर हो जाएगी। यह बात ज़रूर है कि आप को हमारी तरफ़ से इस के बारे में कोई अन्देशा हो सकता है, लेकिन आप भरोसा रखें हम इस की हिफ़ाज़त करेंगे।

उन के वालिद ने फ़रमाया, क्या मैं इस के बारे में तुम पर वैसा ही भरोसा करुँ जैसा कि इस से पहले इस के भाई के बारे में तुम पर भरोसा किया था? मैं तुम पर भरोसा नहीं करुँगा, अब तो बस यही कहता हूँ कि अल्लाह सब से बेहतर हिफ़ाज़त करने वाला है और सब से बढ़कर रहम फ़रमाने वाला है। तुम्हारे ऊपर मैं भरोसा नहीं करता, अब जाओ तो इसे ले जाना मैं इसे अल्लाह की हिफ़ाज़त में देता हूँ।

65-66 وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ۝ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ۝

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों का वादा

बाप बेटों में बातें हो रही थीं कि मिस्र में ग़ल्ला लेने गए थे तो वहाँ से ग़ल्ला तो ले आए लेकिन जो साह़ब ग़ल्ला तक़्सीम करते हैं उन्होंने आइन्दा के लिए यह शर्त लगा दी है कि अपने भाई को भी लाओगे तो ग़ल्ला मिलेगा वरना नहीं। फिर जब सामान खोला तो क्या देखते हैं कि जो पूंजी (रक़म) वहाँ ग़ल्ला के बदले दी थी वह तो अपने ही सामान में मौजूद है। पूंजी को देखकर कहने लगे कि अब्बा जान! हमें और क्या चाहिए हम ग़ल्ला भी ले आएहैं और पूंजी भी वापस मिल गई, ऐसे करीम और मोह़सिन आदमी की तरफ़ फिर जाना चाहिए लेकिन शर्त के ख़िलाफ़ जाना बेफ़ायदा होगा, लिहाज़ा भाई को हमारे

साथ भेज दीजिए ताकि इस बार फिर जाएँ और ग़ल्ला लाएँ और जब भाई को साथ ले जाना ज़रूरी है तो हम भाई की हिफ़ाज़त भी करेंगे और एक आदमी के बढ़ने से मज़ीद एक ऊँट के बराबर ग़ल्ला भी ले आएँगे क्योंकि बिन्यामीन के हिस्से का भी ग़ल्ला मिलेगा। जो ग़ल्ला अब लाए हैं यह तो थोड़ा सा है यह जल्दी ख़त्म हो जाएगा और हमें दोबारा जाना ही पड़ेगा। उन के वालिद ने कहा कि यह बात तो ठीक है, लेकिन तुम्हारा भरोसा क्या है तुम इस की हिफ़ाज़त का वादा तो कर रहे हो लेकिन मैं उसे जभी तुम्हारे हवाले करुँगा जबकि अल्लाह का नाम लेकर ख़ूब मज़बूत वादा करो यानी क़सम खाओ कि इसे ज़रूर लाओगे।

इस पर उन्होंने क़सम खा ली, लिहाज़ा हज़रत याक़ूब (अ़लै०) बिन्यामीन को भेजने पर राज़ी हो गए और कहने लगे कि अल्लाह तआ़ला हमारी बातों पर निगेहबान है वह हमारी इन बातों पर गवाह है, लेकिन साथ ही إِلَّا أَن يُحَاطَ بِكُمْ भी कह दिया जिस का मतलब यह है कि अपनी तरफ़ से तो भाई की ख़ूब हिफ़ाज़त करना और हिफ़ाज़त में कमी न करना, लेकिन अगर कोई ऐसी सूरत पैदा हो जाए कि तुम सब घेरे में आ जाओ (या तुम सभी हलाक हो जाओ या इस की हिफ़ाज़त में बेबस हो जाओ तो इस पर मैं क्या पकड़ कर सकूँगा? मअ़ज़ूरी और मजबूरी पर तो पकड़ नहीं हो सकती) इस में यह बात बता दी कि मजबूरी की हालत में पकड़ नहीं है।

हज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने पहले यह फ़रमा दिया था कि अब तुम पर भरोसा करना ऐसा ही है जैसे हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के बारे में तुम पर भरोसा किया था, इस भरोसे का अन्जाम यह हुआ कि हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से जुदाई हो गई, लेकिन अब हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाई को ले जाने की ज़रूरत पड़ी तो तुम्हारे वादे का भरोसा नहीं करुँगा सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की हिफ़ाज़त में दूँगा फिर जब सामान से पूंजी (रक़म) निकल आई और दोबारा ग़ल्ला लाने के लिए मिस्र जाना मश्वरे से तय हो गया तो हज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने फ़रमाया कि तुम अल्लाह की मज़बूत क़सम खाओ कि इस भाई की हिफ़ाज़त करोगे।

इस से मालूम हुआ कि भरोसा सिर्फ़ अल्लाह ही पर था और अल्लाह ही से हिफ़ाज़त की उम्मीद थी, लेकिन ज़ाहिरी सबब के तौर पर भाईयों से भी हिफ़ाज़त की क़सम ले ली। मालूम हुआ कि ज़ाहिरी चीज़ों का अख़्तियार करना तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है।

आयत नं० 67 से 79 तक

وَ قَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَاۤ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا
حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى
اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْۤ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ
رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ۝ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ۝ قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ
وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ۝ قَالُوْا فَمَا
جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ۝ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ
قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ
اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝ قَالُوْۤا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ
فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا
كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ
اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝

अनुवाद-

(67) और (याक़ूब ने) कहा, 'ऐ मेरे बेटो! एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना, बल्कि विभिन्न दरवाज़ों से दाख़िल होना और मैं अल्लाह के मामले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकता, हुक्म तो बस अल्लाह ही का चलता है 'उसी' पर मैं ने भरोसा किया, और भरोसा करने वालों को 'उसी' पर भरोसा करना चाहिए।'' (68) और जब वे लोग दाख़िल हुए, जिस तरह उनके बाप ने उनको हुक्म दिया था- अल्लाह की ओर से होने वाली किसी चीज़ को वह उन्हें टाल नहीं सकता था, बस याक़ूब के जी की एक इच्छा थी जो उसने पूरी कर ली, और बेशक वह 'हमारी' दी हुई शिक्षा के आधार पर इल्म वाला था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते; (69) और जब वे लोग यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने सगे भाई को अपने पास जगह दी और बताया''मैं तुम्हारा भाई हूँ, तो यह लोग जो व्यवहार करते रहे, उस पर तुम ग़म न करो"। (70) तो जब उनका सामान तैयार कर दिया, तो अपने भाई के सामान में पानी पीने का प्याला रख दिया, फिर एक पुकारने वाले ने पुकार कर कहा, ''ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम तो चोर हो; (71) (भाइयों ने) उनकी ओर पलट कर देखा, और कहा ''तुम्हारी कौन सी चीज़ खो गई है?" (72) (दरबारियों ने) कहा, ''हमें शाही पैमाना (गिलास) नहीं मिल रहा है जो व्यक्ति उसे लाएगा एक ऊँट के बोझ भर ग़ल्ला (इनआ़म) मिलेगा, मैं उसकी ज़िम्मेदारी लेता हूँ"। (73) (भाइयों ने) कहा, ''अल्लाह की क़सम! तुम लोग जानते ही हो कि हम इस ज़मीन पर न फ़साद करने वाले हैं और न हम चोर हैं"। (74) (दरबारियों ने) कहा, "अगर तुम झूठे सिद्ध हुए तो फिर उसकी सज़ा क्या होगी"? (75) (भाइयों ने) कहा, "उसकी सज़ा यह है कि जिसके सामान में वह मिले वही उसका बदला ठहराया जाए हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं"। (76) फिर (यूसुफ़ ने) अपने

भाई की बोरी से पहले उनके थैलियों की तलाशी शुरु की; फिर अपने भाई की थैलियों से उस (प्याले) को बरामद कर लिया; इस तरह 'हमने' यूसुफ़ के लिए उपाय की, वह शाही क़ानून के अनुसार अपने पास नहीं रख सकता था, मगर यह कि अल्लाह चाहे, 'हम' जिसको चाहते हैं दर्जे बुलन्द करते हैं, और हर इल्म वाले से दूसरा इल्म वाला बढ़ कर है। (77) (भाइयों ने) कहा, ''अगर इसने चोरी की है तो इसका एक भाई भी चोरी कर चुका है, मगर यूसुफ ने इसे अपने जी ही में रखा, और उन पर ज़ाहिर नहीं किया"। उन्होंने कहा, ''तुम बहुत बुरे हो! जो कुछ तुम कह रहे हो, अल्लाह उसकी हक़ीक़त खूब जानता है"। (78) (भाइयों ने) कहा, ''ऐ अ़ज़ीज़! इसका बाप बहुत ही बूढ़ा है इसलिए इसकी जगह पर हममें से किसी को रख लीजिए, हमारी नज़र में तो आप एहसान करने वाले हैं"। (79) (यूसुफ़ ने) कहा, "इस बात से अल्लाह पनाह में रखे कि, जिसके पास हमारी चीज़ निकली है, उसके सिवा किसी और को पकड़ लें, अगर हम ऐसा करेंगे तो हम ज़ालिम होंगे"।

आयत नं० 67 से 79 तक की व्याख्या

67-68 وَ قَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَاۤ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) का बेटों को वसीयत

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाई दोबारा मिस्र के लिए रवाना होने के लिए तैयार हो गये अपने सौतेले भाई को भी साथ ले लिया, चलने लगे तो उन के वालिद ने कहा कि ऐ बेटो! तुम सब एक दरवाज़े से दाख़िल मत होना, बल्कि मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) दरवाज़ों से दाख़िल होना। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने यह वसीयत इसलिए फ़रमाई कि यह लोग ख़ूबसूरत थे उन को नज़र लग जाने का ख़त्रा था और एक ही बाप के ग्यारह बेटे इकट्ठा किसी जगह पहुँचें तो उस में ह़सद का भी अन्देशा था, इसलिए उन्होंने विभिन्न दरवाज़ों से दाख़िल होने की नसीह़त और वसीयत फ़रमाई, नज़र का लग जाना ह़क़ है। जैसा कि सह़ीह़ ह़दीस में आया है कि बद्नज़री से बचने के लिए कोई जायज़ तरीक़ा अपना लिया जाए तो इस में कोई ह़र्ज नहीं।

ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने विभिन्न दरवाज़ों से दाख़िल होने की वसीयत तो फ़रमा दी, लेकिन साथ ही यह भी फ़रमा दिया وَمَاۤ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ (और मैं अल्लाह के हुक्म को तुम पर ज़रा भी टाल नहीं सकता) मतलब यह था कि यह जो मुख़्तलिफ़ दरवाज़ों से दाख़िल होने की फ़रमाइश की है यह एक ज़ाहिरी तद्बीर है, होगा वही जो अल्लाह चाहेगा। अगर कोई नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो उसे कोई रद्द नहीं

कर सकता إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ (हुक्म तो बस अल्लाह ही का है) عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ नज़रे बद् से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहने की ज़ाहिरी शक्ल तो मैंने बता दी जो ज़ाहिरी तौर पर है, लेकिन मेरा भरोसा इस तद्बीर पर नहीं बल्कि मेरा भरोसा अल्लाह तआ़ला ही पर है और भरोसा करने वालों को सिर्फ़ उसी पर भरोसा करना चाहिए।

यह ग्यारह भाई जब मिस्र पहुँचे तो जिस शहर में उन को जाना था उस में अपने वालिद के फ़रमान के मुताबिक़ दरवाज़ों से दाख़िल हुए उन का यह अलग-अलग दरवाज़ों से दाख़िल होना अल्लाह की किसी क़ज़ा और क़द्र को टालने वाला न था। बस इतनी सी बात थी कि ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) के दिल में जो एक ह़ाजत थी वह पूरी हो गई यानी उन्होंने नज़रेबद् से बचने का एक तरीक़ा बताया था उस पर अ़मल हो गया। अल्लाह तआ़ला ने उन के बारे में फ़रमाया وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ (और बिलाशुब्हा वह इ़ल्म वाले थे इस वजह से कि हम ने उन्हें इ़ल्म अ़ता फ़रमाया था) वह यह समझते थे कि तद्बीर (योजना) एक ज़ाहिरी चीज़ है ह़क़ीक़ी कारसाज़ तो अल्लाह तआ़ला ही है وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (और लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते) यह वह लोग हैं जो अपनी जिहालत से अपनी तद्बीर (Plan) को प्रभावी समझ लेते हैं।

69-75

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
فَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسَارِقُونَ ۝
قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِم مَّاذَا تَفْقِدُونَ ۝ قَالُوا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَن جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ۝
قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُم مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سَارِقِينَ ۝ قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِن كُنتُمْ كَاذِبِينَ ۝
قَالُوا جَزَاؤُهُ مَن وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का दोबारा मिस्र पहुँचना

यह ग्यारह भाई जब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के पास पहुँचे जिन में बिन्यामीन भी थे तो भाईयों ने

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के सामने बिन्यामीन को पेश कर दिया और कहा कि लीजिए आप की शर्त के मुताबिक़ हम अपने सौतेले भाई को भी साथ ले आए।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने एक कमरे में दो आदमियों को ठहरा दिया, दस आदमी पाँच कमरों में ठहर गये। ग्यारहवाँ भाई बिन्यामीन बच गया उस को उन्होंने अपने पास ठहरा लिया और बिन्यामीन से फ़रमाया कि मैं तुम्हारा ह़क़ीक़ी भाई हूँ। यह लोग अब तक जो अ़मल करते रहे हैं जिस से तुम्हें तक्लीफ़ पहुँची उस के बारे में रंजीदा न हो, उन्होंने जो कुछ किया है उस को नज़र अन्दाज़ करो, अल्लाह तआ़ला ने करम फ़रमाया और हमें और तुम्हें जमा फ़रमा दिया।

भाईयों को इ़ज़्ज़त के साथ ठहराया उन को सामान दिया, लेकिन चुपके से एक बर्तन जिस से ग़ल्ला नाप कर देते थे अपने भाई के सामान में रख दिया, जो लोग ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के यहाँ काम करते थे ग़ल्ला नाप कर देते थे उन्होंने देखा कि वह प्याला ग़ायब है जिस से ग़ल्ला नापा जाता है, उन्हें पता न था कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने उन्हीं क़ाफ़िला वालों में से किसी के सामान में रख दिया है, उन लोगों को ह़ैरानी हुई और पूछ-ताछ का भी डर हुआ तो उन में से एक शख़्स ने तेज़ आवाज़ से पुकार कर कहा कि, ऐ क़ाफ़िले वालों! तुम तो चोर हो, यह सुनते ही बिरादराने यूसुफ़ ह़ैरान रह गये उन्हें अपने भाईयों में से किसी के बारे में भी चोरी करने का गुमान न था, लिहाज़ा वह कहने लगे कि आप लोगों की क्या चीज़ गुम है? जिस के बारे में यह एलान हो रहा है और हमें बुरा भला कहा जा रहा है, उन लोगों ने जवाब में कहा कि हमें बादशाह का पैमाना (नापने का बर्तन) नहीं मिल रहा है जिस के ज़रिये ग़ल्ला नाप कर दिया जाता है और जो शख़्स उस पैमाने को लेकर आए हम उसे एक ऊँट भर कर और अधिक ग़ल्ला देंगे जो हमारी खोई हुई चीज़ के लाने का इनआ़म होगा।

जिस शख़्स ने खोई हुई चीज़ का एलान किया था उस ने यह भी कहा कि यह झूठा वादा नहीं है, जो भी शख़्स यह पैमान लेकर आएगा उसे वाक़ई इनआ़म दिया जाएगा और मैं इस का ज़िम्मेदार हूँ।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों ने कहा कि भला हम और चोरी? आप लोग ख़ुद ही जानते हैं आ़माल और अख़्लाक़ को देख रहे हैं कि हम ज़मीन पर फ़साद करने के लिए नहीं आए हम भला चोरी कहाँ कर सकते हैं? न हम पहले से चोर हैं और न अब चोरी की है।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के ख़िद्मतगुज़ारों ने कहा कि अगर तलाशी के बाद तुम लोग अपनी बात में झूठे निकले और तुम्हारे पास से हमारा खोया हुआ पैमाना मिल गया तो बताओ उस के चुराने वाले की क्या सज़ा होगी? ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों ने कहा कि उस की सज़ा यह है कि जिस के भी सामान में वह पैमाना मिलेगा उसी को उस के बदले में रख लिया जाए यानी उसे गुलाम बना लिया जाए और साथ ही كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ कह कर यह भी बता दिया कि हमारे दीन और शरीअ़त में चोर को सज़ा देने का यही तरीक़ा है (कि चोर को गुलाम बना कर रख लिया जाए।)

76 فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝

बिन्यामीन के सामान से पैमाने का निकलना

जब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने ख़ुद ही यह कह दिया कि जिस के सामान में आप लोगों का खोया हुआ सामान निकल आएउसी को उस के बदले में ग़ुलाम बना लिया जाए और यह कह दिया कि हम इसी तरह़ चोर को सज़ा दिया करते हैं यानी यह उस शरीअ़त के मुताबिक़ है जिस पर हम चलते हैं तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने उन के सामानों की तलाशी लेना शुरु कर दिया। पहले दूसरे भाईयों के सामान को देखा फिर जब अपने भाई के सामान को टटोला तो उस में से पैमाना निकल आया, रखा तो ख़ुद ही था और मालूम था कि इस के सामान में है लेकिन पहले इस में हाथ न डाला ताकि वह लोग यह न समझ लें कि यह उन की आपस की साज़िश है

बिन्यामीन के सामान से पैमाना निकल आया तो सब भाई ह़ैरान रह गये यह तद्बीर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को बताई क्योंकि शाह मिस्र के क़ानून में कोई ऐसा क़ानून न था कि चोरी करने वाले को ग़ुलाम बना कर रख लिया जाए। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के दुनिया और आख़िरत में दर्जात बुलन्द फ़रमाए और उन्हें इ़ल्म अ़ता फ़रमाया, उन्हीं उ़लूम में से एक तद्बीर यह भी थी जो उन के अपने भाई को रोकने के लिए उन के दिल में डाली وَفَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ (और हर इ़ल्म वाले के ऊपर बड़ा इ़ल्म वाला है) मतलब यह है कि बड़े से बड़े आ़लिम के मुक़ाबिले में कोई ऐसा ज़रूर है जो उस से ज़्यादा इ़ल्म रखने वाला है और जिसे सारी मख़्लूक़ से ज़्यादा इ़ल्म है। अल्लाह तआ़ला को इस से ज़्यादा इ़ल्म है।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अपने वालिद के रंज और सद्मा का क्यों एह़सास नहीं फ़रमाया? वह कई साल से ख़ुद ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की जुदाई के ग़म में घुल रहे थे, थोड़ी बहुत जो तसल्ली बिन्यामीन से थी वह भी ख़त्म हो गई उन्हें मज़ीद तक्लीफ़ पहुँचाने की कैसे हिम्मत हुई?

इस का जवाब यह है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का प्रोग्राम अपने वालिदैन और अपने भाईयों को जल्द ही बुलाने का था और भाई का रोक लेना इसलिए था कि वालिद उन दोनों को तलाश करने के लिए भेजें और यह लोग तीसरी बार फिर आएँ। अगर भाई को न रोकते तो मुम्किन था कि फिर वालिद के भेजने पर भी यह लोग न आते क्योंकि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को यह लोग मुर्दा कह ही चुके थे अब कम से कम एक भाई की तलाश करना तो ज़रुरी ही था आख़िरकार उन्हें अपने वालिद के फ़रमान पर तीसरी बार आना पड़ा जैसा कि आइन्दा रुकूअ़ में इस का ज़िक्र आ रहा है। यहाँ बाज़ ह़ज़रात ने यह सवाल भी उठाया है कि आज़ाद को ग़ुलाम बनाना कैसे दुरुस्त हुआ?

कुछ सवालों के जवाबात-

यह सवाल कोई ख़ास नहीं है क्योंकि ह़क़ीक़ी ग़ुलाम नहीं बनाया था केवल रोकने का बहाना था,

फिर यह ह़क़ शरीअ़त याक़ूबी के मुताबिक़ था जिसे उन के भाईयों ने كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ कह कर ज़ाहिर कर दिया था।

बाज़ ह़ज़रात ने यह सवाल भी उठाया है कि अपनी ज़रूरत से दूसरे को चोरी का इल्ज़ाम लगाना कैसे दुरुस्त हुआ? जो शख़्स बरी हो उसे इल्ज़ाम लगाना गुनाह कबीरा है। इस का जवाब यह है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने इल्ज़ाम नहीं लगाया उन्होंने तो सिर्फ़ उन के सामान में पैमाना रख दिया था। अलबत्ता नौकरों ने पैमाना न पाकर चोरी होने का ऐलान कर दिया उन लोगों ने भी अपने ख़याल में इल्ज़ाम नहीं लगाया था बल्कि ह़ालात के एतिबार से उन्हें यक़ीन था कि उन्हीं में से किसी न किसी शख़्स ने पैमाना रख लिया है, लेकिन यह सवाल फिर भी बाक़ी रह जाता है कि यह तो मालूम ही था कि पैमाना रखने के बाद जब मिला होगा तो छोटे भाई पर पूरी तरह़ चोरी वाली बात लग जाएगी और इस तरह़ उस की बेइ़ज़्ज़ती होगी। बाज़ ह़ज़रात ने इस का यह जवाब दिया है कि बिन्यामीन अपने भाईयों के साथ रहने से ऐसे तंग हो गए थे कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के पास रह जाने के लिए चोरी के इल्ज़ाम में गिरफ़्तार होना तक गवारा कर लिया था और यह दोनों भाईयों के मश्वरे से हुआ था।

यहाँ यूँ भी कहा जा सकता है कि चूंकि इस इल्ज़ाम की ह़क़ीक़त जल्द ही खुल जाने वाली थी और आइन्दा सब पर यह बात खुल जाने वाली थी कि इन्होंने चोरी नहीं की थी बल्कि यह उन के रोकने के लिए एक तद्बीर की गई थी, इसलिए इस इल्ज़ाम की ह़ैसियत ख़त्म हो जाती है, भाई को रोकने का रास्ता भी निकल आया और फिर वह इल्ज़ाम जल्द ही दफ़अ़ भी हो गया।

77-79 قَالُوْٓا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का दरख़्वास्त करना

जब बिन्यामीन के सामान से प्याला बरामद हो गया तो भाईयों को सख़्त शर्मिन्दगी हुई। कुछ तो ग़ुस्सा और कुछ शर्म को मिटाने के लिए कहने लगे अगर इस ने चोरी की है तो कौन से तअ़ज्जुब की बात है? इस का भाई भी तो इस से पहले चोरी कर चुका है, उस भाई से ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) मुराद हैं।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने उन लोगों की बात सुन ली जिस में उन की ज़ात पर ह़मला था, लेकिन उन की बात का जो जवाब देना था उसे ज़बान पर न लाए अलबत्ता अपने दिल ही में कहा कि तुम इसे और इस के भाई को चोर बता रहे हो ह़ालांकि तुम चोरी के दर्जे से भी ज़्यादा बुरे हो, हम दोनों भाईयों ने तो चोरी की ही नहीं, लेकिन तुम ने इतना बुरा काम किया है कि आदमी ग़ायब कर दिया। यानी मुझे मेरे बाप से छुड़ा दिया और बहाना कर के उन के पास से ले आए फिर उन के पास वापस न ले गए

और चन्द दिरहम के बदले आज़ाद को ग़ुलाम बना कर बेच दिया यह तो दिल में कहा और ऐलानिया तौर पर फ़रमाया وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ कि अल्लाह तआ़ला ही ख़ूब जानता है जो कुछ तुम बयान करते हो।

'अ़ल्लामा क़ुर्तुबी' ने पेज नं० 339 पर एक क़ौल यह भी नक़्ल किया है कि चोरी का कोई क़िस्सा था ही नहीं, उन लोगों ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के बारे में ऐसी बात बिल्कुल ही झूठ कही थी।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने उन्हें जो जवाब दिया और اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ फ़रमाया, यह सब दिल ही दिल में था, लेकिन बिरदाराने यूसुफ़ पहले ही अपने वालिद से शर्मिन्दा थे और उन के एक चहीते लड़के को गुम कर चुके थे और अब यह दूसरा वाक़िआ़ पेश आ गया कि बड़े वादों के साथ उन के दूसरे प्यारे को लाए थे अब वह भी गिरफ़्तार कर लिया गया और रोक लिया गया, ह़ैरान और परेशान थे कि वालिद को क्या जवाब देंगे क्या करें और क्या न करें? फिर एक तद्बीर सोची और वह यह कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से अ़र्ज़ करें कि यह जो हमारा सौतेला भाई चोरी की वजह से पकड़ा गया, यह उस के बूढ़े बाप के लिए बहुत ज़्यादा मुसीबत की बात होगी, उन को उस से बहुत ज़्यादा मुह़ब्बत और लगाव है और उन की उ़म्र भी बहुत ज़्यादा है उस के वापस न पहुँचने से उन का बुरा ह़ाल होगा इसलिए आप हम में से किसी एक को उस की जगह ले लीजिए। हम देख रहे हैं कि आप एह़सान करने वालों में से हैं, लिहाज़ा आप करम फ़रमाइए और हमारी यह बात मन्ज़ूर कर लीजिए (अपने वालिद के सामने शर्मिन्दा होना उन को इतना ज़्यादा तक्लीफ़देह था कि ग़ुलाम बन कर रहने को तैयार थे।)

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने फ़रमाया कि हम ऐसा कैसे कर सकते हैं, अल्लाह से इस बात की पनाह चाहते हैं कि हम किसी ग़ैर मुजरिम को पकड़ लें। अगर हम ऐसा करेंगे तो ज़ालिम हो जाएँगे, हम तो सिर्फ़ उसी को पकड़ेंगे जिस के पास सामान मिला है। (ह़ज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने एह़तियात से काम लिया और यूँ नहीं फ़रमाया कि जिस ने हमारा सामान चुराया हम उसी को रखेंगे क्योंकि चोरी थी ही नहीं, बल्कि यूँ फ़रमाया जिस के पास हम ने अपना सामान पाया है उसी को रख सकते हैं।)

आयत नं० 80 से 92 तक

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَ مِنْ قَبْلُ مَا
فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْۤ اَبِيْۤ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَ هُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝ ارْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ
فَقُوْلُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَ مَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَ مَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝ وَ سْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا
وَ الْعِيْرَ الَّتِيْۤ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۚ وَ اِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ
اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ وَ تَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ قَالَ يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَ ابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا
تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَ حُزْنِيْۤ اِلَى اللّٰهِ وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا
تَعْلَمُوْنَ ۝ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَ اَخِيْهِ وَ لَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝
فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَ اَهْلَنَا الضُّرُّ وَ جِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَ تَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ۝ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَ اَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ۝ قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ
وَ هٰذَاۤ اَخِيْ ۫ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَ يَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَ اِنْ كُنَّا
لَخٰطِـِٕيْنَ ۝ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫ وَ هُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝

अनुवाद-

(80) फिर जब नाउम्मीद हो गये, तो अलग होकर सलाह़ करने लगे, उसमें से जो बड़ा था, उसने कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता तुमसे अल्लाह के नाम पर वचन ले चुके हैं, और इससे पहले भी यूसुफ़ के मामले में जो तुमसे ग़लती हो चुकी है? मैं तो अब इस ज़मीन से हरगिज़ हिलने वाला नहीं हूँ, जब तक कि मेरे पिता मुझे हुक्म न दें, या अल्लाह कोई फ़ैसला न कर दे, और 'वह' सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है"। (81) तुम सब अपने बाप के पास लौट कर जाओ और कहो, ''ऐ अब्बा जान! आप के बेटे ने चोरी की है, और हमने वही बात बयान की जो हम जानते थे और ग़ैब (परोक्ष) हमारी नज़र में था नहीं; (82) और आप उस बस्ती (के लोगों) से पूछ लीजिए, जहाँ हम ठहरे थे और उन क़ाफ़िले वालों से, जिसके साथ हम आए थे, और हम बिल्कुल सच्चे हैं"। (83) (याक़ूब ने) कहा, "नहीं बल्कि तुम्हारे जी ही ने (तुम्हें पट्टी पढ़ा कर) एक बात बना दी है, तो अब सब्र से ही काम लेना बेहतर है, अ़जब नहीं कि अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आए, बेशक 'वह' तो सब कुछ जानने वाला, ह़िकमत वाला है"। (84) और (याक़ूब ने) उनकी ओर से मुँह फेर लिया और पुकार उठे, "हाय अफ़सोस, यूसुफ़ पर और ग़म से उनकी आँखे सफेद पड़ गयीं (और) उनका दिल ग़म से भर रहा था। (85) वे कहने लगे, ''अल्लाह की क़सम! आप तो यूसुफ़ ही की याद में लगे रहेंगे, यहाँ तक कि अपने आप को घुला देंगे या हलाक हो जाएँगे"। (86) (याक़ूब ने) कहा, ''मैं तो अपनी परेशानी और अपने ग़म की शिकायत अल्लाह ही से करता हूँ, और अल्लाह की ओर से मैं वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते; (87) बेटो! जाओ यूसुफ और उसके भाई को खोजो और अल्लाह की रह़मत से मायूस न हो 'उसकी' रह़मत से तो काफ़िर ही मायूस होते हैं"। (88) तो जब वे उनके पास पहुँचे तो कहा, "ऐ अज़ीज! हमें और हमारे घर वालों को बहुत तकलीफ़ पहुँची है, और हम थोड़ी सी

पूँजी लाए हैं; तो आप हमें ग़ल्ला पूरा दीजिए, और हमें सद्क़ा दीजिए कि अल्लाह सदक़ा करने वालों को बदला देता है"। (89) (यूसुफ़ ने) कहा, "क्या तुम्हें मालूम है कि तुमने यूसुफ़ और उनके भाई के साथ क्या किया था जब कि तुम जिहालत में फंसे हुए थे"? (90) (भाईयों ने) कहा, "क्या वास्तव में आप ही यूसुफ़ हैं?" उन्होंने कहा, "हाँ मैं ही यूसुफ हूँ। और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने हम पर एहसान फ़रमाया है, और जो व्यक्ति अल्लाह से डरता और सब्र से काम लेता है, तो अल्लाह ऐसे नेक लोगों का बदला अकारथ नहीं करता"। (91) वे बोले, "अल्लाह की क़सम! आप को अल्लाह ने हम पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी और बेशक हम ही ख़ताकार थे। (92) (यूसुफ़ ने) कहा, "आज के दिन तुमसे कोई पूछ-गछ नहीं अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, और 'वह' सबसे बढ़ कर रहम करने वाला है"।

आयत नं० 80 से 92 तक की व्याख्या

80-82

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ
مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَ مِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْۤ اَبِيْۤ
اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَ هُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝ اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابْنَكَ
سَرَقَ ۚ وَ مَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَ مَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝ وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا
فِيْهَا وَ الْعِيْرَ الَّتِيْۤ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ وَ اِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों का मश्वरा

जब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की तरफ़ से भाई नाउम्मीद हो गए कि वह किसी तरह़ से बिन्यामीन को वापस करने के लिए तैयार नहीं हैं और यह जो पेशकश की थी कि हम में से किसी को रख लें, इस को भी उन्होंने नहीं माना बल्कि उसे ज़ुल्म क़रार दे दिया तो वहाँ से हट कर अब मश्विरा करने लगे कि क्या करें। उन में जो बड़ा भाई था जिस का नाम किसी ने यहूद और किसी ने शमऊन और किसी ने रोबेल बताया है उस ने बाक़ी भाईयों से ख़िताब कर के कहा कि आप लोगों को मालूम है कि जब अपने वालिद से रुख़सत हो रहे थे तो मज़बूत क़सम ली और फ़रमाया था कि उसे तुम ज़रूर साथ ले कर आओगे। (لَتَاْتُنَّنِیْ بِہٖ)

अब यहाँ यह सूरतेह़ाल ऐसी पेश आ गई कि बिन्यामीन को 'अ़ज़ीज़े मिस्र' ने रोक लिया और इस से पहले ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के बारे में ऐसी ग़लती कर चुके हो, अब वालिद साह़ब के पास किस मुँह से जाएँ। पहले ही उन को ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की जुदाई से बहुत ज़्यादा रंज था और अब बिन्यामीन की जुदाई का मस्ला सामने आ गया, लिहाज़ा मैं तो अब यहाँ से आगे बढ़ने वाला नहीं। अगर वालिद साह़ब को पूरी सूरतेह़ाल मालूम हो जाए और वह मुझे आने की इजाज़त दे दें या अल्लाह तआ़ला की ओर से कोई ऐसा फ़ैसला हो जाए जिस से हमारी मुश्किल ह़ल हो जाए (जैसे- हमारा भाई वापस

मिल जाए) तब ही मैं यहाँ से जा सकता हूँ। अल्लाह तआ़ला सब से बेहतर फ़ैसला फ़रमाने वाला है।

बड़े भाई ने अपने भाईयों से यूँ भी कहा कि तुम लोग अपने वालिद के पास चले जाओ और उन की ख़िद्मत में अ़र्ज़ कर दो कि आप के बेटे ने चोरी कर ली और चोरी की वजह से उन्हें वहीं रोक लिया गया और हमारी यह गवाही हमारे इ़ल्म के मुताबिक़ है।

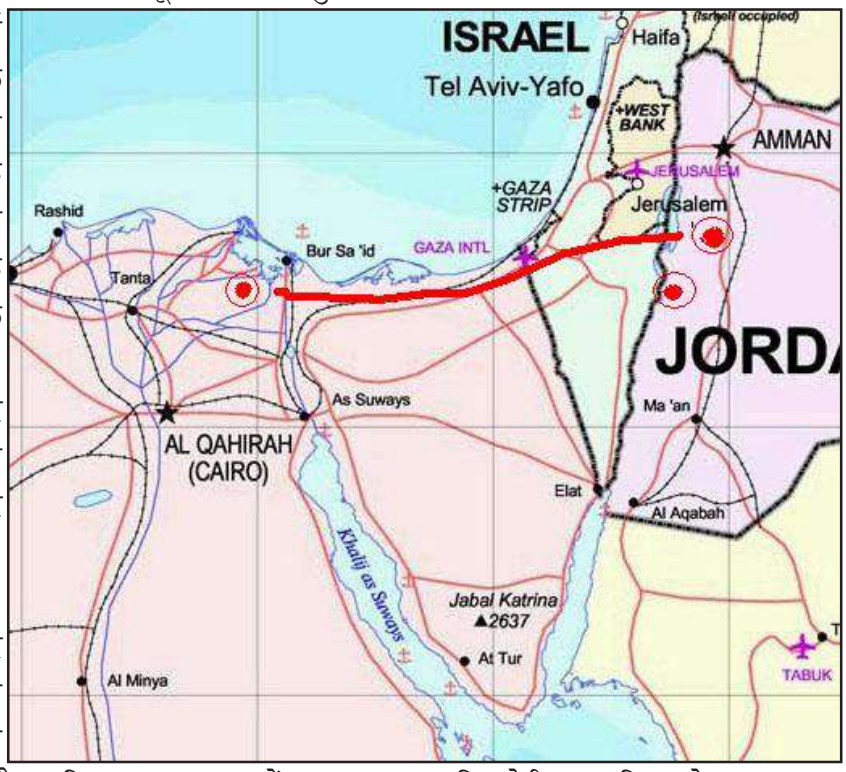

(हम ने ख़ुद देखा कि उस के सामान से पैमाना बरामद हुआ।)

وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ हम जो क़सम खाकर इस की हिफ़ाज़त का वादा कर के गये थे वह हमारी क़ुद्रत और अख़्तियार तक था, हमें क्या मालूम था कि चोरी का वाक़िआ़ पेश आ जाएगा और ऐसी सूरतेह़ाल बन जाएगी कि हम जो बिन्यामीन को अपने साथ न ला सके, यह उस से अलग है जो वालिद साह़ब ने اِلَّآ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ कह कर ख़ुद ही बयान कर दी थी।

मुफ़स्सिरीन ने उन की बात का यह मतलब बताया कि हम तो इतना जानते हैं कि बिन्यामीन के सामान से पैमाना निकला, उस ने उसे ख़ुद रख लिया था या वहीं के लोगों में से किसी ने रख दिया था, इस के बारे में हम कुछ नहीं कह सकते।

बड़े भाई ने कहा कि अपनी बात वालिद साह़ब को विश्वास दिलाने के लिए यह भी कहना कि हमारे बयान पर आप एतिमाद न करें तो मिस्र की जिस बस्ती में यह वाक़िआ़ पेश आया है वहाँ के लोगों से मालूम कर लीजिए और इस से भी आसान बात यह है कि यहाँ से ग़ल्ला लेने के लिए सिर्फ़ हम ही लोग नहीं गये थे हमारी बस्ती के रहने वालों में से और लोग भी गये थे, हम जिस क़ाफ़िला के साथ मिस्र से वापस आए हैं उन से मालूम कर लीजिए वह तो यहीं इस बस्ती में मौजूद हैं وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ आप मानें या न मानें इस में कोई शक नहीं कि हम सच्चे हैं।

83-87 قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ

الْحَكِيْمُ ۝ وَ تَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ۝
قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَاۤ
اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ
وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝

वालिद को चोरी का क़िस्सा बताना

ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) के बेटों ने जब सारा क़िस्सा सुनाया और बिन्यामीन के पकड़े जाने का वाक़िआ़ बताया तो ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) को यक़ीन न आया, उन्होंने वही अल्फ़ाज़ दोहराए जो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की गुमशुदगी के मौक़े पर फ़रमाए थे यानी بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا मेरे नज़्दीक ऐसा कोई वाक़िआ़ पेश नहीं आया कि बिन्यामीन ने चोरी की हो और उसे वहीं पकड़ लिया गया हो। मेरी समझ में तो यही आता है कि तुम लोगों ने अपने पास से बात बना ली है जो मुझे समझा रहे हो, वाक़िआ़ कुछ और है और बयान कुछ और। فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ मैं सब्र ही करुँगा जिस में शिकायत न हो (और कर भी क्या सकता हूँ?) मेरे दिल की तो यही आवाज़ है कि इन्शाअल्लाह एक दिन ऐसा आएगा कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) और उस का भाई बिन्यामीन और तीसरा भाई (जो तुम्हारे साथ नहीं आया) उन तीनों को अल्लाह तआ़ला मेरे पास पहुँचा देगा, उसे पूरे ह़ालात का इ़ल्म है। इन सब वाक़िआत के पेश आने में अल्लाह की ह़िक्मतें हैं।

यह फ़रमा कर ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) ने अपने लड़कों की तरफ़ से मुँह फेर लिया और कहने लगे कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की जुदाई पर अफ़्सोस है। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की जुदाई पर रोते-रोते उन की आँखें सफ़ेद हो चुकी थीं और ग़म की वजह से अन्दर-अन्दर घुट रहे थे, उन के बेटों ने कहा कि अल्लाह की क़सम! आप ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को भूलते ही नहीं, उसे आप बराबर याद करते रहेंगे यहाँ तक कि घुल कर रह जाएँगे या बिल्कुल ही हलाक हो जाएँगे।

ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) ने फ़रमाया कि तुम्हें मेरे रोने से क्या बह़स है? मैं अपने रंज व ग़म की शिकायत अपने अल्लाह तआ़ला ही से करता हूँ। मुझे अल्लाह की तरफ़ से जो इ़ल्म दिया गया वह तुम्हें नहीं दिया गया है, मैं तो यही जानता हूँ कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) और उस के भाई से ज़रूर मुलाक़ात होगी। अब तुम मेरी बात मानो और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) और उस के भाई को तलाश करो, इन्शाअल्लाह, उन से मुलाक़ात हो जाएगी। अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद मत हो, जो लोग काफ़िर हैं वही अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद होते हैं।

ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) ने जिस तरह़ ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के बारे में उन के भाईयों के बात की तस्दीक़ न की थी (जो उन्होंने कहा था कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को भेड़िया खा गया) वैसे ही बिन्यामीन के बारे में उन्होंने चोरी और चोरी की वजह से पकड़े जाने वाली जो बात कही थी उस को भी सच्चा नहीं माना, ह़ालांकि वह बज़ाहिर इस बयान में सच्चे थे।

जब कोई शख़्स एक बार झूठा साबित हो जाए तो उस का एतिबार नहीं रहता। ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) ने जो यह फ़रमाया कि अल्लाह की तरफ़ से जो मैं जानता हूँ वह तुम नहीं जानते। इस इ़ल्म के बारे में एक क़ौल तो यह है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने जो ख़्वाब देखा था कि मुझे ग्यारह सितारे, चाँद और सूरज सज्दः कर रहे हैं उस की तअ़बीर अब तक पूरी नहीं हुई थी, वह जानते थे कि ऐसा होना ज़रुरी है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) मौजूद हों और ग्यारह सितारे यानी सारे भाई (जिन में बिन्यामीन भी थे और वह बड़ा भाई भी था जो मिस्र में रह गया था) और माँ-बाप सज्दः करेंगे, लिहाज़ा ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को न मौत आई है, न उस की मुलाक़ात से पहले मुझे दुनिया से जाना है सब को एक दिन जमा होना ही है और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि मुम्किन है कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उन्हें इल्हाम हो गया हो या वह्य के ज़रिये ख़बर दे दी गई हो।

ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) ने अपने इ़ल्म व यक़ीन की बुनियाद पर कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) दुनिया में ज़िन्दा मौजूद है और इस गुमान पर कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाई बिन्यामीन के बारे में जो कुछ यह लोग कह रहे हैं वह दुरुस्त नहीं है, अपने बेटों से कहा कि जाओ! ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को और उस के भाई को तलाश करो और अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद न हो जाओ। (इस में तीसरे भाई का ज़िक्र नहीं फ़रमाया क्योंकि वह भाईयों के बयान के मुताबिक़ मौजूद था और अपने इरादा से वहाँ रह गया था।)

88-92

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ
وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ۝ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ
جٰهِلُوْنَ ۝ قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِىْ ۫ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ
يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ۝
قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों की माफ़ी

ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) के फ़रमाने पर उन के बेटे फिर मिस्र की तरफ़ रवाना हुए। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के बारे में तो अन्दाज़ा न था कि कहाँ होंगे, अलबत्ता बिन्यामीन और बड़े भाई को मिस्र ही में छोड़ कर आए थे, इसलिए अपने वालिद के फ़रमान के मुताबिक़, कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) और उस के भाई को तलाश करो उन्होंने मिस्र ही की राह अपनाई। इस में ग़ल्ला लाने का फ़ायदा भी पेशेनज़र था, जब मिस्र पहुँचे तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) तक पहुँचने के बाद फिर ग़ल्ला मिलने का सवाल किया और उन से कहा कि ऐ अ़ज़ीज़े मिस्र! हमें और हमारे घर वालों को क़ह़त (सूखा) की वजह से तक्लीफ़ पहुँची है हमें ग़ल्ला की ज़रूरत है, लेकिन हमारे पास ग़ल्ला लेने के लिए वह क़ीमत भी नहीं जो क़ीमत कहने के लायक़ हो। कुछ लाए तो हैं जो बहुत थोड़ी है इस लायक़ तो नहीं कि उसे आप क़ुबूल करें, लेकिन फिर भी हम दरख़्वास्त करते हैं कि हमें पूरा ग़ल्ला दे दीजिए।

पूँजी क्या थी-

मुफ़स्सिरीन ने इस बारे में कई बातें लिखी हैं कि वह पूंजी क्या थी जिसे वह ख़ुद ही घटिया चीज़ बता रहे थे? 'साहिबे रूहुल् मआनी' ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से नक़्ल किया है कि यह 'खोटे दिरहम' थे जिस की क़ीमत पूरी नहीं मिलती थी।

ग़ल्ला तलब करने के साथ उन्होंने وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا भी कहा। मुफ़स्सिरीन ने इस के कई माने लिखे हैं। एक माना तो यह है कि हमारी पूंजी घटिया भी है और थोड़ी भी आप इसे क़ुबूल फ़रमाएँ और एक माने यह है कि हमें अपनी तरफ़ से कुछ मज़ीद बिना क़ीमत बतौर सद्क़ा अ़ता फ़रमा दीजिए और बाज़ हज़रात ने इस का मतलब यह बताया है कि ग़ल्ला अ़ता फ़रमाने के साथ यह करम फ़रमाइए कि हमारे भाई 'बिन्यामीन' को वापस कर दीजिए।

'साहिबे रूहुल् मआनी' लिखते हैं कि इस सूरत में تَصَدَّقْ के माने تَفَضَّلْ होगा यानी मेहरबानी फ़रमा कर हमारे भाई को साथ भेज दीजिए लेकिन اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ से मअ़ना पहले ही की ताईद होती है (कि अल्लाह तआ़ला सद्क़ः करने वालों को बदला अ़ता फ़रमाता है।)

यह लोग अपनी गुज़ारिश कर ही रहे थे कि हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने सवाल कियाः-

هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ (क्या तुम जानते हो कि तुम ने यूसुफ़ और उस के भाई के साथ क्या-क्या किया जबकि तुम जाहिल थे?)

भाईयों ने तो ग़ल्ला तलब किया और हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने उन से यह फ़रमाया कि क्या तुम जानते हो कि तुम ने यूसुफ़ और उस के भाई के साथ क्या किया? बाज़ हज़रात ने इन दोनों बातों को इस तरह़ बताते हुए इर्शाद फ़रमाया कि यह जो तुम कह रहे हो कि क़ह़त साली (सूखा) की वजह से हमारे और हमारे घरवालों को तक्लीफ़ पहुँच रही है यह तो बहुत बड़ी तक्लीफ़ नहीं, किसी न किसी तरह़ ज़िन्दगी गुज़र ही रही है, फिर यह तक्लीफ़ अभी क़रीब ज़माने ही से शुरु हुई है, लेकिन तुम ने तो सालों से जो अपने वालिद को हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से जुदा कर के तक्लीफ़ पहुँचाई है और बिन्यामीन के साथ जो हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के बाद बद्सुलूकी करते रहे हो, बताओ तुम्हारे वालिद के लिए और सारे घरवालों के लिए कौन सी तक्लीफ़ ज़्यादा है?

यह वक़्ती ग़ल्ले की कमी ज़्यादा तक्लीफ़देह है या वह तुम्हारी पिछली ह़रकतें ज़्यादा तक्लीफ़देह हैं? अपने इस सवाल को उन्होंने समझने-समझाने की सूरत में उन पर डाल दिया और फ़रमाया कि तुम्हें मालूम है कि तुम ने हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) और उस के भाई के साथ क्या किया? यह बात सुनकर उन्हें बड़ा अचम्भा हुआ कि अ़ज़ीज़े मिस्र को पूरा क़िस्सा कहाँ से और कैसे मालूम हुआ? और मज़ीद यह कि इन्हें उस के बारे में दर्याफ़्त करने की क्या ज़रूरत है?

इस का ज़रा सा भी एह़सास न था कि यह सवाल करने वाला शख़्स हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) हो सकता है और हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ऐसे बड़े मर्तबे पर पहुँच सकता है, लेकिन हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०)

के सवाल का जो अन्दाज़ था उस से उन्होंने भांप लिया कि हो न हो यह सवाल करने वाला शख़्स ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ही है, लिहाज़ा वह कहने लगे ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ (क्या तुम वाक़ई यूसुफ़ हो?) ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने जवाब में फ़रमाया اَنَايُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِىْ (मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है) قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا (बिलाशुब्हा अल्लाह ने हम पर एह़सान फ़रमाया।)

यानी इशारे में फ़रमा दिया कि तुम ने तो ज़ुल्म व ज़्यादती में कसर न छोड़ी थी, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने करम फ़रमाया जो तक्लीफ़ें पहुँची थीं उन का ज़िक्र नहीं किया, बल्कि अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाया। मोमिन की यही शान है कि तक्लीफ़ में मुब्तिला होते हुए भी अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों को याद करता है और मुसीबत के टल जाने के बाद भी जो नेअ़मतें मिलती रहती हैं उन पर नज़र रखता है और बराबर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता रहता है, फिर यह शुक्र नेअ़मतों के और बढ़ने का ज़रिया बन जाता है। जैसा कि सूरः इब्राहीम में फ़रमाया لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ (अल्बत्ता अगर तुम शुक्र करोगे तो तुम्हें ज़रूर और ज़्यादा दूँगा।)

मज़ीद फ़रमाया اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (जो शख़्स तक़्वा अख़्तियार करता है और सब्र से काम लेता है अल्लाह तआ़ला उस का अज्र ज़ाया नहीं फ़रमाता। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने एक वसूली बात बता दी कि तक़्वा और सब्र करने वालों की अल्लाह मदद फ़रमाता है और यह दोनों चीज़ें मुश्किलात से निजात दिलाने वाली हैं। यह नहीं फ़रमाया कि मैंने सब्र और तक़्वा अख़्तियार फ़रमाया, इसलिए इस मर्तबः को पहुँचा क्योंकि इस में एक तरह़ से अपनी तअ़रीफ़ थी और भाईयों से यह नहीं कहा कि तुम मुत्तक़ी और साबिर नहीं हो, बल्कि आ़म वसूल बताकर उन्हें तम्बीह फ़रमा दी कि तुम्हें मुत्तक़ी होना चाहिए था।

तक़्वा और सब्र की ह़क़ीक़त-

ह़क़ीक़त में तक़्वा बहुत बड़ी चीज़ है। आख़िरत में इस का नफ़ा सामने आ ही जाएगा दुनिया में भी मुश्किलात से निकलने का बहुत बड़ा ज़रिया है। सूरः नह़ल में फ़रमायाः-

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ۝

"बिलाशुब्हा अल्लाह उन लोगों के साथ है जिन्होंने तक़्वा अख़्तियार किया और जो लोग अच्छे काम करने वाले हैं"।

सूरः तलाक़ में फ़रमायाः-

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۭ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۭ

(और जो शख़्स अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिए मुश्किलात से निकलने का रास्ता बना देता है और उसे वहाँ से रिज़्क़ देता है जहाँ से उसे गुमान भी न हो) और फ़रमायाः-

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا

(जो शख़्स अल्लाह से डरे अल्लाह उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा फ़रमा देगा और उस के लिए बड़ा

अज्र मुक़र्रर फ़रमा देगा) और फ़रमाया وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا

"और जो शख़्स अल्लाह से डरे वह उस के कामों में आसानी फ़रमा देगा"।

सब्र भी बहुत बड़ी चीज़ है, साबिर आदमी को वक़्ती तौर पर तक्लीफ़ तो होती है, लेकिन बाद में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मदद पहुँच जाती है। सूरः बक़रः (**आयत नं० 153**) में फ़रमायाः-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

(ऐ ईमान वालो! मदद तलब करो नमाज़ और सब्र के साथ बिलाशुब्हा अल्लाह साबिरों के साथ है सूरः ज़ुमर में फ़रमाया اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ (सब्र करने वालों को बिला हिसाब पूरा-पूरा अज्र दिया जाएगा।)

जिसे सब्र की नेअ़मत मिल गई उसे बहुत बड़ी नेअ़मत मिल गई। ह़ज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

ومن يتصبره الله وما اعطى احد عطاء هو خير واوسع من الصبر

(रवाहुल् बुख़ारी व मुस्लिम कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 163)

(जो शख़्स सब्र करना चाहे अल्लाह तआ़ला उसे सब्र दे देता है और किसी शख़्स को सब्र से ज़्यादा बेहतर और कोई चीज़ अ़ता नहीं की गई है।)

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों को पता चल गया कि 'अ़ज़ीज़े मिस्र' जो हमें ग़ल्ला देता रहा है वह हमारा भाई 'यूसुफ़' है, जिसे हम ने कुएँ में डाला था। दोबारा जो ग़ल्ला लेने के लिए आए थे ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को न उन्होंने पहचाना था और न उन्हें यह गुमान था कि यह शख़्स हमारा भाई यूसुफ़ हो सकता है, लेकिन तीसरी बार के चक्कर में जब बात खुल कर सामने आ गई कि यह यूसुफ़ हैं तो आँखें नीची हो गईं और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) पर जो अल्लाह ने एह़सान फ़रमाया उस के इक़रार के साथ अपने जुर्म के एतिराफ़ (स्वीकार) के बग़ैर कोई रास्ता न रहा इसलिए उन की ज़बान से यह निकला-

تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ۝

अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने आप को हम पर तरजीह़ (वरीयता) दे दी और फ़ज़ीलत और बरतरी से नवाज़ दिया और बिलाशुब्हा हम ख़ताकार हैं।

यहाँ सिर्फ़ इक़रारे जुर्म का ज़िक्र है माफ़ी माँगने का ज़िक्र नहीं है, लेकिन बुलन्द अख़्लाक़ करीमुन्नफ़्स लोगों का बड़ा ह़ौसला होता है उन के नज़्दीक जुर्म का इक़रार कर लेना ही माफ़ी माँगने के दर्जे में होता है।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अपनी तरफ़ से तो माफ़ किया ही था, अल्लाह तआ़ला से भी उन के लिए मग़्फ़िरत की यूँ दुआ़ की।

मग़्फ़िरत की दुआ़-

يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۡ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ

अल्लाह तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए और वह सब मेहरबानों से बढ़कर रह़म फ़रमाने वाला है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बेअ़सत के बाद मक्का मुकर्रमा में तेरह (13) साल जिन मुसीबतों के साथ गुज़ारे और कुरैश की तरफ़ मक्का से जो तक्लीफ़ें पहुँचीं यहाँ तक कि आप को हिजरत करने पर मजबूर कर दिया यह सब वाक़िआ़त मशहूर हैं। जब मक्का मुकर्रमा फ़तेह़ हो गया तो अहले मक्का को ख़ौफ़ था कि देखिए! हमारे साथ क्या मामला होता है?

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अल्लाह के हुक्म से जब मक्का मुकर्रमा फ़तेह़ कर लिया तो कुरैशे मक्का डरे और उन्होंने यह समझ लिया कि आज तल्वार हमारा ख़ात्मा कर देगी। इस मौक़े पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कअ़बः शरीफ़ का तवाफ़ किया और दो रकअ़तें पढ़ीं, फिर कअ़बः शरीफ़ की चौखट के दर्मियान खड़े होकर कुरैशे मक्का से दर्याफ़्त फ़रमाया, तुम क्या कहते हो और तुम्हारा (मेरे बारे में) क्या ख़याल है?

उन्होंने जवाब दिया कि हम यह कहते हैं कि आप हमारे भाई और चचा के बेटे हैं नेक और रह़ीम हैं। तीन बार यह सवाल जवाब हुआ।

इस के बाद आप ने फ़रमाया कि मैं वही कहता हूँ जिस तरह़ ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने कहा थाः-

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۖ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۖ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ

(इस के बाद वह ख़ुशी ख़ुशी इस्लाम में दाख़िल हो गये।) **(दलायलुल् नुबूव्वता लिल् बैहक़ी भाग 5, पेज 85)**

'सीरत इब्ने हिशाम' में यूँ लिखा है कि आप ने फ़रमाया, ऐ कुरैश की जमाअ़त! तुम्हारा क्या ख़याल है मैं तुम्हारे साथ क्या बर्ताव करने वाला हूँ? उन्होंने कहा कि हम तो यही समझते हैं कि हमारे साथ ख़ैर का मामला होगा। आप हमारे करीम भाई और करीम भाई के बेटे हैं। आप ने फ़रमाया जाओ! तुम सब आज़ाद हो।

आयत नं० 93 से 111 तक

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ
لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَاۤ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ
فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْۤ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٩٧﴾
قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ۚ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَ قَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ
اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَ قَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ
حَقًّا ۗ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْۤ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۗ اِنَّ رَبِّيْ
لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۗ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿١٠٠﴾ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۗ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا
كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْۤا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَاۤ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۗ اِنْ
هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾ وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ
بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اَفَاَمِنُوْۤا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾
قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْۤ اَدْعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾ وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ
اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْۤ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَلَدَارُ
الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٩﴾ حَتّٰۤى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ
مَنْ نَّشَآءُ ۭ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١١٠﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۭ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ
تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَ تَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١١١﴾

अनुवाद-

(93) मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे अब्बा के चेहरे पर डाल दो, उनकी आँखों की रोशनी लौट आएगी, और अपने तमाम घर वालों को लेकर मेरे पास आओ"। (94) और जब क़ाफ़िला रवाना हुआ तो उनके अब्बा कहने लगे, "अगर तुम लोग यह न कहो कि मैं बहक गया हूँ तो मुझे यूसुफ की ख़ुशबू आ रही है"। (95) (भाइयों ने) कहा, "अल्लाह की क़सम! आप अभी तक अपनी उसी पुरानी गुमराही (भ्राँति) में पड़े हुए हैं"। (96) तो जब ख़ुशख़बरी देने वाला आया तो उसने कुर्ता उनके चेहरे पर डाल दिया और उनकी (आँखों की) रोशनी लौट आई, उन्होंने कहा, ''क्या मैंने तुमसे कहा न था कि मैं अल्लाह की ओर से वह बातें जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते"। (97) (बेटों ने) कहा, ''ऐ अब्बा जान! हमारे गुनाहों के माफ़ी के लिए दुआ कीजिए, बेशक हम ख़ताकार थे"। (98) उन्होंने कहा, "मैं अपने रब से तुम्हारे लिए माफ़ी की दुआ करूँगा बेशक 'वह' बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है"। (99) जब यूसुफ़ के पास पहुँचे, तो उसने अपने माँ-बाप को अपने पास जगह दी और कहा, ''मिस्र (शहर) में दाख़िल हो जाओ, 'इन्शाअल्लाह' अमन और चैन के साथ (रहोगे)"। (100) और अपने माँ-बाप को अर्श (सिंहासना) पर ऊँचा बिठाया, और

सब उसके आगे सज्दे में गिर पड़े; उन्होंने कहा, ''अब्बा जान! यह है मतलब मेरे उस सपने का, जो मैंने पहले देखा था, मेरे रब ने इसे सच्चा कर दिखाया। और उसने मुझ पर एहसान किये हैं कि मुझे उसने जेलख़ाने से निकाला इसके बाद कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच फ़साद डलवा दिया था; आप को गाँव से यहाँ ले आया, बेशक, मेरा रब जो चाहता है तद्बीर (सूक्ष्म उपाय से) करता है, 'वही' इल्म वाला, हिकमत वाला है। (101) ऐ मेरे रब! 'तूने' मुझे हुकूमत दी और सपनों की तअ़बीर (स्वप्नार्थ) का इल्म दिया, ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, दुनिया और आख़िरत में 'तू' ही मेरा संरक्षक है, मुझे इस हालत में मौत दे कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ, और मुझे भले बन्दों मे शामिल कीजिए। (102) यह ग़ैब (परोक्ष) की खबरों में से है जिसकी हम तुम पर 'वह्य' कर रहे हैं, वरना तुम उस समय उनके पास मौजूद न थे, जब उन्होंने आपस में एक बात तय कर के साज़िश की थी; (103) और बहुत से लागों (का हाल यह है कि) चाहे आप (जितना) चाहें, ईमान लाने वाले नहीं। (104) और आप इस पर उनसे कोई अज्र (बदला) भी तो नहीं माँगते हैं, यह तो एक नसीहत है तमाम दुनिया वालों के लिए। (105) और कितनी ही निशानियाँ हैं आसमानों और ज़मीन में, जिन पर से यह लोग गुज़रते हैं, मगर उनकी ओर ध्यान ही नहीं देते; (106) उनमें अक्सर लोग अल्लाह को मानते भी हैं तो इस तरह कि वे साझीदार भी ठहराते हैं; (107) क्या ये इस बात से बेख़बर हैं कि अल्लाह का अ़ज़ाब उन्हें ढाँक ले, या अचानक वह घड़ी (क़ियामत) ही उन पर आ जाए, और उन्हें ख़बर भी न हो। (108) कह दीजिए, ''यह है मेरा रास्ता, मैं अल्लाह की ओर बुलाता हूँ; मैं खुद भी समझबूझ कर (बुलाता हूँ) और मेरे मानने वाले भी- और अल्लाह ही के लिए पाकी है- और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ।'' (109) और आप से पहले भी 'हमने' जिनको रसूल बनाकर भेजा था, वे सब बस्तियों के ही रहने वाले मर्द थे, 'हम' उनकी ओर ''वह्य'' (प्रकाशना) करते थे तो, क्या (यह) ज़मीन पर चले फिरे नहीं! कि देख लेते कि जो लोग इनसे पहले गुज़र चुके हैं उनका कैसा अंजाम हुआ? और परहेज़गारों के लिए आख़िरत का घर ज़्यादा बेहतर है; तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते। (110) यहाँ तक कि जब रसूल नाउम्मीद हो गये, और वे समझने लगे कि मदद के बारे में जो बात उन्होंने कही थी उसमें वे सच्चे न निकले तो अचानक हमारी मदद उनके पास आ पहुँची, और वे लोग बचा लिए गये जिनको 'हमने' बचाना चाहा, और मुजरिमों से तो हमारा अ़ज़ाब टलता ही नहीं। (111) उनके किस्सों में बुद्धि और समझ रखने वालों के लिए एक नसीहत है, यह कोई ऐसी बात नहीं है, जो बना ली गयी हो, बल्कि यह अपने से पहले की पुष्टि में है, और हर चीज़ का विस्तार और ईमान वालों के लिए हिदायत (मार्ग दर्शन) और रहमत है।

आयत नं० 93 से 111 तक की व्याख्या

93-98

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَلَمَّا
فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَاۤ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ
اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ۝ فَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ
اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْۤ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا
خٰطِـِٕيْنَ ۝ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ۗ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का कुर्ता और बीनाई

जब भाईयों से ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की बातचीत हो चुकी तो वापसी का मौक़ा आ गया (और मक़्सद भी ह़ल हो गया क्योंकि अपने वालिद के हुक्म से ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) और उन के भाई को तलाश करने के लिए सफ़र करके आए थे, दोनों भाई मिल गये) जब चलने लगे तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने फ़रमाया कि लो यह मेरा कुर्ता ले जाओ, मेरे ग़म में रोते-रोते वालिद की आँखें चली गईं अब तुम मेरा यह कुर्ता उन के चेहरे पर डाल देना, इन्शाअल्लाह अल्लाह तआ़ला उन की बीनाई (रोशनी) वापस आ जाएगी और वहाँ पहुँच कर अपने सब घरवालों को मेरे पास लेकर आ जाओ।

यह लोग ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से रुख़्सत हुए, क़ाफ़िला रवाना हो गया। अभी मिस्र ही में थे कि ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने उन लोगों से कहा कि जो उन के पास मौजूद थे, मैं यूसुफ़ की ख़ुशबू महसूस कर रहा हूँ बात तो मैं ने कह दी लेकिन तुम लोगों से डर है कि मेरी बात को सच्ची नहीं मानोगे। अगर तुम मुझे बेवक़ूफ़ न बनाओ और यूँ न कहो कि बुढ़ापे में बहकी-बहकी बातें कर रहा हूँ तो मेरी तस्दीक़ कर सकते हो (الی لولا تفنیدکم ایای لصدقتمونی کذافی الروح)

उन के पास रिश्तेदार वग़ैरह जो वहाँ मौजूद थे कहने लगे कि आप तो अपनी उसी पुरानी बातों में पड़े हुए हैं तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की मुह़ब्बत ने आप को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया।

अब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की मुलाक़ात की कहाँ उम्मीद है और कहाँ यूसुफ़ का कुर्ता है जिस की ख़ुश्बू आप को महसूस हो रही है, यह बहकी-बहकी बातें हमारी समझ में तो आती नहीं हैं। जब क़ाफ़िला वतन पहुँच गया और कन्आ़न में दाख़िल हो गया तो भाईयों में से जिस ने वह कुर्ता लेकर अपने वालिद को बशारत देने का ज़िम्मा लिया था वह ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) के पास पहुँचा और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का कुर्ता ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) के चेहरे पर डाल दिया, चेहरे पर कुर्ते का पड़ना था कि उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने उन की बीनाई वापस फ़रमा दी।

इस पर उन्होंने ह़ाज़िरीन से कहा (जिन में वह बेटे भी थे जो मिस्र से वापस आ गए थे) कि मैंने तुम से न कहा था कि मैं अल्लाह की तरफ़ से वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते, जब बेटों ने कहा था कि आप तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की याद में घुल ही जाएँगे या हलाक ही हो जाएँगे। उस वक़्त ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने यह बात फ़रमाई थी और साथ ही यह भी फ़रमाया था कि जाओ यूसुफ़ को और उस के भाई को तलाश करो और अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद न हो जाओ।

बिरादराने यूसुफ़ ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के सामने जो यूँ कहा था कि हम वाक़ई ख़ताकार थे। अपने वालिद के सामने भी उन्होंने अपनी यह बात दोहरा दी और साथ में यह भी अ़र्ज़ किया कि आप हमारे लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत की दुआ़ करें। ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने जवाब में फ़रमाया कि मैं तुम्हारे लिए इस्तिग़्फ़ार करुँगा, अल्लाह ग़फ़ूर और रह़ीम है।

ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने उसी वक़्त दुआ़ यूँ नहीं कर दी, इस के बारे में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास

(रज़ि०) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इस बारे में सवाल किया गया तो आप ने फ़रमाया कि रात के आख़िरी वक़्त में दुआ क़ुबूल होती है, इसलिए **सअस्तिग़फ़िरु** फ़रमाया और दुआ को देर में किया।

'इमाम तिर्मिज़ी' ने दुआ हिफ़्ज़ क़ुर्आन की जो रिवायात नक़्ल की है उस में यह भी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) से फ़रमाया कि तुम शबे जुमअ़ के आख़िरी तिहाई ह़िस्से में चार रकअ़त नमाज़ पढ़ना और फिर यह दुआ करना। (आगे ह़दीस में नमाज़ की तल्क़ीन और दुआ के अल्फ़ाज़ हैं) क्योंकि उस वक़्त दुआ क़ुबूल होती है और मेरे भाई ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने अपने बेटों से जो फ़रमाया था कि जल्द ही तुम्हारे लिए इस्तिग़्फ़ार करुँगा, इस से यही जुमअ़ की रात के आने का इन्तिज़ार मक़्सूद था। **(दुर्रे मन्सूर भाग 4, पेज 36)**

'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' ने ह़ज़रत 'शाअ़बी' ताबई से यह बात नक़्ल की है कि इस्तिग़्फ़ार में देरी की एक वजह यह भी थी कि उन के बेटों ने अपने भाई यूसुफ़ के साथ ज़्यादती की थी और चूंकि बन्दों के ह़क़ तौबः इस्तिग़्फ़ार से माफ़ नहीं होते, इसलिए उन्होंने चाहा कि यूसुफ़ से भी दर्याफ़्त कर लें कि उन्होंने माफ़ कर दिया है या नहीं, उन के माफ़ करने का इ़ल्म हो जाए तो अल्लाह तआ़ला से माफ़ करवाने के लिए दुआ की जाए।

99-101

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَ قَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۝ وَ رَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَ قَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۫ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْۤ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۫ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۫ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۫ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝

वालिदैन और भाईयों का सज्दः

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने तीसरी बार जब अपने भाईयों को मिस्र से रुख़सत करके अपना कुर्ता दिया था कि इसे मेरे वालिद के चेहरे पर डाल देना, उस वक़्त यह भी फ़रमाया था कि तुम अपने सब घर वालों को मेरे पास ले आना। जब यह लोग वापस कन्आ़न पहुँचे और अपने वालिद के चेहरे पर ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का कुर्ता डाल दिया तो उस से उन की बीनाई वापस आ गई और फिर अपने वालिद से दुआ़-ए-मग़्फ़िरत की दरख़्वास्त की और उन्होंने दुआ़ कर दी तो अब मिस्र की रवानगी का इरादा किया।

ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) और उन की बीवी (पत्नी) और ग्यारह बेटे और उन की बीवियाँ व औलाद ने सफ़र का इन्तिज़ाम किया और मिस्र के लिए रवाना हो गए। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को उन के पहुँचने की ख़बर मिली तो शहर से बाहर आकर एक ख़ेमे में (जो पहले से लगाया हुआ था) उन का इस्तिक़बाल

(स्वागत) किया और अपने माँ-बाप को अपने क़रीब में जगह दी और फिर शहर में दाख़िल होने के लिए फ़रमाया कि ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ मिस्र में अन्दर चलिए और अम्न चैन से रहिए। जब शहर में अन्दर पहुँच गये तो हज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने उन सब को इ़ज़्ज़त से ठहराने का इन्तिज़ाम फ़रमाया और जिस तख़्त शाही पर बैठे थे उस पर अपने वालिदैन को बिठाया जिस से उन की इ़ज़्ज़त को ज़ाहिर करना मक़्सूद था, उस वक़्त वालिदैन और ग्यारह भाई सब यूसुफ़ (अ़लै०) के सामने सज्दे में गिर गए। यह सज्दः बतौर तअ़ज़ीम (सम्मान) के था जो बाज़ पिछली उम्मतों में जायज़ था। शरीअ़ते मुहम्मदिया में ग़ैरुल्लाह के लिए सज्दः करना ह़राम कर दिया गया है।

सज्दः तअ़ज़ीमी-

सज्दः अ़िबादत हो या सज्दः तअ़ज़ीमी (सम्मान) हमारी शरीअ़त में ग़ैरुल्लाह के लिए ह़राम है। इस के विषय में सूरः बक़रः रुकूअ़ नम्बर (4) में गुज़र चुका है। जब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने बचपन में सपना देखा था कि चाँद, सूरज और ग्यारह सितारे मुझे सज्दः कर रहे हैं तो उन के इस सपने का मतलब ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने उसी वक़्त समझ लिया था कि अगर यह सपना यूसुफ़ के भाईयों ने सुन लिया तो अन्देशा है कि वह ग्यारह सितारों को अपने ही लिए समझ लेंगे इसलिए कुछ ऐसी चाल चलें कि यूसुफ़ की हलाकत (मृत्यु) हो जाए या वहाँ से दूर हो जाएँ।

भाईयों के कान में उन के सपने की भनक पड़ी थी या यूँ ही दुश्मनी पर उतर आए थे बहरह़ाल वह तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को कुएँ में डालकर और फिर चन्द दिरहम के बदले बेच कर अपने ख़याल से फ़ारिग़ हो चुके थे और यह समझ लिया था कि अब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को न घर वापस आना है न उसे कोई बुलन्दी ह़ासिल होनी है, लेकिन होता वही है जो अल्लाह तआ़ला चाहे।

आख़िर वह दिन भी आ गया कि यह लोग उन के सामने शर्मिन्दा भी हुए और उन को तअ़ज़ीमी (सम्मान पूर्वक) सज्दः भी किया। सज्दः करने वालों में ग्यारह सितारे तो भाई हुए और चाँद और सूरज वालिदैन (माता-पिता) हुए। जब यह मन्ज़र सामने आया तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अपने वालिद से अ़र्ज़ किया कि ऐ अब्बा जान! यह मेरे ख़्वाब का मतलब है, मैंने जो ख़्वाब देखा था अल्लाह तआ़ला ने उस को सच कर दिखाया।

क़ुर्आन मजीद में **ورفع ابويه على العرش** फ़रमाया है। अ़रबी ज़बान में अबवैहि माँ-बाप के लिए बोला जाता है। उन में ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) तो ह़क़ीक़ी तौर पर वालिद थे, लेकिन उन के साथ जिस ख़ातून को तख़्त शाही पर बिठाया और सब ने सज्दः किया उन में ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की ह़क़ीक़ी वालिदा थीं या बतौर मिज़ाज (संज्ञा के) ख़ाला को वालिदा फ़रमाया है, जिन से ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने बाद में निकाह़ फ़रमा लिया था।

तफ़्सीर की किताबों में दोनों बातें लिखी हैं। 'ह़ज़रत ह़सन' और इतिह़ासकार 'इब्ने इस्ह़ाक़' से 'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' ने नक़्ल किया है कि उस वक़्त तक उन की असली माँ ज़िन्दा थीं, अगर ऐसा

है तो हो सकता है माँ हों, ख़ाला कहने की ज़रूरत नहीं **واللہ تعالی اعلم بالصواب** इस के बाद अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझ पर एहसान फ़रमाया कि उस ने मुझे जेल से निकाला साथ ही दूसरी नेअ़मत का ज़िक्र भी फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला आप लोगों को देहातियों वाली आबादी से ले आया और यहाँ मेरे पास लाकर बसा दिया और साथ ही यह भी फ़रमाया مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ कि यह सब कुछ उस के बाद हुआ जबकि शैतान ने मेरे और मेरे भाईयों के दर्मियान बिगाड़ की सूरत बना दी थी।

'साहिबे रुहुल् मआ़नी' लिखते हैं कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने कुएँ से निकलने का ज़िक्र नहीं किया बल्कि जेल से निकाले जाने का ज़िक्र फ़रमाया और मज़ीद यह किया कि भाईयों ने जो कुछ किया था उसे शैतान की तरफ़ मन्सूब कर दिया। इन दोनों बातों में ह़िक्मत यह थी कि भाई मज़ीद शर्मिन्दा न हों, जब माफ़ कर दिया और हर बात भूल-भुलैया कर दी तो अब इस का ज़िक्र कर के दिल दुखाना मुनासिब न समझा।

اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ बेशक मेरा रब जो चाहता है उस की लतीफ़ (अच्छी से अच्छी) योजना कर देता है (जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को जेल से निकालने के लिए दो क़ैदियों के ख़्वाब की तअ़बीर को तद्बीर बना दिया।)

اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ (बेशक मेरा रब जानने वाला ह़िक्मत वाला है) वह अपने बन्दों की मस्लह़तों को जानता है और उस का कोई काम ह़िक्मत से ख़ाली नहीं और अ़र्ज़ कियाः-

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ

ऐ मेरे रब! आप ने मुझे सल्तनत का एक ह़िस्सा अ़ता फ़रमाया।

इस में अल्लाह तआ़ला के दो इन्आ़मात का ज़िक्र फ़रमाया। एक तो यह कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे मुल्क अ़ता फ़रमाया। 'साहिबे रूहुल् मआ़नी' फ़रमाते हैं कि इस में **'मिन'** से मुराद यह है कि मुल्क का बड़ा ह़िस्सा अ़ता फ़रमाया चूंकि इस जगह बड़ी नेअ़मतों का ज़िक्र हो रहा है, इसलिए बड़ा मुल्क मुराद लेना मुनासिब है ای بعضا عظیما और बाज़ ह़ज़रात ने यूँ फ़रमाया कि शब्द **'मिन'** इसलिए ज़्यादा फ़रमाया है कि मिस्र में ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को सत्ता तो ह़ासिल थी, लेकिन ह़ुकूमत दूसरे ही के पास थी, जिस ने सत्ता सुपुर्द किया था। दूसरी नेअ़मत जिस का ज़िक्र फ़रमाया वह यह कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे ख़्वाबों के मतलब का इ़ल्म दिया है, ख़्वाबों के मतलब का इ़ल्म बहुत बड़ा इ़ल्म है और यह अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम नेअ़मत है। इसी वजह से ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) जेल से निकले और मिस्र में उन्हें सत्ता ह़ासिल हुई।

सपने के बारे में ज़रुरी मालूमात-

सपने में जो देखा जाता है उस के इशारों को समझ कर जो मतलब समझना चाहिए लेकिन उस मतलब का सह़ीह़ होना ज़रूरी नहीं, मगर जिन को अल्लाह तआ़ला सपनों के इशारे के समझने का इ़ल्म

देता है वह को आ़मतौर से समझ लेते है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मुबश्शिरात (ख़ुशख़बरी) के अ़लावा नुबूव्वत में से कुछ बाक़ी नहीं रहा। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुबश्शिरात (ख़ुशख़बरी) क्या हैं? आप ने फ़रमाया वह अच्छे ख़्वाब (सपने) हैं जिन्हें कोई मुसलमान ख़ुद देख ले या उस के लिए देख लिए जाएँ। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 394 सह़ीह़ बुख़ारी व मुवत्ता इमाम मालिक)**

ह़ज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "मोमिन का ख़्वाब नुबूव्वत का छियालिस्वाँ ह़िस्सा है।" **(बुख़ारी पेज नं० 1030 भाग 2)**

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "जिस ने मुझे सपने में देखा उस ने मुझे ही देखा क्योंकि शैतान मेरी सूरत बनाकर नहीं आ सकता।"

(सह़ीह़ बुख़ारी भाग 2, पेज नं० 1036)

ह़ज़रत अबुहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जब आख़िरी ज़माना होगा तो मोमिन का ख़्वाब झूठा न होगा और सब से सच्चा उस शख़्स का ख़्वाब होगा जो अपनी बात में सब से ज़्यादा सच्चा होगा। फिर फ़रमाया कि ख़्वाब की तीन क़िस्में हैं एक तो वह है जिस में अल्लाह की तरफ़ से ख़ुशख़बरी है और दूसरा वह है जो इन्सान के अपने ख़यालात होते हैं, अपने नफ़्स (इन्द्रिय) से जो बातें करता है वह ख़्वाब में नज़र आ जाते हैं और तीसरा ख़्वाब वह है जो शैतान की तरफ़ से होता है वह रंजीदा (चिन्तित) करने के लिए ख़्वाब में आ जाता है। (फिर फ़रमाया) तुम में से जो शख़्स ऐसा ख़्वाब देखे जो नागवार हो तो किसी से बयान न करे और खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे।

(रवाहुल तिर्मिज़ी)

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम में से कोई शख़्स ऐसा ख़्वाब देखे जो ना पसंद हो तो बाएँ तरफ़ को तीन बार थुकार दे और तीन बार अल्लाह की पनाह माँगे शैतान से (यानी **अऊ़ज़ू बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम** पढ़े) और जिस करवट पर लेटा हुआ हो उसे बदल दे।) **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 394)**

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मोमिन का ख़्वाब नुबूव्वत के छियालिस (46) ह़िस्सों में से एक ह़िस्सा है और वह परिन्दा की टांग पर है। जब तक ख़्वाब बयान करने वाला बयान न कर दे सो जब वह (किसी के सामने) बयान कर देगा और उस का मतलब बता दिया जाएगा तो मतलब के मुताबिक़ ज़ाहिर हो जाएगा और अपना ख़्वाब सिर्फ़ ऐसे शख़्स से बयान करो जो तुम से मुह़ब्बत रखने वाला है या अ़क़्लमन्द आदमी से बयान करो जो अच्छी तअ़बीर (मतलब) दे या कम से कम यही करे कि बुरी तअ़बीर (मतलब) समझ में आए तो ख़ामोश रह जाए। **(रवाहुल् तिर्मिज़ी)**

यह जो फ़रमाया कि ख़्वाब परिन्दा की टांग पर है, इस का मतलब यह है कि उसे क़रार नहीं है जैसा मतलब बताया जाएगा उस के मुताबिक़ हो जाएगा, लिहाज़ा ऐसे शख़्स से ज़िक्र न करे जो मुह़ब्बत और सम्बन्ध न रखता हो और ऐसे दोस्त से भी बयान न करे जो अ़क़्लमन्द न हो।

कुछ ख़्वाबों की तअ़बीरें (मतलब)-

रसूलुल्लाह (सल्ल०) सह़ाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से ख़्वाब सुनते थे और उन का मतलब बयान करते थे। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से 'वरक़ा बिन नौफ़ल' के बारे में ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने पूछा (जो उन के चचाज़ाद भाई थे) कि वरक़ा ने आप की तस्दीक़ (पुष्टि) की थी, लेकिन आप (की दअ़वत) से पहले उन की मौत आ गई, उन के बारे में क्या समझा जाए? आप ने फ़रमाया मैंने उन्हें ख़्वाब में इस तरह़ देखा है कि उन के ऊपर सफ़ेद कपड़े हैं, अगर वह दोज़ख़ियों में से होते तो उन के ऊपर के अ़लावा दूसरा लिबास होता। **(रवाहुल् तिर्मिज़ी)**

आप ने सफ़ेद कपड़ों से इस पर दलील लिया कि उन्होंने जो तस्दीक़ (पुष्टि) की थी वह अल्लाह तआ़ला के यहाँ ईमान के दर्जे में क़ुबूल हो गई और वह दोज़ख़ से बचा दिये गये।

दूध का सपना-

एक मर्तबः रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मैंने ख़्वाब देखा है कि मेरे पास दूध का प्याला लाया गया मैंने उस में से पिया और इतना पिया कि यह मालूम होने लगा कि नाख़ूनों से ज़ाहिर होने लगा, फिर मैंने अपना बचा हुआ ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब को दे दिया। ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! आप ने इस का क्या मतलब बताया? आप ने फ़रमाया मैंने इस का मतलब इ़ल्म बताया यानी मुझे अल्लाह ने बहुत इ़ल्म दिया और इस इ़ल्म में से ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब को भी अ़ता फ़रमाया। **(बुख़ारी भाग 2, पेज नं० 1037)**

इस ह़दीस में दूध से इ़ल्म मुराद लिया है, जैसा कि दूध इन्सान की परवरिश का ज़रिया है उसी तरह़ इ़ल्म दिल की बीमारी का ज़रिया है।

नहर का सपना-

ह़ज़रत उम्मे अ़ला रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने बयान किया कि मैंने ख़्वाब में देखा कि उ़स्मान इब्ने मज़्ऊन के लिए एक नहर जारी है मैंने इस का रसूलुल्लाह (सल्ल०) से ज़िक्र किया, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यह उन का अ़मल है जो जारी है। **(सह़ीह़ बुख़ारी भाग 2, पेज नं० 1039)**

इस में नहर जारी का मतलब आप ने अ़मल का जारी होना फ़रमाया।

काली औ़रत का सपना-

एक मर्तबः ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने ख़्वाब देखा कि एक काली औ़रत जिस के बाल बिखरे हुए हैं, मदीना मुनव्वरह से निकल कर 'जह़फ़ा' में मुक़ीम (ठहर) हो गई। आप ने उस की तअ़बीर (मतलब) बताया कि मदीना की वबा (बीमारी) निकल कर 'जह़फ़ा' में चली जाएगी। **(सह़ीह़ बुख़ारी भाग 2, पेज नं० 1044)**

आप ने काली औ़रत को वबा (ख़ास बीमारी) से तअ़बीर फ़रमाया और आप के कहने के मुताबिक़

ही हुआ क्योंकि मदीना मुनव्वरह की आबो हवा दुरुस्त हो गई और 'जह़फ़ा' बर्बाद हो गया, वहाँ उस वक़्त यहूदी रहते थे।

इस तरह़ रसूलुल्लाह (सल्ल०) से और भी ख़्वाबों की तअ़बीर नक़्ल की गई है। उम्मते मुह़म्मदिया में ह़ज़रत मुह़म्मद बिन सीरीन ताबअ़ी (रह़०) को इस में बड़ी महारत थी जैसा कि मशहूर है। बाज़ मर्तबः कभी-कभी सपना देखने वाला अपने सपने की वजह से ह़ैरत और तअ़ज्जुब, फ़िक्र व रंज में पड़ जाता है, लेकिन उस की तअ़बीर बहुत अच्छी होती है।

ज़रूरी नहीं कि ख़्वाब की जो तअ़बीर मतलब बनाया जाए सह़ी होने के बावजूद वह जल्दी हो जाए। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने बचपन में ख़्वाब देखा था कि मुझे चाँद-सूरज और ग्यारह सितारे सज्दः कर रहे हैं, लेकिन इस का ज़ुहूर (उदय) एक लम्बे समय के बाद ज़ाहिर हुआ। जब यह ज़ाहिर हुआ तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अपने वालिद से कहा कि يَاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۖ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا

अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों पर शुक्र

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का इक़्रार किया कि यह अल्लाह तआ़ला ने मुझे अ़ता फ़रमाई हैं। नेअ़मतों का इक़्रार करना और उन पर अल्लाह तआ़ला की तअ़रीफ़ बयान करना और फिर उन नेअ़मतों को नेक कामों में लगाना और गुनाहों में ख़र्च न करना यह सब शुक्र के काम हैं, नेअ़मतों का इन्कार करना नाशुक्री है। सूरः नह़ल (**आयत नं० 71**) में इस नाशुक्री का ज़िक्र करते हुए फ़रमायाः-

اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ (क्या अल्लाह की नेअ़मतों का इन्कार करते हैं?) क़ारून को अल्लाह तआ़ला ने माल बहुत ज़्यादा दिया था। जब उस से कहा गयाः-

وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْاَرْضِ ۖ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ (**सूरः क़सस आयत नं० 77**) (और तू ज़मीन में फ़साद की इच्छा करने वाला मत हो, बेशक अल्लाह तआ़ला फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता) तो उस ने जवाब में कहाः-

اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ (**सूरः क़सस आयत नं० 78**) (कि यह माल जो कुछ मिला है सिर्फ़ मेरे ज़ाती हुनर की वजह से दिया गया है।)

उस ने उसे अल्लाह का दिया हुआ माल मानने से इन्कार कर दिया और अपने ही हुनर की तरफ़ निस्बत कर दी, फिर जो उस का अन्जाम हुआ सब को मालूम है।

इस्लाम पर मरने और नेक लोगों में शामिल रहने की दुआ़-

इस के बाद ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने यूँ दुआ़ की فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ (ऐ ज़मीन व आसमान के पैदा फ़रमाने वाले! आप ही दुनिया व आख़िरत में मेरे कारसाज़ (वली) हैं)

تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ

(मुझे इस ह़ालत में मौत दीजिए कि मैं फ़रमाँबरदार रहूँ और मुझे नेक बन्दों में शामिल फ़रमा दीजिए।)

इस से मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमाँबरदार होते हुए मौत आ जाना सब से बड़ी सआ़दत (नेकी) है और यह भी मालूम हुआ कि जो ह़ज़रात मर्तबः के एतिबार से अपने से ज़्यादा हों, उन के ह़ालात और आ़माल में और उन की तरह़ अज्र व सवाब के ह़क़ में शामिल होने की दुआ़ करना चाहिए।

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ख़ुद नबी थे, फिर भी दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! मुझे नेक लोगों में शामिल फ़रमा दे यानी पूर्वजों में ह़ज़रत याक़ूब, इस्ह़ाक़ और इब्राहीम (अ़लै०) के दर्जात में पहुँचा दे।

यहाँ जो सवाल पैदा होता है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने मौत की दुआ़ क्यों की? वह तो अच्छे ह़ाल में थे, नेअ़मतों की फ़रावानी (Prosperity) थी ह़ालाँकि दुःख तक्लीफ़ की वजह से भी मौत की दुआ़ करना मना है। इस का जवाब यह है कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने यूँ नहीं कहा कि मुझे अभी मौत दे दी जाए बल्कि मतलब यह था कि मुक़र्रर वक़्त पर जब मुझे मौत आ जाए तो यह सआ़दत (ख़ुशनसीबी) नसीब हो, जिस का सवाल कर रहा हूँ।

102-104 ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ۝ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की रिसालत

यह तो सब को मालूम है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने किसी इन्सान से नहीं पढ़ा था और न ऐसे लोगों का साथ पाया था जो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का क़िस्सा आप को बताते और सुनाते, विस्तार के साथ यह क़िस्सा बता देना यह साफ़ तरीक़े पर आप के नुबूव्वत की दलील है। अल्लाह तआ़ला ने वह्य के ज़रिये आप को यह क़िस्सा बताया और आप ने लोगों को सुनाया, यहूदियों ने जब यह क़िस्सा सुना जिसे वह अपने पूर्वजों से सुनते आए थे तो उन्हें इस्लाम क़ुबूल कर लेना ज़रूरी था, लेकिन उन्होंने इस्लाम क़ुबूल नहीं किया।

'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' ने लिखा है कि यहूदियों ने कुफ़्फ़ारे मक्का से कहा कि तुम मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछो कि वह क्या ज़रिया था जिस की वजह से बनी इस्राईल अपने वतन को छोड़कर मिस्र में आकर आबाद हुए?

क़ुरैश ने आप से ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के क़िस्से के बारे में मालूम करना चाहा तो सूरः यूसुफ़ नाज़िल हुई। यहूदी अपने ख़याल में बहुत दूर की सोच कर आए थे और उन्होंने समझा था कि आप की तरफ़ से इस का जवाब न मिल सकेगा और क़ुरैशे मक्का भी चाहते थे कि आप को किसी तरह़ हरा दें, लेकिन जब जवाब मिल गया तो दोनों लोग वहीं रहे जहाँ थे यानी इस्लाम क़ुबूल नहीं किया।

अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि यह ग़ैब की ख़बरें हम आप को वह्य के ज़रिये बताते हैं। जब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों ने आपस में मिलकर यह तय कर लिया कि उन को कुएँ में डाल दें और वह तरह़-तरह़ की तद्बीरें सोच रहे थे उस वक़्त वहाँ आप मौजूद नहीं थे, यह बात यहूदियों को मालूम थी, फिर यह बात आप को कैसे मालूम हुई?

ज़ाहिर है कि वह्य के ज़रिये इस बात का इ़ल्म हुआ, लिहाज़ा सवाल करने वालों पर लाज़िम हुआ कि आप की तस्दीक़ करें और आप पर ईमान लाएँ। आप का दिल चाहता था कि यह लोग इस्लाम क़ुबूल कर लें, मोअ़जिज़ात (चमत्कार) सामने आते रहते थे, लेकिन इस्लाम क़ुबूल नहीं करते थे, आप को उम्मीद थी कि यह क़िस्सा सुनकर यहूदी और क़ुरैश मुसलमान हो जाएँगे लेकिन उन्होंने इस्लाम क़ुबूल नहीं किया, ह़ालांकि उन्होंने वादा किया था कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का क़िस्सा बता दें तो हम ख़ासतौर से इस्लाम क़ुबूल कर लेंगे।

आप चाहते थे कि यह लोग इस्लाम क़ुबूल कर लें और ख़ासतौर से ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) का क़िस्सा सुनाने के बाद तो और ज़्यादा उम्मीद हो गई थी। जब वह लोग ईमान न लाए तो आप को दुःख हुआ।

अल्लाह तआ़ला ने आप के दुःख को दूर करने के लिए फ़रमाया कि अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं आप चाहें जो कर लें। इस के बाद फ़रमाया وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ आप उन से इस पर किसी बदले का सवाल नहीं करते اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ (यह दुनिया वालों के लिए सिर्फ़ नसीह़त ही है) उन के ईमान न लाने में आप का कोई नुक़्सान नहीं, उन का अपना नुक़्सान है कि नसीह़त को नहीं मानते और ह़क़ की तरफ़ नहीं आते।

ख़ुलासा (संक्षेप)

(1) अच्छा ख़्वाब अल्लाह की नेअ़मत और मोमिन के लिए ख़ुशख़बरी है और ख़्वाब का मतलब जानना भी अल्लाह की नेअ़मत है।

(2) ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने जो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) से फ़रमाया कि अपना ख़्वाब अपने भाईयों से बयान न करना क्योंकि हो सकता है कि वह तुझे तक्लीफ़ देने की तद्बीर करे।

इस से मालूम हुआ कि अगर किसी शख़्स के बारे में यह गुमान हो कि उसे फ़लाँ शख़्स नुक़्सान पहुँचाएगा तो जिसे तक्लीफ़ पहुँचाने का शक हो उसे यह बात बता देना कि तुम एह़तियात से रहो फ़लाँ शख़्स की तरफ़ से तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचने का अन्देशा है यह चुग़लख़ोरी में शामिल नहीं है।

(3) ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाई पैग़म्बर नहीं थे, वरना वह ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को बूढ़े बाप से जुदा करने की तद्बीर न करते, बाप को तक्लीफ़ पहुँचाना और बाप भी वह जो अल्लाह का पैग़म्बर है।

उन्होंने बहुत बड़े फ़िस्क़ (गुनाह) का अ़मल किया, मालूम हुआ कि सालिह़ीन (नेक लोगो) की औलाद से भी गुनाह कबीरा हो सकता है और यह भी मालूम हुआ कि औलाद के गुनाहों की वजह

से माँ बाप को बुरा भला कहना या उन्हें गुनाहों में शामिल समझना सही नहीं है, जब कि उन्होंने तअ़लीम और तर्बियत में कोताही न की हो, जब उन्होंने नेकी की राह बता दी और यह बता दिया कि यह चीज़ें गुनाह की हैं तो वह अपनी ज़िम्मेदारी से बरी हो गए।

(4) ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के बारह भाई थे। दस ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) की पहली बीवी से थे और दो उन की दूसरी बीवी से थे यानी ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) और बिन्यामीन (यह दोनों ह़क़ीक़ी भाई थे) उन बारह बेटों से ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) की नस्ल चली। ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) का लक़ब इस्राईल था, इसीलिए उन के तमाम बेटों की औलाद को 'बनी इस्राईल' कहा जाता है। ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) और उस वक़्त जो आप की बीवी थी और बारह बेटों के साथ मिस्र में जाकर आबाद हो गए थे।

ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) और उन की बीवी का मिस्र में इन्तिक़ाल हो गया और उन की वसीयत के मुताबिक़ उन को असली वतन यानी 'कन्आ़न' में लाकर दफ़न कर दिया गया, जैसा कि तफ़्सीर की किताब में लिखा हुआ है। उन के बेटे मिस्र ही में रहे उन की नस्लें आगे बढ़ीं। ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) की वफ़ात के बाद उन लोगों की हुकूमत में कुछ भी ह़िस्सा न रहा और वहाँ से वापस अपने वतन 'कन्आ़न' भी न आए मिस्र ही में रहते रहे चूंकि मिस्रियों की क़ौम में से यह नहीं थे, न उन के हम मज़हब थे और परदेश से आकर आबाद हुए थे इसलिए मिस्रियों ने उन्हें बुरी तरह़ गुलाम बना रखा था। सूरः बक़रः और सूरः अअ़राफ़ में गुज़र चुका है कि मिस्री उन के बेटों को ज़ब्ह़ कर देते थे और यह उन के सामने उफ़ भी न कर सकते थे।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) उन को मिस्र से लेकर निकले जिस का वाक़िआ़ सूरः बक़रः में गुज़र चुका है तो उस वक़्त उन की तअ़दाद छः लाख पहुँच चुकी थी। बारह भाईयों की औलाद बारह क़बीलों में विभाजित थी यही वह बारह क़बीले थे कि जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) 'मैदाने तीह' में पानी के लिए पत्थर पर लाठी मारते तो बारह चश्मे जारी हो जाते थे और हर क़बीला अपने-अपने चश्मे से पानी पीता था। तारीख़ व तफ़्सीर की किताबों में लिखा है कि यह लोग चार सौ साल (400) के बाद मिस्र से निकले थे।

(5) ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) के बेटों ने जब अपने वालिद से यूँ कहा कि यूसुफ़ को कल हमारे साथ भेज दीजिए वह खाएगा और खेलेगा। इस के जवाब में ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) ने उन से यह नहीं फ़रमाया था कि खेलना मना है, मैं उस के लिए मना नहीं करता बल्कि यूँ फ़रमाया कि मुझे डर है कि तुम उसे ले जाओ और तुम्हारी ग़फ़्लत की वजह से उसे भेड़िया खा जाए। उ़ल्म-ए-किराम ने इस से यह मतलब लिया है कि सैर व तफ़रीह़ और खेलकूद जो शरीअ़त की ह़द के अन्दर हो जायज़ और मुबाह़ है, बच्चों को इस का खेलना खिलाना जायज़ है और बड़े भी आपस में दौड़ लगा सकते हैं बल्कि ख़ैर की नियत से हो तो इस में सवाब भी है।

ह़ज़रत उक़्बा बिन आ़मिर (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद

फ़रमाया कि तुम्हारे लिए मुल्क रोम (योरोप का इलाक़ा) फ़तेह़ (विजय) होगा और अल्लाह उनकी बुराई को तुम से दूर रखेगा तो तुम में से कोई शख़्स इस से आ़जिज़ न हो जाए कि अपने तीरों से खेला करे (यानी तीरन्दाज़ी की मश्क़ हमेशा करते रहो।) **(मुस्लिम)**

चूंकि तीरों का फेंकना बड़ी अहमियत रखता है (और अब तो नये हथियारों का बनाना जंग का मेयार बन गया है।) इसलिए आप ने तीरन्दाज़ी के अभ्यास का हुक्म दिया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) घुड़दौड़ भी कराते थे, जिस में घोड़ों का मुक़ाबिला होता है। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 336)**

जो भी खेल ऐसा हो जिस में सतर न खुले, न नमाज़ से ग़ाफ़िल करे और न जुआ हो तो ऐसा खेलना जायज़ है।

(6) जब ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) के भाईयों ने क़त्ल करने का इरादा किया तो उन में से एक भाई ने जो सब से बड़ा था यूँ कहा कि इसे क़त्ल न करो बल्कि किसी कुएँ में डाल दो ताकि इसे आने जाने वाले क़ाफ़िले उठा लें। इस से यह बात मालूम हुई कि जब कोई जमाअ़त किसी बुराई का इरादा कर ही ले तो जितना हो सके मना करे, अगर बिल्कुल मना न कर सके तो कम से कम ऐसी बात का मश्वरा दे दे जो सज़ा के एतिबार से हल्की हो।

فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ और साथ में यूँ भी कहा وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ (कि अल्लाह तआ़ला ही से इस पर मदद माँगना हो जो तुम बयान करते रहो।) इस से मालूम हुआ कि सब्र जमील भी हो और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बराबर ध्यान भी रहे, अल्लाह तआ़ला से मदद माँगता रहे और मुश्किल ह़ल होने के लिए दुआ़ करता रहे, सब्र जमील वह है जिस में शिकवा शिकायत न हो।

'सह़ीह़ बुख़ारी' और 'सह़ीह़ मुस्लिम' में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ऐसे सात आदमियों का ज़िक्र फ़रमाया, जिन्हें अल्लाह तआ़ला उस दिन अपने साये में रखेगा जिस दिन उस के साया के अ़लावा कोई साया न होगा उन सात आदमियों में से एक शख़्स का ज़िक्र करते हुए यूँ फ़रमायाः-

ورجل دعته امراة ذات حسب و جمال فقال انی اخاف الله (और एक वह शख़्स जिसे मर्तबः और हुस्न व जमाल वाली औ़रत ने बुरे काम के लिए दअ़वत दी तो उस ने कह दिया कि मैं अल्लाह से डरता हूँ। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 68)**

ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को जिस औ़रत ने बुरे काम की दअ़वत दी थी वह मंत्री की बीवी थी, बज़ाहिर वह ख़ूबसूरत भी होगी, लेकिन ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने साफ़ इन्कार कर दिया। ह़क़ीक़त में यह बड़े दिल गुर्दा की बात है, ऐसे मौक़े पर गुनाह से बच जाना बड़ी हिम्मत और मज़बूत ईमान की दलील है और सब से बड़ी चीज़ अल्लाह तआ़ला की मदद और तौफ़ीक़ है।

(7) जेल से जिस शख़्स की रिहाई हुई उस से ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) ने जो यह फ़रमाया कि बादशाह से मेरा ज़िक्र कर देना। इस से मालूम हुआ कि मुसीबत से छुट्कारा के लिए कोशिश करना और किसी को वास्ता बनाना यह तवक्कुल (विश्वास) के ख़िलाफ़ नहीं है।

105-107 وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ۝ وَمَا يُؤْمِنُ

اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ۝ اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

हठधर्मियों का ह़ाल

जिन लोगों को तौह़ीद से और आप की रिसालत पर ईमान लाने से हठधर्मी है, वह अल्लाह की मख़्लूक़ (सृष्टि) में से बहुत सी क़ुद्रत की निशानियाँ देखते हैं, लेकिन ईमान नहीं लाते। आसमानों में निशानियाँ जैसे- सितारे, ख़ुद आसमानों का वजूद भी अल्लाह तआ़ला पर दलालत करता है, जिस में उस का कोई साझीदार नहीं और इस बात को सब ही मानते हैं।

इसी तरह़ ज़मीन अल्लाह तआ़ला की बहुत बड़ी निशानी है और इस में बहुत सी निशानियाँ हैं, इन सब निशानियों को यह लोग देखते हैं, सफ़र में जाते हैं बहुत सी ऐसी चीज़ें सामने आती हैं, लेकिन फिर भी अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद की तरफ़ नहीं आते, जब उन्हें तौह़ीद की दअ़वत दी जाती है तो कहते हैं कि हम तो अल्लाह तआ़ला को मानते हैं, लेकिन साथ ही अल्लाह तआ़ला के साथ साझीदार भी बना लेते हैं जिन्हें मअ़बूद (उपास्य) होने में अल्लाह तआ़ला का साझीदार मानते हैं, लेकिन उन बातिल मअ़बूदों (उपास्यों) की भी अ़िबादत करते हैं। शिर्क के साथ मानना कोई मानना नहीं है, यह मानना न मानने के बराबर है।

उन लोगों का न तौह़ीद पर ईमान है, न आप की रिसालत का उन्हें इ़क़रार है, कुफ़्र व शिर्क को अख़्तियार किये हुए हैं और बिल्कुल इत्मिनान से ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, अल्लाह के अ़ज़ाब और ग़ज़ब से नहीं डरते। क्या उन्हें इस बात का इत्मिनान है कि उन पर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब न आएगा और क्या अचानक क़ियामत नहीं आ सकती? उन को समझ लेना चाहिए कि ऐसा अ़ज़ाब आ सकता है जो उन्हें हर तरफ़ से घेर ले या अचानक क़ियामत आ जाए और उन्हें ख़बर भी न हो।

"وهـذا كـقوله تعالىٰ" اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْن (الآيتين)

और आख़िरत में हर काफ़िर के लिए हमेशा का अ़ज़ाब ज़रूरी ही है।

108 قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰي بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बुलाना

इस आयते शरीफ़ा में अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (सल्ल०) को हुक्म फ़रमाया है कि आप स्पष्ट तौर पर लोगों से कह दें और काफ़िरों और मुश्रिकों के सामने ए़लान फ़रमा दें कि मैं जिस राह पर हूँ मेरा रास्ता तौह़ीद का रास्ता है। मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ और मेरी दअ़वत पूरी समझबूझ के साथ है और न सिर्फ़ यह कि मैं सन्तुष्ट हूँ, जिन लोगों ने मेरी पैरवी की वह भी सन्तुष्ट हैं।

इस में यह बता दिया कि यह मेरी दअ़वत ह़क़ है सह़ी है, समझ कर होश व हवाश के साथ है, मैं इस को छोड़ने वाला नहीं हूँ तुम मेरी कैसी ही मुख़ालिफ़त (विरोध) कर लो बहरह़ाल अपने अ़क़ीदे और अ़मल पर क़ायम हूँ। जो शख़्स भी यूँ कहे कि मैं मुसलमान हूँ, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दीन पर हूँ उस पर लाज़िम है कि पूरी तरह़ दीन इस्लाम पर जमे, किसी क़िस्म के शक को दिल में जगह न दे और दुश्मनों से पूरे ज़ोरदार अन्दाज़ में बात करे और उन से कह दे कि मैं ह़क़ पर हूँ पूरे तौर पर सन्तुष्ट हूँ तुम लोग बातिल हो।

जो शख़्स दीन इस्लाम पर एतिराज़ करे तो ख़ूब बढ़-चढ़कर उस का मुँह तोड़ जवाब दे और दलील के साथ बात करे, किसी दुश्मन से ज़रा भी न दबे, न लचक अख़्तियार करे وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ (और मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ) हर तरह़ के शिर्क से अल्लाह तआ़ला की पाकी बयान करता हूँ) وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (और मैं मुश्रिकीन में से नहीं हूँ) मुश्रिकीन जो भी कुछ अल्लाह तआ़ला के बारे में कहते हैं मैं उस से बरी हूँ।

109 وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝

रसूल इन्सान ही थे

मुश्रिकीने मक्का और दूसरे कुफ़्फ़ार के सामने जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपनी दअ़वत पेश की और फ़रमाया, मैं अल्लाह का रसूल हूँ तो उन लोगों ने कट ह़ुज्जती की और तरह़-तरह़ के बेतुके सवालात किये उन में से एक यह बात भी थी कि आप तो हमारे जैसे आदमी हैं, रसूल कोई फ़रिश्ता होना चाहिए। अल्लाह तआ़ला ने उन का जवाब दिया कि हम ने जितने भी रसूल पहले भेजे हैं वह सब इन्सान ही थे, जो मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) बस्तियों के रहने वाले थे। यह ह़ज़रात अपनी-अपनी उम्मतों की तरफ़ भेजे गये और उन को ह़क़ की दअ़वत दी।

इस में बहुत बड़ी ह़िक्मत है वह यह कि इन्सान को सह़ी तरीक़े पर इन्सान बता सकते हैं, ज़बान से भी और अ़मल कर के भी दिखा सकते है और यह बात फ़रिश्तों के ज़रिये ह़ासिल नहीं क्योंकि उन में इन्सानी मिज़ाज नहीं है, लिहाज़ा अ़मल कर के नहीं दिखा सकते।

आयते करीमा में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़िताब फ़रमाया कि हम ने आप से पहले रसूल भेजे वह भी इन्सान ही थे, उन ह़ज़रात की उम्मतों ने ऐसे ही बेतुके सवाल किये थे जो आपके लोग कर रहे हैं। यह कोई पहला मामला नहीं है जो आपको पेश आया आप से पहले रसूलों ने सब्र किया, आप भी सब्र करें كما فى سورة الرعد قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا (الى آخر الآيتين)

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ इस में फ़रमाया कि तुम तौह़ीद पर नहीं आते। रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दअ़वत पर कान नहीं धरते इसलिए कि तुम अल्लाह के अ़ज़ाब से नहीं डरते? क्या यह लोग ज़मीन में नहीं चले

फिरे कि उन लोगों का अन्जाम देख लेते जो इन से पहले थे? यानी इन से पहले भी रसूलों को उन की उम्मतों ने झुठलाया जिस की वजह से अ़ज़ाब के ह़क़्दार हुए ज़मीन पर चले फिरें तो उन के मकानों के खण्डरात, पत्थर और बेकार पड़े हुए कुंएँ नज़र आएँगे। अगर नसीह़त ह़ासिल करने का मिज़ाज हो तो नसीह़त ह़ासिल कर सकते हो।

وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا۔ यानी जो बन्दे तक़्वा अख़्तियार करते हैं, कुफ़्र व शिर्क से बचते हैं गुनाहों से दूर रहते हैं, फ़रायज़ वाजिबात की पाबन्दी करते हैं उन लोगों के लिए आख़िरत में बड़ी-बड़ी नेअ़मतें हैं और आख़िरत उन के लिए दुनियावी नफ़ा की चीज़ों से बेहतर है जिन से अहले दुनिया चिपके हुए हैं और यह चीज़ें उन्हें ईमान से रोक रही हैं और अच्छे आ़माल से दूर रख रही हैं।

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (सो क्या तुम समझ नहीं रखते) फ़ानी को बाक़ी पर तर्जीह़ देते हो और यह ख़याल नहीं करते कि पकड़ में देर होना दलील इस बात की नहीं है कि तुम कभी भी दुनिया और आख़िरत के अ़ज़ाब में मुब्तिला न होगे।

110 حَتّٰۤى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝

मुजरिमों को अ़ज़ाब

ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) को यह यक़ीन तो था कि झुठलाने वाले और इन्कार करने वालों के मुक़ाबिले में ज़रूर हमारी मदद होगी लेकिन मदद में देर लगी, दुश्मन अपनी दुनिया में व्यस्त रहे, ऐ़श व आराम से ज़िन्दगी गुज़ारते रहे। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जो उन्हें मोहलत दी जाती रही उस को देखकर ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) ने गुमान कर लिया कि हम ने जो यह समझा था कि जल्दी ही हमारी मदद होगी और दुश्मन जल्द हलाक होंगे हमारा यह गुमान सह़ी नहीं था, वजह इस की यह थी कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मदद का वादा था, इस का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं फ़रमाया था लिहाज़ा जल्दी मदद आने का ख़याल करना यह अपनी तरफ़ से एक गुमान था और दुश्मनों को लम्बी मोहलत मिल जाने की वजह से कुछ ऐसा वहम होने लगा कि दुनिया में हमारी मदद न होगी। यह उस के क़रीब है जो सूरः बक़रः में है:-

حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ۔ जब यह ह़ाल हो गया तो अल्लाह तआ़ला की मदद आ गई, अल्लाह तआ़ला ने जिसे चाहा निजात दे दी यानी ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) और उन के साथ अहले ईमान निजात पा गए। (قال صاحب الروح ج ۱۳ ص ۷۹)

111 لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

अक़्ल वालों के लिए नसीह़त

यह सूरः यूसुफ़ की आख़िरी आयत है। इस में चार बातें बताई गई हैं। पहला यह कि ह़ज़रात-ए-अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) और उन की क़ौमों के क़िस्सों में अ़क़्ल वालों के लिए नसीह़त है, जो लोग अपनी अ़क़्ल को काम में लगाते हैं, ग़ौर व फ़िक्र करते हैं, वह नसीह़त ह़ासिल कर लेते हैं।

दूसरी बात यह बताई कि यह क़ुर्आन जो पढ़ा जाता है और दोस्त व दुश्मन सब के सामने इस की तिलावत (पाठ) की जाती है, यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिस को रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपनी तरफ़ से तराश लिया हो, इस में जो पिछली उम्मतों के वाक़िआ़त बयान किये वह भी तराशे हुए नहीं हैं, फिर इस से दूर क्यों भागते हैं?

और तीसरी बात यह है कि यह क़ुर्आन पिछली आसमानी किताबों की तस्दीक़ (पुष्टि) करने वाला है, फिर क़ुर्आन की दअ़वत को क्यों तस्लीम नहीं करते ख़ासतौर से यहूद व नसारा जो अहले किताब हैं, उन को तो क़ुर्आन से दूर भागने का कोई मौक़ा ही नहीं। जब क़ुर्आन इन किताबों की तस्दीक़ (पुष्टि) करता है और वही बात बयान करता है जो उन की किताबों में है तो सब से पहले उन को क़ुबूल करना लाज़िम है وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍ بِهٖ (सूरः बक़रः आयत नं० 41)

चौथी बात यह बताई कि क़ुर्आन में हर बात की तफ़्सील (विस्तृत वर्णन) है यानी स्पष्ट तौर पर तमाम अ़क़ीदे (आस्थाएँ) और उसूली तौर पर तमाम अह़काम (सिद्धान्त) बता दिये।

इस तरह़ यह क़ुर्आन ईमान वालों के लिए हिदायत भी है और रह़मत भी, क्योंकि यही ह़ज़रात इस के अह़काम (आदेश) क़ुबूल करते हैं और इस की आयात के मुताबिक़ अ़मल करते हैं।

(भाग–13)

सूर–ए–रअ़द

(सूरः नं.13)

तफ़्सीर सूरः रअ़द

नाम- इस का नाम आयत नं० (13) से लिया गया है।

नाज़िल होने का ज़माना-

इस सूरः के नाज़िल होने के ज़माने में उ़ल्मा के दर्मियान इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है। 'अल् नासिख़' में इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि यह सूरः मक्का में नाज़िल हुई थी। सअ़ीद बिन जुबैर, ह़सन, इक्रिमा और अ़ता वग़ैरहुम की यही राय है और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, कल्बी और मक़ातिल की राय है कि यह सूरः मदीना में नाज़िल हुई थी। तीसरा क़ौल यह है कि यह सूरः मदनी है, सिर्फ़ आयत नं० (31) मक्का में नाज़िल हुई थी।

फ़ज़ीलत-

इस सूरः की फ़ज़ीलत में इब्ने अबी शैबा ने 'किताबुल् जनायज़' में ह़ज़रत जाबिर बिन ज़ैद (रज़ि०) से रिवायत की है कि जब वह किसी को आख़िरी वक़्त में देखते तो उस के पास सूरतुल् रअ़द पढ़ना बेहतर समझते थे और कहते कि यह सूरः मरने वाले की तक्लीफ़ को कम करती है और रुह़ क़ब्ज़ किये जाने को आसान बनाती है।

इस में दीने इस्लाम और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की नुबुव्वत की तस्दीक़ (पुष्टि) है और जैसा कि मक्की सूरतों का मिज़ाज है। इस में भी तौह़ीद व रिसालत और मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाने और ह़िसाब व किताब का बयान है, ताकि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश अपने कुफ़्र से तौबः करके मुसलमानों में दाख़िल हो जाएँ। इसी तरह़ नबी करीम (सल्ल०) और सह़ाब-ए-किराम को तसल्ली भी दी गई है ताकि उन की मज़बूती में कमी न आए।

आयत नं० 1 से 11 तक

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ۭ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ
عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
بِلِقَاۗءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ۭ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي
الَّيْلَ النَّهَارَ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ
صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَاۗءٍ وَّاحِدٍ ۣ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰي بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ
قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۭ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۠ وَاُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ
النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ۭ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ
لِّلنَّاسِ عَلٰي ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ اِنَّمَآ اَنْتَ
مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۭ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝ سَوَاۗءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝ لَهٗ
مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاِذَآ اَرَادَ
اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْۗءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۝

अनुवाद-

(1) अलिफ़्- लाम्- मीम्-रा, यह किताब की आयतें हैं और जो कुछ आप के 'रब' की ओर से आप पर नाज़िल किया गया है वह ह़क़ है, मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (2) अल्लाह 'वह' है जिसने आसमानों को बिना सुतून (सहारे) के ऊँचा खड़ा कर दिया, (जैसा) कि तुम उन्हें देखते हो, फिर अर्श (सिंहासन) पर क़ायम हुआ; और सूरज और चांद को काम में लगा दिया, हर एक निश्चित समय तक के लिए चले जा रहे हैं, 'वही' सारे कामों का इन्तिज़ाम करता है वह अपनी आयतें साफ़-साफ़ बयान करता है, ताकि तुम अपने 'रब' से मिलने का यक़ीन कर लो। (3) और वह 'वही' है 'जिसने' ज़मीन को फैलाया और उसमें पहाड़ और नदियाँ पैदा कीं, और उसमें हर तरह के फलों की दो-दो क़िस्में बनाईं। 'वही' रात से दिन को ढ़ांप देता है, इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं। (4) और ज़मीन में एक-दूसरे से मिले हुए भू-भाग और अंगूर के बाग़ और खेतियाँ और ऐसी खजूरें हैं जिनमें कुछ की बहुत सी शाखें होती हैं और कुछ की इतनी नहीं होतीं, सबको पानी एक ही दिया जाता है, फिर भी 'हम' पैदावार और स्वाद में किसी को किसी के मुक़ाबले में बढ़ा देते हैं; इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं। (5) और अगर तुम्हें तअ़ज्जुब ही करना है तो तअ़ज्जुब की बात तो उनका यह कहना है कि ''क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे'' तो क्या हम नए सिरे से पैदा किये जाएँगे? यही हैं जिन्होंने अपने 'रब' के साथ इन्कार की नीति अपनाई, और यही हैं जिनकी गर्दनों में तौंक़ डाले जाएंगे और यही दोज़ख़ वाले हैं कि उसी में हमेशा रहेंगे। (6) और ये लोग भलाई से पहले बुराई के लिए तुमसे जल्दी मचा

रहे हैं, हालाँकि उनसे पहले कितनी ही इबरतनाक (शिक्षाप्रद) मिसालें गुज़र चुकी हैं; और तुम्हारा 'रब' लोगों को उनके जुल्म के बावजूद माफ़ कर देता है, बेशक तुम्हारा 'रब' सज़ा देने में बड़ा सख़्त है। (7) और जिन्होंने इन्कार किया वे कहते हैं, "इस पर उसके 'रब' की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी?" आप तो केवल चेतावनी देने वाले हैं और हर क़ौम के लिए, हिदायत करने (रास्ता बतलाने) वाले होते चले आए हैं। (8) अल्लाह जानता है जिसको हर माँ अपने रहिम (गर्भाश्य) में रखती है और जो रहिम (गर्भाश्य) में कमी-बेशी होती है, और 'उसके' यहाँ हर एक चीज़ का निश्चित अन्दाज़ा है; (9) वह छिपी और ज़ाहिर तमाम बातों का जानने वाला, और बड़ाई में बहुत ऊँची शान वाला हैं। (10) तुम में से जो व्यक्ति चुपके से बात कहे और जो पुकार कर कहे, और जो कोई रात में छिपता हो, और जो दिन में चलता-फिरता हो ('उसके' लिए) सब बराबर हैं। (11) उसके आगे और पीछे (अल्लाह के) रक्षक होते हैं, जो अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं; अल्लाह किसी क़ौम की हालत को (जो नेअ़मत उसे मिली है) नहीं बदलता, जब तक कि वह अपनी हालत को नहीं बदलते; और जब अल्लाह किसी क़ौम पर बुराई का इरादा करता है तो फिर 'वह' उससे हटती नहीं, और फिर 'उसके' सिवा कोई मददगार नहीं रहता।

आयत नं० 1 से 11 तक की व्याख्या

1 الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ۗ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ①

الٓمّٓرٰ ۚ हुरूफ़ मुक़त्तआ़त के बारे में लिखा जा चुका है कि उन का मक़्सद सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला जानता है। 'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि कुर्आन करीम के जिस सूरः की भी शुरुआ़त हुरूफ़ मुक़्तआ़त से हुई है उस से इस तरफ़ इशारा करना है कि यह कुर्आन अल्लाह की किताब है, जिस की सच्चाई में ज़र्रह बराबर भी शुब्हा नहीं है, इसीलिए इस जैसा कलाम कोई इन्सान नहीं ला सकता है।

تِلْكَ से इशारा इस सूरः की आयतों की तरफ़ है और "كِتٰبِ" से मुराद कुर्आन करीम है और الَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ से भी मुराद कुर्आन करीम है और मक़्सूद नबी करीम (सल्ल०) को यह बताना है कि आप के रब की ओर से जो कुर्आने करीम नाज़िल हुआ है वह ह़क़ (सत्य) है और इस में जो कुछ भी बयान किया गया है वह सच है और इन्सानी ज़रुरियात व ह़ालात के मुताबिक़ है और इस के हुक्मों पर अ़मल कर के ही इन्सान अपनी दुनिया व आख़िरत संवार सकता है, लेकिन अक्सर लोग कुफ़्र व निफ़ाक़ की वजह से इस किताब पर ईमान नहीं लाते हैं।

2 اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ②

इस आयत में अल्लाह तआ़ला के कुद्रत की दलील पेश की गई है और यह बताना भी है कि जो अल्लाह आसमानों को बिना सुतूनों (खम्भों) के क़ायम रखने पर क़ादिर है और जिस ने सूरज-चाँद और दूसरे सय्यारों (नक्षत्रों) को अपने इ़ल्म व कुद्रत के मुताबिक़ जारी कर रखा है, उसी ने यह कुर्आन करीम अपने बन्दे और रसूल मुह़म्मद (सल्ल०) पर नाज़िल फ़रमाया है।

अल्लाह तआ़ला ने आसमानों को अपनी क़ुद्रत के ज़रिये बिना खम्भों के सहारे ज़मीन से ऊपर उठा रखा है, जिन के ऊँचाई की कल्पना नहीं की जा सकती। मुजाहिद और इक्रिमा कहते हैं कि सुतून (खम्भे) तो हैं, लेकिन हम उन्हें देख नहीं पाते हैं। अ़यास बिन मुआ़विया कहते हैं कि आसमान ज़मीन के ऊपर गुम्बद की तरह़ है, ज़मीन और उस की तमाम चीज़ों को अपने घेरे में लिये हुए है।

'इस्तवा अ़लल् अ़र्श' की तफ़्सीर सूरः अल् अअ़राफ़ में गुज़र चुकी है और इस बारे में नेक लोगों का अ़क़ीदा यह है कि जब अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम में अपने लिए 'इस्तवा अ़लल् अ़र्श' को साबित किया तो हमारे लिए ज़रूरी है कि उस पर ईमान रखा जाए, न उस की कोई कैफ़ियत बयान की जाए न किसी दूसरी चीज़ के साथ संज्ञा दी जाए और न इस को तोड़ मरोड़ कर क़ुर्आन के लफ़्ज़ को बेकार बना दिया जाए।

'इस्तवा' क्या है? इस के बारे में 'इमाम मालिक' का क़ौल अहले सुन्नत वल् जमाअ़त का अ़क़ीदा है।

الاِسْتِوٰی مَعْلُوْمٌ وَالْکَیْفُ مَجْهُوْلٌ وَالسُّوَالُ عَنْهُ بِدْعَةٌ وَالاِیْمَانُ بِهٖ وَاجِبٌ

'इस्तवा' का मअ़ना तो मालूम है मगर उस की कैफ़ियत ग़ैर वाज़ेह़ (नामालूम) है। इस के बारे में सवालात करना बिद्अ़त है (क्योंकि वह गुमराही का रास्ता खोलते हैं) मगर (जो कुछ मालूम है उस पर) ईमान लाना वाजिब है।

इस से यह पता चलता है कि सूरज और चाँद, ज़मीन, सय्यारे और सितारे रुके नहीं बल्कि ह़रकत में हैं। यह बातें उस वक़्त बयान की गई थीं जबकि इन्सान साइन्स के मैदान में इतना तरक़्क़ी याफ़्ता नहीं था कि यानी यह भी क़ुर्आनी मोअ़जिज़ा है।

अल्लाह तआ़ला ने चाँद की रौशनी मख़्लूक़ात (सृष्टि) के फ़ायदे और बन्दों की मस्लह़त के लिए कर रखा है। अल्लाह की मर्ज़ी से एक राई के दाने के बराबर भी इधर-उधर नहीं कर सकते हैं और अपनी इसी रफ़्तार पर अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ चलते रहेंगे यहाँ तक कि दुनिया फ़ना (नष्ट) हो जाएगी और क़ियामत बरपा हो जाएगी। वही अल्लाह आसमानों और ज़मीन के तमाम कामों को अपनी मर्ज़ी व मन्शा के मुताबिक़ करता है।

उस ने अपनी कमाले क़ुद्रत और रुबूबियत व ख़ालिक़ियत (सृष्टिकर्ता) की निशानियाँ क़ुर्आन करीम में तफ़्सील के साथ बयान कर दी हैं ताकि लोग इन निशानियों पर ग़ौर कर के इस बात पर ईमान ले आएँ कि वह अल्लाह लोगों को दोबारा ज़िन्दा करने और क़ियामत के मैदान में जमा कर के उन के आ़माल का ह़िसाब चुकाने पर क़ुद्रत रखता है। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने इस आयत के आख़िर में फ़रमाया कि मुम्किन है तुम इन निशानियों में ग़ौर व फ़िक्र के बाद अपने रब की मुलाक़ात का यक़ीन कर लो।

❸ وَهُوَ الَّذِیْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِیْهَا رَوَاسِیَ وَاَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِیْهَا زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ یُغْشِی الَّیْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने इस में ज़मीन और उस पर पाई जाने वाली चीज़ों के ज़रिये दलील और सुबूत

दिया है। अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को लम्बाई व चौड़ाई में इतना फैला दिया कि आदमी की निगाह आख़िरी ह़द को नहीं पा सकती कि इन्सानों के क़दम इस पर ठहर सकें और प्राणी आसानी से इस पर चल फिर सकें और ज़मीन पर बड़े-बड़े पहाड़ क़ायम कर दिये ताकि ज़मीन अपनी जगह जमी रहे और उस पर नहरें जारी कर दीं जिन में मख़्लूक़ के लिए बड़े फ़ायदे हैं और जितने फल ज़मीन पर पाये जाते हैं अल्लाह ने उन सब की दो-दो क़िस्में बनाई हैं। रंग या मज़ा के एतिबार से, कैफ़ियत के एतिबार से हर क़िस्म में अलग-अलग फ़ायदे होते हैं। इस तरह़ हर क़िस्म एक नेअ़मत होती है।

अल्लाह तआ़ला दिन के बाद रात लाता है और दिन की रौशनी और सफ़ेदी के बाद रात की घटाटोप तारीकी (अंधेरा) आ जाती है और जब रात लम्बी होती है तो सर्दी का ज़माना आ जाता है और जब दिन लम्बा होता है तो गर्मी का ज़माना आ जाता है। दिन और रात दोनों में से एक के सन्तुलित होने से मौसम बदलते रहते हैं।

अल्लाह की निशानियाँ-

ज़मीन में अल्लाह तआ़ला की बेशुमार निशानियाँ हैं। ज़मीन अपनी गर्दिश (चक्कर) 24 घंटों में पूरी करती है। अगर यह चक्कर 30 घंटों में पूरा करती तो ज़मीन पर इतनी तेज़ आंधियाँ चलतीं कि ज़मीन पर टिकना मुश्किल होता और अगर यह चक्कर 20 घंटों में पूरा करती तो नबातात को ज़िन्दगी पूरी करने का मौक़ा न मिलता। चौदह सौ साल पहले जब आप (सल्ल०) पर क़ुर्आन नाज़िल हुआ था, उस वक़्त नबातात के उ़लूम (Botany) में इतनी तरक़्क़ी नहीं हुई थी कि दुनिया में किसी कोने में भी इस तरह़ की कोई मालूमात मौजूद होतीं। आज साइंसदाँ अपने तजुर्बे की बिना पर यक़ीन रखते हैं कि तमाम नबातात में नर और मादा होते हैं और यह फल ऐसे पौधों से ह़ासिल होते हैं जिन में जिन्सी अ़मल (sexual characteristics) पाया जाता है।

बेशक ज़मीन पर पाई जाने वाली चीज़ों में ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिए खुली निशानियाँ हैं कि यक़ीनन उन का पैदा करने वाला अल्लाह की ज़ात है, जो साह़िबे क़ुद्रत और साह़िबे ह़िक्मत है जो अपने बन्दों की ओर से मुह़ब्बत व बन्दगी का ह़क़्दार है।

आयते करीमा में इस तरफ़ भी इशारा है कि जिस ज़ाते वाह़िद ने अपनी मख़्लूक़ के लिए अनगिनत नेअ़मतें पैदा की हैं उस की एक अ़ज़ीम नेअ़मत यह भी है कि उस ने अपने बन्दों की दुनिया व आख़िरत की कामियाबी के लिए अम्बिया भेजे और किताबें नाज़िल कीं।

4 وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ ۫ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝

ज़मीन पर पाई जाने वाली और बहुत सी निशानियों का ज़िक्र है जो अल्लाह की क़ुद्रत व ह़िक्मत पर दलालत करती हैं। ज़मीन के ह़िस्से एक दूसरे से मिले होते हैं, लेकिन उन की तबीअ़तों में इख़्तिलाफ़ होता है, कोई ह़िस्सा ज़रख़ेज़ (उपजाऊ) होता है तो कोई सख़्त (बन्जर) होता है तो कोई नर्म।

मतलब यह है कि ज़मीन के टुकड़े एक दूसरे के क़रीब होते हैं, मिट्टी एक होती है, पानी एक होता है, लेकिन उन में पैदा होने वाले दाने और फल अलग-अलग होते हैं, कोई मीठा होता है तो कोई खट्टा, कोई उम्दह और लज़ीज़ होता है तो कोई बद्मज़ा और बाज़ ज़मीनों में एक फल होता है, दूसरा नहीं होता।

यह तमाम निशानियाँ अल्लाह तआ़ला के अकेला होने और उस की क़ुद्रत पर दलालत करती हैं जो अ़क़्ल वाला भी इन में ग़ौर व फ़िक्र करेगा वह ईमान ले आएगा कि जो ज़ात वाहिद इन सब पर क़ादिर है वह यक़ीनन दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ुद्रत रखती है बल्कि दोबारा पैदा करना उस के लिए ज़्यादा आसान है।

5 وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि अगर आप को इस बात पर तअ़ज्जुब है कि कुफ़्फ़ारे मक्का आप को झुठलाते हैं, ह़ालांकि बचपन से वह आपको सच्चा व अमीन के नाम से पुकारते रहे तो इस से भी तअ़ज्जुब वाली बात आप और आप के सह़ाबा के लिए यह होनी चाहिए कि वह मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करते हैं। इसलिए कि जो इन अ़ज़ीम क़ुद्रतों का मालिक है जिन का बयान ऊपर हो चुका है, उस के लिए इन्सान को दोबारा पैदा करना बहुत ही आसान है। इसलिए मरने के बाद मौत का इन्कार बड़ी अ़जीब सी बात है। क़ियामत के दिन इन काफ़िरों की गर्दन में रस्सी बाँध कर जहन्नम की तरफ़ घसीटा जाएगा और हमेशा के लिए यह उस में डाल दिये जाएँगे।

6 وَ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

नबी करीम (सल्ल०) और क़ुर्आन करीम को झुठलाने वाले आप का मज़ाक़ उड़ाते थे और कहते थे कि अगर तुम सच्चे हो तो जिस अ़ज़ाब की बात करते हो वह आ क्यों नहीं जाता? यानी बजाय इस के कि वह अल्लाह से सलामती माँगते अ़ज़ाब की माँग करते हैं, ह़ालांकि उन से पहले ऐसी क़ौमें गुज़र चुकी हैं जिन्होंने रसूलों को झुठलाया तो अल्लाह ने उन पर अ़ज़ाब नाज़िल कर दिया, फिर वह लोग उन के अन्जाम से इ़बरत क्यों नहीं ह़ासिल करते और डरते क्यों नहीं कि कहीं उन्हें भी अ़ज़ाबे इलाही अपनी गिरफ़्त में न ले ले।

अल्लाह तआ़ला का वादा है कि जो शख़्स गुनाह का काम करने के बाद अल्लाह से तौबः करे और पश्चाताप करे तो वह उसे माफ़ कर देगा। बाज़ लोगों ने यहाँ 'मग़्फ़िरत' से मुराद क़ियामत के दिन तक सज़ा की ताख़ीर लिया है और "النَّاس" से वह कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन मुराद लिए हैं जो अ़ज़ाब की जल्दी करते थे और कहते थे कि यह आयत का आख़िरी ह़िस्सा وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ इसी की ताईद करता है यानी "क़ियामत के दिन आप का रब अगर चाहेगा तो उन्हें बड़ी सख़्त सज़ा देगा।"

7 وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝

कुफ़्फ़ारे मक्का की आँखों पर कुफ़्र व हठधर्मी की ऐसी पट्टी बँधी हुई थी कि अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद और उस की क़ुद्रत व ख़ालिक़ियत की तमाम निशानियाँ देखने के बावजूद उन में कोई तब्दीली नहीं आती थी और उन निशानियों से उन्हें कोई ईमानी फ़ायदा नहीं पहुँचता था और कहते थे अगर मुह़म्मद अल्लाह के पैग़म्बर है तो मूसा और ईसा की तरह़ निशानियाँ क्यों नहीं पेश करते या हम जिन निशानियों की माँग करते हैं उन्हें क्यों नहीं ले आते?

मुश्रिकीन कभी कहते कि ऐ मुह़म्मद! अगर तुम अल्लाह के नबी हो तो 'सफ़ा' पहाड़ी को सोना बना दो या पहाड़ों को हटा कर उनकी जगह नहरें जारी कर दो। अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया कि आप का काम सिर्फ़ पैग़ाम पहुँचाना है, काफ़िरों की मर्ज़ी के मुताबिक़ निशानियाँ पेश करना नहीं और इस काम पर आप (सल्ल०) ने अपनी पूरी ज़िन्दगी लगा दी और कोई कसर नहीं छोड़ी। अल्लाह तआ़ला आप को उम्मते इस्लामिया की तरफ़ से जज़ा-ए-ख़ैर अ़ता फ़रमाए।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उस ने हर क़ौम की रहनुमाई के लिए एक नबी भेजा और उन अम्बिया को ह़ालात और ज़माने के मुताबिक़ बहुत सी निशानियाँ दीं जो उन के नबी होने पर दलालत करती थीं। नबी करीम (सल्ल०) को क़ुर्आन जैसा मोअ़जिज़ह (चमत्कार) अ़ता किया, इसलिए कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का यह कहना कि मूसा और ईसा जैसी निशानियाँ लाएँ या उन की मर्ज़ी की निशानियाँ पेश करें, कुफ़्र व गुमराही पर उन की हठधर्मी थी। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस की तफ़्सीर यह बयान की है कि "आप का काम तो सिर्फ़ डराना है, क़ौमों को हिदायत देना तो हमारा काम है, हम जिसे चाहते हैं हिदायत देते हैं"।

8-9 اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝

मुश्रिकीने मक्का की ख़्वाहिश के मुताबिक़ इसलिए निशानी नहीं भेजी गई कि तमाम कामों की ह़िक्मतों को सिर्फ़ अल्लाह जानता है। उसी के इ़ल्म में है कि क्या चीज़ दुनिया में होनी चाहिए? वह काफ़िरों के जाहिलाना ख़यालात का पाबन्द नहीं है। इसी को बयान करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि सिर्फ़ वह जानता है कि हर मादा के पेट में क्या है। मुज़क्कर (पुलिंग) है या मुवन्नस (स्त्रीलिंग) ख़ूबसूरत है या बद्सूरत, नेकबख़्त है या बद्बख़्त और इस में किसी अंग की कमी है या ज़्यादती या बच्चा कब पैदा होगा पहले या बाद में।

इस के बाद फ़रमाया कि उस ने हर चीज़ का एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया है, जिस से वह निकल नहीं सकता है, वह हर ग़ायब व ह़ाज़िर और हर एक की ख़बर रखता है, हर चीज़ उस के अधीन है और वह अपनी क़ुद्रत व बड़ाई के ज़रिये हर चीज़ पर ग़ालिब (प्रभावी) है।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "ग़ैब की पाँच कुन्जियाँ हैं जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। एक यह कि कल क्या होगा? दूसरे रह़म में जो कुछ घटाता (बढ़ाता) है उसे अल्लाह ही जानता है। तीसरे बारिश कब होगी? चौथे वह किस जगह मरेगा?

और पाँचवें क़ियामत कब होगी?" (बुख़ारी)

10 سَوَآءٌ مِّنكُم مَّنْ أَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَن جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝

उस के लिए ज़ाहिर व छुपे सब बराबर हैं और चाहे कोई रात के अंधेरे में छिपा कर कोई काम करे या दिन की रौशनी में लोगों को दिखाकर सब कुछ उसी के इ़ल्म में है।

11 لَهُۥ مُعَقِّبَٰتٌ مِّنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِۦ يَحْفَظُونَهُۥ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا۟ مَا بِأَنفُسِهِمْ ۗ وَإِذَآ أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُۥ ۚ وَمَا لَهُم مِّن دُونِهِۦ مِن وَالٍ ۝

अल्लाह तआ़ला ने हर इन्सान के साथ कुछ फ़रिश्ते लगा रखे हैं जो हर तरफ़ से उस को घेरे हुए हैं और उस के हुक्म के मुताबिक़ उस की एक-एक बात व अ़मल को लिखते हैं।

'बुख़ारी व मुस्लिम' ने ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह के फ़रिश्ते तुम्हारे साथ होते हैं कुछ फ़रिश्ते रात में होते हैं और कुछ दिन में और सुबह़ व अ़स्र की नमाज़ में जमा होते हैं, रात के फ़रिश्ते जब ऊपर जाते हैं तो अल्लाह उन से पूछता है कि तुम ने मेरे बन्दे को किस ह़ाल में पाया (ह़ालांकि वह ख़ूब जानता है) तो फ़रिश्ते कहते हैं कि हम जब उन के पास पहुँचे तो वह नमाज़ पढ़ रहे थे और जब उन से रुख़सत हुए तो भी नमाज़ पढ़ रहे थे।" (बुख़ारी)

अल्लाह तआ़ला किसी क़ौम से अपनी नेअ़मतों को उस वक़्त तक नहीं छीनता जब तक वह अपनी ह़ालत बदल नहीं लेती यानी ख़ैर व सुधार की राह से दूर हो जाती है, गुनाहों में फंस जाती है और दूसरों के गुनाहों की वजह से अ़ज़ाब व मुसीबत में मुब्तिला हो जाता है।

जैसा कि 'बुख़ारी' ने ह़ज़रत ज़ैनब बिन्त जह़श रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत की है कि "एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा कि क्या हमारे दर्मियान नेक लोगों के होने के बावजूद हम हलाक कर दिये जाएँगे? तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हाँ, जब गुनाह की कसरत हो जाए"। (बुख़ारी)

आयत नं० 12 से 26 तक

هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّیُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿۱۲﴾ وَیُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓىِٕكَةُ مِنْ خِیْفَتِهٖ ۚ وَ یُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ
فَیُصِیْبُ بِهَا مَنْ یَّشَآءُ وَهُمْ یُجَادِلُوْنَ فِی اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِیْدُ الْمِحَالِ ﴿۱۳﴾ لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا یَسْتَجِیْبُوْنَ
لَهُمْ بِشَیْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّیْهِ اِلَى الْمَآءِ لِیَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِیْنَ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾ وَلِلّٰهِ یَسْجُدُ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ ﴿۱۵﴾ सज्दः قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ
اَوْلِیَآءَ لَا یَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ یَسْتَوِی الْاَعْمٰى وَالْبَصِیْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِی الظُّلُمٰتُ وَ النُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ
خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَیْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِیَةٌۢ بِقَدَرِهَا
فَاحْتَمَلَ السَّیْلُ زَبَدًا رَّابِیًا ؕ وَمِمَّا یُوْقِدُوْنَ عَلَیْهِ فِی النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْیَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ یَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ
وَالْبَاطِلَ ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَیَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا یَنْفَعُ النَّاسَ فَیَمْكُثُ فِی الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ یَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ﴿۱۷﴾ لِلَّذِیْنَ اسْتَجَابُوْا
لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِیْنَ لَمْ یَسْتَجِیْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ
وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۸﴾ اَفَمَنْ یَّعْلَمُ اَنَّمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا یَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۹﴾
الَّذِیْنَ یُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا یَنْقُضُوْنَ الْمِیْثَاقَ ﴿۲۰﴾ وَالَّذِیْنَ یَصِلُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَیَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَیَخَافُوْنَ سُوْٓءَ
الْحِسَابِ ﴿۲۱﴾ وَالَّذِیْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِیَةً وَّیَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّیِّئَةَ
بِالْحَسَنَةِ السَّیِّئَةَ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۲﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ یَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآىِٕهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّیّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓىِٕكَةُ یَدْخُلُوْنَ
عَلَیْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿۲۳﴾ سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ ؕ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۴﴾ وَالَّذِیْنَ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِیْثَاقِهٖ وَیَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ
بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَیُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿۲۵﴾ اَللّٰهُ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ وَیَقْدِرُ ۚ وَفَرِحُوْا بِالْحَیٰوةِ
الدُّنْیَا ؕ وَمَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا فِی الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿۲۶﴾

अनुवाद-

(12) 'वही' तो है जो तुम को डराने और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखलाता है और भारी बादलों को उठाता है। (13) और (गरजने वाला) बादल अल्लाह की तअ़रीफ़ के साथ पाकी बयान करता है और फ़रिश्ते भी 'उसके' डर से, और 'वही' कड़कती बिजलियाँ भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा देता है, और वे अल्लाह के विषय में झगड़ रहे होते हैं, और 'उसकी' तद्बीर (उपाय) बड़ी सख़्त है। (14) 'उसी' के लिए सच्ची पुकार है; उसके अ़लावा जिनको ये पुकारते हैं, वे उनकी पुकार का कुछ भी जवाब नहीं देते- बस यह तो ऐसा ही है, जैसे कोई अपने दोनों हाथ पानी की ओर इसलिए फैलाए कि वह उसके मुँह में पहुँच जाए, हालाँकि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं- कुफ़्र करने वालों की पुकार तो बस भटकने ही के लिए होती है। (15) और अल्लाह ही को सज्दः करते हैं, (जो) आसमानों में हैं और (जो) ज़मीन में हैं ख़ुशी से या मजबूरी से, और उनके साए (परछाइयाँ) भी सुबह़ और शाम (सज्दः करते हैं)। (16) कह दीजिए "आसमानों और ज़मीन का 'रब' कौन है"? कह दीजिए, "अल्लाह" (फिर) कह दीजिए, "तो क्या तुमने उससे हटकर दूसरों को अपना संरक्षक बना रखा है, जिन्हें ख़ुद न अधिकार है अपने किसी लाभ का और न किसी नुक़्सान

का?'' कह दीजिए, ''क्या अन्धा और आँखों वाला बराबर होते हैं? या अंधेरा और उजाला बराबर हो सकते हैं?'' या उन लोगों ने जिनको अल्लाह का साझीदार ठहराया है, उन्होंने भी कुछ पैदा किया है, जैसा कि उस (अल्लाह) ने पैदा किया है, जिसकी वजह से सृष्टि की रचना में भ्रम पैदा हो गया है"। कह दीजिए, ''हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह है, और 'वह' अकेला ज़बर्दस्त है" (17) 'उसने' आसमान से पानी उतारा तो नदी-नाले अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार बह निकले, फिर पानी के बहाव ने उभरे हुए झाग को उठा लिया और उसमें से भी, जिसे ज़ेवर और सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं, वैसा ही झाग उठता है- इस तरह अल्लाह ह़क़ और नाह़क़ की मिसाल बयान करता है- फिर जो झाग है वह तो सूखकर नष्ट हो जाता है और जो लोगों को लाभ पहुँचाने वाला होता है, वह ज़मीन में बाक़ी रहता है; इस तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है। (18) जिन्होंने अपने 'रब' की बात को क़ुबूल कर लिया, उनके लिए भलाई है; और जिन्होंने 'उसका' हुक्म न माना, अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो धरती में है, बल्कि उसके साथ उतना और भी हो तो वे सब दे डालें, (अपने छुट्कारे के) बदले में, वही हैं जिनका बुरा हिसाब होगा, और उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बुरी जगह है। (19) भला! जो व्यक्ति जानता हो कि जो कुछ आप पर उतरा है आप के रब की ओर से वह ह़क़ है, क्या ऐसा व्यक्ति उस जैसा हो सकता है जो अन्धा है? समझते तो वही हैं जिनको बुद्धि है (20) जो अल्लाह के साथ किये हुए अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करते हैं और अपने वचन को तोड़ते नहीं; (21) और जो ऐसे हैं कि जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है, उसे जोड़ते हैं और अपने रब से डरते रहते हैं और बुरे हिसाब का उन्हें डर लगा रहता है। (22) और जिन लोगों ने अपने रब की खुशी ह़ासिल करने के लिए सब्र से काम लिया, और नमाज़ें क़ायम रखीं, और 'हमारे' दिये हुए में से खुले और छिपे खर्च किया, और बुराई के बदले में भलाई की; यही लोग हैं जिनका आख़िरत में अच्छा बदला है (23) रहने के बाग़ हैं जिनमें वे दाख़िल होंगे, और उनके बाप-दादा, और उनकी पत्नियाँ और औलाद में से जो नेक होंगे वे भी, और हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास आएँगे। (24) (फ़रिश्ते कहेंगे) तुम पर सलामती हो इसके बदले में कि तुमने सब्र किया, और आख़िरत का घर खूब (घर) है। (25) और जो लोग अल्लाह के साथ पक्का अ़हद करने के बाद तोड़ते हैं, और अल्लाह ने जिनको जोड़े रहने का हुक्म दिया है उसे तोड़ते हैं, और ज़मीन पर फ़साद फैलाते हैं, यही लोग हैं जिन पर लानत है और उनके लिए (आख़िरत में) बहुत बुरा घर है। (26) अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है; और जिसकी चाहता है कम कर देता है और वे दुनिया की ज़िन्दगी पर रीझते हैं, हालाँकि दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं सिवाय थोड़े से लाभ के।

आयत नं० 12 से 26 तक की व्याख्या

12-13 هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ طَمَعًا وَّ یُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۚ وَ یُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَ الْمَلٰٓىِٕكَةُ مِنْ خِیْفَتِهٖ ۚ وَ یُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَیُصِیْبُ بِهَا مَنْ یَّشَآءُ وَ هُمْ یُجَادِلُوْنَ فِی اللّٰهِ ۚ وَ هُوَ شَدِیْدُ الْمِحَالِ ۚ

अल्लाह तआ़ला ने अपनी क़ुद्रत और रोअ़ब को ज़ाहिर करने के लिए बिजली, बादल की गरज और आसमान से उतरने वाली आग की तफ़्सीलात को बयान किया है। फ़रमाया, वह अल्लाह की ज़ात

है जो आसमान में बिजली की चमक पैदा करता है तो कभी-कभी आदमी को साअ़िक़ा (यानी आग वाली बिजली) का ख़ौफ़ होता है और कभी उसे उम्मीद होती है कि बारिश होगी।

वही बारिश से भरे बादल को पैदा करता है और फ़रमाया कि बिजली की कड़क उस की तस्बीह़ बयान करती है और यह उस की क़ुद्रत से कोई अलग बात नहीं है। बाज़ के नज़्दीक इस का मतलब यह है कि जिन के कान में बिजली की कड़क की आवाज़ जाती है वह 'सुब्ह़ानल्लाह वल्ह़म्दुलिल्लाह' कहते हैं और फ़रिश्ते अल्लाह के ख़ौफ़ से तस्बीह़ पढ़ते रहते हैं और अल्लाह तआ़ला साअ़िक़ा (आग वाली बिजली) भेजकर जिसे चाहता है हलाक कर देता है।

इस के बाद फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार (जिन की ज़िल्लत व ह़िक़ारत को ऊपर बयान किया जा चुका) अल्लाह के बारे में रसूलुल्लाह (सल्ल०) से झगड़ते हैं। मरने के बाद दोबारा उठाए जाने का इन्कार करते हैं, हठधर्मी की वजह से अ़ज़ाब आ जाने की जल्दी मचाते हैं, क़ुर्आन करीम और रसूल का मज़ाक़ उड़ाते हैं और अपनी मनमानी निशानियों की माँग करते हैं और इस बात से ग़ाफ़िल (निश्चित) होते हैं कि अल्लाह की तद्बीर और उस की गिरफ़्त बहुत ही सख़्त होती है, जब उस की गिरफ़्त में आ जाएँगे तो कोई ताक़त उन्हें निजात नहीं दिला सकेगी।

14 لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝

दुआ़ व अ़िबादात की तमाम क़िस्में अल्लाह के लिए ख़ास हैं, इसलिए कि परेशान ह़ाल की पुकार को वही सुनता है, वही उन की तक्लीफ़ों को दूर करता है, इसलिए सिर्फ़ उसी की अ़िबादत की जानी चाहिए उसी के सामने गिड़गिड़ाना चाहिए और जो लोग बुतों की अ़िबादत करते हैं, उन की मिसाल उस आदमी की सी है जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ बढ़ाए ताकि उस के मुँह तक पहुँच जाए, लेकिन पानी उस की प्यास को महसूस नहीं करता और न ही देख पाता है कि कोई अपने हाथ उस के सामने फैलाए हुए है इसलिए न उस की फ़रियाद सुन पाता है और न उस के मुँह तक पहुँचता है। मूर्तियों का ह़ाल भी ऐसा ही है, वह अपनी अ़िबादत करने वालों की थोड़ी सी भी माँग पूरी नहीं कर पाती हैं। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि काफ़िरों की अ़िबादत और मूर्तियों से उन की फ़रियाद उन के किसी काम नहीं आएगी बल्कि वबाले जान बन जाएगी।

15 وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۝ [सज्दः]

आसमानों और ज़मीन में जितनी चीज़ें हैं सब अल्लाह के इरादे व मर्ज़ी और उस के हुक्म के अधीन हैं, कोई भी उस के हुक्म से एक ज़र्रह बराबर नाफ़रमानी नहीं कर सकता। जो काफ़िर अल्लाह को सज्दः नहीं करते वह भी उस के इरादा के मुताबिक़ कभी सेह़तमन्द होते हैं तो कभी बीमार, उन में कोई मालदार होता है तो कोई फ़क़ीर, उन्हें भी एक निश्चित वक़्त तक ज़िन्दा रहने के बाद मौत आ जाती है।

अहले ईमान अल्लाह के सामने सज्दः करते हैं और काफ़िर अल्लाह के हुक्मों को क़ुबूल करने पर

मजबूर हैं। एक दूसरी राय यह है कि यहाँ सज्दः से मुराद ह़क़ीक़ी सज्दः है। यानी अल्लाह की बड़ाई के लिए ज़मीन पर पेशानी टेकना तो अहले ईमान इन्सान व जिन्न और फ़रिश्ते सुबह़ व शाम यानी हमेशा अल्लाह को सज्दः करते रहते हैं और अहले कुफ़्र मजबूरी में अल्लाह ही को सज्दः करते हैं। जैसा कि अल्लाह ने सूरः अ़न्कबूत आयत नं० (65) में फ़रमाया है-

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۖ

कि "जब नाव पर सवार होते हैं तो अल्लाह को दिल से साथ पुकारते हैं।" इसी तरह़ इन्सान और दूसरी तमाम मख़्लूक़ात के साये भी अल्लाह को सज्दः करते हैं। जब कोई अल्लाह को सज्दः करता है तो उस का साया भी उस के साथ अल्लाह के सामने झुकता है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि हो सकता है कि साया भी ह़क़ीक़ी मानों में अल्लाह को सज्दः करता हो जैसा कि पहाड़ अल्लाह की तस्बीह़ में मश्ग़ूल होता है। अल्लाह तआ़ला ने सूरः नह़ल आयत नं० (48) में फ़रमाया है:-

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ۝

यानी "क्या इन्होंने देखा नहीं कि अल्लाह ने जितनी चीज़ें पैदा की हैं उन के साये दाएँ और बाएँ से अल्लाह को सज्दः करते हुए ढलते हैं और वह अल्लाह के लिए इन्किसारी अपनाये होते हैं?

16 قُلْ مَن رَّبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُم مِّن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ ۚ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۚ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

कुफ़्फ़ारे मक्का का यह अ़क़ीदा था कि आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला अल्लाह है। इसी ह़क़ीक़त और उन के एतिराफ़ को यहाँ बयान करने के बाद उन से कहा गया है कि जब तुम जानते हो कि अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन का ख़ालिक़ व मालिक है तो फिर उस के अ़लावा दूसरों को अपनी ज़रूरत पूरी करने वाला (और कष्ट को दूर करने वाला) क्यों मानते हो? जो ख़ुद अपनी ज़ात को न कोई नफ़ा पहुँचा सकते हैं और न किसी नुक़्सान को ख़त्म कर सकते हैं, वह तुम्हारे कष्ट को दूर करने वाला कैसे बन जाएँगे?

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने एक मिसाल के ज़रिये मुसलमान और काफ़िर के दर्मियान फ़र्क़ बताया है कि काफ़िर अपने दीन के मामले में अन्धे की तरह़ हैं और मुसलमान आँख वाले की तरह़। काफ़िर अपने कुफ़्र की तारीकी में भटकता रहता है और मोमिन ईमान व तौह़ीद की रौशनी लिए हुए मन्ज़िल की तरफ़ बढ़ता रहता है। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने आगे फ़रमाया कि कुफ़्र की तारीकी और ईमान का नूर दोनों बराबर नहीं हो सकते हैं।

कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन की कम अ़क़्ली और नादानी को उजागर करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जिन बातिल मअ़बूदों को वह अल्लाह का शरीक ठहराते हैं, क्या उन्होंने अल्लाह की तरह़

आसमान, ज़मीन, शम्स (चाँद) व क़मर (सूरज) पहाड़, समुद्र, जिन्नात व इन्सान को पैदा किया है? जिन्हें देखकर मुश्रिकों को शुब्हा हो गया कि यह भी मअ़बूद हैं। ऐसी कोई बात नहीं है बल्कि इन्होंने अपनी जिहालत और नादानी की वजह से उन चीज़ों को अपना मअ़बूद बना रखा है। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि ह़क़ बात बयान कर दें और कह दें कि हर चीज़ का ख़ालिक़ अल्लाह है, इसलिए अ़िबादत का भी ह़क़्दार सिर्फ़ उसी की ज़ात है।

17 اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ۞

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने ह़क़ और बातिल के दर्मियान एक नई मिसाल के ज़रिये फ़र्क़ बयान किया है। ह़क़ और अहले ह़क़ की मिसाल उस बारिश की सी है जिसे अल्लाह आसमान से बरसाता है और जिस से वादियाँ भर जाती हैं लोग उस से ख़ूब फ़ायदे उठाते हैं, ख़ुद पीते हैं जानवरों को पिलाते हैं, अपनी ज़मीनों को सैराब करते हैं और कुछ पानी ज़मीन के ऊपर ठहरा रहता है और कुछ अन्दर पहुँच कर चश्मों और कुंओं की शक्ल अख़्तियार कर लेते हैं, ह़क़ और अहले ह़क़ की मिसाल उस धातु की तरह़ भी है जिस से लोग ज़ेवरात, बर्तन और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की चीज़ें बनाते हैं।

यह सब एक निश्चित वक़्त तक बाक़ी रहती हैं और लोग उन से फ़ायदा उठाते रहते हैं और बातिल की मिसाल झाग और जंग की सी है जो किसी काम का नहीं होता और थोड़ी देर के लिए ऊपर उठने के बाद जल्द ही अपना वजूद खो बैठता है। इन दोनों मिसालों का ख़ुलासा यह है कि ह़क़ को ठहराव ह़ासिल होता है और बातिल नष्ट होने वाला होता जो जल्द ही ख़त्म हो जाता है।

18 لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۞

इस में अहले ह़क़ और अहले बातिल का अन्जाम बयान किया गया है कि जिन अहले ह़क़ ने अल्लाह की दअ़वत को क़ुबूल करते हुए उसे एक जाना, अम्बिया-ए-किराम की तस्दीक़ की और उस की नाज़िल की हुई शरीअ़त पर अ़मल किया, उन की मन्ज़िल जन्नत होगी और जिन लोगों ने उस की दअ़वत को क़ुबूल नहीं किया, क़ियामत के दिन वह किसी तरह़ भी बच न सकेंगे और जहन्नम में ढ़केल दिये जाएँगे।

ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन जिस शख़्स से ह़िसाब लिया गया वह तबाह हुआ। मैंने कहा या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला तो फ़रमाते हैं कि जिस को आ़माल नामा उस के दाएँ हाथ में दिया गया उस से जल्द ही आसान ह़िसाब लिया जाएगा। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "यह केवल पेशी होगी उन्हें उन के आ़माल बतला दिये जाएँगे और जिस के ह़िसाब की तह़क़ीक़ शुरु हो गई समझ लो कि वह मारा गया"। **(बुख़ारी)**

19 اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۙ﴿۱۹﴾

काफ़िर और मोमिन की एक मिसाल बयान की गई है कि जो शख़्स यक़ीन रखता हो कि क़ुर्आन अल्लाह की तरफ़ से नबी करीम (सल्ल०) पर नाज़िल की हुई किताब है, वह उस के समान नहीं हो सकता जो इस ईमान से महरूम है बल्कि वह अन्धा है, ख़ैर (भलाई) व शर (बुराई) में तमीज़ नहीं कर पाता है। दोनों के दर्मियान ऐसा ही फ़र्क़ है जैसा पानी और झाग और अच्छी धातुएँ और ज़ंग लगी हुई धातुओं के दर्मियान।

20-24 الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ۙ﴿۲۰﴾ وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ﴿۲۱﴾ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۲﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿۲۳﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۴﴾

यहाँ ईमान वालों की सिफ़ात (गुण) और उन का अन्जाम बयान किया जा रहा है कि:-

1- ईमान वाले अल्लाह और बन्दों के साथ किये गये अ़हद (प्रतिज्ञा) और पैमान के पाबन्द होते हैं।

2- अल्लाह और बन्दों के उन तमाम हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त करते हैं जिन का अल्लाह ने हुक्म दिया है। तमाम अम्बिया-ए-किराम और आसमानी किताबों पर ईमान रखते हैं, सिलह़ रह़मी करते हैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) और मुसलमानों के साथ ईमान का जो रिश्ता क़ायम है उस का भी लिह़ाज़ रखते हैं। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है: **इन्नमल मूमिनूना इख़्वह** कि "मुसलमान आपस में भाई भाई हैं" और अपने दोस्तों, ख़ादिमों, पड़ोसियों और सफ़र के साथियों की दिलजोई करते हैं।

3- अल्लाह का ख़ौफ़ उन पर ग़ालिब रहता है, इसीलिए अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को करते हैं और ह़राम चीज़ों से बचते हैं।

4- क़ियामत के दिन के ह़िसाब से डरते हैं, इसलिए अपने नफ़्स का मुह़ासिबा (ह़िसाब) करते हैं।

5- अल्लाह के दीन पर अ़मल करने में जो तक्लीफ़ पहुँचती है उस पर और परेशानियों में सब्र करते हैं।

6- पाँचो वक़्त की नमाज़ अपने वक़्त पर ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ, सुन्नत के मुताबिक़ अदा करते हैं।

7- अल्लाह की दी हुई रोज़ी में से उस के रास्ते में छुपे तौर पर और दिखला कर ख़र्च करते हैं।

8- बुराई का जवाब भलाई से देते हैं, गुनाह के बाद नेकी करते हैं, कोई ज़ुल्म करता है तो माफ़ कर देते हैं जो रिश्तों को तोड़ता है उस से सम्बन्ध बनाते हैं। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि आख़िरत में ऐसे ही लोगों का अन्जाम अच्छा होगा और जन्नत उन की मन्ज़िल होगी और उन के साथ उन के बाप-दादे बीवियों और औलाद में से वह सब भी जन्नत में दाख़िल होंगे जो दुनिया में अल्लाह के हुक्मों की राह अख़्तियार करेंगे।

मुजाहिद ने यहाँ **सलाह़** से मुराद ईमान लिया है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा कहते

हैं कि इन रिश्तेदारों में भी जो लोग मोमिन होंगे, अल्लाह तआ़ला मोमिनीन सालिह़ीन का इक्राम करते हुए उन्हें भी जन्नत में दाख़िल कर देगा।

जब जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे तो फ़रिश्ते उन के पास आकर सलाम करेंगे और कहेंगे कि यह हमेशा की सलामती की जगह अल्लाह ने तुम्हें इस बदले में दी है कि तुम दुनिया में सब्र व इस्तिक़ामत के साथ उन के दीन पर अ़मल करते रहे।

ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो यह चाहे कि उस के रिज़्क़ में उस्अ़त (बढ़ौतरी) हो और उस की उ़म्र लम्बी हो उसे चाहिए कि वह सिलह रह़मी करे।" (बुख़ारी)

25 وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ۝

अब ग़ैर अहले ईमान की सिफ़ात और उन का अन्जाम बयान किया जा रहा है कि जो लोग अल्लाह से किये गये वादे का ख़याल नहीं रखते और जिन कामों का उन्हें हुक्म दिया गया है उन पर अ़मल नहीं करते और जिन तअ़ल्लुक़ात, रिश्तों और नज़्दीकी लोगों को जोड़े रखने की उन्हें नसीह़त की गई है उन का ख़याल नहीं रखते और कुफ़्र व गुनाह के कामों के ज़रिये ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, ऐसे लोग अल्लाह की लअ़नत के ह़क़्दार बन जाते हैं और क़ियामत के दिन उन का ठिकाना जहन्नम होगा।

26 اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۗ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ۝

अल्लाह तआ़ला काफ़िर की रोज़ी में उस्अ़त (बढ़ौत्तरी) करता है यानी उस को ढ़ील दी जाती है ताकि कुफ़्र व गुनाह में आगे बढ़ता चला जाए और बन्दा मोमिन की रोज़ी में कभी-कभी तंगी पैदा कर देता है जिससे उस की आज़्माइश होती है और इसलिए भी ताकि उस के गुनाह दुनिया ही में मिट जाएँ। रोज़ी में काफ़िरों के लिए उस्अ़त अल्लाह के ख़ुश होने की दलील नहीं होती और न रिज़्क़ की कमी मोमिन से नाख़ुशी की निशानी होती है। इस के बाद मुश्रिकीने मक्का के बारे में कहा गया है कि वह अपनी दुनियावी ज़िन्दगी पर गर्व करते हैं, ह़ालांकि आख़िरत की कामियाबी यानी जन्नत के मुक़ाबिले में दुनिया के लज़्ज़तों की कोई ह़ैसियत नहीं है।

'मुफ़स्सिरीन' ने इसी से दलील लिया है कि दुनियावी कामियाबियों पर इतराना और मग्न रहना ह़राम है।

'तिर्मिज़ी' ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत की है कि एक दिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) चटाई पर सो गए तो उन के पहलू में उस का निशान पड़ गया। सह़ाबा-ए-किराम ने कहा, हम आप के लिए नर्म बिस्तर बना देना चाहते हैं तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "मुझे दुनिया से क्या मतलब? दुनिया में मेरी मिसाल उस मुसाफ़िर की जैसी है जो कुछ देर किसी दरख़्त के साये में ठहरता है, फिर चल देता है।"

'मुस्लिम' 'तिर्मिज़ी' 'नसई' और 'इब्ने माजा' ने रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दुनिया की मिसाल आख़िरत के मुक़ाबिले में ऐसी है जैसे कोई अपनी उंगली समुद्र में डालकर निकाल ले, उस की उंगली में पानी का कितना ह़िस्सा आ जाएगा, फिर आप ने अपनी शहादत की उंगली से इशारा किया, इतना थोड़ा"।

आयत नं० 27 से 43 तक

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ۝ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ۝ كَذٰلِكَ
اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ۝ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ
جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ
اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ ؕ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ
تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ هَادٍ ۝ لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ؕ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ؕ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝ وَكَذٰلِكَ
اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَمَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا
رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝
يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا
عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَهُوَ سَرِيْعُ
الْحِسَابِ ۝ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ۝
وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ۝

अनुवाद-

(27) और जिन लोगों ने इन्कार किया वे कहते हैं, "इस पर इसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी?" कह दीजिए, "अल्लाह जिसे चाहता है उसे बेराह (पथभ्रष्ट) कर देता है, और 'अपनी' ओर की राह उसी को दिखाता है जो 'उसकी' ओर रुजअ़ (आकृष्टि) होता है"। (28) जो लोग ईमान लाए और उनके दिलों में अल्लाह की याद से चैन मिलता है, जान लो! कि अल्लाह की याद से दिलों को चैन मिलता है। (29) जो लोग ईमान लाए; और भले काम किये, उनके लिए भलाई है और अच्छा ठिकाना है। (30) उसी तरह 'हमने' आप को ऐसी उम्मत (समुदाय) में रसूल बना कर भेजा है कि उससे पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताकि जो 'वह्य' 'हमने' भेजी है, पढ़ कर उनको सुना दें; और ये लोग रह़मान का इन्कार करते हैं। कह दीजिए, 'वही' मेरा रब है 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'उसी' पर मेरा भरोसा है, और 'उसी' की ओर रुजूअ़ करता हूँ। (31) और अगर ऐसा कुर्आन होता जिसके ज़रिये पहाड़ चला

दिये जाते, या उससे धरती के टुकड़े-टुकड़े हो जाते, या उससे मुर्दों के साथ किसी की बातें करा दी जातीं (तब भी यह लोग ईमान न लाते) बल्कि यह सब काम अल्लाह ही के अधिकार में हैं; तो क्या ईमान वालों को फिर भी इस बात को जान कर मायूसी (निराशा) नहीं हुई, अगर अल्लाह चाहता तो सारे ही लोगों को सीधी राह पर ले आता; और इन्कार करने वालों पर उनके करतूतों की वजह से हमेशा कोई न कोई आफ़त आती रहेगी, या उनके मकानों के क़रीब उतरती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पहुँचेगा, बेशक अल्लाह कभी वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता"। (32) और आप से पहले कितने ही रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया जा चुका है, (किन्तु) 'मैंने' इन्कार करने वालों को मोहलत दी, फिर 'मैंने' उनको पकड़ लिया, तो कैसी रही 'मेरी' सज़ा! (33) भला 'वह' (अल्लाह) जो हर नफ़्स (इन्सान) के काम की ख़बर रखता है, और उन लोगों ने अल्लाह का साझीदार ठहरा दिया; कह दीजिए, ''उन लोगों के नाम तो लो! क्या तुम उसे ऐसी बात की ख़बर दे रहे हो, जिसे 'वह' नहीं जानता या ऊपर-ऊपर ही बातें करते हो।'' सच्चाई यह है कि काफ़िरों के लिए उनकी मक्कारियाँ खूबसूरत मालूम होती हैं, और वे सीधे रास्ते से रोक दिये गये हैं, और जिसको अल्लाह ही गुमराही में छोड़ दे, उसे कोई रास्ता बताने वाला नहीं; (34) उनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में भी अ़ज़ाब है, और आख़िरत का अ़ज़ाब तो और भी सख़्त है, और कोई नहीं जो उन्हें अल्लाह (के अ़ज़ाब) से बचा सके। (35) जिस जन्नत (बाग़) का वादा परहेज़गारों से किया गया है, उसकी हालत यह है कि उसके नीचे नहरें बहती होंगी, उसका फल हमेशा रहेगा और साया भी, यह बदला है परहेज़गारों के लिए; और इन्कारियों (काफ़िरों) का बदला आग है। (36) और जिन लोगों को 'हमने' किताब दी है वे उससे, जो आप की ओर उतारा है खुश होते हैं; और उन्हीं में के कुछ फ़िर्क़े ऐसे भी हैं जो उसकी कुछ बातों का इन्कार करते हैं, कह दीजिए, ''मुझे तो बस यह हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करुँ और 'उसका' साझीदार न ठहराऊँ, मैं उसी की ओर बुलाता हूँ और उसी की ओर मुझे लौट कर जाना है"। (37) और इसी तरह 'हमने' इस (क़ुर्आन) को उतारा कि वह एक विशेष हुक्म है अ़रबी भाषा में; और अगर आप उन की इच्छाओं पर चलें, उस इल्म के आ जाने के बाद, जो आप तक पहुँच चुका है, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न तो आप का कोई मददगार होगा और न कोई बचाने वाला। (38) और 'हम' आप से पहले बहुत से रसूल भेज चुके हैं, और 'हमने' उनको पत्नियाँ और सन्तान भी दी थीं, और किसी रसूल के अधिकार में न था कि वह अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई निशानी लाए, हर चीज़ के लिए एक समय है जो लिखित है। (39) अल्लाह जिसे चाहता है मिटा देता है, और (जिसे चाहता) बाक़ी रखता है, और 'उसी' के पास अस्ल किताब है। (40) और अगर 'हम' आप को कोई वादा दिखला दें, जो उनसे किया है या हम आप को वफ़ात (मौत) दे दें; तो आप का काम तो केवल (सन्देश) पहुँचा देना है, और हिसाब लेना तो 'हमारे' ज़िम्मे है। (41) क्या उन्होंने देखा नहीं! कि 'हम' इस ज़मीन के चारों ओर की सीमाओं को घटाते हुए बढ़ रहे हैं? और अल्लाह ही हुक्म करता है; कोई नहीं जो 'उसके' हुक्म को रद्द कर सके, और 'वह' जल्द हिसाब लेने वाला है। (42) और इनसे पहले जो लोग गुज़रे हैं, वे भी योजनाएँ बना चुके (चालें चलते रहे) लेकिन हक़ीक़ी योजना बनाना तो पूरा अल्लाह ही के हाथ में है, हर नफ़्स (इन्सान) जो कुछ वह करता है वह उसे जानता है, इन्कार करने वालों को जल्द ही मालूम हो जाएगा कि आख़िरत के घर (जन्नत) का कौन हक़दार है। (43) और काफ़िर कहते हैं, आप उसके भेजे हुए (रसूल) नहीं हैं, कह दीजिए, "तुम्हारे और मेरे बीच में अल्लाह गवाही के लिए काफ़ी है, और वह व्यक्ति जिसके पास (अल्लाह की) किताब का इल्म है"।

आयत नं० 27 से 43 तक की व्याख्या

27 وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ۝

कुफ़्फ़ारे मक्का रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बारे में कहा करते थे कि अगर मुहम्मद अल्लाह का नबी है तो मूसा व ईसा की तरह़ अल्लाह उस के लिए भी कोई निशानी क्यों नहीं भेज देता? उन का मक़्सद केवल घमण्ड होता था, उन की नियत यह नहीं होती थी कि उसे देखकर ईमान ले आएँ। यहाँ भी उन्होंने वही सवाल दोहराया तो अल्लाह ने उन्हें जवाब दिया कि अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है गुमराह कर देता है चाहे वह हज़ार निशानियाँ देख ले और जो गुनाहों से तौबः करके उस की तरफ़ रुजूअ़ होता है उसे हिदायत देता है चाहे वह कोई भी निशानी न देखे, उस की मर्ज़ी में किसी का कोई दख़ल नहीं है।

इसलिए तुम्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) से निशानियों का मुताल्बा नहीं करना चाहिए बल्कि अल्लाह के दीन को क़ुबूल कर के उस से अपना तअ़ल्लुक़ बनाना चाहिए ताकि अल्लाह तुम्हें मज़ीद तौफ़ीक़ की नेअ़मत से नवाज़े।

28 اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ۝

यहाँ अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करने वालों की सिफ़त बयान की जा रही है, "जो हिदायत की नेअ़मत से सरफ़राज़ होते हैं वह अल्लाह, उस के रसूल और उस की किताब पर ईमान लाते हैं, अल्लाह की याद से उन के दिलों को सुकून मिलता है और उस के सिवा किसी को अपना मददगार नहीं समझते"।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों को सुकून दिल ह़ासिल करने का एक नुस्ख़ा बताया कि ज़बान व दिल के ज़रिये अल्लाह तआ़ला को याद करने से ही इन्सान को सुकून ह़ासिल होता है।

चूंकि अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को अपनी अ़िबादत के लिए पैदा किया है, इसलिए उस के दिल को सिर्फ़ उस की याद से ही सुकून मिल सकता है। तस्बीह़ व तम्ह़ीद और तक्बीर व तौह़ीद, ज़िक्र इलाही के मस्नून व मशहूर तरीक़े हैं। अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आने करीम को **'ज़िक्र'** कहा है, इसीलिए उ़ल्मा ने लिखा है कि क़ुर्आने करीम की तिलावत, उसे सुनना और उस में ग़ौर व फ़िक्र करना ज़िक्र इलाही के बहुत ही मुफ़ीद तरीक़े हैं।

29 اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ۝

इस में अहले ईमान और नेक काम करने वालों का अन्जाम बताया गया है कि क़ियामत के दिन अल्लाह उन्हें जन्नत देगा और वहाँ वह ऐसी अच्छी ह़ालत में होंगे जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।

एक मतलब यह भी है कि अल्लाह तआ़ला उन्हें जन्नत में एक दरख़्त अ़ता करेगा जिस का नाम 'तूबा' है और वह ऐसी नेअ़मत होगी जिस की ख़ूबियाँ शब्दों में नहीं बयान की जा सकतीं।

30 كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ۝

नबी करीम (सल्ल०) के नुबूव्वत की तस्दीक़ व ताईद के तौर पर कहा गया है कि जिस तरह़ हम ने पहले बहुत से अम्बिया भेजे, अब आप को भेज रहे हैं ताकि आप कुफ़्फ़ारे कुरैश और दूसरे लोगों को वह कुर्आन पढ़कर सुनाएँ जो आप के लिए अल्लाह का सब से बड़ा मोअ़जिज़ह (चमत्कार) और इन्सानों के लिए अल्लाह की रह़मत है, लेकिन कुफ़्फ़ार उस अल्लाह का इन्कार करते हैं जिस की एक सिफ़त (गुण) 'रह़मान' भी है और जिस ने अपनी इसी सिफ़ते रह़मत के तक़ाज़े के मुताबिक़ इन्सानों की हिदायत के लिए कुर्आन करीम नाज़िल फ़रमाया है और आप को 'रह़मतुल् लिल्आ़लमीन' बनाकर भेजा है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः अम्बिया (107) में फ़रमाया وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ कि हम ने आप को सारे जहान के लिए रह़मत बनाकर भेजा है।

आयत में इस तरफ़ इशारा है कि कुफ़्फ़ारे कुरैश ने वह्य की नेअ़मत का शुक्र अदा नहीं किया और इस तरफ़ भी इशारा है कि 'रह़मान' अल्लाह का नाम और उस की एक अ़ज़ीम सिफ़त है, जिस का कुफ़्फ़ार इन्कार करते थे। सुलह़ हुदैबिया के मौक़े पर कहा था कि हम 'रह़मान' को नहीं जानते तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) उस की जगह "अल्लाह" लिखने पर राज़ी हो गये। **(बुख़ारी)**

'सह़ीह़ मुस्लिम' में इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, अल्लाह के नज़्दीक सब से अच्छे नाम 'अ़ब्दुल्लाह' और 'अ़ब्दुर्रह़मान' हैं।

31 وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' की राय के मुताबिक़ इस आयत से मक़्सूद कुर्आने करीम की बड़ाई बयान करनी है कि अल्लाह तआ़ला ने जितनी किताबें नाज़िल की हैं, अगर उन में कोई ऐसी होती जिस की तिलावत करने के बाद पहाड़ अपनी जगह से चल पड़ता या ज़मीन के टुकड़े हो जाते या मुर्दे बोल पड़ते तो वह कुर्आन करीम होता।

लेकिन काफ़िरों का ह़ाल यह है कि इस निशानी के होते हुए ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के निशानियाँ जैसी किसी निशानी का मुतालबा करते हैं, यह कुफ़्फ़ारे कुरैश के सवाल का जवाब है। उन्होंने आप (सल्ल०) से कहा कि वह मक्का के पहाड़ों को हटा दें ताकि शहर (विस्तृत) कुशादा हो जाए तो अल्लाह तआ़ला ने उन के इस फ़साद राय और कुर्आन करीम की अ़ज़्मते शान के बयान करते हुए फ़रमाया कि अगर कुर्आन करीम की तिलावत के ज़रिये पहाड़ चल पड़ें या ज़मीन के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ या मुर्दे बोल पड़ें तो भी कुफ़्फ़ार अपनी हठधर्मी से बाज़ नहीं आएँगे और ईमान नहीं लाएँगे।

अगर अल्लाह चाहता तो कुर्आन के ज़रिये वह कुछ होता जिस का बयान ऊपर हुआ, लेकिन उस ने ऐसा नहीं चाहा इसलिए कि ईमान का तअ़ल्लुक़ अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी से है। अगर वह चाहता तो कुफ़्फ़ारे कुरैश बिना निशानियाँ देखे भी ईमान ले आते, लेकिन उस ने ऐसा नहीं चाहा, इसलिए पहाड़ों

का चलना, ज़मीन का टुकड़े-टुकड़े होना, मुर्दों का बोल पड़ना और दूसरी निशानियाँ उन के ह़ालात नहीं बदल सकेंगी।

इस आयत में काफ़िरों के लिए ख़ासतौर से कुफ़्फ़ारे मक्का के लिए बहुत बड़ी तम्बीह है कि उन के कुफ़्र और रसूलों को झुठलाने के नतीजे में हमेशा कोई न कोई मुसीबत उन्हें होती रहेगी, क़त्ल किये जाएँगे या क़ैद कर लिये जाएँगे या सूखा में मुब्तिला होंगे या और कोई अ़ज़ाब उन्हें आ पकड़ेगा या उन के क़रीब रहने वालों पर कोई अ़ज़ाब नाज़िल होगा जिसे देखकर उन के दिल हिल जाएँगे और उन का सुकून छिन जाएगा।

यानी आप उन के इलाक़े के क़रीब रहने वाली किसी क़ौम का मुह़ासिरा (घेराबन्दी) करेंगे जिसे देखकर उन की जान मुसीबत में पड़ेगी जैसा कि तायफ़ वालों का ह़ाल हुआ और उन की यही कैफ़ियत रहेगी यहाँ तक कि उन्हें मौत आ जाएगी और अल्लाह के वादे के मुताबिक़ जहन्नम का अ़ज़ाब उन्हें आ दबोचेगा।

एक दूसरी राय यह है कि وَعْدُ اللّٰهِ से मुराद काफ़िरों से जिहाद करने की इजाज़त है यानी जब जिहाद की इजाज़त मिल जाएगी तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) और उन के अहले ईमान साथी उन के कुफ़्र का उन्हें मज़ा चखाएँगे।

32 وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾

इस में नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि आप से पहले भी मेरे बहुत से रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया तो मैंने उन काफ़िरों को कुछ दिनों की मोहलत दी, ख़ूब चैन व सुकून के साथ रहे, फिर अचानक मैंने उन्हें पकड़ लिया और मेरा अ़ज़ाब बहुत ही सख़्त होता था।

33 أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۗ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ ۚ قُلْ سَمُّوهُمْ ۚ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۚ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۗ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

इस में कुफ़्फ़ार को तम्बीह है कि क्या वह पालनहार जो एक-एक इन्सान की निगरानी कर रहा है, जिस से उन का कोई अ़मल छुपा हुआ नहीं उन मूर्तियों के समान है जिन की वह अ़िबादत करते हैं? जो न सुनते हैं, न देखते हैं, न समझते हैं और न ही किसी नफ़ा व नुक़्सान की क़ुद्रत रखते हैं।

यहाँ फिर कहा जा रहा है कि ज़रा तुम अपने उन बातिल मअ़बूदों की सिफ़ात तो बयान करो और ग़ौर करो कि सही क्या है? क्या वह तुम्हारी अ़िबादत के ह़क़्दार हैं? क्या वह इस के अहल हैं कि उन्हें अल्लाह का शरीक बनाया जाए?

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि झूठे मअ़बूद का दावा कर के क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की ख़बर देते हो जिस का उसे इ़ल्म नहीं है? सच तो यह है कि तुम्हारा यह कहना ह़क़ीक़त के ख़िलाफ़ वैसा ही है जैसे कोई जिहालत व नादानी में आकर किसी काले ह़ब्शी का नाम काफ़ूर (सफ़ेद

रंग का) रख दे।

34 لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝

जिन काफ़िरों का ह़ाल ऊपर बयान किया गया उन्हीं का अन्जाम बताया जा रहा है कि उन्हें दुनिया में मुसलमानों के हाथ अ़ज़ाब दिया जाएगा या मतलब यह है कि काफ़िर को कुफ़्र की वजह से कभी सुकून ह़ासिल नहीं होता और आख़िरत का अ़ज़ाब तो बड़ा ही दर्दनाक होगा।

35 مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اُكُلُهَا دَاۗىِٕمٌ وَّظِلُّهَا ۭ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۠ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ۝

काफ़िरों का अन्जाम बताने के बाद अब मोमिनों के बारे में कहा जा रहा है कि अल्लाह तआ़ला उन्हें जन्नत देगा जिस के नीचे नहरें जारी होंगी, उस में खाने-पीने की बेशुमार नेअ़मतें और दरख़्तों के हमेशा साये होंगे।

36 وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ۭ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۭ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝

इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल यह है कि किताब से मुराद 'तौरेत' व 'इन्जील' और ख़ुश होने वालों से मुराद वह यहूद व नसारा हैं जो मुसलमान हो गये थे। दूसरा क़ौल यह है कि आ़म यहूद व नसारा मुराद हैं जो क़ुर्आन करीम की उन आयतों को सुनकर ख़ुश होते थे जिन से 'तौरेत' व 'इन्जील' के अह़काम की तस्दीक़ होती थी।

पहले क़ौल के मुताबिक़ الْاَحْزَابِ से मुराद वह यहूद व नसारा होंगे जिन्होंने इस्लाम को क़ुबूल नहीं किया था और दूसरे क़ौल के मुताबिक़ मुश्रिकीने मक्का और दूसरे कुफ़्फ़ार होंगे या बाज़ यहूद व नसारा, जो क़ुर्आन का इन्कार इसलिए करते थे कि उस के ज़रिये उन की शरीअ़तें मन्सूख़ (निरस्त) हो गई थीं।

इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हुक्म दिया गया कि वह काफ़िरों को बता दें कि आप (सल्ल०) सिर्फ़ अल्लाह की अ़िबादत करते हैं और किसी को उस का शरीक नहीं बनाते और यह वह बुनियादी अ़क़ीदा है जिस पर तमाम आसमानी धर्मों का इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है।

37 وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۭ وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَاۗءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ۝

क़ुर्आन करीम के बाज़ फ़ज़ायल का ज़िक्र और उस से एराज़ (इन्कार) पर धमकी दी जा रही है। अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम को अ़रबी ज़बान में नाज़िल फ़रमाया और इस में शरीअ़ते इस्लामिया के तमाम उसूल बयान कर दिये हैं। नबी करीम (सल्ल०) को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि अगर आप क़ुर्आन जैसे उ़लूम का ख़ज़ाना मिलने के बाद भी यहूद व नसारा के इच्छाओं की पैरवी करेंगे तो अल्लाह के सिवा आप का कोई मदद्गार नहीं होगा और उस की गिरिफ़्त से आप को कोई नहीं बचा सकेगा।

38 وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝

बाज़ कुफ़्फ़ार रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बारे में कहते थे कि अगर मुहम्मद नबी होता तो शादी न करता, नुबूव्वत के कामों में लगा रहता। इस पर यह आयत नाज़िल हुई कि आप से पहले जो अम्बिया-ए-किराम दुनिया में आते रहे हैं उन्होंने शादियाँ की थीं और उन की भी औलादें थी, हम ने किसी फ़रिश्ते को कभी नबी बना कर नहीं भेजा।

यहाँ उन काफ़िरों को जवाब दिया गया है जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बार-बार ह़ज़रत मूसा व ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) जैसी निशानी लाने का मुताल्बा करते थे कि अल्लाह का रसूल उस की मर्ज़ी के बिना कोई निशानी नहीं ला सकता। अल्लाह तआ़ला ने वक़्त और ह़ालात की ज़रुरत के मुताबिक़ हर वक़्त के लिए एक फ़ैसला कर रखा है, जब वह वक़्त आता है तो वह ज़ाहिर होता है, इन फ़ैसलों का तअ़ल्लुक़ काफ़िरों की ख़्वाहिश से नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला के इरादे और उस की मर्ज़ी से है।

39 يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝

अल्लाह तआ़ला लौह़े मह़फ़ूज़ से जो चाहता है मिटा देता है और जिस हुक्म और फ़ैसले को चाहता है बाक़ी रखता है। हर इन्सान के बारे में लौह़े मह़फ़ूज़ में दर्ज है कि वह नेक होगा या बुरा, उस की रोज़ी, उ़म्र और उस से सम्बन्धित ख़ैर व शर की बात लिखी हुई है और अल्लाह तआ़ला अपनी मर्ज़ी और इरादा के मुताबिक़ उस में तब्दीली करता है, उस की मर्ज़ी में किसी का दख़ल नहीं है।

'ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब' इब्ने मसऊद और इब्ने अ़ब्बास आदि की यही राय है और यह जो ह़दीस में आया है नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि (क़लम ख़ुश्क हो गया तो) लौह़े मह़फ़ूज़ में मिटाना या बाक़ी रखना भी अल्लाह तआ़ला के क़ज़ा व क़द्र में दाख़िल है।

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) को तवाफ़ की ह़ालत में यह कहते सुना गया है कि " ऐ अल्लाह! अगर तूने मेरे लिए बद्बख़्ती या कोई गुनाह लिख दिया है तो उसे मिटा दे तू जो चाहता है मिटा देता है और जो चाहता है बाक़ी रखता है, तेरे ही पास लौह़े मह़फ़ूज़ है। ऐ अल्लाह! तू मेरे लिए नेकबख़्ती और मग़्फ़िरत लिख दे। **(मुस्नद अह़मद भाग 5 पेज नं० 277)**

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से भी इस तरह़ की दुआ़ नक़्ल की गई है और ह़ाकिम ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है और उसे सह़ी कहा है कि एह़तियात तक़्दीर के मुक़ाबिले में नफ़ा नहीं पहुँचा सकती, लेकिन अल्लाह तआ़ला दुआ़ के ज़रिये तक़्दीर की जिस बात को चाहता है मिटा देता है। **(ह़ाकिम)**

40 وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी जा रही है कि आप ने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दी, अब

अगर कोई आप की दअ़वत क़ुबूल नहीं करता तो अल्लाह तआ़ला उस से हि़साब लेगा और दुनिया में आप के दुश्मनों को मुम्किन है कि अल्लाह आप की ज़िन्दगी ही में ज़लील व रुस्वा कर दे या हो सकता है कि आप की वफ़ात (देहान्त) के बाद उन के साथ ऐसा हो, बहरह़ाल आपने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दी।

41 اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

क़ुफ़्फ़ारे मक्का को इस बारे में क्यों शुब्हा है कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब नहीं देगा और ज़िल्लत व रुस्वाई में मुब्तिला नहीं करेगा? क्या वह देख नहीं रहे हैं कि वह सरज़मीने मक्का को उन के चारों तरफ़ से तंग करता जा रहा है और हर साल मुसलमान कुछ इलाक़ों को फ़तेह़ करते हुए मक्का की तरफ़ बढ़ रहे हैं और क़ुफ़्फ़ारे मक्का के लिए ज़मीन तंग होती जा रही है।

अल्लाह जो चाहता है फ़ैसला करता है, किसी को उठाता है तो किसी को गिराता है, किसी को मारता है तो किसी को ज़िन्दगी देता है। उस के फ़ैसलों में कोई दख़ल अन्दाज़ी नहीं कर सकता और वह तो बड़ा जल्द बदला लेने वाला है, दुनिया में तो क़ैद व बन्द और क़त्ल की सख़्त आज़्माइश में गिरफ़्तार हैं ही, जल्द ही आख़िरत में भी अल्लाह उन का हि़साब लेगा और उन के बुरे करतूतों का उन्हें मज़ा चखाएगा।

42 وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ۝

इस आयत में भी नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी जा रही है कि क़ुफ़्फ़ारे मक्का से पहले भी जो इन्कारी दुनिया में गुज़रे हैं उन्होंने अपने नबियों के ख़िलाफ़ साज़िशें कीं, लेकिन वह साज़िशें उन के किसी काम न आईं बल्कि उन के लिए मुसीबत बन गईं इसलिए कि कामियाब तद्बीर (योजना) तो सिर्फ़ अल्लाह की तद्बीर (योजना) होती है, वह अपने नाफ़रमान बन्दों को अचानक पकड़ लेता है।

वह हर व्यक्ति के अच्छे और बुरे आ़माल से बाख़बर है और काफ़िरों की उन चालों से भी वाक़िफ़ है जो अम्बिया के ख़िलाफ़ चलते हैं और उन चालों के कामियाब होने से पहले ही उन्हें अपनी गिरिफ़्त में ले लेता है। आयत के आख़िर में काफ़िरों को धमकी दी गई है कि वह जल्द ही जान लेंगे कि दुनिया में या आख़िरत में या दोनों जगह अच्छा अन्जाम किस का होगा।

43 وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ۝

मुश्रिकीने मक्का कहा करते थे कि ऐ मुह़म्मद! तुम अल्लाह के रसूल नहीं हो तो अल्लाह तआ़ला ने आप से उन्हें यह जवाब देने को कहा कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह बह़ैसियत गवाह काफ़ी है, वह मेरे नबी होने की सच्चाई और तुम्हारे झूठ को ख़ूब जानता है और वह यहूद व नसारा भी जानते हैं, जिन्हें पहले आसमानी किताबें दी जा चुकी हैं।

मुश्रिकीने अ़रब यहूद व नसारा से रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बारे में पूछा करते थे, इसीलिए यहाँ उन का भी ह़वाला दिया गया है कि वह भी अपनी किताबों के ज़रिये जानते हैं कि मुह़म्मद अल्लाह के

रसूल हैं। इस तरह़ 'अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम' 'सल्मान फ़ारसी' और 'तमीम दारी' आदि ने इस्लाम लाने के बाद इस की शहादत दी कि तौरेत व इन्जील में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़ातिमुन्नबीय्यीन होने की तफ़्सील मौजूद है, जैसा कि सूरतुल् अअ़राफ़ की आयत नं० (157) में आया है:-

الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ

कि "वह नबी करीम (सल्ल०) का ज़िक्र जमील तौरेत व इन्जील में तफ़्सील से पाते हैं" और सूरः शुअ़रा आयत नं० (197) में है:-

اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ यानी "क्या उन के लिए यह निशानी काफ़ी नहीं कि बनी इस्राईल के उ़ल्मा ख़ूब जानते हैं कि मुह़म्मद अल्लाह के नबी हैं।"

❐❐❐

(भाग-14)

सूर-ए-इब्राहीम

(सूरः नं.14)

तफ़्सीर सूरः इब्राहीम

नाम- ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने कअ़बः बनाने के बाद अपने रब से कुछ दुआ़एँ की थीं, जो उम्मते इस्लामिया के ज़ाहिर होने के बाद पूरी हुईं। जैसे- बैतुल्लाह का ह़ज और कअ़बः का मुसलमानों के लिए क़िब्ला बनाया जाना। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और उन की दुआ़ओं के मुनासिबत से इस सूरः का नाम 'इब्राहीम' रखा गया है।

नाज़िल होने का ज़माना-

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' इक्रिमा, ह़सन, जाबिर बिन ज़ैद और 'क़तादा' आदि के नज़्दीक दो बातें हैं। आयत नं० (28/29/30) के सिवा पूरी सूरः मक्की है। इस सूरः में भी आ़म मक्की सूरतों की तरह़ नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत पर दलील लिया है। कुफ़्फ़ारे कुरैश को कुर्आन और आप की नुबूव्वत पर ईमान लाने की दअ़वत दी गई है और उन के कुफ़्र व हठधर्मी के नतीजे में हर तरह़ की दुनिया और आख़िरत के सज़ाओं की धमकी दी गई है।

आयत नं० 1 से 10 तक

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ﴿۱﴾ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۙ﴿۲﴾ الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿۳﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ
يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۴﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ
بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۵﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۶﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ
شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ﴿۷﴾ وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ
لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۸﴾ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۛ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ
جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ
اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿۹﴾ قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ
مُّسَمًّى ؕ قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۰﴾ قَالَتْ لَهُمْ
رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۱۲﴾

अनुवाद-

(1) अलिफ़्- लाम्- रा-, यह एक किताब जिसे 'हमने' आप पर उतारा है, ताकि आप लोगों को अन्धेरों से उजाले की ओर उनके रब के हुक्म से ले आएँ, शक्तिशाली, ख़ूबियों वाले अल्लाह के रास्ते की ओर। (2) 'वह' अल्लाह (ऐसा है) कि 'उसी' का है, जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और इन्कार करने वालों के लिए बड़े सख़्त अ़ज़ाब की ख़राबी है। (3) जो आख़िरत के मुक़ाबले दुनिया को पसंद करते, और अल्लाह के रास्ते से रोकते, और उसमें टेढ़ पैदा करना चाहते हैं, ये लोग रास्ता भूल कर दूर जा पड़े। (4) और 'हमने' जो भी रसूल भेजे, उनकी अपनी क़ौम की भाषा के साथ भेजा, ताकि उन्हें स्पष्ट तरीक़े से बयान करे, तो अल्लाह जिसे चाहता है बेराह करता है और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है, और 'वह' ज़बर्दस्त, हिकमत वाला है। (5) और 'हमने' मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा था कि, "अपनी क़ौम को अन्धेरों से उजाले की ओर निकालें, और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिलाएँ, बेशक इसमें हर उस व्यक्ति के लिए निशानियाँ हैं जो सब्र और शुक्र करने वाला हो"। (6) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ''तुम अपने ऊपर अल्लाह की उन नेअ़मतों को याद करो, जब कि तुम को फ़िरऔन की क़ौम से छुड़ा दिया था, वे लोग तुम्हें बुरी सज़ा देते थे, और तुम्हारे बेटों को ज़बूह़ (कत्ल) कर डालते थे, और तुम्हारी औ़रतों को ज़िन्दा रखते थे, इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी आज़माइश थी"। (7) और जब तुम्हारे रब ने सचेत कर दिया, ''अगर तुम शुक्र करोगे तो 'मैं' तुम्हें और ज़्यादा दूँगा, और अगर नाशुक्री (अकृतज्ञता) करोगे

तो मेरी सज़ा बड़ी सख़्त है"। (8) और मूसा ने कहा, "अगर तुम और वे लोग जो ज़मीन में हैं सारे के सारे (अल्लाह की) नाशुक्री करने लगें, तो अल्लाह बेनियाज़, (बेपरवाह) खूबियों वाला है"। (9) क्या तुम को उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं? क़ौमे नूह़, और आ़द और समूद और जो उनके बाद हुए उन्हें और कोई नहीं जानता सिवाय अल्लाह के, उनके पास उनके रसूल खुली हुई निशानियाँ लेकर आए, तो उन्होंने उनके मुँह पर अपने हाथ रख दिये और कहने लगे, ''जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है, हम उसका इन्कार करते हैं और जिसकी ओर तुम हमें बुला रहे हो, हम को तो उसमें शंका है जो हम को तरद्दुद (असमन्जस) में डाले हुए है" (10) उनके रसूलों ने कहा, ''क्या आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, अल्लाह के विषय में सन्देह है? 'वह' तो तुमको इसलिए बुला रहा है, ताकि तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर दे और तुम्हें एक निश्चित समय तक मोहलत दे।'' वे लोग कहने लगे, तुम तो केवल हमारे ही जैसे एक आदमी हो, चाहते हो कि हमें उनसे रोक दो जिनकी पूजा हमारे बाप-दादा करते आए हैं, (अच्छा) तो कोई स्पष्ट प्रमाण (चमत्कार) ले आओ"। (11) रसूलों ने उनसे कहा, ''हम तो वास्तव में तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं, लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है एहसान करता है और यह बात हमारे अधिकार में नहीं कि तुम्हें कोई चमत्कार ला दिखाएँ, हाँ, अल्लाह के हुक्म से यह बात हो सकती है; और अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा रखना चाहिए"। (12) और हम को क्या हुआ कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, ह़ालाँकि 'उसने' हमको हमारे रास्ते दिखा दिये, और जो तुम हमको तक्लीफ़ देते हो, हम उस पर सब्र से काम लेंगे; और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए"।

आयत नं० 1 से 12 तक की व्याख्या

1 الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝

الٓرٰ यह हुरूफ़ मुक़त्तआ़त हैं। इन का अर्थ अल्लाह ही जानता है।

'किताबुन' से मुराद कुर्आन करीम है और 'जुलूमात' से कुफ़्र व गुमराही और बिद्अ़त व जिहालत का अन्धकार और 'नूर' से ईमान व हिदायत और कुर्आन व सुन्नत की रौशनी है। यानी नबी करीम (सल्ल०) कुर्आन करीम में ज़िक्र तआ़लीमात की रौशनी में इन्सानों को अल्लाह के हुक्म और उस की मर्ज़ी के मुताबिक़ कुफ़्र की तारीकी से निकाल कर दीने इस्लाम की रौशनी तक पहुँचा देते हैं।

हिदायत देने वाला अल्लाह है। यहाँ इस की निस्बत रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तरफ़ इसलिए की गई है कि दअ़वत देने वाला और रहनुमा वही है इसीलिए بِاِذْنِ رَبِّهِمْ कहा गया है यानी अल्लाह की मर्ज़ी से ही किसी को हिदायत मिलती है।

'इमाम राज़ी' कहते हैं कि "ظلمات" जमा (बहुवचन) और "نور" लफ़्ज़ मुफ़रद (एकवचन) इस बात की दलील है कि कुफ़्र बिद्अ़त की राहें बहुत और ह़क़ का रास्ता सिर्फ़ एक है। अल्लाह का रास्ता रौशनी है, जिसे अख़्तियार कर के आदमी हमेशा रहने वाली जन्नत तक पहुँच जाता है और इस राह की निस्बत अल्लाह की तरफ़ होने वाले से यह बात समझ में आती है कि इस राह का मुसाफ़िर भटकता नहीं और अल्लाह की तौफ़ीक़ से मन्ज़िल को पा लेता है।

2 اللهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَوَیْلٌ لِّلْكٰفِرِیْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِیْدِ ۙ

दीने इस्लाम अल्लाह का रास्ता है, जो आसमानों और ज़मीन के दर्मियान हर चीज़ का मालिक है। इसलिए दुनिया में हलाकत व बर्बादी और क़ियामत के दिन आग है उन काफ़िरों के लिए जो नबी करीम (सल्ल०) की दअ़वत को क़ुबूल नहीं करते और कुफ़्र के अन्धेरे से निकल कर ईमान व इस्लाम की रौशनी में दाख़िल नहीं होते।

3 الَّذِیْنَ یَسْتَحِبُّوْنَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا عَلَی الْاٰخِرَةِ وَیَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللهِ وَیَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِیْ ضَلٰلٍۢ بَعِیْدٍ ۝

उन्हीं काफ़िरों के गुण बयान किये गये हैं कि वह आख़िरत की ज़िन्दगी को फ़रामोश कर देते हैं और दुनिया की ज़िन्दगी को कामियाब बनाने में लग जाते हैं और अल्लाह के बन्दों को हक़ की राह पर चलने से रोकते हैं और कहते हैं कि यह सही रास्ता नहीं है या चाहते हैं कि लोग इस्लाम से दूर हो जाएँ या अल्लाह का दीन उन की ख़्वाहिशे नफ़्स के मुताबिक़ हो।

अल्लाह तआ़ला ने उन के बारे में फ़रमाया कि वह गुमराही की राह पर बहुत दूर जा चुके हैं और **उलाइका ज़ाल्लून** के बजाए **'उलाइका फ़ी ज़लाल'** कहने से इस तरफ़ इशारा है कि गुमराही उन की फ़ित्रत बन गई है।

4 وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِیُبَیِّنَ لَهُمْ ؕ فَیُضِلُّ اللهُ مَنْ یَّشَآءُ وَیَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝

अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम नाज़िल कर के और नबी करीम (सल्ल०) को मब्अूस (अभ्युदय) करके अ़रबों पर अपने एह़सान को इस तरह़ पूरा किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) अ़रबी थे, उन की ज़बान अ़रबी थी ताकि आप शरीअ़त को उन्हीं की ज़बान में उन के सामने बयान करें। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः फ़ुस्सिलत आयत नं० (44) में फ़रमाया हैः-

"अगर क़ुर्आन को 'अ़ज्मी' ज़बान में उतारते तो वह कहते कि इस की आयतें समझने के लायक़ क्यों नहीं बनाई गई हैं।"

नबी करीम (सल्ल०) पूरी दुनिया वालों के लिए और तमाम जिन्न व इन्स के लिए रसूल बना कर भेजे गये थे, लेकिन चूंकि आप अ़रबी थे और अ़रबी ज़बान दुनिया की सब से गहरी और वसीअ़ ज़बान है, इसीलिए क़ुर्आन अ़रबी ज़बान में नाज़िल हुआ और दूसरी क़ौमों तक क़ुर्आन का पैग़ाम बज़रिये अनुवाद पहुँचा। दुनिया की बहुत सी क़ौमों ने इस्लाम लाने के बाद ह़िफ़्ज़ क़ुर्आन और क़ुर्आन को समझने के लिए ख़ूब मेह़नत की, अनुवाद तय्यार किये, तफ़्सीरें (व्याख्याएँ) लिखीं, अ़रबी ज़बान सीखीं और क़ुर्आन व सुन्नत को उन की अस्ल ज़बान में समझा और इस्लाम की दअ़वत को उसी तरह़ समझा जिस तरह़ अ़रब मुसलमानों ने समझा।

चूंकि क़ुर्आन बतौर मुअ़जिज़ा (चमत्कार) के अ़रबी ज़बान में नाज़िल हुआ और अल्लाह ने इस की ह़िफ़ाज़त की ज़मानत ली, इसीलिए शुरु से आज तक दुनिया की कोई ताक़त इस में एक नुक़्ता (बिन्दु)

की भी तब्दीली नहीं कर सकी और न कर सकेगी और इस की दअ़वत अ़रबी और ग़ैर अ़रबी ज़बानों में आ़म होती रहेगी, यहाँ तक कि क़ियामत आ जाएगी।

नबी करीम (सल्ल०) ने अल्लाह की दअ़वत लोगों तक पहुँचा दी, लेकिन किसी को राहे रास्त पर लाना उन की ज़िम्मेदारी नहीं थी और न उन्हें इस का अख़्तियार ह़ासिल था। अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है गुमराह करता है और जिसे चाहता है अपने करम से हिदायत देता है।

5 وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَ ذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝

तमाम अम्बिया की बेअ़सत का मक़्सद यह था कि वह अपनी उम्मतों को राहे रास्त पर चलने की दअ़वत दें। उन अम्बिया में ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) एक बड़े नबी और रसूल थे, जिन का वाक़िआ़ यहाँ बतौर मिसाल के बयान किया गया है और اَيّٰىمِ اللّٰهِ से मुराद उन क़ौमों की हलाकत के वाक़िआ़त हैं जो क़ौमे मूसा से पहले गुज़र चुकी थीं। जैसे- क़ौमे नूह़ और क़ौमे लूत वग़ैरह।

एक दूसरी राय यह है कि इस से मुराद वह नेअ़मतें हैं जो अल्लाह ने क़ौमे मूसा को दी थीं और यह भी कि उन्हें फ़िरऔ़न के ज़ुल्म व ज़्यादती से निजात दी थी और صَبَّارٍ شَكُوْرٍ से मुराद वह मूमिनीन हैं जो मुसीबतों पर सब्र करते और नेअ़मतों पर अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं और जब पिछली क़ौमों की बर्बादी या उन पर अल्लाह की नेअ़मतों की बारिश की दास्तानें सुनते हैं तो चौकन्ना हो जाते हैं, अपना ह़िसाब लेते हैं और सब्र व शुक्र की ज़िन्दगी अपनाते हैं।

ह़ज़रत सुहैब (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मोमिन की हर ह़ालत अ़जीब होती है, उस के हर काम में भलाई है। यह मोमिन के सिवा किसी के लिए मुम्किन नहीं है, अगर उसे ख़ुशी मिलती है तो शुक्र करता है जिस पर उस के लिए भलाई है और अगर उसे तक्लीफ़ पहुँचती है तो सब्र करता है उस पर भी उस के लिए भलाई है।" **(मुस्लिम)**

6 وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝

इस आयत की तफ़्सीर सूरतुल् बक़रः आयत नं० (49) और सूरतुल् अअ़राफ़ आयत नं० (141) में गुज़र चुकी है। سُوْٓءَ الْعَذَابِ से मुराद यह है कि फ़िरऔ़न और उन के लोग ग़ुलामों जैसा मामला करते थे और मुश्किल से मुश्किल काम लेते थे, उन के लड़कों को ज़ब्ह़ कर देते थे और औ़रतों को ज़लील व रुस्वा करने के लिए ज़िन्दा छोड़ देते थे।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की क़ौम के लिए फ़िरऔ़नियों के इस ज़ालिमाना बर्ताव में अल्लाह की ओर से बड़ी आज़्माइश थी। एक दूसरी राय यह है कि **'ज़ालिका'** से इशारा 'निजात' की तरफ़ है, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला नेअ़मत देकर भी आज़्माता है बल्कि यह आज़्माइश ज़्यादा सख़्त होती है।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि आज़्माइश नेअ़मत और मुसीबत दोनों के ज़रिये होती है। अल्लाह तआ़ला ने सूरः अम्बिया आयत नं० (35) में फ़रमाया है وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۭ कि "हम तुम्हें ख़ैर (भलाई) व शर (बुराई) के ज़रिये आज़्माएँगे।"

7 وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَىِٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۝

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने अपनी क़ौम से यह भी कहा कि तुम्हारे रब ने मुझे ख़बर दी है कि अगर तुम उस की नेअ़मतों का ईमान और नेक आ़माल के ज़रिये शुक्र अदा करोगे तो वह तुम्हें और ज़्यादह रोज़ी देगा और दुनिया में इ़ज़्ज़त वाला बनाएगा। 'सुफ़्यान सौरी' ने इस की तफ़्सीर में बयान किया है कि वह तुम्हें मज़ीद ताक़त और बन्दगी की तौफ़ीक़ देगा और अगर नाशुक्री करोगे तो वह नेअ़मतें तुम से छीन लेगा और सख़्त अ़ज़ाब में डाल देगा।

'उम्मुल् मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' फ़रमाती हैं, "आप (सल्ल०) रात में इतना क़ियाम फ़रमाते या नमाज़ पढ़ते कि आप (सल्ल०) के पाँव पर वरम आ जाता। मैंने आप (सल्ल०) से पूछा कि आप इतना लम्बा क़याम क्यों फ़रमाते हैं? ह़ालांकि अल्लाह ने आप के अगले और पिछले गुनाह माफ़ फ़रमा दिये हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ"। **(बुख़ारी)**

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो इन्सान का शुक्र अदा नहीं करता वह अल्लाह का भी शुक्र अदा नहीं करता।" **(तिर्मिज़ी)**

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, मुझे जहन्नम दिखाई गई, उस में औ़रतें ज़्यादा थीं जो कुफ़्र करती हैं। सह़ाबा (रज़ि०) ने कहा कि क्या वह अल्लाह का इन्कार करती हैं? फ़रमाया नहीं, वह शौहर (पति) की नाशुक्री करती हैं और एह़सान फ़रामोश होती हैं। अगर तुम किसी औ़रत से उ़म्र भर भलाई करो, फिर वह तुम से कोई (नागवार) बात देखे तो कह देगी कि मैंने तुझ से कोई भलाई देखी ही नहीं। **(बुख़ारी)**

8 وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने यह भी कहा कि अगर तुम और ज़मीन में रहने वाले सभी लोग अल्लाह के नाशुक्रे हो जाओगे तो इस का नुक़्सान तुम्हें ही पहुँचेगा, वह तुम्हारे शुक्र का मोह़ताज नहीं है, तुम्हारी नाशुक्री से उस की ज़ात व सिफ़ात में कोई कमी नहीं होगी।

शायद उन्होंने यह बात उस वक़्त कही होगी जब देखा होगा कि उन की क़ौम कुफ़्र व हठधर्मी पर जमी है और तर्ग़ीब व तर्बियत का कोई तरीक़ा उन पर असर अन्दाज़ नहीं हो रहा है।

'इमाम मुस्लिम' ने ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि०) से ह़दीसे क़ुद्सी रिवायत की है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, "ऐ मेरे बन्दो! अगर तुम तमाम अव्वल व आख़िर और इन्स व जिन्न तुम में से नेक इन्सान की तरह़ हो जाएँ तो इस से मेरी बादशाहत में कोई ज़्यादती नहीं होगी। मेरे बन्दो! अगर तुम अव्वल व आख़िर और इन्स व जिन्न सब बद्कार इन्सान के समान हो जाओ तो भी इस से मेरी बादशाहत में

कोई कमी नहीं आएगी। मेरे बन्दो! अगर तुम अव्वल व आख़िर और इन्स व जिन्न एक जगह इकट्ठा होकर मुझ से मांगो और मैं सब की मुराद पूरी करुँ तो इस से मेरे ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं आएगी, वैसे ही जैसे कोई सुई समुद्र में डाल कर निकाल ली जाए।" (मुस्लिम)

9 اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۛ وَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ۛ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَ قَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝

'इब्ने जरीर' के नज़्दीक यह भी ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के क़ौल का ह़िस्सा है। 'इब्ने कसीर' कहते हैं कि चूंकि आ़द व समूद के क़िस्से तौरेत में नहीं हैं, इसलिए बज़ाहिर यह अल्लाह तआ़ला का उम्मते मुह़म्मदिया से ख़िताब है। अल्लाह तआ़ला ने क़ौमे नूह़ आ़द व समूद और दूसरी क़ौमों के वाक़िआ़त बयान किये हैं, जिन्होंने अपने अम्बिया को झुठलाया था और ऐसी क़ौमें दुनिया में अनगिनत हुई हैं जिन की तआ़दाद सिर्फ़ अल्लाह जानता है।

इन रसूलों ने जब दलायल की रौशनी में अल्लाह का दीन उन के सामने पेश किया तो उन्हें बात करने से मना कर दिया और कहा कि हम तुम से एक कलिमा भी मज़ीद नहीं सुनना चाहते हैं, अपनी बात अपने मुँह में ही रहने दो, हम तुम्हारी दआ़वत का इन्कार करते हैं और जिस बात की तरफ़ तुम हमें बुला रहे हो, हमारे दिल में उस के सच होने में गहरा शक व शुब्हा है।

10 قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۛ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۛ قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۛ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝

अम्बिया-ए-किराम ने अपनी क़ौमों के कुफ़्र और आसमानी रिसालत व दआ़वत के इन्कार पर ह़ैरत का इज़्हार करते हुए कहा है कि तुम लोगों को अल्लाह तआ़ला के वजूद और उस के रब (पालनहार) होने में शुब्हा है, ह़ालांकि आसमान व ज़मीन का वजूद इस बात पर गवाह है और कोई शक नहीं कि उस के अ़लावा कोई मआ़बूद हो, वही हर चीज़ का ख़ालिक़ व मालिक और मआ़बूद है और वही ईमान लाने का हुक्म देता है।

अगर तुम हमारी तस्दीक़ करते हुए अल्लाह पर ईमान ले आओगे तो वह तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और एक निश्चित समय तक दुनियावी ज़िन्दगी से फ़ायदा उठाने देगा।

काफ़िरों ने अम्बिया की दआ़वत को दोबारा रद्द कर दिया और कहा कि तुम तो हमारे ही जैसे इन्सान हो, खाते-पीते हो, तुम्हें हम पर कोई बड़ाई ह़ासिल नहीं है और न तुम फ़रिश्ता हो, बस तुम्हारा मक़्सद यह है कि हमें हमारे बाप-दादा के मआ़बूदों (उपास्यों) की अ़िबादत से रोक दो। इसलिए हम तुम्हारी बात उसी वक़्त मानेंगे जब कोई स्पष्ट निशानी लाओ कि वाक़ई तुम अल्लाह के नबी हो। यह उन की हठधर्मी थी, वरना हर नबी ने ऐसे मोअ़जिज़ात (चमत्कार) और निशानियाँ पेश कीं जो क़ौमों की इस यक़ीन दहानी

के लिए काफ़ी थीं कि वह अल्लाह के भेजे हुए नबी हैं।

11-12 قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَن نَّأْتِيَكُم بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾ وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿١٢﴾

रसूलों ने कहा कि हाँ, हम तुम्हारे ही जैसे इन्सान हैं, लेकिन अल्लाह ने हमें बह़ैसियत नबी चुन लिया है। अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है एह़सान करता है और उसे अपना नबी बना लेता है और हम कोई निशानी अपनी मर्ज़ी से नहीं ला सकते हैं। अल्लाह जब चाहता है भेजता है और उस ने इस वक़्त नहीं चाहा है।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने इस के बाद अपने मोमिन साथियों को सम्बोधित कर के कहा कि मोमिनों को सिर्फ़ अल्लाह पर ही भरोसा रखना चाहिए और उन का मक़्सद सब से पहले अपने आप को नसीह़त करना था कि हमें क़ौमों की ओर से जो भी तक्लीफ़ दअ़वत की राह में पहुँच रही है, उस पर सब्र करने के लिए अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए और उसी से मदद माँगनी चाहिए।

इसीलिए आयत नं० (12) में कहा गया है कि अल्लाह पर भरोसा करने के लिए हमारे पास क्या बाक़ी रह गया है, जब कि उस ने हम में से हर एक को राहे रास्त पर डाल दिया है और उस पर जमने को वाजिब कर दिया है और चूंकि काफ़िरों की तक्लीफ़ से इरादा कमज़ोर होता है, इसलिए कहा कि ऐ लोगो! हम दअ़वत की राह में तुम्हारी तक्लीफ़ों पर सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों को सिर्फ़ अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए। मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि दाअ़ी को हर ह़ाल में सिर्फ़ अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए क्योंकि हर क़ुव्वत व ताक़त का मालिक केवल अल्लाह है।

आयत नं० 13 से 27 तक

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۙ﴿۱۳﴾
وَ لَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَ خَافَ وَعِيْدِ ﴿۱۴﴾ وَ اسْتَفْتَحُوْا وَ خَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۙ﴿۱۵﴾ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ
وَ يُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ۙ﴿۱۶﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَ لَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَ يَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّ مَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَ مِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ
غَلِيْظٌ ﴿۱۷﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ
ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿۱۸﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَ يَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۙ﴿۱۹﴾ وَ مَا
ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۲۰﴾ وَ بَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ
اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَاۤ اَجَزِعْنَاۤ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿۲۱﴾ وَ قَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ
الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَ وَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَ مَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّاۤ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا
تَلُوْمُوْنِيْ وَ لُوْمُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَاۤ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَاۤ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ
قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۲﴾ وَ اُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ
رَبِّهِمْ ؕ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿۲۳﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ﴿۲۴﴾
تُؤْتِيْۤ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۭ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَ مَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ
خَبِيْثَةِ ِۨاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿۲۶﴾ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَ يُضِلُّ
اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ۬ وَ يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿۲۷﴾

अनुवाद-

(13) और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा, ''हम तुम को अपनी ज़मीन से बाहर निकाल देंगे, या यह कि तुम हमारे मज़हब (धर्म) में लौट आओ।'' तो उनके रब ने उन पर वह्य भेजी कि, 'हम' इन ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे; (14) और उनके बाद तुम को इस धरती में आबाद कर देंगे, यह उस व्यक्ति के लिए है, जो मेरे सामने खड़े होने का डर रखता हो और मेरी चेतावनी से डरता हो''। (15) और उन्होंने फ़त्ह़ (विजय) चाही तो हर सरकश और हर हठधर्मी असफल हो गया। (16) इसके पीछे (बाद) उसके लिए दोज़ख़ है और उसको पीप (Pus) का पानी पिलाया जाएगा, (17) वह उसे कठिनाई से घूँट-घूँट कर पिएगा और ऐसा नहीं लगेगा कि आसानी से उसे उतार सकता है, और मौत उस पर हर ओर से चली आती होगी, फिर भी वह मरेगा नहीं; और उसके पीछे एक सख़्त अ़ज़ाब होगा। (18) जिन लोगों ने अपने रब का इन्कार किया उनके कार्मों की मिसाल राख की सी है कि आँधी के दिन, उस पर ज़ोर की हवा चले (और) उसे उड़ा ले जाए जो कुछ उन्होंने कमाया उससे कुछ भी उनको ह़ासिल न हो सकेगा, यही तो है निचले दर्जे की गुमराही। (19) क्या तुम ने देखा नहीं! कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को ठीक-ठीक पैदा किया? अगर 'वह' चाहे तो तुम सब को ले जाए और नई मख़्लूक़ (सृष्टि) ले आए; (20) और ऐसा करना अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं है। (21) और सबके सब अल्लाह के सामने इकट्ठा होंगे, तो कमज़ोर लोग उन लोगों

से, जो बड़े बने हुए थे, कहेंगे, "हम तो तुम्हारे पीछे चलते थे, तो क्या तुम हम को अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा सकोगे?" वे कहेंगेः "अगर अल्लाह हम को रास्ता बतलाता, तो हम तुम को भी रास्ता बतलाते, अब हमारे लिए बराबर है, चाहे चीख़ पुकार करें या सब्र से काम लें, हमारे लिए बचने का कोई उपाय नही"। (22) जब (सब कामों का) फ़ैसला हो चुकेगा तो शैतान कहेगा, "अल्लाह ने तो तुम से सच्चे वादे किये थे, और मैं ने भी तुम से वादे किये थे, तो मैं ने वे वादे झूठे किये थे, और मेरा तुम पर कुछ ज़ोर नहीं था, सिवाय इसके कि मैंने तुम को बुलाया तो तुमने मेरी बात को मान लिया; तो अब मुझको मलामत न करो, बल्कि अपने आप को ही मलामत करो; न मैं तुम्हारी फ़रियाद सुन सकता हूँ और न तुम मेरी फ़रियाद सुन सकते हो। इससे पहले जो तुमने मुझे साझीदार ठहराया था, तो मैं उससे बेज़ारी (विरक्त) ज़ाहिर करता हूँ।" बेशक ज़ालिमों के लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है। (23) और जो ईमान लाए और भले काम किये, वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल होंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे अपने रब की इजाज़त से हमेंशा रहेंगे, वहाँ उनकी मुलाक़ात की दुआ़ 'सलाम' होगी। (24) क्या आप ने नहीं देखा! कि अल्लाह ने कैसी मिसाल 'कलिम-ए-तय्यिबः' की दी? (उसकी मिसाल ऐसी है) जैसे एक अच्छा वृक्ष जिसकी जड़ जमी हुई, और शाखाएँ आसमान में फैली हुई हों; (25) अपने रब की इजाज़त से वह अपना फल दे रहा हो; और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, ताकि वह ख़ूब समझ लें। (26) और 'कलिम-ए-खबीसा' (अशुभ एवं अशुद्ध) की मिसाल, एक गन्दे वृक्ष की सी है, जिसे ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए, और उसे कुछ भी स्थिरता प्राप्त न हो। (27) ईमान वालों को अल्लाह पक्की बात के ज़रिये दुनिया की ज़िन्दगी में भी मज़बूत करता है और अख़िरत में भी और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराही में डाल देता है; और अल्लाह जो चाहता है, करता है।

आयत नं० 13 से 27 तक की व्याख्या

13-14 وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۭ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ۝

जब काफ़िरों ने देखा कि अम्बिया सब्र का पहाड़ बने मुसीबतों को झेल रहे हैं और अल्लाह पर उन का ऐसा ज़बरदस्त भरोसा है कि दअ़वत की राह में उन्हें किसी बात की परवाह नहीं तो उन्होंने धमकी दी कि या तो तुम हमारे दीन में दोबारा वापस आ जाओ या तुम्हें अपना घर-बार और वतन छोड़ना पड़ेगा।

'इमाम राज़ी' लिखते हैं कि अहले ह़क़ हर ज़माने में कम हुआ करते हैं और अहले बातिल की कस्रत रही है और ह़क़ का चिराग़ बुझाने के लिए हमेशा आपस में मदद करते रहे हैं, इसलिए उन्होंने घमण्ड में आकर अम्बिया को वापसी की धमकी दी तो अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया-ए-किराम को इत्मिनान दिलाया और कहा कि आप परेशान न हों, हम ज़ालिमों को हलाक कर देंगे और ज़मीन का मालिक आप ही को बनाएँगे। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरतुल् साफ़्फ़ात आयात नं० (171/172/173) में फ़रमाया हैः-

سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ۝ وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝

यानी "हमारा वादा पहले ही अपने रसूलों के लिए हो चुका है कि उनकी मदद होगी और वह विजयी

होंगे और हमारा ही लश्कर प्रभावी रहेगा"।

15-17 وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ۝ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۚ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ۝

अम्बिया ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! हमें हमारे दुश्मनों पर ग़ल्बा नसीब फ़रमा या हमारे और उन के दर्मियान आख़िरी फ़ैसला कर दे, तो अल्लाह तआ़ला ने उन की मदद फ़रमाई और उन्हें उनके दुश्मनों पर ग़ालिब कर दिया और सरकश व नाफ़रमान को मुँह की खानी पड़ी और जहन्नम भी उन का पीछा कर रहा है जहाँ उन्हें पीने के लिए जहन्नमियों का पीप मिलेगा, जिसे पीते वक़्त बड़ी परेशानी होगी और मौत हर तरफ़ से उन्हें घेरे रहेगी, लेकिन वह मरेंगे नहीं और सख़्त और न ख़त्म होने वाला अ़ज़ाब उन के पीछे लगा रहेगा।

"ह़ज़रत अबू उमामा (रज़ि०) कहते हैं कि इस आयत के सिल्सिले में आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, वह (पीप का पानी) क़रीब किया जाएगा तो वह नाक भौं चढ़ाएगा और जब वह उस के क़रीब होगा तो उस के चेहरे को झुल्सा देगा और जब वह उसे पियेगा तो उस की आँतें कट कर पीठ से निकल पड़ेंगी"। (तिर्मिज़ी)

18 مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ۭ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝

कुफ़्फ़ारे मक्का जो आ़माल अपने उपास्यों को राज़ी करने के लिए करते थे या जिन का मक़्सद दिखावा होता था। जैसे- शोहरत और नाम व नमूद के लिए माल ख़र्च करते थे या मेहमानों के लिए कई-कई ऊँट ज़ब्ह़ करते थे ताकि लोग कहें कि फ़लाँ शख़्स बड़ा सख़ी और बड़ा मेहमान नवाज़ है, ऐसे आ़माल को अल्लाह तआ़ला ने राख से तश्बीह (संज्ञा) दी है, जिसे तेज़ आँधी उड़ा कर ले जाती है।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः फ़ुर्क़ान आयत नं० (23) में फ़रमाया है وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا यानी "उन्होंने जो आ़माल किये थे हम उन की तरफ़ मुतवज्जेह होकर उन्हें बिखरे हुए ज़र्रों की तरह़ कर दिया" और सूरः आले इ़मरान आयत नं० (117) में फ़रमाया है:-

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ۭ

कि "यह कुफ़्फ़ार जो ख़र्च करते हैं उस की मिसाल यह है कि एक ठंड हवा चली जिस में पाला था, जो ज़ालिमों की खेती पर पड़ा और उसे तहस-नहस कर दिया"।

इस से बढ़कर उन की गुमराही और क्या हो सकती है कि क़ियामत के दिन उन के आ़माल बर्बाद हो जाएँगे और उन्हें उन का कोई अज्र व सवाब नहीं मिलेगा।

'ह़ज़रत अनस बिन मालिक' (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला मोमिन पर उस की नेकी के सिल्सिले में ज़रा भी ज़ुल्म न करेगा। उस के लिए नेकी का बदला दुनिया में भी दिया जाएगा और आख़िरत में भी और काफ़िर ने जो नेक अ़मल किये होंगे उस को उस का बदला

दुनिया में दिया जाएगा यहाँ तक कि जब वह आख़िरत में पहुँचेगा तो कोई नेकी न होगी, जिस का उस को बदला दिया जाए।" (मुस्लिम)

19-20 اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۙ﴿۱۹﴾
وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۲۰﴾

आयत में ख़िताब नबी करीम (सल्ल०) से है और मुराद उन की उम्मत है या काफ़िरों के हर व्यक्ति से यह बताना है कि जिस अल्लाह ने आसमान व ज़मीन और उन के दर्मियान की तमाम चीज़ों को पैदा किया, वह यक़ीनन इस बात पर क़ुदरत रखता है कि क़ियामत के दिन इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा करे।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः यासीन आयत नं० (81) में फ़रमाया है:-

اَوَلَيْسَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰى ۙ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ

यानी "जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह उन जैसों के पैदा करने पर क़ादिर नहीं है? बेशक क़ादिर है और वही तो पैदा करने वाला, इल्म वाला है"।

मुश्रिकीन को यह भी बताना है कि वह अल्लाह तआ़ला को बेबस नहीं कर सकते हैं। अगर वह उस के हुक्मों की इसी तरह़ ख़िलाफ़वर्ज़ी करते रहे तो बहुत मुम्किन है कि उन्हें हलाक कर दे और उन से अच्छे लोगों को पैदा करे, जो उस के फ़रमाँबरदार हों। इसलिए कि क़ादिरे मुत्लक़ के लिए कोई बात मुश्किल नहीं है। अल्लाह तआ़ला ने सूरः निसा आयत नं० (133) में फ़रमायाः-

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا

यानी "अगर उसे मन्ज़ूर हो तो ऐ लोगों! वह तुम सब को फ़ना कर दे और दूसरों को ले आए और अल्लाह तआ़ला इस पर पूरी क़ुदरत रखता है"।

21 وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ
مِنْ شَىْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿۲۱﴾

क़ियामत के दिन जब मुजरिमीन मैदाने ह़श्र में जमा होंगे तो आपस में ख़ूब झगड़ेंगे और एक दूसरे से एत़लाने बराअत करेंगे। दुनिया में जो मुजरिमीन कमज़ोर थे और अपने सरदारों और मालदारों की पैरवी करते हुए अल्लाह के दीन का इन्कार कर दिया था वह उन सरदारों से कहेंगे कि हम दुनिया में तुम्हारी बात मानते थे तो क्या आज हमारा अ़ज़ाब कुछ हल्का कर सकते हो? तो वह कहेंगे कि अगर अल्लाह ने हमें हिदायत दी होती तो तुम्हें भी उसी राह पर ले चले होते।

मतलब यह है कि हर एक अपनी बेबसी का इज़्हार करेगा और अ़ज़ाबे आग के मज़े चखेगा, जिस से छुट्कारा मिलने की कोई उम्मीद न होगी।

काफ़िरों की इसी बात को अल्लाह तआ़ला ने सूरः सबा आयत नं० (31) में यूँ बयान फ़रमाया है:-

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖۚ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ِۨالْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا
لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۳۱﴾

यानी "ऐ देखने वाले! काश कि उन ज़ालिमों को उस वक़्त देखता जब कि वह अपने रब के सामने खड़े हुए एक दूसरे को इल्ज़ाम दे रहे होंगे, नीचे दर्जे के लोग बड़े दर्जे के लोगों से कहेंगे अगर तुम न होते तो हम मुसलमान होते" और सूरः मोमिन आयत नं० (47) में फ़रमाया है:-

وَإِذْ يَتَحَآجُّونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفَٰٓؤُا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾

और "जब कि दोज़ख़ में एक दूसरे से झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग घमण्ड करने वालों से जिन के यह अधीन थे कहेंगे कि हम तो तुम्हारे मानने वाले थे, तो क्या अब तुम हम से इस आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो?" इन आयात के पढ़ने से मालूम होता है कि मुजरिमीन मैदाने महशर में जहन्नम में जाने से पहले आपस में झगड़ेंगे और जहन्नम में जाने के बाद भी।

22 وَقَالَ الشَّيْطَٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدتُّكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ۖ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُم مِّن سُلْطَٰنٍ إِلَّآ أَن دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي ۖ فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوٓا أَنفُسَكُم ۖ مَّآ أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ أَنتُم بِمُصْرِخِيَّ ۖ إِنِّي كَفَرْتُ بِمَآ أَشْرَكْتُمُونِ مِن قَبْلُ ۗ إِنَّ الظَّٰلِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾

जब अल्लाह तआ़ला अपना फ़ैसला फ़रमा देगा जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में भेज दिये जाएँगे तो शैतान जहन्नमियों से कहेगा कि अल्लाह तआ़ला ने अपने अम्बिया की ज़बानी तुम से सच्चा वादा किया था कि अगर तुम उस की पैरवी करोगे, तो अल्लाह के अ़ज़ाब से निजात पाओगे वरना जहन्नम में डाल दिये जाओगे।

चुनाँचे आज उस ने अपना वादा पूरा कर दिखाया और मैंने तुम से झूठ कहा था कि मौत के बाद दोबारा उठाया नहीं जाएगा और अंशवाद का अ़क़ीदा ग़लत था।

मैंने बग़ैर दलील के तुम्हें अपने अंशवाद की दअ़वत दी थी तो तुम ने क़ुबूल कर लिया था और रसूलों ने अपनी और अपने दअ़वत की सदाक़त पर दलायल पेश किये थे, लेकिन तुम ने उन की बात ठुकरा दी थी, इसलिए आज जो कुछ तुम्हारे साथ हो रहा है उस पर मुझे नहीं बल्कि अपने आप को मलामत करो, मैं तुम्हें निजात नहीं दिला सकता हूँ और न तुम मेरे काम आ सकते हो। आज मैं इस बात का इन्कार करता हूँ कि किसी भी हैसियत से मैं अल्लाह का शरीक हूँ और तुम से हर तरह़ बराअत का ऐलान करता हूँ।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ज़ालिमों को उस दिन बड़ा और दर्दनाक अ़ज़ाब दिया जाएगा।

'ज़ुमख़्शरी' ने लिखा है क़ियामत के दिन शैतान जो कुछ कहेगा, अल्लाह तआ़ला ने उसे इसलिए नक़्ल किया है ताकि लोग क़ियामत के दिन अपने अन्जाम के बारे में ग़ौर करें और अभी से अपनी निजात के लिए तैयारी करें, इसलिए कि शैतान अपने मानने वालों से अपनी बराअत का ऐलान कर देगा।

23 وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ جَنَّٰتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۖ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَٰمٌ ﴿٢٣﴾

जहन्नमियों का अन्जाम बयान किये जाने के बाद अब अहले जन्नत का ह़ाल बयान किया जा रहा

है। फ़रिश्ते अहले जन्नत की तअ़ज़ीम करेंगे और उन्हें सलाम करेंगे। अल्लाह तआ़ला ने सूरः ज़ुमर आयत नं० (73) में फ़रमाया है وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ कि "जन्नत के ख़ाज़िन फ़रिश्ते अहले जन्नत को सलाम करेंगे।"

और सूरः रअ़द आयात नं० (23/24) में फ़रमाया है وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ कि "फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उन के पास आकर सलाम करेंगे।"

24-26 اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ۝ تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने मिसाल के ज़रिये कुफ़्र व शिर्क और ह़क़ व बातिल के दर्मियान फ़र्क़ स्पष्ट किया है। कलिमा इस्लाम "لا إله إلا الله" को कलिमा तय्यिबा और कलिमा शिर्क को कलिमा ख़बीसा कहा है। एक राय यह भी है कि कलिमा तय्यिबा से हर कलिमा ख़ैर और कलिमा ख़बीसा से हर कलिमा शर मुराद है।

कलिमा तय्यिबा-

'कलिमा तय्यिबा' की मिसाल उस हरे-भरे लहलहाते ख़ूबसूरत दरख़्त की सी है जिस से भीनी-भीनी ख़ुश्बू फूटती है, जिस के फल बहुत ही लज़ीज़ और मुफ़ीद होते हैं और जिस की जड़ें ज़मीन में इतनी गहरी होती हैं कि उस के उखड़ने का कोई ख़त्रा नहीं होता। ऐसे दरख़्त को देख कर उस के मालिक को बड़ी ख़ुशी होती है और जिस की शाखें आसमान से बातें करती हैं। यानी वह हर तरह़ से एक मुकम्मल और फ़ायदेमन्द दरख़्त होता है उस का फल उ़म्दह और मुफ़ीद होता है, जो हर मौसम में तैयार होता रहता है कभी भी ख़त्म नहीं होता।

कलिमा ख़बीसा-

'कलिमा ख़बीसा' की मिसाल उस बुरे दरख़्त की तरह़ है जिस की ज़मीन में न कोई बुनियाद होती है और न जड़ इसीलिए ज़मीन के ऊपर ठहर नहीं पाता। जैसे- कोई ऐसा दरख़्त जिसे ज़मीन से उखाड़ दिया गया हो उस में कोई ख़ैर नहीं होती, यही मिसाल कुफ़्र व शिर्क की है।

'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु' कहते हैं कि एक दफ़ा हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास बैठे हुए थे तो आप (सल्ल०) ने सह़ाबा से पूछा, बतलाओ वह कौन सा दरख़्त है जिस के पत्ते नहीं गिरते? मुसलमान की मिसाल उसी दरख़्त की सी है और यह भी नहीं होता यह भी नहीं होता, यह भी नहीं होता और हर वक़्त मेवा देता है? उस वक़्त मेरे दिल में ख़याल आया कि वह खजूर का दरख़्त है, मगर जब मैंने देखा कि ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) जैसे बुज़ुर्ग ख़ामोश बैठे हैं तो मैंने आप (सल्ल०) को जवाब देना मुनासिब न समझा। फिर आप (सल्ल०) ने ख़ुद ही बतला दिया कि वह खजूर का दरख़्त है। **(बुख़ारी)**

27 يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۝

"अल् क़ौल अल् साबित" से मुराद कलिमा तय्यिबा **"लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"** है।

'बुख़ारी व मुस्लिम' और अहले सुनन ने 'ह़ज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ियल्लाहु अ़न्हु' से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मुसलमान से जब क़ब्र में सवाल होता है तो वह गवाही देता है कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुह़म्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं। इसी बात को अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में यूँ फ़रमायाः-

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ۚ

एक दूसरी राय यह है कि आयत से मक़्सूद कलिमा ह़क़ और दीने इस्लाम पर साबित क़दमी है। जिन के दिलों में ईमान बस जाता है आज़्माइशों के वक़्त उन के जमाव में कोई अन्तर नहीं आता और क़ियामत के दिन भी जब उन के दीन व अ़क़ीदा के बारे में सवाल होगा तो मैदाने मह़शर की हौलनाकियों से मुतास्सिर होकर उन की ज़बान नहीं लड़खड़ाएगी।

कुछ लोगों का ख़याल का ख़याल है कि الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا से मुराद क़ब्र में सवाल का वक़्त और الْاٰخِرَةِ से मुराद क़ियामत के दिन ह़िसाब का वक़्त है और मक़्सूद इस आयत से यह है कि जब मोमिनों से क़ब्र में या क़ियामत के दिन सवाल होगा तो बिला झिझक कलिमा शहादत अपनी ज़बान पर लाएँगे और दुनिया में दीने इस्लाम पर क़ायम रहने की बात करेंगे और कुफ़्र व शिर्क करके अपने आप पर ज़ुल्म किया होगा, कलिमा शहादत न उन की ज़बान पर क़ब्र में आएगा और न ही क़ियामत के दिन ह़िसाब के वक़्त।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ लिखा है कि हर शख़्स जो दलायल के बावजूद ह़क़ से एराज़ करता है, वह आज़्माईशों के वक़्त दीने ह़क़ पर साबित क़दम नहीं रहता।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अल्लाह जो चाहता है करता है, किसी को ह़क़ पर साबित क़दमी की तौफ़ीक़ देता है तो किसी को इस नेअ़मत से मह़रूम कर देता है। उस के इरादा में किसी का कोई दख़ल नहीं है।

'ह़ज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़ियल्लाहु अ़न्हु' कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मुसलमान से जब क़ब्र में सवाल होगा तो वह कहेगा **'अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अन्न मुह़म्मदर्रसूलुल्लाहि'** इस आयत में अल् क़ौल अल् साबित से यही मुराद है। **(बुख़ारी)**

आयत नं० 28 से 41 तक

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّ اَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿۲۸﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿۲۹﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا
لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿۳۰﴾ قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا
وَّ عَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿۳۱﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ
مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿۳۲﴾ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿۳۳﴾ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۚ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۚ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿۳۴﴾ وَاِذْ قَالَ
اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّ اجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿۳۵﴾ رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ
فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۶﴾ رَبَّنَاۤ اِنِّيْۤ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْۤ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿۳۷﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا
نُعْلِنُ ۭ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿۳۸﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ
رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۹﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ
يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿۴۱﴾

अनुवाद-

(28) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जिन्होंने अल्लाह की नेअ़मतों को कुफ़्र से बदल डाला, और अपनी क़ौम को तबाही के घर में जा उतारा? (29) जहन्नम है उसमें, वे झोंके जाएँगे और वह बहुत बुरा ठिकाना है! (30) और उन्होंने अल्लाह के मुक़ाबले में दूसरे मअ़बूद ठहरा लिए, ताकि उस (अल्लाह) की राह से भटकाएँ, कह दीजिए, ("थोड़े दिन) मज़े ले लो, क्योंकि तुम्हें अन्त में आग ही में जाना है"। (31) कह दीजिए, "मेरे जो बन्दे ईमान लाए वे नमाज़ क़ायम करें, और 'हमारी' दी हुई रोज़ी में से छिपे और खुले खर्च करें, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई सौदा (क्रय-विक्रय) होगा और न दोस्ती"। (32) अल्लाह 'ही तो' है 'जिसने' आसमानों और ज़मीन को बनाया, और आसमान से पानी बरसाया फिर उससे फलों की क़िस्म से तुम्हारे लिए रोज़ी निकाली; और नाव को तुम्हारे लिए काम में लगाया, ताकि उसके हुक्म से समुद्र में चलें; और नहरों को भी तुम्हें लाभ पहुँचाने के लिए लगा दिया; (33) और सूरज और चाँद को तुम्हारी सेवा में लगा दिया, जो 'बराबर' चलते रहते हैं, और रात और दिन को तुम्हारी सेवा में लगा दिया; (34) और हर उस चीज़ में से तुम्हें दिया जो तुमने माँगा, और अगर तुम अल्लाह की नेअ़मतों को गिनने लगो तो गिन नहीं सकते। बेशक इन्सान बड़ा ही अन्यायी और नाशुक्रा है, (35) और जिस समय इब्राहीम ने कहा, "मेरे रब! इस भू-भाग (शहर) को अम्न वाला बना दीजिए, और मुझ को और मेरी सन्तान को, इससे बचा लीजिए कि हम मूर्तियों को पूजने लग जाएँ; (36) मेरे रब! उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह (पथभ्रष्ट) कर दिया, तो जो कोई मेरे रास्ते पर चलेगा वह तो मेरा है ही; और जिसने मेरा कहना न माना तो 'तू' उसे बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है"। (37) ऐ हमारे रब! मैंने अपनी औलाद को (एक ऐसी) घाटी में, जहाँ खेती नहीं होती, 'तेरे' सम्मानित घर (कअ़बः) के पास बसाया है, ऐ हमारे रब! ताकि ये नमाज़ क़ायम करें; अतः

लोगों के दिलों को झुका दीजिए, और उन्हें फल खाने को दीजिए, ताकि वे शुक्र करें; (38) हमारे रब! आप तो जानते हैं जो कुछ हम छिपा कर करते हैं, और जो कुछ दिखा कर करते हैं; और अल्लाह से कोई भी चीज़ छिपी हुई नहीं है न ज़मीन में। और न आसमान में। (39) अल्लाह का शुक्र है, 'जिसने' इतनी बड़ी उम्र में इस्माईल और इस्हाक़ दिये, बेशक मेरा 'रब' दुआ ज़रुर सुनता है; (40) ऐ रब! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ क़ायम करने वाला बना दीजिए, ऐ रब! और हमारी दुआ को क़ुबूल कर लीजिए। (41) ऐ रब! "मुझे और मेरे माँ-बाप को और ईमान वालों को उस दिन माफ़ कर दीजिएगा, जिस दिन हिसाब का मामला पेश आएगा"।

आयत नं० 28 से 41 तक की व्याख्या

28-30 اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّ اَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿۲۸﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿۲۹﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿۳۰﴾

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को सम्बोधित कर के कुफ़्फ़ारे मक्का की हालत पर तअ़ज्जुब है कि अल्लाह तआ़ला ने उन की हालत पर रहम खाते हुए मुहम्मद (सल्ल०) को नबी बनाकर भेजा तो इस नेअ़मत पर उन्हें अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिए था, लेकिन उन्होंने नाशुक्री की और उन की रिसालत और दीन-ए-इस्लाम का इन्कार कर दिया और सरदाराने क़ुरैश खुद तो डूबे ही पूरी क़ौम को ले डूबे। हमेशा जनता की नज़र में कुफ़्र को ख़ूबसूरत बनाकर पेश किया और उन्हें इस्लाम में दाख़िल होने न दिया और इस तरह जहन्नम में पहुँचा दिया जिस से बढ़कर हलाकत व बर्बादी की जगह और क्या हो सकती है।

अल्लाह तआ़ला ने उन काफ़िरों को धमकी दी कि दुनिया की लज़्ज़तों से ख़ूब फ़ायदा उठा लो और लोगों को गुमराह करते रहो, लेकिन जान लो! कि तुम्हारा ठिकाना जहन्नम होगा।

31 قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿۳۱﴾

पिछली आयत में अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों की नाशुक्री करने वालों और उस के साथ ग़ैरों को शरीक बनाने वालों के बारे में अल्लाह ने अपने रसूल को हुक्म दिया कि वह उन्हें बता दें कि उन का ठिकाना जहन्नम होगा। इसीलिए क़ुर्आन करीम के तरीक़े के मुताबिक़ अब अल्लाह ने अपने नबी (सल्ल०) को हुक्म दिया कि वह मोमिनीन को कह दें कि तुम लोग नमाज़ क़ायम करो और अल्लाह ने जो रोज़ी दी है उस में से छिपा कर और दिखा कर अल्लाह की राह में ख़र्च करो यानी ज़कात अदा करो, रिश्तेदारों पर ख़र्च करो और ग़ैरों की भी मदद करो, उस दिन के आने से पहले जब किसी की ओर से कोई फ़िद्या क़ुबूल नहीं किया जाएगा कि कोई बदला देकर अल्लाह के अ़ज़ाब से छूट जाए और न कोई दोस्ती काम आएगी कि कोई दोस्त अपने दोस्त के लिए अल्लाह के यहाँ सिफ़ारिश करे और उसे अ़ज़ाब से निजात दिला दे।

अल्लाह तआ़ला ने दुनियावी ज़िन्दगी में ख़ैर के रास्तों में ख़र्च करने का हुक्म दिया है। जब कि आदमी ख़र्च करने पर क़ादिर होता है, उस क़ियामत के दिन से पहले जब वह उस पर क़ादिर नहीं होगा बल्कि वहाँ किसी के पास माल ही नहीं होगा और आयत के आख़िरी हिस्से مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ में पिछले हुक्म की ताकीद है।

'साहिबे फ़त्हुल् बयान' लिखते हैं कि इस आयत में क़ियामत के दिन दोस्ती का इन्कार किया गया है और सूरः अल् ज़ुख़्रुफ़ आयत नं० (67) اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ में उस दिन दोस्ती को साबित किया गया है यानी यह केवल मुत्तक़ियों के लिए है और दूसरों के लिए इस का इन्कार किया गया है।

बाज़ लोगों ने कहा है कि क़ियामत के दिन मुख़्तलिफ़ (Different) ह़ालात होंगे। बाज़ ह़ालात में हर दोस्त अपने दोस्त को पहचानने से इन्कार कर देगा और बाज़ ह़ालात में मोमिनीन अपने ही जैसे मोमिन व नेक दोस्तों से हमदर्दी करेंगे।

32-34 اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۭ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ۝

इन तीन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ के लिए अपनी कुछ नेअ़मतों का ज़िक्र किया है, जो उस की तौह़ीद (अद्वैतवाद) और इ़ल्म व क़ुद्रत पर दलालत करती है। जैसे- आसमानों और ज़मीन को बिना देखे पैदा किया और उन में बहुत सी दूसरी चीज़े भी पैदा कीं। आसमान को मख़्लूक़ात के लिए क़ाबिले इत्मिनान छत और ज़मीन को उन के लिए बिस्तर बना दिया, ताकि आसमान के नीचे सुकून व इत्मिनान के साथ ज़मीन पर अपनी ज़िन्दगी बसर कर सकें और उन दोनों के दर्मियान ऐसी मख़्लूक़ात पैदा कीं, जो इन्सानों के लिए फ़ायदे का ज़रिया हैं।

यह सब इस बात पर दलील हैं कि अल्लाह तआ़ला ख़ालिक़ व मालिक है और हर बात पर क़ादिर है। उसी ने आसमान से बारिश नाज़िल किया जिस के ज़रिये तरह़-तरह़ के फल और ग़ल्ले पैदा किये जो इन्सान के लिए रोज़ी का काम देते हैं और कश्तियों (नाव) को इस तरह़ चलाया कि वह उन की मर्ज़ी के मुताबिक़ अल्लाह के हुक्म से पानी की सतह़ पर चलती रहती हैं और उन्हें उन का सामाने तिजारत लेकर एक शहर से दूसरे शहर ले जाती हैं और नहरों को मुसख़्ख़र किया जो ज़मीन को चीर कर एक इलाक़े से दूसरे इलाक़े तक पहुँचा देती हैं, जिन का पानी लोग ख़ुद पीते हैं, जानवरों को पिलाते हैं और उस से अपनी ज़मीनें सैराब करते हैं। यह नहरें अल्लाह की बहुत बड़ी नेअ़मत हैं।

सूरज और चाँद की रौशनी को मुसख़्ख़र किया जिन की रौशनी से इन्सान फ़ायदा उठाता है और उन दोनों की रौशनी और उन की रफ़्तार और एक दूसरे के बाद आने और जाने में अ़ज़ीम फ़ायदे हैं

जिन का अहाता (घेरा) अल्लाह ही कर सकता है। उन से ज़मीन पर उगने वाले तमाम पौधे और उस पर रहने वाले तमाम हैवानात फ़ायदा उठाते हैं, तारीकी दूर होती है, उन दोनों की यह रफ़्तार क़ियामत तक बाक़ी रहेगी, किसी हाल में अलग नहीं होगी और रात और दिन को मुसख़्ख़र किया, रात आराम के लिए और दिन रोज़ी हासिल करने की राह में मददगार बनाया। सूरः क़सस आयत नं० (73) में फ़रमायाः-

وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ

कि "उस ने अपनी रहमत से रात और दिन बनाए ताकि तुम उस में आराम करो और अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो" और बन्दों को जिस चीज़ की भी ज़रूरत हो सकती है, उसे अल्लाह ने उन के लिए फ़राहम कर दिया यानी उन्होंने ज़बाने हाल से उन चीज़ों को अपने लिए अल्लाह से माँगा था।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ मेरे बन्दो! अगर तुम अल्लाह की नेअ़मतों को शुमार करना चाहोगे तो नहीं कर सकोगे क्योंकि उन की कोई सीमा नहीं है और आख़िर में यह बताया कि जो आदमी ईमान व यक़ीन और अल्लाह तआ़ला की रहनुमाई (Guidence) से महरूम रहता है वह अल्लाह की नाशुक्री कर के अपने आप पर जुल्म करता है और वह बहुत ही बड़ा नाशुक्रा होता है, अल्लाह की नेअ़मतों का इन्कार करता है और क़ौल व अ़मल के ज़रिये अल्लाह का शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ उस से छीन ली जाती है।

35 وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ۝

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि यहाँ हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की दुआ़ के ज़िक्र से मक़्सूद यह बयान करना है कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने अल्लाह तआ़ला की आ़म नेअ़मतों की ही नाशुक्री नहीं की बल्कि उस की ख़ास नेअ़मत यानी मक्का में बसाए जाने की भी नाशुक्री की और अपने बाप हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की नाफ़रमानी की, क्योंकि उन्होंने मक्का में अपनी औलाद को इसलिए बसाया था ताकि नमाज़ क़ायम करें, मूर्तियों की अ़िबादत न करें और अल्लाह की नेअ़मतों का शुक्र अदा करें।

उन्होंने अपने रब से दुआ़ की कि वह मक्का को अम्न व सलामती का शहर बना दे, वहाँ के रहने वालों के लिए तरह़-तरह़ के फल मुहैया कर दे और शहर मक्का की मुह़ब्बत लोगों के दिलों में डाल दे ताकि उस की तरफ़ खिचे चले आएँ तो अल्लाह तआ़ला ने उन की दुआ़ क़ुबूल कर ली और अहले मक्का को सारी नेअ़मतों से नवाज़ा, लेकिन उन्होंने अल्लाह की

नाशुक्री की और अल्लाह के साथ ग़ैरों को शरीक ठहराया।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यहाँ ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का वाक़िआ़ 'कलिमा तय्यिबा' की मिसाल के तौर पर ज़िक्र किया गया है और कुछ लोगों ने कहा है कि इस से मक़्सूद लोगों को तौह़ीद की दअ़वत देनी और बुतों की पूजा से रोकना है।

साह़िबे 'फ़त्हुल् बयान' कहते हैं कि यह वाक़िआ़ ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के आग में डाले जाने के बाद का है। वहाँ उन्होंने अपने रब से कोई सवाल नहीं किया और न कोई दुआ़ की और यहाँ अल्लाह के सामने आ़जिज़ी के साथ दुआ़ की तो मालूम हुआ कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने जब यह दुआ़ की थी उस वक़्त वह दर्जे कमालात को पहुँच चुके थे।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के आठ बेटे थे, उन में से किसी ने भी मूर्तियों की पूजा नहीं की।

36 رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपनी दुआ़ की वजह बयान की है कि इन्हीं मूर्तियों की वजह से लोग गुमराह होते हैं। यहाँ उन्होंने अपने दीनी भाईयों को अपनी ज़ात का मक़ाम दिया और अपनी नाफ़रमानी करने वालों का मामला अल्लाह के सुपुर्द कर दिया है।

उ़ल्मा ने लिखा है कि यहाँ गुनाह से मुराद शिर्क के अ़लावा दूसरे गुनाह हैं और कुछ लोगों ने कहा है कि यहाँ अल्लाह की मग़्फ़िरत शिर्क से तौबः के साथ है यानी अगर शिर्क से तौबः कर लेंगे तो अल्लाह बड़ा मग़्फ़िरत करने वाला है।

37 رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ۝

यहाँ ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की बाज़ ज़ुर्रियत से मुराद ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) और उन की औलाद हैं और मस्जिदे ह़राम को 'बैतुल् ह़राम' इसलिए कहा गया है कि दूसरी जगहों में जो काम करना ह़लाल है, यहाँ उसे ह़राम क़रार दे दिया गया है और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का अपनी औलाद को बैतुल् ह़राम के पास बसाने का मक़्सद यह था कि उन की औलाद वहाँ नमाज़ क़ायम करे और नमाज़ का ख़ासतौर से ज़िक्र उस की अहमियत के पेशेनज़र किया और رَبَّنَا का दोबारा ज़िक्र नमाज़ ही की अहमियत बताने के लिए किया और लोगों के दिलों को उन की तरफ़ फेरने की दुआ़ इसलिए की ताकि वह उन से मुह़ब्बत व उल्फ़त ह़ासिल करें, आपस में परिचित हों और एक दूसरे से फ़ायदा उठाएँ और विभिन्न प्रकार के फलों की जो दुआ़ की तो उस में उन की औलाद और वह तमाम लोग शामिल हैं जो मक्का में आकर रहेंगे।

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु' फ़रमाते हैं कि औ़रतों में सब से पहले ह़ज़रत हाजिरा ने कमर में पट्टा बाँधा ताकि 'सारह' (अ़लै०) उन का सुराग़ न पाएँ (पाँव के निशानात मिटा दे) चुनाँचे ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने उन्हें एक बड़े दरख़्त के नीचे बिठाया जहाँ (अब) ज़मज़म का कुआँ है, मस्जिद-ए-

ह़राम की बुलन्दी की ओर। उस वक़्त वहाँ न कोई आदमी आबाद था और न पानी था, आप उन्हें एक थैला खजूर का और एक मशकीज़ह पानी का देकर चलने लगे।

ह़ज़रत हाज़िरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूछा, इब्राहीम हमें ऐसी वादी में छोड़ कर कहाँ जा रहे हो जहाँ न कोई आदमी है और न पानी। सय्यदह हाज़िरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने कई बार यह बात पूछी मगर ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने मुड़ कर न देखा। फिर कहने लगीं, क्या अल्लाह ने आप को ऐसा हुक्म दिया है? ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने कहा, हाँ। फिर कहने लगीं अच्छा फिर अल्लाह हमें ज़ाया न करेगा, फिर वापस आ गईं। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) वहाँ से चल कर जब उस जगह पहुँचे जहाँ से उन्हें देख न सकते थे तो बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह कर के अपने हाथ उठाकर इन कलिमात के साथ दुआ़ की। (**बुख़ारी**)

38 رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۭ وَمَا يَخْفٰى عَلَي اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاۗءِ ۝

'ज़ुमख़्शरी' ने इस आयत की तफ़्सीर यह की है (जो इब्ने जरीर की राय के क़रीब है) कि ऐ हमारे रब! तू हमारे ह़ालात और हमारी ज़रूरतों से ख़ूब वाक़िफ़ है। क्या चीज़ हमारे लिए मुफ़ीद है और क्या नुक़्सानदेह है इसे तू ख़ूब जानता है, तू हम से ज़्यादा हम पर रह़म करने वाला है, इसलिए दुआ़ व तलब की ज़रूरत नहीं है। हम तो तेरी बन्दगी और तुझे पुकारते हैं, हम इसलिए दुआ़ करते हैं कि तेरे करम के मुह़ताज हैं और तेरे फ़ज़्ल व करम के लिए हमारे दिल में उम्मीद है।

हमारा ह़ाल उस ग़ुलाम जैसा है जो अपने मालिक के पास ख़ूब चापलूसी करता है ताकि वह मज़ीद अपनी नेअ़मतों से उसे नवाज़े और मालिक भी ऐसा जो अपने ग़ुलामों के थोड़े तलब पर नेअ़मतों की बारिश करता रहता है।

39 اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَي الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَاۗءِ ۝

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अल्लाह का शुक्र अदा किया कि उस ने बुढ़ापे में उन्हें दो बेटों से नवाज़ा ताकि उन के बाद दअ़वत इलल्लाह का काम करते रहें, लोगों को तौह़ीद की तरफ़ बुलाएँ और नमाज़ क़ायम करें।

40-41 رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۣ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاۗءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝

उन्होंने अपने रब से यह दुआ़ भी की कि वह उन्हें और उन की औलाद को नमाज़ का पाबन्द बना दे और उनकी तमाम दुआ़ओं को आ़मतौर पर और उन दुआ़ओं को ख़ासतौर पर क़ुबूल फ़रमा ले।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने यहाँ दुआ़ से मुराद अ़िबादत ली है और अल्लाह से यह भी तलब किया है कि वह उन्हें और उन के माँ-बाप को और दूसरे तमाम मुसलमानों को क़ियामत के दिन माफ़ कर दे।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि वालिदैन के लिए उन्होंने यह दुआ़ उस वक़्त की थी जब उन्हें जानते थे कि वह दोनों अल्लाह के दुश्मन हैं। एक क़ौल यह भी है कि उन की माँ मुसलमान हो गई थीं।

एक क़िरत में **"वालदी"** आया है यानी दुआ़ में सिर्फ़ अपने वालिद को मुराद लिया था। एक दूसरी क़िरत में **"वलादय्या"** आया है यानी मेरे दोनों बेटे इस्माईल और इस्ह़ाक़ को भी माफ़ कर दे। **वल्लाहु आ़लम**

आयत नं० 42 से 52 तक

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ؕ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿۴۲﴾ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ
طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿۴۳﴾ وَ اَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَاۤ اَخِّرْنَاۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ
دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْۤا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿۴۴﴾ وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ
فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿۴۵﴾ وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿۴۶﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ
اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۴۷﴾ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۴۸﴾
وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ﴿۴۹﴾ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿۵۰﴾ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ
مَّا كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۵۱﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْۤا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۵۲﴾

अनुवाद-

(42) और (आप) ऐसा न समझें कि अल्लाह इन ज़ालिमों के करतूतों से बेख़बर है, 'वह' तो केवल उनको उस दिन तक की मोहलत दे रहा है जबकि आँखें फटी की फटी रह जाएँगी; (43) अपने सिर उठाए दौड़ते होंगे; उनकी निगाहें खुद उनकी अपनी ओर भी न फिरेंगी और उनके दिल उड़ रहे होंगे। (44) और लोगों को उस दिन से डराइए, जबकि उन पर सज़ा उतरेगी; तब ज़ालिम लोग कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! हम को थोड़ी-सी देर की मोहलत दे दीजिए, ताकि हम तेरे बुलाने पर उठ खड़े हों और रसूलों की पैरवी करें" (जवाब मिलेगा) ''क्या तुम पहले क़समें नहीं खाया करते थे, हमारा तो ज़वाल (पतन) ही न होगा? (45) और उन्हीं की बस्तियों में तुम भी बसे थे, जिन्होंने अपने ऊपर जुल्म किया था और तुम जान चुके थे कि 'हमने' उन लोगों के साथ कैसा मामला किया था? और 'हमने' तुम्हारे लिए मिसालें भी बतला दी थीं"। (46) और वह अपनी चाल चल चुके हैं, और उनकी चालें अल्लाह की नज़र में हैं, और उनकी चालें ऐसी थीं कि पहाड़ों को भी (अपनी) जगह से टाल दें। (47) तो ऐसा न समझना कि अल्लाह जो अपने रसूलों से अ़हद कर चुका है उसके खिलाफ़ करेगा, बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त बदला लेने वाला है। (48) जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी, और आसमान भी, और वे सब के सब एक ज़बर्दस्त अल्लाह के सामने निकल खड़े होंगे। (49) और उस दिन तुम मुजरिमों को देखोगे कि ज़ंजीरों में जकड़े हुए हैं, (50) उनके कुर्ते गन्धक के होंगे और उनके चेहरों को आग ढाँक लेती होगी (51) ताकि अल्लाह हर एक जीव को उस की कमाई का बदला दे। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (52) यह लोगों के लिए सन्देश है ताकि उन्हें इसके ज़रिये डराया जाए और ताकि वे जान लें कि 'वही' अकेला 'इलाह' (उपास्य) है, और ताकि अक़्ल वाले नसीह़त ह़ासिल करें।

आयत नं० 42 से 52 तक की व्याख्या

42 وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ؕ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿۴۲﴾

यहाँ सम्बोधन नबी करीम (सल्ल०) को हैं, लेकिन मक़्सूद उन की उम्मत है और "ظالمون" से मुराद मक्का के मुश्रिकीन हैं यानी अगर अल्लाह ने उन्हें मोहलत दे दी है और अ़ज़ाब को उन से टाल दिया है तो इस से उन्हें इस ग़लतफ़हमी में नहीं रहना चाहिए कि वह उन से ग़ाफ़िल है या उन्हें दरगुज़र कर दिया है, बल्कि वह उन तमाम गुनाहों को एक-एक कर के उन के नाम-ए-आ़माल में जमा कर रहा है और जब वह दिन आ जाएगा कि मारे दहशत के लोगों की आँखें उठी की उठी रह जाएँगी तो वह सारे बुरे आ़माल उन के सामने पेश कर दिये जाएँगे।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयत में नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है और मदद व कामरानी का वादा किया गया है और कुफ़्फ़ारे मक्का को धमकी दी गई है कि अगर उन्होंने अपनी ह़ालत नहीं बदली तो बुरे अन्जाम का इन्तिज़ार करें।

43 مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿۴۳﴾

जब क़ियामत बरपा होगी तो मुर्दे अपनी क़ब्रों से निकल कर मैदाने ह़श्र की तरफ़ बड़ी तेज़ी से दौड़ेंगे जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः मआ़रिज आयत नं० (43) में फ़रमाया है:-

يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا कि "उस दिन लोग अपनी क़ब्रों से निकल कर ख़ूब तेज़ी से दौड़ेंगे" अपने सर ऊपर की ओर उठाए होंगे और आँखें खुली होंगी, पलकों में ह़रकत भी नहीं होगी और मारे घबराहट के दिल घबरा रहे होंगे।

उम्मुल् मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम नंगे पांव, नंगे बदन और बिना ख़त्ना के उठाए जाओगे। मैंने कहा हाँ, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! मर्द औ़रत एक दूसरे को देखेंगे नहीं? आप ने फ़रमाया कि वह वक़्त इतना सख़्त होगा कि इस बात के इरादे का किसी को होश ही न होगा? (बुख़ारी)

44 وَ اَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَاۤ اَخِّرْنَاۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْۤا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿۴۴﴾

यहाँ भी सम्बोधन नबी करीम (सल्ल०) को है। इन्कारी मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करते थे और जब कोई दाअ़ी ऐसी बात करता तो क़समें खाकर कहते कि दूसरी ज़िन्दगी का अ़क़ीदा झूठा है।

सूरः नह़्ल आयत नं० (38) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ कि "वह लोग बड़ी भारी क़समें खाकर कहा करते थे कि जो आदमी मर जाएगा, अल्लाह उसे दोबारा ज़िन्दा नहीं करेगा।"

45 وَسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿۴۵﴾

यानी तुम उन की बस्तियों को देख चुके हो जिन के रहने वालों ने अपने आप पर ज़ुल्म किया था।

जैसे- आ़द व समूद की बस्तियाँ। अल्लाह ने उन पर जो अ़ज़ाब नाज़िल किया था उस के निशानात अब तक बाक़ी हैं और इस की ख़बरें तवातुर के साथ तुम तक पहुँच चुकी हैं और जो कुछ उन्होंने किया था जिस की वजह से वह इस बुरे अन्जाम को पहुँचे वह सारी बातें तुम्हें मालूम हैं, फिर भी तुम में कोई ऐसा न हुआ जो नसीह़त ह़ासिल करता और अपनी इस्लाह़ (सुधार) की कोशिश करता।

46 وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿۴۶﴾

अहले मक्का नबी करीम (सल्ल०) के ख़िलाफ़ बड़ी ज़बरदस्त साज़िशें करते थे। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उन की वह तमाम साज़िशें लिखी जा रही हैं जिन का बदला उन्हें मिल कर रहेगा और वह साज़िशें इतनी ख़ौफ़नाक थीं कि पहाड़ों को उखाड़ (Destroy) फेंकतीं, लेकिन अल्लाह अपने नबी (सल्ल०) और दीने इस्लाम की ह़िमायत करता रहा और उन की चालें धरी की धरी रह गईं।

47 فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۴۷﴾

इस में बताया गया है कि अल्लाह तआ़ला अपने नबी को खुली मदद अ़ता फ़रमाएगा। क़ुर्आन करीम में इस का बयान कई जगह आया है। सूरः मोमिन आयत नं० (51) में है اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا कि "हम अपने रसूलों की ज़रूर मदद करेंगे"।

सूरः मुजाद्‌ला आयत नं० (21) में अल्लाह ने फ़रमाया है كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ؕ यानी "अल्लाह ने यह बात लिख दी है कि मैं और मेरे अम्बिया ज़रूर ग़ालिब रहेंगे।"

और सूरः अल् नूर आयत नं० (55) में फ़रमाया है وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ कि

"अल्लाह ने तुम में से अहले ईमान और नेक अ़मल करने वालों से वादा किया है कि उन्हें ज़मीन का वारिस बनाएगा।"

48 يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۴۸﴾

आयत नं० (44) में क़ियामत के दिन का ज़िक्र आया है, उसी का यहाँ दोबारा ज़िक्र हो रहा है कि उस दिन ज़मीन व आसमान का नक़्शा ही बदला होगा, पहाड़ रुई के गाले की तरह़ उड़ रहा होगा, समुद्र का पानी फूट पड़ेगा और ज़मीन बराबर हो जाएगी। आसमान के सितारे बिखर जाएँगे और सूरज और चाँद की रोशनी और लोग अपनी क़ब्रों से निकल कर अल्लाह तआ़ला के सामने ह़ाज़िर होने के लिए दौड़ रहे होंगे, ताकि वह उन्हें उन के आ़माल का बदला चुकाएँ।

उम्मुल् मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा कहती हैं मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इस आयत के बारे में पूछा (यौमे तबद्‌दुल.....) ऐ रसूलुल्लाह (सल्ल०)! उस वक़्त लोग कहाँ होंगे? आपने फ़रमाया, 'पुल सिरात पर'। **(मुस्लिम)**

49 وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿۴۹﴾

और मुजरिमों की ह़ालत यह होगी कि उन में से हर एक क़िस्म के मुजरिमीन को अलग-अलग

जमा किया जाएगा और उन के हाथ और पैर में बेड़ियाँ डाल कर उन की गर्दनों के साथ बाँध दिया जाएगा।

50 سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۝

और उन के लिबास गंधक के होंगे और उन के चेहरों पर आग लपक रही होगी। अल्लाह तआ़ला ने जहन्नमियों की शक्ल व सूरत की बुराई और उन की बद्तरीन ह़ालत बयान करने के लिए उन्हें उस खुजली वाले ऊँट से संज्ञा दिया है जिस के शरीर से पीप निकल रही हो और बद्बू आ रही हो और इलाज के लिए उस के सारे जिस्म पर गंधक मल दिया गया हो, जिस की बद्बू बहुत ही तेज़ हो और जिस का मन्ज़र बड़ा ही घिनौना होता है।

'जुमख़्शरी' ने लिखा है कि जहन्नमियों के जिस्मों पर गन्धक डाल दिया जाएगा जो क़मीस की तरह़ उन्हें ढांक लेगा, जिस से चार क़िस्म के प्रभाव पड़ेंगे। गन्धक की कटन और उस की जलन और आग तेज़ी के साथ उन के जिस्मों को जलाएगी और उन का रंग ख़ौफ़नाक होगा और तेज़ बद्बू उन के जिस्मों से फूटेगी और दुनिया के गन्धक और जहन्नम के गन्धक में वही फ़र्क़ होगा जो दोनों जगहों की आग में होगा और हर वह अ़ज़ाबे जहन्नम जिस की अल्लाह तआ़ला ने धमकी दी है, उस में और उस जैसे दुनियावी अ़ज़ाब में जो फ़र्क़ होगा उस का हम अन्दाज़ा नहीं कर सकते यानी कि इस दुनिया में उन के सिर्फ़ नाम ही प्रयोग होते हैं। अल्लाह तआ़ला अपनी नाराज़गी से हमें अपनी पनाह में रखे।

51 لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

क़ियामत के दिन मुजरिमों के साथ जो कुछ होगा इसलिए होगा ताकि अल्लाह तआ़ला हर शख़्स को उस के किये का बदला दे।

52 هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

यह सूरः नसीह़त और सीधी राह की तरफ़ रहनुमाई ह़ासिल करने के लिए काफ़ी है और जो शख़्स इस में ज़िक्र की हुई नसीह़तों पर अ़मल करेगा उसे दुनिया व आख़िरत की नेकबख़्ती ह़ासिल होगी और अल्लाह पर ईमान लाने वालों के लिए जो दलायल इस में बयान हुए हैं उन में ग़ौर व फ़िक्र करने से उन्हें यक़ीन हो जाएगा कि अल्लाह एक है, उस का कोई शरीक नहीं है।

बाज़ लोगों ने यहाँ क़ुर्आन करीम की तरफ़ इशारा मुराद लिया है इसलिए कि पूरा क़ुर्आन करीम हिदायत व रहनुमाई का सरचश्मा (स्रोत) है और अल्लाह तआ़ला की एकता पर दलालत करने वाले दलायल से भरा हुआ है। इस दूसरे क़ौल की पुष्टि इस सूरः की पहली आयत से भी होती है जिस में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः-

الٓرٰ ۣ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ यानी "यह क़ुर्आन एक ऐसी किताब है जिसे हम ने आप पर नाज़िल किया है ताकि आप लोगों को उन के रब के हुक्म से अंधेरे से निकाल कर रौशनी की तरफ़ ले आएँ।"

(भाग-15)

सूर-ए-ह़िज्र

(सूरः नं.15)

तफ़्सीर सूरः हिज्र

नाम- आयत नं० (80) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ और आयत नं० (84) तक उन्हीं अस्ह़ाबे हिज्र का कुफ़्र व हठधर्मी और फिर उन के बुरे अन्जाम को बयान किया गया है। इस सूरः का नाम उन्हीं (अस्ह़ाबे हिज्र) के नाम से लिया गया है।

नाज़िल होने का ज़माना-

'कुर्तुबी' ने आइम्मा तफ़्सीर का इस पर इत्तिफ़ाक़ नक़्ल किया है कि यह सूरः मक्की है और मज़ामीन (विषयों) पर ग़ौर करने से पता चलता है कि यह सूरः इब्राहीम के बाद नाज़िल हुई होगी, जिस वक़्त रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मक्का वालों के सामने अपनी दअ़वत पेश करते हुए कई साल गुज़र चुके थे।

इस सूरः में भी मक्की सूरतों की तरह़ अल्लाह के एक होने का यक़ीन, नुबूव्वत और रिसालत और मरने के बाद दोबारा उठाए जाने जैसे- बुनियादी मौज़ूआ़त (विषयों) पर बह़स की गई है। कुफ़्फ़ारे मक्का को नसीह़तों से आगे बढ़कर उन की हठधर्मी की वजह से धमकी दी गई है और नबी करीम (सल्ल०) को बार-बार तसल्ली दी गई है कि आप पिछले अम्बिया व रसूलों की तरह़ सब्र व इस्तिक़ामत (जमे रहने) से काम लें, आख़िर में कामियाबी आप ही को ह़ासिल होगी।

आयत नं० 1 से 25 तक

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝ ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ
الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝
وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ۝ لَوْمَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ
اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ۝ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ۝
وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝ لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۝ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۝ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ۝
وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ۝ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ
بِرٰزِقِيْنَ ۝ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ ۖ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً
فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ۝ وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ
وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝

अनुवाद-

(1) अलिफ़्- लाम्- रा, यह 'किताब' और स्पष्ट कुर्आन की आयतें हैं। (2) एक ऐसा वक्त आ जाएगा कि काफ़िर तमन्ना (इच्छा) करेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते? (3) (ऐ मुहम्मद) इनको रहने दीजिए, कि (दुनिया में) खा उड़ा लें; और उम्मीद उन्हें भुलावे में डाले रहे, बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा, (4) और 'हमने' कोई बस्ती नहीं उजाड़ी सिवाय, उसके जिसका फ़ैसला निश्चित था। (5) कोई गिरोह (जमाअ़त) न अपनी मुद्दत (अवधि) से आगे निकल सकता है, और न पीछे रह सकता है, (6) और वे कहते हैं "ऐ वह व्यक्ति जिस पर नसीह़त उतरी है, तुम तो दीवाने हो! (7) अगर तुम सच्चे हो तो हमारे सामने फ़रिश्तों को क्यों नहीं लाते?" (8) फ़रिश्तों को हम केवल सत्य के साथ ही उतारते हैं और (फ़ैसले के बाद) तब उन्हें मोहलत नहीं मिलेगी। (9) बेशक 'हम' ही ने नसीह़त-नामा उतारा है और 'हम' ही इसके निगहबान (संरक्षक) हैं। (10) और 'हम' आपसे पहले लोगों में भी रसूल भेज चुके हैं, (11) और कोई रसूल उनके पास ऐसा नहीं आया जिसका उन्होंने मज़ाक़ न उड़ाया हो। (12) इसी तरह 'हम' मुजरिमों के दिलों में उतार देते हैं; (13) यह इस (कुर्आन) पर ईमान नहीं लाते, और यह तरीक़ा पहले से चला आया है। (14) अगर 'हम' उन पर आसमान से कोई दरवाज़ा खोल दें और वे उसमें चढ़ने भी लगें, (15) फिर भी वे यही कहेंगे: "हमारी नज़रें बाँध दी गई हैं बल्कि हम पर किसी ने जादू कर दिया है"। (16) और 'हमने' आसमान में बुर्ज (तारों का समूह) बनाए, और उसको देखने वालों के लिए सुसज्जित भी किया; (17) और हर फिटकारे हुए शैतान से उसकी रक्षा की; (18) हाँ, अगर कोई चोरी-छिपे कुछ सुन ले, तो चमकता हुआ अंगारा उसका पीछा करता है। (19) और 'हमने' धरती को फैलाया और उसमें पहाड़ डाल दिये, और उसमें हर चीज़ नपे-तुले अन्दाज़ में उगाई। (20) और उसमें 'हमने' तुम्हारे गुज़र- बसर के सामान बनाए, और

उनके लिये भी जिनको रोज़ी देने वाले तुम नहीं हो। (21) और हर चीज़ के 'हमारे' पास ख़ज़ाने हैं, और 'हम' उसको एक निश्चित अन्दाज़े से उतारते रहते हैं। (22) और 'हम' ही बादल को बोझल करने वाली हवाएँ भेजते हैं फिर 'हम' ही आसमान से पानी उतारते हैं; फिर वह पानी तुम को पिलाते हैं, और तुम तो उसका खज़ाना नहीं रखते? (23) और 'हम' ही जिलाने वाले और मारने वाले हैं, और 'हम' ही सबके वारिस हैं। (24) और 'हम' तुम से पहले के लोगों को भी जानते हैं, और बाद के लोगों को भी जानते हैं। (25) और तुम्हारा 'रब' उन सब को इकट्ठा करेगा; 'वह' बड़ा इल्म वाला, हिकमत वाला है।

आयत नं० 1 से 25 तक की व्याख्या

1 الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝

الٓرٰ यह हुरूफ़ मुक़त्तआ़त हैं। इन के माने अल्लाह ही जानते हैं। تِلْكَ से इशारा इस सूरः की आयत या पूरे कुर्आन की आयतों की तरफ़ है और الْكِتٰبِ से मुराद या तो कुर्आने करीम है या आ़म आसमानी किताबें जिन में कुर्आन भी दाख़िल है।

2 رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝

इस आयते करीमा में नबी करीम (सल्ल०) के लिए ख़ुशख़बरी है कि आप का दीन ग़ालिब होकर रहेगा और एक दिन ऐसा आएगा कि कुफ़्फ़ार तमन्ना करेंगे कि काश! वह पहले ही मुसलमान हो चुके होते तो उन्हें भी आज वह मक़ाम ह़ासिल होता तो उन बड़े सह़ाबा को ह़ासिल है, जिन्होंने शुरु में ही इस्लाम की दअ़वत को क़ुबूल किया।

अल्लाह तआ़ला ने साबिक़ीन अव्वलीन के इसी मक़ाम की तरफ़ इशारा करते हुए सूरः अल् ह़दीद आयत नं० (10) में फ़रमाया हैः-

لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً कि जिन्होंने फ़तेह़ मक्का से पहले अल्लाह की राह में ख़र्च किया और जिहाद किया उन का मक़ाम बहुत ही ऊँचा है, दूसरे लोग उन के बराबर नहीं हो सकते हैं।

इस बशारत की रोशनी में नबी करीम (सल्ल०) की हिम्मत अफ़्ज़ाई भी की जा रही है कि आप दअ़वत के काम में सब्र व इस्तिक़ामत के साथ लगे रहें क्योंकि कामियाबी आप को ही ह़ासिल होगी।

'साह़िबे मुह़ासिनुल् तन्ज़ील' ने यही तफ़्सीर बयान की है, लेकिन 'इब्ने कसीर' ने लिखा है कि कुफ़्फ़ार यह तमन्ना तो मौत के वक़्त करेंगे या क़ियामत के दिन। जब ह़क़ीक़त खुलकर सामने आ जाएगी और उन्हें अपने दीन व अ़क़ीदा के ग़लत होने का यक़ीन हो जाएगा तब यह तमन्ना करेंगे।

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' और 'ह़ज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हुम' से मरवी है कि अल्लाह तआ़ला जब मुश्रिकीन और गुनाहगार मुसलमानों को जहन्नम में इकट्ठा कर देगा तो मुश्रिकीन मुसलमानों से कहेंगे कि तुम्हारी तौह़ीद तुम्हें काम नहीं आई तो अल्लाह तआ़ला नाराज़ होकर अपने फ़ज़्ल व रह़मत

से मुसलमानों को जहन्नम से निकाल देगा, उस वक़्त मुश्रिकीन इस तरह़ कहेंगे।

3 ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को सामने रखकर कुफ़्फ़ारे मक्का को तम्बीह की जा रही है और उन्हें धमकी दी जा रही है कि वह जानवरों की तरह़ ख़ूब खाएँ, पिएँ, ख़ूब मज़े करें, अपनी शहवतों को पूरी करें और उन की यह झूठी उम्मीद कि उन का अन्जाम बेहतर होगा, उन्हें तौबः व इस्तिग़फ़ार और ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल किये हुए है, वह जल्द ही क़ियामत के दिन अपने बुरे अन्जाम को पहुँच जाएँगे और जहन्नम उन का ठिकाना होगी।

4-5 وَمَا أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُومٌ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला जब किसी बस्ती को गुनाहों पर जमे रहने की वजह से तबाह करना चाहता है तो उस का एक वक़्त मुक़र्रर कर देता है और उस से पहले उस बस्ती वालों को तबाह होने के कारणों पर ख़ूब ग़ौर व फ़िक्र करने का मौक़ा देता है ताकि वह अपनी ह़रकतों से बाज़ आ जाएँ।

कोई भी ज़ालिम क़ौम उस के वक़्त मुक़र्रर से पहले हलाक नहीं होती और जब वह वक़्त आ जाता है तो एक लम्ह़े की देरी नहीं होती क्योंकि ह़ुज्जत पूरी हो चुकी होती है और उसे माफ़ किये जाने की कोई गुन्जाइश बाक़ी नहीं रहती।

6 وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۝

इस में कुफ़्फ़ारे मक्का का घमण्ड बयान किया जा रहा है कि वह नबी करीम (सल्ल०) का मज़ाक़ उड़ाते थे और कहते थे कि ऐ दावा करने वाले! क्या तुम पर कुर्आन उतरता है? तुम तो बिल्कुल पागल हो कि हम से अपने आप को रसूल मनवाने की बात करते हो और दावा करते हो कि आसमान से तुम पर वह्य नाज़िल होती है।

7-8 لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَائِكَةِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُّنظَرِينَ ۝

कुफ़्फ़ारे मक्का ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से हठधर्मी में आकर कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो आसमान से फ़रिश्तों को क्यों नहीं उतारते जो तुम्हारे सच्चाई की गवाही दे और तब्लीग़ व दअ़वत के काम में तुम्हारी मदद करें।

कुर्आन करीम ने उन की इसी बात को इस तरह़ भी बयान किया है कि:-

لَوْلَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونَ مَعَهُ نَذِيرًا ۝

यानी "उस के लिए कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेज दिया गया जो उस के साथ मिलकर तब्लीग़ व डराने का काम करता।" (अल् फ़ुर्क़ानः 7)

और फ़िरऔ़न ने मूसा (अ़लै०) के बारे में कहा था فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّن ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ कि "उस के लिए सोने के कंगन क्यों नहीं उतार दिये गये हैं या उस के साथ पंक्ति बाँध कर फ़रिश्ते क्यों

नहीं आए हैं।" (अल् ज़ुख़्रुफ़: 53)

अल्लाह तआ़ला ने आयत नं० (8) में फ़रमाया कि फ़रिश्ते तब्लीग़ व दअ़वत के लिए तो नहीं आते, मगर गुनाहगार क़ौमों पर अल्लाह का अ़ज़ाब नाज़िल करने के लिए आते हैं और उस वक़्त तुम्हें मोहलत नहीं दी जाएगी। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः अल् फ़ुर्क़ान आयत नं० (22) में फ़रमाया है يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا कि "जिस दिन यह लोग फ़रिश्तों को देख लेंगे, उस दिन उन गुनाहगारों को कोई ख़ुशी न होगी और फ़रिश्ते उन से कहेंगे कि आज जन्नत और उस की नेअ़मतें तुम पर ह़राम कर दी गई हैं।

9 إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحٰفِظُوْنَ ۝

इस आयते करीमा में इस तरफ़ इशारा है कि अगर कुफ़्फ़ारे मक्का ने इस क़ुर्आन का इन्कार कर दिया है तो क्या हुआ। इस के ख़िलाफ़ उन की कोई साज़िश कामियाब न होगी, क्योंकि यह अल्लाह का कलाम है। अल्लाह ही ने अपने रसूल (सल्ल०) पर उतारा है और वही इस की ह़िफ़ाज़त करता रहेगा।

इस में नबी करीम (सल्ल०) के लिए तसल्ली का सामान भी है और तमाम मुसलमानों के लिए बहुत बड़ी ख़ुशख़बरी भी है कि इस हिदायत की रोशनी को कोई बुझा न सकेगा, इस का नूर क़ियामत तक इन्सानों को राह दिखाता रहेगा। आँधियाँ चलेंगी, तूफ़ान उठेंगे, बड़ी-बड़ी साज़िशें होंगी, लेकिन जब तक क़ियामत नहीं आ जाती यह क़ुर्आन बिना किसी फ़ेर-बदल के बाक़ी रहेगा।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयत में दूसरा शब्द وَإِنَّا لَهُ لَحٰفِظُوْنَ दलालत करता है कि अल्लाह तआ़ला इस क़ुर्आन की क़ियामत तक ह़िफ़ाज़त करता रहेगा।

10-11 وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْأَوَّلِيْنَ ۝ وَمَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ إِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

यहाँ भी नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी जा रही है कि अगर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश आप को झुठलाते हैं और आप का मज़ाक़ उड़ाते हैं तो इस से आप को घबराना नहीं चाहिए। यह तो हमेशा से क़ौमों का तरीक़ा रहा है कि जब भी कोई रसूल किसी क़ौम के पास आया तो उन्होंने उस का मज़ाक़ उड़ाया।

12-13 كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जिस तरह़ हम ने पिछले मुजरिमों के दिलों में गुमराही को दाख़िल कर दिया था, कुफ़्फ़ारे मक्का के दिलों में भी कुफ़्र व गुमराही को दाख़िल कर देंगे। फिर वह इस क़ुर्आन पर ईमान नहीं लाएँगे और हमेशा से अल्लाह की यही सुन्नत जारी है कि वह ऐसी क़ौमों को हलाक करता रहा है और अपने रसूलों और उन पर ईमान लाने वालों को कामियाब बनाता रहा है।

14-15 وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝ لَقَالُوْٓا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ۝

इन दोनों आयतों का मक़्सद कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ख़िलाफ़ हुज्जत क़ायम करनी है कि अल्लाह तआ़ला

ने क़ुर्आने अ़ज़ीम को उन के दिलों में उसी तरह़ दाख़िल कर दिया है जिस तरह़ उन मोमिनों के दिलों में जिन्होंने क़ुर्आन की तस्दीक़ की, लेकिन काफ़िरों ने जान बूझ कर इस को झुठलाया और मोमिनों ने इस की तस्दीक़ (पुष्टि) की, दोनों ही ने अपना-अपना काम इ़ल्म व फ़हम के बाद किया ताकि काफ़िरों के पास कोई इस की हुज्जत बाक़ी न रहे कि उन्होंने तो क़ुर्आन की चमत्कारिक ख़ूबियों को समझा ही नहीं था, जिस तरह़ मुसलमानों ने समझा था।

अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अभी से यह बता दिया कि उन्होंने जान बूझ कर दुश्मनों की तरह़ क़ुर्आन का इन्कार किया है, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ कि अगर अल्लाह तआ़ला उन्हें साफ़ और रौशन राह पर डाल दे जिस का प्रभाव वह देख लें और फ़ौरन ईमान ले आएँ यानी उन के लिए आसमान का दरवाज़ा खोल दिया जाए और वह चढ़ते जाएँ और अल्लाह तआ़ला की अनोखी चीज़ों को देख लें जिस का लाज़मी नतीजा ईमान होना चाहिए तब भी वह ईमान नहीं लाएँगे और कहेंगे कि मुह़म्मद ने हमारी आँखों में जादू कर दिया है, जिस की वजह से ह़क़ीक़त हमारे सामने बदल कर आ रही हैं।

16-18 وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٦﴾ وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ﴿١٧﴾ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُبِينٌ ﴿١٨﴾

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने अपने क़ुद्रत के कुछ नमूने बयान फ़रमाए हैं। यहाँ "**बुरूज**" से मुराद सूरज व चाँद और सात सय्यारों (नक्षत्रों) के हैं, जिन की तअ़दाद तह़क़ीक़ के अनुसार बारह है।

अ़रबों के नज़्दीक सितारों का इ़ल्म बड़ा मुफ़ीद माना जाता था। उन्हीं के ज़रिये रास्तों, वक़्तों और ज़रख़ेज़ी व क़ह़त साली (सूखा) वग़ैरह का पता चलाते थे।

इस इ़ल्म वालों का ख़याल है सय्यारों और उन के मनाज़िल में उन की गर्दिश से मौसम की तब्दीली, सर्दी और गर्मी, पतझड़, बहार और बहुत सी मुफ़ीद मालूमात ह़ासिल की जाती हैं। चाँद व सूरज और सितारे आसमान की ज़ीनत भी हैं और अहले नज़र के लिए फ़िक्र व नज़र का सामान भी देते थे।

अल्लाह तआ़ला ने आसमान को मरदूद शैतान की पहुँच से मह़फ़ूज़ कर रखा है ताकि मल-ए-अअ़ला (आसमान) की बातें न सुन सकें और अगर उन में से कोई आगे बढ़कर सुनने की कोशिश करता है तो आग का अंगारा उस का पीछा कर के उसे ख़त्म कर देती है।

'ह़ज़रत ह़सन बसरी' वग़ैरह की यही राय है कि इस से पहले कि वह मल-ए-अअ़ला की कोई सुनी हुई बात अपने पीछे वाले जिन को बताए 'शिहाब साक़िब' उसे क़त्ल कर देता है, लेकिन सह़ीह़ बुख़ारी की ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से मरवी ह़दीस से साबित होता है कि कभी तो वह अपने पीछे वाले जिन को सुनी हुई बात बता देता है, फिर 'शिहाब साक़िब' उस का पीछा कर के उसे क़त्ल कर देता है और कभी बात बताने से पहले ही 'शिहाब' उसे क़त्ल कर देता है।

कहते हैं कि यही वजह है कि आसमान की ख़बरें अम्बिया व रसूलों के अ़लावा दूसरों को नहीं मिलती हैं और इसीलिए कहानत (भविष्य की बताने वाली बातों) की कोई ह़क़ीक़त नहीं है।

19 وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ۝

अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को इन्सानों के लिए फ़र्श बनाकर फैला दिया और बड़े-बड़े पहाड़ों को उस के ऊपर जमा दिया ताकि ह़रकत न करें और अपनी ह़िक्मत के तक़ाज़ों के मुताबिक़ उस पर पौधे उगाए इस तौर पर कि इन चीज़ों में कोई शख़्स न कमी ला सकता है और न ज़्यादती और जिस तरह़ उन्हें पैदा किया है, उस से उ़म्दह कोई कैफ़ियत नहीं हो सकती है।

20-21 وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ۝ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ ۖ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝

और इन्सानों के खाने-पीने, पहनने की चीज़ें और दूसरी जितनी ज़रुरियाते ज़िन्दगी हो सकती हैं उन सब को मुहय्या किया, जानवरों, चौपायों और दूसरी तमाम मख़्लूक़ात के लिए रोज़ी फ़राहम किया और अपनी कुद्रत पर दलालत करते हुए फ़रमाया कि उस के पास हर चीज़ का ख़ज़ाना है, वह जब चाहे और जितना चाहे ज़ाहिर कर दे, लेकिन वह आसमान से ज़मीन पर अपने बन्दों के लिए उतना ही उतारता है जितना उस की मर्ज़ी होती है।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः शूरा आयत नं० (27) में फ़रमायाः-

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ۔ कि "अगर अपने बन्दों के लिए रोज़ी को ख़ूब बढ़ा देता तो वह ज़मीन पर सरकशी करने लगते, लेकिन अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जितनी चाहता है उतनी देता है।"

22-23 وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ۝ وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ۝

और ठंडी हवाओं के ज़रिये बादल को बारिश के पानी में बदल देता है, फिर उसे ज़मीन पर बरसाता है, जिस से इन्सान ख़ुद फ़ायदा उठाता है और अपनी ज़मीनों और जानवरों को भी फ़ायदा पहुँचाता है।

इन्सान इस बारिश के ईजाद करने और इसे ज़मीन पर बरसाने से बिल्कुल बेबस है और न ही वह उसे वादियों, पहाड़ों, चश्मों और कुंओं तक पहुँचाकर आइन्दा के लिए महफ़ूज़ करने की कुद्रत रखता है। वह तो अल्लाह तआ़ला है जो इन तमाम बातों पर कुद्रत रखने वाला है वही ज़िन्दा करता और मारता है और तमाम मख़्लूक़ात की हलाकत के बाद सिर्फ़ उसी की ज़ात बाक़ी रहती है।

24-25 وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۚ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝

अल्लाह तआ़ला अगले और पिछले तमाम इन्सानों की ख़बर रखता है। ह़ज़रत आदम (अ़लै०) की पैदाइश के वक़्त से जितने लोग दुनिया में आए और गुज़र गये, फिर जितने लोग क़ियामत तक पैदा होंगे सब की ख़बर रखता है।

कौन अम्बिया पर ईमान लाया? किस ने अल्लाह की बन्दग़ी की और किस ने नाफ़रमानी की? कोई बात भी उस से छुपी हुई नहीं है और यह ह़क़ीक़त जिस तरह़ उस के क़ुद्रत की दलील है, उसी तरह़ इस के कमाले इ़ल्म की भी दलील है और क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला अव्वल व आख़िर तमाम इन्सानों को उन की कस़्रत के बावजूद मैदाने मह़शर में जमा करेगा और अपने इ़ल्म व ह़िक्मत के मुताबिक़ उन से मामला करेगा, किस आदमी के अन्दर कौन सी बुरी सिफ़ात हैं उस से कुछ भी छुपा हुआ नहीं है सब को उन के आ़माल के मुताबिक़ बदला देगा।

आयत नं० 26 से 50 तक

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۞ وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ۞ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ
اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۞ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۞ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ
اَجْمَعُوْنَ ۞ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ۞ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ۞ قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ
لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۞ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۞ وَّاِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۞ قَالَ
رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۞ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۞ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ۞ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاُزَيِّنَنَّ
لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۞ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ۞ قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ ۞ اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ
عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ۞ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۞ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ
مَّقْسُوْمٌ ۞ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۞ اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ۞ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ
مُّتَقٰبِلِيْنَ ۞ لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ۞ نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۞ وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ۞

अनुवाद-

(26) और 'हमने' इन्सानों को सड़े हुए गारे की खनकती हुई मिट्टी से बनाया है; (27) और जिन्नों को इससे पहले लू रुपी आग से पैदा कर चुके थे। (28) और जब आप के 'रब' ने फरिश्तों से कहा कि, 'मैं' एक बशर (इन्सान) को खनकती हुई मिट्टी से, जो सड़े हुए गारे की बनी होगी पैदा, करने वाला हूँ"। (29) तो जब 'मैं' उसे पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी 'रुह' फूँक दूँ, तो तुम उसके आगे सज्दे में गिर जाना"। (30) तो सब के सब फ़रिश्तों ने मिलकर सज्दः किया, (31) सिवाय इब्लीस के, उसने सज्दः करने वालों के साथ शामिल होने से इन्कार कर दिया। (32) (अल्लाह ने) फ़रमाया, ''ऐ इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि तू सज्दः करने वालों में शामिल न हुआ"? (33) (शैतान ने) कहा, ''मैं ऐसा नहीं हूँ कि ऐसे बशर (इन्सान) को सज्दः करुँ, जिसको 'तू' ने सड़े हुए गारे की खनकती हुई मिट्टी से बनाया"। (34) (अल्लाह ने) फ़रमाया, ''अच्छा 'तू' दूर हो जा यहाँ से, तू मर्दूद (दुष्ट) है! (35) और तुझ पर बदले के दिन (क़ियामत के दिन) तक धिक्कार है"। (36) (शैतान ने) कहा, ''ऐ मेरे 'रब' मुझको उस दिन तक के लिए मोहलत दीजिए, जबकि लोग उठाए जाएँगे"। (37) (अल्लाह ने) फ़रमाया, "अच्छा, तुझे मोहलत दी जाती है, (38) उस दिन तक के लिए, जिसका समय निर्धारित है"। (39) कहा, "ऐ मेरे 'रब' चूँकि 'आपने' मुझे सीधे मार्ग से विचलित (गुमराह) कर दिया है, इसलिए मैं ज़मीन में (आदम और उसकी औलाद को) उन को (गुनाह) सजा कर दिखाऊँगा, और उन सब को सीधे रास्ते से बहका दूँगा; (40) सिवाय उनके जो तेरे चुने हुए मुख़्लिस बन्दे होंगे। (41) फ़रमाया, 'मुझ' तक पहुँचने का यही सीधा रास्ता है"। (42) 'मेरे' बन्दे पर तो तेरा कुछ ज़ोर न चलेगा, सिवाय उन बहके हुए लोगों के जो तेरे पीछे चल पड़ें। (43) और ऐसे तमाम लोगों के लिए, जहन्नम का वादा है। (44) उस (दोज़ख) के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए, उनमें से जमाअतें तक़सीम कर दी गयी हैं। (45) बेशक, परहेज़गार बाग़ों और चश्मों (स्रोतों) में होंगे; (46) (उनसे कहा जाएगा) दाख़िल हो जाओ, 'सलामती (और) अमन' के साथ; (47) और उनके दिलों में जो कुदूरत (ईर्ष्या) होगी उसे "हम" दूर

कर देंगे (तो) वे भाई-भाई बनकर एक-दूसरे के आमने-सामने तख्तों पर बैठे होंगे; (48) न उनको वहाँ किसी तरह का दुःख होगा, और न वे वहाँ से निकाले जाएँगे। (49) मेरे बन्दों को बता दीजिए! कि मैं बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला हूँ; (50) और यह कि मेरा अज़ाब बड़ा दर्दनाक अज़ाब है"।

आयत नं० 26 से 50 तक की व्याख्या

26-27 وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۞ وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ السَّمُومِ ۞

इन दोनों आयतों में भी अल्लाह तआ़ला ने अपनी कुद्रत पर दलील दिया है और मरने के बाद उठाए जाने पर अ़क़्ली दलील क़ायम की है कि जिस मिट्टी के गारे ने आदम की पैदाइश के वक़्त उनके अ़मल और रुह़ को क़ुबूल किया, वह यक़ीनन अल्लाह के हुक्म से दोबारा इन बातों को क़ुबूल करेगा और ज़िन्दा होकर मैदाने महशर की तरफ़ दौड़ेगा।

صَلْصَالٍ उस मिट्टी को कहते हैं जो ऐसी सूखी हो कि ज़रा सी ठोकर से उस में खनक की आवाज़ पैदा हो और حَمَإٍ जो सड़कर काली हो गई हो और مَّسْنُونٍ ह़मा की सिफ़त (गुण) है, जिस का अर्थ बदली हुई और सड़ी हुई है और السَّمُومِ का अर्थ ऐसी शदीद गर्म हवा, जो सख़्त गर्मी की वजह से रगों में घुस जाती है।

28-33 وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۞ فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ۞ فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۞ إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰ أَن يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ۞ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ۞ قَالَ لَمْ أَكُن لِّأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۞

ह़ज़रत आदम (अ़लै०) को अल्लाह तआ़ला ने उन की पैदाइश के वक़्त जो इ़ज़्ज़त बख़्शी उस का ज़िक्र हो रहा है कि फ़रिश्तों को उन्हें सज्दः करने का हुक्म दिया गया तो सब उन की तअ़ज़ीम के लिए सज्दे में गिर गये, लेकिन इब्लीस ने कुफ़्र व हठधर्मी और ह़सद (ईर्ष्या) व घमण्ड की वजह से इस हुक्म को न माना और अल्लाह से कहा कि मैं आदम को सज्दः नहीं करुँगा, इसलिए कि उसे तूने सड़ी हुई मिट्टी के गारे से पैदा किया है जबकि मुझे आग से पैदा किया है, जो मिट्टी से अफ़ज़ल (उत्तम) है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि शब्द 'صَلْصَالٍ' को बार-बार दोहराने से मक़्सूद इन्सान को उस की अस्ल की याद दहानी कराते रहना है ताकि घमण्ड में आकर सरकशी की ज़िन्दगी न अख़्तियार करे।

34-35 قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۞ وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ۞

مِنْهَا की ज़मीर से मुराद 'मुकर्रम फ़रिश्तों की जमाअ़त' है और رَجِيمٌ से मुराद 'हर ख़ैर और हर तरह़ इ़ज़्ज़त व तक्रीम' से मह़रूम किया गया है।

उ़लमा लिखते हैं कि क़ियामत के दिन तक से मुराद यह नहीं है कि उस दिन के बाद अल्लाह तआ़ला

की लअ़नत इब्लीस से ख़त्म हो जाएगी बल्कि इस से मुराद हमेशा और कभी न ख़त्म होने वाली लअ़नत है।

36-38 قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿٣٧﴾ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾

इब्लीस ने जब क़ियामत के दिन तक अपने ऊपर लअ़नत की बात सुनी तो समझा कि उस का अ़ज़ाब उस वक़्त तक टाल दिया गया है, इसीलिए उस ने अल्लाह से तलब किया कि उसे उस दिन तक मौत न आएगी यानी उस ने तलब किया कि उसे कभी भी मौत न आए इसलिए कि क़ियामत के दिन के बाद किसी को मौत नहीं आएगी तो अल्लाह तआ़ला ने उसे क़ियामत तक की मोहलत दे दी।

बाज़ लोगों ने कहा है कि आयत नं० (38) में وَقْتِ الْمَعْلُومِ से मुराद क़ियामत आने से पहले का वक़्त है यानी क़ियामत आ जाने के बाद इब्लीस भी मर जाएगा और दूसरे जिन्नों और इन्सानों की तरह दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा।

39-44 قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

यानी तूने मुझे गुमराह कर दिया है तो मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि जब तक आदम की औलाद दुनिया में रहेगी मैं दुनिया को उन के सामने ख़ूबसूरत बनाकर पेश करुँगा और उन्हें गुनाहों पर उभारुँगा, लेकिन जो तेरे नेक बन्दे होंगे और अपने दीन और आ़माल को केवल अल्लाह के लिए करेंगे उन पर मेरा दाँव नहीं चलेगा, तो अल्लाह तआ़ला ने जवाब दिया कि मुझ तक पहुँचने की यही सीधी राह है, जो इस पर चलता रहेगा वह तुम्हारे बहकावे में नहीं आएगा।

हाँ, जो लोग राहे ह़क़ से भटके हुए होंगे और गुमराही जिन का मिज़ाज बन चुका होगा वह तुम्हारे साज़िश का शिकार हो जाएँगे। ऐसे तमाम लोगों का ठिकाना जहन्नम होगा जिस के सात दरवाज़े होंगे, हर दरवाज़े से जहन्निमयों की एक निश्चित संख्या अपने बुरे आ़माल के मुताबिक़ दाख़िल होगी।

'ह़ज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु' और 'इक्रिमा' से मरवी है कि सात दरवाज़ों से मुराद जहन्नम के सात तब्क़े (परत) हैं और 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' की रिवायत के मुताबिक़ उन के और उन में दाख़िल होने वालों के नाम यह हैं:-

जहन्नम जो सब से ऊपर का भाग है अहले तौह़ीद के लिए है। जो अपने गुनाहों की सज़ा भुगतने के बाद अल्लाह की ख़ास रह़मत से जहन्नम से निकाल कर जन्नत में भेज दिये जाएँगे। 'लज़ा' यहूद के लिए 'हुत्मा' नस्रानियों के लिए 'सअ़ीर' बेदीनों के लिए 'सक़र' मजूसियों के लिए 'जह़ीम' मुश्रिकों के लिए 'हाविया' मुनाफ़िक़ों के लिए जो सब से नीचे का भाग है।

45-46 إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿٤٦﴾

क़ुर्आन करीम अपने मशहूर तरीक़े के मुताबिक़ जहन्नम और अहले जहन्नम का ह़ाल बयान करने के बाद अब अहले जन्नत का ह़ाल बयान कर रहा है। जम्हूर सह़ाबा और ताबिअ़ीन के नज़्दीक यहाँ "مُتَّقِيْنَ" से मुराद अल्लाह के साथ शिर्क करने से बचने वाले हैं और एक क़ौल के मुताबिक़ उन से मुराद वह लोग हैं जो तमाम गुनाहों से बचते हैं। अल्लाह तआ़ला का यह वादा है, जिस की ख़बर इस आयत में दी गई है। अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उन से कहेगा कि तुम लोग पूरी सलामती के साथ और तमाम आफ़ात व बलाओं से महफ़ूज़ (सुरक्षित) जन्नत में दाख़िल हो जाओ।

47-48 وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝ لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला अहले जन्नत के सीनों में कोई ऐसा जज़्बा नहीं रहने देगा जो उन की ख़ुशियों को कुचल डाले और उन के दिल व दिमाग़ में कुद्रत पैदा करे, इसलिए उन के सीनों से दुश्मनी और ह़सद व कीना (ईर्ष्या) को निकाल देगा और जब उन के सीने पाक हो जाएँगे तो आपस में भाई बन कर आमने-सामने कुर्सियों पर बैठेंगे, वहाँ उन्हें कोई थकन और कोई परेशानी नहीं होगी।

इसलिए कि जन्नत में कोई ऐसी बात नहीं होगी जो तक्लीफ़ का ज़रिया हों, वहाँ तो ख़ुशियाँ ही ख़ुशियाँ और राह़त ही राह़त होगी। अहले जन्नत जिस चीज़ की भी तमन्ना करेंगे, ख़ुद-ब-ख़ुद उन के पास आ जाएगी और अहले जन्नत वहाँ से कभी भी नहीं निकाले जाएँगे।

49-50 نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ۝

पिछली आयतों में जन्नत व जहन्नम की जो बात आई है यह दोनों आयतें उसी से सम्बन्धित हैं।

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब कर के कहा कि आप मेरे बन्दों को इस बात की ख़बर दे दें कि जो अपने गुनाहों से तौबः करेगा और ईमान व अच्छे अ़मल की ज़िन्दगी अपनाएगा उस के गुनाहों को मैं माफ़ कर दूँगा और उस के ह़ाल पर रह़म करुँगा और जो शख़्स अपने कुफ़्र व हठधर्मी पर इस्रार करेगा तो उसे जान लेना चाहिए कि मेरा अ़ज़ाब बड़ा ही दर्दनाक है।

'इमाम बुख़ारी' ने ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि अल्लाह तआ़ला ने जब 'रह़मत' को पैदा किया तो उसे सौ ह़िस्सों में तक़्सीम कर दिया। निन्यान्वें ह़िस्सों को अपने पास महफ़ूज़ रखा और एक ह़िस्से को अपनी तमाम मख़्लूक़ात में तक़्सीम कर दिया।

'ह़ज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु' से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, जब अल्लाह तआ़ला ने तख़्लीक़ मुकम्मल कर ली तो उस ने अपनी किताब में लिखा जो कि उस के पास अ़र्श पर है, "मेरी रह़मत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब आ गई"। **(बुख़ारी)**

अल्लाह के पास रह़मत का जो ख़ज़ाना है, अगर उस का इ़ल्म काफ़िर को हो जाए तो कभी अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद न हो और अल्लाह के पास अ़ज़ाब की जो मिक़्दार है अगर उसे मोमिन जान ले तो जहन्नम की आग से कभी अपने आप को सन्तुष्ट न समझे। मालूम हुआ कि मोमिन को उम्मीद और नाउम्मीदी, ख़ौफ़ व रज़ा के दर्मियान की जो राह है उसे अख़्तियार करना चाहिए। न ऐसा कि अल्लाह की रह़मत पर भरोसा कर के ईमान व अ़मल की राह को छोड़ दे और न ही उस की रह़मत से नाउम्मीद हो।

आयत नं० 51 से 77 तक

وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ۝ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ ۝ قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝
قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ۝ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ۝ قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ
رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ۝ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۝ اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا
لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ؕ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلُوْنَ ۝ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝ قَالُوْا
بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۝ وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا
يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ۝ وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ۝ وَجَآءَ
اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ۝ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ۝ قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ۝ فَجَعَلْنَا
عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ۝ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ۝ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

अनुवाद-

(51) और उन्हें इब्राहीम के मेहमानों की ख़बर (सुना) दीजिए; (52) जबकि वह उनके पास आए और कहा, "सलाम हो," (तो) बोले ''हमें तो तुमसे डर लग रहा है"। (53) (फ़रिश्ते) बोले, ''आप डरिए नहीं, हम आप को एक ज्ञानी लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं"। (54) कहा, "क्या आप मुझे इस उम्र में बशारत देते हैं, कि मुझ पर बुढ़ापा आ चुका है, तो यह किस बात की ख़ुशख़बरी है?" (55) (फ़रिश्तों ने) कहा, "हम आपको सच्ची ख़ुशख़बरी दे रहे हैं, तो आप नाउम्मीद न हों"। (56) (इब्राहीम ने) कहा, ''अपने 'रब' की रहमत से नाउम्मीद होता ही कौन है? सिवाय गुमराहों के; (57) (इब्राहीम ने) कहा, ''ऐ फ़रिश्तों (दूतों) आप किस मुहिम (अभियान) पर आए हैं"। (58) (फ़रिश्तों ने) कहा, ''हम एक मुजरिम क़ौम की ओर भेजे गये हैं, (59) सिवाय लूत के घर वालों के, उन सब को तो हम बचा लेंगे, (60) सिवाय उनकी पत्नी के, 'हमने' निश्चित कर दिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में रहेगी"। (61) फिर जब यह दूत, (फ़रिश्ते) लूत के यहाँ पहुँचे। (62) तो (लूत ने) कहा, ''आप लोग अजनबी मालूम होते हैं"। (63) (फ़रिश्तों ने) कहा, ''नहीं, बल्कि हम लोग आप के पास वही चीज़ लेकर आए हैं, जिसके बारे में यह लोग सन्देह में थे"। (64) और हम आप के पास यक़ीनी चीज़ ले कर आए हैं, और हम बिल्कुल सच्चे हैं। (65) अतः अब आप अपने घर वालों को लेकर रात के किसी हिस्से में निकल जाइए, और आप उनके पीछे- पीछे चलिए और आप में से कोई व्यक्ति पीछे मुड़ कर न देखे, और जहाँ का हुक्म आप को मिला है, उसी ओर चले जाइए।'' (66) और 'हमने' लूत के पास यह फ़ैसला भेज दिया है, सुबह होते-होते उन लोगों की जड़ ही कट जाएगी। (67) और इतने में शहर के लोग ख़ुशियाँ मनाते हुए आ पहुँचे। (68) (लूत ने) कहा, ''यह मेरे मेहमान हैं तुम लोग मेरी रुसवाई (बेइज़्ज़ती) न करो, (69) अल्लाह से डरो, और मुझे रुसवा न करो; (70) (फ़रिश्तों ने) कहा, ''क्या हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों का ज़िम्मा लेने से मना नहीं किया?" (71) (लूत ने) कहा, ''अगर

तुम्हें कुछ करना ही है, तो यह मेरी (क़ौम की) बेटियाँ मौजूद हैं"। (72) आप के जान की क़सम, वे अपनी बद्मस्तियों में अन्धे हो गये थे, (73) बस सूरज के निकलते-निकलते एक भयंकर आवाज़ ने आ पकड़ा। (74) और 'हमने' उस बस्ती को उलट-पलट कर दिया, और उन पर कंकरीले पत्थर बरसाए। (75) बेशक इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं; (76) और वह (बस्ती) तो एक आबाद रास्ते पर है। (77) बेशक इसमें ईमान लाने वालों के लिए बड़ी निशानी है।

आयत नं० 51 से 77 तक की व्याख्या

51-56

وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرٰهِيمَ ۝ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلٰمًا ۖ قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ۝ قَالُوا لَا
تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيمٍ ۝ قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلٰى أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ۝ قَالُوا
بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْقٰنِطِينَ ۝ قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّآلُّونَ ۝

जिन फ़रिश्तों को अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत लूत (अ़लै०) की क़ौम को हलाक करने के लिए भेजा था, वह पहले ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के पास गये और उन्हें ह़ज़रत इस्ह़ाक़ (अ़लै०) की ख़ुशख़बरी दी थी चूंकि इस वाक़िये में ख़ौफ़ व उम्मीद, ख़ुशख़बरी और क़ौमे लूत के हलाकत की ख़बर थी, इसलिए इस से पहले की आयत के विषय की पुष्टि हो रही है कि अल्लाह तआ़ला नेक लोगों के लिए ग़फ़ूर (बहुत माफ़ करने वाला) रह़ीम (रह़म करने वाला) है और ज़ालिमों के लिए उस का अ़ज़ाब बहुत ही दर्दनाक है।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को ख़ुशख़बरी-

यह वाक़िआ़ पूरी तफ़्सील के साथ सूरः हूद में गुज़र चुका है। फ़रिश्ते ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के पास इन्सानों की शक्ल में मेहमान बनकर आए और सलाम किया तो वह बहुत ख़ुश हुए लेकिन जब उन्होंने खाने और गोश्त की तरफ़ हाथ नहीं बढ़ाया तो ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को उन के बारे में शक हुआ और डरें कि शायद उन की नियत अच्छी नहीं है तो फ़रिश्तों ने उन्हें बताया कि हम अल्लाह के

फ़रिश्ते हैं, आप डरें नहीं और हम आप को ऐसे बेटे की ख़ुशख़बरी देते हैं जो बड़ा इल्म वाला होगा।

हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने कहा कि मुझे तो बुढ़ापे के बावजूद ऐसी ख़ुशख़बरी दे रहे हो, यह कैसी अ़जीब बात है? और कैसी अनहोनी ख़ुशख़बरी दे रहे हो? फ़रिश्तों ने ताकीद के तौर पर कहा कि हम ने आप को ऐसी बात की ख़ुशख़बरी दी है जिस के न होने का कोई सवाल ही नहीं होता है, इसलिए कि यह अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला और उस का वादा है और वह हर चीज़ पर क़ुद्रत रखता है, आप नाउम्मीद न हों तो हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने जवाब दिया कि मैं हरगिज़ नाउम्मीद नहीं हूँ नाउम्मीद होना तो गुमराहों का तरीक़ा है, मैं तो तुम्हारी ख़ुशख़बरी के मुताबिक़ उम्मीद करता हूँ कि अल्लाह तआ़ला मुझे बेटा देगा, मुझे तो हैरत केवल इसलिए होती है कि आ़मतौर पर ऐसा नहीं होता है।

57-60 قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ۝ إِلَّا آلَ لُوطٍ ۖ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا ۙ إِنَّهَا لَمِنَ الْغَابِرِينَ ۝

हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने समझ लिया था कि फ़रिश्ते सिर्फ़ उन्हें बेटे की ख़ुशख़बरी देने के लिए आसमान से नहीं उतरते ज़रूर कोई और बात भी है, इसलिए कि उन्होंने पूछा कि तुम्हारे आने का दूसरा मक़्सद क्या है? तो उन्होंने बताया कि हम एक मुजरिम व गुनाहगार क़ौम को हलाक करने के लिए भेजे गये हैं, फिर फ़ौरन कह दिया कि जो मुजरिम नहीं थे और ताकीद के तौर पर कहा कि हम हज़रत लूत (अ़लै०) की क़ौम को ज़रूर निजात देंगे और आले लूत से मुराद उन पर ईमान लाने वाले थे, इसीलिए हज़रत लूत (अ़लै०) की बीवी के बारे में तुरन्त ही कहा गया कि वह काफ़िरों के साथ रह जाएगी और ज़रूर हलाक की जाएगी, इसलिए कि वह ईमान नहीं लाई थी।

61-64 فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ ۝ قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝ وَأَتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝

जब फ़रिश्ते ख़ूबसूरत नौजवानों की शक्ल में हज़रत लूत (अ़लै०) के पास आए तो उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें नहीं पहचान रहा हूँ और न तुम्हारे आने की वजह मुझे मालूम है, कहीं तुम लोग किसी बुरी नियत से तो नहीं आए हो? तो फ़रिश्तों ने कहा कि हम वह अ़ज़ाब लेकर आए हैं जिस में आप की क़ौम के लोग शक करते थे और आप को झुठलाते थे, हम वह चीज़ ज़रूर लेकर आए हैं जिस में किसी शुब्हा की कोई गुन्जाइश नहीं है और जो ख़बर हम आप को दे रहे हैं उस में हम बिल्कुल सच्चे हैं।

65 فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ۝

आप रात के आख़िरी पहर में अपने मुसलमान साथियों को लेकर यहाँ से निकल जाइए और आप उन के पीछे रहिए ताकि उन्हें तेज़ जल्दी चलने पर उभारते रहें और ख़याल रखिए कि कोई पीछे न रह जाए और न कोई पीछे मुड़कर देखे और शाम के उस इलाक़े में चले जाइए जहाँ जाने का आप लोगों को हुक्म दिया गया है।

कुछ लोगों का ख़याल है कि वह लोग मिस्र चले गये। एक तीसरा क़ौल है कि अल् ख़लील शहर की तरफ़ चले गये और किसी ने कहा है कि क़ौमे लूत की एक दूसरी बस्ती की तरफ़ चले गये।

66-71 وَقَضَيْنَآ إِلَيْهِ ذٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ۝ وَجَآءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ قَالَ إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ۝ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ ۝ قَالُوٓا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعَٰلَمِينَ ۝ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيٓ إِن كُنتُمْ فَٰعِلِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत लूत (अ़लै०) को वह्य के ज़रिये इस अ़ज़ाब की ख़बर पहले ही दे दी थी कि सुबह़ के वक़्त तमाम काफ़िर हलाक हो जाएँगे और उन में से कोई नहीं बचेगा।

जब (सुदूम) शहर वालों को ख़ूबसूरत नौजवानों के आने की ख़बर मिली तो ख़ुश होने लगे कि आज अच्छा मौक़ा हाथ आया है। ह़ज़रत लूत (अ़लै०) ने उन से कहा कि यह मेरे मेहमान हैं, अल्लाह के लिए इन के साथ बद्कारी कर के मुझे रुस्वा न करो, इसलिए कि मेहमान की रुस्वाई मेज़बान की रुस्वाई होती है और इन के मामले में अल्लाह से डरो और मुझे ज़लील न करो तो उन लोगों ने कहा, क्या हम ने तुम्हें कहा नहीं है कि जब हम किसी के साथ बद्कारी करना चाहें तो हमें रोका न करो?

एक क़ौल यह है कि उन्होंने ह़ज़रत लूत (अ़लै०) को पहले से मना कर रखा था कि वह लोगों को अपना मेहमान न बनाया करें? ह़ज़रत लूत (अ़लै०) ने कहा, अगर तुम्हें अपनी इच्छा पूरी करनी है तो यह हमारी बेटियाँ (यानी क़ौम की लड़कियाँ) हैं इन से तुम लोग शादी कर लो।

(सूरः हूद की तफ़्सीर में इस के बारे में तफ़्सील के साथ लिखा जा चुका है।)

72 لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) की बाक़ी ज़िन्दगी की क़सम खाकर कहा कि 'सुदूम' बस्ती के रहने वाले बेशक अपनी गुमराहियों में भटक रहे थे। बाज़ मुफ़स्सिरीन का इस पर इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है कि यहाँ अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) के ज़िन्दगी की क़सम खाई है, लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि इस बात से कौन सी चीज़ रुकावट है कि अल्लाह तआ़ला ह़ज़रत लूत (अ़लै०) के ज़िन्दगी की क़सम खाए और जब अल्लाह ह़ज़रत लूत (अ़लै०) के ज़िन्दगी की क़सम खा सकता है तो नबी करीम (सल्ल०) की क़सम बदरजा औला खा सकता है।

'क़ुर्तुबी' ने भी इस राय की ताईद की है और कहा है कि ह़ज़रत लूत (अ़लै०) के क़िस्से के दर्मियान नबी करीम (सल्ल०) के ज़िन्दगी की क़सम खाना जुमला मोअ़तरज़ा (अलग से शब्द) हो जाएगा। 'ह़ाफ़िज़ इब्ने अल् क़य्यिम' (रह़०) ने अपनी किताब 'अक़्सामुल् क़ुर्आन' में जम्हूर मुफ़स्सिरीन की राय की ताईद की है बल्कि यहाँ 'ह़याते लूत' मुराद लेने को बातिल क़रार दिया है।

'अबू अल् जौज़ी' ने इस आयत की तफ़्सीर में 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत की है कि अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) की ज़िन्दगी के अ़लावा कभी किसी दूसरे की ज़िन्दगी की क़सम नहीं खाई है।

क़ौमे लूत पर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब एक ज़बरदस्त चीख़ की शक्ल में सुबह़ के वक़्त नाज़िल हुआ, उस के बाद फ़रिश्तों ने पूरी बस्ती को उलट दिया और उन पर पत्थरों की बारिश कर दी। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यक़ीनन बातों में ग़ौर करने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं और वह बस्ती मदीना से शाम जाने वालों के रास्ते में है। इस राह का हर मुसाफ़िर उस के बाक़ी आसार को अपनी आँखों से देखता है यक़ीनन ईमान वालों को इस से बड़ी नसीह़त मिलती है।

73-77 فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ۝ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ۝ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

'ह़ाफ़िज़ सियोती' ने लिखा है कि यह आयते करीमा 'इ़ल्मे फ़रास्त' के लिए दलील है। 'तिर्मिज़ी' ने ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत की है कि "मोमिन की फ़रास्त से डरो, इसलिए कि वह अल्लाह के नूर से देखता है फिर उन्होंने यही आयत पढ़ी।"

इ़ल्म फ़रास्त यह है कि इन्सानों की शक्लों, रंगों और चेहरों से उन्हें पहचाना जा सकें। अल्लाह तआ़ला ने सूरः बक़रः आयत नं० (273) में भीक न माँगने वाले ग़रीब मुसलमानों के बारे में नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब कर के फ़रमाया है تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ कि "आप उन्हें उन के चेहरों से पहचान लेंगे"।

सूरः मुह़म्मद आयत नं० (30) में मुनाफ़िक़ों के बारे में फ़रमाया है وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ कि "आप उन्हें उन के अन्दर की बातचीत से ही पहचान लेंगे"।

मालूम हुआ कि इ़ल्म फ़रास्त (Psycology) एक ह़क़ीक़त है, जिस का क़ुर्आन एतिराफ़ करता है और इन्सानों के ज़ाहिरी ह़ालात के ज़रिये उन के बहुत से अन्दुरुनी अख़्लाक़ और आ़दतों का पता लगाया जा सकता है।

ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुद्री (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मोमिन की फ़रास्त से बचो क्योकि वह अल्लाह के नूर से देखता है। फिर आप (सल्ल०) ने यही आयत पढ़ी। **(तिर्मिज़ी)**

आयत नं० 78 से 99 तक

وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿۷۸﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿۷۹﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۸۰﴾
وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿۸۲﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿۸۳﴾ فَمَآ
اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ ۭ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ
الْجَمِيْلَ ﴿۸۵﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۶﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿۸۷﴾ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ
اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۸﴾ وَقُلْ اِنِّىْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿۸۹﴾ كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿۹۰﴾
الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿۹۱﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۲﴾ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۹۴﴾ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿۹۵﴾ الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۹۶﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ
بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿۹۷﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿۹۸﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿۹۹﴾

अनुवाद-

(78) और 'ऐका' वाले (शुऐब की क़ौम के लोग) भी ज़ालिम थे। (79) तो 'हमने' उनसे भी बदला लिया, और यह दोनों खुले मार्ग पर (स्थित) हैं। (80) और हिज्र वाले भी रसूलों को झुठला चुके हैं। (81) और 'हम' ने तो उन्हें अपनी निशानियाँ दीं, मगर वे मुँह फेरते ही रहे; (82) और वे लोग पहाड़ों को तराश कर घर बनाते ताकि अमन चैन से रहेंगे। (83) तो एक भयानक आवाज़ ने सुबह होते-होते उन्हें आ पकड़ा; (84) और जो कुछ वे करते थे, वह उनके कुछ भी काम न आया। (85) और 'हमने' तो आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है, बिना किसी मक़सद के नहीं पैदा किया, और क़ियामत ज़रूर आने वाली है, अतः आप खूबसूरती के साथ दरगुज़र कीजिए। (86) बेशक, आप का 'रब' बड़ा ही पैदा करने वाला, इल्म वाला है। (87) और 'हमने' आप को सात दोहराई जाने वाली आयतें, और महान कुर्आन प्रदान किया है। (88) आप अपनी आँख उठा कर भी उन चीज़ों को न देखिए, जो 'हमने' (काफ़िरों के लिए) कुछ सुख सामग्री विभिन्न गिरोहों को दे रखी है, और न उनकी हालत पर ग़म कीजिए, और अपनी भुजाएँ ईमान वालों के लिए झुकाए रखिए,(अर्थात मोमिनों से भले तरीक़े से पेश आइये) (89) और कह दीजिए, "मैं तो साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ"। (90) जिस तरह 'हमने' उतारा था तक़्सीम (भेद) पैदा करने वालों पर, (91) जिन्होंने कुर्आन के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। (92) तो आप के रब की क़सम! हम उन सबसे ज़रूर सवाल करेंगे। (93) उन कामों के बारे में जो वे करते रहे हैं; (94) अतः आप को जिस काम का हुक्म दिया गया है उसे साफ़ सुना दीजिए; और मुश्रिकों की परवाह न कीजिए। (95) हम आप के लिए मज़ाक़ उड़ाने वालों के मुक़ाबिले में काफ़ी हैं। (96) जिन्होंने अल्लाह के साथ किसी दूसरे को मअ़बूद बना लिया है, तो बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा! (97) 'हमें' मालूम है कि वे जो कुछ कहते हैं, उससे तुम्हारा दिल तंग होता है। (98) और आप अपने 'रब' की ह़म्द व तस्बीह़ (गुणगान) करते रहिए और सज्दः करने वालों में शामिल रहिए। (99) और आप, अपने 'रब' की इबादत में लगे रहिए, यहाँ तक कि आप की मौत आ जाए।

आयत नं० 78 से 99 तक की व्याख्या

78-79 وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ۙ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۧ

'अस्हाबे ऐका' से मुराद हज़रत शुऐब (अलै०) की क़ौम है। यह लोग एक ऐसे इलाक़े के रहने वाले थे जहाँ कस्रत से दरख़्त पाए जाते थे। उन का ज़ुल्म यह था कि वह अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक ठहराते थे, राह चलते मुसाफ़िरों को लूट लेते और नाप तौल में कमी करते थे, अल्लाह तआला ने हज़रत शुऐब (अलै०) को उन की हिदायत के लिए मब्अूस (भेजा) फ़रमाया, लेकिन उन्होंने उन को झुठलाया तो अल्लाह तआला ने उन्हें हलाक करने के लिए एक ऐसा बादल भेज दिया जिस में आग थी उसने उन्हें जला कर राख कर दिया। क़ौमे लूत और क़ौमे शुऐब की बस्तियाँ एक दूसरे के क़रीब थीं।

80-84 وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۙ وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ۙ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ۙ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۙ

'अस्हाबे हिज्र' से मुराद क़ौमे समूद है। 'हिज्र' मदीना मुनव्वरह और शाम के दर्मियान एक मशहूर वादी है जहाँ यह लोग रहते थे, शाम के रहने वाले हाजियों का गुज़र इस वादी से हुआ करता था। उन की हिदायत के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत सालेह (अलै०) को मब्अूस फ़रमाया था, जिन को उन्होंने झुठलाया और مُرْسَلِيْنَ यहाँ बहुवचन इसलिए आया है कि जो एक नबी को झुठलाता है मानो वह सारे ही नबियों को झुठला देता है। उन्होंने हज़रत सालेह (अलै०) से मुताल्बा किया कि अगर वह नबी हैं तो पहाड़ से ऊँटनी निकाल कर दिखलाएँ।

हज़रत सालेह (अलै०) ने दुआ की और अल्लाह के हुक्म से पहाड़ से ऊँटनी निकल आई, लेकिन जिन के दिलों पर अल्लाह कुफ़्र की मुहर लगा दे उन्हें कब हिदायत मिल सकती है, उन्होंने उस ऊँटनी को हलाक कर दिया और ईमान नहीं लाए तो अल्लाह तआला ने उन्हें तीन दिन मोहलत दी, उस के बाद उन्हें एक सख़्त ख़तरनाक चीख के ज़रिये हलाक कर दिया और उन की दौलत और पहाड़ों को खोदकर बनाए गये मकानात उन्हें अल्लाह के अज़ाब से न बचा सके। उन का एक गुण यह भी था कि घमण्ड की वजह से अपनी ताक़त को ज़ाहिर करने के लिए बिना ज़रूरत पहाड़ों को काट-काट कर मकानात बनाते थे।

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) तबूक जाते हुए वहाँ से गुज़रे तो अपना सर झुका लिया और तेज़ी के साथ गुज़र जाने के लिए सवारी को एड लगाई और सहाबा-ए-किराम से कहा कि अजाब दी गई क़ौमों के घरों में रोते हुए दाख़िल हो और अगर रोना न आए तो रोने वाली शक्ल बना लो, इस डर से कि कहीं तुम्हें भी उन्हीं जैसा अज़ाब न आ जाए।

85 وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने आसमानों, ज़मीन और उन के दर्मियान की हर चीज़ को बे-मक़्सद व बेकार नहीं पैदा किया बल्कि इसलिए पैदा किया है ताकि उन्हें देखकर उन के मालिक को याद किया जाए और उस का शुक्र अदा किया जाए। इसलिए जो उस की नाशुक्री करेगा और कुफ़्र की राह अपनाएगा वह उसे हलाक कर देगा। जैसा कि इन क़ौमों का अन्जाम हुआ कि जब उन्होंने अल्लाह की नाफ़रमानी की और उस की दी हुई नेअ़मतों का शुक्रगुज़ार नहीं हुईं तो अल्लाह ने उन्हें हलाक कर दिया।

ऐसी नाफ़रमान क़ौमों का यह बुरा अन्जाम दुनिया में होता है और आख़िरत में तो उन्हें बड़ा ही दर्दनाक अ़ज़ाब दिया जाएगा जिस के आने में कोई शुब्हा नहीं है।

इस के बाद आप (सल्ल०) को हुक्म दिया गया कि आप अपनी क़ौम के साथ दरगुज़र से काम लीजिए और उन के बारे में कोई फ़ैसला करने में जल्दबाज़ी से काम न लीजिए। सूरः ज़ुख़्रुफ़ आयत नं० (89) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ कि "आप उन्हें माफ़ कर दीजिए और सलाम कहकर रुख़सत हो जाइए बस वह जल्द ही जान लेंगे।"

86 إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ۝

ऊपर क़ियामत के बरपा होने की जो बात की गई है, उसी को और ताकीद के तौर पर कहा जा रहा है कि रब्बुल् आ़लमीन हर चीज़ का पैदा करने वाला है, कोई चीज़ उसे बेबस नहीं कर सकती है, वह उन तमाम की ख़बर रखता है जो मरकर, मिट्टी में गल सड़कर ख़त्म हो गए हैं।

सूरः यासीन आयत नं० (81) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

أَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى أَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۭ بَلٰى ۡ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ۝

कि "जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है क्या वह उन जैसों के पैदा करने पर क़ादिर नहीं है? बेशक क़ादिर है और वही बड़ा पैदा करने वाला, सब कुछ जानने वाला है।"

87 وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की तक्लीफ़ों पर सब्र करने की तल्क़ीन करते हुए कहा जा रहा है कि आप को तो अल्लाह तआ़ला ने बेशुमार अ़ज़ीम नेअ़मतों से नवाज़ रखा है, जिन में सब से बड़ी नेअ़मत सूरः फ़ातिह़ा और पूरा क़ुर्आन करीम है, इसलिए आप दिल छोटा न कीजिए और पैग़ाम पहुँचाने के काम में लगे रहिए क्योंकि आदमी जब अपने ऊपर अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम नेअ़मतों को याद करता है तो दअ़वत की राह की मुश्किलें आसान हो जाती हैं।

88 لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

सूरतुल् फ़ातिह़ा और क़ुर्आन करीम जैसी नेअ़मतों के मुक़ाबिले में दुनिया की हर चीज़ ह़क़ीर (कमतर) है, इसलिए इस नेअ़मत पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करते रहिए और अहले दुनिया को हम ने वक़्ती नेअ़मतें दे रखी हैं उन की इच्छा न कीजिए। वह नेअ़मतें हम ने उन्हें इसलिए दी हैं ताकि

हम उन्हें आज़माएँ और जो इस आज़माइश में कामियाब नहीं होगा उस के लिए वह नेअ़मतें वबाले जान बन जाएँगी और कुफ़्फ़ारे कुरैश अगर ईमान नहीं लाते हैं तो ग़म न कीजिए और जो ग़रीब और कमज़ोर मुसलमान आप के साथ हैं उन के साथ नर्मी का मामला कीजिए उन्हें अपने आप से क़रीब कीजिए और कुरैश के सरदारों के कुफ़्र व हठधर्मी की परवाह न कीजिए।

89-90 وَقُلْ إِنِّيٓ أَنَا ٱلنَّذِيرُ ٱلْمُبِينُ ۝ كَمَآ أَنزَلْنَا عَلَى ٱلْمُقْتَسِمِينَ ۝

और कुफ़्फ़ारे कुरैश से कह दीजिए कि मैं अल्लाह की तरफ़ से लोगों को ऐसे दर्दनाक अ़ज़ाब से डराने वाला हूँ जैसा अ़ज़ाब अल्लाह ने ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) के उन काफ़िरों पर नाज़िल किया था जिन्होंने उन की मुख़ालिफ़त की और झुठलाया और उन्हें क़त्ल करने की आपस में क़सम खाई थी।

सूरतुल् नम्ल आयत नं० (49) में अल्लाह तआ़ला ने उन्हीं काफ़िरों के बारे में फ़रमाया है:-

قَالُوا۟ تَقَاسَمُوا۟ بِٱللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُۥ وَأَهْلَهُۥ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِۦ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِۦ وَإِنَّا لَصَٰدِقُونَ ۝

“उन्होंने आपस में बड़ी-बड़ी क़समें खाकर अ़हद किया कि रात ही को ह़ज़रत सालेह़ और उस के घर वालों पर हम छापा मारेंगे और उस के वारिसों से साफ़ कह देंगे कि हम उस की हलाकत के वक़्त मौजूद न थे और हम बिल्कुल सच्चे हैं।”

‘फ़र्रा’ का क़ौल है कि **“مقتسمون”** से मुराद वह सोलह कुफ़्फ़ारे कुरैश हैं जिन्हें ‘वलीद बिन मुग़ीरा’ ने मक्का में दाख़िल होने के रास्तों पर तय किया था ताकि वह हर आने वाले को इस्लाम और रसूलुल्लाह (सल्ल०) से दूर करें।

एक तीसरी बात यह है कि इन से मुराद कुफ़्फ़ारे कुरैश के वह लोग हैं जो कुर्आन करीम का मज़ाक़ उड़ाने के लिए उस की सूरतों को आपस में बाँटते थे और कहते थे कि यह सूरत मेरी है और यह तेरी।

चौथी बात यह है कि इन से मुराद कुरैश के वह लोग हैं जो कुर्आन करीम की तक़्सीम किया करते थे और कहते थे कि इस का कुछ ह़िस्सा शेअ़र, बाज़ जादू और बाज़ पिछली क़ौमों के वाक़िआ़त हैं। पाँचवी बात यह है कि इन से मुराद यहूद व नसारा हैं, जिन्होंने कुर्आन करीम के कुछ ह़िस्से की तस्दीक़ की और कुछ का इन्कार कर दिया।

91 ٱلَّذِينَ جَعَلُوا۟ ٱلْقُرْءَانَ عِضِينَ ۝

पहली बात के मुताबिक़ यहाँ कुर्आन से मुराद वह आसमानी किताब होगी जिस की पैरवी का क़ौम सालेह़ को हुक्म दिया गया था कि उन्होंने इस आसमानी किताब के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और उन के क़त्ल की साज़िश की, बाक़ी बातों के मुताबिक़ कुर्आन से मुराद कुर्आन करीम होगा, जो नबी करीम (सल्ल०) पर नाज़िल किया गया था।

92-93 فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ عَمَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन तमाम काफ़िरों के आ़माल का मुह़ासिबा (निरीक्षण) करेगा, जो वह

दुनिया में करते रहते थे। एक दूसरी बात यह कही गई है कि यहाँ मोमिन व काफ़िर तमाम इन्सान मुराद हैं। इस क़ौल की ताईद (पुष्टि) कुर्आन करीम की उन आयतों से होती है जिन में तमाम इन्सानों से पूछे जाने की बात कही गई है।

जैसे- सूरः ग़ाशिया की आयात नं० (25/26) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः-

إِنَّ إِلَيْنَآ إِيَابَهُمْ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ "बेशक हमारी तरफ़ उन को लौटना है, फिर उन से हिसाब लेना हमारे ही ज़िम्मे है।"

'साहिबे मुहासिनुल् तन्ज़ील' की राय है कि عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ से मुराद कुफ़्फ़ारे कुरैश का कुर्आन करीम के बारे में अ़मल है कि उस का कुछ हिस्सा शेअ़र, कुछ जादू और कुछ पिछली क़ौमों के वाक़िआ़त हैं, उन्हीं काफ़िरों को इस आयत में धमकी दी गई है।

94

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾

इस आयत के नुज़ूल से पहले नबी करीम (सल्ल०) लोगों को इस्लाम की तरफ़ छुपे तौर पर बुलाते रहे। जब इस आयत में आप को हुक्म दिया गया कि वह खुलकर लोगों के सामने आएँ, इस्लाम की दअ़वत पेश करें और मुश्रिकों की परवाह न करें तो आप अपने सह़ाबा-ए-किराम के साथ बाहर निकलकर लोगों को इस्लाम की तरफ़ बुलाने लगे।

95-96

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٥﴾ الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

इस आयते करीमा के ज़रिये आप को अल्लाह तआ़ला ने ज़मानत दे दी कि जो कुरैश के सरदार आप का मज़ाक़ उड़ाते हैं हम उन से निपट लेंगे, वह आप का कुछ भी बिगाड़ न सकेंगे। 'इब्ने इस्ह़ाक़' ने 'उरवह बिन ज़ुबैर' से रिवायत की है कि आप (सल्ल०) का मज़ाक़ उड़ाने वाले काफ़िरों में पाँच बड़े काफ़िर मशहूर थेः-

1- वलीद बिन मुग़ीरा 2- आ़स बिन वायल 3- अस्वद बिन मुत्तलिब़
4- अस्वद बिन अ़ब्द यग़वस 5- ह़ारिस बिन तलातला

अल्लाह तआ़ला ने इन सब को एक ही दिन हलाक कर दिया।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) की एक रिवायत से मालूम होता है कि जिसे 'इमाम बुख़ारी' (रह़०) ने रिवायत की है कि वह कुफ़्फ़ारे कुरैश अबू जेहल, उ़त्बा, शैबा, वलीद बिन अ़तिया, उमय्या बिन ख़लफ़ और 'उ़क़्बा बिन अबी मुअ़ीत' थे, जो मैदाने बद्र में बुरी तरह़ क़त्ल कर दिये गए और दूसरे मक़्तूलीन के साथ एक कुएँ में डाल दिये गए इन्हीं लोगों ने कुछ दूसरे काफ़िरों के साथ मिलकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के कन्धे पर कअ़बः के सामने नमाज़ पढ़ने की ह़ालत में ऊँट की ओझड़ी डाल दी थी, तो आप (सल्ल०) ने बद्दुआ़ कर दी थी कि ऐ अल्लाह! तू अहले कुरैश और इन बद्माशों से निपट ले।

97-98

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ﴿٩٨﴾

अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को ख़बर दी कि कुफ़्फ़ारे कुरैश की मज़ाक़ वाली बातों से आप को जो तक्लीफ़ पहुँचती है उस की अल्लाह को ख़बर है। इन्सानी फ़ित्रत का यही तक़ाज़ा है लेकिन आप सब्र से काम लें और तस्बीह़ व तम्ह़ीद में लगे रहें और नमाज़ पढ़ा करें तो आप का ग़म हल्का हो जाएगा और ज़ेहनी तक्लीफ़ कम हो जाएगी।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः बक़रः आयत नं० (45) में फ़रमाया وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ

कि "आप सब्र और नमाज़ के ज़रिये अल्लाह से मदद माँगे" और सूरः रअ़द आयत नं० (28) में फ़रमाया है اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ कि "जान लो! अल्लाह की याद से ही दिलों को इत्मिनान मिलता है।"

99 وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ۝

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' कहते हैं कि यह आयते करीमा इस बात पर दलील है कि नमाज़ और दूसरी अ़िबादतें इन्सान पर उसी वक़्त तक वाजिब हैं जब तक उस की अ़क़्ल काम करती रहे और يَقِيْنُ से मुराद 'मअ़रिफ़त' है और जब कोई इन्सान मक़ामे मअ़रिफ़त तक पहुँच जाएगा तो तमाम अ़िबादात व आ़माल उस से ख़त्म हो जाएँगे।

यह कुफ़्र व गुमराही जिहालत है, इसलिए कि अम्बिया-ए-किराम और उन के सह़ाबा अल्लाह का मक़ाम तमाम इन्सानों से ज़्यादा पहचानते थे और उस के हुक़ूक़ व सिफ़ात को तमाम लोगों की बनिस्बत उन्हें ज़्यादा ह़ासिल थे। इस के बावजूद वह तमाम लोगों से ज़्यादा अल्लाह की अ़िबादत करते और अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी वक़्त तक नेक कामों की पाबन्दी करते थे।

(भाग-16)

सूर-ए-नह्ल

(सूरः नं.16)

तफ़्सीर सूरः नह़्ल

नाम- इस का नाम आयत नं० (68) وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ से लिया गया है।

नाज़िल होने का ज़माना-

ह़सन, इक्रिमा, अ़ता और जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह के नज़्दीक पूरी सूरः मक्की है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास और अबू ज़ुबैर के नज़्दीक तीन आयतों के सिवा पूरी सूरः मक्की है। वह आयतें (95) नं० وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا से يَعْمَلُونَ तक हैं। 'क़तादा' के नज़्दीक पाँच आयतें (110/ 126/ 127/ 128 और 141) के अ़लावा पूरी सूरः मक्की है।

इस सूरः में भी आम सूरतों की तरह़ अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक बनाने को रद्द किया गया है और अल्लाह पर ईमान लाने की दअ़वत दी गई है। इसी तरह़ नबी करीम (सल्ल०) पर ईमान न लाने वालों पर उन के बुरे अन्जाम को बयान किया गया है।

आयत नं० 1 से 16 तक

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ
اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ
فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْٓءٌ وَّ مَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ
تَسْرَحُوْنَ ۝ وَ تَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ
وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَ زِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَ مِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝
هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ
وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ
مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّذَّكَّرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّ تَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَ تَرَى الْفُلْكَ
مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّ سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝
وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝

अनुवाद-

(1) अल्लाह का हुक्म, (समझो) आ ही पहुँचा तो उसके लिए जल्दी न मचाओ; 'वह' पाक और बुलन्द है उस शिर्क से जो ये कर रहे हैं। (2) 'वह' फ़रिश्तों को रूह के साथ अपने हुक्म से जिस बन्दे पर चाहता है उतारता है, "लोगों को सचेत कर दो कि मेरे सिवा कोई 'इलाह' (उपास्य) नहीं, तो मुझ से ही डरो"। (3) 'उसने' आसमान और ज़मीन को सत्य के आधार पर पैदा किया, 'वह' बुलन्द है, 'उससे' जिसको यह साझीदार ठहराते हैं। (4) 'उसने' मनुष्य को एक बूँद से पैदा किया, फिर क्या देखते हैं कि 'वह' खुला झगड़ालू बन गया? (5) और 'उसने' तुम्हारे लिए चौपाए पैदा किये, जिनमें तुम्हारे लिए जाड़े का सामान और (बहुत से) फ़ायदे हैं, और कुछ को तुम खाते भी हो, (6) और उनकी वजह से तुम्हारी रौनक़ (शोभा) है, जबकि शाम को उन्हें वापस लाते हो और जब (सुबह को) चरने के लिए छोड़ देते हो; (7) और तुम्हारे बोझ ऐसी जगहों तक ले जाते हैं, जहाँ तुम सख्त मेहनत (कठोर परिश्रम) के बिना नहीं पहुँच सकते थे; बेशक तुम्हारा रब बड़ा रहमदिल, बेहद मेहरबान है। (8) और (उसी ने) घोड़े, और खच्चर, और गधे भी पैदा किये, ताकि तुम उन पर सवार हो और तुम्हारी शोभा हो, और उसे भी पैदा करता है जिसे तुम नहीं जानते। (9) और सीधा रास्ता अल्लाह तक पहुँचता है और कुछ रास्ते टेढ़े हैं, और अगर 'वह' चाहता तो तुम सबको सीधी राह दिखा देता। (10) 'वही' तो है 'जिसने' आसमान से तुम्हारे लिए पानी उतारा, जिसे तुम पीते हो और जिससे वनस्पतियाँ भी (उगती) हैं, जिनमें तुम अपने जानवरों को चराते हो; (11) उसी (पानी) से 'वह' तुम्हारे लिए खेती, और ज़ैतून, और खजूरें, और अंगूर, और हर प्रकार के फल पैदा करता है, जो लोग सोच-विचार करते हैं उनके लिए इसमें निशानी है। (12) और 'उसी ने' रात और दिन को, और सूरज और चाँद को तुम्हारे काम में लगा दिया है; और सितारे भी 'उसके' हुक्म से काम में लगे हैं, इसमें उन लोगों के लिए

निशानियाँ हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं; (13) और ज़मीन में जो भी रंग-बिरंग की चीज़ें पैदा की हैं, इसमें भी (उन लोगों के लिए बड़ी) निशानी हैं, जो नसीह़त ह़ासिल करने वाले हैं। (14) और 'वही' तो है जिसने समुद्र को तुम्हारे काम में लगा दिया ताकि तुम उसमें से ताज़ा गोश्त खाओ, और उसमें से ज़ेवर निकालो, जिनको तुम पहनते हो; तुम देखते हो कि कश्तियाँ (नौकाएँ) उसको चीरती हुई चली जाती हैं ताकि तुम 'उसका' फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो और 'उसके' शुक्रगुज़ार बनो। (15) और 'उसी' ने ज़मीन में पहाड़ रख दिये, ताकि वह तुमको लेकर डगमगाने न लगे, और नहरें और रास्ते बना दिये, ताकि एक जगह से दूसरी जगह जा सको; (16) और चिन्ह (मार्ग) भी रखे, और सितारों से भी लोग रास्ते मालूम कर लेते हैं।

आयत नं० 1 से 16 तक की व्याख्या

1 أَتَىٰٓ أَمْرُ ٱللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ سُبْحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

कुर्आन करीम की बहुत सी आयतों में अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकीने मक्का के बारे में बताया है कि वह नबी करीम (सल्ल०) के वादे के मुताबिक़ क़ियामत आ जाने या उन्हें हलाक किये जाने की बड़ी जल्दी मचाते थे और इस से मक़्सद आप (सल्ल०) का मज़ाक़ उड़ाना और क़ियामत को झुठलाना है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः अन्फ़ाल की आयत नं० (32) में नज़र बिन ह़ारिस का क़ौल नक़्ल किया है:-

اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَٰذَا هُوَ ٱلْحَقَّ مِنْ عِندِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ ٱلسَّمَآءِ أَوِ ٱئْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

इस के बाद चन्द ही साल के बाद वह मैदाने बद्र में मारा गया और जहन्नम रसीद हुआ।

इस आयत में इसी तरह़ के काफ़िरों से कहा गया है कि तुम से जिस क़ियामत का वादा किया गया है उस का आना ऐसा यक़ीनी है जैसा कि वह आ चुकी, इसलिए तुम्हें इस के जल्द आ जाने की तमन्ना नहीं करनी चाहिए। जब वह आ जाएगी तो अल्लाह का दर्दनाक अ़ज़ाब तुम्हें अपने घेरे में ले लेगा और तुम हरगिज़ उस से बच न सकोगे।

आयत के आख़िरी ह़िस्से में अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकीन के बुतों और झूठे मअ़बूदों से अपना अलग होना बयान किया है, जिन की मुह़ब्बत में पड़कर वह लोग क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने ह़ाज़िर होने को झूठा कहते थे।

2 يُنَزِّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةَ بِٱلرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦٓ أَنْ أَنذِرُوٓا۟ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱتَّقُونِ ۝

नबी करीम (सल्ल०) ने जब मुश्रिकीन को क़ियामत के क़रीब और उस के यक़ीनी होने की ख़बर दी और इस बारे में जल्दी न करने की नसीह़त की तो उन के दिमागों में अल्लाह के साथ नबी करीम (सल्ल०) के ज़रिये वह्य की सच्चाई के बारे में शक व शुब्हा पैदा हुआ।

इस आयत में इसी शुब्हा को दूर किया जा रहा है कि वह अल्लाह फ़रिश्तों को वह्य देकर अपने बन्दों में से जिस के पास चाहता है भेजता है ताकि वह सारे इन्सानों को डराये और उन्हें बताये कि उस

के अ़लावा कोई नहीं, इसलिए सिर्फ़ उसी से डरना चाहिए।

इस आयते करीमा और कई दूसरी आयतों में वह्य को रुह़ बताया गया है, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला इस के ज़रिये मुर्दा लोगों को ज़िन्दगी देता है।

3 خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

इस के बाद आसमान और ज़मीन की पैदाइश का ज़िक्र फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को ह़क़ के साथ पैदा फ़रमाया।

फिर दोबारा फ़रमाया تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (अल्लाह तआ़ला उस से बुलन्द है जो वह शिर्क करते हैं।)

4 خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝

फिर इन्सान की पैदाइश का ज़िक्र फ़रमाया और फ़रमाया خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ (उस ने इन्सान को नुत्फ़ा से पैदा फ़रमाया तो यकायक वह झगड़ालू हो गया खुले तौर पर) इन्सान को अल्लाह तआ़ला ने नुत्फ़े (वीर्य) से पैदा फ़रमाया जो इन्सान के नज़्दीक ख़ुद एक गन्दी और घृणित चीज़ है, लेकिन अपनी अस्ल को देखता नहीं झगड़े करता है उस का यह झगड़ा सिर्फ़ मख़्लूक़ ही के साथ नहीं अल्लाह तआ़ला के हुक्मों में भी झगड़े करता है।

सूरः यासीन (आयत नं० 77/78) में फ़रमायाः-

اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ

(क्या इन्सान ने नहीं देखा कि बिलाशुब्हा हम ने उसे नुत्फ़े (वीर्य) से पैदा किया सो यकायक वह खुले तौर पर झगड़ालू हो गया और उस ने हमारे बारे में मिसालें बयान कर दीं और अपनी पैदाइश को भूल गया, वह कहता है कि हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा इस ह़ाल में कि वह चूरा-चूरा हो चुकी होंगी?)

'मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' भाग 3, पेज नं० 62 में लिखा है कि 'उबई बिन ख़लफ़' एक दिन एक पुरानी हड्डी लेकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ और कहने लगा, क्या तुम यह कहते हो कि अल्लाह तआ़ला इस के चूरा होने के बाद ज़िन्दा कर देगा? इस पर यह आयते नाज़िल हुई। जिस में इन्सान का झगड़ालू होना बयान फ़रमाया गया है।

मुश्रिकीन और काफ़िरों के झगड़े जगह-जगह क़ुर्आन ह़कीम में नक़्ल फ़रमाए गए हैं और उन के सवालात और कट् हुज्जती के जवाबात भी दिये हैं, काफ़िर तो काफ़िर हैं, जो लोग नाम के मुसलमान हैं वह भी हुज्जतबाज़ी करते हैं।

कभी कहते हैं कि शैतान को हमारे पीछे क्यों लगा दिया? कभी कहते हैं कि जब पहले से क़िस्मत में लिख दिया गया है तो हमारी पकड़ क्यों होगी? कभी कहते हैं कि हम ने कौन सा पैग़ाम भेजा था कि हमें पैदा कर दे, कभी कहते हैं कौन शरीअ़त पर चल रहा है जो हम चलें?

बाज़ लोगों को यूँ भी कहते हुए सुना गया है कि सब नेक हो जाएँ तो दोज़ख़ किस से भरेगी, बाज़ लोगों से यह बात भी सुनी गई है कि अल्लाह को हमारे अ़िबादत की ज़रूरत नहीं है, हम ने अ़िबादत

न की तो क्या ह़र्ज है। ऐसा कहने वाले ऐसे लोग हैं जो इस्लाम के भी दावेदार हैं और अल्लाह तआ़ला पर एतिराज़ भी करते हैं जबकि अल्लाह तआ़ला पर एतिराज़ करने से इन्सान काफ़िर हो जाता है।

5-8 وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝ وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ۭ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ۭ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

चौपाये अल्लाह तआ़ला का इन्आ़म हैं

अपने बन्दों पर अल्लाह तआ़ला के इन्आ़म हैं। अल्लाह ने तरह़-तरह़ की चीज़ें पैदा फ़रमाई हैं जिन से इन्सान फ़ायदा उठाता है, उन चीज़ों में ह़ैवानात यानी चौपाये भी है उन चौपायों से कई तरह़ के फ़ायदे ह़ासिल होते हैं।

1- इस में जिन मुनाफ़ेअ़ का ख़ास तौर पर ज़िक्र फ़रमाया उन में से एक तो सर्दी से बचाव है यानी उन के जिस्म से बाल और ऊन काटकर कपड़े बनाते हैं, कम्बल वग़ैरह तैयार करते हैं, खालों के भी कपड़े बना लेते हैं और उन से बिस्तर तैयार करते हैं। इसी तरह़ खालों से ख़ेमे भी तैयार होते हैं, जिस का इसी सूरत के ग्यारहवें रुकूअ़ में ज़िक्र है, चौपायों का गोश्त भी खाया जाता है यह भी बहुत बड़ी नेअ़मत है।

२- चौपायों का दूसरा फ़ायदा यह बताया कि इस में तुम्हारे लिए रौनक़ है जबकि तुम उन्हें शाम को चारागाहों से वापस लाते हो और सुबह़ को चारागाहों की तरफ़ ले जाने के लिए छोड़ते हो। यह रौनक़ जो जानवरों से ह़ासिल होती है उस को जानवर वाले ही जानते हैं जिस के पास बहुत से जानवर हों जब वह सुबह़ शाम अपने जानवरों को आता जाता देखता है तो ख़ुशी में फूला नहीं समाता।

गाँव का चौधरी चारपाई पर बैठे हुए जब अपने जानवरों पर निगाह डालता है और देखता है कि अह़ाता जानवरों से भरा हुआ है और जानवर बोल रहे हैं, उन के बच्चे पैदा हो रहे हैं, उस समय जो उस की ह़ालत होती है उस को पूछना ही क्या है। जब शाम को जानवर पेट भरे हुए वापस आते हैं जिन के थन दूध से भरे होते हैं और फिर नौकर चाकर दूध दोहने लगते हैं उस वक़्त जो चौधरी साह़िबान की कैफ़ियत होती है और ख़ुशी में मस्त व मग्न होते हैं उसे देखने वाले ही जानते और समझते हैं।

3- चौपायों का तीसरा फ़ायदा यह बताया कि वह तुम्हारे बोझ वाले सामान को उठाते हैं, दूर-दूर शहरों में पहुँचाते हैं। अगर यह जानवर न होते तो तुम्हें यह बोझ ख़ुद उठाने और ले जाने पड़ते, उस वक़्त तुम मुसीबत में पड़ जाते, बड़ी मेह़नत और तक्लीफ़ के साथ सामान पहुँचाते, अल्लाह तआ़ला ने जानवर पैदा फ़रमा दिये जो तुम्हारे बोझ उठाने की ख़िद्मत करते हैं। अल्लाह तआ़ला बड़ी नर्मी वाला रह़मत वाला है।

इस के बाद सवारी के जानवरों का ज़िक्र फ़रमायाः-

وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً अल्लाह तआ़ला ने घोड़े और खच्चर और गधे पैदा फ़रमा दिये ताकि तुम उन पर सवार रहो और उन में तुम्हारे लिए ज़ीनत (इ़ज़्ज़त) भी है। इन तीनों क़िस्म के जानवरों पर सवारी भी करते हो और ख़च्चर और गधे तो अपने सवार के साथ बहुत सा बोझ भी उठाकर ले जाते हैं, यह जानवर अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों के लिए पैदा फ़रमाए। इसी को सूरः ज़ुख़्रुफ़ (आयत नं० 12/13) में फ़रमायाः-

لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿١٣﴾ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ﴿١٤﴾

(ताकि तुम उन की पीठ पर बैठ जाओ फिर अपने रब की नेअ़मत को याद करो। जब उन पर बैठ जाओ तो यूँ कहो कि वह ज़ात पाक है जिस ने उसे हमारे बस में कर दिया और हम उसे क़ाबू में करने वाले न थे और बिलाशुब्हा हमें अपने रब की तरफ़ लौट कर जाना है।) यह जानवर अल्लाह तआ़ला ने पैदा फ़रमा दिये, अगर जानवर बेकार हो जाए और क़ाबू में न हों, न प्यार से माने न चुम्कार से तब अल्लाह तआ़ला की तस्ख़ीर का पता चलता है कि उस ने केवल अपने करम से इन जानवरों पर क़ाबू दे दिया।

सूरः यासीन में यूँ इर्शाद फ़रमायाः-

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ (और हम ने जानवरों को उन का फ़रमाँबरदार बना दिया सो उन में से बाज़ सवारी के जानवर हैं और बाज़ को वह खाते हैं, घोड़ों खच्चरों और गधों से पहले जिन जानवरों का ज़िक्र था उन के बारे में وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ फ़रमाया और यहाँ وَزِينَةً फ़रमाया। जिस तरह़ ज़िक्र किये गये मवेशियों के आते-जाते वक़्त सुबह़ शाम मुल्कों की शान व शौकत का इ़ज़्हार होता है, उसी तरह़ सवारी के जानवरों से भी मालिकों की शान व शौकत ज़ाहिर होती है।

ऊपर वाली आयत में साफ़ तौर पर चौपायों के फ़ायदे का ज़िक्र फ़रमाया था, फिर और मुनाफ़ेअ़ ज़िक्र फ़रमा दिये और सूरः यासीन में मुनाफ़ेअ़ के साथ पीने का ज़िक्र भी फ़रमाया और सूरः नह़्ल के नवें रुकूअ़ में दूध का भी ज़िक्र फ़रमाया है। यह दूध, गोबर और ख़ून के दर्मियान से साफ़ सुथरा निकल आता है। जैसे-गले से आसानी के साथ उतार लेते हैं जिन मुनाफ़ेअ़ की तरफ़ साफ़ इशारा फ़रमाया उन में खालें भी हैं और हड्डियाँ भी हैं उन से भी इन्सान नफ़ा उठाते हैं।

इसी तरह़ सवारियों का ज़िक्र फ़रमाते हुए وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ फ़रमाया।

(अल्लाह तआ़ला वह चीज़ें पैदा फ़रमाता है जिन्हें तुम नहीं जानते।) इस में आ़मतौर से वह सब चीज़ें दाख़िल हैं जो नुज़ूल-ए-क़ुर्आन के वक़्त दुनिया में मौजूद न थीं, अल्लाह तआ़ला ने बाद में पैदा फ़रमाईं और आने वाले दिनों में क्या-क्या होगा इस का इ़ल्म बन्दों को नहीं? अल्लाह तआ़ला को उन का भी इ़ल्म है। चूंकि इस बात को सवारियों के बारे में ज़िक्र फ़रमाया है इसलिए नई सवारियों के बारे में फ़रमाया कि हवाई जहाज़, रेल और मोटर कार वग़ैरह इन सब के वजूद में आने की तरफ़ आयते

शरीफ़ा में इशारा मिलता है, बल्कि क़ियामत तक जितनी भी सवारियाँ नई बनेंगीं उन सब की ख़बर दे दी गई है।

9 وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَ مِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला का अपने बन्दों पर तमाम एह़सानात से बड़ा एह़सान यह है कि उस ने सीधे रास्ते (यानी दीने इस्लाम) को उन के लिए बयान कर दिया, जिस पर चल कर वह उस की मर्ज़ी ह़ासिल कर सकते हैं और उस की सज़ा व अ़ज़ाब से बच सकते हैं। इस के अ़लावा जितने भी मज़ाहिब हैं चाहे वह 'यहूदियत' हो या 'नसरानियत' 'मजूसियत' हो या 'हिन्दुइ़ज़्म' सब के सब राहे रास्त से हट गये हैं उन पर चलकर अल्लाह की मर्ज़ी को ह़ासिल नहीं किया जा सकता। आयत में وَمِنْهَا جَآئِرٌ से यही मुराद हैं।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर अल्लाह चाहता तो तमाम इन्सानों को सीधे रास्ते पर लाकर खड़ा कर देता, उस की क़ुद्रत से यह बात बाहर नहीं थी, लेकिन उस ने ऐसा नहीं चाहा बल्कि अच्छाई व बुराई की दोनों राहों को बयान कर दिया और इन्सान को अख़्तियार दे दिया कि जो राहे रास्त पर चलेगा उसे वह हिदायत देगा और जो भट्का हुआ होगा उसे उस के ह़ाल पर छोड़ देगा।

10-11 هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

बन्दों पर अल्लाह तआ़ला के एह़सानात में से यह भी है कि वह आसमान से बारिश नाज़िल करता है, जिसे आदमी पीता है, उस के ज़रिये पाकी ह़ासिल करता है, जिस के ज़रिये अल्लाह तआ़ला मुख़्तलिफ़ तरीक़े के दरख़्त और पौधे उगाता है, वह घास और पौधे जानवरों के लिए चारागाह होते है और जिस के ज़रिये अल्लाह तआ़ला खेतों में ज़ैतून, खजूर, अंगूर और तमाम क़िस्मों के फलों और सब्ज़ियों को उगाता है।

बारिश का इस तरह़ आसमान से नाज़िल होना और उस के ज़रिये उन तमाम फ़ायदों व मुनाफ़ेअ़ का ह़ासिल होना जिन का ज़िक्र ऊपर आ चुका है यक़ीनन अल्लाह तआ़ला के वजूद, उस की क़ुद्रत, उस के इ़ल्म, उस की ह़िक्मत और उस की रह़मत के वाज़ेह़ दलायल हैं और इस हुक्म का तक़ाज़ा करते हैं कि सिर्फ़ उसी की अ़िबादत की जाए लेकिन यह तमाम दलायल उन के लिए मुफ़ीद हैं जो ग़ौर व फ़िक्र से काम लें और नसीह़त ह़ासिल करें। जो लोग जानवरों की तरह़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और अच्छे व बुरे के बीच फ़र्क़ करने की कोशिश नहीं करते, उन्हें इन दलायल से कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता।

12 وَ سَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला का अपने बन्दों पर यह भी एह़सान है कि उस ने रात को सुकून व आराम ह़ासिल करने के लिए और उन के रोज़ी की चाहत के लिए एक लगातार और न ख़त्म होने वाली ह़रकत का पाबन्द बना रखा है, जो कभी भी उस की नाफ़रमानी नहीं करते हैं, चाँद व सूरज भी उसी की मर्ज़ी के तह़त हैं।

सूरज से रौशनी और गर्मी मिलती है। चाँद की रौशनी से दिनों, महीनों और सालों का ह़िसाब मालूम होता रहता है और सितारे भी उस के हुक्म व इरादा से ही अ़मल करने वाले हैं ताकि उन के ज़रिये ख़ुश्की व तरी में रास्तों का पता लगाया जाए और यह सितारे आसमाने दुनिया के लिए ज़ीनत भी तैयार करते हैं। रात और दिन, चाँद व सूरज और सितारों का निकालना अल्लाह तआ़ला की पैदा की हुई और सिर्फ़ उसी को अ़िबादत करने के साफ़ सुबूत हैं, लेकिन यह दलायल उन के लिए फ़ायदेमन्द हैं जो अपनी अ़क़्लों से काम लेते हैं और उन मख़्लूक़ात के इस्रार व ह़क़ायक़ में ग़ौर व फ़िक्र कर के उन के ख़ालिक़ की तरफ़ पहुँचने की कोशिश करते हैं। जो लोग जानवरों की तरह़ हैं या पागलों की तरह़ अपनी अ़क़्लें खो चुके होते हैं, उन्हें इन दलायल से कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता है।

13 وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝

और अल्लाह तआ़ला का अपने बन्दों पर यह भी एह़सान है कि उस ने ज़मीन पर उन के फ़ायदे के लिए बहुत से ह़ैवानात और रंग बिरंग के पेड़-पौधे, बेजान चीज़ें और धातु पैदा किये जिन में अलग-अलग मुनाफ़े और ख़ासियतें होती हैं।

यह अ़जायब ख़ालिक़े कायनात के वजूद पर स्पष्ट दलीलें हैं जो इन्सान से तकाज़ा करते हैं कि वह सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करें, लेकिन यह दलीलें उन्हीं के लिए मुफ़ीद हैं जो नसीह़त ह़ासिल करें और अपने रब की सीधी राह पर चलें, उस के हुक्मों की पाबन्दी करें, बुराईयों और गुनाहों से बचें और इस फ़रमाँबरदारी व ग़ुलामी के नतीजे में दुनिया व आख़िरत की सआ़दत व नेक बख़्ती ह़ासिल करें।

14 وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّ تَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

इन नेअ़मतों के बाद अब समुद्र की नेअ़मतों का ज़िक्र किया जा रहा है। अल्लाह तआ़ला ने समुद्र को इस तरह़ तैयार किया है कि उस में ग़ोता लगाने को आसान बना दिया और कश्तियाँ आराम से उस पर दौड़ती रहती हैं, इन्सानों और उन की ज़रूरियाते ज़िन्दगी को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाती रहती हैं, उन समुद्रों को अल्लाह ने इसलिए तैयार किया है ताकि लोग अलग-अलग ज़रिये इस्तेमाल कर के मछलियों का शिकार करें और उन का ताज़ा गोश्त खाएँ।

ताज़ा गोश्त-

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है 'ताज़ा गोश्त' इसलिए कहा गया है कि मछली जब ताज़ा हो उसी वक़्त उसे खाया जाए क्योंकि वह बहुत जल्द ख़राब हो जाती है और पुरानी होने के बाद नुक़्सानदे होती है और उन समुद्रों को इसलिए भी निकाला है ताकि तैरकर मोती और दूसरे क़ीमती जवाहरात निकालें जो उन के लिए और उन की औ़रतों के लिए ज़ेवर का काम दें और तस्ख़ीर समुद्र का एक फ़ायदा यह भी है कि उस में कश्तियाँ चलती रहें जिन के ज़रिये इन्सान बेख़ौफ़ व ख़तर भारी तिजारती सामान और रोज़ी

का सामान लेकर थोड़ी मुद्दत में एक शहर से दूसरे शहर और एक मुल्क से दूसरे मुल्क चला जाता है और रोज़ी ह़ासिल करता है यह सब अल्लाह का फ़ज़्ल व करम है। बन्दों को चाहिए कि अल्लाह के इन एह़सानात को याद करें और उस के शुक्रगुज़ार बन्दे बनकर रहें।

समुद्री तिजारत-

इस से इशारा मिलता है कि समुद्री तिजारत बेहतरीन तिजारत है और उस के ज़रिये रिज़्क़ तलाश करना अच्छा पेशा है, बशर्ते कि तिजारत ईमानदारी से की जाए।

ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि अ़ब्दुल रह़मान बिन औफ़ (रज़ि०) हिजरत कर के जब मदीना आए तो आप (सल्ल०) ने उन की 'सअ़द बिन रबीअ़' (रज़ि०) अन्सारी से मुवाख़ात (भाई चारा) करा दिया। ह़ज़रत सअ़द ने अ़ब्दुल् रह़मान (रज़ि०) से कहा कि मैं अपने माल को दो ह़िस्सों में तक़्सीम करता हूँ और तुम्हारी शादी कर देता हूँ तो उन्होंने कहा कि अल्लाह तुम्हारे माल और घरबार में बरकत दे, तुम मुझे बस बाज़ार का रास्ता बतला दो, चुनाँचे उन्होंने बाज़ार में वही मक्खन की तिजारत शुरु कर दी। कुछ अ़र्से के बाद आप के कपड़ों पर ज़र्द ख़ुशबू के निशान थे आप ने पूछा तो उन्होंने कहा कि मैंने एक अन्सारी औरत से शादी कर ली है। (**बुख़ारी**)

15-16 وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला का अपने बन्दों पर यह भी एह़सान है कि उस ने ज़मीन पर बड़े-बड़े पहाड़ बसा दिये ताकि ज़मीन में ह़रकत न पैदा हो, इसलिए कि अगर ज़मीन हिलती तो उस पर इन्सान का जीना दूभर हो जाता और ज़मीन पर अल्लाह ने नहरें जारी कर दीं जो मुख़्तलिफ़ ज़मीनों से गुज़रती और उन्हें फ़ायदा पहुँचाती हैं और इन्सानों की रोज़ी का सबब बनती हैं। फिर ज़मीन पर मुख़्तलिफ़ रास्ते बना दिये जिन पर चलकर इन्सान एक शहर से दूसरे शहर जाता और अपनी ज़रूरियाते ज़िन्दगी ह़ासिल करता है और ज़मीन में अल्लाह ने ऐसी निशानियाँ रख दी हैं, जिन के ज़रिये लोग सफ़र में अपने रास्ते पहचानते हैं और मन्ज़िल की तरफ़ चल पड़ते हैं और हर जगह रात की तारीकी में सितारों की मदद से लोग सह़ी दिशा में चलते रहते हैं।

कश्तियों और जहाज़ों की रहनुमाई के लिए अब जिन आलात (अस्त्र शस्त्र) का इस्तेमाल होता है, उन की बनावट में सितारों की रौशनी से ही मदद ली जाती है।

आयत नं० 17 से 32 तक

اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸﴾ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا
تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿۲۰﴾ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا
يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿۲۱﴾ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۲۲﴾ لَا جَرَمَ
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿۲۳﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿۲۴﴾ لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿۲۵﴾ قَدْ مَكَرَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾
ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ
وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۷﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۠ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ
اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا
مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۰﴾ جَنّٰتُ
عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۱﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ
طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۲﴾

अनुवाद-

(17) अच्छा, तो क्या 'वह' जो पैदा करता है उस जैसा हो जाएगा, जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकता? तो क्या तुम इतनी भी बात नहीं समझते? (18) और अगर तुम अल्लाह की नेअ़मतों को गिनना चाहो तो नहीं गिन सकते; बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है। (19) और अल्लाह जानता है उसको भी, जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो। (20) और जिन लोगों को ये अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वे किसी को पैदा नहीं कर सकते, बल्कि वे खुद पैदा किये जाते हैं, (21) मुर्दा हैं न कि ज़िन्दा, और उनको इतनी भी ख़बर नहीं कि कब उठाए जाएँगे? (22) तुम्हारा 'मअ़बूद' (उपास्य) एक ही अल्लाह है, तो जो आ़खिरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल इन्कार कर रहे हैं। और वे अपने आप को बड़ा समझ रहे हैं। (23) अल्लाह ज़रूर जानता है, उसको जो कुछ ये छिपाते हैं, और जो ज़ाहिर करते हैं; 'वह' (अल्लाह) पसंद नहीं करता अपने आप को बड़ा समझने वाले को। (24) और जब इनसे कहा जाता है, "तुम्हारे 'रब' ने क्या उतारा है?" तो कहते हैं, "यह तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं"। (25) ये क़ियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे-पूरे उठाएँगे और उन लोगों के बोझ भी, जिन्हें यह इल्म के बग़ैर गुमराह कर रहे हैं सुन लो! कि बहुत ही बुरा है वह बोझ जो उठा रहे हैं। (26) जो इनसे पहले गुज़रे हैं वह भी मक्कारियाँ कर चुके हैं, फिर अल्लाह उन की इमारत पर नीवों (फाउन्डेशन) की ओर से आ पहुँचा, और छत उन पर उनके ऊपर से गिर पड़ी और अ़ज़ाब उस राह से आया जिधर से उन्हें एहसास भी न था। (27) फिर 'वह' उनको क़ियामत के दिन भी ज़लील करेगा और कहेगा, "कहाँ हैं मेरे वे साझीदार, जिनके लिए तुम झगड़ते थे"? जिन लोगों

को इल्म दिया गया था, वे कहेंगे, "आज रुसवाई और ख़राबी है, इन्कार करने वालों के लिए"। (28) उनके लिए जिन्हें फ़रिश्ते इस ह़ाल में मौत देते हैं कि वे अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे होते हैं, उस समय (विवश होकर) फ़रमाँबरदारी दिखाने लगते हैं; 'हम' तो कुछ बुरा काम नहीं करते थे; (नहीं,) बल्कि अल्लाह खूब जानता है जो कुछ तुम किया करते थे। (29) तो दोज़ख के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ; उसी में तुम्हें हमेशा रहना है, तो घमंड करने वालों का कैसा बुरा ठिकाना है? (30) और जो लोग परहेज़गार हैं उनसे पूछा जाता हैं, "तुम्हारे 'रब' ने क्या चीज़ उतारी है"? तो कहते हैं, "सबसे भली (चीज़);" जिन लोगों ने भलाई की उनकी इस दुनिया में भी अच्छी ह़ालत है और आख़िरत का घर तो है ही अच्छा। और क्या ही अच्छा घर है परहेज़गारों का; (31) हमेशा-हमेश रहने की जन्नत जिनमें वे दाख़िल होंगे, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वहाँ उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे, अल्लाह परहेज़गारों को ऐसा ही बदला देता है। (32) जब फ़रिश्ते उनकी जानें निकालने लगते हैं (इस ह़ाल में) कि वे पाक होते हैं, तो वे कहते हैं, "तुम पर 'सलाम' हो, दाख़िल हो जाओ जन्नत में अपने उन कामों के बदले जो तुम किया करते थे"।

आयत नं० 17 से 32 तक की व्याख्या

17 أَفَمَن يَخْلُقُ كَمَن لَّا يَخْلُقُ ۗ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٧﴾

यह मुश्रिकीने मक्का के लिए एक इल्ज़ामी डांट है कि जिस एकमात्र ज़ात ने इस मख़्लूक़ (सृष्टि) को पैदा किया है, क्या उस के बराबर वह पत्थर और झूठे मअ़बूद हो सकते हैं जो कुछ भी पैदा करने की क़ुद्रत नहीं रखते?

18 وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٨﴾

दुनिया की तमाम नेअ़मतों का ज़िक्र करने के बाद अल्लाह तआ़ला ने कहा कि उस की नेअ़मतें बेशुमार हैं और उस के एह़सानात अनगिनत हैं, आदमी उन्हें पूरी ज़िन्दगी गिनता रहे तो नहीं गिन सकता और जब उन्हें गिन नहीं सकता तो उन का शुक्र कैसे अदा कर सकता है।

इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने आयत के आख़िर में फ़रमाया कि वह बड़ा माफ़ करने वाला है। अगर बन्दे से अदा-ए-शुक्र में कमी होती है तो अपनी बख़्शिश व करम फ़रमाई को रोकता नहीं बल्कि माफ़ कर देता और तौबः की मोहलत देता है।

19 وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿١٩﴾

इस सूरः में अल्लाह की क़ुद्रत, उस के इल्म व ह़िक्मत और उस के नेअ़मतों की आख़िरी कड़ी यह आयते करीमा है कि वह उन की तमाम ज़ाहिर और छुपी हुई बातों और उन की ज़रूरतों को जानता है इसलिए कि उन्हें उसी के सामने सर झुकाना चाहिए और उसी की अ़िबादत करना चाहिए ताकि वह उन की ज़रूरतों को पूरी करता रहे और उस की नेअ़मतों का सिलसिला बाक़ी रहे।

इस आयत में मुश्रिकीने मक्का को धमकी दी गई है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़िलाफ़ उन की

साज़िशें अल्लाह से छुपी हुई नहीं हैं, किसी दिन यह साज़िशें ख़ुद उन्हीं के गले का फंदा बन जाएँगी।

20-21 وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝

कुफ़्फ़ारे कुरैश के बारे में कहा जा रहा है कि जिन मूर्तियों को यह लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वह तो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते हैं बल्कि पूजने वालों ने ही अपने हाथों से उन्हें बनाया है यानी वह पुजारियों से भी ज़्यादा बेबस और कमज़ोर हैं। जैसा कि हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपनी क़ौम से कहा था اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ कि "क्या जिन्हें तुम अपने हाथों से पत्थरों को काट कर बनाते हो, उन्हीं की अ़िबादत करते हो?" **(अल् साफ़्फ़ात 65)**

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने और ताकीद के तौर पर फ़रमाया कि वह तो मुर्दा हैं, न कभी ज़िन्दा थे और न भविष्य में उन्हें ज़िन्दगी मिलेगी और उन्हें शुऊर भी नहीं कि वह कभी उठाए जाएँगे तो फिर वह अल्लाह के सिवा मअ़बूद (उपास्य) कैसे हो सकते हैं?

22-23 اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝ لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने अपने पाक होने पर बहुत से दलायल पेश करने के बाद अब नतीजा बयान कर दिया और मक़्सद साफ़ कर दिया कि ऐ इन्सानों! तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) सिर्फ़ एक अल्लाह है। जो ख़ालिक़ है, राज़िक़ है, आसमानों और ज़मीन के कामों को हुक्म देने वाला है, ज़िन्दा करने वाला और मारने वाला है और तमाम अच्छे-अच्छे नाम और हर तरह़ की ख़ुसूसियत उसी के लिए हैं।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों के कुफ़्र व हठधर्मी और उन के घमण्ड की वजह यह बयान की कि वह आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, अगर वह जज़ा व सज़ा के दिन पर ईमान रखते तो राहे रास्त पर चलते और अल्लाह की एकता (अद्वैतवाद) का इक़रार करते।

आयत नं० (23) में उन्हीं मुन्किरीने क़ियामत और अल्लाह तआ़ला की वह़दानियत का इन्कार करने वालों को धमकी दी गई है कि अल्लाह तआ़ला उन के तमाम ख़ुफ़िया और ज़ाहिर आ़माल को अच्छी तरह़ जानता है और वह उन जैसे घमण्ड करने वालों को बिल्कुल पसन्द नहीं करता, उन का ठिकाना जहन्नम होगा। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः मोमिन आयत नं० (60) में फ़रमाया है:-

اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ۝ कि "जो लोग घमण्ड की वजह से मेरी अ़िबादत से मुँह फेरते हैं वह ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ जहन्नम में दाख़िल होंगे"।

24-26 وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ۝ قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इस का कहने वाला 'नज़र बिन ह़ारिस' था, जो कुर्आन करीम का मज़ाक़ उड़ाने के लिए मुसलमानों से ऐसी बातें करता था। दूसरा क़ौल यह है कि इस तरह़ की बात कहने वाले वह मुश्रिकीने मक्का हैं जो बाहर से इस्लाम की ह़क़ीक़त मालूम करने के लिए आने वालों से कहते थे कि यह कुर्आन अगले ज़माने के वाक़िआ़त का इतिह़ास है और तीसरा क़ौल यह है कि मुसलमान जब कुर्आन करीम के बारे में मुश्रिकीने मक्का की राय मालूम करते तो वह कहते कि यह तो पिछली क़ौमों की कहानियों का संकलन है।

अल्लाह तआ़ला ने ऐसे तमाम लोगों का अन्जाम यह बताया कि वह क़ियामत के दिन अपने कन्धों पर अपने गुनाह उठाए हुए होंगे और उन लोगों के गुनाह भी उठाए होंगे जिन को यह अपनी जिहालत और नादानी की वजह से गुमराह करते रहते थे, जिन गुनाहों को वह ढोये फिर रहे होंगे वह बड़ी ही बुरी चीज़ होगी जो उन्हें जहन्नम तक पहुँचा देगी।

27 ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۙ﴿۲۷﴾

मुफ़स्सिरीन की राय है कि इस आयत में मक्र (चालबाज़ी) करने वाले से मुराद 'नमरूद बिन कन्आ़न' हैं जिस ने बाबुल में एक बहुत ही लम्बी इ़मारत बनाकर आसमान पर चढ़ना चाहा था ताकि आसमान वालों से जंग करे, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने एक सख़्त ख़तरनाक आँधी के ज़रिये उसे गिरा दिया, जिस के नीचे दब कर 'नमरूद' और उस के मानने वाले मर गये। इसी 'नमरूद' ने ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को आग में डाल दिया था और वह अपने ज़माने का सब से बड़ा ज़ालिम और घमण्डी इन्सान था, लेकिन मुफ़स्सिरीन के क़ायदे के मुताबिक़ आयत का यह हुक्म हर ज़माने के झूठ की पूजा करने वालों और अल्लाह के दीन के ख़िलाफ़ साज़िश करने वालों को शामिल है।

इसीलिए इस आयते करीमा में उन मुश्रिकीने मक्का के लिए धमकी है जिन्होंने बेअ़सत से पहले रसूलुल्लाह (सल्ल०) का जीना मुश्किल कर दिया था। अम्बिया के ख़िलाफ़ साज़िश करने वालों से अल्लाह तआ़ला ने हमेशा ही ऐसा बदला लिया है कि उन्हें जड़ से ख़त्म कर दिया और उन पर इस तरह़ अचानक अ़ज़ाब मुसल्लत कर दिया कि उन्हें सोचने का भी मौक़ा नहीं मिला। यह तो उन का दुनिया में ह़ाल हुआ और क़ियामत के दिन उन्हें अल्लाह ज़लील व रुस्वा करेगा और कहेगा कि बताओ, कहाँ हैं मेरे शरीक किये जाने वाले जिन्हें मअ़बूद साबित करने के लिए तुम लोग मोमिनों से झगड़ते थे? तो वह कुछ भी न बोल सकेंगे, उन की ज़बानें बन्द होंगी, लेकिन अम्बिया और उ़ल्मा जिन से वह मुश्रिकीन झगड़ते थे, कहेंगे कि आज की ज़िल्लत व रुस्वाई और दर्दनाक अ़ज़ाब उन काफ़िरों के लिए है जो अल्लाह के साथ ग़ैरों को शरीक बनाते थे।

28-29 الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۠ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۲۹﴾

शिर्क व गुनाह कर के अपने आप पर ज़ुल्म करने वाले उन काफ़िरों की जान निकालने के लिए जब फ़रिश्ते आते हैं और मौत को अपनी आँखों से देख लेते हैं तो अल्लाह के लिए अपनी बन्दगी का इज़्हार करने लगते हैं और मारे दहशत के शिर्क का इन्कार कर बैठते हैं और कहने लगते हैं कि हम ने तो शिर्क किया ही नहीं था, तो फ़रिश्ते उन की बात को रद्द करते हुए कहते हैं कि हाँ, तुम ने शिर्क किया था और अल्लाह तुम्हारे करतूतों को ख़ूब जानता है, इसलिए झूठ बोलने और इन्कार करने से तुम बच न सकोगे।

अब तुम लोग अपने-अपने गुनाहों और शिर्किया आ़माल के मुताबिक़ जहन्नम के अलग-अलग ह़िस्सा में उन के दरवाज़ों से दाख़िल हो जाओ और हमेशा के लिए इसी में जलते रहो जो अल्लाह की अ़िबादत से मुँह फेरने वालों के लिए बद्तरीन ठिकाना है।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि कुफ़्फ़ार की रुहें मौत के बाद ही जहन्नम में दाख़िल हो जाती हैं और क़ब्रों में जहन्नम की आग की गर्मी उन के जिस्मों तक पहुँचती रहती है। क़ियामत के दिन उन की रुहें उन के जिस्मों में दोबारा दाख़िल कर दी जाएँगी और वह हमेशा के लिए जहन्नम में भेज दिये जाएँगे।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उस शख़्स को (नज़रे रह़मत से) नहीं देखेंगे जो तकब्बुर (घमण्ड) से अपने एज़ारबन्द को लटकाए। **(बुख़ारी)**

ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) फ़रमाते हैं, मदीना की कोई बच्ची (भी) रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हाथ से पकड़ कर जहाँ चाहती ले जाती। **(बुख़ारी)**

30 وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ۝

आयत नं० (24) में गुज़र चुका है कि जब बद्बख़्त काफ़िरों से क़ुर्आन करीम के बारे में पूछा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या नाज़िल किया है तो वह अल्लाह की रह़मत का इन्कार करते हैं और नेअ़मत का इन्कार करते हुए कहते हैं कि वह तो पिछली क़ौमों के वाक़िआ़त का इतिह़ास है और वहाँ उन का बुरा अन्जाम भी बता दिया गया है। अब यह बताया जा रहा है कि उन के ख़िलाफ़ जब मुसलमानों से यही सवाल किया जाता है तो वह कहते हैं कि हमारे रब ने क़ुर्आन करीम नाज़िल फ़रमाया है जो हमारे लिए पूरी तरह़ ख़ैर व बरकत है।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने अपने उस वादे का ज़िक्र फ़रमाया जो उस ने अपने उन बन्दों से कर रखा है जो दुनिया में नेक काम करते हैं कि वह उन्हें दुनिया में अच्छा बदला देगा और आख़िरत में उन्हें जो मिलेगा वह तो अल्लाह की सबसे बड़ी नेअ़मत (जन्नत) होगी जो नेक लोगों के लिए बहुत ही अच्छा घर होगा। अल्लाह तआ़ला ने इसी सूरः की आयत नं० (97) में फ़रमाया है:-

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ

कि "जो शख़्स नेक अ़मल करे मर्द हो या औ़रत, लेकिन ईमान वाला हो तो उसे यक़ीनन

निहायत बेहतर ज़िन्दगी अ़ता करेंगे और उन के नेक आ़माल का बेहतर बदला भी उन्हें ज़रूर देंगे।"

31 جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۳۱﴾

यहाँ उस जन्नत की ख़ूबी बयान की गई है जो अल्लाह से डरने वालों के लिए तैयार की गई है कि उस में पेड़ होंगे, नहरें जारी होंगी, हूरें व महल होंगे, खाने और पीने की हर लज़ीज़ चीज़ होगी और अल्लाह की ओर से सम्मान यह होगा कि वहाँ हर वह चीज़ होगी जिस की अहले जन्नत इच्छा करेंगे। आयत के आख़िर में फ़रमाया गया है कि अल्लाह अहले तक़्वा को ऐसा ही अच्छा बदला दिया करते है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी चीज़ें बनाई हैं जो किसी आँख ने न देखीं, किसी कान ने न सुनीं और न किसी इन्सान के दिल में इस का गुमान भी गुज़रा होगा"। **(बुख़ारी)**

ह़ज़रत सुहैब (रज़ि०) 'इब्ने सनान' से रिवायत की है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया,"जब अहले जन्नत जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाएँगे, माँगो क्या माँगते हो? वह कहेंगे कि (ऐ अल्लाह!) क्या तूने चेहरे नूरानी नहीं बना दिये? क्या तूने जन्नत में दाख़िल नहीं कर दिया और जहन्नम से निजात नहीं दी? अल्लाह अपना ह़िजाब (पर्दा) खोल देंगे, उन्हें जो कुछ दिया होगा उस सब से अल्लाह का दीदार उन्हें ज़्यादा मह़बूब होगा। **(मुस्लिम)**

32 الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۲﴾

उन अहले तक़्वा का जो कुफ़्र व गुनाह के ज़रिये अपने आप पर जुल्म नहीं किये होते हैं, मौत के वक़्त ह़ाल यह होता है कि जब फ़रिश्ते उन के पास पहुँचते हैं तो उन के एह़तिराम व मुह़ब्बत में उन्हें सलाम करते हैं और ख़ुशख़बरी देते हुए कहते हैं कि तुम लोग अपने नेक आ़माल के बदले हमेशा के लिए जन्नत में दाख़िल हो जाओ।

सूरः हामीम सज्दः आयत नं० (30) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है:-

إِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۳۰﴾

"बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिग़ार अल्लाह है, फिर उसी पर क़ायम रहे, उन के पास फ़रिश्ते यह कहते हुए आते हैं कि तुम कुछ भी अन्देशा और ग़म न करो, बल्कि उस जन्नत की ख़ुशख़बरी सुन लो जिस का तुम से वादा किया गया है"।

❐❐❐

आयत नं० 33 से 50 तक

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَ مَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۳۳﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۴﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا
مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ
الْمُبِيْنُ ﴿۳۵﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ
عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۳۶﴾ اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ
مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۳۷﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَآ اَرَدْنٰهُ اَنْ
نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۰﴾ وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۳﴾ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ؕ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۴۴﴾ اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ
مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۴۵﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۴۶﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۴۷﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ
وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۹﴾ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ
مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿۵۰﴾ سجدہ

अनुवाद-

(33) क्या यह इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि फ़रिश्ते इनके पास आएँ या तुम्हारे रब का हुक्म आ पहुँचे; ऐसा ही उन लोगों ने भी किया था, जो इनसे पहले गुज़र चुके, और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया था, बल्कि वे खुद अपने ऊपर जुल्म करते थे; (34) तो उनके करतूतों की सज़ा उन्हें मिलकर रही, और जिसका मज़ाक़ वे उड़ाते थे उसी ने उन्हें आ घेरा। (35) और मुशरिक कहते हैं, ''अगर अल्लाह चाहता तो न हम ही 'उसके' सिवा किसी चीज़ को पूजते और न हमारे बाप-दादा ही और न हम 'उसके' सिवा किसी चीज़ को हराम ठहराते; इनसे पहले के लोगों ने भी ऐसा ही किया, तो क्या साफ़-साफ़ सन्देश पहुँचा देने के सिवा रसूलों पर कोई और भी ज़िम्मेदारी है'' (36) और 'हमने' हर उम्मत (समुदाय) में रसूल भेजे कि, "एक अल्लाह की इबादत (उपासना) करो, और शैतान (बुतों) से बचते रहो, तो उनमें से किसी को अल्लाह ने सीधी राह सुझाई और किसी पर गुमराही (पथभ्रष्टता) सिद्ध हो कर रही, फिर ज़रा धरती पर चल फिर कर देखो! कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ? (37) अगर आप इनको सीधे रास्ते पर लाने की लालसा भी करें, तो अल्लाह जिसको भटका देता है, उसको हिदायत नहीं दिया करता, और ऐसे लोगों का कोई मददगार भी नहीं होता; (38) और यह लोग बड़ा ज़ोर लगा- लगा कर अल्लाह की क़समें खाते हैं, "कि जो मर जाता है (फिर) उसे अल्लाह नहीं उठाएगा"। क्यों नहीं? यह तो एक वादा है, जिसे पूरा करना अल्लाह

ने अपने ऊपर अनिवार्य कर रखा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (39) ताकि उसको उनपर स्पष्ट कर दे जिसके बारे में ये मतभेद कर रहे हैं, और इसलिए भी ताकि काफ़िरों को मालूम हो जाए कि वे झूठे हैं। (40) हम जब किसी चीज़ का इरादा कर लेते हैं, तो बस उससे हमारा इतना ही कहना होता है, "हो जा!" बस वह हो जाती है। (41) और जिन लोगों ने इसके बाद कि उन पर जुल्म हो चुका था, अल्लाह के लिए हिजरत (घरबार छोड़ना) की उन्हें 'हम' दुनिया में भी अच्छा ठिकाना देंगे, और आख़िरत का बदला तो बहुत बड़ा है; क्या ही अच्छा होता कि वे जानते? (42) वे लोग जो सब्र करते हैं और अपने 'रब' पर भरोसा रखते हैं। (43) और 'हमने' आप से पहले भी मर्दों (पुरुषों) ही को रसूल बना कर भेजा था जिन पर 'हम' वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) भेजते रहे हैं, तो अगर तुम लोगों को नहीं मालूम तो इल्म वालों से पूछ लो। (44) और 'हमने' आप पर भी यह नसीह़त नामा उतारा है, ताकि आप लोगों पर ज़ाहिर कर दें, जो कुछ उनके पास भेजा गया है; और ताकि वह सोच-विचार से काम लें। (45) क्या वे लोग जो ऐसी बुरी-बुरी चालें चल रहे हैं, इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं कि अल्लाह उन्हें धरती में धँसा दे या ऐसी ह़ालत में उन पर अ़ज़ाब आ जाए जिसका उन्हें एहसास तक न हो; (46) या ऐसे समय उन्हें पकड़ ले कि वे चल-फिर रहे हों, वे (उसकी पकड़ से) हरगिज़ नहीं बच सकते; (47) या ऐसे समय उन्हें पकड़ ले, कि वे डर की हालत में हों, बेशक आप का 'रब' बड़ा ही नर्म दिल, मेहरबान है। (48) क्या यह लोग देखते नहीं, कि अल्लाह ने जो चीज़ें भी पैदा की हैं? उनकी परछाइयाँ दाएँ से और बाएँ से लौटती रहती हैं, अल्लाह के आगे आजिज़ (नम्र) होकर सज्दः करती हैं। (49) और आसमानों और ज़मीन में जितने भी जानदार हैं वे सब अल्लाह ही को सज्दः करते हैं, और फ़रिश्ते भी, और ये घमंड बिल्कुल नहीं करते; (50) अपने रब से जो उनके ऊपर है डरते हैं, और वह वही करते हैं, जिसका उन्हें हुक्म मिलता रहता है।

आयत 33 से 50 तक की व्याख्या

33-34 هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ۭ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

इस में मुश्रिकों को तम्बीह है कि दुनियावी ज़िन्दगी के धोखे में न पड़े रहें और अपने इन्कार व हठधर्मी में आगे न बढ़ते जाएँ वरना बुरे अन्जाम के लिए तैयार रहें।

आयत का मतलब यह है कि अब इन्हें केवल इस बात का इन्तिज़ार है कि मौत के फ़रिश्ते आकर इन की रुहों को अ़ज़ाब देते हुए क़ब्ज़ कर लें या इन पर ऐसा अ़ज़ाब आ जाए जो इन के वजूद ही को ख़त्म कर दे या क़ियामत बरपा हो जाए।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इन से पहले की क़ौमों ने भी इन्हीं की तरह़ अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक बनाया था और अपने रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया था तो अल्लाह के अ़ज़ाब ने उन्हें आ दबोचा था और उन के साथ जो कुछ हुआ अल्लाह की तरफ़ से जुल्म नहीं था, बल्कि उन्होंने

ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म किया था जिस की सज़ा उन्हें भुगतनी पड़ी तो उन के बुरे करतूत ही उन के गले का फंदा बन गए और जिस अ़ज़ाब का मज़ाक़ उड़ाया करते थे उसी ने उन्हें आ घेरा।

35-36

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝

मुश्रिकीने मक्का अपने कुफ़्र व शिर्क के लिए अल्लाह की तक़्दीर को दलील बनाते थे और कहते थे कि अगर हम अल्लाह के सिवा ग़ैरों की अ़िबादत करते हैं और अपनी तरफ़ से कुछ जानवरों को ह़राम कहते हैं और हमारे बाप-दादा भी ऐसा करते रहे हैं तो इस में हमारा और उन का कोई क़ुसूर नहीं है, यह तो अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ है, अगर उस की मर्ज़ी न होती जैसा कि मुह़म्मद का गुमान है तो हम ऐसा न करते तो हमारा उस की मर्ज़ी के मुताबिक़ ऐसा करना इस बात की दलील है कि मुह़म्मद झूठा है और अल्लाह की तरफ़ ग़लत बात जोड़ता है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उन से पहले के मुश्रिकीन भी इसी तरह़ के शुब्हा में मुब्तिला (Involve) होते रहे और झूठी बात का अल्लाह की तरफ़ आरोप लगाते रहे। फिर उन के शुब्हा को रद्द करते हुए फ़रमाया कि तुम्हारा यह गुमान सह़ी नहीं है कि उस ने तुम्हारे शिर्क व कुफ़्र को रद्द नहीं किया बल्कि उस ने इस का इन्कार किया है और बहुत सख़्ती के साथ इस से रोका है और हर ज़माने और हर क़ौम के लिए अम्बिया भेजे हैं जिन्होंने सिर्फ़ अल्लाह की अ़िबादत की तरफ़ बुलाया और ग़ैरों की अ़िबादत से रोका।

तमाम नबियों की दअ़वत-

ह़ज़रत आदम (अ़लै०) के ज़माने से लेकर नबी करीम (सल्ल०) तक तमाम अम्बिया की एक ही दअ़वत थी कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, सिर्फ़ वही अ़िबादत के लायक़ है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने यहाँ आयत नं० (36) में बयान फ़रमाया है कि हम ने हर क़ौम के लिए एक रसूल भेजा जिस ने उन्हें इस बात की तअ़लीम दी कि अल्लाह की अ़िबादत करो और शैतान और मूर्तियों की अ़िबादत से दूर रहो। इसलिए किसी मुश्रिक का यह कहना सह़ी नहीं है कि अगर अल्लाह चाहता तो हम ग़ैरों की अ़िबादत न करते।

अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को ख़ैर व शर, जन्नत और जहन्नम के दोनों रास्ते बता दिये। ख़ैर की राह पर चलने का हुक्म दिया और शर की राह से मना फ़रमाया बल्कि इस से ज़्यादा यह किया कि मुश्रिकों को दुनिया में उन के शिर्क की सज़ा दी ताकि उन्हें मालूम हो कि अल्लाह उन के शिर्किया आ़माल से राज़ी नहीं है, आयत नं० (36) के आख़िर में यही बात कही गई है। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने अपने इ़ल्म ग़ैब (छुपा हुआ ज्ञान) और मर्ज़ी के मुताबिक़ जिसे चाहा ख़ैर की तौफ़ीक़ दी और जिसे चाहा भटकता छोड़ दिया।

37-40 إِنْ تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَىٰهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٣٧﴾ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَنْ يَمُوتُ ۚ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿٣٩﴾ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

अगर अल्लाह तआ़ला किसी को अपने इरादे के मुताबिक़ गुमराह छोड़ दे तो नबी करीम (सल्ल०) की चाहत के बावजूद राहे रास्त पर नहीं आ सकता है और न अ़ज़ाबे इलाही को कोई उस से टाल सकता है। इस ह़क़ीक़त को अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम की बहुत सी आयतों में बयान फ़रमाया है।

सूरः यूनुस की आयात नं० (96/97) में फ़रमायाः-

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾

"यक़ीनन जिन लोगों के ह़क़ में आप के रब की बात साबित हो चुकी है वह ईमान नहीं लाएँगे, चाहे उन के पास तमाम दलायल पहुँच जाएँ जब तक कि वह दर्दनाक अ़ज़ाब को न देख लें"।

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के इन्कार और घमण्ड का एक नतीजा यह था कि वह क़ियामत के दिन का इन्कार करते थे और मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाने को बक्वास समझते थे और क़समें खा-खाकर कहते थे कि ऐसा मुम्किन नहीं है कि जो मर जाएगा अल्लाह उसे दोबारा ज़िन्दा करेगा।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐसा होकर रहेगा। यह अल्लाह का ऐसा वादा है जिसे पूरा होना है, लेकिन अक्सर लोग अपनी नादानी की वजह से इस का इन्कार करते हैं, ह़ालाँकि यह काम अल्लाह तआ़ला के लिए बहुत आसान है और होना भी यही चाहिए कि लोग दोबारा ज़िन्दा हों ताकि दुनिया में अपने किये की सज़ा पाएँ नेक काम करने वाले जन्नत में दाख़िल किये जाएँगे और बुरा करने वाले अपने किये की सज़ा पाएँगे।

आयात नं० (39/40) में भी यही बयान किया गया है कि क़ियामत के दिन काफ़िरों को मालूम हो जाएगा कि वह झूठे थे और इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा करना अल्लाह तआ़ला के लिए बहुत आसान है। वह जब किसी चीज़ का इरादा कर लेता है तो 'हो जा' कहता है और वह चीज़ हो जाती है।

मुम्किन नहीं कि कोई चीज़ अल्लाह के इस कहने के बाद वजूद में न आए और लोगों का दोबारा ज़िन्दा किया जाना अल्लाह की क़ुद्रत से अलग नहीं है। इसलिए मुम्किन नहीं कि अल्लाह चाहे और मुर्दे दोबारा ज़िन्दा न हों।

41-42 وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

हिज्रत करने वालों से वादा

मक्का में जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने तौह़ीद की दअ़वत देना शुरु किया तो मुश्रिकीने मक्का को

बहुत ज़्यादा नागवार हुआ, यह लोग आप के भी दुश्मन हो गए और जो लोग इस्लाम क़ुबूल करते थे, उन से भी दुश्मनी करते थे। शुरु में ऐसे लोगों ने इस्लाम क़ुबूल किया जो दुनियावी एतिबार से बड़े नहीं समझे जाते थे, यह लोग परदेसी थे, माली एतिबार से कमज़ोर और बाज़ ग़ुलाम थे। मक्का के मुश्रिक उन्हें मारते पीटते और तक्लीफ़ पहुँचाते थे, इसलिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सह़ाबा (रज़ि०) को ह़ब्शा जाने की इजाज़त दे दी।

ह़ब्शा में नसरानी ह़ुकूमत थी यह ह़ज़रात वहाँ पहुँचे आराम से रहने लगे, लेकिन मक्का के मुश्रिकों ने वहाँ भी पीछा किया, वहाँ जाकर बादशाह को बहकाया और वरग़लाया और कहा कि हमारे वतन के कुछ लोग जो नौ उम्र और बेवक़ूफ़ हैं उन्होंने नया दीन अपना लिया है और वह तुम्हारे मुल्क में आ गए हैं उन को वापस किया जाए।

जाफ़र बिन अबी तालिब की तक़रीर-

बादशाह के दरबार में ह़ज़रत 'जाफ़र बिन अबी तालिब' (रज़ि०) ने सूरः मरयम सुनाई और पूरा ह़ाल बताया कि हम लोग दीनी एतिबार से ऐसे-ऐसे बदह़ाल थे, अल्लाह तआ़ला ने हम में से एक रसूल भेजा हम ने उन की बात मान ली, यह लोग दुश्मनी करते हैं और हमें तक्लीफ़ पहुँचाते हैं इसीलिए हम आप के मुल्क में आ गये हैं। यह सुनकर बादशाह और उस के लोग मुतमइन हो गये और उन ह़ज़रात को ह़ब्शा में इत्मिनान से रहने का मौक़ा दे दिया।

फिर उन में से बाज़ ह़ज़रात वापस मक्का आ गये और बाज़ ह़ज़रात वहीं रहे और 8 हिज्री में दूसरी हिज़्रत कर के मदीना मुनव्वरह आ गये, उन से पहले वह ह़ज़रात मक्का से आ चुके थे जिन्होंने मक्का से मदीना को हिजरत की थी। बाज़ ह़ज़रात ने दो ह़िजरतें कीं ह़ब्शा भी पहुँचे और वहाँ से मक्का वापस पहुँचे फिर वहाँ से मदीना चले आए और बाज़ ह़ज़रात ने एक ही बार ह़िजरत की, यह ह़िज़्रतें मुश्रिकीन के ज़ुल्म की वजह से थीं।

ऊपर की आयत में हिजरत करने वालों से एक तो यह वादा फ़रमाया है कि हम उन्हें दुनिया में अच्छा ठिकाना देंगे, दूसरे उन्हें आख़िरत के बदले से बाख़बर किया है।

अल्लाह तआ़ला ने अपने वादे के मुताबिक़ ह़ब्शा में भी उन को अच्छा ठिकाना दिया और मदीना में भी, अपने वतन और माल व ज़ायदाद वग़ैरह को छोड़ दिया, जहाँ इन्सान पैदा हों, पले-बढ़े वहाँ से जाना आसान नहीं होता है, लेकिन सह़ाबा ने सब कुछ क़ुर्बान कर दिया, तक्लीफ़ें बर्दाश्त कीं, अल्लाह तआ़ला पर भरोसा किया, अल्लाह तआ़ला ने दुनिया में भी उन्हें अच्छा ठिकाना दिया और आख़िरत के सवाब की भी ख़ुशख़बरी दी और फ़रमायाः-

وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ कि आख़िरत का सवाब इस दुनियावी आराम व राह़त और माल व दौलत से बहुत बेहतर है, साथ ही لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ भी फ़रमाया।

इस में बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि यह बात अलग से काफ़िरों के बारे में फ़रमाया है कि वह

इस्लाम और हिज्रत का सवाब जान लेते तो यह भी मुसलमान हो जाते और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि मतलब यह है कि इन ह़ज़रात को आँखों देखा यक़ीन की तरह़ अपनी हिज्रत का सवाब मालूम हो जाता और ज़्यादा दीनी कामों में मशक़्क़त बर्दाश्त करते और हिज्रत करने में जो सख़्तियाँ और दुश्वारियाँ बर्दाश्त कीं उन पर और ज़्यादा ख़ुश होते। **(रुहुल् मआ़नी भाग 14, पेज नं० 146)**

43-44 وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝
بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ۭ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝

क़ुर्आन और बयान

इन आयात में पहले तो यह बयान फ़रमाया कि हम ने पहले जिन को रसूल बनाकर भेजा वह इन्सान ही थे। मुश्रिकीने मक्का को यह बात झूठ मालूम हो रही है कि उन के पास जो रसूल आया वह इन्सान है, ह़ालांकि रसूल और बशर होने में कोई अन्तर नहीं है बल्कि इन्सानों की तरफ़ इन्सान ही का जाना ह़िक्मत और मस्लह़त के मुताबिक़ है।

فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि अहले ज़िक्र से अहले किताब यानी यहूद व नसारा मुराद हैं। मुश्रिकीने मक्का तिजारत के लिए साल में दो मर्तबः 'शाम' (Syria) जाया करते थे और मदीना मुनव्वरह में यहूदियों पर उन का गुज़र होता था और रास्ते में नसरानियों के सन्यासियों से भी मुलाक़ात होती थी जो जंगलों में रहते थे और शाम में नसरानियों की ह़ुकूमत थी, वहाँ नसरानी बहुत थे उन से मुलाक़ातें होती थीं। मुश्रिकीने मक्का जानते थे कि यहूदी और नसरानी आसमानी दीन वाले हैं, इसीलिए उन्होंने मदीने के यहूदियों से मालूम किया था कि हम सह़ी राह पर हैं या मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) और आप के साथी सह़ी राह पर हैं, जिस का ज़िक्र सूरः निसा रुकूअ़ नं० (8) में गुज़र चुका है।

अहले मक्का उन्हें साह़िबे इ़ल्म समझते थे, इसीलिए फ़रमाया कि तुम यहूद व नसारा से मालूम कर लो। पिछले अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) इन्सान थे या फ़रिश्ते या और किसी जिन्स से थे, उन से पूछोगे तो यही बताएँगे कि मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पहले जो नबी और रसूल आते थे वह सब बशर (इन्सान) थे। मुश्रिकीन और यहूद व नसारा का मज़हब एक नहीं था, लेकिन मुश्रिकीन चूंकि उन्हें अहले इ़ल्म समझते थे, इसलिए इर्शाद फ़रमाया कि उन से पूछो।

मुन्करीन-ए-ह़दीस की तर्दीद

इस आयत وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ में क़ुर्आन को 'ज़िक्र' बताया और साथ ही यह फ़रमाया لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ ताकि आप लोगों के सामने इस ज़िक्र को बयान करें (जो उन की तरफ़ नाज़िल किया गया।)

इस में यह भी बता दिया कि आप का काम सिर्फ़ इतना ही नहीं कि अल्लाह की किताब बन्दों तक

पहुँचा दें, बल्कि इस का बयान करना भी आप ही से सम्बन्धित था। रसूल की हैसियत (अल् अ़याज़ु बिल्लाह) एक डाकिये की सी ही केवल नहीं है।

कुर्आन मजीद में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की इताअ़त का हुक्म है। सूरः निसा में रसूल की इताअ़त (अनुसरण) को अल्लाह ही की इताअ़त बताया गया है और सूरः आले इ़मरान में आप की इत्तिबअ (अनुपालन) का हुक्म दिया गया है।

(قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ) सूरः अह़ज़ाब में आप को मुक़्तदा बताया गया है और आप की ज़ाते गिरामी को उ़म्दह नमूना फ़रमाया है لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

जो शख़्स कुर्आन ह़कीम को अल्लाह की किताब मानता है, उस पर वाजिब है कि अह़ादीसे शरीफ़ा के मुताबिक़ कुर्आन पर अ़मल करे।

कुर्आनी हुक्म और ह़दीस-

ह़दीस के बिना कोई शख़्स कुर्आन मजीद पर चल ही नहीं सकता। कुर्आन मजीद में हुक्म है कि जब नमाज़ को खड़े हो तो हाथ मुँह धो लो और सर का मसह़ कर लो जिस को वुज़ू कहते हैं, लेकिन यह बात कि कितनी कितनी मर्तबः धोएँ कुर्आन मजीद में नहीं है और फिर इस वुज़ू को तोड़ने वाली क्या चीज़ें हैं यह भी कुर्आन मजीद में नहीं है।

कुर्आन मजीद में जगह-जगह नमाज़ पढ़ने का हुक्म है लेकिन रकअ़तों की तअ़दाद नहीं बताई गई, नमाज़ में नज़र कहाँ रहे? हाथ कहाँ रहे? हर रकअ़त में कितने रुकूअ़ हैं? कितने सज्दे हैं? कुर्आन मजीद ने यह नहीं बताया। कुर्आन मजीद में ह़ज व उ़मरह पूरा करने का हुक्म है, लेकिन यह नहीं बताया कि यह दोनों किस तरह़ अदा होते हैं, ह़ज किस तारीख़ में होता है, तवाफ़ में कितने चक्कर हैं? कहाँ से शुरु होता है कहाँ ख़त्म होता है? सफ़ा व मरवह के दर्मियान कितनी मर्तबः आना जाना है? एह़राम किस तरह़ बाँधा जाता है? उ़मरह में क्या तरीक़े हैं? यह भी कुर्आन मजीद में नहीं है, मय्यित को ग़ुस्ल दिया जाना और कफ़न-दफ़न का तरीक़ा भी कुर्आन मजीद में ज़िक्र नहीं फ़रमाया।

निकाह़ इन्सानी ज़िन्दगी की अहम ज़रूरत है। यह किस तरह़ होगा और दियत (ख़ून बहा) में क्या देना पड़ता है। एक जान की दियत (बदला) कितनी है और मुख़्तलिफ़ अअ़ज़ा (अंगों) की दियत में क्या दिया जाए सब चीज़ें कुर्आन मजीद में मौजूद नहीं हैं।

कुर्आन मजीद में हुक्म है कि चोरी करने वाले मर्द और चोरी करने वाली औ़रत के हाथ काट दिये जाएँ, लेकिन यह नहीं बताया कि कहाँ से काटा जाए और कितना माल चुराने पर काटा जाए। एक रुपया और एक लाख चुराने वाले का एक ही हुक्म है, फिर अगर दूसरी बार चोरी कर ले तो क्या किया जाए?

कुर्आन मजीद में ज़ानी और ज़ानिया को सौ कोड़े मारने का हुक्म है। इस में क्या तफ़्सील है अलग-अलग वक़्तों में मारे जाएँ या लगातार, इन सब चीज़ों का जवाब कुर्आन मजीद में नहीं है। यह सब चीज़ें रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बयान फ़रमाईं, आप के बयान फ़रमाने के मुताबिक़ ही अ़मल किया जाए तब कुर्आन मजीद पर अ़मल होगा।

क़ुर्आन मजीद का ऐलान है कि दीन मुकम्मल है और बेशुमार अह़काम हैं जो क़ुर्आन में मौजूद नहीं हैं और जो अह़काम क़ुर्आन में मौजूद हैं वह मुख़्तसर हैं, बयान और तश्रीह़ (व्याख्या) के बिना क़ुर्आन मजीद पर अ़मल नहीं हो सकता और यह बयान तश्रीह़ का काम अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (सल्ल०) के सुपुर्द फ़रमाया है। जैसा कि ऊपर आयते शरीफ़ा में साफ़ तौर पर मौजूद है।

ह़दीस का इन्कार करने वालों की यह कैसी जाहिलाना बात है कि जिस पर क़ुर्आन मजीद नाज़िल हुआ उस का बयान फ़रमाना और उस की तश्रीह़ और व्याख्या मोअ़तबर न हो और उन जाहिलों की व्याख्या मोअ़तबर हो जाए जो लोग इन्कार ह़दीस का फ़ित्ना लेकर उठे हैं। न अ़रबी से वाक़िफ़ हैं, न उन्हें ज़ईफ़ों की पहचान है, न हुरूफ़ असलिया व ज़ाएदा की, न इश्तियाक़ से बाख़बर हैं, लेकिन क़ुर्आन दानी का दावा कर के ख़ुद गुमराह हो चुके हैं और उम्मते मुस्लिमा को गुमराह करने का बेड़ा उठा रखा है।

जो शख़्स रसूलुल्लाह (सल्ल०) के अक़्वाल (वाणी) व अफ़्आ़ल (कार्यों) को हुज्जत न माने, वह ह़क़ीक़त में क़ुर्आन का भी इन्कारी है। इसलिए कि अगर वह क़ुर्आन को मानता है तो वह क़ुर्आन की इन आयात को क्यों नहीं मानता जिन में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की इताअ़त, इक़्तिदा (अनुसरण) और इत्तिबअ़ (पैरवी) को फ़र्ज़ क़रार दिया गया है और आप के इत्तिबअ़ को अल्लाह का मह़बूब बनने का ज़रिया बताया है?

बात सच्ची यह है कि जिन लोगों ने फ़ित्ना इन्कार ह़दीस का निकाला है यह लोग ख़ुद से सोचने और करने वाले नहीं हैं, उन को यहूद व नसारा और मुश्रिकीन ने इस काम पर लगाया है और शुऊरी (समझ कर) या ग़ैर शुऊरी (नासमझी) में दुश्मनों का खिलौना बन गये हैं।

आयत के ख़त्म पर फ़रमाया وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ (ताकि यह लोग फ़िक्र करें) क़ुर्आन मजीद में फ़िक्र करने से हिदायत तक पहुँच सकते हैं, उस की तरफ़ मुतवज्जेह फ़रमाया है।

45-47 اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۴۵﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۴۶﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۴۷﴾

इस में मुश्रिकीने मक्का को डराया जा रहा है ताकि शिर्क से तौबः करें और नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत, क़ियामत के दिन और जज़ा व सज़ा पर ईमान लाएँ। आयते करीमा में "سيئات" से मुराद वह तमाम गुनाह हैं जिन को अहले मक्का किया करते थे। उन में सब से पहले नबी करीम (सल्ल०) के क़त्ल की साज़िश, कमज़ोर मुसलमानों को ईमान से दूर करने के लिए सज़ाएँ देनी और इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें करनी थीं।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यह मुश्रिकीने मक्का जो शिर्क का अ़मल करते रहे और नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत और क़ियामत का इन्कार करते रहे, इस्लाम और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़िलाफ़ बद्तरीन साज़िशें करते रहे, क्या इन्हें इस बात का डर नहीं है कि अल्लाह तआ़ला इन्हें ज़मीन में धंसा

दे या अचानक किसी अ़ज़ाब में मुब्तिला (Involve) कर दे या कोई तूफ़ान, कोई वबा (आफ़त) या क़ह़त साली (सूखा) आ जाए जो उन्हें मोह़ताज व फ़क़ीर बना दे या जब तिजारत के लिए एक शहर से दूसरे शहर जा रहे हों तो अचानक अल्लाह तआ़ला उन्हें हलाक कर दे?

और ऐसा करने से वह अल्लाह तआ़ला को रोक नहीं सकते या उन्हें एक के बाद दूसरे को हलाक करे यहाँ तक कि उनका एक भी व्यक्ति बाक़ी न रहे, लेकिन अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के लिए बड़ा ही मेहरबान और रह़म करने वाला है, इसलिए उसने अहले मक्का के साथ ऐसा बर्ताव नहीं किया उन्हें तौबः करने और ह़क़ की तरफ़ आने की मोहलत दी।

48-50 اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝ सज्दः

मुश्रिकीने मक्का को ऊपर जो धमकी दी गई है, उसी की ताकीद के लिए अल्लाह तआ़ला ने अपनी अ़ज़्मत को बयान किया है कि यह बात तुम से अल्लाह कह रहा है जिस के यहाँ जिन्न व इन्स, ह़ैवानात, जमादात और फ़रिश्ते सभी सज्दः करते हैं यहाँ तक कि हर चीज़ का साया भी सुबह़ व शाम, इन्किसारी के साथ उस को सज्दः करता है और उस की मर्ज़ी के बिना कुछ नहीं करते।

आयत नं० (49/50) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि आसमानों में रहने वाले तमाम फ़रिश्ते और ज़मीन पर चलने वाले तमाम चौपाये सब उस के सामने अपने आप को समर्पित किये हुए हैं, सभी उस की मर्ज़ी और इरादा के पाबन्द हैं। ज़िन्दगी व मौत, सेह़त व बीमारी हर चीज़ में उस के फ़ैसले के पाबन्द हैं।

ख़ासतौर से फ़रिश्ते उस की अ़िबादत और उस के सामने सज्दः करने से कभी भी इन्कार नहीं करते हैं और अपने रब से डरते रहते हैं, जो बड़ी अ़ज़्मत बड़ाई वाला है और तमाम मख़्लूक़ उस के नीचे है और अल्लाह की ओर से जो अह़काम (निर्देश) उन के लिए होते हैं उन्हें पूरी बन्दगी के साथ करते हैं।

आयत नं० 51 से 65 तक

وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٥١﴾ وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ۚ
اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ﴿٥٣﴾ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ
بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۣ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ۭ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ
عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٦﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا
وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٥٨﴾ يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْۗءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ۭ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰي هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٥٩﴾
لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ
مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَاۗبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾
وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۭ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ
لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَآ
اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً
فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾

अनुवाद-

(51) और अल्लाह ने हुक्म दिया है कि "दो मअ़बूद (उपास्य) न बनाओ, अल्लाह तो बस एक ही है, अतः 'मुझ' ही से डरो"। (52) और 'उसी' का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, वह दिन स्थायी और अनिवार्य है, तो क्या अल्लाह के सिवा तुम किसी और से डरते हो? (53) और तुम्हारे पास जो भी नेअ़मत है, वह अल्लाह ही की ओर से हैं, फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो तुम 'उसी' के आगे गिड़गिड़ाने लगते हो; (54) फिर जब 'वह' तुमसे तकलीफ़ को हटा देता है, तो तुममें का एक गिरोह अपने 'रब' के साथ शिर्क करने लगता है; (55) ताकि 'हमारी' दी हुई (नअ़मतों) की नाशुक्री करें, तो (दुनिया में) मज़े उड़ा लो बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा! (56) और 'हमने' जो इन्हें रोज़ी दी है उसमें से यह लोग एक हिस्सा ऐसे लोगों के लिए ठहराते हैं जिन्हें जानते भी नहीं, अल्लाह की क़सम, तुमसे इन मनगढ़त बातों की ज़रूर पूछ-ताछ होगी; (57) और यह लोग अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं; 'वह' उनसे पाक है और अपने लिए जो चाहे सो ठहराते हैं। (58) और जब उनमें से किसी को बेटी की ख़बर सुनाई जाती है तो उनका चेहरा स्याह (काला) पड़ जाता है, और जी में घुट कर रह जाता है। (59) इस बुरी ख़बर की वजह से लोगों से छिपा-छिपा फिरता है, कि अपमान के साथ रख ले या मिट्टी में उसे दबा दे, देखो! कैसा बुरा फ़ैसला है जो ये करते हैं। (60) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनकी बुरी मिसाल है, और अल्लाह की मिसाल सबसे ऊपर है, और 'वही' बड़ा ज़बर्दस्त, हिकमत वाला है। (61) और अगर अल्लाह लोगों को उनके ज़ुल्म की वजह से पकड़ता तो ज़मीन पर कोई चलने वाला न होता, लेकिन 'वह' उनको एक निश्चित समय तक ढ़ील दे रहा है; फिर जब उनका वह निश्चित समय आ पहुँचेगा तो वे न एक घड़ी पीछे रह सकेंगे न एक

घड़ी आगे बढ़ सकेंगे। (62) और अल्लाह के लिए ऐसी चीज़ ठहरा देते हैं, जिन्हें खुद नापसन्द करते हैं, और उनकी ज़बानें झूठ कहती जाती हैं और उनके लिए भलाई है, बेशक उनके लिए आग है, और यह लोग सबसे पहले भेजे जाएंगे। (63) अल्लाह की क़सम! 'हमने' आप से पहली उम्मतों की ओर रसूल भेजे, तो शैतान ने उनके (बुरे) अ़मल उनको सजा कर दिखाए; तो वह आज भी उनका दोस्त है, और उन्हीं के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (64) और 'हमने' आप पर किताब बस इसलिए नाज़िल की है, कि जिस मामले में यह लोग विवाद कर रहे हैं आप उनको फ़ैसला कर दें, और यह हिदायत और रह़मत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ। (65) और अल्लाह ही ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसके ज़रिये ज़मीन जो मुर्दा हो चुकी थी उसे ज़िन्दा कर दिया, बेशक इसमें सुनने वालों के लिए निशानी है।

आयत नं० 51 से 65 तक की व्याख्या

51 وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿۵۱﴾

जब आसमान और ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ात अल्लाह के फ़रमाँबरदार हैं और इस बात का एतिराफ़ करती हैं कि सिर्फ़ उसी की ज़ात अ़िबादत के लायक़ है, उस के अ़लावा कोई मअ़बूद नहीं तो जिन्न व इन्सान के लिए भी लाज़िम (ज़रूरी) है कि वह भी अ़मली तौर पर इस का सुबूत दें और एक अल्लाह के सिवा दूसरे मअ़बूदों का इन्कार कर दें।

इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इस आयत में हुक्म दिया है कि वह अपने लिए दो झूठे मअ़बूद न बनाएँ क्योंकि मअ़बूद ह़क़ीक़ी सिर्फ़ एक है, वही अ़िबादत के लायक़ है और सिर्फ़ उसी से डरना चाहिए उसके अ़लावा किसी से नहीं डरना चाहिए इसलिए कि सब कुछ उसी के अख़्तियार में है, किसी दूसरे के अख़्तियार में कुछ भी नहीं है। वही मारने वाला, ज़िन्दा करने वाला और नफ़ा व नुक़्सान पहुँचाने वाला है। उस के अ़लावा सभी बिल्कुल बेबस हैं और कोई क़ुदरत नहीं रखते।

52-55 وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ۭ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْــَٔرُوْنَ ﴿۵۳﴾ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿۵۴﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۣ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۵﴾

इस विषय में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वही आसमान व ज़मीन की हर चीज़ का मालिक है। हर ह़ाल में और हर वक़्त उसी की इताअ़त व बन्दगी वाजिब है, उस के अ़लावा किसी से डरना उस पर ईमान लाने के ख़िलाफ़ है।

फ़रमाया कि तुम लोग अल्लाह के सिवा ग़ैरों से डरते हो ह़ालांकि तुम्हारे पास जितनी नेअ़मतें हैं वह तमाम की तमाम अल्लाह ही की दी हुई हैं और जब तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो उसी से दुआ़ करते हो, इसलिए कि तुम जानते हो कि उस के अ़लावा कोई इसे दूर नहीं कर सकता और तुम्हारे ह़ाल पर रह़म खाते हुए जब वह इस तक्लीफ़ को दूर कर देता है तो तुम में से कुछ लोग उस के साथ ग़ैरों

को शरीक बनाने लगते हैं और कहने लगते हैं कि यह हमारे मअ़बूदों का चमत्कार है, उन्हीं की वजह से हमारी यह तक्लीफ़ दूर हुई है और इस तरह़ वह अल्लाह की नेअ़मतों का इन्कार कर के कुफ़्र व हठधर्मी में मुब्तिला हो जाते हैं।

ऐसे लोगों को अल्लाह तआ़ला ने धमकी दी और कहा कि कुछ दिनों के लिए मज़े उड़ा लो, क़ियामत के दिन तुम्हें अपने अन्जाम और ठिकाने का पता चल जाएगा।

56 وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ۝

मुश्रिकीने मक्का का एक दूसरा ऐ़ब और उन की बातिल परस्ती यह भी है कि जिन जमादात (बेजान चीज़ें) व शयातीन के बारे में वह कुछ भी नहीं जानते, उन्हीं को अपना मअ़बूद (उपास्य) बनाते हैं और उन का तक़र्रुब (समीपवर्ती) पाने के लिए अल्लाह की दी हुई रोज़ी का एक ह़िस्सा ख़र्च करते हैं, उन पर चढ़ावे चढ़ाते हैं, उन के नाम की नज़रें मानते हैं और जानवरों को उन के नाम पर ज़ब्ह़ करते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः अन्आ़म आयत नं० (136) में फ़रमाया हैः-

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا कि "अल्लाह ने जो खेतियाँ और जानवर पैदा किये उन का एक ह़िस्सा उन्होंने अल्लाह के लिए मुक़र्रर कर दिया" और कहते हैं कि यह तो अल्लाह का है और यह हमारे मअ़बूदों का है। अल्लाह तआ़ला ने अपनी ज़ात की क़सम खाकर उन से कहा कि क़ियामत के दिन अपने इन आरोपों के बारे में पूछे जाओगे।

57 وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ۝

और उन के मुश्रिकाना जरायम में से एक जुर्म यह है कि उन्होंने फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ बताया ह़ालांकि उस से न कोई पैदा हुआ है और न वह किसी से पैदा हुआ, वह तो तमाम नुक्स से पाक है और उन की दुष्टता यह है कि उन्होंने अल्लाह के लिए बेटियाँ साबित कीं जिन्हें वह ख़ुद अपने लिए पसन्द नहीं करते बल्कि अपने लिए बेटे पसन्द करते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः नज्म आयात नं० (21/22) में फ़रमाया اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى "क्या तुम्हारे लिए लड़के और अल्लाह के लिए लड़कियाँ हैं? यह तो बड़ी बेइन्साफ़ी की तक़्सीम (बंटवारा) है।" और सूरः साफ़्फ़ात आयात नं० (153/154) में फ़रमाया है اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ۝ مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ "क्या अल्लाह तआ़ला ने अपने लिए बेटियों को बेटों पर तर्जीह़ दी है? तुम्हें क्या हो गया है? कैसा हुक्म लगाते हो"?

58-59 وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ۝ يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝

मुश्रिकीने अ़रब की इस बात की काट करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ख़ुद उन का ह़ाल यह है कि अगर उन में से किसी के घर लड़की पैदा हो जाती है तो शर्म की वजह से उस का चेहरा बदल जाता है कि अब वह लोगों को कैसे मुँह दिखाएगा और दो ह़ालतों के दर्मियान ह़ैरान व परेशान

होता है कि उसे अपने पास रहने दे और ज़िल्लत व रुस्वाई बर्दाश्त करे या ज़िन्दा दफ़न कर दे।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उन का यह फ़ैसला कितना बुरा है कि जिस लड़की को वह अपने लिए बाइसे आ़र समझते हैं, उसे अल्लाह के लिए साबित करते हैं और अपने लिए उस से बेहतर यानी लड़का पसन्द करते हैं।

60 لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

उन्हीं मुश्रिकीने अ़रब के बारे में कहा जा रहा है कि ज़िल्लत व ह़िक़ारत की तमाम सिफ़ात में वही लोग फंसे हैं, वही औलाद के मुह़्ताज हैं, वही लड़कियों को नापसन्द करते हैं और कंजूसी की वजह से उन्हें ज़िन्दा दफ़न करते हैं कि उन के अन्दर यह तमाम बुरी सिफ़ात आख़िरत के इन्कार की वजह से पैदा हुई हैं और अल्लाह के लिए तो तमाम सिफ़ात साबित हैं वह तमाम ख़राबियों से पाक है, वह सारे जहाँ का पालने वाला और सब का मालिक है, सारी भलाईयाँ उसी के हाथ में हैं और वह हर चीज़ पर क़ादिर है, उस का कोई शरीक नहीं, न कोई उस का मुक़ाबिल है और न उस की कोई औलाद है और वह बड़ा ज़बरदस्त और बड़ी ह़िक्मतों वाला है।

61 وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝

इन्सान के शिर्क व कुफ़्र और गुनाह को बयान करने के बाद यहाँ अल्लाह तआ़ला ने अपनी पकड़, अफ़्व दरगुज़र और ह़िल्म व बुर्दबारी (सहनशीलता) बयान फ़रमाई है कि अगर वह लोगों को उन के गुनाहों पर पकड़ करता तो ज़मीन पर किसी जानदार को बाक़ी न छोड़ता, लेकिन उन पर रह़म करते हुए मौत के वक़्त तक उन्हें मोहलत देता है ताकि जो मग़्फ़िरत तलब करे उसे माफ़ कर दे और जो अपने गुनाहों पर इस्रार करे उस के अ़ज़ाब में ज़्यादती कर दे और जिस का वक़्त मुक़र्रर आ जाएगा उसे एक सेकेण्ड की भी मोहलत नहीं दी जाएगी और न वक़्त मुक़र्रर से पहले उसे मौत आएगी।

62 وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۚ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ۝

आयात नं० (56/57) में मुश्रिकीने मक्का के जिस बद्तरीन जुर्म को बयान किया गया है वह यह कि अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक बनाते हैं, फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ बनाते हैं। इस पर कहा जा रहा है कि वह ख़ुद तो गवारा नहीं करते कि कोई उन के माल व ज़ायदाद में उन का शरीक बन जाए और अल्लाह के लिए ग़ैरों को शरीक बनाते हैं और जिन लड़कियों की निस्बत अपनी तरफ़ करना अपने लिए बुरा समझते हैं, उन्हीं की निस्बत अल्लाह की तरफ़ करते हैं और अल्लाह तआ़ला पर इस आरोप के बावजूद कहते हैं कि अगर मान लो कि क़ियामत आएगी तो हमारा अन्जाम अच्छा ही होगा।

जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः हामीम सज्दः आयत नं० (50) में क़ियामत का इन्कार करने वालों

का क़ौल नक़्ल किया है وَلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى "अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटा दिया गया तो यक़ीनन मुझे उस की ओर से अच्छा अन्जाम मिलेगा" और सूरः कहफ़ आयत नं० (36) में फ़रमाया है:-

وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا यानी "मैं नहीं समझता कि क़ियामत आएगी और अगर मुझे अपने रब के पास जाना ही पड़ा तो इस (दुनियावी बाग़) से बेहतर अन्जाम वहाँ मिलेगा"।

यानी बद्अ़मली करते हैं और अल्लाह से नामुम्किन नतीजे की तमन्ना करते हैं। अल्लाह तआ़ला ने उन की इस सोच को बातिल और झूठी तमन्ना को रद्द करते हुए फ़रमाया कि उन का ठिकाना जहन्नम के सिवा कहीं नहीं होगा और उस में वह बहुत जल्द डाल दिये जाएँगे।

63 تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को मक्की ज़िन्दगी में कुफ़्फ़ारे कुरैश की ओर से जो तक्लीफ़ें पहुँची थीं, अल्लाह तआ़ला वह्य के ज़रिये उन्हें उन पर सब्र करने की नसीह़त करता और मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में उन्हें तसल्ली देता था, ताकि आप मायूस न हों।

क़ुर्आन करीम में इस क़िस्म की आयतें बहुत सी हैं। यहाँ भी अल्लाह तआ़ला ने पिछले अम्बिया-ए-किराम की मिसाल देकर आप (सल्ल०) को तसल्ली देनी चाही है कि आप से पहली उम्मतों के पास भी हम अम्बिया भेजते रहे हैं और शैतान उन के कुफ़्र व शिर्क को उन की निगाहों में ख़ूबसूरत बनाकर पेश करता रहा है और उन की दोस्ती का दम भरता रहा है तो वह आज अपने आप को उन का दोस्त ज़ाहिर कर ले और उन्हें ख़ूब गुमराह कर दे और मुश्रिकीन भी उस की आज बन्दगी कर लें, लेकिन क़ियामत के दिन का दर्दनाक अ़ज़ाब उन मुश्रिकों का इन्तिज़ार कर रहा है जिस से वह छूट न सकेंगे और अगर "اليوم" से मुराद क़ियामत का दिन लिया जाए तो आयत का मतलब यह होगा कि कहाँ है उन का वह दोस्त? आज अपनी दोस्ती का सुबूत दे और उन की मदद कर के दिखाए?

64 وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

आप (सल्ल०) को मज़ीद तसल्ली देने के लिए और यह ज़ाहिर करने के लिए कि आप एक अ़ज़ीम रसूल हैं, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने आप पर क़ुर्आन इसलिए नाज़िल किया है ताकि आप तौह़ीद व शिर्क और हिदायत व गुमराही जैसे मसायल को खोल कर बयान कर दें, जिन में लोग आपस में इख़्तिलाफ़ (असहमति) करते हैं और यह किताब अ़ज़ीम हिदायत का सरचश्मा है। इस में सह़ी अ़क़ीदा, अ़िबादत के तरीक़े, इस्लामी आदाब व अख़्लाक़ और इन्सानी ज़िन्दगी की तमाम ज़रूरी हिदायतों व रह़मतों के इन ख़ज़ानों से वही लोग फ़ायदा उठा सकेंगे जो अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाएँगे।

65 وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝

जिस तरह़ अल्लाह तआ़ला वह्य व रिसालत के ज़रिये कुफ़्र व शिर्क की बीमारी से मुर्दा लोगों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है, उसी तरह़ वह अपनी अ़ज़ीम क़ुद्रत के ज़रिये आसमान से बारिश नाज़िल करता है और मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दगी बख़्शता है और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के नबातात (पौधे) उगते हैं।

यह बातें दलील हैं कि अल्लाह एक है और वह मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर है, लेकिन इन दलायल से उन्हीं लोगों को फ़ायदा पहुँचता है जो आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ (उत्पत्ति) और क़ुर्आने करीम की आयात में ग़ौर व फ़िक्र करते हैं और उन में मौजूद नसीह़तों से फ़ायदा उठाते हैं।

आयत नं० 66 से 77 तक

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمِنْ
ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ۚ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى
النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِىْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾ ثُمَّ كُلِىْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِىْ سُبُلَ رَبِّكِ
ذُلُلًا ۚ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ۚ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ
يَتَوَفّٰكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَىْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ
عَلٰى بَعْضٍ فِى الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّىْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ۚ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾
وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ اَفَبِالْبَاطِلِ
يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾ فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ
عَلٰى شَىْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ۚ هَلْ يَسْتَوٗنَ ۚ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَضَرَبَ
اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَىْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ۚ هَلْ يَسْتَوِىْ هُوَ ۙ
وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ۚ
اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٧٧﴾

अनुवाद-

(66) और तुम्हारे लिए चौपायों में भी नसीह़त है, 'हम' उनके पेट से गोबर और ख़ून के बीच से ख़ालिस दूध तुम्हें पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट होता है। (67) और खजूर और अंगूर के फलों से तुम नशे की चीज़ भी बना लेते हो, और अच्छी रोज़ी भी, इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल से काम लेते हैं। (68) और आप के रब ने मधुमक्खी के जी में यह बात डाल दी, कि पहाड़ों में और वृक्षों में और छतों में जिनको लोग बनाते हैं घर (छत्ता) बना लें। (69) फिर हर तरह के फल-फूलों को चूसे और अपने 'रब' के तरीक़े पर चले जो आसान है, उनके पेट से पीने की एक चीज़ निकलती है जिसकी रंगतें कई तरह की होती हैं; उससे लोगों के रोग अच्छे होते हैं बेशक सोच-विचार से काम लेने वालों के लिए उसमें भी निशानी है। (70) और अल्लाह ही ने तुमको पैदा किया फिर 'वही' तुमको मौत देता है, और तुम में कुछ ऐसे होते हैं कि निहायत ख़राब उम्र को पहुँच जाते हैं और जानने के बाद हर चीज़ से बे इल्म हो जाते हैं, बेशक अल्लाह बड़ा इल्म वाला, क़ुदरत (सामर्थ्य) वाला है। (71) और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर रोज़ी में बढ़ौतरी दी है; तो जिन को ज़्यादा रोज़ी दी गई है, वे ऐसे नहीं हैं कि लोगों को अपनी रोज़ी दे डालें जो उनके क़ब्ज़े में हैं कि वे सब इसमें बराबर हो जाएं, तो क्या यह लोग अल्लाह की नेअ़मत का इन्कार करते हैं? (72) और अल्लाह ने तुम्हीं में से तुम्हारे लिए औ़रतें पैदा कीं और औ़रतों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किये, और खाने की तुम्हें पाक चीज़ें दीं, तो क्या यह बातिल (असत्य) पर विश्वास रखते हैं, और अल्लाह की नेअ़मतों का इन्कार करते हैं। (73) और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं; जिन्हें आसमानों और ज़मीन

से रोज़ी देने का कुछ भी अधिकार नहीं, और न वे क़ुदरत ही रखते हैं। (74) तो अल्लाह के लिए मिसालें न गढ़ो, अल्लाह ही जानता है, और तुम नहीं जानते। (75) अल्लाह एक और मिसाल देता है कि एक ग़ुलाम है जिसपर दूसरे का अधिकार है, उसे किसी चीज़ पर अधिकार नहीं; इस के विपरीत एक वह व्यक्ति है, जिसे 'हमने' अपनी ओर से अच्छी रोज़ी दी, फिर उसमें से वह छिप कर और खुले रूप में खर्च करता रहता है, तो क्या यह दोनों व्यक्ति एक जैसे हैं? सारी तअ़रीफें अल्लाह ही के लिए हैं मगर इनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। (76) और अल्लाह मिसाल देता है कि दो आदमी हैं जिनमें से एक गूँगा है, (जो) किसी चीज़ की क़ुदरत नहीं रखता, और अपने मालिक पर वह एक बोझ है, उसे वह जहाँ कहीं भेजता है कुछ भला कर के नहीं आता; क्या वह और वह व्यक्ति जो लोगों को इन्साफ़ का हुक्म देता है? और खुद भी सीधी राह पर है वह, (दोनों) बराबर हो सकते हैं? (77) और आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों का इल्म अल्लाह ही को है और क़ियामत का मामला उसी तरह पेश आएगा जिस तरह कि आँख का झपकना, या वह इससे भी ज़्यादा क़रीब है बेशक अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है।

आयत नं० 66 से 77 तक की व्याख्या

66 وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهِ مِن بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِّلشَّارِبِينَ ﴿٦٦﴾

उस ज़ाते बारी तआ़ला ने अपनी अ़ज़ीम क़ुद्रत के ज़रिये ऊँट, गाय, बकरी और भेड़ को पैदा किया है। उन से एक बड़ी नसीह़त यह मिलती है कि अल्लाह तआ़ला उन के पेट में गोबर और ख़ून के दर्मियान से उन की थनों में दूध जारी करता है जो ख़ून की सुर्ख़ी और गोबर की ग़न्दगी से बिल्कुल पाक व साफ़ होता है, ह़ालांकि तीनों एक बर्तन में जमा होते हैं।

चौपाया जब चारा खाता है तो उस का एक ह़िस्सा मेअ़दा में चला जाता है जो गोबर कहलाता है और एक ह़िस्सा ख़ून बन कर रगों में दौड़ने लगता है। दोनों के बीच का ह़िस्सा दूध बनकर थनों में पहुँच जाता है, जो मुफ़ीद व लज़ीज़ होता है और पीने वाले के ह़लक़ में नहीं अटकता।

इस आयत में ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं। मुख़्तसर साइंसी तह़क़ीक़ात की रौशनी में दूध बनने का अ़मल यूँ है। दूध पिलाने वाले जानवरों की आँते, जहाँ ग़न्दगी जमा होती है, ऐसे ख़ुराक़ के टुकड़ों के कीमियाई अ़मल के ज़रिये अ़लैहिदा होते हैं जिन से दूध बनता है। यह टुकड़े ख़ून की नालियों में एक पेचीदा निज़ाम के ज़रिये मुन्तक़िल हो जाते हैं। ख़ून उन टुकड़ों को जिस्म के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों में मुन्तक़िल कर देता है। चुनाँचे ख़ून की नालियों से यह टुकड़े उन गुदूद (Mammary Gland) में मुन्तक़िल होते हैं जो कि दूध बनाने का अ़मल मुकम्मल करते हैं। याद रहे कि गर्दिश ख़ून (Blood circulation) का निज़ाम नुज़ूले क़ुर्आन के लगभग एक हज़ार साल के बाद दर्याफ़्त हुआ और ग़न्दगी में होने वाला कीमियाई अ़मल जो फ़ुज़्ला से दूध बनाने वाला टुकड़ा अ़लैह़िदा करता है, वह तीन सौ साल बाद दर्याफ़्त हुआ।

अब अगर क़ुर्आन करीम की इस आयत को देखा जाए तो मालूम होगा कि किस तरह़ दूध बनने के अ़मल को बताया गया है। **'सुब्ह़ानल्लाह'**

ह़क़ तो यह है कि इन्सान को इस से बहुत बड़ी नसीह़त मिलती है और अल्लाह की ऐसी मअ़रिफ़त ह़ासिल होती है कि बन्दा उस से बेपनाह मुह़ब्बत करने वाला उस की इताअ़त व बन्दगी पर अपने आप को मजबूर पाता है।

67 وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَ الْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّ رِزْقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने अपनी अ़ज़ीम क़ुद्रत के ज़रिये खजूर और अंगूर के फल पैदा किये हैं, जिन के रस से शराब और खाने की दूसरी उम्दह चीज़ें बनती हैं। जैसे- फल, खजूर का रस, किशमिश और सिरका वग़ैरह।

अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक यहाँ **"सकर"** से मुराद शराब है और यह आयत शराब ह़राम होने से पहले नाज़िल हुई थी। एक दूसरा क़ौल यह है कि **"सकर"** से मुराद मीठा और ह़लाल रस है। जिसे अगर छोड़ दिया जाए तो नशा आवर बन कर ह़राम हो जाता है। यक़ीनन इन बातों में अ़क़्ल वालों के लिए बड़ी निशानियाँ है, जो अल्लाह तआ़ला की क़ुद्रत, उस के इ़ल्म और उस के रह़म व करम पर दलालत करती हैं और इन्सान को दअ़वत देती हैं कि वह सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करे।

68-69 وَ اَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّ مِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ۝
ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ
اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम क़ुद्रत की एक निशानी शहद की मक्खी भी है, जिस की तफ़्सील इस आयते करीमा में बयान की गई है कि अल्लाह तआ़ला ने शहद की मक्खी के दिमाग़ में यह बात डाल दी कि वह अपना अ़जीब व ग़रीब घर पहाड़ों, दरख़्तों और लोगों के घरों में बनाए और उस के दिमाग़ में यह बात भी डाली कि चरागाहों में घूम फिर कर अपनी ग़िज़ा ह़ासिल करने से पहले अपना घर बनाए। इसीलिए शहद की मक्खी पहले अपना घर बनाती है, फिर रोज़ी की तलाश में निकलती है और तमाम तरह़ के फलों के रस चूस कर अपने घर की तरफ़ लौटती है और अल्लाह तआ़ला के बताए हुए तरीक़ों के मुताबिक़ उन रसों से शहद बनाती है।

فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ में سُبُلَ से मुराद शहद बनाने के तरीक़े हैं या इस से मुराद 'रास्ते' ही हैं। यानी अल्लाह तआ़ला ने शहद की मक्खी के अन्दर यह बात रख दी है कि फलों का रस चूसने के लिए चाहे वह कितनी ही दूर चली जाए लेकिन फिर आसानी से अपने घर को लौट आती है और रास्ता नहीं भूलती। उन मक्खियों के पेट से पीने की एक चीज़ निकलती है जिसे 'शहद' कहा जाता है और ग़िज़ा के रंग और उस के इख़्तिलाफ़ से उस का रंग सफ़ेद, ज़र्द या सुर्ख़ होता है। अल्लाह तआ़ला ने इसे बहुत से रोगों के लिए शिफ़ा बनाया है।

शहद एक ऐसी चीज़ है जो ग़िज़ा और दवा दोनों के एतिबार से बहुत ही अ़ज़ीम है और यह दोनों बातें शहद के अ़लावा किसी दूसरी चीज़ में कम ही पाई जाती हैं।

शहद का ग़िज़ा होना तो सब को मालूम है, लिहाज़ा यहाँ शहद का दवा होना ज़िक्र किया गया है। शहद में एक क़ुद्रती सिफ़त यह है कि वह नमी जज़्ब करता है। इस वजह से वह गलता सड़ता नहीं है और जो चीज़ उस में डाली जाती है उसे भी महफ़ूज़ रखता है। शहद तुरन्त ताक़त पहुँचाने का बेहतर ज़रिया है, जिस क़िस्म के फूलों से यह रस लिया गया होता है, उस के अस्रात भी शहद में मौजूद होते हैं।

इस तरह मख़्सूस फूलों से ऐसी शहद तैयार की जा सकती हैं जो मुख़्तलिफ़ बीमारियों में ज़्यादा मुवस्सिर हों। शहद की मक्खी और उस का शहद बनाना इस में अल्लाह तआ़ला की बेशुमार निशानियाँ हैं।

(1) शहद बनाने में मादा मक्खी (Female work Bae) का बुनियादी किरदार होता है। यह सिर्फ़ पिछले चन्द सालों में तजुर्बात की रौशनी में दर्याफ़्त किया गया है, वरना हमेशा से यह समझा जाता था कि शहद बनाने वाली मक्खी नर होती है।

(2) एक किलोग्राम शहद बनाने के लिए मक्खी को लगभग चार मिलियन फूलों का रस चूसना पड़ता है। मक्खी इस अ़मल के लिए बेमिसाल इन्तिज़ाम करती है, मक्खी दूसरी शहद की मक्खियों तक फूलों के फ़ासले और दिशा की मालूमात पहुँचाने के लिए उल्टी सांस की लहरें इस्तेमाल करती है।

शहद का अन्दाज़ा ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुद्री (रज़ि०) की रिवायत से किया जा सकता है, जिसे 'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' ने रिवायत की है कि एक आदमी को दस्त (लैट्रीन) की शिकायत थी, अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उस के भाई से कहा कि इसे शहद पिलाएँ वह उसे शहद पिलाता गया मगर उस का पेट चलता रहा और हर बार आप (सल्ल०) ने कहा कि अल्लाह सच्चा है और तेरे भाई का पेट झूठा है, जाओ इसे शहद पिलाओ चुनाँचे तीसरी बार के बाद उस का दस्त रुक गया और वह शिफ़ायाब (अच्छा) हो गया। **(बुख़ारी)**

'इब्ने कसीर' लिखते हैं कि जब उस के पेट से ख़राब माल निकल गया तो उस की बीमारी ख़त्म हो गई। बेशक इन तमाम बातों में अहले फ़िक्र के लिए अल्लाह तआ़ला के क़ादिर (सामर्थ्यवान) होने की दलील पाई जाती है।

70 وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝

अल्लाह तआ़ला ने पिछली आयतों में पानी, पौधों, चौपायों और शहद की मक्खियों में पाये जाने वाले अजायबात को बयान करने के बाद इस आयत में इन्सान की तख़्लीक़ से सम्बन्धित अ़जायबात को बयान किया है कि वह शुरु से आख़िरी उ़म्र तक चार तरह़ से गुज़रता है।

पहला बचपने का होता है, दूसरा जवानी का, तीसरा अधेड़ उ़म्र का, जिस में आदमी अपनी उ़म्र और सेह़त के एतिबार से कमज़ोर होने लगता है और चौथा बुढ़ापे का। जब लगातार कमज़ोरी बढ़ने लगती है और जूँ-जूँ उस की उ़म्र ज़्यादा होती जाती है उस की तमाम जिस्मानी ताक़तें कमज़ोर होती जाती

हैं और एक वक़्त ऐसा आता है कि बिल्कुल बच्चे की तरह़ हो जाता है उस की याददाश्त जाती रहती है।

71 وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِى الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّىْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ۗ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝

इस आयते करीमा में मुश्रिकीन के लिए एक मिसाल बयान की गई है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उस ने रोज़ी में बाज़ को बाज़ पर फ़ौक़ियत (बढ़ौत्तरी) दी है। कोई फ़क़ीर होता है तो कोई मालदार, कोई आक़ा होता है तो कोई ग़ुलाम। इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों के दर्मियान अ़क़्ल, इ़ल्म, समझ, अख़्लाक़, क़ुव्वत, सेह़त व बीमारी के एतिबार से फ़र्क़ रखा है। फिर जिस की रोज़ी में अल्लाह ने वुस्अ़त दी है वह अपनी दौलत अपने ग़ुलामों को नहीं देता कि कहीं वह उस के बराबर न हो जाएँ। जब तुम अपने ही जैसे ग़ुलाम इन्सान को अपने बराबर देखना नहीं गवारा करते तो अल्लाह के ग़ुलामों को उस के बराबर कैसे बनाते हो? और उन की अ़िबादत क्यों करते हो?

अल्लाह तआ़ला ने सूरः रूम आयत नं० (28) में इसी ह़क़ीक़त को बयान किया हैः-

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۖ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِىْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ

"अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए एक मिसाल ख़ुद तुम्हारी ही बयान फ़रमाई कि जो कुछ हम ने तुम्हें दे रखा है, क्या उस में तुम्हारे ग़ुलामों में से भी कोई तुम्हारा शरीक है कि तुम और वह इस में बराबर दर्जे के हो"?

72-74 وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۝ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْئًا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝ فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने यहाँ इन्सानों की एक दूसरी ह़ालत बयान करके शिर्क और ग़ैरुल्लाह की अ़िबादत को मना किया है कि उस ने उन्हीं के जिन्स से और उन्हीं की शक्ल व सूरत में उन की बीवियाँ बनाईं ताकि उन के दर्मियान मुह़ब्बत पैदा हो और फिर उन बीवियों से लड़के, लड़कियाँ, पोते और नवासे पैदा किये जो उन की आँखों का नूर और दिल का सुरूर होते हैं और उन की ख़िद्मत के लिए बराबर उन के इशारे के इन्तिज़ार में रहते हैं और इस पर यह कि उस ने उन्हें खाने-पीने के लिए उ़म्दह रोज़ी अ़ता की, लेकिन मुश्रिकों के कुफ़्र और उन की नेअ़मत का ह़ाल यह है कि वह उन तमाम नेअ़मतों को अपने बुतों की तरफ़ मन्सूब करते हैं और अल्लाह के सिवा उन मअ़बूदों (उपास्यों) की उपासना करते हैं जो उन की रोज़ी के मालिक नहीं हैं।

इस से बढ़कर एह़सान फ़रामोशी और क्या हो सकती है कि आदमी खाए किसी का और गाए किसी का। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ आदम के बेटो! किसी को अल्लाह का शरीक न बनाओ

और इस के लिए मिसालें न बयान करो कि जिस तरह वज़ीर बादशाह के दरबार में लोगों की सिफ़ारिश करता है, उसी तरह तुम्हारे यह झूठे मअ़बूद अल्लाह के दरबार में तुम्हारी सिफ़ारिश करेंगे। तुम्हारी यह मुश्रिकीना ह़रकतें किस क़दर बुरी हैं इस का इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह को है। तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं, अगर तुम्हें इस का सह़ी अन्दाज़ा हो जाए तो उन के करने की कोशिश न करते।

75 ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾

'औ़फ़ी' ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि यह काफ़िर और मोमिन की मिसाल है यानी दोनों के दर्मियान तुल्ना कर के मोमिन की बरतरी ज़ाहिर करना मक़्सद है और मुजाहिद की राय है कि यह बुतों और अल्लाह तआ़ला की मिसाल है।

'इमाम इब्ने अल् क़य्यिम' ने भी इसी की ताईद की है कि जिस तरह ग़ुलाम के पास कुछ नहीं होता और अपने आक़ा के माल में उस की बिना इजाज़त के ख़र्च करने से बिल्कुल बेबस होता है उस आज़ाद इन्सान के बराबर नहीं हो सकता जिसे अल्लाह तआ़ला ने ख़ूब माल व दौलत से नवाज़ा हो और पूरी आज़ादी से दिन-रात ख़र्च करता है, ह़ालांकि अल्लाह की मख़्लूक़ और इन्सान होने में दोनों बराबर हैं, लेकिन दोनों के ह़ालात बराबर नहीं हैं। इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला जो सारे जहान का पालनहार है उस के बराबर पत्थर के तराशे हुए बुत कैसे बराबर हो सकते हैं?

ह़क़ीक़त यह है कि सारी तअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह के लिए हैं इसलिए कि तमाम नेअ़मतें उसी की दी हुई हैं। पत्थरों की मूर्तियाँ कैसे किसी तअ़रीफ़ की ह़क़्दार हो सकती हैं, लेकिन अक्सर लोग (जो शिर्क करते हैं) इस बात को नहीं समझते हैं।

76 وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۷۶﴾

इस दूसरी मिसाल के ज़रिये अल्लाह तआ़ला और झूठे उपास्यों के दर्मियान फ़र्क़ बताया गया है कि एक आदमी गूंगा और बहरा है, अपनी बात कह नहीं सकता न ही किसी अ़मल की क़ुद्रत रखता है वह अपने रिश्तेदारों पर बोझ बना हुआ है, किसी भी ह़ैसियत से न अपने काम का है और न दूसरों के काम का।

ऐसा आदमी उस शख़्स के बराबर कैसे हो सकता है जो बातचीत करने की पूरी क़ुद्रत रखता हो, होश व ह़वास का मालिक हो, लोगों को अच्छी बातों का ह़ुक्म देकर उन्हें नफ़ा पहुँचाता हो और अच्छे अख़्लाक़ वाला और साह़िबे दीन हो, अपना मक़्सद आसान और सीधे रास्तों से ह़ासिल कर लेता हो? जिस तरह़ यह दोनों लोग बराबर नहीं हो सकते उसी तरह़ अल्लाह तआ़ला जो क़ायनात का मालिक है, उस के बराबर पत्थर की मूर्तियाँ कैसे हो सकती हैं जिन्हें मूर्ति पूजक एक जगह से दूसरी जगह ढ़ोते फिरते हैं और वह उस के लिए बोझ बनी हुई हैं, वह न उसे नफ़ा पहुँचा सकती हैं और न नुक़्सान।

77 وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝

इस आयते करीमा में मुश्रिकीने मक्का का जवाब दिया गया है, जो क़ियामत आने की बड़ी जल्दी मचाते थे या अल्लाह तआ़ला ने अपना कमाले इ़ल्म व क़ुद्रत बयान फ़रमाया है। दोनों सूरतों में इस बात की तरफ़ इशारा है कि मुश्रिकों के झूठे मअ़बूद (उपास्य) ग़ैब की कोई ख़बर नहीं रखते और क़ियामत कब और कैसे आएगी? इन बातों का उन्हें कोई इ़ल्म नहीं है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दो आदमी कपड़ा बिछाये सौदाबाज़ी कर रहे होंगे और वह अभी इस सौदेबाज़ी और कपड़ा लेने से फ़ारिग़ न हुए होंगे कि क़ियामत आ जाएगी और एक आदमी ऊँटनी का दूध लेकर जा रहा होगा और वह अभी उसे पीने भी न पाएगा कि क़ियामत आ जाएगी और एक आदमी अपना ह़ौज़ लीप-पोत रहा होगा अभी न उस में पानी भरा जाएगा और न पिया जाएगा कि क़ियामत आ जाएगी और एक आदमी खाने का लुक़्मा अपने मुँह की तरफ़ उठाएगा और अभी उस ने मुँह में न डाला होगा कि क़ियामत आ जाएगी। (**बुख़ारी**)

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मुझे इस तरह़ भेजा गया है कि मैं और क़ियामत ऐसे हैं यानी दो उंगलियों की तरह़।" (**बुख़ारी**)

आयत का मतलब यह है कि आसमानों और ज़मीन में बन्दों से सम्बन्धित जितनी बातें, फ़ैसले और छुपे हुए ह़ुक्म हैं उन सब का इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह को है। इसी में क़ियामत का इ़ल्म भी है और जब उस का वक़्त आ जाएगा तो पलक झपकते आ जाएगी या इस से भी तेज़ी के साथ हो जाएगी इसलिए कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

आयत नं० 78 से 90 तक

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ اَلَمْ
يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ
سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا
وَاَشْعَارِهَاۤ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ
تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ
الْمُبِيْنُ ۝ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ
قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ ِالسَّلَمَ
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ۝
وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ
شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝

अनुवाद-

(78) और अल्लाह ही ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट से इस ह़ाल में निकाला कि तुम कुछ भी नहीं जानते थे; और 'उसने' तुम को कान आँखें और दिल दिये, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। (79) क्या ये लोग परिन्दों को नहीं देखते कि आसमान (और) हवा में घिरे हुए (उड़ते) हैं, उनको अल्लाह ही थामे रखता है, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ। (80) और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए घरों को रहने की जगह बनाया और उसी में चौपाए की खालों से भी घर बनाया, जिन्हें तुम अपनी यात्रा के दिन, और अपने ठहरने के दिन, हल्का-फुल्का पाते हो; और उनके ऊन के, लोम चर्म और उनके बालों से कितने ही सामान बनाए और प्रयोग की जो एक मुद्दत तक चलती है। (81) और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों से साया बनाया, और पहाड़ों में तुम्हारे लिए पनाहगाहें बनाई और तुम्हें लिबास दिये- जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं, और कुछ अन्य वस्त्र दिये जो तुम्हारी लड़ाई में तुम्हारे बचाओ का काम करते हैं- इसी तरह 'वह' तुम पर अपनी नेअ़मतें पूरी करता है, ताकि तुम फरमाँबरदार (आज्ञाकारी) बनो। (82) फिर अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो आप पर केवल साफ़ पैग़ाम पहुँचा देना है। (83) यह अल्लाह की नेअ़मतों को पहचानते हैं फिर भी उन का इन्कार करते हैं और इनमें अक्सर तो काफ़िर हैं। (84) और जिस दिन 'हम' उठाएँगे हर उम्मत में से एक गवाह, फिर काफ़िरों को न इजाज़त दी जाएगी और न उनको तौबः के लिए मौक़ा ही दिया जाएगा; (85) और ज़ालिम लोग जब अ़ज़ाब को देख लेंगे, तो फिर न उनका अ़ज़ाब हल्का किया जाएगा और न उनको मोहलत ही दी जाएगी। (86) और जब वे लोग, जिन्होंने शिर्क किया, अपने ठहराए हुए साझीदारों को देखेंगे तो कहेंगे, ''हमारे 'रब' यही हमारे वे साझीदार हैं जिनको हम 'तुझे' छोड़ कर पुकारा

करते थे; इस पर वे उनकी बात उन्हीं पर लौटा देंगे कि "तुम तो झूठे हो" (87) और उस दिन वे अल्लाह के सामने (अपने को) झुका (आत्मसमर्पण कर) देंगे और जो कुछ वे गढ़ा करते थे सब ग़ायब हो जाएंगे। (88) जिन लोगों ने इन्कार किया और अल्लाह की राह से रोकते रहे; 'हम' उनको अ़ज़ाब पर अज़ाब बढ़ाते रहेंगे उस फ़साद के बदले जो वे करते रहे। (89) और जिस दिन 'हम' हर उम्मत में एक गवाह उन्हीं में से उनके मुक़ाबले में उठा खड़ा करेंगे, और आप को उन लोगों पर गवाही देने के लिए लाएंगे, और 'हम' ने आप पर किताब उतारी है जो हर चीज़ को साफ़-साफ़ बयान करने वाली है, और हिदायत व रह़मत और खुशख़बरी है, मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) के लिए। (90) अल्लाह हुक्म देता है न्याय का, और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का और बेह़याई, बुराई और सरकशी से रोकता है, 'वह' तुम्हें नसीह़त करता है ताकि तुम ध्यान दो।

आयत नं० 78 से 90 तक की व्याख्या

78 وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

आयत नं० (65) وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ से तौह़ीद बारी तआ़ला के जिन दलायल के बयान की शुरुआ़त हुई है और जो आयत नं० (70) وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ और आयत नं० (71) وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ और आयत नं० (72) وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا में बयान किये गये है, उन्हीं दलायल में से एक दलील यह भी है जो इस आयत में बयान की गई है।

अल्लाह तआ़ला आदमी को जब उस की माँ के पेट से निकालता है तो उसे किसी बात की ख़बर नहीं होती है। अल्लाह उसे कान, आँख और दिल देता है और बचपन से लेकर बड़ा होने तक इन क़ुव्वतों को बढ़ाता है ताकि वह इन नेअ़मतों को याद कर के शुक्र अदा करे। उस की क़ुद्रत का एतिराफ़ करें और उसी की अ़िबादत करे। इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने इसे यह नेअ़मतें इसलिए दी हैं ताकि इन की मदद से अल्लाह के हुक्मों की पाबन्दी करे।

79 اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِىْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम क़ुद्रत की एक दलील चिड़ियों की तख़्लीक़ (पैदाइश) भी है जो हवा में बग़ैर किसी सहारे के इत्मिनान के साथ हर तरफ़ उड़ती रहती हैं। वह अल्लाह की ज़ात है जिस ने उन के अन्दर यह क़ुद्रत दी है जो उन्हें फ़िज़ा में रोके रखती है।

चिड़ियों के लिए पर बनाया और उन्हें खोलना और बन्द करना सिखाया। जैसे- कोई पानी में तैरता है यह यक़ीनन अहले ईमान के लिए बड़ी निशानियाँ हैं, जिन में ग़ौर व फ़िक्र कर के वह अपने ख़ालिक़ की अ़ज़्मत का एतिराफ़ करते हैं और सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करते हैं।

80-83 وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَاۤ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝ وَاللّٰهُ

جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ
تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝
يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝

यहाँ से उन नेअ़मतों का ज़िक्र हो रहा है जो अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को दी हैं ताकि उन में ग़ौर व फ़िक्र कर के उस की वह़दानियत (अद्वैतवाद) का इक़रार करे। अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को पत्थरों, ईंट और दूसरी चीज़ों के ज़रिये बने हुए घर दिये ताकि उन में सुकून व राह़त ह़ासिल कर सके, यह अल्लाह की नेअ़मत है।

अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें आसमानी सय्यारों की तरह़ हमेशा ह़रकत करता हुआ या ज़मीन की तरह़ रुका हुआ बना देता, उन्हें चौपायों के चमड़े से भी बने हुए घर दिये, जिन्हें वह सफ़र व ह़ज़र में उठाये फिरते हैं और उन चौपायों के बालों और ऊन से बने हुए सामान, बिस्तर और कम्बल वग़ैरह दिये जिन से लोग कुछ दिनों तक फ़ायदा उठाते रहते हैं। इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला ने साया ह़ासिल करने के दूसरे बहुत से ज़राय (माध्यम) पैदा किये, ताकि अगर किसी के पास ख़ेमा या मकान न हो या सफ़र की ह़ालत में हो तो इन को इस्तेमाल करे। जैसे- दरख़्त, दीवार या छतरी से साया ह़ासिल करे।

और अल्लाह तआ़ला ने पहाड़ों में ग़ार (गुफ़ा) बनाये हैं, जिन्हें इन्सान बहुत से मौक़ों पर इस्तेमाल करता है। जैसे- सफ़र करते हुए इन्सान कभी उन में अपने दुश्मन, बारिश, सर्दी और गर्मी से पनाह लेता है। उस ज़माने में पहाड़ों की सुरंगे बनाकर फ़ौज, हवाई जहाज़ और हथियार रखने के लिए सुरक्षित जगह बनाई जाती थी।

इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला ने ऊन, रुई और कितान वग़ैरह के बने हुए लिबास पैदा किये ताकि उन के ज़रिये सर्दी-गर्मी से बचा जाए और लोहे से बने हुए ज़िरह, ख़ुद और बक्तर बन्द गाड़ियाँ दीं ताकि आदमी उन्हें जंगलों में इस्तेमाल करके तल्वारों, नेज़ों, तोपों, राकेटों और मीज़ाइलों से अपने आप को बचाए। अल्लाह तआ़ला ने यह तमाम नेअ़मतें और इसी तरह़ की दूसरी बहुत सी ऐसी दीनी और दुनियवी नेअ़मतें इन्सानों को दी, जिन में आदमी अगर ग़ौर करे तो दीन-ए-इस्लाम को क़ुबूल कर ले और अल्लाह के सामने सर तस्लीम ख़म (नतमस्तक) कर दे।

आयत नं० (82) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर इन तमाम नेअ़मतों को गिनाये जाने और ह़क़ को इस वज़ाह़त (Explanation) के साथ बयान किये जाने के बावजूद इस्लाम से फिरता है तो आप ने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दी और अब उन के पास कोई उ़ज़्र बाक़ी न रहा।

आयत नं० (83) में फ़रमाया कि मुश्रिकीने मक्का जानते हैं कि इन तमाम नेअ़मतों का ख़ालिक़ अल्लाह है, लेकिन कहते हैं कि यह हमें हमारे मअ़बूदों की सिफ़ारिशात से मिली हैं और इस तरह़ अक्सर लोग अल्लाह की नेअ़मतों का इन्कार (कुफ़्र) करते हैं।

बाज़ मुफ़स्सिरीन की राय है कि यहाँ 'नेअ़मत' से मुराद नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत है।

कुफ़्फ़ारे मक्का जानते थे कि आप (सल्ल०) अल्लाह के नबी हैं लेकिन घमण्ड की वजह से इन्कार करते थे।

84 وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٤﴾

कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन का क़ियामत में क्या ह़ाल होगा उसे यहाँ बयान किया जा रहा है कि उस दिन अल्लाह तआ़ला हर क़ौम के नबी को उन के सामने लाएगा जो उन के ह़क़ में या तो ईमान व यक़ीन की शहादत (गवाही) देगा या उन के ख़िलाफ़ कुफ़्र व हठधर्मी की गवाही देगा और उस दिन काफ़िरों को कोई बात बनाने की इजाज़त न दी जाएगी और न उन्हें कोई मौक़ा दिया जाएगा कि वह अपने रब की नाराज़गी को दूर करें, इसलिए कि आख़िरत दारुल् अ़मल नहीं होगी और न ही दुनिया में वापस भेजे जाएँगे कि अपने गुनाहों से तौबः कर लें।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः मुर्सिलात आयात नं० (35/ 36) में फ़रमाया हैः-

هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ﴿٣٦﴾ कि "आज के दिन (कुफ़्फ़ार) न एक कलिमा अपनी ज़बान से बोल सकेंगे और न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि (अल्लाह के सामने) अपना उ़ज़्र पेश कर सकें"।

85-87 وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٥﴾ وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُو مِنْ دُونِكَ ۖ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾ وَأَلْقَوْا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾

जब मुश्रिकीन जहन्नम को अपनी आँखों से देखेंगे तो उन की तमन्ना होगी कि किसी तरह़ यह अ़ज़ाब उन से टल जाए लेकिन टलना तो दूर की बात होगी इस में कोई कमी नहीं की जाएगी और न ही उन्हें तौबः की मोहलत दी जाएगी और जब मुश्रिकीन उन मअ़बूदों को देखेंगे जिन्हें वह दुनिया में अल्लाह का शरीक बनाते थे (और बुख़ारी व मुस्लिम में है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला मुश्रिकीन के साथ उन के बुतों को भी ज़िन्दगी देगा और मुश्रिकीन से कहा जाएगा कि हर शख़्स अपने मअ़बूद के पीछे लग जाए) तो पुकार उठेंगे कि ऐ हमारे रब! यही मअ़बूद (उपास्य) हैं जिन की हम तेरे सिवा अ़िबादत करते थे।

'अबू मुस्लिम अस्फ़हानी' कहते हैं कि मुश्रिकीन यह बात इस उम्मीद से कहेंगे कि शायद इस तरह़ उन से अ़ज़ाब टल जाए या कम से कम हल्का हो जाए तो अल्लाह तआ़ला मुश्रिकीन को ज़लील व रुस्वा करने के लिए उस दिन बुतों को ज़बान दे देगा जो उन को झुठलाते थे और कहेंगे कि हम ने तो तुम्हें नहीं कहा था कि हमारी अ़िबादत (उपासना) करो।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः अह़क़ाफ़ आयत नं० (6) में फ़रमाया हैः-

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ﴿٦﴾ कि "जिस दिन लोग मैदाने मह़शर में जमा होंगे तो यह मूर्तियाँ उन की दुश्मन बन जाएँगी और उन की अ़िबादत का इन्कार कर देंगी।"

आयत नं० (87) में फ़रमाया गया है कि क़ियामत के दिन मुश्रिकीन अल्लाह के अ़ज़ाब के सामने बेबस और दुनिया में जिन्हें अल्लाह का शरीक बनाते थे सभी एक-एक कर के उन से अलग हो जाएँगे।

88 اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ۝

जो लोग इस दुनिया में कुफ़्र की राह अख़्तियार करते हैं और दूसरों को भी हक़ पर चलने से रोकते हैं, अल्लाह तआ़ला उन्हें क़ियामत के दिन दोहरा अ़ज़ाब देगा। एक तो उन के कुफ़्र की वजह से और दूसरा इसलिए कि वह अल्लाह के बन्दों को गुमराह करते थे।

सूरः अनआ़म आयत नं० (26) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ 'और यह लोग इस से दूसरों को भी रोकते हैं और ख़ुद भी दूर रहते हैं'। यह आयत दलील है कि जहन्नम में काफ़िरों के अ़ज़ाब के दर्जात होंगे, जिस तरह जन्नत में मोमिनों के दर्जात होंगे।

89 وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब कर के फ़रमाया है कि आप उस दिन को याद करें जब हम हर क़ौम के नबी को बहैसियत गवाह उन के सामने पेश करेंगे और काफ़िरों के पास कोई उ़ज़्र नहीं होगा, इसलिए कि हम ने आप पर क़ुर्आन नाज़िल किया है जिस में हर बात साफ़-साफ़ बयान कर दी है जो मुसलमानों के लिए हिदायत और रह़मत के साथ जन्नत की ख़ुशख़बरी लिए हुए है।

इसी को अल्लाह तआ़ला ने सूरः निसा आयत नं० (41) में भी बयान किया हैः-

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ۝ "बस कैसा होगा वह मन्ज़र जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएँगे और आप को (ऐ रसूल!) उन सब पर गवाह बना कर लाएँगे।"

90 اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝

चूंकि ऊपर की आयत में आया है कि अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) पर क़ुर्आने करीम नाज़िल फ़रमाया, जिस में हर बात खोल कर बयान कर दी गई है। इसलिए इस के बाद यह आयत लाई गई, जिस में इस्लाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए हर ज़रूरी और बुनियादी बात बयान कर दी गई है। यहाँ 'अ़द्ल और एह़सान' के मुफ़स्सिरीन ने बहुत से मतलब बयान किये हैं यानी 'अ़द्ल' का सब से बेहतर शाब्दिक माने 'इफ़रात' व 'तफ़रीत' के दर्मियान का रास्ता। दीनी कामों में न ज़्यादती होनी चाहिए और न ही उस में कोई कमी होनी चाहिए।

इसी तरह 'एह़सान' का सब से बेहतर शब्दिक माने अ़मल-ए-सालेह़ जो वाजिब न हो है। जैसे- नफ़्ली सद्क़ः और अ़िबादात जो बन्दों पर वाजिब नहीं है। 'एह़सान' का एक माने वह भी है जिसे ह़दीस जिब्रईल में बयान किया गया है कि अल्लाह की अ़िबादत इस तरह की जाए जैसे- बन्दा अपने अल्लाह को देख रहा है।

आयत में अल्लाह तआ़ला ने रिश्तेदारों को उन की ज़रुरियात के मुताबिक़ देने का हुक्म दिया है क्योंकि सिलह रह़मी का यही तक़ाज़ा है कि हर बड़े गुनाहों से और हर बुरे काम से अल्लाह के ख़िलाफ़

सरकशी, बग़ावत और लोगों पर ज़ुल्म व ज़्यादती से मना फ़रमाया है।

'अ़ब्दुल् मलिक बिन उ़मैर' से रिवायत है कि जब ह़कीम अ़रब 'अक्सम बिन सैफ़ी' के सामने यह आयत पढ़ी गई तो उस ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा, मैं देख रहा हूँ कि मुह़म्मद अच्छे अख़्लाक़ का हुक्म दे रहा है और बुरे अख़्लाक़ से रोक रहा है तो फिर तुम लोग इस दीन को क़ुबूल करने के लिए आगे बढ़कर ह़िस्सा लो और सरदार बन जाओ, पीछे रहने वाले न हो।

'क़तादह' कहते हैं कि दौरे जाहिलियत के लोगों में अच्छे अख़्लाक़ की जो बात भी लोगों में पाई गई, उस का अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में हुक्म दिया है और बुरे अख़्लाक़ की जिन बातों के ज़रिये एक दूसरे को शर्म दिलाते थे उन सब से इस में मना किया गया है और अल्लाह तआ़ला ने हर घटिया और बुरे अख़्लाक़ से रोका है।

आयत नं० 91 से 105 तक

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝
وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ۭ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِىَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ۭ
اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ۭ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ
يُّضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَلَتُسْـَٔـلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا
وَتَذُوْقُوا السُّوْۗءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ ۭ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۭ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَي الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ۝ وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ
قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى
وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ۭ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ
عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝

अनुवाद-

(91) और अल्लाह से किये अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करो, और जब तुम आपस में अ़हद करो तो क़समों को पक्का करने के बाद मत तोड़ो, और जबकि तुम अल्लाह को गवाह बना चुके हो, बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (92) और तुम उस (औ़रत) की तरह न हो जाना जिसने अपना सूत मेह़नत से कातने के बाद टुकड़े-टुकड़े कर के रख दिया, कि तुम भी अपनी क़समों को आपसी फ़साद का ज़रिया बनाने लगो; इस तरह कहीं ऐसा न हो कि एक गिरोह दूसरे से बढ़ जाए। अल्लाह इसके ज़रिये तुम्हें आज़माता है, और जिन बातों में तुम विभेद करते हो, 'वह' क़ियामत के दिन तुम्हारे मतभेदों की ह़क़ीक़त तुम पर ज़रूर खोल देगा। (93) और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत (समुदाय) बना देता, लेकिन 'वह' जिसे चाहता है गुमराह करता है, और जिसे चाहता है राह दिखाता है, और जो कुछ तुम कर रहे हो उसके बारे में तुम से सवाल हो कर रहेगा। (94) और अपनी क़समों को आपसी फ़साद का ज़रिया न बनाओ, कहीं कोई क़दम उस के जमने के बाद फिसल न जाए और अल्लाह की राह से तुम्हारे रोकने के बदले तुम्हें तकलीफ़ का मज़ा चखना पड़े, और तुम्हें सख़्त अ़ज़ाब मिले। (95) और अल्लाह से जो तुमने अ़हद किया है, उसके बदले थोड़ी से भी क़ीमत न लो, अल्लाह के पास जो कुछ निश्चित है वह तुम्हारे लिए कहीं ज़्यादा बेहतर है अगर तुम जानो। (96) जो कुछ तुम्हारे पास है ख़त्म हो जाएगा, और जो अल्लाह के पास है बाक़ी रहने वाला है; और जिन लोगों ने सब्र किया 'हम' उनको ज़रूर बदला देंगे, जो कुछ वे अच्छा काम करते

रहे। (97) भले काम जो व्यक्ति भी करेगा मर्द हो या औ़रत- और (शर्त यह है कि) वह ईमान वाला हो- तो हम उसे ज़रूर एक पाक ज़िन्दगी देंगे, और हम उन्हें उनके अच्छे कामों का ज़रूर बदला देंगे, जो वे करते रहे। (98) तो जब आप क़ुर्आन पढ़ने लगें, तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँग लिया करें; (99) उसका कुछ भी ज़ोर उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान ले आएँ, और अपने 'रब' पर भरोसा रखें। (100) उसका ज़ोर तो बस उन्हीं लोगों पर चलता है, जो उसे दोस्त बनाए रखते हैं, और जो अल्लाह के साथ साझीदार ठहराते रहते हैं। (101) और जब 'हम' किसी आयत की जगह दूसरी आयत बदल कर लाते हैं; और अल्लाह ही बेहतर जानता है जो कुछ 'वह' उतारता है; तो कहते हैं, ''तुम खुद ही गढ़ लेते हो'' (नहीं) बल्कि उनमें से अक्सर जानते नहीं। (102) कह दीजिए, "इसको रुहुल् क़ुदुस (पवित्र आत्मा) ने आप के 'रब' के पास से हक़ के साथ उतारा है, ताकि ईमान वालों के क़दम जमा दे और मुसलमानों (आज्ञाकारी) के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी है। (103) और 'हम' खूब जानते हैं कि यह लोग कहते हैं, "इन्हें तो एक व्यक्ति सिखा जाता है, ह़ालाँकि जिसकी ओर वे संकेत करते हैं 'अ़जमी' हैं (उस की भाषा विदेशी है) और यह स्पष्ट अ़रबी भाषा में है"। (104) जो लोग अल्लाह की आयतों को नहीं मानते अल्लाह उनको राह नहीं दिखाता, और उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है। (105) झूठ तो बस वही लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों को मानते नहीं और वही हैं जो झूठे हैं।

आयत नं० 91 से 105 तक की व्याख्या

91 وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने अ़हद व पैमान को पूरा करने और क़समों को न तोड़ने की नसीह़त की है। बाज़ लोगों ने इस अ़हद से इस्लाम क़ुबूल करने के लिए नबी करीम (सल्ल०) के हाथ पर की गई बैअ़त मुराद ली है, लेकिन अ़हद की इज़ाफ़त (निस्बत) अल्लाह की तरफ़ होने से मालूम होता है कि इस से हर अ़हद व पैमान मुराद है। जो इन्सान अल्लाह, उस के रसूल और दूसरे इन्सान के साथ करता है और अल्लाह के नाम की जो क़सम भी खाई जाए उस का तोड़ना मना है।

अल्बत्ता जिन क़समों में ताकीद पैदा की गई है उन का तोड़ देना ज़्यादा बड़ा गुनाह होता है, लेकिन सह़ीह़ अह़ादीस से मालूम होता है कि अगर क़सम खाने के बाद आदमी को पता चले कि उस का पाबन्द न रहना ही दीनी एतिबार से बेहतर है तो क़सम तोड़ दे और वह करे जो बेहतर हो और क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करे।

'सह़ीह़ैन' की रिवायत में है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमायाः-"अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह ने चाहा तो कोई भी क़सम खाऊँ और फिर उस बात के बजाय दूसरी बात को बेहतर समझूँगा तो मैं बेहतर काम करुँगा और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करुँगा"।

92 وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ۭ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ

أُمَّةٌ هِيَ أَرْبٰى مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝

यानी अल्लाह के नाम पर किये गये वादों को पूरा करो और अपनी क़समों को न तोड़ो, इसलिए कि अगर तुम ने ऐसा किया तो तुम्हारी मिसाल उस पागल औरत की तरह हो जाएगी जो मज़बूत धागे बटती हो और फिर उसे खोल कर बिखेर देती हो।

कहते हैं कि मक्का में 'रब्ता बिन्त उमर' नाम की एक औरत थी, जो ऐसा करती थी। इस मिसाल में इशारा है कि अक़्ल व होश वाले मर्द अपनी क़समें नहीं तोड़ते हैं और जो लोग ऐसा करते हैं वह नासमझ औरतों की तरह हैं।

इस के बाद अहले ईमान को इस बात से मना किया गया है कि वह अपनी क़समों को धोका देने और ज़मीन में फ़साद फैलाने का ज़रिया बनाएँ। मिसाल के तौर पर मुसलमान किसी जमाअ़त या क़बीले (समूह) के साथ मुआ़हिदा (सन्धि) कर लें और फिर उस पर क़ायम न रहें और जमाअ़त या क़बीले के साथ सिर्फ़ इसलिए मुआ़हिदा कर लें कि यह लोग पहले वालों से ज़्यादा ताक़तवर या जत्थे वाले हैं। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐसे हालात पैदा कर के वह तुम्हें आज़माना चाहता है कि तुम अपने वादे पर बाक़ी रहते हो या दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह़ देकर अ़हद को तोड़ना चाहते हो।

अगर **'अ़हद'** से नबी करीम (सल्ल०) के हाथ पर बैअ़त मुराद ली जाए तो मतलब यह होगा कि अल्लाह तआ़ला मक्की दौर के मुसलमानों को आज़माना चाहता है कि वह नबी करीम (सल्ल०) के साथ अपने अ़हद व पैमान पर क़ायम रहते हैं या क़ुरैश वालों की ज़्यादा तअ़दाद और क़ुव्वत व ज़ायदाद और मुसलमानों की कमी और मोह़ताजी व कमज़ोरी की वजह से धोके में पड़ जाते हैं और इस्लाम से अलग हो जाते हैं। क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला ह़क़ व बातिल को स्पष्ट (Clear) कर देगा।

आज जो लोग ह़क़ पर क़ायम रहेंगे और क़ुरैश की कसरत व ताक़त के धोके में नहीं पड़ेंगे।

उस दिन उन्हें अज्र अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाएगा और उन के दर्जात बुलन्द करेगा और जिन के क़दमों में डगमगाहट आ जाएगी और इस्लाम से फिर जाना होगा, उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तिला करेगा।

93 وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِي مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने बयान फ़रमाया है कि अगर अल्लाह चाहता तो मोमिन और काफ़िर तमाम लोगों को दीने ह़क़ पर जमा कर देता, लेकिन उस की ह़िक्मत का तक़ाज़ा यह था कि जिसे ह़क़ की तलाश हो और उसे क़ुबूल करने की जिस में चाहत हो उसे हिदायत दे और जो गुमराह होना चाहे और गुमराही पर डटा रहे उसे भटकता छोड़ दे और दुनिया में इन्सान जो कुछ करता है उस के बारे में उस से क़ियामत के दिन ज़रूर पूछा जाएगा और इस सवाल से ह़क़ीक़त में कोई फ़र्क़ नहीं आएगा इसलिए कि अल्लाह तआ़ला तो सब कुछ जानता है उस से कुछ भी छुपा हुआ नहीं है।

94 وَلَا تَتَّخِذُوٓا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ ۖ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

आयत नं० (92) में जिस बात से मना किया गया है उसी को यहाँ भी साफ़तौर से मना किया गया है कि मुसलमानों के लिए यह जायज़ नहीं कि अल्लाह के नाम की क़सम इसलिए खाएँ ताकि किसी को धोका दें और कोई दुनियावी मक़्सद ह़ासिल करें, इसलिए कि यह सच्चाई के ख़िलाफ़ है और जो लोग ऐसा करेंगे उन्हें अल्लाह की तरफ़ से दुनिया में उस का बुरा अन्जाम मिल जाएगा क्योंकि ऐसा करने से दअ़वते इस्लामी को बहुत बड़ा नुक़्सान पहुँचेगा और जिन लोगों के साथ ऐसा मामला होगा वह मुसलमानों की ओर से बेवफ़ाई देखकर इस्लाम से फिर जाएँगे और दूसरे लोग भी उन की पैरवी करते हुए इस्लाम को क़ुबूल नहीं करेंगे। ऐसे लोगों को अल्लाह तआ़ला ने आख़िरत में भी बड़े अ़ज़ाब की धमकी दी है।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "कबीरा गुनाह यह हैं अल्लाह के साथ शिर्क, वालिदैन की नाफ़रमानी, क़त्ल और झूठी क़सम"। (बुख़ारी)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिस ने क़सम खाई ताकि किसी मुसलमान ह़क़्दार को उस के ह़क़ से महरूम कर दे तो वह अल्लाह को इस ह़ालत में पाएगा कि वह उस से नाराज़ होगा।" (बुख़ारी)

95 وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

क़ुरैश के लोग कमज़ोर मुसलमानों को लालच देते थे कि अगर यह इस्लाम को छोड़ दें तो इन्हें माल व दौलत दिया जाएगा। अल्लाह तआ़ला ने ऐसे मुसलमानों से कहा कि अल्लाह के साथ किये गये वादे और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के हाथ पर की गई बैअ़त (प्रतिज्ञा) के बदले तुम लोग दुनिया की ह़क़ीर दौलत को क़ुबूल न करो। इस के बाद कहा कि कामियाबी माले ग़नीमत, रिज़्क़ कसीर और आख़िरत में जन्नत जैसी हमेशा की नेअ़मत इस दुनियावी माल से ज़्यादा बेहतर है, जिस की क़ुरैश लालच देते है।

96 مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

इस में फ़रमाया कि तुम्हारे पास दुनिया की जो भी नेअ़मत है वह ख़त्म हो जाएगी और अल्लाह की जन्नत हमेशा बाक़ी रहेगी। इस के बाद मक्की दौर के ही मुसलमानों को सामने रखकर फ़रमाया कि जो लोग आज मुश्रिकीन की तक्लीफ़ों पर सब्र करेंगे और इस्लाम पर साबित क़दम रहने के लिए तक्लीफ़ें झेलेंगे, अल्लाह तआ़ला उन के सब्र व इस्तिक़ामत का कई गुना अच्छा बदला देगा।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला का यह वादा हर उस मुसलमान के लिए है जो किसी भी ज़माने में अपने ईमान व इस्लाम पर साबित क़दम रहेगा और दुनिया के ह़क़ीर फ़ायदों के लिए अपने दीन को दाँव पर नहीं लगाएगा।

97 مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

इस आयते करीमा में हर मुसलमान (मर्द व औ़रत) को ख़ुशख़बरी दी गई है कि ईमान लाने के बाद जो कोई भी क़ुर्आन व सुन्नत के मुताबिक़ अ़मल करेगा, अल्लाह तआ़ला उसे दुनिया में राह़त और

रिज़्क़ ह़लाल अ़ता करेगा और क़ियामत के दिन उन के नेक आ़माल का कई गुना बेहतर बदला देगा।

98-100 فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٩٨﴾ إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾ إِنَّمَا سُلْطَانُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ هُم بِهِ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾

चूंकि क़ुर्आने करीम अल्लाह की किताब है और 'ह़क़' का जिन्नों और इन्सानों के शैतानों में से कोई न कोई दुश्मन और मुख़ालिफ़ (विरोधी) होता है जो इस के ख़िलाफ़ लोगों के दिलों में शुब्हात पैदा करता है, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि जब आप क़ुर्आन की तिलावत करें तो अल्लाह की शैतान के वस्वसों से पनाह माँगे।

आयात (99/100) में बयान फ़रमाया कि जो लोग अहले ईमान होते हैं और अपने रब पर भरोसा करते हैं और राहे ह़क़ में तक्लीफ़ों पर सब्र करते हैं, उन पर शैतानों के वस्वसों का असर नहीं होता, वह लोग उस की तमन्नाओं को ख़ाक में मिला कर साज़िशों को नाकाम बना देते हैं। उस के वस्वसों का असर उन लोगों पर होता है जो उस की पैरवी करते हैं, उसे अल्लाह का साझीदार बनाते हैं और उस की अ़िबादत करते हैं।

101-102 وَإِذَا بَدَّلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ ۙ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنتَ مُفْتَرٍ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾ قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿١٠٢﴾

क़ुर्आन में बाज़ जगहों पर ऐसा है कि अल्लाह तआ़ला ने एक आयत नाज़िल फ़रमाई। फिर उस आयत को मन्सूख़ (निरस्त) कर दिया और उसकी जगह दूसरा हुक्म दे दिया। मुश्रिकीन अपनी कम अ़क़्ली की वजह से कहते थे कि मुह़म्मद (सल्ल०) झूठा है, हर दिन अपनी तरफ़ से एक नई बात पैदा करता है और कहता है कि यह तब्दीली अल्लाह की ओर से है।

सूरः बक़रः आयत नं० (106) مَا نَنسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَا की तफ़्सीर में इस बारे में विस्तार के साथ लिखा जा चुका है कि क़ुर्आन के बारे में यह शक यहूद फैलाते थे और यहाँ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यह शक मुश्रिकीने मक्का फैलाते थे।

इससे मालूम होता है कि तमाम काफ़िरों की यह आ़दत थी और आज भी दुश्मनाने इस्लाम का यही तरीक़ा है। इन के उसी शक को दूर किया गया है और कहा गया है कि अल्लाह तआ़ला कभी अपने बन्दों की मस्लह़त के लिए एक आयत नाज़िल फ़रमाता है, फिर अपनी ह़िक्मत के मुताबिक़ उसे मन्सूख़ (निरस्त) कर देता है और उस की जगह दूसरा हुक्म ले आता है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अपनी तरफ़ से कोई बात नहीं कहते, बल्कि ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) अपने रब के हुक्म से उसे आप के पास लेकर आते हैं ताकि मोमिनों का ईमान बढ़े। जैसे- बारिश का पानी जब ज़मीन पर पड़ता है तो उसे ज़िन्दा कर देता है। इसी तरह़ नुज़ूले क़ुर्आन से मोमिनों के दिलों को ज़िन्दगी मिलती है, क़ुर्आन हिदायत का सरचश्मा (स्रोत) है और मुसलमानों को कामियाबी की

ख़ुशख़बरी देता है। وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ में इस तरफ़ इशारा है कि यह क़ुर्आन मुसलमानों के लिए तो ख़ुशख़बरी देता है, लेकिन दुश्मनाने इस्लाम के कुफ़्र को और उन के ग़म को बढ़ा देता है।

103 وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِىْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِىٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِىٌّ مُّبِيْنٌ ۝

मुश्रिकीने मक्का कहते थे कि यह क़ुर्आन अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, बल्कि मुह़म्मद किसी आदमी से सीख कर लोगों को सुनाते है और दावा करते है कि उन पर अल्लाह की तरफ़ से वह्य नाज़िल होती है।

मुफ़स्सिरीन ने उस आदमी के कई नाम बताए हैं। जो रोम का नसरानी था और उस ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। अल्लाह तआ़ला ने उन के आरोपों को रद्द करते हुए फ़रमाया कि जिस आदमी के बारे में काफ़िर कहते हैं कि उस से नबी करीम (सल्ल०) सीखते हैं तो वह तो अ़ज्मी (ग़ैर अ़रब) है और क़ुर्आन फ़सीह़ व बलीग़ (साहित्य से भरा) अ़रबी ज़बान में है। यह कैसे सम्भव है कि एक अ़ज्मी आदमी इतनी अच्छी अ़रबी ज़बान में ऐसी ह़िक्मत की बातें, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को तअ़लीम दे।

104-105 اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तरफ़ आरोपों के बाद कहा जा रहा है कि जो लोग अल्लाह की आयतों की तस्दीक़ नहीं करते हैं, अल्लाह तआ़ला ह़क़ की तरफ़ उन की रहनुमाई नहीं करता और आख़िरत में उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब मिलेगा और नबी करीम (सल्ल०) के सच्चाई की बशारत देते हुए आयत नं० (105) में फ़रमाया कि झूठ वह लोग बोलते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते। झूठ बोलना काफ़िरों की सिफ़त और उन की आ़दत है और इस से बढ़कर झूठ क्या हो सकता है कि वह अल्लाह की आयतों को झुठलाते हैं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) तो मोमिनों के सरदार, सब से सच्चे, सब से नेक, ईमान व अ़मल के एतिबार से सब से अच्छे इन्सान हैं, वह कैसे झूठ बोल सकते हैं।

'मुवत्ता इमाम मालिक' की रिवायत है, नबी करीम (सल्ल०) से पूछा गया कि क्या मोमिन झूठ बोलता है? तो आप ने फ़रमायाः नहीं, फिर आप ने यही आयत पढ़ी।

आयत नं 106 से 128 तक

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖۤ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَ قَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَ لٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ
اللّٰهِ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۰۶﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَ سَمْعِهِمْ وَ اَبْصَارِهِمْ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۰۸﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۰۹﴾
ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَ صَبَرُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۰﴾ يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ
نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ وَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً
يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَ الْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَ لَقَدْ
جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَ هُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّ اشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ
اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَ الدَّمَ وَ لَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَ مَاۤ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ
وَّ لَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّ هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى
اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿۱۱۶﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾ وَ عَلَى
الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَ مَا ظَلَمْنٰهُمْ وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ
لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۹﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ
اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ۭ وَ لَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهِ ۭ اِجْتَبٰىهُ وَ هَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۲۱﴾ وَ اٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةً ۭ وَ اِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۲۲﴾ ثُمَّ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۭ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِنَّمَا
جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۭ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اُدْعُ اِلٰى
سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَ هُوَ اَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَ اِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۭ وَ لَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَ اصْبِرْ وَ مَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ
وَ لَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَ لَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّ الَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿۱۲۸﴾

अनुवाद-

(106) जिस व्यक्ति ने अल्लाह पर ईमान लाने के बाद 'उससे' कुफ़्र किया- सिवाय उसके, जो इसके लिए मजबूर कर दिया गया हो और उसका दिल ईमान पर संतुष्ट हो, बल्कि वह जिसने कुफ़्र के लिए सीना खोल दिया हो तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उनके लिए बहुत बड़ा अ़ज़ाब है; (107) यह इसलिए कि उन्होंने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसंद कर लिया, और अल्लाह कुफ़्र करने वालों को हिदायत नहीं दिया करता। (108) यही लोग हैं जिनके दिलों पर, और कानों पर, और उनकी आँखों पर, अल्लाह ने मुहर लगा दी है और यही लोग ग़फ़लत में पड़े हुए हैं, (109) बेशक आख़िरत में वे ही घाटे में रहेंगे। (110) फिर आप का रब उन लोगों के लिए जिन्होंने इसके बाद कि वे आज़माइश में पड़ चुके

थे घर बार छोड़ा, फिर जिहाद किया और सब्र से काम लिया तो इसके बाद बेशक आप का रब उन को माफ़ करने वाला, बड़ा रह़म वाला है। (111) और उस दिन जबकि हर जानदार अपनी जान बचाने के लिए बहस करने में लगा होगा, और हर व्यक्ति को उस के करतूतों का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और किसी पर जुल्म न होगा। (112) और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की है; एक बस्ती थी जो निश्चिन्त संतुष्ट थी, हर ओर से रोज़ी उनके पास बहुतायत के साथ पहुँच रही थी, फिर उन लोगों ने अल्लाह की नेअ़मतों की नाशुक्री की, तो अल्लाह ने उनके करतूतों की वजह से उनको भूख और भय के छा जाने का मज़ा चखाया। (113) और उनके पास एक रसूल उन्हीं में से आया, तो उन्होंने उसको झुठला दिया, तो उन्हें अ़ज़ाब ने आ पकड़ा, और वे ज़ालिम थे। (114) तो जो चीज़ें तुम्हें अल्लाह ने, ह़लाल पाक रोज़ी दी हैं, उनमें से खाओ और अल्लाह की नेअ़मतों का शुक्र अदा करो, अगर तुम केवल 'उसी' की इबादत करते हो। (115) 'उसने' तो तुम पर केवल मुर्दार (मरे हुए) और खून, और सुअ़र का गोश्त, और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया, ह़राम ठहराया- फिर अगर कोई मजबूर हो जाए, और न तो वह इसकी इच्छा रखता हो, और न हद से आगे बढ़ने वाला हो- तो अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है। (116) और अपनी ज़बानों के बयान किये हुए झूठ के आधार पर यह न कहा करो, कि "यह ह़लाल है और यह ह़राम" इस तरह अल्लाह पर झूठा आरोप लगाने लगो, जो लोग अल्लाह पर झूठा आरोप लगाते हैं, वह कामियाब नहीं होते। (117) यह थोड़ा सा ऐ़श है, फिर दुखदायी अ़ज़ाब होगा। (118) और यहूदियों पर हमने वे चीज़ें ह़राम कर दी थीं, जिनका बयान 'हमने' तुमसे किया, और 'हमने' उन पर कोई जुल्म नहीं किया था बल्कि वे खुद अपने ऊपर जुल्म करते थे। (119) फिर तुम्हारा 'रब' उनके लिए जिन्हों ने जिहालत की वजह से बुरे कर्म किये फिर तौबः कर के सुधार कर लिया, तो आप का 'रब' इसके बाद बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है। (120) बेशक इब्राहीम (एक मिसाली व्यक्ति थे) अल्लाह के फ़रमाँबरदार, और 'उसी' के होकर रहने वाले, और मुश्रिकों में से न थे। (121) 'उसकी' रह़मत के शुक्रगुज़ार थे अल्लाह ने उनको चुन लिया, और सीधी राह की ओर उनकी रह़नुमाई की। (122) और 'हमने' उन्हें दुनिया में भी भलाई दी और आख़िरत में भी वह भले लोगों में से होंगे। (123) फिर 'हमने' आप की ओर वह्य भेजी कि "इब्राहीम के तरीक़े पर चलें जो बिल्कुल एक ओर के हो गये थे और मुश्रिकों में से न थे"। (124) 'सब्त' (सामूहिक इबादत का दिन) की पाबन्दी उन्हीं लोगों पर लागू की गयी थी जिन्होंने उसके बारे में विभेद किया था, और आप का 'रब' क़ियामत के दिन इनके बीच उन बातों का फ़ैसला कर देगा, जिन में यह विभेद करते रहे। (125) लोगों को अपने 'रब' की राह की ओर बुलाइए, ह़िकमत से और अच्छी नसीह़त से, और उनके साथ नसीह़त कीजिए तो अच्छे तरीक़े से, और आप का 'रब' उसे भली-भाँति जानता है जो 'उसकी' राह से भटक गया, और 'वह' उन्हें भी भली भाँति जानता है जो राह पर हैं। (126) और अगर तुम बदला लो तो उतना ही जितना तुम्हारे साथ किया गया है, और अगर सब्र करो तो यह सब्र करने वालों के लिए ज़्यादा बेहतर है। (127) और आप सब्र करते रहिए और आप का सब्र करना अल्लाह ही की तौफ़ीक़ पर है, और आप उन लोगों के ह़ाल पर ग़म न कीजिए, न उनकी चालों से तंगदिल होइए। (128) बेशक, अल्लाह उनके साथ है जो परहेज़गार और नेक हैं।

आयत नं० 106 से 128 तक की व्याख्या

106-109

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖۤ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَ قَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَ لٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ
صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى
الْاٰخِرَةِ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
وَ سَمْعِهِمْ وَ اَبْصَارِهِمْ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

जो इस्लाम क़ुबूल करने के बाद किसी वक्ती तक्लीफ़ व मुसीबत की वजह से दोबारा कुफ़्र की तरफ़ लौट जाते हैं, इस हुक्म से उन लोगों को अलग कर दिया गया है जो ज़ुल्म व सितम से तंग आकर जान बचाने के लिए कुफ़्र का कोई कलिमा अपनी ज़बान पर ले आते हैं, लेकिन दिल से कुफ़्र को क़ुबूल नहीं करते हैं।

जो लोग दिल से दोबारा कुफ़्र क़ुबूल कर लेते हैं, अल्लाह तआ़ला ने उन के बारे में फ़रमाया कि उन पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और क़ियामत के दिन बड़े अ़ज़ाब में मुब्तिला (Involve) किये जाएँगे, इसलिए कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी और कुफ़्र की राह अख़्तियार कर लेने की वजह से अल्लाह तआ़ला उन्हें हिदायत भी नहीं देगा और उन के दिलों, कानों और आँखों पर मुहर लगा देगा और उन्हें ग़फ़्लत में मुब्तिला कर के उन पर ख़ैर भलाई के सारे दरवाज़े बन्द कर देगा और मालूम है कि दुनिया में मोमिन की हैसियत एक व्यापारी जैसी है जो अपनी नेकियों के ज़रिये आख़िरत की भलाई ख़रीदता है, लेकिन जब किसी इन्सान में महरूमी की यह चीज़ें इकट्ठी हो जाती हैं तो उसे नुक़्सान के सिवा कुछ नहीं मिलेगा। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने आयत नं० (109) में फ़रमाया कि आख़िरत में यही लोग ख़सारा पाने वाले हैं।

हदीस की बहुत सी किताबों में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि यह आयत अ़म्मार बिन यासिर के बारे में नाज़िल हुई थी। मुश्रिकीने मक्का ने उन्हें अ़ज़ाब देकर मजबूर कर दिया था कि वह नबी करीम (सल्ल०) को बुरा कहें और उन के मअ़बूदों की तअ़रीफ़ करें। जब उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अपना वाक़िआ़ बयान किया तो आप (सल्ल०) ने पूछा कि तुम अपने वालिद को कैसा पाते हो?

उन्होंने कहा कि मैं अपने ईमान के बारे में पूरे तौर पर सन्तुष्ट हूँ तो आप ने फ़रमाया कि अगर दोबारा तुम्हारे साथ बर्ताव करें तो तुम दोबारा वैसे ही कलिमात इस्तेमाल करो। इसीलिए 'कुर्तुबी' ने लिखा है कि मुफ़स्सिरीन और अहले इल्म की सहमति है कि जो शख़्स अपनी जान बचाने के लिए कलिमा कुफ़्र ज़बान पर ले आएगा और 'इब्ने कसीर' ने लिखा है कि जो शख़्स कुफ़्र करने पर मजबूर किया जाएगा उस के लिए ज़ाहिरी तौर पर कुफ़्र का इज़्हार करना जायज़ होगा और यह भी जायज़ है कि न मानें। जैसा कि हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने किया था कि हर तक्लीफ़ बर्दाश्त करते रहे और अ़हद-अ़हद

(एक-एक) कहते रहे। ह़ज़रत बिलाल (रज़ि०) कहते हैं कि अगर मुझे वह कलिमा मालूम होता जो काफ़िरों को ज़्यादा गुस्सा दिलाता तो मैं उसे ज़रूर कहता।

110-111 ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

मक्का में कुछ ऐसे कमज़ोर मुसलमान थे, जो नबी करीम (सल्ल०) के साथ हिजरत नहीं कर सकते थे और जब हिजरत करना चाहा तो कुरैश ने उन्हें रोक दिया और ज़बान से कलिम-ए-कुफ़्र कहने पर मजबूर किया, लेकिन दिल से कुफ़्र को एक सेकेण्ड के लिए भी कुबूल नहीं किया और कुछ दिनों के बाद जब उन्हें हिजरत का मौक़ा मिला तो मदीना पहुँच गए और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ जिहाद किया और सब्र के साथ जमे रहे।

अल्लाह तआ़ला ने उन्हीं मुसलमानों के बारे में फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उन्हें क़ियामत के दिन माफ़ कर देगा और उन के ह़ाल पर रह़म करेगा। जब हर आदमी को सिर्फ़ अपनी फ़िक्र होगी और इस की कोशिश में लगा होगा कि उसे आग के अ़ज़ाब से निजात मिल जाए और दुनिया में हर आदमी जो भी भलाई या बुराई किये होगा, उस का उसे पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और किसी पर ज़रा सा भी जुल्म न होगा।

112-113 وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝

अक्सर मुफ़स्सिरीन की राय है कि यहाँ قَرْيَةً से मुराद मक्का है। यहाँ के लोग सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारते थे और हर तरफ़ से अल्लाह की रोज़ी यहाँ पहुँचती थी, लेकिन जब इन्होंने अल्लाह की नाशुक्री की और रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर ईमान लाने से इन्कार कर दिया तो अल्लाह तआ़ला ने इन की दोनों ह़ालतें बदल दीं और नबी करीम (सल्ल०) ने इन के लिए बद्दुआ़ दी कि ऐ अल्लाह! इन्हें यूसुफ़ के ज़माने के सूखा की तरह़ कर दे। चुनाँचे मक्का में ऐसा सूखा पड़ा कि हर चीज़ ख़त्म हो गई और मुर्दे का गोश्त खाने की नौबत आ गई और नबी करीम (सल्ल०) के मदीना की तरफ़ हिजरत कर जाने के बाद अल्लाह तआ़ला ने धीरे-धीरे उन के दिल व दिमाग़ पर लश्करे इस्लाम का ऐसा रोअ़ब मुसल्लत कर दिया कि इन का अम्न व सुकून छिन गया, यहाँ तक कि मक्का फ़तेह़ हो गया और सब कुछ इन के हाथ से जाता रहा।

मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि अगर قَرْيَةً से मुराद मक्का ही मान लिया जाए तब भी इस आयत का हुक्म हर उस क़ौम को शामिल है जिस को अल्लाह तआ़ला ने नेअ़मतों से नवाज़ा और वह नेअ़मत के नशे में ऐसा मस्त हुए कि अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी और शरारत करने लगे तो अल्लाह ने उन पर अ़ज़ाब मुसल्लत कर दिया।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मुश्रिकीने मक्का की हिदायत के लिए उन्हीं में से एक रसूल आया जिस के नसब (वंश) को लोग जानते थे, उस रसूल ने उन्हें भलाई का हुक्म दिया और बुराई से रोका तो उन्होंने उसको झुठलाया और कहा कि तुम रसूल नहीं हो, तो अल्लाह के अ़ज़ाब ने उन्हें अपनी गिरफ़्त में ले लिया और वह लोग बड़े ही ज़ालिम थे कि अपने लिए हमेशा के अ़ज़ाब का ज़रिया बने और दूसरों को भी ह़क़ से रोक दिया।

114 فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝

यहाँ मुसलमानों से कहा जा रहा है कि तुम जब ईमान ले आए और कुफ़्र को छोड़ दिया तो अल्लाह की राह में जिहाद करने से जो माले ग़नीमत हाथ आए उसे खाओ, वह तुम्हारे लिए ह़लाल है और ख़बीस। यानी मुर्दा और ख़ून वग़ैरह खाना छोड़ दो और अगर ह़क़ीक़त में तुम सिर्फ़ अल्लाह ही की अ़िबादत करते हो तो अल्लाह की नेअ़मतों का शुक्र अदा करो और उस के ह़क़ को पहचानो।

115 اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

यह आयत बताती है जिससे पाक और ख़बीस (नापाक) के दर्मियान अन्तर हो जाए। इन ह़राम की हुई चीज़ों का ज़िक्र सूरः बक़रः और सूरः अनआ़म में आ चुका है। बार-बार बयान करने का मतलब मुसलमानों को ह़राम से रोकना है।

सूरः बक़रः में इन के अ़लावा और चार ह़राम चीज़ों का ज़िक्र आया है। जबकि सूरः माइदा में दस मुह़र्रमात का ज़िक्र है। इसलिए कि बुनियादी तौर पर ह़राम चीज़ें यही चार हैं, बाक़ी छः उन के ताबेअ़ (Under) हैं; "منخنقة، موقوذة، متردية، نطيحة" और जिस का कुछ ह़िस्सा किसी जानवर ने खा लिया हो "ميتة" के ताबेअ़ हैं और जिसे बुतों पर ज़ब्ह़ किया गया हो, वह ग़ैरुल्लाह पर ज़ब्ह़ किये गये जानवर के ताबेअ़ (अधीन) है, अगर किसी शख़्स को भूक की शिद्दत से मौत का ख़तरा हो जाए तो उस के लिए बक़द्रे ज़रूरत इन मुह़र्रमात में से खाकर अपनी जान बचा लेना जायज़ है, अल्लाह तआ़ला उसे माफ़ कर देगा।

आ़द- वह शख़्स जो ज़रूरत से ज़्यादा खाए।

बाग़- जो यह ह़राम चीज़ें खाए जबकि ह़लाल मौजूद हों। यह विषय कुर्आन करीम में चौथी बार बयान हो रहा है। इस के अ़लावा इन आयतों में भी देखा जा सकता है। जैसे- **(सूरः माइदा आयत नं० 3 और सूरः अनआ़म आयत नं० 145 में)**

यह बात ताकीद के लिए है।

'सुअर' जानवरों में सबसे गन्दा जानवर है। वह दूसरे जानवरों और इन्सानों के पाखाने (लैट्रीन) खाता है। इस से उस पर कुछ असर नहीं होता कि जिस मादा से उसने जिन्सी तअ़ल्लुक़ (काम इच्छा) क़ायम किया है, उसी के सामने दूसरा सुअर उसे इस्तेमाल करे। 'टोरन्टो म्यूज़ियम' में सुअर के सम्बन्ध में लिखा है- सुअर में (Tape worm) पाये जाते हैं, यह कीड़े पेट की कई बीमारियाँ पैदा करते हैं। चर्बी

जो गोश्त के रेशों के दर्मियान होती है यह बछड़े में 10 % भेड़ में 20 % और सुअर में 35% होती है। इस के खाने से चर्बी और कोलस्ट्रोल में इज़ाफ़ा होता है जो फ़ालिज और दिल के दौरे का ज़रिया बनता है।

ग़ैरुल्लाह के नाम पर ज़ब्ह करना मना है और ऐसा जानवर जो ज़ब्ह तो अल्लाह ही के नाम पर किया जाए मगर उस का मक़्सद ग़ैरुल्लाह की क़ुर्बत ह़ासिल करना हो तो वह भी ह़राम है।

116-117 وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّ هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ۝ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

किसी इन्सान को यह अधिकार नहीं कि वह अपनी तरफ़ से किसी चीज़ को ह़लाल और किसी को ह़राम बना ले, सारी मख़्लूक़ (सृष्टि) अल्लाह तआ़ला की है। उस ने जिस चीज़ को चाहा ह़लाल बनाया और जिसे चाहा ह़राम, लेकिन अ़रब बाज़ जानवरों को अपनी तरफ़ से ह़राम क़रार देते थे। जैसे- बह़ीरा, सायबा, वसीला और ह़ाम्मा वग़ैरह जानवर, जिन्हें वह अपने देवताओं के नाम पर छोड़ देते और उन का गोश्त खाना ह़राम समझते थे।

उन्हीं मुश्रिकीन से कहा गया है कि अल्लाह के बारे में झूठ न बोला करो और अपनी तरफ़ से चीज़ों और जानवरों पर ह़लाल व ह़राम का हुक्म न लगाया करो, यह अल्लाह तआ़ला के ख़िलाफ़ आरोप है कि उस ने तो एक चीज़ को ह़लाल बनाया और तुम उसे ह़राम कहते हो और जो अल्लाह के बारे में झूठ बोलेगा वह कभी कामियाब नहीं होगा और अगर ऐसे लोग दुनिया में खा पी रहे हैं और ज़ाहिरी तौर पर ठाठ कर रहे हैं तो इस से किसी को धोका नहीं होना चाहिए कि वह बड़े कामियाब हैं। यह दुनिया तो बिल्कुल वक़्ती चीज़ है, मरने के बाद दर्दनाक अ़ज़ाब उन का इन्तिज़ार कर रहा है।

118 وَ عَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝

शरीअ़ते इस्लामिया में ह़राम चीज़ों का ज़िक्र किये जाने के बाद यहूद की शरीअ़त में ह़राम की हुई चीज़ों का ज़िक्र किया जा रहा है और मक़्सद यह बताया है कि अ़रब के मुश्रिकों ने जिन जानवरों को अपनी तरफ़ से ह़राम बना रखा है, उन का ह़राम होना आसमानी दीन में साबित नहीं है। यह केवल उन के लिए आरोप है।

इनमें यह बताना भी मक़्सूद है कि अल्लाह तआ़ला ने यहूद पर जिन पिछली ह़लाल चीज़ों को ह़राम कर दिया था। जैसा कि सूरः अन्आ़म आयत नं० (146) और सूरः निसा आयत नं० (160) में आया है तो यह ह़राम होना उन के गुनाहों की वजह से हुआ था, अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया था।

119-120 ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَ لَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝

इस सूरः की अब तक जितनी आयतें गुज़री हैं उन सब का आ़म विषय शिर्क को मिटाना और उन काफ़िरों को तम्बीह है जो नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत और दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करते थे, इसीलिए अब जबकि यह सूरः ख़त्म होने वाली है अल्लाह तआ़ला ने उन के ह़ाल पर रह़म करते हुए तौबः का दरवाज़ा खोल दिया कि जो लोग अब तक नादानी और जिहालत की वजह से शिर्क करते रहे, वह्य व रिसालत और मौत के बाद की ज़िन्दगी का इन्कार करते रहे वह अगर अपने गुनाहों से तौबः कर लें और अल्लाह तआ़ला के पालनहार होने और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की रिसालत और दोबारा क़ियामत के दिन उठाये जाने पर ईमान लाएँ, अपनी नियत और अपने आ़माल का सुधार कर लें तो अल्लाह तआ़ला उन के ह़ाल पर रह़म करेगा और उन के गुनाहों को माफ़ कर देगा। यानी क़ुर्आने करीम की ज़बान में कुफ़्फ़ारे मक्का के लिए यह आयत बहुत बड़ी ख़ुशख़बरी थी।

121-123

شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ
فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ ثُمَّ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝

मुश्रिकीने मक्का कहते थे कि वह अपने दादा ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के दीन पर हैं, जिन्होंने अल्लाह का घर बनाया था, ह़ज के आ़माल बयान किये, कअ़बः और उस के इर्द-गिर्द के इलाक़े को ह़रम (दारुल् अमन) क़रार दिया था। यहूद व नसारा भी दावा करते थे कि वह लोग भी मिल्लते इब्राहीमी के मानने वाले हैं और सब ने दीने इस्लाम को क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया था, जो ह़क़ीक़त में वही दीन है जिसे ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) लेकर आए थे। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने यहाँ ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की रुह़ानी और दीनी ज़िन्दगी को बयान कर के मुश्रिकीन और यहूद व नसारा को दिखाया गया है कि उन में से हर जमाअ़त पहचाने कि क्या वह दीने इब्राहीम पर क़ायम है?

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ह़ज़रत इब्राहीम एक नेक और तमाम ख़ूबियों के मालिक इमाम थे, वह अपने रब के बड़े ही फ़रमाँबरदार थे, वह अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक नहीं करते थे और अल्लाह की नेअ़मतों के शुक्रगुज़ार थे यानी उस को राज़ी करने के कामों में उन नेअ़मतों का इस्तेमाल करते थे। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अपनी रिसालत और दोस्ती के लिए चुन लिया था, इसलिए कि जब उन्होंने हर

चीज़ से ज़्यादा अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत की तो उन के दिल में उस की मुहब्बत बैठ गई और किसी दूसरे की मुहब्बत के लिए उस में जगह बाक़ी न रही और अल्लाह ने उन की सीधी राह यानी दीने इस्लाम की तरफ़ रहनुमाई की और दुनिया में उन्हें अच्छाई दी यानी उन का अच्छा ज़िक्र किया और आख़िरत में वह अच्छे लोगों की जमाअ़त के साथ जन्नत में ऊँचे मक़ाम पर होंगे और नबी करीम (सल्ल०) की बुलन्दी के बावजूद अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को हुक्म दिया कि इब्राहीम के मिल्लत की पैरवी करें, जो अल्लाह के लिए तमाम मुश्रिकीन से अलग हो गये थे।

मालूम हुआ कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की तरफ़ अपने को जोड़ने के ह़क़दार मुश्रिकीन और यहूद व नसारा नहीं बल्कि मुसलमान हैं, जिन्होंने तमाम ग़लत देवताओं को ठुकरा कर केवल एक अल्लाह की बन्दगी को अपना लिया और जिन्होंने अपनी अ़िबादत और अपना जीना और मरना सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल् आ़लमीन के लिए ख़ास कर दिया।

124 إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٤﴾

यहूद कहते थे कि 'सनीचर' के दिन की तअ़ज़ीम ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के दीन का ह़िस्सा था। उन्हीं को रद्द करते हुए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यह न इब्राहीम के दीन का ह़िस्सा था, न किसी और नबी के दीन का। इसे अल्लाह तआ़ला ने उन यहूद पर फ़र्ज़ कर दिया था जिन्होंने इस में इख़्तिलाफ़ (विरोध) किया, उन के इस इख़्तिलाफ़ (विरोध) की तफ़्सील यह है कि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने उन से कहा कि 'जुमअ़' का दिन अफ़्ज़ल है तो उन्होंने हठधर्मी में आकर कहा कि 'सनीचर' का दिन अफ़्ज़ल (श्रेष्ठ) है, तो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से कहा कि आप इन्हें इन के ह़ाल पर छोड़ दीजिए।

दूसरा क़ौल यह है कि अल्लाह तआ़ला ने यहूद व नसारा को हुक्म दिया कि वह हफ़्ते में किसी एक दिन की तअ़ज़ीम करें, मगर उन्होंने आपस में इख़्तिलाफ़ किया और यहूद ने 'सनीचर' का दिन पसन्द किया, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला उसी दिन तमाम मख़्लूक़ात की तख़्लीक़ (उत्पत्ति) से फ़ारिग़ हुआ था और नसारा ने इत्वार का दिन पसन्द किया इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने उसी दिन तमाम मख़्लूक़ात को पैदा करना शुरु किया था। इस तरह़ अल्लाह तआ़ला ने दोनों के लिए उन के पसन्द किये हुए दिन की तअ़ज़ीम (सम्मान) को ज़रूरी कर दिया और इस उम्मत के लिए उस ने अपने फ़ज़्ल व करम से 'जुमअ़' का दिन पसन्द किया, जो उन के लिए हर तरह़ बा-बरकत दिन साबित हुआ।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह क़ियामत के दिन उन्हें दीन में इख़्तिलाफ़ (असहमति) करने, ज़मीन में फ़साद फैलाने और राहे ह़क़ से हटाने का बदला ज़रूर देगा।

125 ادْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۖ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١٢٥﴾

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया है कि वह मख़्लूक़

को उस के दीन की तरफ़ ह़िक्मत के साथ बुलाएँ। 'इब्ने जरीर' कहते हैं कि 'ह़िक्मत' से मुराद कुर्आन व सुन्नत है यानी दअ़वत का तरीक़ा।

'साह़िबे फ़त्हुल् बयान' कहते हैं कि 'ह़िक्मत' से मुराद ऐसी साफ़ बात है जो ह़क़ को वाज़ेह़ कर दे और हर शक व शुब्हा को दूर कर दे।

और "موعظة" से मुराद ऐसी अच्छी बात है जिसे सुनने वाला पसन्द करे और उस से फ़ायदा उठाए लेकिन अगर दाअ़ी का वास्ता कभी सख़्त और झगड़ालू मुख़ालिफ़ से पड़ जाए तो उस के सामने ह़क़ को बयान करने के लिए मुनाज़िरा का तरीक़ा अख़्तियार करे। وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ में इसी तरफ़ इशारा है यानी नर्मी के साथ ऐसी दलील से साबित करे कि उस की बुराई दब जाए और ह़क़ को क़ुबूल करने पर राज़ी हो जाए।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स ह़क़ की दअ़वत को क़ुबूल नहीं करता तो आप परेशान न हों, इसलिए कि हिदायत देना आप का काम नहीं है। अल्लाह ज़्यादा जानता है कि गुमराही पर कौन बाक़ी रहेगा और कौन हिदायत को क़ुबूल करेगा और वह क़ियामत के दिन हर एक को उस की हिदायत या गुमराही के मुताबिक़ बदला देगा। आप को दअ़वत का हुक्म सिर्फ़ इसलिए दिया गया है ताकि हुज्जत पूरी हो जाए और काफ़िरों के लिए कोई उ़ज़्र (Objection) बाक़ी न रहे।

यहाँ आप (सल्ल०) से कहा जा रहा है, मगर हर दाअ़ी-ए-ह़क़ के लिए यह हिदायत काफ़ी है।

(1) ह़िक्मत सामने रखी जाए मगर मुख़ातब को सामने रख कर बात की जाए और दअ़वत इस अन्दाज़ में दी जाए कि मुख़ातब में क़ुबूल करने की तड़प पैदा हो जाए। इब्ने जरीर ने यहाँ ह़िक्मत का मतलब कुर्आन करीम लिया है यानी कुर्आन के ज़रिये दअ़वते दीन का काम किया जाए।

(2) उ़म्दह नसीह़त- यह ऐसी नसीह़त है कि सामने वाले को यक़ीन आ जाए कि आप उस के हमदर्द हैं, मुख़ातब पर इ़ल्मी बड़ाई का रोअ़ब जमाने की कोशिश न की जाए।

(3) मुजादला अच्छी दलीलों से बात करने की नौबत आए तो अच्छी दलील के साथ जवाब दिये जाएँ, सामने वाले के अ़क़ीदे को ज़ेहन में रखा जाए। अगर नौबत फ़ुज़ूल बह़स तक पहुँचे तो बात ख़त्म कर दी जाए। आख़िर में यह बात हमेशा ज़ेहन में रखी जाए कि आप की ज़िम्मेदारी पहुँचा देना है, हिदायत देना न आप के बस में है और न इस की उम्मीद है।

126 وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ۝

इस्लाम की दअ़वत देने वाले को हुक्म दिया गया है कि अगर उन का वास्ता ग़ैर मुस्लिमों से पड़े तो पहले उन्हें ह़क़ क़ुबूल करने की दअ़वत दें और अगर इन्कार करें और जिज़्या (कर) भी न दें तो उन से क़िताल करें, अगर दुश्मनों से बदला लेने की नौबत आए तो ज़्यादती न करें।

'इब्ने जरीर' कहते हैं कि यह आयत इस बारे में नाज़िल हुई है कि अगर कोई मज़लूम ज़ालिम को पा ले और उस से बदला लेने पर क़ादिर हो जाए तो बदला लेने में ज़्यादती न करे और बहरह़ाल

बेहतर यही है कि जिस पर ज़्यादती हुई है वह सब्र करे और दरगुज़र से काम ले। इस में इन्तिक़ाम न लेने की नसीह़त की गई है और सब्र करने वालों की तअ़रीफ़ की गई है।

बाज़ लोगों की राय यह है कि यह आयत उन आयात के ज़रिये मन्सूख़ (निरस्त) हो गई है, जिन में काफ़िरों से क़िताल करने का हुक्म दिया गया है। इस आयत के शाने नुज़ूल में मुह़द्दिसीन ने उबई बिन कअ़ब से रिवायत की है कि जंगे उ़हद में चौसठ अन्सारी और छः मुहाजिरीन शहीद हो गये थे, जिन में ह़ज़रत ह़म्ज़ह (रज़ि०) भी थे।

इब्ने अबी कअ़ब (रज़ि०) फ़रमाते हैं, "उ़हद के दिन अन्सार के चौसठ और मुहाजिरीन के छः आदमी शहीद हो गये थे, उन में ह़ज़रत ह़म्ज़ह (रज़ि०) भी थे जिन का कुफ़्फ़ार ने मुस्ला (नाक, कान काट दिये) किया। चुनाँचे अन्सार ने कहा अगर हमें कभी उन पर फ़तेह़ हुई तो हम भी उन से यही सुलूक करेंगे। फिर जब मक्का फ़तेह़ हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।" **(तिर्मिज़ी)**

काफ़िरों ने उन मक़्तूल सह़ाबा का मुस्ला किया यानी उन की शक्ल व सूरत बिगाड़ दी थी। अन्सार ने कहा कि जिस दिन हमें मौक़ा मिलेगा उन के साथ हम भी ऐसा ही करेंगे। जब मक्का फ़तेह़ हुआ तो यह आयत नाज़िल हुई। चुनाँचे आप ने कहा कि हम सब्र करेंगे और इन्तिक़ाम नहीं लेंगे। सह़ाबा से कहा कि तुम लोग सिवाय चार आदमी के किसी और से न भिड़ो। **(तिर्मिज़ी, ज़वायद, मुस्नद अह़मद और ह़ाकिम)**

127-128 وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِمَّا يَمْكُرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَّالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को दअ़वते इस्लाम की राह में जो तक्लीफ़ें पहुँची थीं, अल्लाह ने उन्हें उस पर सब्र करने की नसीह़त की और कहा है कि अगर मुश्रिकीने मक्का इस्लाम क़ुबूल नहीं करते हैं तो आप ग़म न करें और उन की साज़िशों को सोच कर तंग दिल न हों।

अल्लाह आप के लिए काफ़ी और आप का मदद्गार है क्योंकि वह हमेशा अपने उन बन्दों का मदद्गार होता है जो ख़ैर की राह पर होते हैं, उन की ह़िफ़ाज़त करता है और उन्हें उन के दुश्मनों पर ग़ल्बा देता है।

मुफ़स्सिर 'अबू अल् सऊद' कहते हैं कि इस हुक्म में नबी करीम (सल्ल०) तो सबसे ज़्यादा दाख़िल हैं।

(भाग-17)

सूर-ए-बनी इस्राईल

(सूरः नं.17)

सूरः बनी इस्राईल

नाम- इस का नाम 'बनी इस्राईल' है जो आयत नं० (4) وَقَضَيْنَآ إِلَىٰ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ فِى ٱلْكِتَٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِى ٱلْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا से लिया गया है। इसे सूरः 'इस्रा' और सूरः 'सुब्हान' भी कहते हैं।

नाज़िल होने का ज़माना-

'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' के अनुसार पूरी सूरः मक्की है। इब्ने अल् जुबैर का भी यही क़ौल है, लेकिन उन्होंने तीन आयतों إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِٱلنَّاسِ (सूरः इस्रा-60) وَإِن كَادُوا۟ لَيَسْتَفِزُّونَكَ (सूरः इस्रा-76) और وَقُل رَّبِّ أَدْخِلْنِى مُدْخَلَ صِدْقٍ (सूरः इस्रा-80) को मदनी बताया है।

'मक़ातिल' ने आयत नं० (107) أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ مِن قَبْلِهِۦٓ को भी मदनी कहा है। इस की पहली आयत बताती है कि यह सूरः मेअ़राज के बाद नाज़िल हुई थी और सह़ीह़ अह़ादीस से यह बात साबित है कि 'मेअ़राज' नबी करीम (सल्ल०) को मदीना हिजरत से सिर्फ़ एक साल पहले हुई थी। इस तरह़ यह सूरः मक्की दौर के आख़िर में नाज़िल हुई थी।

इसलिए इसमें जहाँ आ़म मक्की सूरतों की तरह़ मुश्रिकीन को ईमान बिल्लाह और रिसालत व आख़िरत पर ईमान लाने की दअ़वत दी गई है, वहीं यहूद को भी सामने रखकर उन्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर ईमान लाने की दअ़वत दी गई है, जिन से जल्द ही मदनी ज़िन्दगी में वास्ता पड़ने वाला था और इस्लाम की दअ़वत को मुश्रिकीने अ़रब से निकाल कर यहूद व नसारा के सामने पेश किया जाना था और चूंकि इस्लाम इन्सानों को एक मुकम्मल ज़िन्दगी का तरीक़ा देने के लिए आया था, इसीलिए इस में (जो मदनी ज़िन्दगी शुरु होने से कुछ ही दिनों पहले नाज़िल हुई थी) आ़म अख़्लाक़ी, आर्थिक और सामाजिक ज़िन्दगी के हुक्मों को भी बयान किया गया है, फिर दअ़वत देने वालों को सब्र व इस्तिक़ामत और नमाज़ क़ायम करने का हुक्म दिया गया है और इस तरफ़ इशारा किया गया है कि ह़ालात जल्द ही बदलने वाले हैं, कुफ़्र का ज़ोर टूटेगा और इस्लाम बुलन्द व बाला होगा।

आयत नं० 1 से 15 तक

*سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۝
وَاٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِیْ وَكِیْلًا ۝ ذُرِّیَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝
وَقَضَیْنَاۤ اِلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ فِی الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِی الْاَرْضِ مَرَّتَیْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِیْرًا ۝ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَیْكُمْ
عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِیْ بَاْسٍ شَدِیْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّیَارِ ؕ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَیْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِیْنَ
وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِیْرًا ۝ اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ ۫ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ؕ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِیَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِیَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ
كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِیُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِیْرًا ۝ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ یَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِیْنَ حَصِیْرًا ۝
اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ یَهْدِیْ لِلَّتِیْ هِیَ اَقْوَمُ وَیُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِیْرًا ۝ وَّاَنَّ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ۝ وَیَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَیْرِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝ وَجَعَلْنَا الَّیْلَ وَالنَّهَارَ اٰیَتَیْنِ
فَمَحَوْنَاۤ اٰیَةَ الَّیْلِ وَجَعَلْنَاۤ اٰیَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِیْنَ وَالْحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَیْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِیْلًا ۝
وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓىِٕرَهٗ فِیْ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخْرِجُ لَهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ كِتٰبًا یَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ۝ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْیَوْمَ عَلَیْكَ حَسِیْبًا ۝
مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا یَهْتَدِیْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا یَضِلُّ عَلَیْهَا ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِیْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ۝

अनुवाद-

(1) पाक है, 'वह' जो अपने बन्दे (मुहम्मद) को रातों-रात मस्जिदे हराम (कअबः) से मस्जिदे-अक़्सा तक ले गया- जिसके चारों ओर 'हमन' बरकतें रखी हैं- ताकि उनको 'हम' अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएं, बेशक 'वही' सुनने वाला, देखने वाला है। (2) और 'हमन' मूसा को किताब दी थी, और 'हमने' उसको बनी इस्राईल के लिए हिदायत का ज़रिया बनाया था, "कि मेरे सिवा किसी और को काम बनाने वाला न ठहरा लेना"। (3) ऐ उन लोगों की औलाद! जिन्हें 'हमने' नूह के साथ (नाव में) सवार कर लिया था, बेशक वह 'हमारे' शुक्रगुज़ार बन्दे थे। (4) और 'हमने' बनी इस्राईल को किताब में बता दिया था, "तुम ज़मीन पर दो बार फ़साद मचाओगे और बड़ी सरकशी करोगे"। (5) जब उन दोनों में से पहले वादे का मौक़ा आ गया, तो 'हमने' तुम्हारे मुक़ाबले में अपने ऐसे बन्दों को उठाया जो बड़े जंगजू थे, तो वे बस्तियों में घुस कर हर ओर फैल गये और यह वादा पूरा होना ही था। (6) फिर 'हमने' तुम्हारी बारी उन पर लौटाई कि उन पर ग़ालिब (प्रभावी) हो सको, और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की और तुम्हें बहुसंख्यक लोगों का एक जत्था बनाया। (7) "अगर तुमने भलाई की तो अपने ही लिए की और अगर तुमने बुराई की तो अपने ही लिए की" फिर जब दूसरे (वादे) का वक्त आएगा, तो वह तुम्हारे चेहरे बिगाड़ देंगे और मस्जिद (बैतुल मक़दिस) में दाख़िल हो जाएंगे जैसे पहली बार वह उसमें दाख़िल हो गये थे, और ताकि जिस चीज़ पर उनका ज़ोर हो उसे तबाह कर डालें, (8) उम्मीद है कि तुम्हारा 'रब' तुम पर मेहरबानी करे और अगर तुम फिर उसी पुरानी नीति की ओर पलटे तो 'हम' भी पलटेंगे और दोज़ख को 'हमने' काफ़िरों के लिए जेलख़ाना बना रखा है"। (9) यह कुर्आन वह रास्ता दिखाता है, जो सब से सीधा है, और ईमान वालों को जो भले काम

करते हैं खुशख़बरी देता है, कि उनके लिए बड़ा बदला है। (10) और यह भी कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (11) और इन्सान उसी तरह बुराई माँगता है, जिस तरह भलाई की दुआ माँगता है, और इन्सान है ही बड़ा जल्द बाज़। (12) और 'हमने' रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया है, रात की निशानी को 'हमने' मद्धिम बनाया, और दिन की निशानी को 'हमने' रौशन कर दिया- ताकि तुम अपने रब' का फ़ज़्ल (रोज़ी) ढूँढो और ताकि तुम वर्षो की गिनती और हिसाब मालूम कर सको, और हर चीज़ को 'हमने' अलग-अलग स्पष्ट करके बयान कर दिया है। (13) और 'हमने' हर इन्सान का शकुन- -अपशकुन उसकी अपनी गर्दन से बाँध दिया है, और क़ियामत के दिन 'हम' उसका 'नाम-ए-आमाल' (लेख) निकाल कर सामने कर देंगे, जिसे वह खुला हुआ देख लेगा। (14) (कहा जाएगा) "पढ़ अपनी किताब (कर्म पत्र) आज तू खुद ही अपना हिसाब लेने के लिए काफ़ी है"। (15) और जो व्यक्ति हिदायत (सीधी राह) अपनाता है तो अपने ही लिए अपनाता है, और जो गुमराह होता है तो उसका वबाल भी उसी पर होता है और कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। और 'हम' अ़ज़ाब नहीं दिया करते जब तक कि उसमें कोई रसूल न भेज दें।

आयत नं० 1 से 15 तक की व्याख्या

1 سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۝

अ़रबी ज़बान में "سبحان" "سبّح یُسبّح" से बना है, जिस का अर्थ पाकी बयान करना होता है। क़ुर्आन करीम में यह अल्लाह तआ़ला की बड़ाई और तमाम ऐबों से उसकी पाकी बयान करने के लिए प्रयोग किया गया है। यहाँ यह शब्द अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत और उस की बड़ाई बयान करने के लिए आया है कि उस की ज़ात ऐसी चीज़ों पर क़ादिर है जिस पर कोई दूसरा क़ादिर नहीं और वह मेअ़राज का वाक़िआ़ है कि वह अपने बन्दे को रात के सिर्फ़ एक पहर में मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा ले गया, जिसे आम ह़ालात में एक मुसाफ़िर चालीस रातों में तय करता है।

इस आयते करीमा में अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक " عبد " से मुराद रसूलुल्लाह (सल्ल०) हैं। अहले इ़ल्म कहते हैं कि अगर आप (सल्ल०) के लिए अ़ब्द यानी बन्दा से बेहतर कोई नाम अल्लाह के नज़्दीक होता तो इस आयत में जबकि आप का अ़ज़ीम मक़ाम बयान किया जा रहा है, ज़रूर इस नाम से आप को याद किया जाता।

आयत बताती है कि मेअ़राज की रात नबी करीम (सल्ल०) को मस्जिदे ह़राम से ले जाया गया, लेकिन मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आप को ह़ज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अ़न्हा के घर से ले जाया गया था, इसलिए कुछ ह़दीसों से साफ़ मालूम होता है कि उस रात रसूलुल्लाह (सल्ल०) को उन्हीं के घर से ले जाया गया था, फिर नमाज़ फ़ज्र से पहले वहाँ वापस आ गये थे।

इसीलिए बहुत से मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि आप (सल्ल०) को उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अ़न्हा के

घर से कअ़बः के पास ले जाया गया, वहाँ आप के दिल को ज़मज़म से धोया गया और उसे ईमान व ह़िक्मत से भर दिया गया, फिर आप को वहाँ से मस्जिदे अक़्सा ले जाया गया। अल्लाह तआ़ला ने मस्जिदे अक़्सा में तमाम नबियों को जमा कर दिया, तमाम अम्बिया ने आप की इमामत में नमाज़ पढ़ी और इस तरह़ आप तमाम नबियों के इमाम हो गए।

आयत में मस्जिदे अक़्सा की सिफ़त الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ बयान की गई हैं कि वह मस्जिद जिस के आस-पास अल्लाह तआ़ला ने दीन व दुनिया की बेशुमार बरकतें रखी हैं, जहाँ बड़े-बड़े अम्बिया मब्अ़ूस हुए, जो बेशुमार औलिया का ठिकाना रहा है और जिस सरज़मीन में विभिन्न प्रकार के फल और खाने की चीज़ें पैदा होती हैं।

और इस (इस्रा व मेअ़राज) का मक़्सद आयत में यह बयान किया गया है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे को अपनी निशानियों को दिखाना चाहा, जैसे आप (सल्ल०) का रात के सिर्फ़ एक पहर में चालीस रातों की दूरी तय करना, बैतुल् मक़्दिस अम्बिया-ए-किराम का आप के सामने आना और उन की इमामत करानी और उन अम्बिया-ए-किराम के बुलन्द मक़ामात का देखना, फिर आसमानों के दरवाज़ों का खोला जाना और जन्नत व जहन्नम वग़ैरह का मुशाहिदा करना।

क़ुर्आन मजीद में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को एक रात 'मस्जिदे ह़राम' से लेकर 'मस्जिदे अक़्सा' तक सैर कराई। मस्जिदे ह़राम उस मस्जिद का नाम है जो कअ़बः शरीफ़ के चारों तरफ़ है और बाज़ मर्तबः ह़रम मक्का भी माना गया (كما قال تعالى اِلَّا الَّذِيْنَ عَاهَدتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ) और मस्जिदे अक़्सा, मस्जिदे बैतुल् मक़्दिस का नाम है जो शाम में है।

शब्द 'अक़्सा' अब्अ़द यानी ज़्यादा दूर वाली चीज़ के लिए प्रयोग होता है, मस्जिदे अक़्सा को अक़्सा क्यों कहा जाता है? इस के बारे में कई क़ौल हैं।

'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' लिखते हैं चूंकि वह ह़िजाज़ में रहने वालों से दूर है, इसलिए इस की सिफ़त अक़्सा लाई गई और एक क़ौल यह है कि जिन मसाजिद की ज़ियारत की जाती है उन में वह सब से ज़्यादा दूर है। (कोई शख़्स मस्जिदे ह़राम से रवाना हो तो पहले मदीना मुनव्वरह से गुज़रेगा, फिर बहुत दिन के बाद मस्जिदे अक़्सा पहुँचेगा। (जब ऊँटों पर सफ़र होते थे तो मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक आने-जाने का लगभग चालीस दिन का सफ़र था) और एक क़ौल यह है कि मस्जिदे अक़्सा इसलिए कहा गया है कि वह गन्दी और ख़बीस चीज़ों से पाक है। **(रूहुल् मआ़नी भाग 15, पेज 9)**

बैतुल् मक़्दिस का सफ़र और इमामत

'सह़ीह़ मुस्लिम' में ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे पास एक बुर्राक़ (सवारी) लाया जो लम्बा सफ़ेद रंग का चौपाया था, उस का क़द गधे से बड़ा और खच्चर से छोटा था और अपना क़दम वहाँ रखता था जहाँ तक उस की नज़र पड़ती थी, मैं उस पर सवार हुआ यहाँ तक कि मैं बैतुल् मक़्दिस तक पहुँच गया। मैंने इस बुर्राक़ को वहाँ बाँध

दिया जहाँ ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) बाँधा करते थे, मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ और उस में दो रकअ़तें पढ़ीं। फिर मस्जिद से बाहर आया तो ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) मेरे पास एक बर्तन में शराब और एक बर्तन में दूध लेकर आए मैंने दूध को ले लिया। इस पर ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा कि आप ने फ़ित्रत (Nature) को अपना लिया, फिर हमें आसमान की तरफ़ ले जाया गया, पहले आसमान में ह़ज़रत आदम (अ़लै०) और दूसरे आसमान में ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) और ह़ज़रत यह़या (अ़लै०) और तीसरे आसमान में ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) और चौथे आसमान में ह़ज़रत इद्रीस और पाँचवें आसमान में ह़ज़रत हारून (अ़लै०) और छठे आसमान में ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से मुलाक़ात हुई और सब ने मरह़बा कहा और सातवें आसमान में ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) से मुलाक़ात हुई, उन के बारे में आप ने बताया कि वह 'अल् बैतुल् मअ़मूर' से टेक लगाए हुए तश्रीफ़ फ़रमा थे और यह भी बताया कि 'अल् बैतुल् मअ़मूर' में रोज़ाना सत्तर ह़ज़ार फ़रिश्ते दाख़िल होते हैं, जो दोबारा उस में लौट कर नहीं आते।

फिर मुझे 'सिद्रतुल् मुन्तहा' तक ले जाया गया, अचानक देखता हूँ कि उस के पत्ते इतने बड़े-बड़े हैं जैसे हाथी के कान हों और उस के फल इतने बड़े-बड़े हैं जैसे मट्के हों। जब 'सिद्रतुल् मुन्तहा' को अल्लाह के ह़ुक्म से ढ़ांपने वाली चीज़ों ने ढ़ांप लिया तो उस का ह़ाल बदल गया। अल्लाह की किसी मख़्लूक़ में इतनी ताक़त नहीं कि उस के ह़ुस्न को बयान कर सके।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) की रिवायत में है कि 'सिद्रतुल् मुन्तहा' को सोने के परवानों ने ढ़ांक रखा था। **(मुस्लिम पेज नं० 97 भाग 1)**

पचास नमाज़ें-

उस वक़्त मुझ पर अल्लाह तआ़ला ने उन चीज़ों की वह्य फ़रमाई जिन की वह्य उस वक़्त फ़रमाना मन्ज़ूर था और मुझ पर रात-दिन में रोज़ाना पचास नमाज़ें पढ़ना फ़र्ज़ किया गया, मैं वापस उतरा और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के पास से गुज़र हुआ तो उन्होंने पूछा आप के रब ने आप की उम्मत पर क्या फ़र्ज़ किया? मैंने कहा पचास नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं, उन्होंने कहा कि वापस जाइए अपने रब से कम करवाने का सवाल कीजिए क्योंकि आप की उम्मत इस की ताक़त नहीं रख सकती, मैं बनी इस्राईल को आज़मा चुका हूँ। आप ने फ़रमाया कि मैं अपने रब की तरफ़ वापस लौटा और अ़र्ज़ किया कि ऐ रब! मेरी उम्मत के लिए कमी कर दीजिए तो पाँच नमाज़ें कम फ़रमा दीं। मैं ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के पास वापस आया और मैंने बताया कि पाँच नमाज़ें कम कर दी गई हैं।

उन्होंने कहा कि आप की उम्मत इस की ताक़त नहीं रख सकती, आप अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ कीजिए और कमी का सवाल कीजिए। आप ने फ़रमाया कि मैं बार-बार वापस होता रहा {कभी मूसा (अ़लै०) के पास आता, कभी अल्लाह रब्बुल् आ़लमीन के पास ह़ाज़िरी देता} यहाँ तक कि पाँच नमाज़ें रह गईं।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ मुह़म्मद (सल्ल०)! यह रोज़ाना दिन-रात में पाँच नमाज़ें हैं, हर नमाज़ के बदले दस नमाज़ों का सवाब मिलेगा इसलिए यह (सवाब में) पचास ही हैं, जो शख़्स किसी नेकी

का इरादा करेगा, फिर उसे न करेगा तो उस के लिए (इरादा की वजह से) एक नेकी लिख दी जाएगी और जिस शख़्स ने इरादा करने के बाद अ़मल भी कर लिया तो उस के लिए दस नेकियाँ लिख दी जाएँगी और जिस शख़्स ने किसी बुराई का इरादा किया और उस पर अ़मल न किया तो कुछ भी न लिखा जाएगा और अगर अपने इरादे के मुताबिक़ अ़मल कर लिया तो एक गुनाह लिखा जाएगा। आप ने फ़रमाया कि मैं नीचे वापस आया तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) तक पहुँचा और उन्हें बात बता दी, उन्होंने कहा कि वापस जाओ अपने रब से कमी का सवाल करो। मैंने कहा मैं बार-बार अपने रब की बारगाह में गया हूँ यहाँ तक कि अब मुझे शर्म आती है। **(पेज नं० 91, भाग 1)**

'सह़ीह़ मुस्लिम' पेज 96 भाग एक में ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से यह भी रिवायत नक़्ल की है कि मैंने अपने आप को ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) की जमाअ़त में देखा, इतने में नमाज़ का वक़्त हो गया तो मैंने उन की इमामत की। जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो किसी कहने वाले ने कहा कि ऐ मुह़म्मद (सल्ल०)! यह दोज़ख़ का दारोग़ा है, इस को सलाम कीजिए मैं उस की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ तो उस ने ख़ुद सलाम किया (यह बैतुल् मक़्दिस में इमामत फ़रमाना आसमानों पर तशरीफ़ ले जाने से पहले हुआ।)

ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर ने अपनी तफ़्सीर पेज 6 भाग 3 में ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) की रिवायत इब्ने अबी ह़ातिम से नक़्ल की है उस में यूँ है (अभी बैतुल् मक़्दिस ही में थे) कि बहुत से लोग जमा हुए, फिर एक अज़ान देने वाले ने अज़ान दी उस के बाद हम सफ़ें (पंक्ति) बनाकर खड़े हो गये, इन्तिज़ार में थे कि कौन इमाम बनेगा।

ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने मेरा हाथ पकड़ कर आगे बढ़ा दिया और मैंने ह़ाज़िरीन को नमाज़ पढ़ा दी। जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा ऐ मुह़म्मद (सल्ल०)! आप जानते हैं कि आप के पीछे किन ह़ज़रात ने नमाज़ पढ़ी है, मैंने कहा नहीं {जिन ह़ज़रात अम्बिया (अ़लै०) से पहले मुलाक़ात हो चुकी थी उन के अ़लावा भी बहुत से ह़ज़रात ने आप के पीछे नमाज़ पढ़ी थी और सब से तआ़रुफ़ (Introduction) नहीं हुआ था, इसलिए यूँ फ़रमा दिया कि मैं उन सब को नहीं जानता} ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा कि जितने भी नबी अल्लाह तआ़ला ने मब्अूस फ़रमाए उन सब ने आप के पीछे नमाज़ पढ़ी है। (इस के बाद आसमानों पर जाने का ज़िक्र है।)

सह़ीह़ बुख़ारी की तफ़्सील

सह़ीह़ बुख़ारी में वाक़िआ़ मेअ़राज ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायात कई जगह है, कहीं ह़ज़रत अनस (रज़ि०) ने ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि०) से रिवायत की है और कहीं 'ह़ज़रत मालिक बिन सअ़सअ़ अन्सारी' (रज़ि०) से नक़्ल की है।

() فی مجمع الزوائد ص ۷۳ ج ۱ فربطت الدابة بالحلقة التی تربط بها الانبیاء ثم دخلنا المسجد فنشرت لی الانبیاء سمی اللّٰه ومن لم یسم فصلیت بهم

(साद 50, 455, 471, 548 भाग 1-2)

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) ने ह़ज़रत मालिक बिन सअ़सअ़ (रज़ि०) के वास्ते से बयान किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं कअ़बः शरीफ़ के क़रीब ह़ालत में था, जैसे कुछ जाग रहा हूँ मेरे पास तीन आदमी आए फिर सोने का तश्त (Tray) लाया गया, जो ह़िक्मत और ईमान से भरा था। मेरा सीना काट दिया, फिर उसे ज़मज़म के पानी से धोया गया और उसे ह़िक्मत और ईमान से भर दिया गया, उस के बाद उस को ठीक कर दिया गया और मेरे पास एक सफ़ेद चौपाया लाया गया वह क़द में ख़च्चर से कम और गधे से ऊँचा था, यह चौपाया 'बुर्राक़' था।

ह़ज़रात अम्बिया (अ़लै०) से मुलाक़ात

मैं ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) के साथ रवाना हुआ यहाँ तक कि क़रीब वाले आसमानों तक पहुँच गया। ह़ज़रत जिब्रईल ने आसमान के ख़ाज़िन से कहा कि खोलिए उस ने सवाल किया कि आप के साथ कौन है? ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने जवाब दिया कि मुह़म्मद (सल्ल०) हैं। उन से पूछा, क्या उन्हें बुलाया गया है?

ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने जवाब दिया कि हाँ, उन्हें बुलाया गया है! इस पर मरह़बा (स्वागत) कहा गया और दरवाज़ा खोल दिया गया और कहा गया उन का आना बहुत अच्छा आना है, हम ऊपर पहुँचे तो वहाँ हमने ह़ज़रत आदम (अ़लै०) को पाया, हमने उन्हें सलाम किया उन्होंने फ़रमाया مرحبابک من ابن ونبی बेटे और नबी के लिए मरह़बा है। फिर हम दूसरे आसमान तक पहुँचे, वहाँ भी ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से उसी तरह़ का सवाल जवाब हुआ जैसा पहले आसमान में दाख़िल होने से पहले किया गया था। जब दरवाज़ा खोल दिया गया और ऊपर पहुँचे तो वहाँ ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) और यह़या (अ़लै०) को पाया उन्होंने भी मरह़बा कहा।

उन के शब्द इस तरह़ थे مرحبابک من اخ ونبی (मरह़बा हो भाई के लिए और नबी के लिए) फिर हम तीसरे आसमान पर पहुँचे, वहाँ ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से वही सवाल हुआ जो पहले आसमानों में दाख़िल होने से पहले हुआ था। फिर दरवाज़ा खोल दिया गया तो हम ऊपर पहुँच गये, वहाँ ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को पाया मैंने उन्हें सलाम किया उन्होंने مرحبابک من اخ ونبی कहा, फिर हम चौथे आसमान तक पहुँचे वहाँ भी ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से पहले की तरह़ सवाल जवाब हुआ, दरवाज़ा खोल दिया गया तो हम ऊपर पहुँच गये, वहाँ ह़ज़रत इद्रीस (अ़लै०) को पाया मैंने उन को सलाम किया। उन्होंने भी वही कहा مرحبابک من اخ ونبی फिर हम पाँचवें आसमान पर पहुँचे तो वहाँ भी ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से सवाल-जवाब हुआ, दरवाज़ा खोल दिया गया।

फिर हम ऊपर पहुँचे वहाँ ह़ज़रत हारून (अ़लै०) को पाया हमने उन को सलाम किया। उन्होंने भी مرحبابک من اخ ونبی कहा। फिर हम छठे आसमान तक पहुँचे वहाँ भी पहले की तरह़ ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से वही सवाल जवाब हुए। जब दरवाज़ा खोल दिया गया तो हम ऊपर पहुँच गये, वहाँ ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को पाया हमने उन्हें सलाम किया उन्होंने भी مرحبابک من اخ ونبی कहा।

जब मैं आगे बढ़ गया तो वह रोने लगे, उन से सवाल किया गया कि आप के रोने की वजह क्या

है? उन्होंने जवाब दिया कि एक लड़का मेरे बाद मब्अूस (भेजा हुआ) हुआ, उस की उम्मत के लोग जन्नत में दाख़िल होंगे जो मेरी उम्मत के दाख़िल होने वालों से अफ़ज़ल होंगे। (दूसरी रिवायत में है कि उस की उम्मत के लोग जन्नत में दाख़िल होने वाले मेरी उम्मत में से ज़्यादा होंगे।)

फिर हम सातवें आसमान पर पहुँचे, वहाँ भी ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से पहले की तरह़ सवाल-जवाब हुआ। जब दरवाज़ा खुल गया तो हम ऊपर पहुँचे, वहाँ ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को पाया मैंने उन्हें सलाम किया उन्होंने फ़रमाया مرحبابکمن ابن ونبی (ह़ज़रत आदम और ह़ज़रत इब्राहीम ने مرحبابکمن اخ ونبی फ़रमाया क्योंकि आप उन की नस्ल में से थे। बाक़ी ह़ज़रात ने फ़रमाया।

अल् बैतुल् मअ़मूर और सिद्रतुल् मुन्तहा

इस के बाद 'अल् बैतुल् मअ़मूर' मेरे सामने कर दिया गया। मैंने ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से सवाल किया यह क्या है? उन्होंने जवाब दिया कि 'अल् बैतुल् मअ़मूर' है। इस में रोज़ाना सत्तर हज़ार फ़रिश्ते नमाज़ पढ़ते हैं, जो निकल कर चले जाते हैं तो कभी भी वापस नहीं होते। फिर मेरे सामने 'सिद्रतुल मुन्तहा' को लाया गया देखता हूँ कि उस के कुएँ हिज्र (अ़रब में हिज्र नाम की एक बस्ती थी जहाँ के बड़े-बड़े मटके मशहूर थे) के मटकों के बराबर हैं और उस के पत्ते हाथी के कानों के बराबर हैं।

'सिद्रतुल मुन्तहा' की जड़ में चार नहरें नज़र आईं दो अन्दुरूनी नहरें और दो ज़ाहिरी नहरें। मैंने ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से दर्याफ़्त किया तो उन्होंने बताया कि अन्दुरूनी दो नहरें जन्नत की नहरें हैं और ज़ाहिरी दो नहरें फ़ुरात और नील की हैं। (फ़ुरात इराक़ में और नील मिस्र में है।)

इतिह़ासकारों ने लिखा है कि ह़ज़रत इद्रीस (अ़लै०) ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) के दादा थे और ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) के बाद ह़ज़रत आदम (अ़लै०) की जितनी भी नस्ल चली वह ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) से है। लिहाज़ा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भी ह़ज़रत इद्रीस (अ़लै०) की औलाद में हुए लिहाज़ा उन्हें भी مرحبابکمن ابن ونبی कहना चाहिए था। अगर अहले तारीख़ की यह बात सह़ी हो तो इस का जवाब यह है कि उन्होंने भाईचारे का ज़िक्र बेहतर समझा क्योंकि ह़ज़रात अम्बिया (अ़लै०) ओ़हदा व नुबूव्वत के एतिबार से भाई-भाई हैं और इब्ने कहना बेहतर न समझा। **(ह़ाशिया अल् बुख़ारी पेज नं० 455)**

दो नहरें जो अन्दर को जा रही थीं यह 'कौसर' और नहर रह़मत मालूम होती हैं कि वह दोनों सल् सबील की शाखें हैं। मुम्किन है कि यह सल् सबील और उस का वह मौक़ा जहाँ से कौसर व नहर रह़मत का इस से जोड़ हुआ है। यह सब 'सिद्रत' की दूसरी जड़ में हों और नील व फ़ुरात का आसमान पर होना इस तरह़ मुम्किन है कि दुनिया में जो नील व फ़ुरात हैं ज़ाहिर है कि बारिश का पानी जज़्ब (Observe) होकर पत्थर से जारी होता है और बारिश आसमान से है, सो जो ह़िस्सा बारिश का नील व फ़ुरात का माद्दह (Material) है, मुम्किन है कि वह आसमान से आता हो बस इस तौर पर नील व फ़ुरात की अस्ल आसमान पर हुई। **(तफ़्सीर इब्ने कसीर पेज नं० 12 भाग 3)**

पाँच नमाज़ें

इस के बाद मुझ पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की गईं। मैं वापस आया यहाँ तक कि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के पास पहुँच गया, उन्होंने मालूम किया कि (अपनी उम्मत के लिए) आप ने क्या किया? मैंने कहा मुझ पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की गईं हैं। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने कहा कि मैं लोगों को आप से ज़्यादा जानता हूँ बनी इस्राईल के साथ मैंने बड़ी मेह़नत की है (वह लोग एहतिमाम न कर सके) आप की उम्मत को इतनी नमाज़ें पढ़ने की ताक़त न होगी, जाइए! अपने रब से कम करवाने का सवाल कीजिए। मैं वापस लौटा और अल्लाह तआ़ला से कमी का सवाल किया तो अल्लाह तआ़ला ने चालीस नमाज़ें बाक़ी रखीं। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने फिर वही बात कही, मैंने फिर अल्लाह तआ़ला से कमी का सवाल किया तो तीस (30) नमाज़ें बाक़ी रह गईं।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने फिर तवज्जोह दिलाई तो कमी का सवाल करने पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बीस (20) नमाज़ें कर दी गईं। फिर ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने इसी तरह़ की बात कही तो दरख़्वास्त करने पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दस नमाज़ें कर दी गईं।

मैं ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के पास आया तो उन्होंने फिर वही बात कही। मेरे दरख़्वास्त (Request) करने पर अल्लाह तआ़ला ने पाँच नमाज़ें बाक़ी रहने दीं। मैं ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के पास आया तो उन्होंने फिर वही बात कही, मैंने तस्लीम कर लिया (अब दरख़्वास्त नहीं करता) इस पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह आवाज़ दी गई कि मैंने अपने फ़रीज़े का ह़ुक्म बाक़ी रखा और अपने बन्दों के लिए कमी कर दी और मैं एक नेकी का बदला दस बना कर देता हूँ (लिहाज़ा अदा करने में पाँच रहीं और सवाब में पचास रहीं।) **(बुख़ारी)**

यह रिवायत 'सह़ीह़ बुख़ारी' में पेज नं० 455 पर है और 'सह़ीह़ बुख़ारी' में पेज नं० 471 पर ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से बवास्ता ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि०) जो मेअ़राज का वाक़िआ़ नक़्ल किया है, उस में ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के मरह़बा कहने के बाद यूँ है कि आप ने फ़रमाया कि फिर मुझे ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) और ऊपर लेकर चढ़े, यहाँ तक कि मैं ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ क़ल्मों (Pen) के लिखने की आवाज़ें आ रही थीं। इस के बाद पचास नमाज़ें फ़र्ज़ होने और उस के बाद ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के ध्यान दिलाने और अल्लाह के पास बार-बार सवाल करने पर पाँच नमाज़ें बाक़ी रह जाने का ज़िक्र है और इस के अख़ीर में यह है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया لا یبدل القول لدی कि मेरे पास बात नहीं बदली जाती (पचास नमाज़ें फ़र्ज़ कर दें तो पचास ही का सवाब मिलेगा) और 'सिद्‌रतुल् मुन्तहा' के बारे में फ़रमाया कि उसे ऐसे रंगों से ढ़ांप रखा था जिन्हें मैं नहीं जानता, फिर मैं जन्नत में दाख़िल कर दिया गया, वहाँ देखता हूँ कि मोतियों के गुम्बद हैं और उस की मिट्टी मुश्क़ की है।

पेज नं० 548 भाग 1 पर भी 'ह़ज़रत इमाम बुख़ारी' (रह़०) ने ह़दीस मेअ़राज ज़िक्र की है। वहाँ भी ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से बज़रिये 'ह़ज़रत मालिक बिन सअ़सआ़' अन्सारी (रज़ि०) रिवायत की है

उस में अल् बैतुल् मअ़मूर के ज़िक्र के बाद यूँ है कि फिर मेरे पास एक बर्तन में शराब और एक बर्तन में दूध और एक बर्तन में शहद लाया गया, मैंने दूध ले लिया जिस पर ह़ज़रत जिब्रईल ने कहा यही वह फ़ित्रत.....'यानी दीने इस्लाम है जिस पर आप और आप की उम्मत है'।

इस रिवायत में यह भी है कि जब पाँच नमाज़ें रह गईं तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने मज़ीद कमी कराने के लिए कहा तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया سالت ربی حتی استحییت ولکنی ارضی واسلم (मैंने अपने रब से यहाँ तक सवाल किया कि शरमा गया, अब तो मैं राज़ी होता हूँ तस्लीम करता हूँ। (बुख़ारी)

नमाज़ों के साथ और दो इन्आ़म

मेअ़राज की रात में जो नमाज़ों का इन्आ़म मिला और पाँच नमाज़ें पढ़ने पर भी पचास नमाज़ों का सवाब देने का अल्लाह तआ़ला ने वादा फ़रमाया, उस के साथ यह भी इन्आ़म फ़रमाया कि सूरः बक़रः की आख़िरी आयात (امن الرسول से लेकर आख़िर तक) दीं और साथ ही इस क़ानून का भी एलान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के उम्मतियों के बड़े-बड़े गुनाह बख़्श दिये जाएँगे जो शिर्क न करते हों।

(मुस्लिम पेज नं० 97 भाग 1)

मतलब यह है कि बड़े गुनाहों की वजह से हमेशा अ़ज़ाब में न रहेंगे, बल्कि तौबः से माफ़ हो जाएँगे या अ़ज़ाब भुगत कर छुट्कारा हो जाएगा (क़ाला अल् नव्वी) काफ़िर और मुश्रिक हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे।

मेअ़राज में दीदारे इलाही

इस में इख़्तिलाफ़ है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) मेअ़राज की रात में दीदारे ख़ुदावन्दी हुआ या नहीं और अगर देखा तो वह आँखों से था या दिल का ख़याल था यानी सर की आँखों से देखा या दिल की आँखों से दीदार किया।

अक्सर सह़ाबा और ताबअ़ीन का यही मानना है कि रसूलुल्लाह(सल्ल०) ने अपने परवरदिग़ार को सर की आँखों से देखा और मुह़क़्क़िक़ीन (Scholar) के नज़्दीक यही क़ौल बेहतर और ह़क़ है।

ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा इस का इन्कार करती थीं और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) रिवायत को साबित करते और मानते थे। 'अ़ल्लामा नव्वी' (रह़०) शरह़ मुस्लिम में लिखते हैं وَمَاكَانَ لِبَشَرٍاَن يكلمهُ الله اِلاَّ وحيا او من وراءِ حجاب او يرسِلَ رَسولاً ولقول الله تعالى لا تدرِكه الابصار

सूरः नज्म में जो ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى और وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ۝ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى है। इस के बारे में ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि इन में ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) का देखना मुराद है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) इन्सानी सूरत में आया करते थे। 'सिद्रतुल मुन्तहा' के क़रीब आप ने उन को अस्ल सूरत में और इस ह़ालत में देखा कि उन के 600 छः सौ पर थे उन्होंने उ़फ़ुक़ को भर दिया था।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) भी यही फ़रमाते थे कि فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى और

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى से ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) का क़रीब होना और देखना मुराद है।

(सह़ीह़ मुस्लिम मअ़ शरह़ुल् इमाम अल् नव्वी पेज नं० 97 भाग 1 पेज नं० 98 भाग 1)

कुरैश का झुठलाना

बैतुल् मक़्दिस तक पहुँचना, फिर वहाँ से आसमानों तक तशरीफ़ ले जाना और मक्का तक वापस आ जाना एक ही रात में हुआ, वापस होते हुए रास्ते में एक तिजारती (व्यापारी) क़ाफ़िले से मुलाक़ात हुई जो कुरैश का क़ाफ़िला था और वह शाम से वापस आ रहा था।

सुबह़ को जब आप ने मेअ़राज का वाक़िआ़ बयान किया तो कुरैश तअ़ज्जुब करने लगे और झुठलाने लगे, फिर ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के पास पहुँचे उन से कहा कि मुह़म्मद (सल्ल०) बयान कर रहे हैं कि रात को उन्होंने इस तरह़ सफ़र किया, फिर सुबह़ होने से पहले वापस आ गये। ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने पहले तो यूँ कहा तुम लोग झूठ बोलते हो, उन लोगों ने क़सम खाकर कहा कि वाक़ई वह अपने बारे में यह बयान दे रहे हैं। इस पर ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने कहा ان كان قاله فقد صدق कि अगर उन्होंने यह बयान किया तो सच फ़रमाया है।

ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) से वह लोग कहने लगे कि क्या तुम इस बात की भी तस्दीक़ करते हो? उन्होंने फ़रमाया कि मैं तो इस से भी ज़्यादा अ़जीब बातों की तस्दीक़ करता हूँ और वह यह कि आसमान से आप के पास ख़बर आती है। इसी वजह से ह़ज़रत अबू बक्र का लक़ब 'सिद्दीक़' पड़ गया।

(دلائل النبوة للبيهقي ص ٣٦٠ ج ٢ البداية والنهاية)

बैतुल् मक़्दिस

कुरैशे मक्का तिजारत के लिए शाम जाया करते थे, बैतुल् मक़्दिस उन का देखा हुआ था। कहने लगे अच्छा अगर आप रात बैतुल् मक़्दिस गये थे, उस में नमाज़ पढ़ी है तो बताइए बैतुल् मक़्दिस में फ़लाँ-फ़लाँ चीज़ें कैसी हैं (यानी उन के सुतून और दरवाज़ों और दूसरी चीज़ों के बारे में सवाल करना शुरु कर दिया) उस वक़्त आप 'ह़तीम' में तशरीफ़ रखते थे। आप ने फ़रमाया उन लोगों के सवाल पर मुझे कोई बेचैनी नहीं हुई थी, मैंने बैतुल् मक़्दिस को देखा था, लेकिन ख़ूब अच्छी तरह़ उस की हर-हर चीज़ को मह़फ़ूज़ नहीं किया (इस का क्या अन्दाज़ा था कि उन चीज़ों के बारे में सवाल किया जाएगा) अल्लाह तआ़ला ने बैतुल् मक़्दिस को मेरी तरफ़ इस तरह़ उठा दिया कि मुझ से कुरैशे मक्का जो भी पूछते, उन सब का जवाब देता रहा। (सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० 96, भाग 1)

बाज़ रिवायात में यूँ है فجلى الله لي بيت المقدس فطفقت اخبرهم عن آياته وانا انظر اليه (अल्लाह ने बैतुल् मक़्दिस मेरे लिए वाज़ेह़ तरीक़े पर रौशन फ़रमा दिया, मैं उसे देखता रहा और उस की जो निशानियाँ पूछ रहे थे वह मैं उन्हें बताता रहा।) (सह़ीह़ बुख़ारी भाग 1, पेज नं० 458)

'तफ़्सीर इब्ने कसीर' पेज नं० 15 भाग 2 में है कि जब आप ने बैतुल् मक़्दिस की सभी अ़लामतें

बता दीं तो वह लोग जो आप की बात पर शक करने की वजह से बैतुल् मक़्दिस की निशानियाँ दर्याफ़्त कर रहे थे, कहने लगे कि अल्लाह की क़सम बैतुल् मक़्दिस के बारे में सही बयान दिया।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने क़ुरैशे मक्का को यह भी बताया कि मुझे सफ़र में फ़लाँ वादी में फ़लाँ क़बीले का क़ाफ़िला मिला जिन का एक ऊँट भाग गया था, मैंने उन्हें बता दिया कि तुम्हारा ऊँट फ़लाँ जगह पर है। यह उस वक़्त की बात है जब मैं बैतुल् मक़्दिस की तरफ़ जा रहा था, फिर जब मैं वापस आ रहा था तो 'मक़ामें ज़ज्नान' (स्थान) में पहुँचा देखा कि वह लोग सो रहे हैं। एक बर्तन में पानी था जिसे उन्होंने किसी चीज़ से ढांक रखा था, मैंने उस का ढ़क्कन हटाया और पानी पीकर उसी तरह ढ़ांक दिया जिस तरह ढ़का हुआ था। (अहले अ़रब पानी दूध और दूसरी मामूली चीज़ों के बारे में आ़मतौर से बेइजाज़त ख़र्च करने पर एतिराज़ (आपत्ति) नहीं करते थे, ऐसी चीज़ें बिला इजाज़त इस्तेमाल में उन के यहाँ रिवाज आ़म था, आ़म इजाज़त की वजह से साफ़ इजाज़त की ज़रूरत महसूस नहीं करते थे।)

आप ने मज़ीद फ़रमाया कि देखो! वह क़ाफ़िला अभी तन्ओ़म की घाटी से ज़ाहिर होने वाला है, उन के आगे एक चितकबरे रंग का ऊँट है उस के ऊपर सामान के दो बोरे हैं एक काले रंग का और दूसरा सफ़ेद रंग का है, यह बात सुनकर वह लोग जल्दी-जल्दी तन्ओ़म की घाटी की तरफ़ चल दिये वहाँ देखा कि वाक़ई यह क़ाफ़िला आ रहा है और उस के आगे-आगे वही ऊँट हैं। जब क़ाफ़िले पर गुज़रने की तस्दीक़ हो गई तो उन लोगों ने क़ाफ़िले वालों से पूछा कि तुम ने किसी बर्तन में पानी रखा था?

उन्होंने कहा कि हाँ, हम ने एक बर्तन में पानी ढ़ांक दिया था, फिर देखा कि वह बर्तन उसी तरह ढ़ांका हुआ है लेकिन उस में पानी नहीं है, फिर क़ाफ़िला वालों से सवाल किया तुम्हारा कोई ऊँट बिदक गया था? उन्होंने कहा कि हाँ, एक ऊँट बिदक कर चला गया था, हम ने एक आदमी की आवाज़ सुनी जो हमें बुला रहा था कि यह तुम्हारा ऊँट है यह आवाज़ सुनकर हम ने उसे पकड़ लिया।

कुछ रिवायात में है कि आप ने क़ाफ़िला वालों को सलाम भी किया था और उन में कुछ सुनने वालों ने कहा कि यह मुह़म्मद (सल्ल०) की आवाज़ है।

मेअ़राज के सफ़र की चीज़ें

मेअ़राज के सफ़र में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बहुत सी चीज़ें देखीं जो ह़दीस में अलग-अलग जगह मौजूद हैं, जिन को 'इमाम बैहक़ी' ने दलायल अल् नुबूव्वह भाग 2 में और ह़ाफ़िज़ नूरउद्दीन हैशमी ने मजमउल् ज़वायद भाग एक में और 'अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन मुह़म्मद सुलेमान अल् मग़्रिबी' ने जम़उल् फ़वायद भाग तीन में और ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर ने अपनी तफ़्सीर में और अ़ल्लामा इब्ने हिशाम ने अपनी सीरत में जमा किया है। बाज़ चीज़ें ऊपर ज़िक्र हो चुकी हैं, बाज़ नीचे लिखी जाती हैं।

क़ब्र में नमाज़ पढ़ते हुए देखना-

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बयान फ़रमाया कि जिस रात मुझे

सैर कराई गई, मैं ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के पास से गुज़रा वह अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे थे।

(सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० 368 भाग 2)

होंठ क़ैंचियों से काटे जाना-

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से यह भी रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बयान फ़रमाया कि जिस रात मुझे सैर कराई गई उस रात में मैंने कुछ लोगों को देखा जिन के होंठ आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे थे। मैंने जिब्रईल से मालूम किया यह कौन लोग हैं? उन्होंने जवाब दिया कि यह आप की उम्मत के ख़तीब (नसीह़त करने वाले) हैं जो लोगों को भलाई का हुक्म देते हैं और अपनी जानों को भूल जाते हैं।

और एक रिवायत में यूँ है कि आप की उम्मत के ख़तीब (नसीह़त करने वाले) हैं जो वह बातें कहते हैं जिस पर ख़ुद अ़मल नहीं करते और अल्लाह की किताब पढ़ते हैं मगर अ़मल नहीं करते।

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 438)

अपने सीने को नाख़ून से छीलना-

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस रात मुझे मेअ़राज कराई गई मैं ऐसे लोगों पर से गुज़रा जिन के नाख़ून ताँबे के थे, वह अपने चेहरों और सीनों को छील रहे थे। मैंने कहा ऐ जिब्रईल! यह कौन लोग हैं? उन्होंने जवाब दिया कि यह वह लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाते हैं (यानी पीठ पीछे बुराई करते हैं) और उन की बेइ़ज़्ज़ती करने में पड़े रहते हैं।

(रवाहु अबू दाऊद कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 429)

सूदख़ोरों की बद्ह़ाली-

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस रात मुझे सैर कराई गई मैं ऐसे लोगों पर से गुज़रा जिन के पेट इतने बड़े-बड़े थे जैसे (इन्सानों के रहने के) घर होते हैं, उन में साँप थे जो बाहर से उन के पेटों में नज़र आ रहे थे। मैंने कहा, ऐ जिब्रईल! यह कौन लोग हैं? उन्होंने कहा यह सूद खाने वाले हैं। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 246)**

खाल क़ैचियों से काटी जाना-

'ह़ज़रत राशिद बिन सअ़द' ने बयान किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "जब मुझे मेअ़राज कराई गई तो मैं ऐसे लोगों पर से गुज़रा जिन की खालें आग की क़ैचियों से काटी जा रही थीं, मैंने कहा ऐ जिब्रईल! यह कौन लोग हैं? उन्होंने जवाब दिया कि यह वह लोग हैं जो ज़िना करने के लिए ज़ीनत अख़्तियार करते थे, फिर मैं ऐसे बदबूदार गढ़े पर से गुज़रा जिस से बहुत सख़्त आवाज़ें आ रहीं थीं, मैंने कहा ऐ जिब्रईल! यह कौन लोग हैं? उन्होंने जवाब दिया कि यह वह औ़रतें हैं जो ज़िनाकारी के लिए बनती सवंरती थीं और वह काम करती थीं जो इन के लिए ह़लाल न था।

(अल् तर्ग़ीब वल् तरहीब पेज नं० 511 भाग 3)

एक शैतान का पीछा लगना-

'मुवत्ता इमाम मालिक' में बरिवायत 'यह़या बिन सअ़ीद' (मुरसलन) नक़्ल किया गया है कि जिस रात रसूलुल्लाह (सल्ल०) को सैर कराई गई आप ने जिन्नात में से एक 'इफ़रीत' को देखा जो आग का शोला लिए हुए आप का पीछा कर रहा था। आप जब भी (दाएँ बाएँ) ध्यान फ़रमाते वह नज़र में आ जाता था। ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने अ़र्ज़ किया, क्या मैं आप को ऐसे कलिमात न बता दूँ जिन्हें आप पढ़ लेंगे तो उस का शोला बुझ जाएगा और यह अपने मुँह के बल गिर पड़ेगा? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया हाँ, बता दो! इस पर ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा कि आप यह कलिमात पढ़ें।

اعوذ بوجه الله الكريم وبكلمات الله التامات اللاتى لا يجاوزهن بر ولا فاجر
من شر ما ينزل من السماء وشر مايعرج فيها وشر ما ذرأ فى الارض وشر ما
يخرج منها ومن فتن الليل والنهار ومن طوارق الليل والنهار الا طارقا يطرق
بخير يارحمٰن

(मुवत्ता इमाम मालिक, किताबुल् जामेअ़)

फ़रिश्तों का पचने लगाने की ताकीद-

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मेअ़राज के सफ़र में पेश आने वाली जो बातें बयान फ़रमाईं उन में एक यह बात भी थी कि आप फ़रिश्तों की जिस जमाअ़त पर से भी गुज़रे उन्होंने कहा कि आप अपनी उम्मत को ह़जामत यानी पचना लगाने का हुक्म दीजिए। (मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 389 तिर्मिज़ी व इब्ने माजा)

अरब में पचने लगाने का बहुत रिवाज था, इस से ज़ायद और ख़राब ख़ून निकल जाता है। ब्लड प्रेशर का मर्ज़ जो आम हो गया है यह इस का बहुत अच्छा इलाज है। "रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने सर में और अपने मोंढ़ों के दर्मियान पचना लगाते थे।" (मिश्कात)

मुजाहिदीन का सवाब-

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने बयान किया कि शबे मेअ़राज में नबी अकरम (सल्ल०) ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) के साथ चले तो आप का एक ऐसी क़ौम के पास से गुज़र हुआ जो एक ही दिन में बीज बो भी लेते हैं और उसी एक दिन में काट भी लेते हैं और काटने के बाद फिर वैसी ही हो जाती है जैसे पहले थी। आप ने ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से पूछा कि यह कौन लोग हैं? ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा कि यह अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले हैं, उन की एक नेकी सात सौ गुना तक बढ़ा दी जाती है और यह लोग जो कुछ भी ख़र्च करते हैं, अल्लाह तआ़ला उस का बदल अ़ता फ़रमाता है।

सर पत्थरों से कुचला जाना-

फिर आप का एक और क़ौम के पास से गुज़र हुआ जिन के सर पत्थरों से कुचले जा रहे थे, कुचले जाने के बाद वैसे ही हो जाते थे जैसे पहले थे। इसी तरह़ सिलसिला जारी था ख़त्म नहीं हुआ, आप

(सल्ल०) ने पूछा यह कौन लोग हैं? ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा कि यह लोग नमाज़ के बारे में काहिली करने वाले हैं, यह सोते रहते थे और नमाज़ नहीं पढ़ते थे।

ज़कात न देने वालों की सज़ा-

एक और क़ौम पर से गुज़र हुआ जिन की शर्मगाहों पर आगे और पीछे चिथड़े लिपटे हुए थे और वह ऊँट और बैल की तरह़ चर रहे थे, 'ज़रीअ़' और 'ज़कूम' यानी कांटेदार ख़बीस पेड़ और जहन्नम के पत्थर खा रहे थे। आप ने पूछा यह कौन लोग हैं? ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा यह वह लोग हैं जो अपने मालों की ज़कात नहीं देते थे।

सड़ा हुआ गोश्त खाने वाले-

फिर आप (सल्ल०) का एक ऐसी क़ौम के पास से गुज़र हुआ जिन के सामने एक हांडी में पका हुआ गोश्त और एक हांडी में कच्चा सड़ा हुआ गोश्त था, यह लोग सड़ा हुआ गोश्त खा रहे थे और पका हुआ गोश्त नहीं खा रहे थे, आप ने दर्याफ़्त किया यह कौन है? ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा यह आप की उम्मत का वह शख़्स है जिस के पास ह़लाल और पाक औ़रत मौजूद थी, मगर वह एक ज़ानिया और फ़ाह़िशा औ़रत के साथ रात गुज़ारता था और सुबह़ तक उसी के पास रहता था और आप की उम्मत की वह औ़रत जो ह़लाल और पाक शौहर को छोड़कर किसी बद्कार के साथ रात गुज़ारती है। ज़रीअ़ आग के काँटे और ज़क्कूम (काँटेदार पेड़) दोज़ख़ का बद्तरीन बद्बूदार दरख़्त है।

लकड़ियों का बड़ा गट्ठर-

फिर एक ऐसे शख़्स के पास से आप (सल्ल०) का गुज़र हुआ, जिस के पास लकड़ियों का बड़ा गट्ठर था वह उसे उठा नहीं सकता (मगर) और ज़्यादा बढ़ाना चाहता था। आप ने दर्याफ़्त फ़रमाया, यह कौन शख़्स है? ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने बताया कि यह वह शख़्स है जिस के पास लोगों की अमानतें हैं, उन की अदाएगी की ताक़त नहीं रखता और मज़ीद अमानतों का बोझ अपने सर लेने को तैयार है।

बैल का छोटे से सुराख़ में दाख़िल होना-

इस के बाद ऐसे सुराख़ पर से गुज़र हुआ जो छोटा सा था, उस में से एक बड़ा बैल निकला, वह चाहता था कि जहाँ से निकला है फिर उस में दाख़िल हो जाए। आप ने सवाल फ़रमाया यह कौन है? ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा कि यह वह शख़्स है जो कोई बुरी बात कह देता है (जो गुनाह का कलिमा होता है) उस पर वह शर्मिन्दा होता है और चाहता है कि उस को वापस कर दे, फिर वह उस की ताक़त नहीं रखता।

जन्नत की ख़ुशबू-

फिर आप (सल्ल०) एक ऐसी घाटी पर पहुँचे जहाँ ख़ूब अच्छी ख़ुश्बू आ रही थी, यह मुश्क की

ख़ुशबू थी और साथ ही एक आवाज़ भी आ रही थी। आप (सल्ल०) ने दर्याफ़्त फ़रमाया यह क्या है? ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा कि यह जन्नत की आवाज़ है, वह कह रही है कि ऐ मेरे रब! जो लोग मेरे अन्दर रहने वाले हैं उन्हें लाइए और अपना वादा पूरा फ़रमाइए।

दोज़ख़ की आवाज़-

इस के बाद एक और वादी पर से गुज़र हुआ, वहाँ ऐसी आवाज़ सुनी जो नागवार थी, आप (सल्ल०) ने पूछा यह क्या है? ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने जवाब दिया कि यह जहन्नम है। यह अल्लाह तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ कर रही है कि जो लोग मेरे अन्दर रहने वाले हैं उन को ले आइए और अपना वादा पूरा फ़रमाइए। **(मजमउल् फ़वायद पेज नं० 151 भाग 3 तबअ़ मदीना मुनव्वरह)**

बाबुल ह़िफ़्ज़

पहले आसमान के दरवाज़े के बारे में फ़रमाया कि यह 'बाबुल् ह़िफ़्ज़' है और फ़रमाया कि इस पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर है, जिस का नाम इस्माईल है। उस के मातह़ेत बारह हज़ार फ़रिश्ते हैं और हर फ़रिश्ते के मातह़ेत बारह हज़ार हैं। जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने यह बात बयान फ़रमाई तो यह आयत तिलावत की وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ **(फ़त्हुल् बारी पेज नं० 209 भाग 7 सीरत इब्ने हिशाम)**

पहले आसमान पर जहन्नम के दारोग़ा से मुलाक़ात

जब आप (सल्ल०) आसमान में दाख़िल हुए तो जो भी फ़रिश्ता मिलता था, हँसते हुए बशाशत और ख़ुशी के साथ मिलता और ख़ैर की दुआ़ देता था, उन्हीं में एक ऐसे फ़रिश्ते से मुलाक़ात हुई जिस ने मुलाक़ात भी की और दुआ़ भी दी, लेकिन वह हँसा नहीं। आप ने ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से पूछा कि यह कौन सा फ़रिश्ता है? उन्होंने जवाब दिया कि यह मालिक है जो दोज़ख़ का दारोग़ा है। यह अगर आप से पहले या आप के बाद किसी के लिए हंसता होता तो आप की मुलाक़ात के वक़्त (भी) आप के सामने इसे हंसी आ जाती, यह फ़रिश्ता हंसता ही नहीं है। आप ने ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से फ़रमाया कि इस फ़रिश्ते से कहिए कि मुझे दोज़ख़ दिखा दे। ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने उस से कहा ऐ मालिक! मुह़म्मद (सल्ल०) को दोज़ख़ दिखा दो। इस पर उस फ़रिश्ते ने दोज़ख़ का ढ़क्कन उठाया जिस की वजह से दोज़ख़ जोश मारती हुई ऊपर उठ आई। आप ने फ़रमाया कि ऐ जिब्रईल! इससे कहिए कि दोज़ख़ को अपनी जगह वापस कर दे, चुनांचे ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने उस फ़रिश्ते से कहा कि इस को वापस कर दो फ़रिश्तों ने उसे वापस होने का हुक्म दिया जिस पर वह वापस चली गई तो उस ने ढ़क्कन ढ़क दिया। **(सीरत इब्ने हिशाम 249)**

दूध, शहद और शराब

'सह़ीह़ मुस्लिम' में (पेज 91) जो नक़्ल किया गया है उस में यूँ है कि बैतुल् मक़्दिस ही में एक

बर्तन में शराब एक बर्तन में दूध पेश किया गया। आप (सल्ल०) ने दूध ले लिया। इस के रावी 'ह़ज़रत अनस बिन मालिक' (रज़ि०) हैं।

'सह़ीह़ मुस्लिम' की दूसरी रिवायत जो (पेज नं० 95) पर है, जिस के रावी ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) हैं। इस में यूँ है कि आ़लमे बाला में 'सिद्रतुल् मुन्तहा' के क़रीब पीने की चीज़ें पेश की गईं इस में भी यह है कि आप (सल्ल०) ने दूध ले लिया और 'इमाम बुख़ारी' की रिवायत में यह है कि 'बैतुल् मआ़मूर' सामने किये जाने के बाद एक बर्तन में शराब, एक बर्तन में दूध और एक बर्तन में शहद पेश किया गया। हो सकता है कि बैतुल् मक़्दिस में भी यह चीज़ें पीने के लिए पेश की गई हों और फिर आसमान पर भी ह़ाज़िरे ख़िद्मत की गई हों, इस में कोई ह़र्ज नहीं है।

'सह़ीह़ बुख़ारी' में शहद का ज़िक्र ज़्यादा है, इस में भी कोई हर्ज नहीं है। बाज़ मर्तबः रावियों से कोई चीज़ रह जाती है, जिसे दूसरा ज़िक्र कर देता है।

'सह़ीह़ मुस्लिम' की (रिवायत पेज नं० 97 भाग 1) में यह भी है कि जब आप ने दूध ले लिया तो ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने अ़र्ज़ किया कि अगर शराब ले लेते तो आप की उम्मत गुमराह हो जाती। इस से मालूम हुआ कि अगुवा के अख़्लाक़ और आ़माल का असर उस के मानने वालों पर भी पड़ता है।

'फ़तहुल् बारी' (पेज नं० 215 भाग 7) में 'अ़ल्लामा क़ुर्तुबी' से नक़्ल किया गया है कि दूध के बारे में जो هی الفطرة التی انت علیها फ़रमाया, मुम्किन है कि यह इस वजह से हो कि बच्चा पैदा होता है तो पहले उस के पेट में दूध दाख़िल होता है, जो उस की आंतों को फैला देता है (और हर बच्चा फ़ित्रते इस्लाम पर पैदा होता है, लिहाज़ा फ़ित्री तौर पर फ़ित्रते इस्लाम और बच्चे की शुरुआ़ती ग़िज़ा में एक मुनासिबत (Similiarity) हुई इसलिए फ़ित्रत से दीने इस्लाम मुराद लिया) इस तरह़ रिवायात से मालूम होता है कि (जो बर्तन पेश किये गये वह) चार थे।

दूध, शहद, ख़म्र और पानी, किसी ने दो का ज़िक्र किया, किसी ने तीन का ज़िक्र किया या यह कि तीन हों एक प्याले में पानी हो, जो शीरीनी (मिठास) में शहद जैसा हो, कभी उस को शहद कह दिया कभी पानी और यह कि शराब उस वक़्त ह़राम न थी क्योंकि यह मदीना में ह़राम हुई है, शहद भी अक्सर लज़्ज़त के लिए पिया जाता है, ग़िज़ा के लिए नहीं। तो यह भी ज़ायद है और इशारा लज़्ज़ात दुनिया की तरफ़, हवा और पानी भी मदद्गार है ग़िज़ा नहीं। जिस तरह़ दुनिया मदद्गार दीन है मक़्सूद नहीं और दीन ख़ुद ग़िज़ा-ए-रूह़ानी मक़्सूद है। जैसा दूध ग़िज़ा-ए-जिस्मानी मक़्सूद है और जबकि ग़िज़ाएँ और भी हैं, मगर दूध को औरों पर तर्जीह़ है कि यह खाने और पीने दोनों का काम देता है।

(फ़त्हुल् बारी पेज नं० 215 भाग 7)

'तफ़्सीर इब्ने कसीर' पेज नं० 5 भाग 3 में 'दलायल अल् नुबूव्वः लिल् बैहक़ी' से नक़्ल किया गया है कि जब आप ने पानी को और शराब को छोड़ दिया और दूध को ले लिया तो ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा कि अगर आप पानी पी लेते तो आप और आपकी उम्मत तबाह हो जाती और अगर शराब पी लेते तो आप और आपकी उम्मत सीधी राह़ से हट जाती।

सिद्रतुल् मुन्तहा क्या है?

ह़दीस में अल् सिद्रतुल् मुन्तहा (सिफ़त मौसूफ़) और सिद्रतुल मुन्तहा (मुज़ाफ़ मुज़ाफ़ इलैहि) दोनों तरह़ से है। शब्द 'सिद्रह' अ़रबी ज़बान में बेरी को कहते हैं और 'अल् मुन्तहा' का अर्थ है इन्तेहा होने की जगह (अन्तिम सीमा) उस दरख़्त का यह नाम क्यों रखा गया? इस के बारे में 'सह़ीह़ मुस्लिम' में है रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि ऊपर से जो अह़काम नाज़िल होते हैं वह इस पर मुन्तही हो जाते हैं और जो बन्दों के आ़माल नीचे से ऊपर जाते हैं वहाँ पर ठहर जाते हैं (आने वाले अह़काम पहले वहाँ आते हैं फिर वहाँ से नाज़िल होते हैं और नीचे से जाने वाले जो आ़माल हैं वह वहाँ ठहर जाते हैं फिर ऊपर जाते हैं।)

पहले गुज़र चुका है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इस सिद्रह पर जो चीज़ें छाई हुई थीं उन की वजह से जो उस का ह़ुस्न था उसे अल्लाह की मख़्लूक़ में से कोई भी शख़्स बयान नहीं कर सकता और दूसरी ह़दीस में है, आप ने फ़रमाया कि उस पर सोने के परवाने छाये हुए थे। उस पेड़ के बारे में यह भी ह़दीस शरीफ़ में है कि उस की शाख़ों के साये में एक सवार सौ साल तक चल सकता है या यूँ फ़रमाया कि उस के साये में सौ सवार साया ले सकते हैं।

قال النووي قال ابن عباس والمفسرون وغيرهم سميت سدرة لمنتهى لان علم الملكة ينتهى اليها ولم يجاوزها احد الا رسول الله صلى الله عليه وسلم

जन्नत और नहर कौसर

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि इस दर्मियान कि मैं जन्नत में चल रहा था, अचानक देखता हूँ कि मैं एक ऐसी नहर पर हूँ जिस के दोनों किनारों पर ऐसे मोतियों के कुब्बे हैं जो बीच में खाली हैं (यानी पूरा कुब्बा एक मोती का है) मैंने कहा, ऐ जिब्रईल! यह क्या है उन्होंने जवाब दिया कि यह नहर कौसर है जो आप के रब ने आप को अ़ता फ़रमाई है मैंने जो ध्यान किया तो देखता हूँ उस की मिट्टी (जिस की सतह़ पर पानी है) ख़ूब तेज़ ख़ुश्बू वाला मश्क़ है।

(रवाहुल् बुख़ारी पेज नं० 471)

बुर्राक़ क्या और कैसा-

'शब्द बुर्राक़' बरीक़ से बना है, जो सफ़ेदी के अर्थ में आता है और एक क़ौल यह भी है, यह शब्द बर्क़ से लिया गया है। बर्क़ बिजली को कहते हैं बर्क़ की तेज़ रफ़्तारी तो मालूम ही है, इस तेज़ रफ़्तारी की वजह से बुर्राक़ का नाम बुर्राक़ रखा गया। रिवायात ह़दीस से मालूम होता है कि इस बुर्राक़ पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पहले भी अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) सवार होते थे। 'इमाम बैहक़ी' ने दलायल अल् नुबूव्वत (पेज नं० 390 भाग 2) में इर्शाद नक़्ल किया है وكانت الانبياء تركبه قبل {और ह़ज़रात

अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) मुझ से पहले उस बुर्राक़ पर सवार होते रहे हैं।}

अल्लाह तआ़ला को इस पर क़ुद्रत है कि बग़ैर बुर्राक़ के सफ़र करा दे, लेकिन आप को इ़ज़्ज़त व बुलन्दी के लिए बुर्राक़ पर सवार कर के ले जाया गया। अगर सवारी न होती तो पैदल सफ़र होता क्योंकि सवार बनिस्बत पैदल चलने वाले के ज़्यादा इ़ज़्ज़त वाला होता है इसलिए सवारी भेजी गई।

बैतुल् मक़्दिस से आसमानों पर

जब मक्का से बैतुल् मक़्दिस की तरफ़ रवानगी हुई तो ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) भी आप के साथ बुर्राक़ पर सवार हो गए और आप को पीछे बिठाया और ख़ुद बतौर रास्ता बताने वाले के सवार हुए।

(फ़त्हुल् बारी पेज नं० 308 भाग 7)

दोनों ह़ज़रात बुर्राक़ पर सवार होकर बैतुल्-ए-मक़्दिस पहुँचे, वहाँ दोनों ने दो-दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी। फिर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) को नमाज़ पढ़ाई। जब आसमानों की तरफ़ तशरीफ़ ले जाने लगे तो एक ज़ीना लाया गया जो बहुत ही ज़्यादा ख़ूबसूरत था और बाज़ रिवायात में है कि एक ज़ीना सोने का और एक ज़ीना चाँदी का था और एक रिवायत में है कि वह मोतियों से जड़ा हुआ था। ऊपर का सफ़र करते वक़्त दाएँ-बाएँ फ़रिश्ते थे। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) दोनों ज़ीना के ज़रिये आसमान तक पहुँचे और आसमान का दरवाज़ा खुलवाया।

(फ़त्हुल् बारी पेज नं० 307, 308, 309)

ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से सवाल

ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने जब दरवाज़ा खुलवाया तो आसमानों के ज़िम्मेदारों ने ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से यह सवाल किया कि आप के साथ कौन है? उन्होंने जवाब दिया कि मुह़म्मद (सल्ल०) हैं। इस पर सवाल हुआ क्या उन्हें बुलाया गया है?

ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) जवाब देते रहे कि हाँ, उन्हें बुलाया गया है। जवाब मिलने पर दरवाज़ा खोले जाते रहे और आप ऊपर पहुँचते रहे। यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि आसमान के ह़ज़रात ने यह सवालात क्यों किये? क्या ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) के बारे में उन्हें यह गुमान था कि वह किसी ऐसी शख़्सियत को साथ ले आये होंगे जिसे ऊपर बुलाया न गया हो?

इस का जवाब यह है कि आसमान के ह़ज़रात को पहले से मालूम था कि आज किसी की आमद (आगमन) होने वाली है, लेकिन ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की इ़ज़्ज़त बढ़ाने के लिए और ख़ुशी ज़ाहिर करने के लिए यह सवाल व जवाब हुआ और इस में यह ह़िक्मत भी थी कि नबी अक्रम (सल्ल०) को पता चल जाए कि आप का नाम आसमानों में मशहूर है। जब यह सवाल किया गया कि आप के साथ कौन है तो ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने जवाब दिया कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) हैं।

अगर वह आप के नाम से वाक़िफ़ न होते और आप की शख़्सियत से परिचित न होते तो यूँ सवाल

करते कि मुहम्मद कौन हैं? इसी लिए पहले से दरवाज़े न खोलने की हिक्मत भी मालूम हो गई, और वह यह कि आप को यह बताना था कि आप से पहले ज़मीन के रहने वालों में से किसी के लिए इस तरीक़े पर आसमान का दरवाज़ा नहीं खोला गया कि वफ़ात से पहले दुनियावी ज़िन्दगी में होते हुए दूत भेज कर बुलाया गया हो, जहाँ अक्सर मेहमान आते हों और बार-बार आते रहते हों। वहाँ यही बात है कि पहले से दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। दुनिया में ऐसा ही होता है और चूंकि हर मेहमान के लिए दरवाज़े खोल दिये जाते हैं इसलिए इस में कोई ख़ुसूसियत और फ़र्क़ नहीं होता।

लेकिन मेअ़राज का मेहमान बेमिसाल मेहमान है, न इस से पहले किसी को यह मेहमानी नसीब हुई न इस के बाद और मेहमानी भी ऐसी नहीं कि अमरीका वाला एशिया चला आया या एशिया वाला अफ़्रीका चला बल्कि वह ऐसी मेहमानी थी कि फ़र्श का रहने वाला सातों आसमान से गुज़रता हुआ 'सिद्रतुल् मुन्तहा' तक पहुँच गया, जहाँ इस महबूब मेहमान के सिवा कोई नहीं पहुँचा। (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) चूंकि इन्सानों में से वहाँ कोई नहीं जाता इसलिए आप (सल्ल०) की इ़ज़्ज़त बढ़ाने के लिए हर-हर आसमान का दरवाज़ा आमद पर खोला गया ताकि वहाँ के मुअ़ज़्ज़ज़ (Respected) मेहमान का मर्तबः मालूम होता चला जाए और यह जान लें कि यह कोई ऐसी हस्ती है जिस को बिना दरख़्वास्त के बुलाया गया है और जिस के लिए आज वह दरवाज़े खोले जा रहे हैं जो कभी किसी के लिए नहीं खोले गये।

हक़ीक़त में यह इ़ज़्ज़त उस इ़ज़्ज़त से ज़्यादा है कि पहले से दरवाज़े खुले रहें जो दूसरों के लिए भी खुले रहे हों। (قال ابن المنير حكمة التحقق ان السماء لم تفتح الامن اجله بخلاف مالو وجده مفتوحاً

(फ़त्हुल् बारी पेज नं० 461 भाग 1)

जूँ ही कोई दरवाज़ा खट्खटाया गया उस आसमान के रहने वाले मुतवज्जेह हुए और यह समझ लिया कि किसी अहम शख़्सियत की आमद (आगमन) है और फिर ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से सवाल व जवाब हुआ। इस से ह़ाज़िरीन को मेहमान का तआ़र्रुफ़ (Introduction) हो गया, पहले सब ने मेहमान का नाम सुना, फिर ज़ियारत की। मेहमान की आमद के बाद जो तआ़र्रुफ़ ह़ाज़िरीन से कराया जाता है वह दरवाज़ा खट्खटाने और ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) के नाम दर्याफ़्त करने से ह़ासिल हो गया। ज़ाहिर है कि आमद की आ़म सूचना से यह बात ह़ासिल न होती और चूंकि बारगाह 'रब्बुल् आ़लमीन' की ह़ाज़िरी के लिए यह सफ़र था और फ़रिश्तों की ज़ियारत या फ़रिश्तों को ज़ियारत कराना मक़्सद न था, इसलिए हर जगह क़याम (Stay) करने का मौक़ा न था।

आसमान वाले मुतवज्जेह होते रहे, आप की ज़ियारत करते रहे और आप आगे बढ़ते चले गये, दुनिया में इस्तिक़बाल (स्वागत) के लिए इस्तिक़बालिया कमेटी के लोगों को पहले से जमा करना पड़ता है क्योंकि दुनिया की चीज़ों के पेशेनज़र अचानक सब का ह़ाज़िर होना मुश्किल होता है। लोग पहले से आने की कोशिश करते हैं ताकि वक़्त न निकल जाए लेकिन आसमान के रहने वालों की वह क़ुव्वतें ह़ासिल हैं कि एक सेकेण्ड में हज़ारों मील का सफ़र कर के जमा हो सकते हैं। दरवाज़ा खट्खटाया गया सब ह़ाज़िर हो गये, दरवाज़ा खोलते वक़्त सब मौजूद हैं।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और नमाज़

एक यह सवाल पैदा होता है कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने नमाज़ों के कमी के सवाल करने की तरफ़ क्यों तवज्जोह नहीं दिलाई? उ़ल्मा ने इस के बारे में फ़रमाया कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ख़लील हैं, मक़ामे ख़लीलियत यही है कि जो हुक्म हुआ मान लिया।

ह़ज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अ़लै०) भी उम्मते मुह़म्मदिया की ख़ैरख़्वाही से ग़ाफ़िल न थे, उन्होंने कम अ़िबादत को सामने रखा, पचास नमाज़ों की फ़र्ज़ियत की ख़बर सुनकर उन का दिल बाग़-बाग़ हो गया। जब यह ख़बर मिली कि कअ़बः शरीफ़ बनाते वक़्त मैंने رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رسولا منهم के ज़रिये जिस उम्मत के लिए दुआ़ की थी वह आज नवाज़ी जा रही है और उसे रात दिन में पचास मर्तबः बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िरी का शर्फ़ दिया जा रहा है, फिर वह कम नमाज़ का मश्विरह क्यों देते।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, जिस रात मुझे सैर कराई गई, ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) से मुलाक़ात हुई उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मुह़म्मद! मेरी तरफ़ से अपनी उम्मत को सलाम कह देना और उन्हें बता देना कि बिलाशुब्हा जन्नत की अच्छी मिट्टी है, मीठा पानी है और वह चट्यल मैदान है और उस के पौधे यह हैं। سبحان الله والحمد لله ولا اله الا الله والله اكبر

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 202)

जन्नत चट्यल मैदान है का मतलब यह है कि इस में सब कुछ है, लेकिन उस के लिए है जो दुनिया में ऐसे काम कर के जाएगा जिन के ज़रिये जन्नत में दाख़िला हो सके। जन्नत मेह़नत से मिलेगी और उस को इस तरह़ समझ लिया जाए जैसे कोई बहुत अच्छी ज़मीन हो, मिट्टी भी उ़म्दह हो, पानी भी मीठा हो। जब कोई शख़्स उस में दरख़्त लगाएगा और उस उ़म्दह पानी से सिंचाई करेगा तो उस का फल पा लेगा, लिहाज़ा दुनिया में नेक आ़माल करते रहो अल्लाह का ज़िक्र करो سبحان الله والحمد لله ولا اله الا الله والله اكبر पढ़ा करो। इन को पढ़ोगे तो जन्नत में इन के बदले दरख़्त पा लोगे। इसीलिए एक ह़दीस में फ़रमाया कि जिस ने سبحان الله العظيم وبحمده कहा उस के लिए जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा।

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 201 तिर्मिज़ी)

नमाज़

नमाज़ अल्लाह तआ़ला का बहुत बड़ा इन्आ़म है। दूसरी अ़िबादात इसी सरज़मीन में रहते हुए फ़र्ज़ की गईं, लेकिन नमाज़ आसमान पर फ़र्ज़ की गई। अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब (सल्ल०) को आसमान की सैर कराई और वहाँ पचास, फिर पाँच नमाज़ें अ़ता की गईं और सवाब पचास ही का रखा गया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के तवज्जोह दिलाने पर बार-बार बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होकर नमाज़ों की तख़्फ़ीफ़ के लिए दरख़्वास्त करते रहे और दरख़्वास्त क़ुबूल होती रही, आसमानों पर बार-बार आप की ह़ाज़िरी होती रही।

चूंकि यह अल्लाह तआ़ला के दरबार की ह़ाज़िरी है इसलिए इस के वह आदाब हैं जो दूसरी अ़िबादात के लिए ज़रूरी नहीं किये गये, बावुज़ू होना, कपड़ों का पाक होना, नमाज़ की जगह का पाक होना, क़िब्ला रुख़ होना, अदब के साथ हाथ बाँध कर खड़ा होना, अल्लाह के कलाम को पढ़ना, रुकूअ़ सज्दः करना।

यह वह चीज़ें हैं जो पूरे तौर से किसी दूसरी अ़िबादात के साथ शर्त में शामिल नहीं हैं। फिर नमाज़ी हर दो रकअ़त के बाद तशह्हुद पढ़ता है जो **'अत्तह़ीय्यातु'** से शुरु होता है। कुछ ह़दीस के व्याख्याकारों ने फ़रमाया कि तशह्हुद में उन्हीं शब्दों को दोहराया जाता है जो शबे मेअ़राज में अदा किये गये थे। ह़ाज़िरी के वक़्त ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने तहय्या पेश करते हुए अ़र्ज़ किया التحيات لله والصلوات والطيبات इस पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जवाब मिला السلام عليك ايها النبى ورحمة الله وبركاته यह सुनकर आप ने अ़र्ज़ किया السلام علينا وعلى عباد الله الصالحين

ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने तुरन्त तौह़ीद व रिसालत की गवाही दी और اشهد ان لا اله الا الله و اشهد ان محمدا عبده ورسوله के कलिमात अदा किये।

नमाज़ चूंकि अल्लाह के दरबार की ह़ाज़िरी है, इसलिए पूरी तवज्जोह के साथ नमाज़ पढ़ने की तअ़लीम दी गई। 'सुत्रह' सामने रखने की हिदायत फ़रमाई ताकि यकसूई रहे और इधर-उधर देखने से मना फ़रमाया है। नमाज़ पढ़ते हुए उंगलियों में उंगलियाँ डालने की मुमानिअ़त (मना) फ़रमाई है, खाने की ज़रूरत होते हुए और पेशाब पाख़ाना का तक़ाज़ा होते हुए नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया क्योंकि यह चीज़ें तवज्जोह हटाने वाली हैं। इन की वजह से ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ बाक़ी नहीं रहता और यह दरबार की ह़ाज़िरी की शान के ख़िलाफ़ है।

ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जब बन्दा नमाज़ में होता है तो बराबर अल्लाह तआ़ला की तवज्जोह उस की तरफ़ रहती है जब तक कि बन्दा ख़ुद अपनी तवज्जोह न हटा ले। जब बन्दा तवज्जोह हटा लेता है तो अल्लाह तआ़ला की भी तवज्जोह नहीं रहती। ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "अगर तुम में से कोई शख़्स नमाज़ के लिए खड़ा हो तो कंकरियों को न छुए क्योंकि उस की तरफ़ रह़मत मुतवज्जेह होती है।"

काफ़िरों का जवाब

ह़दीस से मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को अल्लाह तआ़ला ने बेदारी में रुह़ जिस्म के साथ मेअ़राज कराई। अहले सुन्नत वल् जमाअ़त का यही मज़हब है एक ही रात में आप मक्का से रवाना होकर बैतुल् मक़्दिस में पहुँचे, वहाँ ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) की इमामत की, फिर वहाँ से आसमानों पर तशरीफ़ ले गये, वहाँ ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) से मुलाक़ातें हुईं। सिद्रतुल् मुन्तहा को देखा, ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ क़ल्मों के लिखने की आवाज़ें आ रही थीं।

आसमानों पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की गईं, फिर ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के बार-बार ध्यान दिलाने पर

आप (सल्ल०) कमी करने की दरख़्वास्त करते रहे और अल्लाह तआ़ला ने पाँच नमाज़ें पढ़ने पर ही पचास नमाज़ों के सवाब का ऐलान फ़रमाया। फिर इसी रात में आसमानों से नुज़ूल फ़रमाया और वापस मक्का तशरीफ़ ले आए रास्ते में कुरैश का एक काफ़िला मिला जब सुबह़ को कुरैश के सामने रात का वाक़िआ़ बयान किया तो वह झुठलाने लगे, लेकिन जब आप ने बैतुल् मुक़द्दस के बारे में उन के सवालात के जवाबात दे दिये और जिस तरह़ क़ाफ़िला से मुलाक़ात हुई थी वह भी पहुँच गया और आप ने इस के बारे में जो कुछ बताया था, वह सब के सामने सह़ी साबित हो गया तो कुरैश का मुँह बन्द हो गया और आगे कुछ न कह सके।

अल्लाह तआ़ला चाहे तो जो तेज़ रफ़्तार सवारियाँ हैं उन्हें तेज़ रफ़्तारी अ़ता फ़रमा दे और नई सवारियाँ पैदा फ़रमा दे जो मौजूदा सवारियों से तेज़ हों। सूरः नह़ल में जिन सवारियों का ज़िक्र है उस के बाद फ़रमाया है وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ इस में मौजूदा सवारियों और उन सब सवारियों की तरफ़ इशारा है जो क़ियामत तक वजूद में आएँगी अब तो ऐसे राकेट तैयार हो चुके हैं जो आवाज़ की रफ़्तार से भी ज़्यादा जल्दी पहुँचने वाले हैं और अभी मज़ीद तेज़ रफ़्तार सवारियाँ बनाने की कोशिशें जारी हैं।

मोमिन का तरीक़ा यह है कि अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) की बात सुने और तस्दीक़ करे।

2 وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ۝

इन आयात में बनी इस्राईल की सत्ता और उन को कुचलने के लिए उन के दुश्मनों को उन पर मुसल्लत फ़रमाने का ज़िक्र है। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पहले यह क़िस्से गुज़र चुके थे। कुर्आन मजीद का इन तफ़्सीलात को बताना यह भी एक मोअ़जिज़ह (चमत्कार) है, जो लोग यह कहते थे कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अपने पास से कुर्आन बना लेते हैं और यह कह देते हैं कि अल्लाह की तरफ़ से वह्य आई है, इन तमाम वाक़िआ़त में उन लोगों का जवाब है।

यह पिछली ख़बरें आप को किसी इन्सान ने नहीं बताईं और आप उम्मी (Illiterate) भी थे, लिहाज़ा पुरानी किताबों से नक़ल करने का भी सवाल पैदा नहीं होता। इस से ज़ाहिर हो जाता है कि यह सब बातें अल्लाह तआ़ला ने आप को वह्य के ज़रिये बताईं और यह सब तो यहूद के लिए ख़ासतौर से इ़बरत और नसीह़त है, वह जानते थे कि हमारे पूवर्जो का इतिह़ास है उन्हें यह वाक़िआ़त मालूम थे।

एक उम्मी शख़्स के बताने के बाद (जिस के पास वह्य के सिवा मालूम करने का कोई रास्ता न था) भी ईमान न लाए فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۚ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ **(सूरः बक़रः आयत नं० 89)**

पहले तो यह फ़रमाया कि हम ने मूसा को किताब दी यानी तौरेत शरीफ़ अ़ता की और इस किताब को हम ने बनी इस्राईल के लिए हिदायत का ज़रिया बनाया। इस में तौह़ीद का भी हुक्म और बहुत से हुक्म थे, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया था कि तुम मेरे सिवा किसी को अपना पूज्य मत बनाना, लेकिन बनी इस्राईल तौरेत की मुख़ालिफ़त करते रहे जिस की वजह से दुनिया में सज़ा भुगतते रहे, कभी उन्हें सत्ता मिल जाती थी और ऊँचे पैमाने पर ज़ोरदार तरीक़े से ज़मीन में हुक्मरानी करते और कभी दुश्मन

उन पर चढ़ाई कर देते जिस से उन्हें ज़िल्लत का मुँह देखना पड़ता था।

3 ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ۝

इन वाक़िआत की तफ़्सील बताने से पहले अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अपना एक इन्आ़म याद दिलाया कि तुम लोग ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की नस्ल से हो। जब क़ौम की सरकशी की वजह से क़ौम पर अ़ज़ाब आया तो उन को और उन के ख़ानदान को (बीवी और एक बेटे के अ़लावा) और दूसरे अहले ईमान को (जो थोड़े से थे) उन के साथ कश्ती में सवार कर दिया था, उस कश्ती में जो लोग सवार थे आगे उन्हीं लोगों की नस्ल चली और दुनिया में फैली।

यहाँ बनी इस्राईल को याद दिलाया कि देखो! तौह़ीद वालों को कश्ती में सवार कर के डूबने से निजात दी थी तुम उन्हीं की नस्ल से हो, उस वक़्त से लेकर आज तक नस्ल दर नस्ल तुम ज़मीन पर आ रहो हो यह अल्लाह तआ़ला का तुम पर इन्आ़म है और यह भी समझ लेना चाहिए कि जैसे उन्होंने अल्लाह के सिवा किसी को पूज्य न बनाया तुम भी किसी को पूज्य न बनाओ और उसी की तरफ़ मुतवज्जेह रहो।

إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا (बेशक नूह़ शुक्रगुज़ार बन्दे थे) जिस शुक्रगुज़ार बन्दे के साथ तुम्हारे बाप-दादा ने निजात पाई, उस बन्दे की तरह़ तुम भी शुक्र अदा करते रहो।

4-5 وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَنَا أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ ۚ وَكَانَ وَعْدًا مَفْعُولًا ۝

इस के बाद यह बताया कि हम ने पहले ही किताब में (यानी तौरेत शरीफ़ में या अम्बिया बनी इस्राईल के सह़ीफ़ों में बतौर पेशीनगोई) यह बात बता दी थी कि तुम (मुल्क शाम की) सरज़मीन में दो बार फ़साद करोगे और बन्दों पर ख़ूब ज़ोर चलाने लगोगे। इस के बाद فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا से उन का फ़साद पहले और उन पर दुश्मनों की चढ़ाई فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ में दूसरी मर्तबः उन के फ़साद के बाद दुश्मनों की तरफ़ से यलग़ार (Attack) और तबाही होने का ज़िक्र फ़रमाया।

आगे बढ़ने से पहले बनी इस्राईल के शर व फ़साद और दुश्मनों की तरफ़ से उन की तबाहकारी की तफ़्सील मालूम कर लेनी चाहिए जो तफ़्सीर और तारीख़ की किताबों में दर्ज है। ऊपर की आयत में फ़रमाया है कि एक बार बनी इस्राईल ने ज़मीन में फ़साद किया, अल्लाह के हुक्मों की मुख़ालिफ़त की और मख़्लूक़ पर भी ज़ुल्म किया, उस वक़्त उन पर दुश्मन मुसल्लत कर दिये गये थे जो सख़्त जंगजू थे।

इस के बाद बनी इस्राईल संभल गये तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें फिर नेअ़मत और दौलत से नवाज़ा, बेटे भी दिये और उन को ख़ूब बढ़ा दिया, लेकिन फिर उन्होंने शरारत की तो दोबारा दुश्मन मुसल्लत हो गया, जिस ने बुरी तरह़ उन की बर्बादी की और दोबारा बैतुल् मक़्दिस में दाख़िल होकर उन को तबाह कर दिया।

क़ुर्आन मजीद में 'बनी इस्राईल' के दो मर्तबः बर्बाद होने और बीच में आबाद होने का जो ज़िक्र फ़रमाया है, उन में कौन से वाक़िआत मुराद हैं और कौन से दुश्मनों ने ह़मला किया था, इस के बारे

में यक़ीन के साथ कोई बात नहीं की जा सकती। अह़ादीस में इन का कोई ज़िक्र नहीं है और जो कुछ तफ़्सीर और तारीख़ की किताबों में लिखा है वह इस्राईली रिवायात हैं और उन क़िस्सों की तफ़्सील जानने की ज़रुरत भी नहीं है।

बनी इस्राईल को बर्बाद करने वाले

'तफ़्सीर' की किताबों में 'बनी इस्राईल' को बर्बाद करने वालों के कई नाम लिखे हैं (1) बख़्त नस्र (2) जालूत (3) ख़रदोश (4) सन्जारेब। फिर उन में पहली बर्बादी किस के हाथों हुई और दूसरी बार किस ने तबाह किया इस में भी इख़्तिलाफ़ है। 'साह़िबे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' बहुत कुछ लिखने के बाद फ़रमाते हैं कि पहली बर्बादी 'बख़्त नस्र' और उस के लश्करों के ज़रिये और दूसरी बर्बादी 'ख़रदोश' और उस के लश्करों के ज़रिये हुई। यह दूसरी बर्बादी पहली बर्बादी से बड़ी थी।

इस के बाद 'बनी इस्राईल' की हुकूमत क़ायम न रह सकी और उन के तमाम इलाक़ों में यूनानियों की हुकूमत क़ायम हो गई। हाँ, बनी इस्राईल तआ़दाद में ज़्यादा हो गये उन की हुकूमत तो न थी, अल्बत्ता बैतुल् मक़्दिस पर उन की रियासत क़ायम थी।

अल्लाह ने नेअ़मते उन्हें बहुत सी दी थीं, उन्होंने नेअ़मतों को बदल दिया और नये-नये तरीक़े ईजाद किये। अल्लाह तआ़ला ने उन पर 'इब्ने इस्तियानूस' रूमी को मुसल्लत कर दिया जिस ने उन के शहरों को वीरान किया और उन्हें भगा दिया, अल्लाह ने उन से हुकूमत और रियासत सब छीन ली और उन पर ज़िल्लत चिमटा दी। अब उन में कोई बाक़ी न रहा जो जिज़्या (एक प्रकार का कर) न देता हो और ज़लील न हो। इस के बाद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) की ख़िलाफ़त तक बैतुल् मक़्दिस वीरान रहा, फिर उसे मुसलमानों ने आबाद किया।

6 ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝

इस के बाद ह़ज़रत क़तादा से नक़्ल किया गया है कि अल्लाह तआ़ला ने 'बनी इस्राईल' पर पहली बार जालूत को मुसल्लत फ़रमा दिया था, उस ने उन्हें क़ैद करके क़त्ल किया और बर्बाद कर दिया, फिर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) के ज़माने में उन्हें क़ुव्वत व ताक़त अ़ता फ़रमा दी जिस का ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ में ज़िक्र फ़रमाया है।

फिर दूसरी बार जब फ़साद में फँस गये तो अल्लाह तआ़ला ने उन पर 'बख़्त नस्र' को भेज दिया, जिस ने उन को क़ैद किया और बर्बाद किया। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने उन पर रह़म फ़रमाया जिस का عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ में ज़िक्र फ़रमाया है। अल्लाह तआ़ला ने फिर उन पर रह़मत फ़रमाई, लेकिन उन लोगों ने बुराई को अख़्तियार किया और नाफ़रमानियों में लग गये। अल्लाह तआ़ला ने उन पर अपना अ़ज़ाब भेज दिया {यह ख़ातिमुन्नबीय्यीन (सल्ल०) के आगमन से पहले के वाक़िआ़त हैं} फिर अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल पर अहले अ़रब को मुसल्लत फ़रमा दिया।

सूरः अअ़्राफ़ में इर्शाद है وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ

(और जब आप के रब ने यह बात बता दी कि वह उन पर क़ियामत तक ऐसे लोगों को भेजता रहेगा जो उन्हें सख़्त तक्लीफ़ पहुँचाते रहेंगे) इसलिए यहूदी क़ियामत तक अ़ज़ाब में हैं, इस का यह मतलब नहीं कि हर दिन हर रात और हर साल तक्लीफ़ ही में रहेंगे। मतलब यह है कि कभी-कभी उन पर दुश्मन मुसल्लत होते रहेंगे। जर्मनी में नाजियों ने पचास साल पहले जो उन का ह़ाल किया था वह तो इतिह़ासकार जानते ही हैं। وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ में यह बताया कि लोग दो मर्तबः यहूदियों को क़त्ल कर देंगे, दोनों मर्तबः मस्जिद बैतुल् मक़्दिस में दाख़िल होंगे (चुनांचे ऐसा ही हुआ) وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا इस में यह बताया गया है कि वह दूसरी बार भी 'बनी इस्राईल' की क़ुव्वत व ताक़त और हुकूमत को बर्बाद कर के छोड़ेंगे।

7 إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ۝

إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا और وَإِنْ عُدتُّمْ عُدْنَا में यह बता दिया कि अच्छे काम करोगे तो उस का अच्छा फल मिलेगा और सज़ा मिलने के बाद फिर बुरे कामों में लगोगे तो फिर अ़ज़ाब का मुँह देखना पड़ेगा।

बनी इस्राईल पर जो पहली बार तबाही आई वह ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की शरीअ़त के विरोध की वजह से थी और दूसरी बार ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की मुख़ालिफ़त की वजह से थी। फिर जब ख़ातिमुन्नबीय्यीन (सल्ल०) आए तो यहूदियों ने आप की मुख़ालिफ़त की, आप की नुबूव्वत व रिसालत का इन्कार किया, इसलिए जिलावतन और ज़लील हुए मुसलमानों के लिए 'बनी इस्राईल' और दूसरी पहले की क़ौमों के ह़ालात में नसीह़त हैं।

पिछली क़ौमों ने इस्लाम का दावा करते हुए अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानियाँ कीं, उन पर अ़ज़ाब आए और दुश्मनों ने भी उन पर ह़मले किये और तबाह व बर्बाद किया। उम्मते मुह़म्मदिया के भी मुल्क छीने जाते रहे हैं और दुश्मनों के हाथों तबाही आती रही है। स्पेन का वाक़िआ़ तो सब को मालूम ही है, बग़दाद की तबाही भी तारीख़ में मौजूद है। कई सौ साल की हुकूमत जो हिन्दुस्तान में क़ायम थी उस का भी इ़ल्म है।

8 عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُدتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ۝

इस आयत में इशारा किया गया है कि उन के साथ जो कुछ हुआ उन के बुरे आ़माल का नतीजा था और इसलिए हुआ ताकि वह दोबारा अल्लाह की तरफ़ पलटें, अपने गुनाहों से तौबः करें और तौरेत के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारें। इसलिए कि अब तो उन्हें मालूम हो गया है कि अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब गुनाहों की वजह से आता है और निजात तौबः के ज़रिये मिलती है।

इतिह़ास में है कि 'बनी इस्राईल' अपनी तौबः पर क़ायम नहीं रहे और बार-बार अपनी सरकशी की ज़िन्दगी अख़्तियार की तो अल्लाह तआ़ला ने दोबारा उन पर उन के दुश्मनों को मुसल्लत कर दिया।

इतिहास में है कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) से कई सौ साल पहले ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) की मौत के बाद उन के लड़के ने हुकूमत संभाली, जिस ने अपनी क़ौम के लिए मूर्तियों की अ़िबादत को जायज़ क़रार दे दिया, चुनांचे मिस्र के बादशाह ने 'बैतुल् मक़्दिस' पर ह़मला कर के 'हैकले सुलेमानी' यानी मस्जिदे अ़क़्सा के ख़ज़ाने लूट लिए और मुल्क के दो टुकड़े हो गये। एक का नाम 'मम्लिकत यहूज़ा' पड़ा जो 'यहूज़' और बिन्यामीन की औलाद में से थे और दूसरे का नाम 'मम्लिकत इस्राईली' पड़ा, जो ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) के दूसरे दस बेटों की औलाद में से थे।

इस्राईली हुकूमत का पहला बादशाह 'यरबआ़म' बना, जिस ने सोने के दो बछड़े बनाकर अपनी रिआ़या को अ़िबादत का हुक्म दिया ताकि उन्हें 'बैतुल् मक़्दिस' न जाना पड़े। इसलिए कि उसे डर था कि वहाँ जाकर कहीं 'मम्लिकत यहूज़ा' के बादशाह सुलेमान के बेटे की ताईद न करने लगें, उन लोगों ने ढ़ाई सौ साल तक हुकूमत की। इस बीच उन के कुछ बादशाहों ने मूर्ति पूजा को ख़त्म करने की कोशिश की, लेकिन फिर पहली ह़ालत लौट आई थी।

जब उन के गुनाह बहुत ज़्यादा बढ़ गये तो अल्लाह तआ़ला ने उन पर 'अशूर' के बादशाह को मुसल्लत कर दिया, जिस के हाथों इस्राईली हुकूमत का ख़ात्मा हो गया। इस के बाद 'यहूज़ा हुकूमत' बीस साल से कुछ ज़्यादा दिनों तक बाक़ी न रही। फिर उन का बादशाह एक बड़ा ही ख़बीस और मुश्रिक आदमी बना जिस के गुनाहों की वजह से अल्लाह तआ़ला ने उन पर बाबुल के बादशाह 'बख़्त नस्र' को मुसल्लत कर दिया जिस ने उन में से बहुतों को गुलाम बना लिया। यह उन की पहली ज़िल्लत व रुस्वाई थी, जिस की तरफ़ कुर्आन ने इशारा किया है।

इस के बाद उस का बेटा बादशाह बना जो अपने बाप ही की तरह़ था, चुनाँचे आठ साल के बाद दोबारा बख़्त नस्र ने फिर उन पर चढ़ाई की और ख़ूब लूटमार किया और बहुतों को गुलाम बना लिया। यह उन की दूसरी ज़िल्लत व रुस्वाई थी।

उन का आख़िरी बादशाह पिछले बादशाहों से बुरा था, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने तीसरी बार शाह बाबुल को उन के ख़िलाफ़ लड़ने पर उभारा, उस ने बैतुल् मक़्दिस का घेराव किया, उस बादशाह को गिरफ़्तार किया, शहर और हैकले सुलेमानी को जलाकर ख़त्म कर दिया और कुछ मिस्कीनों के अ़लावा तमाम क़ौम यहूज़ को गुलाम बना लिया और उन्हें जानवरों की तरह़ हांक कर बाबुल ले गया और यहूज़ हुकूमत का ख़ात्मा हो गया। यह उन की तीसरी ज़िल्लत व रुस्वाई थी।

सत्तर साल के बाद जब गुलामी से आज़ाद किये गये तो दोबारा आकर फ़िलिस्तीन में आबाद हुए लेकिन उस के बाद हमेशा किसी के अधीन ही रहे। फ़ारस, यूनान और रोम के बादशाहों ने उन्हें कभी भी चैन से न रहने दिया, यहाँ तक कि ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) ने 'बैतुल् मक़्दिस' को फ़तेह़ किया और मस्जिद तअ़मीर की, जिसे दोबारा 'वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक' ने बनवाई जो अब तक बाक़ी है।

9-10 إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ۝
وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

इस आयते करीमा में क़ुर्आन करीम की वह ख़ूबी बयान की गई है जिस के ज़रिये तमाम आसमानी किताबों पर उसकी विशेषता साबित हो गई। अर्थात क़ुर्आन सब से बेहतर ह़ालत या सब से बेहतर रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है और वह दीन इस्लाम की राह है, जिस की इत्तिबअ़ (पैरवी) में इन्सानों के लिए दुनिया व आख़िरत की हर भलाई है और यह क़ुर्आन उन लोगों को जन्नत की ख़ुशख़बरी देता है जो अपने ईमान में मुख़्लिस होते हैं, नेक आ़माल करते हैं और गुनाहों से परहेज़ करते हैं और जो लोग आख़िरत में जज़ा व सज़ा पर ईमान नहीं रखते, उन्हें इस बात की ख़बर देता है कि अल्लाह ने उन के लिए आग का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

11 وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝

'मुफ़स्सिरीन' लिखते हैं कि क़ुर्आन जो हिदायतनामा है, उस का ह़ाल बयान करने के बाद अब इन्सान जो इस का मोह़ताज है उस का ह़ाल बयान किया जा रहा है और इन दोनों के दर्मियान जो अन्तर पाया जाता है, उसे उजागर किया जा रहा है।

पहली सूरत में आयत का अर्थ यह होगा कि क़ुर्आन इन्सान को उस भलाई की तरफ़ बुलाता है जिस से बढ़कर कोई भलाई नहीं और उस बुराई (यानी अ़ज़ाबे अलीम) से डराता है जिस के बाद कोई शर नहीं और जो इन्सान काफ़िर होता है, अपने लिए बुराई चाहता है या तो अपनी ज़बान के ज़रिये या अपने आ़माल के ज़रिये।

और दूसरी सूरत में अर्थ यह होगा कि क़ुर्आन तो इन्सान को भलाई की तरफ़ बुलाता है, लेकिन वह ख़ुद कभी-कभी जब ग़ुस्से में होता है तो अपने लिए और अपने घरवालों के लिए बद्दुआ़एँ करता है और दोनों ही ह़ालतों में इन्सान बड़ा ही जल्दबाज़ होता है, सब्र से काम नहीं लेता और ह़ालात बदल जाने का इन्तिज़ार नहीं करता।

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अपने बारे में बद्दुआ़ न करो, अपनी औलाद के बारे में बद्दुआ़ न करो, अपने मालों के लिए बद्दुआ़ न करो। ऐसा न हो कि तुम दुआ़ क़ुबूल होने की घड़ी में ऐसी दुआ़ माँग बैठो जो क़ुबूल हो जाए।" (मुस्लिम)

12 وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ۝

चूंकि ऊपर क़ुर्आन करीम की सिफ़ात का ज़िक्र आया है। इसी मुनासिबत से यहाँ बाज़ उन निशानियों का ज़िक्र किया जा रहा है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने पूरी तफ़्सील के साथ क़ुर्आन में बयान कर दिया है और लोगों को फ़िक्र व नज़र की दअ़वत दी है ताकि उस की वह़दानियत पर ईमान ले आएँ और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की नुबूव्वत की तस्दीक़ करते हुए इस्लाम में दाख़िल हो जाएँ।

रात और दिन की हैयत, उन का एक दूसरे के पीछे आना-जाना और छोटा बड़ा होना दो ऐसी निशानियाँ हैं जो इस बात पर दलालत करती हैं कि उन का एक पैदा करने वाला है जो बड़ी ह़िक्मतों वाला है।

इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला ने रात के लिए चाँद को बनाया है जिस की रौशनी धीमी होती है और दिन के लिए सूरज को बनाया जिस की रौशनी तेज़ होती है ताकि आदमी रोज़ी की तलाश में बआसानी ह़रकत कर सके और इन दोनों का बड़ा फ़ायदा यह भी है कि उन्हीं के आने-जाने, घटने बढ़ने और लगातार ह़रकत करने के ज़रिये दिन और रात के घंटों, अवक़ात, हफ़्तों, महीनों और सालों का ह़िसाब मालूम किया जाता है। अगर अल्लाह ने उन्हें पैदा न किया होता तो यह ह़िसाबात मालूम होते और लोगों के मामलात ठप पड़ जाते।

अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम की बड़ाई ज़ेहनों में मज़ीद बिठाने के लिए फ़रमाया कि हम ने क़ुर्आन में हर वह बात बयान कर दी है जिस की इन्सान को दीन व दुनिया के सुधार के लिए ज़रूरत पड़ सकती है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः नह़्ल आयत नं० (89) में फ़रमाया है:-

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ कि "हम ने आप पर क़ुर्आन नाज़िल किया है, जिस में हर चीज़ की तफ़्सीर मौजूद है"।

13 وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۭ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ۝

जब अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम में हर चीज़ बयान कर दी है तो किसी के पास गुमराही अख़्तियार करने के लिए कोई बहाना बाक़ी न रहा। इसीलिए इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हर आदमी अपनी मर्ज़ी से जो भी अच्छे या बुरे आ़माल करता है उस से वह छुट्कारा नहीं पा सकता है, उस का अ़मल उस के साथ ऐसा ही होता है जैसे किसी की गर्दन का तौक़, उस से किसी भी ह़ाल में अलग नहीं होता है और उस अ़मल के मुताबिक़ सआ़दत व नेक बख़्ती या संगदिली व बुराई भी उस के साथ लगी होती है इस से वह छुट्कारा नहीं पा सकता है। बुरा होगा तो जहन्नम और अगर नेक होगा तो जन्नत उस का ठिकाना होगी।

क़ियामत के दिन हर आदमी अपना नाम-ए-आ़माल अपने आगे पाएगा और उस से कहा जाएगा कि अपना नाम-ए-आ़माल पढ़ो, जिस में तुम्हारे छोटे बड़े तमाम आ़माल दर्ज हैं और आज तुम ख़ुद ही अपने आ़माल का ह़िसाब लगाओ और गवाह बनो कि तुम ने उन को किया था।

14 اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ۭ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۝

ऊपर जो कुछ बयान किया गया है उस से हर आदमी को यह बात मालूम हो जाती है कि जो शख़्स आज हिदायत के रास्ते को अपनाएगा, अल्लाह उस के रसूल और जन्नत व जहन्नम पर ईमान लाएगा, अच्छे अ़मल करेगा और शिर्क व गुनाह से परहेज़ करेगा तो इस का फ़ायदा उसी को पहुँचेगा। अ़ज़ाब से निजात पाएगा और जन्नत का ह़क़्दार बनेगा, मगर जो शख़्स गुमराह होगा क़ुर्आन करीम और नबी करीम (सल्ल०) को झुठलाएगा, शिर्क व गुनाह करेगा तो उस का नुक़्सान उसी को पहुँचेगा और जहन्नम उस का ठिकाना होगी। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन कोई किसी दूसरे के गुनाहों का ज़िम्मेदार नहीं होगा।

15 مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ۝

आयत के इस हिस्से में अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों के लिए अपना फ़ज़्ल व करम और उन के साथ अपना अ़द्ल व इन्साफ़ बयान फ़रमाया है कि वह कभी भी किसी क़ौम को अपना रसूल भेजने से पहले अ़ज़ाब नहीं देता। जब अपना रसूल भेज कर ह़क़ व बातिल को उन के लिए खोल देता है और वह फिर भी ईमान नहीं लाते तो उन पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल कर देता है।

जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः ताहा आयत नं० (134) में फ़रमायाः-

وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى

कि “अगर हम इस से पहले ही उन्हें अ़ज़ाब से हलाक कर देते तो यक़ीनन यह कह उठते कि ऐ हमारे परवरदिग़ार! तूने हमारे पास रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते, इस से पहले कि हम ज़लील होते।”

क़ुर्आने करीम में बहुत सी आयात हैं जो इस बात पर दलालत करती हैं कि अल्लाह तआ़ला जब तक अपना रसूल भेज कर हुज्जत पूरी नहीं कर देता, न दुनिया में किसी क़ौम को हलाक करता है और न ही आख़िरत में किसी को अ़ज़ाब देगा।

आयत नं० 16 से 30 तक

وَإِذَا أَرَدْنَا أَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ﴿١٦﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ
بَعْدِ نُوحٍ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿١٧﴾ مَّنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَن نُّرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ
جَهَنَّمَ ۖ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا مَّدْحُورًا ﴿١٨﴾ وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُم مَّشْكُورًا ﴿١٩﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هَٰؤُلَاءِ
وَهَٰؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۚ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ﴿٢٠﴾ انظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ﴿٢١﴾
لَّا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَّخْذُولًا ﴿٢٢﴾ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِندَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا
أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُل لَّهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُل لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ﴿٢٣﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُل رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا
رَبَّيَانِي صَغِيرًا ﴿٢٤﴾ رَّبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۖ إِن تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ﴿٢٥﴾ وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ
السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيَاطِينِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ﴿٢٧﴾ وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّن
رَّبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُل لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿٢٨﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾ إِنَّ رَبَّكَ
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٣٠﴾

अनुवाद-

(16) और जब 'हम' इरादा कर लेते हैं किसी बस्ती के हलाक करने का, तो उसके खुशहाल लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे नफ़रमानी करने लग जाते हैं, तब उन पर बात पूरी हो जाती है, तो 'हम' उन्हें बिल्कुल बरबाद कर देते हैं। (17) और 'हम' नूह के बाद कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं, और आप का 'रब' ही अपने बन्दों के गुनाहों को जानने, देखने के लिए काफ़ी है। (18) जो व्यक्ति जल्द मिलने वाली (दुनिया) का इच्छुक हो तो 'हम' उसमें से जिसे चाहते हैं और जितना चाहते हैं जल्द दे देते हैं, फिर 'हमने' उसके लिए दोज़ख़ को निश्चित कर रखा है जिसमें वह (दाख़िल होगा इस हाल में कि तिरस्कृत) ठुकराया हुआ होगा; (19) और जो व्यक्ति आख़िरत का इच्छुक होगा, और उसके लिए कोशिश करेगा जैसी कोशिश करना चाहिए और वह ईमान वाला भी हो, तो ऐसे ही लोग हैं जिनकी कोशिश क़ुबूल की जाएगी। (20) 'हम' इनको भी और उनको भी, हर एक को तुम्हारे 'रब' की देन में से मदद करते जा रहे हैं, और तुम्हारे 'रब' की देन बन्द नहीं है। (21) देखो, कैसे 'हमने' कुछ लोगों को कुछ लोगों पर फ़ज़ीलत (बढ़ौतरी) दे रखी है, और आख़िरत में तो बड़े दर्जे हैं और बड़ी फ़ज़ीलत है। (22) अल्लाह के साथ कोई दूसरा मअ़बूद (उपास्य) न बनाओ, वरना तुम ज़लील और लाचार हो कर रह जाओगे। (23) और तुम्हारे 'रब' ने फ़ैसला कर दिया है, कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, अगर उनमें से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ, तो उन्हें 'उफ़' तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे अदब (आदर) के साथ बात करो; (24) और प्यार से विनम्रता के साथ उनके सामने भुजाएँ झुकाए रखो और उनके लिए दुआ करते रहो, 'ऐ मेरे रब'! जिस तरह उन्होंने मुझे बचपन में पाला है, उसी तरह 'तू' भी उन पर रहम कर। (25) तुम्हारा रब' ख़ूब अच्छी तरह जानता है कि 'तुम्हारे' दिलों में क्या है"? अगर तुम भले बन जाओ, तो वह तौबः करने वालों को माफ़ कर देने वाला है। (26) और रिश्तेदारों,

मुहताजों और मुसाफ़िरों को उनका हक़ अदा करते रहो और फ़ुज़ूल खर्ची न करो। (27) कि फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले शैतान के भाई हैं; और शैतान अपने 'रब' का बड़ा नाशुक्रा है। (28) और अगर तुम अपने 'रब' की रहमत के इन्तिज़ार में, जिसकी तुम्हें उम्मीद हो, उन (हक़दारों) की ओर न ध्यान दे सको, तो उनसे नर्मी से बात कह दिया करो। (29) और अपने हाथ को न तो अपनी गर्दन से बंधा हुआ (तंग) रखो, और न बिल्कुल खोल ही दो कि (सब दे कर) फिटकारे हुए लाचार होकर बैठ जाओ। (30) बेशक तुम्हारा 'रब' जिसकी रोज़ी चाहता है फैला देता है,और (जिसकी चाहता है) तंग कर देता है, 'वह' अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, खूब देखने वाला है।

आयत नं० 16 से 30 तक की व्याख्या

16 وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ۝

जिस अ़ज़ाब का ऊपर ज़िक्र आया है उस की वजह बयान की जा रही है और इसमें इस तरफ़ इशारा है कि इस से मुराद दुनियावी अ़ज़ाब है। आयत का मतलब यह है कि जब हम किसी क़ौम को अ़ज़ाब के ज़रिये हलाक करना चाहते हैं तो उस के ऐ़श परस्तों और नेअ़मतों में डूबे हुए लोगों को अपने रसूल की ज़बानी आदेशों का पालन व बन्दगी का हुक्म देते हैं, लेकिन वह लोग हमारे हुक्म की मुख़ालिफ़त (विरोध) करते हैं और ज़ुल्म उन का तरीक़ा बन जाता है तो उन पर अ़ज़ाब का आना वाजिब हो जाता है, फिर हम उन्हें तबाह व बर्बाद कर देते हैं। जैसा कि बैतुल् मक़्दिस वालों के साथ हुआ कि जब यहूद ने अल्लाह के दीन को पीठ पीछे डाल दिया तो उन के दुश्मनों को उन पर मुसल्लत कर दिया।

आयत का एक मतलब यह भी बयान किया गया है कि जब हम किसी क़ौम को अ़ज़ाब के ज़रिये हलाक करना चाहते हैं तो उस में फ़ासिक़ों (गुनाहगारों) और फ़ाजिरों (बुरों) की तअ़दाद बढ़ा देते हैं जो कसरत के साथ गुनाह करने लगते हैं।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि अगरचे अल्लाह का हुक्म तमाम लोगों को शामिल होता है, लेकिन यहाँ ऐ़श परस्तों का ही ज़िक्र इसलिए आया है कि दुनिया में शर व फ़साद फैलाने वाले हक़ीक़त में यही लोग होते हैं, फिर दूसरे लोग उन की पैरवी करने लगते हैं।

17 وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ۝

पिछली क़ौमों के बारे में अल्लाह तआ़ला का यही तरीक़ा रहा है कि जब उन्होंने कुफ़्र व सरकशी की राह अख़्तियार की तो अल्लाह ने उन्हें हलाक कर दिया। मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयत में कुफ़्फ़ारे मक्का के लिए एक क़िस्म की धमकी है कि अगर वह भी अपने कुफ़्र पर जमे रहे तो वह दिन दूर नहीं कि अल्लाह का अ़ज़ाब उन पर नाज़िल हो जाए।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब कर के फ़रमाया कि आप का रब अपने बन्दों के गुनाहों से ख़ूब वाक़िफ़ है, इसलिए उन्हें डर कर रहना चाहिए कि कहीं उन का गुनाह

उन की हलाकत का ज़रिया न बन जाए इसलिए कि क़ौमों की हलाकत की बात आने के बाद गुनाहों का ज़िक्र इस बात की तरफ़ इशारा है कि उन को गुनाहों की वजह से हलाक किया जाता है।

18-19 مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾

आयत नं० (13) में आ चुका है कि हर आदमी का अ़मल चाहे अच्छा हो या बुरा उस की वजह बन जाता है, इस से वह किसी ह़ाल में छुट्कारा ह़ासिल नहीं कर सकता और उसी के मुताबिक़ क़ियामत के दिन नेकी या बुराई उस का मक़्सद बन जाती है।

इस आयते करीमा में लगभग इसी बात को बयान किया गया है कि जिस आदमी की ज़िन्दगी का मक़्सद दुनिया की चाहत होती है वह अपने लिए नहूसत को दअ़वत देता है, जिस का मक़्सद आख़िरत की तैयारी होती है वह अपने लिए नेक बख़्ती को अख़्तियार कर लेता है।

आयत का मतलब यह है कि जो शख़्स दुनिया के वक़्ती फ़ायदे की तलब में लगा रहता है उस की कोशिश का मक़्सद दुनिया की कामियाबी होती है, आख़िरत पर उस का ईमान नहीं होता, इसलिए मरने के बाद उसे अल्लाह से न सवाब की उम्मीद होती है और न ही सज़ा का डर, ऐसे लोगों में से किसी के लिए तो अल्लाह तआ़ला अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ दुनियावी फ़ायदों के दरवाज़े खोल देता है और किसी पर उन दरवाज़ों को तंग कर देता है या यह कि अल्लाह तआ़ला उन्हें किसी अचानक अ़ज़ाब के ज़रिये हलाक कर देता है और आख़िरत में उन का ठिकाना जहन्नम होगा और अल्लाह के नाशुक्रे बन्दे होने की वजह से उस की निगाह में बुरे और उस की रह़मत से दूर होंगे और जो लोग ईमान लाने के बाद आख़िरत की चाहत के लिए कोशिश में होंगे और उन की ज़िन्दगी का मक़्सद अल्लाह की रज़ा ह़ासिल करनी होगी, क़ियामत के दिन उन्हें उन के नेक आ़माल का बेहतरीन बदला दिया जाएगा।

20 كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۚ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿۲۰﴾

जहाँ तक दुनियावी ज़िन्दगी का सम्बन्ध है तो अल्लाह तआ़ला की रह़मत व मेहरबानी उस के तमाम ही बन्दों पर है चाहे वह मोमिन हो या काफ़िर। वह दोनों क़िस्म के लोगों को ज़िन्दगी के आख़िरी वक़्त तक रोज़ी पहुँचाता है। अलबत्ता मौत के बाद दोनों के ह़ालात अलग हो जाएँगे, जिस की ज़िन्दगी का मक़्सद सिर्फ़ दुनिया की चाह़त होगी, उसे जहन्नम की तरफ़ हांक कर ले जाया जाएगा और जो आख़िरत का इच्छुक होगा उसे जन्नत में जगह मिलेगी। दुनिया में किसी काफ़िर का कुफ़्र और किसी नाफ़रमान की नाफ़रमानी अल्लाह की रोज़ी से मह़रूमी का सबब नहीं बनती है।

21 اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۭ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿۲۱﴾

इस में नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के तमाम इन्सानों से कहा जा रहा है कि अल्लाह तआ़ला दुनिया की नेअ़मतों की तक़्सीम में अपने ह़िक्मत की बुनियाद पर एक को दूसरे पर फ़ौक़ियत (वरीयता) देता है, किसी को ज़्यादा देता है किसी को कम, कोई मज़बूत होता है और कोई कमज़ोर, कोई

सेहतमन्द होता है और कोई बीमार। लेकिन आख़िरत में दर्जात की कमी-बेशी और एक का दूसरे पर बड़ाई पाना ज़्यादा वाज़ेह (Clear) होगा, ख़ासतौर पर मोमिन व काफ़िर के दर्मियान यह फ़र्क़ ज़्यादा खुल कर सामने आ जाएगा कि मोमिन अल्लाह के फ़ज़्ल से जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा और काफ़िर को जहन्नम में ढ़केल दिया जाएगा।

22 لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿۲۲﴾

इस में आख़िरत की कामियाबी और जन्नत में आ़ला मक़ाम ह़ासिल करने का बुनियादी अ़मल यह बताया कि आदमी शिर्क से दूरी अख़्तियार करे और अल्लाह पर ईमान के साथ उसके तक़ाज़ों को पूरा करे, इसलिए कि जो शख़्स अ़िबादत में अल्लाह के साथ ग़ैरों को शरीक करता है वह उस का बद्तरीन बन्दा होता है और वह उसे उन्हीं झूठे मअ़बूदों के सुपुर्द कर देता है और उस की मदद से अपना हाथ खींच लेता है।

सूरः आले इ़मरान आयत नं० (160) में है وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ

कि "अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो उस के बाद कौन है जो तुम्हारी मदद करे।"

23 وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۭ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿۲۳﴾

वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म

पहला हुक्म-

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने पहले तो यह हुक्म फ़रमाया कि उस के अ़लावा किसी की अ़िबादत न करो। अम्बिया (अ़लै०) की तमाम शिक्षाओं का सब से बड़ा यही हुक्म है और उस के हुक्म पर अ़मल कराने के लिए अल्लाह तआ़ला ने तमाम नबियों और रसूलों को भेजा, किताबें नाज़िल फ़रमाईं और सह़ीफ़े उतारे। अल्लाह तआ़ला को एक मानना और सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करना, किसी भी चीज़ को उस की ज़ात व सिफ़ात और तअ़ज़ीम व अ़िबादत में शरीक न करना, यही अल्लाह का सब से बड़ा हुक्म है।

दूसरा हुक्म-

यह फ़रमाया कि वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक किया करो। अल्लाह तआ़ला ख़ालिक़ है, उसी ने सब को वजूद बख़्शा है, उस की अ़िबादत और शुक्रगुज़ारी हर ह़ाल में फ़र्ज़ और लाज़िम है और उस ने चूंकि इन्सानों को वजूद बख़्शने का ज़रिया उन के माँ-बाप को बनाया, माँ-बाप औलाद की परवरिश में तक्लीफ़ उठाते हैं, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने अपनी अ़िबादत के साथ माँ-बाप के मामले में एह़सान करने का भी हुक्म फ़रमाया, जिसका क़ुर्आन मजीद में जगह-जगह ज़िक्र है।

'हुस्ने सुलूक' में सब बातें आ जाती हैं जिस को सूरः बक़रः में और सूरः अन्आ़म और यहाँ सूरः

'बनी इस्राईल' में وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا फ़रमाया गया है। माँ-बाप की फ़रमाँबरदारी, दिलदारी, नर्मी से बात करना और हर तरह़ की ख़िद्मत गुज़ारी इन लफ़्ज़ों में आ जाती है। अलूबत्ता अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी में किसी की फ़रमाँबरदारी जायज़ नहीं।

तीसरा हुक्म-

यह कि माँ-बाप में से कोई एक बूढ़ा हो जाए तो उन को उफ़ भी न कहो। मक़्सद यह है कि कोई भी ऐसा कलिमा उन की शान में ज़बान से न निकालो जिस से उन के सम्मान में फ़र्क़ आता हो या जिस बात से उन के दिल को रंज पहुँचता हो।

ह़ज़रत ह़सन (रज़ि०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म में शब्द 'उफ़' से नीचे भी कोई दर्जा माँ-बाप के तक्लीफ़ देने का होता तो अल्लाह तआ़ला उस को भी ज़रूर ह़राम क़रार देता। (दुर्रे मन्सूर)

माँ-बाप का सम्मान और फ़रमाँबरदारी हमेशा वाजिब है, बूढ़ें हों या जवान, जैसा कि आयात और अह़ादीस से मालूम होता है। लेकिन बुढ़ापे का ज़िक्र ख़ासतौर से इसलिए फ़रमाया कि उस उ़म्र में माँ-बाप भी कभी-कभी चिड़चिड़े हो जाते हैं और उन को बीमारियाँ हो जाती हैं, औलाद को उन का कपड़ा साफ़ करना पड़ता है, मैले और नापाक कपड़े धोने पड़ते हैं जिस से तबीअ़त पर बोझ होता है और बाज़ मर्तबः तंगदिल होकर ज़बान से उल्टे सीधे शब्द भी निकलने लगते हैं। इस मौक़े पर सब्र और बर्दाश्त से काम लेना, माँ-बाप का दिल ख़ुश रखना और रंज देने वाले ज़रा से लफ़्ज़ से भी परहेज़ करना बहुत बड़ी नेकी होती है।

'ह़ज़रत मुजाहिद' ने फ़रमाया कि तू जो उन के कपड़े वग़ैरह से गन्दगी और पेशाब पाख़ाना साफ़ करता है तो इस मौक़े पर उफ़ भी न कह, जैसा कि वह भी उफ़ न कहते थे जब तेरे बचपन में तेरा पेशाब पाख़ाना वग़ैरह धोते थे। (दुर्रे मन्सूर)

चौथा हुक्म-

(उफ़ कहने की मुमानिअ़त के बाद) यह भी फ़रमाया कि उन को मत झिड़को। झिड़कना 'उफ़' कहने से भी ज़्यादा बुरा है, जब उफ़ कहना मना है तो झिड़कना कैसे दुरुस्त हो सकता है? फिर भी स्पष्ट करने के लिए ख़ासतौर से झिड़कने की साफ़ शब्दों में मुमानिअ़त फ़रमा दी।

पाँचवा हुक्म-

फ़रमाया وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا (माँ बाप से ख़ूब अदब से बात करना) अच्छी बातें करना, लब व लहजे में नर्मी और शब्दों में इ़ज़्ज़त का ख़याल रखना यह सब क़ौलन करीमा में दाख़िल है।

ह़ज़रत सअ़ीद बिन मुसय्यिब ने फ़रमाया कि ख़ताकार ज़र ख़रीद ग़ुलाम जिस का आक़ा बहुत सख़्त मिज़ाज हो या ग़ुलाम जिस तरह़ अपने आक़ा से बात करता है उसी तरह़ माँ-बाप से बात की जाए तो क़ौलन करीमा पर अ़मल हो सकता है।

ह़ज़रत ज़ुहैर बिन मुह़म्मद ने क़ौलन करीमा की तफ़्सीर करते हुए फ़रमायाः-

اذا دعواك فقل لبيكما وسعد يكما (यानी जब तुझे माँ-बाप बुलाएँ तो कहना कि मैं हाज़िर हूँ और अमल करने के लिए तैयार हूँ। **(यह सब बातें तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर पेज नं० 171 भाग 4 में मौजूद हैं)**

24 وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝

छठवाँ हुक्म-

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ (यानी माँ-बाप के सामने मुहब्बत से इन्किसारी के साथ झुके रहना) कि तू उन के सामने ऐसा तरीक़ा अपना कि उन का जो दिली शौक़ हो उस के पूरा होने में, तेरी वजह से फ़र्क़ न आए और हज़रत अता ने इस की तफ़्सीर में फ़रमाया कि माँ-बाप से बात करते वक़्त नीचे ऊपर हाथ मत उठाना (जैसे बराबर वालों के साथ बात करते हुए उठाते हैं) और हज़रत ज़ुहैर बिन मुहम्मद ने इस की तफ़्सीर में फ़रमाया है कि माँ-बाप अगर तुझे गालियाँ दें और बुरा भला कहें तो तू जवाब में यह कहना कि अल्लाह तआला आप पर रहम फ़रमाए। **(दुर्रे मन्सूर)**

सातवाँ हुक्म-

यह कि माँ-बाप के लिए यह दुआ करते रहा करो رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا (कि ऐ मेरे रब! इन दोनों पर रहम फ़रमा जैसा कि इन्होंने मुझे बचपन में परवरिश किया) बात यह है कि कभी औलाद ज़रूरतमन्द थी जो बिल्कुल नासमझ और नातवाँ थी, उस वक़्त माँ-बाप ने हर तरह की तक्लीफ़ बर्दाश्त किया और दुख-सुख में ख़िद्मत कर के औलाद की परवरिश की, अब पचास साठ साल के बाद सूरते हाल उलट गई है कि माँ-बाप ख़र्च और ख़िद्मत के मुहताज हैं और औलाद कमाने वाली है, रुपये, पैसे, घर-बार और कारोबार वाली है, औलाद को चाहिए कि माँ-बाप की ख़िद्मत से न घबराए, उन पर ख़र्च करने में कन्जूसी न करे, दिल खोल कर जान व माल से उन की ख़िद्मत करे और अपना बचपना याद करे। उस वक़्त उन्होंने जो तक्लीफ़ें उठाईं उन को सामने रखे और अल्लाह के दरबार में यूँ अर्ज़ करे कि "ऐ मेरे रब इन पर रहम फ़रमा जैसा कि इन्होंने मुझे बचपन में पाला और परवरिश किया"।

'तफ़्सीर इब्ने कसीर' में लिखा है कि एक शख़्स अपनी वालिदा को कमर पर उठाए हुए तवाफ़ कर रहा था, उस ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अर्ज़ किया कि क्या मैंने इस तरह ख़िद्मत कर के अपनी वालिदा का हक़ अदा कर दिया? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया एक सांस का हक़ भी अदा नहीं हुआ।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर पेज नं० 35 भाग 3)

(عن مسند البزار بسند فيه ضعف، واخرجه البخارى فى الادب المفرد موقوفا على ابن عمر)

25 رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ۝

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ 'दुर्रे मन्सूर' में इस की तफ़्सीर करते हुए हज़रत 'सअ़ीद बिन जुबैर' से नक़्ल किया है कि अगर औलाद की ओर से माँ-बाप के हुक़ूक़ में कोताही हो जाए और दिल से फ़रमाँबरदार हो, अल्लाह तआला से माफ़ी माँगे और तौबः करे तो अल्लाह तआला माफ़ करने वालों को

बहुत माफ़ फ़रमाने वाला है।

इस तरह़ इस ज़ाहिरी इ़ज़्ज़त व सम्मान के साथ दिल में भी उन का अदब और इताअ़त रखना क्योंकि तुम्हारा रब तुम्हारे दिल को ख़ूब जानता है और इसी वजह से तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि अगर तुम (ह़क़ीक़त में दिल से) नेक हो और ग़ल्ती या तंग मिज़ाजी या दिल में तंगी से कोई बेअदबी हो जाए और फिर शर्मिन्दा होकर माफ़ी माँग ले तो अल्लाह तआ़ला तौबः करने वालों की ग़ल्तियों को माफ़ कर देता है।

माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक-

'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि मैंने नबी अक्रम (सल्ल०) से दर्याफ़्त किया कि सब कामों में अल्लाह तआ़ला को कौन सा काम ज़्यादा प्यारा है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, वक़्त पर नमाज़ पढ़ना (जो उस का वक़्त मुस्तह़ब है) मैंने अ़र्ज़ किया इस के बाद कौन सा अ़मल अल्लाह तआ़ला को सब आ़माल से ज़्यादा मह़बूब है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया माँ-बाप के साथ हुस्ने सुलूक का बर्ताव करना। मैंने अ़र्ज़ किया इस के बाद कौन सा अ़मल अल्लाह तआ़ला को सब आ़माल से ज़्यादा प्यारा है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह की राह में जिहाद करना।

(मिश्कातुल् मसाबीह़, पेज नं० 58 बुख़ारी व मुस्लिम)

मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला के यहाँ सब से ज़्यादा मह़बूब अ़मल वक़्त पर नमाज़ पढ़ना और उस के बाद सब से ज़्यादा मह़बूब अ़मल यह है कि इन्सान अपने माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करे। फिर तीसरे नम्बर पर 'जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह' को फ़रमाया। मालूम हुआ कि माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करना 'जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह' से भी बढ़ कर है।

माँ-बाप जन्नत या दोज़ख़ का ज़रिया-

'ह़ज़रत अबू उमामा' (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! वालिदैन का उन की औलाद पर क्या ह़क़ है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि वह दोनों तेरी जन्नत या तेरी जहन्नम हैं। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 1421)**

मतलब यह है कि माँ-बाप की ख़िद्मत और उस के साथ हुस्ने सुलूक का बर्ताव करते रहो, ज़िन्दगी भर उन के आराम व राह़त का ध्यान रखो, जान व माल से उन की फ़रमाँबरदारी में लगे रहो, तुम्हारा यह अ़मल जन्नत में जाने का ज़रिया बनेगा और अगर तुम ने उन की नाफ़रमानी की और उन को सताया, दुख दिया तो वह तुम्हारे दोज़ख़ के दाख़िले का ज़रिया बनेंगे।

अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी-

'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "अल्लाह की रज़ामन्दी माँ-बाप की रज़ामन्दी में है और अल्लाह की नाराज़गी माँ-बाप की नाराज़गी में है"। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 419)**

यानी माँ-बाप को राज़ी रखा तो अल्लाह भी राज़ी रहेंगे और माँ-बाप को नाराज़ किया तो अल्लाह भी नाराज़ होगा, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने माँ-बाप को राज़ी रखने का हुक्म फ़रमाया है। जब माँ-बाप को नाराज़ रखा तो अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी हुई जो अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी का ज़रिया है।

यह उसी सूरत में है जबकि माँ-बाप किसी ऐसे काम के न करने से नाराज़ हों जो ख़िलाफ़े शरअ़ न हो। अगर ख़िलाफ़े शरीअ़त किसी काम का हुक्म दें तो उन की फ़रमाँबरदारी जायज़ नहीं है। इस नाराज़गी में अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी न होगी। ऐसी सूरत में अगर वह नाराज़ भी हो जाएँ तो नाराज़गी की परवाह न करे क्योंकि अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी उस के हुक्मों पर अ़मल करने में है। उस के हुक्म के ख़िलाफ़ किसी की फ़रमाँबरदारी जायज़ नहीं है।

वालिद जन्नत के दरवाज़ों में से बेहतर दरवाज़ा है

ह़ज़रत अबू दर्दा (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि वालिद जन्नत के दरवाज़ों में सब से अच्छा दरवाज़ा है अब तू (उस की फ़रमाँबरदारी कर के) उस दरवाज़े की ह़िफ़ाज़त कर ले या (नाफ़रमानी कर के) उस को नष्ट कर दे। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 420)**

बाप की दुआ़ ज़रूर कुबूल होती है-

'ह़ज़रत अबूहुरैरा' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन दुआ़एँ ज़रूर कुबूल होती हैं उन (की कुबूलियत) में कोई शक नहीं (1) वालिद की दुआ़ औलाद के लिए (2) मुसाफ़िर की दुआ़ (3) मज़लूम की दुआ़। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 195, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा)**

इस ह़दीस से वालिद के दुआ़ की अहमियत मालूम होती है। 'मुल्ला अ़ली क़ारी' (रह़०) मिरक़ात शरह़ मिश्कात में लिखते हैं कि इस में वालिदा का ज़िक्र नहीं है, लेकिन ज़ाहिर है कि जब वालिद की दुआ़ कुबूल होगी तो वालिदा की दुआ़ में तो शक ही नहीं, औलाद को चाहिए कि माँ-बाप की ख़िद्मत करती रहे, दुआ़ लेती रहे और कोई ऐसी ह़रकत न करे जिस से उन का दिल दुखे और उन में से कोई दिल से या ज़बान से बद्दुआ़ कर बैठे क्योंकि जिस तरह़ उन की दुआ़ कुबूल होती है उसी तरह़ उन के दिल की बद्दुआ़ भी लग जाती है, उन की दुआ़ से दुनिया व आख़िरत सुधर सकती है और बद्दुआ़ से दोनों जहानों की बर्बादी हो सकती है।

माँ-बाप के एह़तिराम की मिसालें-

ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ, उस के साथ एक बड़े मियाँ थे। आप ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि तेरे साथ यह कौन है? अ़र्ज़ किया कि यह मेरे वालिद हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि बाप की इ़ज़्ज़त व सम्मान का ख़याल रखो, हरगिज़ इन के आगे मत चलना और इन से पहले मत बैठना और इन का नाम लेकर मत बुलाना और इन की वजह से (किसी को) गाली मत देना। **(तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर पेज नं० 171, भाग 4)**

माँ-बाप का एह़तिराम व इज़्ज़त दिल से भी करे और ज़बान व अ़मल से भी अच्छा बर्ताव करे।

पहली बात तो यह फ़रमाया कि बाप के आगे मत चलना।

दूसरे यह फ़रमाया कि जब किसी जगह बैठना हो तो बाप से पहले मत बैठना।

तीसरे यह फ़रमाया कि बाप का नाम लेकर मत पुकारना।

चौथे यह कि बाप की वजह से किसी को गाली मत देना।

मतलब यह है कि अगर कोई शख़्स तुम्हारे बाप को कोई नागवार बात कह दे तो उस को या उस के बाप को गाली मत देना क्योंकि उस के जवाब में वह फिर तुम्हारे बाप को गाली देगा और इस तरह़ से तुम अपने बाप को गाली दिलाने का ज़रिया बन जाओगे।

यह नसीह़तें बाप ही के साथ ख़ास नहीं हैं, वालिदा के ह़क़ में भी इन का ख़याल रखना ज़रूरी है और यह जो फ़रमाया कि बाप के आगे मत चलना इस से वह सूरत अलग है, जिस में बाप की ख़िद्मत की वजह से आगे चलना पड़े। जैसे- रास्ता दिखाना हो या और कोई ज़रूरत हो।

रिज़्क़ और उ़म्र का बढ़ना-

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस को यह पसन्द हो कि अल्लाह तआ़ला उस की उ़म्र बढ़ा दे और उस का रिज़्क़ बढ़ जाए उस को चाहिए कि अपने माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करे और रिश्तेदारों के साथ सिलह़ रह़मी (रिश्तों को जोड़े) करे।

(दुर्रे मन्सूर भाग 4, पेज नं० 173 बैहक़ी)

इस ह़दीस से मालूम हुआ कि माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करने से और उन की ख़िद्मत में लगे रहने से उ़म्र दराज़ होती है और रिज़्क़ बढ़ता है, बल्कि माँ-बाप के अ़लावा दूसरे रिश्तेदारों के साथ सिलह रह़मी करने से भी उ़म्र दराज़ होती है और रिज़्क़ बढ़ता है। नई नस्ल के बहुत से नौजवान भाई बीवी बच्चों पर तो बढ़-चढ़ कर ख़र्च करते हैं और माँ-बाप के लिए फूटी कौड़ी ख़र्च करने से भी उनका दिल दुखता है। यह लोग आख़िरत के सवाब से तो मह़रूम होते ही हैं दुनिया में भी नुक़्सान उठाते हैं। माँ-बाप की फ़रमाँबरदारी, ख़िद्मत गुज़ारी और दूसरे रिश्तेदारों के साथ सिलह़ रह़मी (रिश्तों का जोड़ना) करने से जो उ़म्र और रिज़्क़ में उस्अ़त होती है उस से मह़रूम होते हैं।

माँ-बाप के लिए मेह़नत-

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि एक ऐसे शख़्स का (मजलिसे नबवी के क़रीब) गुज़र हुआ जिस का जिस्म दुबला पतला था। उस को देखकर ह़ाज़िरीन ने कहा कि काश! यह जिस्म अल्लाह की राह में (यानी जिहाद में दुबला हुआ) होता, यह सुनकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि शायद वह अपने बूढ़े माँ-बाप पर मेह़नत करता हो (और उन की ख़िद्मत में लगने और उन के लिए रोज़ी कमाने की वजह से दुबला हो गया हो) अगर ऐसा है तो वह 'फ़ी सबीलिल्लाह' है। (फिर फ़रमाया कि) शायद वह छोटे बच्चों पर मेह़नत करता हो (यानी उन की ख़िद्मत और परवरिश और उन के लिए रिज़्क़

इकट्ठा करने में दुबला हो गया हो) अगर ऐसा है तो वह 'फ़ी सबीलिल्लाह' है। (फिर फ़रमाया कि) शायद वह अपने नफ़्स पर मेहनत करता हो (कि मख़्लूक़ से सवाल न करना पड़े) अगर ऐसा है तो वह 'फ़ी सबीलिल्लाह' है। **(दुर्रे मन्सूर भाग 4, पेज नं० 170 अज़ बैहक़ी)**

मालूम हुआ कि माँ-बाप और आलू औलाद बल्कि अपने नफ़्स के लिए हलाल रोज़ी कमाना भी 'फ़ी सबीलिल्लाह' में शुमार है।

माँ-बाप की ख़िद्मत नफ़्ली जिहाद से अफ़्ज़ल-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ और जिहाद में शरीक होने की इजाज़त माँगी। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, क्या तेरे माँ-बाप ज़िन्दा हैं? उस ने अर्ज़ किया जी हाँ, ज़िन्दा हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, उन्हीं में जिहाद कर (यानी उन की ख़िद्मत में जो मेहनत और कोशिश और माल ख़र्च करेगा यह भी एक तरह का जिहाद होगा) और एक रिवायत में है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि वापस जा और माँ-बाप के साथ अच्छा बर्ताव करता रह। **(मिश्कातुल् मसाबीह पेज नं० 331 बुख़ारी व मुस्लिम)**

'हज़रत मुआविया बिन जाहिमा' रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने बयान फ़रमाया कि मेरे वालिद 'हज़रत जाहिमा' (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मैंने जिहाद करने का इरादा किया और आप से मश्वरह करने के लिए हाज़िर हुआ। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, क्या तेरी माँ ज़िन्दा है? उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ ज़िन्दा है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया बस तू उसी की ख़िद्मत में लगा रह क्योंकि जन्नत उस के पैर के नीचे है। **(मिश्कातुल् मसाबीह पेज नं० 1431 अह्मद, नसई, बैहक़ी)**

इन दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि आम हालात में (जबकि जिहाद फ़र्ज़ ऐन न हो) जिहाद की शिरकत के लिए जाने से माँ-बाप की ख़िद्मत करना ज़्यादा अफ़्ज़ल है। अगर दूसरे भाई-बहन उन की ख़िद्मत के लिए मौजूद न हों तो उन की ख़िद्मत में रहने की अहमियत और ज़्यादा हो जाएगी।

हज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में एक शख़्स यमन से हिजरत कर के आया, आप (सल्ल०) ने उस से फ़रमाया कि तुम ने शिर्क वाली ज़मीन से तो हिजरत कर ली, लेकिन जिहाद (बाक़ी) है तो क्या यमन में तुम्हारा कोई (क़रीबी) अज़ीज़ है? अर्ज़ किया कि वालिदैन मौजूद हैं। आप (सल्ल०) ने सवाल किया कि उन्होंने तुम को इजाज़त दी है? अर्ज़ किया नहीं, फ़रमाया बस तुम वापस जाओ और उन से इजाज़त लो, अगर इजाज़त दें तो जिहाद में शिरकत कर लेना वरना उन के साथ अच्छा सुलूक करते रहना। **(दुर्रे मन्सूर पेज नं० 751, भाग 4 अह्मद वल् हाकिम)**

हिजरत की बैअ़त के लिए वालिदैन को नसीहत-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में हिजरत पर बैअ़त करने के लिए आया और अर्ज़ किया कि मैं आप से हिजरत पर बैअ़त करने के लिए हाज़िर हुआ हूँ और मैंने अपने वालिदैन को इस हाल में छोड़ा है कि वह दोनों (मेरी जुदाई

की वजह से) रो रहे थे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि उन के पास वापस जा और उन को हंसा जैसा कि तूने उन को रुलाया। **(मुस्तदरक ह़ाकिम भाग 4, पेज नं० 153 अबू दाऊद वग़ैरह)**

यह शख़्स रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में नेक नियती से ह़ाज़िर हुआ यानी हिजरत पर बैअ़त होने के लिए सफ़र कर के आया था। अव्वल तो हिजरत की नियत, फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) से उस अ़मल पर बैअ़त होना यह सब मुबारक और नेक अ़मल है जिस में कोई शक नहीं, लेकिन माँ-बाप उस के सफ़र करने पर राज़ी न थे, वह उस शख़्स के सफ़र में जाने से बहुत बेचैन हुए और जुदाई के सद्मे से रोने लगे। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह बात मालूम हुई तो फ़रमाया कि वापस जा और वालिदैन को हंसा जैसा कि तूने उन को रुलाया है।

इस से माँ-बाप की दिलूदारी की अहमियत और फ़ज़ीलत मालूम हुई। यह उस ज़माने की बात है जब कि हिजरत करना फ़र्ज़ न था। इस्लाम पूरे अ़रब में फैल चुका था, मुसलमान हर जगह अम्न व अमान के साथ इस्लाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार सकते थे।

इस ह़दीस से मालूम हुआ कि ऐसा काम करना जिस से माँ-बाप रंजीदा हों और सद्मे की वजह से रोएँ गुनाह है और ऐसा काम करना जिस से माँ-बाप ख़ुश हों और जिस से उन को हंसी आए सवाब का काम है।

'ह़ज़रत इब्ने उ़मर' रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि بكاء الوالدين من العقوق والكبائر जबकि औलाद ऐसा काम करे जिस से ईज़ा (दुख) पहुँचने की वजह से रोने लगें। **(बुख़ारी)**

'ह़ज़रत अवैस क़रनी' (रह़०) यमन के रहने वाले थे, उन के बारे में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ख़ैरुल् ताबिअ़ीन फ़रमाया, उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़माने ही में इस्लाम क़ुबूल कर लिया था, लेकिन वालिदा की ख़िद्मत की वजह से रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास ह़ाज़िर न हो सके और सह़ाबियत के मक़ाम से मह़रूम हो गए।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने उन के इस अ़मल को बुरा नहीं कहा बल्कि क़द्रदानी फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि उन से दुआ़ कराना, वालिदैन की ख़िद्मत का जो मर्तबः है वह इस से ज़ाहिर है।

'सह़ीह़ मुस्लिम' में है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया कि 'अवैस क़रनी' ने अपनी वालिदा के साथ हुस्ने सुलूक किया अगर 'अवैस' (किसी बात में) अल्लाह पर क़सम खा लें तो अल्लाह तआ़ला ज़रूर उन की क़सम पूरी फ़रमाएगा।

माँ-बाप की ख़िद्मत और नफ़्ली ह़ज व उ़मरह-

'ह़ज़रत अनस' (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि जिहाद करने की ख़्वाहिश रखता हूँ और इस पर क़ादिर नहीं। (मुम्किन है कि यह साह़ब बहुत कमज़ोर हों या बाज़ अ़ज़ा (अंग) सह़ी सालिम न हों जिस की वजह से यह कहा कि जिहाद पर क़ादिर नहीं हूँ) उन की बात सुनकर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने सवाल किया कि क्या तेरे

माँ-बाप में से कोई ज़िन्दा है? अ़र्ज़ किया वालिदा ज़िन्दा है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि बस तू अपनी वालिदा (की ख़िद्मत और फ़रमाँबरदारी) के बारे में अल्लाह तआ़ला से डर। जब तू इस पर अ़मल करेगा तो तू ह़ज करने वाला, उ़मरह करने वाला और जिहाद करने वाला होगा बस जब तेरी माँ तुझे बुलाए तो (उस की फ़रमाँबरदारी के बारे में) अल्लाह से डरना (यानी नाफ़रमानी मत करना) और वालिदा के साथ ह़ुस्ने सुलूक का बर्ताव करना। **(दुर्रे मन्सूर भाग 4, पेज नं० 173 बैहक़ी, वग़ैरह)**

इस में इर्शाद फ़रमाया कि वालिदा तुम को बुलाए तो उस की इताअ़त करो, आ़म ह़ालात में जब भी माँ-बाप बुलाएँ उन के पुकारने पर ह़ाज़िर हो जाए और जो ख़िद्मत बताएँ अन्जाम दे दे। अगर नमाज़ में मश्ग़ूल हो और उस वक़्त वालिदैन में से कोई आवाज़ दें तो उस के बारे में यह है कि माँ-बाप अगर किसी मुसीबत की वजह से पुकारें। (जैसे- पाख़ाना वग़ैरह की ज़रूरत से आते-जाते पैर फिसल जाए और दोनों में से कोई गिर जाए या गिर जाने का अन्देशा हो और कोई दूसरा उठाने वाला और संभालने वाला न हो) तो उन को उठाने और संभालने के लिए फ़र्ज़ नमाज़ का तोड़ देना वाजिब है।

अगर उन्होंने किसी ऐसी ज़रूरत के लिए नहीं पुकारा जिस का ऊपर ज़िक्र किया गया बल्कि यूँ ही पुकार लिया तो फ़र्ज़ नमाज़ तोड़ना दुरुस्त नहीं है। **(शामी फ़ी बाबु इदराकुल् फ़रीज़ा)**

वालिदैन को सताने की सज़ा-

'ह़ज़रत अबूहुरैरा' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि तमाम गुनाह ऐसे हैं कि अल्लाह चाहता है तो उन्हें माफ़ फ़रमा देता है, मगर वालिदैन के सताने का गुनाह ऐसा है जिस की सज़ा दुनिया ही में मौत से पहले दे देता है। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 1412 शोबुल ईमान लिल् बैहक़ी)**

वालिदैन की नाफ़रमानी बड़े गुनाह में से है-

'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर' रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बड़े-बड़े गुनाह यह हैं (1) अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क करना (2) वालिदैन की नाफ़रमानी करना (3) किसी जान को क़त्ल कर देना (जिस का क़त्ल करना क़ातिल के लिए शरअ़न ह़लाल न हो (4) झूठी क़सम खाना। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 17 तिर्मिज़ी)**

'कबीरा गुनाह' की सूची लम्बी है। इस ह़दीस में उन गुनाहों का ज़िक्र है जो बहुत बड़े हैं, इन में शिर्क के बाद ही ह़ुक़ूक़ुल् वालिदैन को ज़िक्र फ़रमाया है। लफ़्ज़ 'उ़क़ूक़' के बहुत से माने है माँ-बाप को किसी भी तरह़ सताना, ज़बान या अ़मल से उनको तक्लीफ़ देना, दिल दुखाना, नाफ़रमानी करना, ज़रूरत होते हुए उन पर ख़र्च न करना यह सब उ़क़ूक़ में शामिल है।

पहले ह़दीस ज़िक्र की जा चुकी है जिस में मह़बूब तरीन आ़माल का बयान है उस में वक़्त पर नमाज़ पढ़ने के बाद माँ-बाप के साथ ह़ुस्ने सुलूक का दर्जा बताया गया है, बिल्कुल उसी तरह़ बड़े-बड़े कबीरा गुनाहों की फ़ेहरिस्त में शिर्क के बाद माँ-बाप के सताने और उन की नाफ़रमानी करने को शुमार फ़रमाया है। माँ-बाप की नाफ़रमानी और उनको तक्लीफ़ पहुँचाना किस दर्जे का गुनाह है, इस से साफ़

ज़ाहिर है।

ख़िद्मत पर जन्नत-

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि वह ज़लील हो, वह ज़लील हो, वह ज़लील हो। अ़र्ज़ किया गया कौन या रसूलल्लाह! फ़रमाया जिस ने अपने माँ-बाप को या दोनों में से किसी एक को बुढ़ापे के वक़्त में पाया फिर (उन की ख़िद्मत कर के) जन्नत में दाख़िल न हुआ। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 418 मुस्लिम)**

पहले मालूम हो चुका है कि माँ-बाप की ख़िद्मत और उन के साथ हुस्ने सुलूक करना जन्नत में दाख़िल होने का बेहतरीन ज़रिया है और उ़क़ूक़ुल् वालिदैन यानी माँ-बाप की नाफ़रमानी और तक्लीफ़ पहुँचाना दोज़ख़ में जाने का ज़रिया है। ज़िन्दगी में ख़ासतौर से नौजवानी में इन्सान से बहुत से सग़ीरा व कबीरा गुनाह हो जाते हैं और माँ-बाप की नाफ़रमानी भी हो जाती है। अगर किसी गुनाहगार बन्दे को बूढ़े माँ-बाप मुयस्सर आ जाएँ यानी उस की मौजूदगी में बूढ़े हो जाएँ तो पिछले गुनाहों के कफ़्फ़ारा के लिए और दोज़ख़ से आज़ाद होकर जन्नती बनने के लिए बूढ़े माँ-बाप की ख़िद्मत को हाथ से न जाने दे।

जिस शख़्स ने माँ-बाप को बूढ़ा पाया लेकिन उन की ख़िद्मत न की, उन की दुआ़एँ न लीं, उन का दिल दुखाता रहा और जोशे जवानी में उन की तरफ़ से ग़फ़्लत बरतता रहा जिस की वजह से दोज़ख़ का ह़क़्दार हो गया, ऐसे शख़्स के बारे में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने तीन बार बद्दुआ़ दी और फ़रमाया कि यह शख़्स (दुनिया व आख़िरत में ज़लील व ख़्वार हो) لا جعلنا الله منهم जिस के माँ-बाप ज़िन्दा हैं उन की ज़िन्दगी की क़द्र करे और उन को राज़ी रख कर जन्नत कमा ले।

माँ-बाप की तरफ़ घूर कर देखना-

'ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "उस शख़्स ने अपने वालिद के साथ अच्छा सुलूक नहीं किया जिस ने वालिद को तेज़ नज़र से देखा।"

(दुर्रे मन्सूर पेज नं० 171 भाग 4 बैहक़ी फ़ी शोबुल् ईमान)

इस ह़दीस से मालूम हुआ कि माँ-बाप को तेज़ नज़र से देखना भी उस के सताने में दाख़िल है। ह़ज़रत ह़सन (रज़ि०) से किसी ने दर्याफ़्त किया कि उ़क़ूक़ यानी माँ-बाप के सताने की क्या ह़द है? उन्होंने जवाब में फ़रमाया कि उन को (ख़िद्मत और माल से) महरूम करना और उन से मिलना जुलना छोड़ देना और उन के चेहरे की तरफ़ तेज़ नज़र से देखना यह सब उ़क़ूक़ है। **(दुर्रे मन्सूर इब्ने अबी शैबा)**

'ह़ज़रत उ़रवा' (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि अगर माँ बाप तुझे नाराज़ कर दें (यानी ऐसी बात कह दें जिस से तुझे नागवारी हो) तो उन की तरफ़ तिरछी नज़र से मत देखना (क्योंकि इन्सान जब किसी पर ग़ुस्सा होता है तो सब से पहले तेज़ नज़र से ही उस का पता चलता है।) **(दुर्रे मन्सूर अ़न् अबी ह़ातिम)**

मालूम हुआ कि माँ-बाप की तअ़ज़ीम (सम्मान) करते हुए अपने जिस्म से भी फ़रमाँबरदारी ज़ाहिर

करना चाहिए और नज़र से कोई ऐसा अ़मल न करे, जिस से उन को तक्लीफ़ पहुँचे।

माँ-बाप को गाली देना-

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि कबीरा गुनाहों में से यह भी है कि आदमी अपने माँ-बाप को गाली दे। ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! क्या कोई शख़्स अपने माँ-बाप को गाली देगा? आप ने फ़रमाया हाँ, इस की सूरत यह है कि किसी दूसरे के बाप को गाली दे तो वह पलट कर गाली देने वाले के बाप को गाली दे दे और किसी दूसरे शख़्स की माँ को गाली दे तो वह पलट कर गाली देने वाले की माँ को गाली दे।

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 419 बुख़ारी व मुस्लिम)

ह़दीस का मतलब यह है कि गाली देने वाले ने अपनी माँ या अपने बाप को तो गाली न दी, लेकिन चूंकि दूसरे से गाली दिलवाने का ज़रिया बन गया, इसलिए ख़ुद गाली देने वालों में शुमार हो गया। इस को रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कबीरा गुनाहों में शामिल फ़रमाया।

इसी से समझ लिया जाए कि जो शख़्स अपने माँ-बाप को ख़ुद अपनी ज़बान से गाली देगा ज़ाहिर है कि उस का गुनाह आ़म कबीरा गुनाहों से बढ़कर होगा।

ह़ज़रात सह़ाबा-ए-किराम (रज़ि०) को अपने माह़ौल के एतिबार से यह बात बड़े तअ़ज्जुब की मालूम हुई कि कोई शख़्स अपने वालिदैन को गाली दे। उन के तअ़ज्जुब पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने गाली का ज़रिया बनने वाली सूरत बताई जो उस ज़माने में पेश आ सकती थी।

माँ-बाप के लिए दुआ़ और इस्तिग़्फ़ार-

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा (ऐसा भी होता है कि) बन्दा के माँ-बाप वफ़ात पा जाते हैं या दोनों में से एक का ऐसे ह़ाल में इन्तिक़ाल हो जाता है कि यह शख़्स उन की ज़िन्दगी में उन की नाफ़रमानी करता रहा और सताता रहा। अब मौत के बाद उन के लिए दुआ़ करता रहता है और उन के लिए इस्तिग़्फ़ार करता रहता है, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला उस को माँ-बाप के साथ हुस्ने सुलूक करने वालों में लिख देता है। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 421)**

माँ-बाप के लिए दुआ़-ए-मग़्फ़िरत-

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला जन्नत में नेक बन्दे का दर्जा बुलन्द फ़रमा देता है वह अ़र्ज़ करता है कि ऐ रब! यह दर्जा मुझे कहाँ से मिला? अल्लाह तआ़ला का इर्शाद होता है कि तेरी औलाद ने जो तेरे लिए मग़्फ़िरत की दुआ़ की यह उस की वजह से है।

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 205 अह़मद)

मालूम हुआ कि माँ-बाप के लिए दुआ़ करना बहुत बड़ा हुस्ने सुलूक है और यह हुस्ने सुलूक ऐसा है कि जो मौत के बाद भी जारी रखा जा सकता है, कम से कम हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद माँ-बाप के लिए दुआ़ कर दिया करे, इस में कुछ ख़र्च भी नहीं होता और उनको बड़ा फ़ायदा पहुँच जाता है।

26-27 وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ۝ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ۭ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ۝

रिश्तेदारों पर ख़र्च करने का हुक्म

पिछली आयतों में माँ-बाप के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म फ़रमाया। इस हुस्ने सुलूक में माल ख़र्च करना भी आता है। अब इन आयात में वालिदैन के अ़लावा दूसरे रिश्तेदारों के हुकूक़ अदा करने, मिस्कीन और मुसाफ़िर को देने का हुक्म फ़रमाया।

'ज़विल् क़ुरा' यानी रिश्तेदारों को सिलह रह़मी के तौर पर तो देना ही चाहिए। कभी-कभी रिश्तेदारों पर माल ख़र्च करना वाजिब भी हो जाता है, जिस की तफ़्सीलात फ़िक़्ः की किताबों में मौजूद हैं। रिश्तेदारों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर ख़र्च करने की फ़ज़ीलत सूरः बक़रः की आयते करीमा لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ (सूर बक़रः आयत नं० 177) में गुज़र चुकी है।

रिश्तेदारों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर माल ख़र्च करने का हुक्म फ़रमाने के बाद फ़ुज़ूलख़र्ची और बेजा माल उड़ाने से मना फ़रमाया गया है। सख़ावत तो शरीअ़ते इस्लामिया में पसन्दीदा अ़मल है, लेकिन माल को बर्बाद करना, बेजा उड़ाना, फ़ुज़ूख़र्ची करना मना है, बहुत से लोग गुनाहों में ख़र्च कर देते हैं और बीवी बच्चों की फ़रमाईशों में बेजा माल ख़र्च करते हैं और उस के लिए क़र्ज़ लेते रहते हैं जिन में बाज़ मर्तबः सूद का लेन-देन भी कर बैठते हैं और अपनी जान को मुसीबत में डाल देते हैं ऐसे लोग इन आयतों पर ग़ौर करें।

दूसरी आयात में फ़रमाया وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ (सूर अअ़राफ़ नं० 31) (और फ़ुज़ूलख़र्ची न करो, बिलाशुब्हा अल्लाह फ़ुज़ूलख़र्ची करने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता) और यहाँ फ़ुज़ूलख़र्ची करने वालों की मज़म्मत करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि यह लोग शैतानों के भाई हैं (शैतान ही उन से फ़ुज़ूलख़र्ची करवाता है और गुनाहों में लगवाता है उस की बात मानने वाले उस के भाई हैं यानी अल्लाह की नाफ़रमानी शैतान की तरह़ से हैं।

'तफ़्सीर इब्ने कसीर' (पेज नं० 36 भाग 3) में 'ह़ज़रत इब्ने मसऊद' (रज़ि०) और 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से नक़्ल किया गया है कि तब्ज़ीर यह है कि ह़क़ के अ़लावा दूसरी चीज़ों में माल ख़र्च किया जाए और 'ह़ज़रत मुजाहिद' का क़ौल नक़्ल किया है कि अगर कोई शख़्स अपना सारा माल ह़क़ में ख़र्च कर दे तो यह तब्ज़ीर नहीं और एक मुद (पैमाना है) भी जानबूझकर ख़र्च कर दे तो यह तब्ज़ीर (फ़ुज़ूलखर्ची) है।

फ़रमाया وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا (और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है।)

जो लोग शैतान की राह पर चलते हैं, फ़ुज़ूलख़र्ची करते हैं वह भी नाशुक्रे ही होते हैं। अल्लाह तआ़ला ने माल दिया, नेअ़मतें अ़ता फ़रमाईं, उन को सोच समझ कर दर्मियानी रास्ता अपनाकर ख़र्च करना लाज़िम है, फ़रायज़ व वाजिबात में ख़र्च करे, नफ़्ली सद्क़ात दे और गुनाहों में माल न लगाए। यह कितनी

बड़ी बेवकूफ़ी है कि अल्लाह तआ़ला ने जो माल अ़ता फ़रमाया उसे गुनाहों में लगा दिया या बेजा ख़र्च कर दिया, जिस ने माल दिया उसी की नाफ़रमानी की, इस से बढ़कर क्या नाशुक्री होगी? अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों की क़द्रदानी यह है कि इन नेअ़मतों को नेअ़मत देने वाले के हुक्म के मुताबिक़ ख़र्च किया जाए।

कभी-कभी ऐसा होता है कि ज़विल् क़ुरबा, मसाकीन और मुसाफ़िरीन को देने के लिए अपने पास माल नहीं होता या थोड़ा सा होता है। ऐसे मौक़े पर यह लोग उम्मीदवार होते हैं, लेकिन उन की माली ख़िद्मत करने से मअ़ज़ूरी और मजबूरी होती है, ऐसे मौक़े पर इन लोगों से अच्छे अल्फ़ाज़ और नर्म लहजे में मअ़ज़रत कर ली जाए उन को बुरा भला न कहा जाए और न ऐसे अल्फ़ाज़ कहे जाएँ जिस से उन्हें दुख पहुँचे।

28 وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُل لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿٢٨﴾

'मुफ़स्सिर इब्ने कसीर' فَقُل لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا की तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं ای عدهم وعدا بسهولة ولين कि ह़ज़रत बिलाल और फ़ुक़रा-ए-सह़ाबा कभी-कभी अपनी ज़रूरत के लिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से सवाल कर लिया करते थे। कभी ऐसा भी होता था कि आप के पास उन के देने के लिए कुछ न होता था, आप उन की तरफ़ से शर्म की वजह से एराज़ फ़रमा लेते थे, ज़बानी तौर पर कोई जवाब नहीं देते थे। इस पर यह आयत وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ नाज़िल हुई।

29 وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾

(और तू अपने हाथ को अपनी गर्दन की तरफ़ बाँधा हुआ मत रख और न उसे बिल्कुल ही खोल दे, वरना तू मलामत किया हुआ खाली हाथ होकर बैठ जाएगा।) इस आयत से मालूम हुआ कि ख़र्च करने में दर्मियानी रास्ता अख़्तियार करना चाहिए। जो कुछ अल्लाह ने दिया है उस में से माल ख़र्च करता रहे (लेकिन गुनाहों में ख़र्च न करे) और बिल्कुल ही हाथ रोक कर न बैठ जाए कि ख़र्च न करे) और जब ख़र्च करने लगे तो बिल्कुल पूरी तरह़ हाथ न खोल दे (कि सारा माल ख़त्म कर दे।)

'मलूम' का अर्थ होता है मलामत किया हुआ और 'मह़सूर' का अर्थ होता है मुह़ताजी। जब अपने पास कुछ भी न रहेगा तो लोग मलामत करेंगे, जिन लोगों पर ख़र्च किया गया है वह भी कहने लगेंगे कि ऐसा बेतुका ख़र्च करने की क्या ज़रूरत थी, सोच समझ कर ख़र्च करना चाहिए माल ज़रूरतों के पूरा होने का ज़रिया है और माल कमाने का ज़रिया भी, जब कुछ न रहेगा तो ज़रूरतें पूरी न हो सकेंगी और आइन्दा माल कमाने में भी बेबसी होगी।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि مَلُومًا का सम्बन्ध पहली बात से हैं। जिस का अर्थ यह है कि ख़र्च करने से हाथ रोक कर बिल्कुल ही न बैठ जाए वरना लोग मलामत करेंगे और 'मह़सूरा' का सम्बन्ध दूसरी बात से है और मतलब यह है कि ख़र्च करने में इतनी ज़्यादती न करे कि ख़ुद तंगदस्त होकर फ़क़ीर हो जाए। आयते करीमा में दर्मियानी ख़र्च करने का हुक्म दिया गया है और दर्मियानी रास्ता हमेशा बेहतर होता है।

وعن ابن عمر قال قال رسول الله ﷺ الاقتصادی فی الفقة نصف المعشیة والتودّد الی الناس نصف العقل وحسن السئوال نصف العلم (روی البیهقی، مشکاة)

ह़दीस शरीफ़ में है الاقتصادفی النفقة نصف المعیشة कि ख़र्च में म्यानारवी आधी मआ़शत है। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 430)**

यानी आर्थिक व्यवस्था की परेशानियों का ह़ल यह है कि ख़र्चा में दर्मियानी रास्ता अपनाया जाए और आधा बाक़ी दूसरी चीज़ों में से। जो शख़्स या जमाअ़त इस से ग़ाफ़िल है वह या तो कंजूसी की वजह से हमेशा मुसीबत में रहेगी या ज़रा सी मुद्दत में सारा माल ख़र्च कर के परेशान होकर बैठ जाएगी। फिर क़र्ज़ों पर नज़र जाएगी तो क़र्ज़े चढ़ते जाएँगे और उन की अदाएगी का कोई रास्ता न होगा, ग़ैर क़ौमों की तरफ़ देखेंगे उन से सूदी क़र्ज़े लेंगे, सूद दर सूद चढ़ता चला जाएगा।

नोट- ऊपर की आयत से मालूम हुआ कि पूरा माल न ख़र्च करना चाहिए। यह आ़म लोगों के लिए है जो ख़र्च कर के पछताने लगते हैं और परेशान होते हैं और फिर दूसरों से माँगने लगते हैं। ह़ज़रात मुफ़स्सिरीन-ए-किराम ने फ़रमाया है कि अहले तवक्कुल ख़र्च कर के न घबराते हैं, न तिलमिलाते हैं, वह अल्लाह तआ़ला पर पूरा-पूरा भरोसा रखते हैं। ऐसे ह़ज़रात अपना पूरा माल अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिए ख़र्च कर देते हैं।

ह़ज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि०) का वाक़िआ़ तो मशहूर ही है कि एक बार जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सद्क़: करने का ह़ुक्म दिया तो ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) पूरा ही माल ले आए। आप (सल्ल०) ने सवाल किया कि तुम ने घरवालों के लिए क्या बाक़ी रखा? तो ह़ज़रत अबू बक्र ने अ़र्ज़ किया कि मैंने उन के लिए अल्लाह और उस के रसूल को बाक़ी रखा। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 556 अज़ तिर्मिज़ी व अबूदाऊद)**

आप ने उन का पूरा माल क़ुबूल फ़रमा लिया और भी इस तरह़ दूसरे लोगों के वाक़िआ़त हैं। 'अ़ल्लामा क़ुर्तुबी' भाग 1 पेज नं० 250 में फ़रमाते हैं कि

وکان کثیر من الصحابة ینفقون فی سبیل الله جمیع اموالهم فلم یعنفهم النبی صلی الله علیه وسلم ولم ینکر علیهم لصحة یقینهم وشدة بصائرهم و انما نهی الله سبحانه تعالی عن الافراط فی الانفاق واخراج ماحوته یده من المال من خیف علیه الحسرة علی ما خرج من یده فاما من وثق بموعود الله عز و جل و جزیل ثوابه فیما انفقه فغیر مراد بالایة والله اعلم

30 اِنَّ رَبَّكَ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ وَیَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِیْرًۢا بَصِیْرًا ۝

आख़िर में फ़रमाया اِنَّ رَبَّكَ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ وَیَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِیْرًۢا بَصِیْرًا

(बिलाशुब्हा तेरा रब जिस के लिए चाहे रिज़्क़ में फ़राख़ी (वृद्धि) देता है और वह रिज़्क़ में तंगी फ़रमा देता है, बिलाशुब्हा वह अपने बन्दों से बाख़बर, देखने वाला है।)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने अपना नियम बताया है कि सब उस के बन्दे हैं। वह

अपनी हिक्मत के मुताबिक़ किसी का रिज़्क़ ज़्यादा करता है और किसी के रिज़्क़ में तंगी फ़रमा देता है, वह ख़बीर भी है और बसीर भी, सब का हाल उसे मालूम है। उस के ज़िम्मे किसी का कुछ बकाया नहीं है जिस को चाहे जितना दे और जिस को चाहे बिल्कुल ही न दे, उसे पूरा-पूरा अख़्तियार है। बन्दे अपना काम करें दर्मियानी रास्ते के साथ अपनी जान पर, अपने अहल व अ़याल पर व क़रीबी रिश्तेदारों पर, फ़क़ीरों व ग़रीबों पर ख़र्च करें।

अल्लाह तआ़ला की हिक्मत का तक़ाज़ा यह है कि कुछ लोगों की ज़रूरतें पूरी होती रहीं और कुछ लोगों की ज़रूरतें रुकी रहें और दोनों हाल में बन्दे शरीअ़त के पाबन्द हैं। उन को हुक्म है कि सारा माल ख़र्च कर के अपने को परेशानी में न डालें।

'साहिबे रुहुल् मआ़नी' ने पेज नं० 66 भाग 15 में ऊपर की आयत की तफ़्सीर करते हुए लिखा है।

علی معنی ان البسط والقبض امران مختصان باللّٰہ تعالیٰ و اما انت فاقتصدوا ترک ماھو مختص بہ جل و علا

आयत नं० 31 से 44 तक

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ۝ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ۝
وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝
وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۠ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ۝ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ
وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ
عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ۝ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ
مَكْرُوْهًا ۝ ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝ اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ
بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنَاثًا ۭ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ۭ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ۝
قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِي الْعَرْشِ سَبِيْلًا ۝ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝ تُسَبِّحُ لَهُ
السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۭ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝

अनुवाद-

(31) और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी (निर्धनता) के डर से क़त्ल न करो, 'हम' उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी; बेशक इन का क़त्ल बहुत बड़े गुनाह की बात है। (32) और ज़िना (व्यभिचार) के क़रीब भी न जाना कि वह बेहयाई और बुरी राह है। (33) और किसी जीव को क़त्ल न करो, जिसे (मारना) अल्लाह ने हराम ठहराया है, मगर हक़ के आधार पर; और जिस व्यक्ति को मज़लूमी की हालत में क़त्ल किया गया हो, तो 'हमने' उसके वारिस को अधिकार दे दिया है, (बदले का) तो उसको चाहिए कि क़त्ल में ज़्यादती न करे, कि वह मदद किया हुआ (कामियाब) है। (34) और यतीम के माल के क़रीब भी न जाओ, मगर उससे जो बेहतर हो, यहाँ तक कि वह जवानी को पहुँच जाए, और अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करो कि अ़हद (प्रतिज्ञा) के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा। (35) और जब नाप कर देने लगो, तो नाप पूरी रखा करो, और ठीक तराज़ू से तौला करो, यह बुहत अच्छी बात है और परिणाम के एतिबार से भी बहुत बेहतर है। (36) और जिस बात का तुम्हें इल्म न हो, उसके पीछे न लगो-बेशक कान और आँख, और दिल इनमें से हर एक के विषय में ज़रूर पूछा जाएगा। (37) और धरती पर अकड़ कर न चलो, न तो तुम धरती को फाड़ सकते हो, और न लम्बे होकर पहाड़ों को पहुँच सकते हो। (38) इन तमाम चीज़ों की बुराई तुम्हारे 'रब' के नज़दीक बहुत नापसंद है। (39) यह हिकमत की उन बातों में से है, जो तुम्हारे 'रब' ने तुम पर 'वह्य' (आदेश) की है, और अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद (उपास्य) न ठहराना, वरना दोज़ख में डाल दिये जाओगे मलामत किये हुए और धुत्कारे हुए। (40) क्या तुम्हारे 'रब' ने तुम्हारे लिए तो बेटे खास कर दिये और अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियाँ बना लिया? बड़ी सख्त बात है जो तुम कहते हो। (41) और 'हमने' इस कुर्आन में तरह- तरह की बातें स्पष्ट कर दीं, ताकि लोग नसीहत हासिल करें, मगर इससे उनकी दूरी और बढ़ती ही जा रही है। (42) कह दीजिए, "अगर अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद होता- जैसा कि यह कहते हैं- तो वे अर्श (सिंहासन) तक पहुँचने की कोई राह ज़रूर निकाल लेते"। (43) 'वह' पाक है! और जो कुछ

ये बकवास करते हैं उससे बहुत ऊँचा है; (44) सातों आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनमें हैं, सब 'उसी' की तस्बीह़ बयान करते हैं; और कोई चीज़ ऐसी नहीं, जो 'उसकी' प्रशंसा के साथ 'उसकी' तस्बीह़ न करती हो, लेकिन तुम उनकी तस्बीह़ को समझते नहीं, बेशक 'वह' बड़ा सहनशील, माफ़ करने वाला है।

आयत नं० 31 से 44 तक की व्याख्या

31 وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۚ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ۚ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ۝

औलाद को क़त्ल न करो

इन आयात में बहुत से अह़काम ज़िक्र फ़रमाये गये हैं। जिसमें से पहला हुक्म यह फ़रमाया कि अपनी औलाद को भुखमरी या ग़रीबी के डर से क़त्ल न करो। अहले अ़रब औलाद को इस वजह से क़त्ल कर देते थे कि हम औलाद को कहाँ से खिलाएँगे। जो लोग भुखमरी या ग़रीबी में ऐसा करते थे उन के बारे में फ़रमाया وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ यह शब्द (सूरः अनआ़म आयत नं० 151) में हैं और कुछ लोग इसलिए क़त्ल कर देते थे कि मुम्किन है आइन्दा भुखमरी न आ जाए।

उन के लिए फ़रमाया وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ तुम ग़रीबी के डर से औलाद को क़त्ल न करो, सूरः बनी इस्राईल के शब्द हैं। अहले अ़रब लड़कियों को क़त्ल कर देते थे ताकि किसी को दामाद न बनाना पड़े, यह सब जाहिलाना रस्में थीं।

ज़माने जाहिलियत में शैतान ने अहले अ़रब को इन कामों पर लगाया था। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا उन का क़त्ल करना बड़ा गुनाह है।

पुरानी जाहिलियत अब फिर लौट आई है। दुश्मनाने इस्लाम ने यह बात उठाई है कि इतने साल के बाद तक अगर बच्चों की पैदावार इसी तरह़ रही जो पूरी दुनिया में है तो ज़मीन छोटी पड़ जाएगी और खाने-पीने की चीजें पूरी न होंगी, लिहाज़ा ऐसी कोशिशें जारी कर दी गई हैं जो उन के ख़याल में बच्चों की पैदाइश रोकने वाली हैं, उस के लिए कई तरह़ से प्रोपेगण्डा हो रहा है, भारी-भारी रक़में ख़र्च की जा रही हैं और अ़जीब बात यह है कि दुश्मनाने इस्लाम जो कुछ कह देते हैं मुसलमान उसे तस्लीम कर लेते हैं, कुर्आन व ह़दीस को बिल्कुल भूल जाते हैं। कुर्आन ने इस जिहालत का पहले ही जवाब दे दिया और फ़रमाया نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ (हम तुम्हें भी रिज़्क़ देंगे और उन्हें भी रिज़्क़ देंगे) तुम्हें किस ने रोज़ी देने वाला बनाया है और किस ने अल्लाह की मख़्लूक़ को रिज़्क़ देने का ठेका दिया है? ह़क़ीक़त में जितने भी तरीक़े औलाद को ख़त्म करने के लिए जारी किये गये हैं, यह सब अल्लाह के फ़ैसले के सामने नाकाम हैं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है ما من نسمة كائنة الى يوم القيمة الا وهى كائنة (यानी अल्लाह के इ़ल्म में क़ियामत के दिन तक जितनी भी जानें पैदा होने वाली हैं वह ज़रूर पैदा होकर रहेंगी) और एक ह़दीस

में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया ماءكل من الماء يكون الولد واذا اراد الله خلق شئى لم يمنعه شى (हर नुत्फ़े से औलाद नहीं होती और जब अल्लाह किसी चीज़ के पैदा करने का इरादा फ़रमाते हैं तो उसे कोई चीज़ रोकने वाली नहीं है। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 275)**

मर्द व औ़रत विलादत को रोकने के लिए कई तरह़ की चीज़ें इस्तेमाल करते हैं, लेकिन जब अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला पैदाइश का होता है तो इन सब चीज़ों के बावजूद ठहरना हो जाता है और औलाद पैदा हो जाती है।

आने वाले इन्सानों के यही ख़ैर ख़्वाह जो उन की आमद और पैदाइश के रोकने के लिए ज़ोर लगा रहे हैं उन्हें वक़्त से पहले आने वालों की रोज़ी की तो फ़िक्र है, लेकिन मौजूदा इन्सानों के जानों की फ़िक्र नहीं उन्हें जगह-जगह क़त्ल करते हैं और करवाते हैं, ऐसे-ऐसे हथियार तैयार कर रखे हैं जो एक मिनट में ही पूरे आ़लम की तबाही का ज़रिया बन सकते हैं।

32 وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝

दूसरा हुक्म यूँ दिया (और ज़िना के पास भी मत भटको बिलाशुब्हा वह बड़ी बेह़याई और बुरी राह है।) इस में ज़िना की मनाही फ़रमाई गई है और यूँ फ़रमाया कि उस के पास भी मत फटको और उसे बेह़याई का काम बताया और बुरी राह से तआ़बीर फ़रमाया। ज़िना ऐसा बुरा अ़मल और ऐसी लआ़नत की चीज़ है जो कभी भी किसी नबी की शरीअ़त में ह़लाल न थी, बल्कि इस्लाम के अ़लावा जो दूसरे मज़हब हैं वह भी इसे ग़लत समझते हैं मगर नफ़्स व शैतान के उभार की वजह से उस में मुब्तिला हो जाते हैं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है कि जब मुझे मेअ़राज कराई गई तो मेरा ऐसे लोगों के पास से गुज़र हुआ जिन की खालें आग की कैंचियों से काटी जा रही थीं। मैंने कहा, ऐ जिब्रईल! यह कौन लोग हैं? उन्होंने जवाब दिया यह वह लोग हैं जो ज़िना करने के लिए ज़ीनत अख़्तियार करते हैं। फिर मैं ऐसे बद्बूदार गढ़े पर से गुज़रा जिस से बहुत सख़्त आवाज़ें आ रही थीं, मैंने कहा जिब्रईल यह कौन हैं? उन्होंने जवाब दिया कि यह वह औ़रतें हैं जो ज़िनाकारी के लिए बनती संवरती हैं और वह काम करती हैं जो उनके लिए ह़लाल नहीं। **(अल् तर्ग़ीब पेज नं० 511 भाग 3)**

इस गुनाह से बचाने के लिए शरीअ़त ने बुरी नज़र तक से मना फ़रमाया है और फ़रमाया कि आँखें भी ज़िना करती हैं और हाथ भी ज़िना करते हैं और पैर भी ज़िना करते हैं और इस गुनाह की दुनियावी सज़ा यह रखी कि ग़ैर शादी-शुदा मर्द या औ़रत ज़िना कर ले तो उस को सौ कोड़े मारे जाएँ और शादी-शुदा मर्द या औ़रत ज़िना कर ले तो उसे संगसार किया जाए यानी पत्थर मार-मार कर हलाक कर दिया जाए। दुनिया में जो मुसीबतें आ रही हैं उन का बहुत बड़ा सबब बड़े गुनाह भी हैं और इन गुनाहों में ज़िनाकारी का आ़म होना भी है।

'ह़ज़रत अ़म्र बिन आ़स' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस क़ौम में ज़िनाकारी फैल जाएगी, क़ह़त भेजकर उन की गिरिफ़्त की जाएगी और जिन लोगों में रिश्वत का

लेन-देन होगा, रोअ़ब के ज़रिये उन की गिरिफ़्त होगी (यानी दिलों पर रोअ़ब तारी हो जाएगा और दुश्मनों से डरते रहेंगे।) 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' और 'इब्ने मसऊद' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जब किसी क़ौम में (एक रिवायत में है कि जब किसी बस्ती में) ज़िना और सूद आ़म हो जाए तो (जान लो कि) उन लोगों ने अपनी जानों पर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब नाज़िल कर लिया। **(अल् तर्ग़ीब वल् तरहीब पेज नं० 278 भाग 3)**

जब ज़िना आ़म हो जाता है तो ह़राम की औलाद भी ज़्यादा हो जाती है, नसब बाक़ी नहीं रहता, कौन किस का बेटा और किस का भतीजा या भांजा है, इन सब बातों की ज़रूरत नहीं रहती। सिल्ह़ रह़मी का कोई रास्ता नहीं रहता और इन्सान, ह़ैवान बनकर रह जाता है। ह़लाली होने की कोई ज़रूरत मह़सूस नहीं करते बल्कि ह़रामी होने ही को मुनासिब समझते हैं और इस पर फ़ख़्र करते हैं। एक ख़ास इलाक़े के रहने वालों पर यह बातें छुपी हुई नहीं हैं।

'ह़ज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा' से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत बराबर ख़ैर पर रहेगी, जब तक उन में ज़िना के औलाद की कसरत न हो जाए सो जब उन में ज़िना की औलाद फैल जाएगी तो अ़नूक़रीब अल्लाह तआ़ला उन को आ़म अ़ज़ाब में मुब्तिला फ़रमा देगा और एक ह़दीस में यूँ है कि जब ज़िना ज़ाहिर हो जाएगा तो तंगदस्ती और ज़िल्लत का ज़ुहूर होगा।

(अल् तर्ग़ीब वल् तर्हीब भाग 3, पेज नं० 277)

'सह़ीह़ बुख़ारी' में ह़ज़रत समुरह बिन जुन्दुब (रज़ि०) से रसूलुल्लाह (सल्ल०) का एक ख़्वाब नक़्ल किया गया है। (ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम का ख़्वाब सच्चा होता है) जिस में बहुत सी चीज़ों का ज़िक्र है। उन में से एक बात यह भी है कि आप का गुज़र एक ऐसे सुराख़ पर से हुआ जो तन्वर (बर्गद के पेड़) की तरह़ था। इस में जो झांक कर देखा तो उस में नंगे मर्द और नंगी औ़रतें नज़र आईं उन के नीचे से आग की लपट आती थी, जब वह लपट ऊपर आती थीं तो वह चीखते चिल्लाते और फ़रियाद करते थे। आप ने अपने साथियों से दर्याफ़्त फ़रमाया (जिन में एक जिब्रईल और एक मीकाईल थे) यह क्या माजरा है? उन्होंने जवाब दिया कि यह ज़िनाकार मर्द और ज़िनाकार औ़रतें हैं।

(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 1044 मिश्कात पेज नं० 395)

जब ज़िना की आ़दत पड़ जाती है तो बुढ़ापे तक ज़िना करते रहते हैं। ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि तीन शख़्स ऐसे हैं कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उन से बात न करेगा और उन को पाक न करेगा और उन की तरफ़ (रह़मत की नज़र से) नहीं देखेगाः-

(1) ज़िनाकार बूढ़ा
(2) झूठा बादशाह
(3) तंगदस्त घमण्डी

और एक ह़दीस में है कि तीन शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे, उन में ज़िनाकार बूढ़े को भी शुमार फ़रमाया और एक ह़दीस में फ़रमाया कि तीन शख़्सों से अल्लाह को बुग़्ज़ (द्वेष) है उन में से एक ज़िनाकार बूढ़ा भी है। **(अल् तर्ग़ीब भाग 3, पेज नं० 275)**

ह़ज़रत अबू क़तादा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स किसी ऐसी औ़रत के बिस्तर पर बैठा जिस का शौहर घर पर नहीं है (और उस के गायब होने को उस ने ज़िना का ज़रिया बना लिया) तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उस पर एक अस्दहा (साँप) मुसल्लत फ़रमाएगा। **(अल् तर्ग़ीब वल् तर्हीब पेज नं० 279 भाग 3)**

शौहर घर पर न हो तो औ़रत मर्द की ज़रूरत महसूस करती है, ज़िनाकारी का मिज़ाज रखने वाले ऐसी औ़रतों से जोड़ बिठा लेते हैं। ऐसे लोगों को तम्बीह की गई है, इसका यह मतलब नहीं है कि शौहर अगर घर पर हो तो उस की इजाज़त से गुनाह ह़लाल हो जाएगा, ज़िना बहरह़ाल ह़राम है।

इस्लाम इ़ज़्ज़त और पाक दामिनी वाला दीन है। इस में बेह़याई, ज़िनाकारी और उस के ज़रिये नाच रंग आदि की कोई गुन्जाइश नहीं। शहवत परस्त इन्साननुमा ह़ैवानों में ज़िनाकारी आ़म है, मह़रम औ़रतों तक से ज़िना करते हैं। क़ानूनन मर्दों को मर्दों से शहवत पूरी करने को जायज़ क़रार दिया है, जिस की वजह से तरह़-तरह़ के बद्तरीन बीमारियों में मुब्तिला हैं।

एक ह़दीस में बर्बादी की वजह यह भी बताई गई है اكتفى الرجال بالرجال والنساء بالنساء (कि मर्द मर्दों से शहवत पूरी करने लगें और औ़रतें औ़रतों से।) **(अल् तर्ग़ीब वल् तर्हीब पेज नं० 267 भाग 3)**

कुछ लोगों की देखा-देखी मुसलमान भी उन के करतूतों के साथी बनते जा रहे हैं और शहवत परस्तों को कामियाब बना रहे हैं। सूरः निसा **(आयत नं० 27)** में फ़रमायाः-

وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ۝

"और अल्लाह चाहता है कि तुम्हारी तौबः क़ुबूल फ़रमाए और जो लोग शहवतों की पैरवी करते हैं वह चाहते हैं कि तुम बड़ी भारी ग़ल्ती में पड़ जाओ"।

कुछ ज़िनाकार औ़रतों की यह बात सुनने में आई है कि मेरा जिस्म है, मैं जिस तरह़ चाहूँ इस्तेमाल करुँ, यह तो कुफ़्रिया बात है, क़ुर्आन का मुक़ाबिला है। इस का माने यह है **(अल् अ़याज़ु बिल्लाह)** ज़िनाकारी से क़ुर्आन का मना फ़रमाना सह़ी नहीं।

ह़क़ीक़त में बहुत से लोगों ने यह समझा ही नहीं कि हम बन्दे हैं। अल्लाह तआ़ला ख़ालिक़ और मालिक है। सारे बन्दे उस की मख़्लूक़ हैं, मख़्लूक़ को क्या ह़क़ है कि अपनी ज़ात को अपने बारे में और अपने जिस्म व जान के बारे में ख़ुद को मालिक समझें।

बहुत से मुल्कों में यह क़ानून लागू है कि ज़िना बिल् जब्र (Rape) तो मना है, लेकिन अगर रज़ामन्दी से कोई मर्द औ़रत से ज़िना कर ले तो इस पर न कोई मुवाख़िज़ा है और न कोई सज़ा। बहुत से वह मुल्क जिन के बादशाह मुसलमान होने के दावेदार हैं, उन के मुल्क में भी यह क़ानून है और दुश्मनों के समझाने से यह क़ानून पास कर दिया गया है कि एक वक़्त निकाह़ में सिर्फ़ एक औ़रत रह सकती है, लेकिन रखेल जितनी चाहे रख सकता है।

ज़िनाकारी को आ़म कर देना अन्जाम के एतिबार से क्या रंग लाएगा इस के बारे में बिल्कुल कोई फ़िक्र नहीं, मुसलमान मुल्कों के ज़िम्मेदार दुश्मनों के सामने इस बात से झेपतें हैं कि एक से ज़्यादा औ़रतें

निकाह़ में रखने का क़ानून पास कर दें। मुसलमान को काफ़िर से क्या झेपना? उसे तो क़ुर्आन व ह़दीस के क़ानून लागू करना ज़रूरी है।

'ह़ज़रत इब्ने उ़मर' (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ मुहाजिरीन की जमाअ़त! पाँच चीज़ें ऐसी हैं कि जब तुम इन में मुब्तिला हो जाओगे और अल्लाह करे कि तुम इन चीज़ों को न पाओ (तो तरह़-तरह़ की मुसीबतों और बलाओं में डाले जाओगे।)

(1) जिस क़ौम में ख़ुल्लम खुल्ला बेह़याई का रिवाज हो जाएगा उन लोगों में ताऊन फैलेगा और ऐसे-ऐसे मर्ज़ में मुब्तिला होंगे जो उन के पहले नहीं था।

(2) और जो लोग नाप-तौल में कमी करेंगे उन को क़ह़त (सूखा) के ज़रिये पकड़ा जाएगा और सख़्त मेह़नत और बादशाह के ज़ुल्म में मुब्तिला होंगे।

(3) और जो लोग अपने मालों की ज़कात को रोक लेंगे उन से बारिश रोक ली जाएगी और अगर जानवर न हों तो (बिल्कुल ही) बारिश न हो।

(4) और जो लोग अल्लाह के अ़हद को और उस के रसूल के अ़हद को तोड़ देंगे उन के ऊपर दुश्मन मुसल्लत कर दिया जाएगा वह उन के कुछ मालों को ले लेगा।

(5) और जिस क़ौम के शासक अल्लाह की किताब के ज़रिये फ़ैसला न करेंगे और अल्लाह ने जो चीज़ नाज़िल फ़रमाई उस को अख़्तियार न करेंगे तो अल्लाह तआ़ला उन के आपस में ऐसी मुख़ालिफ़त (विरोध) पैदा फ़रमा देगा जिस की वजह से आपस में लड़ते रहेंगे।

(रवाहुल् इब्ने माजा फ़ी बाब अल् याकूब पेज नं० 112)

33 وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝

तीसरा हुक्म यह फ़रमाया कि अल्लाह ने जिस जान को क़त्ल करने से मना फ़रमाया है, उसे क़त्ल मत करो। जिस जान का क़त्ल करना शरीअ़ते इस्लामिया में ह़लाल नहीं है उस का क़त्ल कर देना कबीरा गुनाहों में से है और इस बारे में सख़्त वअ़ीदें आई हैं। क़त्ल की बाज़ सूरतों में क़िसास (बदला) और बाज़ सूरतों में दियत (माल) है। इस की तफ़्सीलात सूरः बक़रः के इक्कीस्वें रुकूअ़ में और सूरः निसा के तेरहवें रुकूअ़ में और सूरः माइदा के सात्वें रुकूअ़ में गुज़र चुकी हैं।

इर्शाद फ़रमाया وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ

(और जो शख़्स ज़ुल्मन क़त्ल किया गया उस के वली के लिए हम ने अख़्तियार दिया है, सो वह क़त्ल करने में ह़द से आगे न बढ़े) किसी के क़त्ल कर देने पर जो अ़ज़ाब है वह आख़िरत से सम्बन्धित है और दुनिया में जो इस के बारे में शरई़ हुक्म हैं उन के मुताबिक़ मक़्तूल के वली को यह अख़्तियार दिया गया है कि वह शरई़ उसूल के मुताबिक़ क़त्ल का सुबूत हो जाने पर उन्ही ह़दों पर रहे जो ह़दें उस के लिए मुक़र्रर की गई हैं।

जैसे- क़त्ल ख़ता (ग़ल्ती से क़त्ल) में दियत का हुक्म दिया गया है कि इस में क़ातिल को क़त्ल

न करे और क़त्ल अ़मद (जानबूझकर) में शरीअ़त ने क़िसास लेने का अख़्तियार दिया है उसे क़ातिल तक ही महदूद रखा जाए। इन्तिक़ाम के जोश में क़ातिल के सिवा किसी दूसरे शख़्स को उस के रिश्तेदारों में से क़त्ल न कर दे, क़ातिल के क़त्ल करने में ज़्यादती न करे। जैसे- उस के हाथ पांव, नाक कान न काटे, जिसे मुस्ला (अंग काटना) करना कहते हैं।

إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا ۝ (बिलाशुब्हा मक़्तूल के वली की मदद होगी) यानी वली मक़्तूल शरई़ ह़द के अन्दर रहते हुए क़िसास लेगा तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उस की मदद की जाएगी। यानी शरीअ़ते इस्लामिया इस की मददगार होगी और अहले ईमान शासक क़िसास (बदला) दिलाने के लिए राह हमवार करेंगे उसे क़िसास (बदला) दिलाएँगे।

इस का दूसरा रुख़ भी समझ लेना चाहिए और वह यह कि अगर वली मक़्तूल ह़द से आगे बढ़ गया तो अब यह ज़ालिम होगा और मामला इस के उल्टा हो जाएगा और शरई़ क़ानून में इस का मुवाख़िज़ा (पकड़) होगा।

34 وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۖ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۝

चौथा हुक्म यह फ़रमाया कि यतीम के माल के क़रीब भी न जाओ, मगर ऐसे तरीक़े पर जो मुस्तह़सन (बेहतर) हो यहाँ तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए। (इस बारे में सूरः निसा की तफ़्सीर में तफ़्सील से लिखा जा चुका है।)

पाँचवा हुक्म यह दिया कि अ़हद को पूरा करो और साथ में यह भी फ़रमाया कि إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۝ (यानी अ़हद की बाज़पुर्स होगी) बहुत से लोग अ़हद तो कर लेते हैं, लेकिन इस की ज़िम्मेदारी महसूस नहीं करते और जानबूझकर अ़हद की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हैं।

वक़्ती तौर पर वादा कर लेते हैं और मुआ़हिदा (Contract) करते वक़्त भी दिल में अ़हद (प्रतिज्ञा) तोड़ने का इरादा किये हुए होते हैं। इस तरह़ के लोगों को तम्बीह फ़रमाई गई है कि अ़हद के बारे में पूछा जाएगा। कुर्आन मजीद की बहुत सी सूरतों में वादों के पूरा करने का हुक्म दिया गया है।

सूरः बक़रः की (आयत नं० 177) وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا ۖ और सूरः माइदा की पहली आयत يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۚ और सूरः नह़ल की (आयत नं० 91) وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ की तफ़्सीर देख सकते हैं।

क़त्ल की इस तरह़ सूरतें मुम्किन हैं-

(1) जिहाद और क़िताल के ज़रिये मारे जाने वाले कुफ़्फ़ार और उन के साथी।
(2) हुकूमते इस्लामी के ख़िलाफ़ बग़ावत करने वाले का क़त्ल।
(3) क़िसास यानी क़त्ल के बदले क़त्ल।
(4) मुरतद हो जाने वाले का क़त्ल।
(5) शादीशुदा ज़ानी को रज्म कर के मौत के घाट उतारना।

यह क़त्ल केवल इस्लामी हुकूमत के ज़रिये फ़ैसला होने के बाद ही हो सकता हैं। किसी व्यक्ति को अपने तौर पर इजाज़त नहीं कि खुद हद (सज़ा) लागू कर दे। यहाँ तक कि कोई शख़्स खुद अपनी जान का मालिक भी नहीं कि खुदकुशी (आत्महत्या) कर ले। अलबत्ता चोरी डाका या क़ातिलाना हमले का मुजरिम या इज़्ज़त व आबरू पर हमला करने वाला दूसरे फ़रीक़ के हाथों जुर्म करते वक़्त बचाव की कोशिश में मारा जाए तो कोई हर्ज नहीं। (देखें सूरः निसा आयत नं० 2,3 और सूरः अनआम आयत नं० 152)

35 وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝

"हुक्म यह दिया गया है कि नापतौल पूरी किया करो और ठीक तराज़ू से तौला करो"।

आख़िर में फ़रमाया ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا कि अहकाम पर अमल करना बेहतर है और अन्जाम के एतिबार से अच्छी चीज़ है।

इस आयत में जो अहकाम ज़िक्र हुए वह सूरः अनआम के रुकूअ नम्बर 14 में भी ज़िक्र फ़रमाए गये हैं, वहाँ देखा जा सकता है।

36 وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ۝

ज़मीन पर इतराना

यह तीन आयात हैं। पहली आयत में इस बात पर तम्बीह फ़रमाई गई है कि जिस बात का इल्म न हो उस के पीछे न पड़ो, यह बात बहुत से आमाल को शामिल है। इस नसीहत पर ध्यान न देने की वजह से जो आमाल होते हैं, समाज में और जो बदमज़गी पैदा होती है उस से एक दूसरे की आबरुरेज़ी हो जाती है यहाँ उन सब की मनाही आ गई।

ग़लत हदीसें बयान करना, खुद हदीसें गढ़ना, झूठे रावियों से हदीसें लेना और उन्हें आगे बढ़ाना किसी भी शख़्स के बारे में केवल अटकल से या सुनी सुनाई बातों की बुनियाद पर कुछ कह देना, तोहमत रख देना यह सब ऐसी चीज़ें हैं जो दीनी एतिबार से गुमराही का ज़रिया बनती हैं और दुनियावी एतिबार से आपस में बुग्ज़ (नफ़रत) और दुश्मनी फैलाती हैं, सिर्फ़ गुमान से अटकल पच्चू कोई बात साबित नहीं होती।

सूरः नज्म में फ़रमाया اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ (बाज़ गुमान गुनाह होते हैं।)

और ग़ीबत करना तो इस बात का यक़ीन होते हुए भी हलाल नहीं है कि फ़लाँ शख़्स ने फ़लाँ गुनाह किया है या फ़लाँ शख़्स में फ़लाँ ऐब है, फिर भला अटकल से या खुद से बनाकर किसी के बारे में यूँ कह देना कि उस ने यूँ किया या कहा है कैसे हलाल हो सकता है? 'साहिबे मुआलिमुत्तन्ज़ील' लिखते हैं-

قال قتادہ لاتقل رایت ولم ترسمعت ولم تسمعہ وعلمت ولم تعلمہ' وقال مجاھد لاترم احدا بما لیس لک بہ علم' قال القتیبی' لاتتبعہ بالحدس والظن وھوفی اللغۃ اتباع الاثر یقال' قفوت فلانا اقفوہ وقفیتہ واقفیتہ اذا اتبعت اثر

फिर इर्शाद फ़रमाया إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا

कान-आँख और दिल इन सब के बारे में पूछ होगी, अल्लाह तआ़ला ने जो यह अअज़ा (अंग) दिये हैं वह यूँ ही नहीं दिये कि उन को जैसे चाहें और जहाँ चाहें इस्तेमाल करें। जिस ज़ात पाक ने अ़ता फ़रमाए हैं उस ने इन सब के इस्तेमाल करने के मौक़े और आ़माल भी बताए हैं, जिन से इन को महफ़ूज़ रखना ज़रूरी है।

कहाँ देखे और क्या बात सुने और अपनी ग़ौर व फ़िक्र की ताक़त को कहाँ ख़र्च करें? इन सब की तफ़्सीलात (व्याख्या) अह़ादीस में मौजूद हैं, किसी ने चोरी कर ली किसी को ज़ुल्मन मारा, ह़िसाब ग़लत लिखकर या झूठा बिल बनाकर ख़यानत कर दी या किसी ऐसे मर्द या किसी ऐसी औ़रत से मुसाफ़ह़ कर लिया जिस से मुसाफ़ह़ करना जायज़ नहीं तो उस ने अपने हाथ-पांव को ग़ैर शरई़ उमूर में इस्तेमाल किया।

बाएँ हाथ से खाया और दाहिने हाथ से इस्तिन्जा (पेशाब पाखाना के बाद धोना) किया यह भी हाथ का ग़लत इस्तेमाल है, ज़बान से कोई ग़लत बात की या कुफ़्र का कलिमा कहा, किसी की ग़ीबत की, किसी पर तोहमत लगाई, झूठ बोला यह सब ज़बान का ग़लत इस्तेमाल हुआ।

किसी शख़्स ने गाना सुना या दूसरे के राज़ की बातों की तरफ़ कान लगाया, ग़ीबतें सुनता रहा यह कान का ग़लत इस्तेमाल हुआ, किसी शख़्स ने ऐसी जगह नज़र डाली जहाँ देखना नज़र डालना मना था, बद्नज़री से किसी को देख लिया, किसी के सतर पर नज़र डाली, आँखों को किसी भी तरह़ गुनाहों में इस्तेमाल किया तो यह सब आँखों का ग़लत जगह इस्तेमाल होगा जहाँ इस्तेमाल करना मना था, कोई शख़्स गुनाह के लिए कहीं चल कर गया तो उस ने अपने पांव का ग़लत इस्तेमाल किया।

अंगों का ज़िना-

ह़दीस शरीफ़ में है कि आँखें ज़िना करती हैं और उन का देखना ज़िना करना है और कान भी ज़िना करते हैं उन का ज़िना सुनना है और ज़बान भी ज़िना करती है उस का ज़िना बात करना है और हाथ भी ज़िना करते हैं उस का ज़िना पकड़ना है और पांव भी ज़िना करते हैं उस का ज़िना चल कर जाना है और दिल ख़्वाहिश करता है और गुनाहों की आरज़ू करता है, उस की शर्मगाह इस की तस्दीक़ करती या झुठलाती है यानी मौक़ा लग जाता है तो शर्मगाह गुनाहों में इस्तेमाल हो जाती है वरना शर्मगाह का ज़िना हो नहीं पाता, लेकिन इस से पहले दूसरे अअ़ज़ा ज़िना कर चुके होते हैं और उन का गुनाह अंगों के मालिक के ज़िम्मे पड़ जाता है क्योंकि उन्हें इसी ने इस्तेमाल किया है। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ 22)**

'ह़ज़रत उ़बादह बिन सामित' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम मुझे छः चीज़ों की ज़मानत दे दो, तुम्हारे लिए जन्नत का मैं ज़िम्मेदार बन जाता हूँ।

(1) जब बात करो तो सच बोलो।

(2) वादा करो तो पूरा करो।

(3) जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाए तो उसे अदा करो।

(4) अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो।

(5) अपनी आँखों को नीची रखो।

(6) अपने हाथों को (ग़लत इस्तेमाल से) रोके रखो। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 415)**

सूरः मुल्क **(आयत नं० 23)** में फ़रमायाः-

قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝

"आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह वही है जिस ने तुम्हें पैदा फ़रमाया और तुम्हारे लिए कान, आँखें बनाईं और दिल अ़ता फ़रमाए (मगर) तुम कम शुक्र अदा करते हो।"

यह दिल ही तो है जिस के ज़रिये जिस्म में ख़ून जारी है और सोच समझ होश व ह़वास का ज़रिया है, दिल की जो नेअ़मतें अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमाई हैं उस को बेजा इस्तेमाल करना ग़ैर शरई़ कामों में उस की क़ुव्वतों को ख़र्च करना गुनाहों के लिए तद्बीरें करना यह सब दिल व दिमाग़ का ग़लत इस्तेमाल है, अपनी ज़िन्दगी में इन्सान आज़ाद नहीं। इन सब अअ़ज़ा (अंगों) के बारे में क़ियामत के दिन पूछ-गछ होगी कि उन को कहाँ लगाया और किन कामों में इस्तेमाल किया?

यह अअ़ज़ा (अंग) यहाँ दुनिया में तो फ़रमाँबरदार हैं, लेकिन क़ियामत के दिन मुख़ालिफ़ गवाही देंगे।

सूरः नूर **(आयत नं० 22)** में फ़रमाया يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

(जिस दिन उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पांव उन के ख़िलाफ़ इस अ़मल की गवाही देंगे जो वह किया करते थे।)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक सह़ाबी को अअ़ज़ा की ह़िफ़ाज़त के लिए यह दुआ़ बताई।

اللهم انی اعوذبك من شر سمعی وشر بصری وشر لسانی وشر قلبی وشری منیی

(ऐ अल्लाह! मैं आप से अपने कानों और अपनी आँखों और अपनी ज़बान और अपने दिल और अपनी मनी के शर से पनाह माँगता हूँ।)

कोई शख़्स यह ख़याल न करे कि यह मेरे अअ़ज़ा (अंग) हैं जैसे चाहूँ इस्तेमाल करुँ। इन्सान ख़ुद अपना नहीं है, इन्सान और उस के अअ़ज़ा (अंग) सब अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ और उस के अधीन हैं। आख़िरत में कट हुज्जती काम न देगी, आ़माल नामा लिखा हुआ सामने होगा, लिहाज़ा अपने नफ़्स दिल और अअ़ज़ा (अंगों) को पाक-साफ़ लेकर जाओ। यह सब अअ़ज़ा अल्लाह तआ़ला का अ़तिया (दिया हुआ) हैं इन के बारे में पूछ-गछ होगी।

37 وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝

दूसरी आयत में इतरा कर और अकड़ कर चलने की मनाही फ़रमाई और फ़रमायाः-

اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا (कि तू ज़मीन में इतराता हुआ मत चल) وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا

बेशक तू ज़मीन को नहीं फाड़ सकता और पहाड़ों की लम्बाई को नहीं पहुँच सकता।

यानी ऐसी चाल न चल जिस से घमण्ड और ग़ुरूर ज़ाहिर हो, घमण्ड की चाल चलने वाला समझता

है कि मैं भी कुछ हूँ ह़ालांकि अल्लाह की मख़्लूक़ में इस से बड़ी-बड़ी चीज़ें मौजूद हैं। ज़मीन ही को देख ले जिस पर इन्सान बसते हैं, इन्सान उसी को नहीं फाड़ सकता और पहाड़ों को देख ले कि वह इन्सान के क़द से बहुत ऊँचे-ऊँचे हैं, इतरा कर चलने वाला ज़रा अपनी ज़ात को तो देखे पहाड़ों की बुलन्दी तक तो पहुँच नहीं सकता फिर क्यों घमण्ड करता है और क्या शान दिखाता है और अकड़ता हुआ चलता है? सूरः लुक़्मान (आयत नं० 18) में फ़रमायाः-

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿١٨﴾

"बिलाशुब्हा अल्लाह हर उस शख़्स को दोस्त नहीं रखता जो अपने को बड़ा समझने वाला फ़ख़्र करने वाला हो"।

घमण्ड इन्सान के लिए मुनासिब नहीं, जो ज़लील पानी से पैदा हुआ जिस ने माँ के पेट में ह़ैज़ के ख़ून से ग़िज़ा पाई जो आख़िर में मुर्दा लाश होकर रह जाएगा उसे क्या हुआ है कि वह घमण्ड करे, इतराता हुआ चले और अल्लाह की मख़्लूक़ को ह़क़ीर (नीचा) जाने? रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया एक शख़्स दो चादरें पहने हुए घमण्ड के अन्दाज़ में चल रहा था, ख़ुद पसन्दी अख़्तियार किये हुए था, अल्लाह ने उसे ज़मीन में धंसा दिया वह क़ियामत तक ज़मीन में धँसता चला जाएगा।

(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 490 व पेज नं० 841 किताबुल् लिबास वल् ज़ीना)

इन्सान के लिए तवाज़ोअ़ ही बेहतर है, घमण्ड ह़राम है और तवाज़ोअ़ (इन्किसारी) मह़बूब चीज़ है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स तवाज़ोअ़ अख़्तियार करेगा अल्लाह उसे बुलन्द फ़रमा देगा, वह अपने नफ़्स पर झूठा होगा और लोगों की नज़रों में बड़ा होगा और जो शख़्स घमण्डी होगा अल्लाह उसे गिरा देगा, वह लोगों की नज़र में छोटा होगा और अपने नफ़्स में बड़ा होगा और लोगों के नज़्दीक कुत्ते और ख़िन्ज़ीर से भी ज़्यादा ज़लील होगा।

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 434)

एक ह़दीस में इर्शाद है कि घमण्ड करने वालों का ह़श्र क़ियामत के दिन इस तरह़ होगा कि सूरतें इन्सानों जैसी होंगी और जिस्म चीटियों के बराबर छोटे-छोटे होंगे। उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी उन्हें दोज़ख़ के जेल खाने की तरफ़ हंकाया जाएगा उन लोगों पर अंगारे जलाने वाली आग चढ़ी हुई होगी, उन्हें दोज़ख़ियों के जिस्म का निचोड़ पिलाया जाएगा। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 433)**

ह़ज़रत अ़याज़ (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी तरफ़ वह़्य भेजी है कि इन्किसारी अपनाऊँ ताकि कोई शख़्स किसी के मुक़ाबिले में फ़ख़्र न करे और कोई शख़्स किसी पर ज़ुल्म न करे। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 417 मुस्लिम)**

38 كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿٣٨﴾

तीसरी आयत में इन बुराईयों की बुराई बयान करते हुए इर्शाद फ़रमायाः-

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿٣٨﴾ (यह सब बुरे काम तेरे रब के नज़्दीक नापसन्दीदा हैं।)

'साह़िबे मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' फ़रमाते हैं कि وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ

यहाँ तक जो ख़ैर की चीज़ें ज़िक्र हुईं उन को छोड़ना और जिन बातों से बचने का हुक्म फ़रमाया, उन को करना बुरी बाते हैं, तुम्हारे रब के नज़्दीक मकरुह व नापसन्दीदा हैं। जिस ने वजूद बख़्शा परवरिश के अस्बाब पैदा फ़रमाए जो आ़माल उस के नज़्दीक नापसन्दीदा हैं, उन को अख़्तियार करना अ़क़्ली तौर पर भी बुरे हैं, जो रब को रब नहीं मानते।

39 ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝

इस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मुख़ातब (सम्बोधित) करके फ़रमाया गया है कि पिछली आयतों में जिन अच्छे कामों का हुक्म दिया गया और बुरी सिफ़ात से मना किया गया है, यह सारी बातें अल्लाह ने आप को वह्य के ज़रिये बता दी थीं।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने शिर्क से मना फ़रमाया है। चूँकि शुरुआ़त तौ़हीद से हुई थी और अब बात इसी पर ख़त्म की जा रही है। यह एह़सास दिलाने के लिए तमाम ह़िक्मतों की अस्ल और बुनियाद तौ़हीद है और यही वजह है कि मुश्रिक को औंधे मुँह जहन्नम में डाल दिया जाएगा, उस वक़्त वह अपने आप को मलामत करता रहेगा, अल्लाह तआ़ला और उस की तमाम मख़्लूक़ात भी उसे मलामत करेगी और वह अल्लाह की रह़मत से हमेशा के लिए दूर कर दिया जाएगा।

40 اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنَاثًا ۭ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ۝

इस आयते करीमा में उन मुश्रिकीने अ़रब की तर्दीद है, जो फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ बताते और उन की अ़िबादत करते थे, ह़ालाँकि वह तो अल्लाह के बन्दे हैं जिन्हें अल्लाह ने अपनी तस्बीह़ व तम्ह़ीद के लिए पैदा किया है। अल्लाह ने फ़रमाया कि क्या उस ने तुम्हारे लिए सबसे अच्छी औलाद यानी लड़का पसन्द किया है और अपने लिए कमतर औलाद यानी बेटियाँ पसन्द की हैं जिन्हें तुम अपने लिए गवारा नहीं करते हो बल्कि ज़िन्दा गाड़ देते हो? यह कितनी अक़्ल व ह़िक्मत के ख़िलाफ़ बात है कि आक़ा अपने ग़ुलामों को तो सब से अच्छी चीज़ दे और अपने लिए घटिया चीज़ पसन्द करे।

ह़क़ीक़त यह है कि बन्दों के मुँह से अपने ख़ालिक़ व मालिक के बारे में यह बात बहुत ही बुरी है कि एक तो अल्लाह के लिए औलाद साबित करते हैं और वह भी ऐसी औलाद जिन्हें वह अपने लिए पसन्द नहीं करते हैं।

41 وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ۭ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ۝

अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आने करीम में बहुत से दलायल और मिसालों के ज़रिये ह़क़ बात को बयान कर दिया है ताकि लोग नसीह़त ह़ासिल करें, अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ हों और शिर्क की तमाम क़िस्मों से उस के पाक होने का अ़क़ीदा रखें, लेकिन काफ़िरों का ह़ाल यह है कि क़ुर्आन सुन कर बिदकते और ह़क़ से एराज़ करते हैं।

42 قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِي الْعَرْشِ سَبِيْلًا ۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़िताब कर के कहा जा रहा है कि आप मुश्रिकीन (शिर्क करने वालों) से कह दीजिए कि उन के कहने के मुताबिक़ अगर अल्लाह के अ़लावा कई और उपास्य होते जो उन्हें अल्लाह से क़रीब करते हैं तो वह मअ़बूद (उपास्य) भी अ़र्श वाले अल्लाह को राज़ी करने में लगे होते, जो सब से बेनियाज़ है और सब उस के मुहताज हैं और अगर ऐसा होता तो वह मअ़बूद (उपास्य) न होते। इसलिए मालूम हुआ कि आसमान व ज़मीन में उस के अ़लावा कोई मअ़बूद नहीं है जिस की बन्दगी की जाए और जो अल्लाह और बन्दों के दर्मियान वास्ता बने।

43 سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝

इस आयत में फ़रमाया गया है कि वह तमाम कमज़ोरियों से पाक है और मुश्रिकीन जो कुछ उस अल्लाह के बारे में कहते हैं, उस से वह बहुत बुलन्द है।

44 تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۭ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝

इस आयत में फ़रमाया कि तमाम आसमान व ज़मीन और उन में पाये जाने वाली मख़्लूक़ात अल्लाह की पाकी बयान करती हैं और उन तमाम कमज़ोरियों से उसे बुलन्द समझती हैं जिन्हें मुश्रिकीन उस की तरफ़ जोड़ते हैं और यह सब इस बात की गवाही देती हैं कि वही अकेला उपास्य है, उस का कोई साझीदार नहीं।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हर चीज़ अल्लाह की पाकी बयान करती है। पशु-पक्षी, नबातात (पेड़-पौधे) और जमादात (बेजान चीज़ें) सभी उस की तस्बीह़ बयान करते हैं, लेकिन लोग उन की तस्बीह़ात को नहीं समझते हैं।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने अपनी तफ़्सीर में और 'राग़िब अस्फ़हानी' ने अपनी किताब 'अल् मुफ़रदात' में इसी राय को माना है।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह बड़ा ही ह़लीम (संयमी) है, कुफ़्र के बावजूद अ़ज़ाब नाज़िल करने में जल्दी नहीं करता और वह बड़ा ही माफ़ करने वाला है कि जो उस के पास आ जाता है और अपने गुनाहों की माफ़ी माँगता है, उसे वह माफ़ कर देता है।

आयत नं० 45 से 58 तक

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿٤٥﴾ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ
وَقْرًا ۚ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ﴿٤٦﴾ نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ
يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٤٧﴾ انظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٤٨﴾ وَقَالُوا أَإِذَا كُنَّا
عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٤٩﴾ قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ﴿٥٠﴾ أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ ۚ فَسَيَقُولُونَ مَن يُعِيدُنَا ۖ
قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هُوَ ۖ قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَرِيبًا ﴿٥١﴾ يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ
بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٥٢﴾ وَقُل لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنزَغُ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنسَانِ
عَدُوًّا مُّبِينًا ﴿٥٣﴾ رَّبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۖ إِن يَشَأْ يَرْحَمْكُمْ أَوْ إِن يَشَأْ يُعَذِّبْكُمْ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿٥٤﴾ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَن فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَىٰ بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا ﴿٥٥﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ
عَنكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ﴿٥٦﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۚ إِنَّ
عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ﴿٥٧﴾ وَإِن مِّن قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾

अनुवाद-

(45) और जब आप कुर्आन पढ़ते हैं, तो 'हम' आप के और उन लोगों के बीच, जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, एक पर्दा की आड़ कर देते हैं; (46) और उनके दिलों पर पर्दा डाल देते हैं कि उसे समझ न सकें; और उनके कानों में बोझ पैदा कर देते हैं, और जब आप कुर्आन में अपने 'एक रब' का ज़िक्र करते हैं, तो वे पीठ फेर कर भाग खड़े होते हैं। (47) 'हम' जानते हैं, जब यह आप की ओर कान लगाते हैं, कि यह किस नियत से सुनते हैं; और जब यह काना फूसी करते हैं, (अर्थात) जब ज़ालिम कहते हैं, "तुम तो एक ऐसे व्यक्ति के पीछे चल रहे हो जिस पर जादू किया गया है"। (48) देखो! यह कैसी मिसालें तुम्हारे बारे में देते हैं, ये तो भटक गये हैं, अब कोई राह नहीं पा सकते। (49) और कहते हैं, "जब हम' हड्डियाँ और चूर-चूर हो जाएंगे, तो क्या नए सिरे से पैदा हो कर उठेंगे?" (50) कह दीजिए, ''तुम पत्थर या लोहा हो जाओ;'' (51) या कोई और चीज़, जो तुम्हारे नज़दीक इससे भी ज़्यादा (कठोर) हो,'' वे कहेंगे, "कौन हमें दोबारा ज़िन्दा करेगा?" कह दीजिए, 'वही' जिसने पहली बार हमें पैदा किया,'' फिर वे तुम्हारे आगे सर हिला कर पूछेंगे, ''अच्छा तो वह कब होगा; कह दीजिए, "उम्मीद है कि जल्द ही होगा"। (52) जिस दिन 'वह' तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उसकी तअ़रीफ़ के साथ जवाब दोगे, और यह ख़याल करोगे कि बस थोड़ी ही देर (दुनिया में) रहे। (53) और मेरे बन्दों से कह दीजिए, (लोगों से) "ऐसी बातें कहा करें जो बहुत पसंदीदा हों, क्योंकि शैतान लोगों के बीच फ़साद डलवा देता है, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है" (54) तुम्हारा 'रब' तुम को खूब जानता है, 'वह' अगर चाहे तो तुम पर रहम करे, और 'वही' अगर चाहे तो तुमको अ़ज़ाब देने लगे,- और 'हमने' तुमको उनका ज़िम्मेदार बना कर नहीं भेजा। (55) और तुम्हारा 'रब' उनको खूब जानता है, जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और 'हमने' कुछ नबियों को कुछ पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी थी, और दाऊद को ज़बूर दी थी। (56) कह दीजिए, "पुकार कर देखो! उनको जिनको तुमने 'उसके' सिवा

(मअ़बूद) बना रखे हैं, न तुम्हारी कोई तकलीफ़ दूर कर सकते हैं, और न तुम्हारी ह़ालत बदल सकते हैं"। (57) यह लोग जिनको पुकारते हैं वे ख़ुद अपने रब' के यहाँ ज़रिया ढूँढते हैं, कि कौन उनमें (अल्लाह का) ज़्यादा से ज़्यादा क़रीबी हो जाए; और 'उसके' रह़मत की उम्मीद लगाते हैं और उसके अ़ज़ाब से डरते हैं; बेशक तुम्हारे 'रब' का अ़ज़ाब है ही डरने की चीज़। (58) और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसको 'हम' क़ियामत से पहले हलाक न कर दें, या सख़्त अ़ज़ाब न दें; यह बात किताब में लिखी जा चुकी है।

आयत नं० 45 से 58 तक की व्याख्या

45 وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿٤٥﴾

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि नबी करीम (सल्ल०) जब कुर्आन करीम की तिलावत करते तो जो मुश्रिकीन क़ियामत के दिन पर ईमान नहीं रखते वह उस से कुछ भी फ़ायदा ह़ासिल नहीं करते हैं। उन के कुफ़्र व हठधर्मी और कुर्आन से बेपरवाही की वजह से अल्लाह तआ़ला रसूलुल्लाह (सल्ल०) और उन के दर्मियान एक पर्दा क़ायम कर देता है, जिस की वजह से वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) को नहीं देख पाते हैं।

'ह़ाफ़िज़ सियोती' ने लिखा है कि यह आयत उन मुश्रिकीन के बारे में नाज़िल हुई थी जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को क़त्ल करना चाहते थे।

जैसे- 'अबू जेहल' और 'अबू लहब' की बीवी 'उम्मे जमील' वग़ैरह और यहाँ कुर्आन से मुराद तो केवल कुर्आन है या सूरः नह़ल, सूरः अल् कहफ़ और सूरः जासिया की मशहूर तीन आयतें:-

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ (सूरः नह़ल-108)

جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ (सूरः अल् कहफ़-57)

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ (सूरः जासिया-23)

कुछ लोगों ने लिखा है कि इन आयतों की वजह से अल्लाह तआ़ला रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मुश्रिकीन की निगाहों से ओझल कर देते थे।

'कुर्तुबी' ने इन आयतों के साथ सूरः यासीन की के शुरु की आयतों का فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ तक कहा है, इसलिए कि रिवायात से साबित है कि हिजरत की रात अपने घर से निकलते वक़्त आप इन्हीं आयतों की तिलावत करते रहे और दुश्मनों के सरों पर मिट्टी डालते हुए निकल गए और किसी ने आप को नहीं देखा।

46 وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ﴿٤٦﴾

और अल्लाह तआ़ला काफ़िरों के दिलों पर मोटा पर्दा डाल देता है, ताकि वह कुर्आन को न समझ पाएँ और उन के कानों को बहरा कर देता है ताकि वह कुर्आन को न सुन पाएँ। काफ़िरों की एक बद्तरीन आ़दत यह भी थी कि वह अल्लाह तआ़ला के साथ अपने बुतों का ज़िक्र भी सुनना चाहते थे, इसीलिए मजलिस में सिर्फ़ अल्लाह का नाम लिया जाता तो वह उसे पसन्द नहीं करते और वहाँ से चल देते थे।

आयत के दूसरे हिस्से में उन की यही बात बयान की गई है।

दिल के ग़िलाफ़ में बन्द होना और कानों में डाट का लगा होना ऐसी चीज़ें हैं जिसे क़ुरैश-ए-मक्का ख़ुद फ़ख़्र से इस का दावा करते थे। उन के इस बुरा भला कहने की वजह से उन की हालत यह हुई। उन आमाल की निस्बत अल्लाह की ओर इसी वजह से हो सकती है कि वह सब अल्लाह ही की मख़्लूक़ हैं, हिदायत और गुमराही का मर्कज़ दिल है या दिमाग़।

क़ुर्आन करीम ने दिल को ही मर्कज़ क़रार दिया है, सोच व फ़िक्र करने वाले मराकिज़ को भी दिल ही कन्ट्रोल करता है।

47-48 نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝

मुश्रिकीन अगर कभी क़ुर्आन सुनते भी हैं तो आपस में बैठ कर उस का मज़ाक़ उड़ाने के लिए, उन का मक़्सद इल्म और हक़ को पाना नहीं होता है। वह एक दूसरे से कहते हैं कि मुहम्मद को जादू कर दिया गया है, जिस की वजह से उसे जुनून हो गया है और बहकी-बहकी बातें करता है।

अल्लाह तआ़ला ने उन के इस क़ौल पर हैरत व आश्चर्य करते हुए फ़रमाया कि आप इन ज़ालिमों को देखिए कि यह आप को शायर, जादूगर और दीवाना कहते हैं और राहे हक़ से बिल्कुल अलग हो गए हैं। यह लोग आप में कोई ऐसा ऐब नहीं निकाल पा रहे हैं, जिसे दुनिया मान ले।

49-52 وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ۝ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ۝ اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ۭ قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ۭ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ۝ يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۝

मुश्रिकीने मक्का कहते थे कि आदमी जब मर जाता है तो उस की हड्डियाँ गल सड़ कर मिट्टी में मिल जाती हैं। यह बात अ़क़्ल से दूर है कि पिछले जिस्म के अंग दोबारा जमा हो जाएँ और उन में ज़िन्दगी वापस आ जाए? अल्लाह तआ़ला ने उन के जवाब में फ़रमाया कि मुर्दा शरीर को दोबारा बनाकर उस में ज़िन्दगी लौटा देना हमारे लिए बहुत ही आसान है, चाहे उस शरीर से ज़िन्दगी के आसार पत्थर या लोहे की तरह ही क्यों न पैदा हो गये हों या किसी और चीज़ की तरह जिस का ज़िन्दा रहना तुम्हारे नज़्दीक नामुम्किन हो, अल्लाह तआ़ला जब चाहेगा उसे ज़िन्दा कर देगा और कोई चीज़ उस के लिए रुकावट नहीं बनेगी।

मुश्रिकीन इस जवाब पर कोई एतिराज़ न कर सके तो कहने लगे कि हमें कौन ज़िन्दा करेगा? अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से फ़रमाया, आप कह दीजिए कि जिस ने तुम्हें पहली बार पैदा किया है वह यक़ीनन दोबारा पैदा करने पर क़ादिर है। इस जवाब पर कुफ़्फ़ार हैरत व तअ़ज्जुब और मज़ाकिया अन्दाज़ में अपना सर हिलाने लगे कि ऐसा कब होगा? तो अल्लाह तआ़ला ने जवाब दिया कि वह दिन क़रीब है जब वह तुम्हें बुलाएगा तो तुम लोग तुरन्त इस का जवाब दोगे यानी मुर्दों को ज़िन्दा

करने में अल्लाह को देर नहीं लगेगी।

कुछ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि अल्लाह तआ़ला मुर्दों को आवाज़ देगा तो वह उठ कर बैठ जाएँगें। जैसा कि सूरः क़ाफ़ आयत नं० (41) में आया है يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ कि "जिस दिन पुकारने वाला क़रीब से पुकारेगा" और मुर्दे जब ज़िन्दा होंगे तो अल्लाह की तअ़रीफ़ और उस की पाकी बयान कर रहे होंगे और मारे दहशत के क़ब्रों के रहने की मुद्दत या दुनियावी ज़िन्दग़ी की मुद्दत को बहुत कम समझेंगे।

53-54 وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿٥٣﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۭ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ۭ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿٥٤﴾

मुसलमानों का मुश्रिकीने मक्का के साथ कभी-कभी तौहीद व शिर्क और रिसालत व आख़िरत पर बात होते-होते बढ़ जाती तो मुसलमान कभी-कभी कोई सख़्त लफ़्ज़ बोल जाते। जैसे- जहन्नम की धमकी दे देते, इस बात-चीत से काफ़िरों की दुश्मनी भड़क उठती। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब कर के फ़रमाया कि आप मुसलमानों को नसीहत करें कि वह काफ़िरों को दअ़वते इस्लाम देते वक़्त बात-चीत का अन्दाज़ अच्छा रखें और सख़्त बात कहने से परहेज़ करें क्योंकि शैतान तो घात लगाए बैठा रहता है कि कब उसे लोगों के दर्मियान बुराई फैलाने का मौक़ा मिल जाए।

इस के बाद मुश्रिकीने कुरैश को ख़िताब कर के फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारी हक़ीक़त से ख़ूब वाक़िफ़ है। अगर चाहेगा तो तुम पर रहम फ़रमाएगा और तुम इस्लाम में आकर उस की जन्नत के हक़्दार बन जाओगे और अगर वह चाहेगा तो तुम्हें ईमान से महरूम कर देगा, तुम्हारी मौत शिर्क पर होगी और तुम क़ियामत के दिन अ़ज़ाब के हक़्दार होंगे।

आयत के आख़िर में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़िताब कर के अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने आप को काफ़िरों की हिदायत का ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा कि आप उन्हें ईमान लाने पर मजबूर करें, आप तो हमारे रसूल हैं, पैग़ाम पहुँचा देने के बाद आप की ज़िम्मेदारी पूरी हो जाती है।

55 وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰي بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿٥٥﴾

आसमानों और ज़मीन में जितनी चीज़ें हैं अल्लाह तआ़ला उन्हें ख़ूब जानता है, वह उन के हालात और ज़रूरतों से अच्छी तरह वाक़िफ़ है कि कौन नेक है और कौन बद्बख़्त, कौन ईमान को अख़्तियार करेगा और कौन कुफ़्र को, यह सारी बातें अल्लाह तआ़ला के लिए बिल्कुल साफ़ हैं। इसलिए तुम लोग काफ़िरों के ईमान न लाने का ग़म न करो और जो तुम्हारे अख़्तियार में नहीं हैं उस के लिए दुखी न हो। इस्लाम की दअ़वत के सिल्सिले में तुम पर जो ज़िम्मेदारी दी गई है उसे पूरी करो और उसे क़ुबूल करने या न करने की बात को अल्लाह के हवाले कर दो।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस में इस तरफ़ भी इशारा है कि अल्लाह तआ़ला बन्दों पर रहम करते हुए उन की हिदायत के लिए रसूलों को भेजता है और इस ज़िम्मेदारी के लिए जिसे चाहता है, चुन लेता

है। वही जानता है कि मक़ामे नुबूव्वत पर रखने का कौन ह़क़्दार है और फिर उस ने उन नबियों के दर्मियान फ़र्क़ रखा है। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को तौरेत दिया और अपना कलीम (बात करने वाला) बनाया, ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को इन्जील और ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) को ज़बूर दिया और दूसरे अम्बिया पर उन को फ़ज़ीलत दी और नबी करीम (सल्ल०) को क़ुर्आन करीम जैसी अ़ज़ीम किताब दी गई और इसकी वजह से उन्हें तमाम नबियों पर फ़ज़ीलत दी।

और 'ज़बूर' का ज़िक्र ख़ासतौर से इसलिए आया है कि उस में नबी करीम (सल्ल०) की सिफ़ात बयान की गई हैं और इस से इस तरफ़ भी इशारा मिलता है कि जिस तरह़ अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) को ज़बूर देकर उन्हें उस दौर के तमाम इन्सानों पर प्राथ्मिकता दी, उसी तरह़ उस ने अ़रबों में से मुह़म्मद (सल्ल०) को अपने आख़िरी नबी के तौर पर चुन लिया, जो अपने ज़माने के सब से ज़्यादा साह़िबे अ़क़्ल व कमाल थे और जिन की सच्चाई व अमानत का चर्चा पूरी दुनिया में था।

56 قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿۵۶﴾

इस आयते करीमा में उन मुश्रिकीन की बात को रद्द किया गया है जो फ़रिश्तों की मूर्ति की पूजा करते थे और उन अहले किताब को भी रद्द किया गया है, जो ह़ज़रत उ़ज़ैर (अ़लै०) ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) और मरयम के उपास्य होने का अ़क़ीदा रखते थे।

अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़िताब कर के फ़रमाया कि आप उन तमाम मुश्रिकीन और अहले किताब से कह दीजिए जो अल्लाह के सिवा दूसरों की अ़िबादत करते हैं कि तुम पर जब कोई मुसीबत आए तो ज़रा अपने उपास्यों को पुकार कर देखो तो सही, क्या वह तुम्हारी तक्लीफ़ को दूर कर सकते हैं या दूसरों की तरफ़ फेर देते हैं? जवाब मालूम है कि वह इस की बिल्कुल क़ुद्रत नहीं रखते क्योंकि नफ़ा और नुक़्सान पर क़ादिर तो सिर्फ़ अल्लाह है।

57 اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿۵۷﴾

इस में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ह़ज़रत उ़ज़ैर (अ़लै०) फ़रिश्ते, जिन्न और दूसरे नेक लोग जिन्हें यह मुश्रिकीन पुकारते हैं यह सब तो ख़ुद नेक आ़माल के ज़रिये अल्लाह के पास क़ुर्बत चाहते हैं, अल्लाह की रह़मत की उम्मीद लगाए रहते हैं और उस के अ़ज़ाब से डरते रहते हैं, इसलिए कि उस का अ़ज़ाब तो वह अ़ज़ाब है जिस से तमाम लोग पनाह माँगते हैं तो जो ख़ुद अपने अन्जाम से वाक़िफ़ नहीं और जो अल्लाह की रज़ा की तलाश में रहते हैं, वह उपास्य कैसे हो सकते हैं? उन की अ़िबादत कैसे की जा सकती है।

وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ में इस तरफ़ इशारा है कि अ़िबादत की क़ुबूलियत के लिए ज़रूरी है कि इस में अल्लाह के रह़मत की उम्मीद और उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ पाया जाए क्योंकि बन्दा जब अल्लाह से अच्छी उम्मीद रखेगा तो कसरत से नेक आ़माल करेगा और जब उस के अ़ज़ाब से डरेगा

तो गुनाह करने से परहेज़ करेगा।

58 وَإِنْ مِّن قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾

इस आयत में अहले कुफ़्र की बस्तियों का अन्जाम बताया गया है कि क़ियामत के दिन से पहले या तो अल्लाह तआ़ला उन्हें मौत देकर हलाक कर देगा या उन पर कोई सख़्त अ़ज़ाब नाज़िल करेगा और क़ियामत के दिन से पहले की पाबन्दी इसलिए लगाई कि उस दिन तो दुनिया की उ़म्र ख़त्म हो जाने की वजह से अल्लाह तआ़ला तमाम बस्तियों को ख़त्म कर देगा। अल्लाह तआ़ला ने सूरः हूद आयत नं० (101) में फ़रमाया है وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ कि:-

"हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि उन्होंने अपने आप पर ज़ुल्म किया था" और सूरः तलाक़ आयात नं० (8/9) में फ़रमायाः-

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨﴾
فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ﴿٩﴾

कि "बहुत सी बस्ती वालों ने अपने रब के हुक्म की और उस के रसूलों की नाफ़रमानी की तो हम ने भी उन से सख़्त हिसाब किया और अनूदेखी आफ़त उन पर डाल दी, बस उन्होंने अपने करतूत का मज़ा चख लिया और आख़िर में उन का ख़सारा ही हुआ"।

आयत नं० 59 से 70 तक

وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ۭ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ۭ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ۝
وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ۭ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ۭ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ۝ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ۝ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ ۡ لَىِٕنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاۗؤُكُمْ جَزَاۗءً مَّوْفُوْرًا ۝ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۭ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ۝ اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ۚ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ۝ رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ۝ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ۝
اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ۝ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ۝ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰي كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ۝

अनुवाद-

(59) और 'हमें' निशानियाँ भेजने से इसके सिवा किसी चीज़ ने नहीं रोका, कि पहले के लोग उनको झुठला चुके हैं। और 'हमने' 'समूद' को स्पष्ट प्रमाण के रूप में ऊँटनी दी; मगर उन्हों ने उसके साथ जुल्म किया; और निशानियाँ तो 'हम' इसी लिए भेजते हैं कि उनके ज़रिये डराएँ। (60) और जब 'हमने' तुमसे कहा था, तुम्हारे 'रब' ने लोगों को अपने घेरे में ले रखा है, और जो नुमाइश हमने तुम्हें दिखायी, उसे तो हमने' लोगों के लिए केवल एक आज़माइश बना दिया; और उस पेड़ (वृक्ष) को भी जिसको कुर्आन में लानत वाला कहा गया है; और हम' उन्हें डराते हैं, लेकिन इससे उनकी बढ़ी हुई सरकशी और बढ़ रही है।'' (61) और जब 'हमने' फ़रिश्तों से कहा, आदम को सज्दः करो, तो सब ने सज्दः किया मगर इब्लीस ने नहीं किया, उसने कहा, ''क्या, मैं ऐसे व्यक्ति को सज्दः करूँ, जिसे 'तूने' मिट्टी से पैदा किया। (62) कहने लगा, "देख तो सही! उसे जिसको 'तूने' मेरे मुक़ाबले में श्रेष्ठता दी है, अगर 'तूने' मुझे क़ियामत के दिन तक मोहलत दे दी तो मैं इसकी पूरी नस्ल को जड़ से उखाड़ डालूँगा सिवाय थोड़े से लोगों के"। (63) फ़रमाया, ''दूर हो जा! इनमें से जो व्यक्ति तेरे पीछे चलेगा, तो तुम सब का भरपूर बदला दोज़ख़ है; (64) और तू उनमें से जिस-जिस को अपनी आवाज़ से बहका सकता है बहका ले, फिर अपने सवारों और अपने प्यादों (पैदल सेना) से ह़मला कर, माल और औलाद में उनका साझीदार बन जा, और उनसे वादे कर, किन्तु शैतान उनसे जो वादे करता है, वह एक धोखे के सिवा और कुछ भी नहीं होता। (65) बेशक 'वह' जो मेरे (खास) बन्दे हैं उन पर तेरा कुछ भी ज़ोर नहीं चल सकता, और तुम्हारा 'रब' इसके लिए काफ़ी है'' (66) तुम्हारा 'रब' तो 'वही' है जो तुम्हारे लिए समुद्र में कश्ती (नाव) चलाता है ताकि तुम उसके फ़ज़्ल (रोज़ी) को तलाश करो, बेशक 'वह' तुम पर बहुत मेहरबान है। (67) और जब तुमको समुद्र में तकलीफ़ पहुँचती है, तो 'उसके' सिवा सब ग़ायब हो जाते हैं, फिर जब 'वह' तुम को बचाकर ख़ुश्की (शुष्क-भूमि) में पहुंचा देता है तो तुम

उससे मुहँ मोड़ जाते हो, और इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है। (68) क्या तुम इस बात से निश्चिन्त हो गये हो, कि 'वह' ख़ुश्क ज़मीन के किसी हिस्से में तुमको धंसा दे, या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आँधी भेज दे, फिर तुम अपने लिए कोई संरक्षक न पाओगे। (69) या इस बात से तुम निश्चिन्त हो गये हो, कि तुमको दूसरी बार समुद्र में ले जाए, फिर तुम पर तेज़ हवा चलाए और तुम्हारे कुफ़्र की वजह से तुमको डुबो दे; फिर तुम किसी को ऐसा न पाओ जो तुम्हारे लिए इस पर 'हमारा' पीछा करने वाला हो? (70) और 'हमने' आदम की औलाद को इज़्ज़त दी, और उनको थल और जल में सवारी दी, और अच्छी पाक चीज़ों की उन्हें रोज़ी दी, और अपनी पैदा की हुई मख्लूक़ (प्राणियों) पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी।

आयत नं० 59 से 70 तक की व्याख्या

59 وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ۭ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ۭ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ۝

'इमाम अहमद' और 'नसई' ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि अहले मक्का ने नबी करीम (सल्ल०) से मुताल्बा (Demand) किया कि वह सफ़ा पहाड़ी को सोना में बदल दें और मक्का के पहाड़ों को उन की जगह से हटा दें ताकि खेती करें, तो आप (सल्ल०) से (बज़रिये जिब्रईल) कहा गया कि अगर आप चाहें तो और इन्तिज़ार कर लें और चाहें तो उन का मुताल्बा (Demand) पूरा कर दिया जाए लेकिन इस के बाद अगर वह कुफ़्र पर बाक़ी रहे तो पहले की क़ौमों की तरह उन्हें भी हलाक कर दिया जाएगा। आप ने फ़रमाया कि मैं इन्तिज़ार करुँगा।

यह आयते करीमा इसी मौक़े से नाज़िल हुई। इस में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि अहले क़ुरैश की माँगी हुई निशानियाँ हम इसलिए नहीं भेजते कि वह भी पिछली क़ौमों की तरह इन निशानियों को झुठलाएँगे और आख़ीर में उन्हें ख़त्म कर दिया जाएगा और हम चाहते हैं कि उन के साथ ऐसा न हो, इस उम्मीद में कि शायद वह ईमान ले आएँ या उन की नस्लों में ऐसे लोग आएँ जो ईमान ले आएँ।

इस के बाद हज़रत सालेह़ (अ़लै०) की क़ौम का ज़िक्र बतौर नमूना किया गया है कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ऊँटनी बतौर निशानी के दी, जिसे उन्होंने हलाक कर दिया तो सुन्नते इलाहिया के मुताबिक़ उन्हें बिल्कुल ख़त्म कर दिया गया। आगे फ़रमाया गया कि हम यह निशानियाँ लोगों को डराने के लिए भेजते हैं कि जो भी ऐसा करेगा उस का अन्जाम हलाकत व बर्बादी होगा।

60 وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ۭ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ۭ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ۝

नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब कर के कहा जा रहा है कि हम ने आप को वह्य के ज़रिये बता दिया है कि आप के रब से लोगों की कोई बात छुपी नहीं है। उन का कुफ़्र व हठधर्मी और आप का झुठलाना सब उस के इल्म में है। आप ने उन्हें अपने आसमान पर बुलाए जाने और जहन्नम में पैदा

होने वाले ज़क्कूम के दरख़्त (पेड़) की ख़बर दी तो उन्होंने आप का मज़ाक़ उड़ाया है, यह ख़बर लोगों के लिए एक बड़ी आज़्माइश थी।

अक्सर लोगों की राय है कि आयत में "رؤيا" से मुराद वह निशानियाँ हैं जिसे अल्लाह तआ़ला के रसूल (सल्ल०) ने मेअ़राज की रात देखी थी। जब आप ने मेअ़राज से वापसी के बाद लोगों से वह निशानियाँ बयान कीं तो कुछ लोगों ने इन्कार कर दिया और आप को झुठलाया, लेकिन मुख़्लिस मुसलमानों का ईमान मज़बूत हो गया।

'इब्ने जरीर' 'तबरी' ने ह़सन बसरी (रह०) से इस आयत की तफ़्सीर में रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को अ़िशा के वक़्त बैतुल् ह़राम से बैतुल् मक़्दिस ले जाया गया जहाँ उन्होंने नमाज़ पढ़ी, उस के बाद अल्लाह ने अपनी निशानियाँ दिखाईं। फिर सुबह़ के वक़्त आप (सल्ल०) मक्का आ गए और लोगों को मेअ़राज की ख़बर दी तो काफ़िरों ने कहा कि ऐ मुह़म्मद! क्या तुम शाम को बैतुल् मक़्दिस में थे और सुबह़ को हमारे पास आ गए हो? इस बात से उन्हें इतनी ह़ैरत हुई कि उन की बातों से प्रभावित होकर कुछ कमज़ोर ईमान वाले मुसलमान मुरतद (इस्लाम से फिर गये) हो गए।

कुछ दूसरे लोगों की राय है कि "رؤيا" से मुराद नबी करीम (सल्ल०) का वह ख़्वाब है कि आप मक्का में बह़ैसियत फ़ातेह़ दाख़िल हो रहे हैं, चुनाँचे सुलह़ हुदैबिया के साल आप (सल्ल०) सह़ाबा को लेकर मक्का की तरफ़ रवाना हो गये, लेकिन चूंकि अभी फ़तेह़ मक्का का वक़्त नहीं आया था इसलिए आप को वापस आना पड़ा तो कुछ लोगों ने कहा कि हम लोगों से तो कहा था कि मक्का में दाख़िल होंगे तो फिर क्यों न दाख़िल हो सके? यह वाक़िआ़ उन के लिए आज़्माइश बन गया।

जब दूसरे साल मक्का फ़तेह़ हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ नाज़िल फ़रमाया। इस क़ौल के मुताबिक़ यह आयत मदनी होगी, जो मक्की सूरतों में दाख़िल कर दी गई है।

जम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक आयत में ﴿شَجَرَةَ مَلْعُوْنَةَ﴾ से मुराद जक्कूम का दरख़्त है। जिस का ज़िक्र सूरः साफ़्फ़ात की इन आयात (62/ 63/ 64) में आया है:-

أَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ۝ إِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ۝ إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْ أَصْلِ الْجَحِيْمِ ۝

"क्या यह मेहमानी अच्छी है या ज़क्कूम के पेड़ की? बेशक हमने उस पेड़ को ज़ालिमों की आज़्माइश के लिए बनाया, वह ऐसा पेड़ है जो जहन्नम की तह में पैदा होता है"।

'तबरी' 'इब्ने इस्ह़ाक़' और 'इब्ने अबी ह़ातिम' आदि ने 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत की है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कुफ़्फ़ारे कुरैश को डराने के लिए 'ज़क्कूम' के पेड़ का ज़िक्र किया तो अबू जेहल ने कहा, ऐ अहले कुरैश! वह शजर 'ज़क्कूम' जिस से तुम्हें मुह़म्मद डराता है जानते हो वह क्या है? लोगों ने कहाः नहीं। तो उस ने कहा, वह 'यस्रब' की 'अ़ज्वह' खजूर है, जिसे मक्खन के साथ खाया जाता है। अल्लाह की क़सम! अगर हमें वह मिल जाए तो उसे ख़ूब खाएँ तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और यहाँ **मल्अ़ूनह** पेड़ का अवगुण बताया गया है, लेकिन

इस से मुराद उस का खाने वाला है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः दुख़ान आयात नं० (43/44) में फ़रमाया है:-

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝

"ज़क्कूम का दरख़्त गुनाहगारों का खाना है।"

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम कुफ़्फ़ारे कुरैश को इन बातों और इन्हीं जैसी दूसरी बातों के ज़रिये डराना चाहते हैं ताकि ईमान ले आएँ लेकिन नतीजा उलटा होता है और उन की सरकशी बढ़ जाती है।

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु' से रिवायत है कि जो मनाज़िर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को बैतुल् मुक़द्दस की ओर सफ़र वाली रात में दिखलाये गए थे, वह ह़क़ीक़ी मनाज़िर थे और शज्र मल्अूना जिस का ज़िक्र कुर्आन में है, वह ज़क्कूम का दरख़्त है। (बुख़ारी)

61-65

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۚ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ ۚ وَنُخَوِّفُهُمْ ۖ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۝ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ قَالَ ءَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ۝ قَالَ أَرَءَيْتَكَ هَٰذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا ۝ قَالَ اذْهَبْ فَمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاؤُكُمْ جَزَاءً مَّوْفُورًا ۝ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُم بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِم بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۝ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ ۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ۝

चूंकि कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन की सरकशी इब्लीस (शैतान) की पैरवी का नतीजा होती है, इसीलिए अब शैतान की सरकशी बयान की जा रही है और बताया जा रहा है कि अल्लाह की नाफ़रमानी और ह़क़ का इन्कार शैतान और उस के पैरोकारों की आ़दत रही है और उन सब का ठिकाना जहन्नम होगा।

'इब्लीस' और उस की सरकशी का यह वाक़िआ़ सूरः बक़रः, सूरः अअ़राफ़, सूरः ह़िज्र, सूरः बनी इस्राईल, सूरः कहफ़, सूरः ताहा और सूरः साद में बयान किया गया है।

यहाँ यह वाक़िआ़ पाँच आयतों में ज़िक्र किया गया है। जिन का ख़ुलासा यह है कि ऐ हमारे नबी! आप उस वक़्त को याद कीजिए जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि तुम लोग आदम के मान-सम्मान में उस को सज्दः करो तो इब्लीस के अ़लावा सब ने सज्दः किया, उस ने कुफ़्र व हठधर्मी की राह अख़्तियार करते हुए कहा कि क्या मैं उसे सज्दः करुँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया है? तूने जो उसे मुझ पर फ़ौक़ियत (वरीयता) दी है और मुझे उस को सज्दः करने का हुक्म दिया है तो ऐसा क्यों किया? अगर तूने मुझे क़ियामत के दिन तक मोहलत दी तो सिवाय चन्द मुख़्लिस मुसलमानों के मैं सब को गुमराह कर के हलाक कर दूँगा या मैं जिधर चाहूँगा उन्हें बहका कर ले जाऊँगा, तो अल्लाह तआ़ला ने उस से कहा कि तुम जो करना चाहते हो करो जो लोग तुम्हारी पैरवी करेंगे उन का और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम होगा, जो तुम्हारे आ़माल का पूरा-पूरा बदला होगा तो अब तुम उन में से जिसे आवाज़ देकर अपनी पैरवी पर

उभार सकते हो उभारो और उन्हें धोका दो।

(कुछ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इस से मुराद लहू व लअ़िब (खेल-तमाशा) और गाना बजाना है) और उन्हें अपना पैरोकार बनाने के लिए तमाम चालें इस्तेमाल करो, मक्र व फ़रेब की जितनी सूरतें हो सकती हैं सब को अख़्तियार करो और उन के माल व दौलत और औलाद में शरीक बन जाओ, यहाँ तक कि वह ह़राम ज़रिये से दौलत ह़ासिल करें, ग़ीबत करें, चोरी करें, सूद खाएँ और ह़राम कामों पर ख़र्च करें, जानवरों को बुतों के नाम पर छोड़ें और नाजायज़ तरीक़ों से औलाद ह़ासिल करें। अ़ब्दुल् लात और अ़ब्दुल् उ़ज़्ज़ा वग़ैरह उन के नाम रखें, अच्छी तर्बियत न करें और उन्हें कम्यूनिस्ट बनाएँ और उन से वादा करो कि वह दोबारा ज़िन्दा नहीं किये जाएँगे या यह कि उन का अन्जाम हमेशा अच्छा होगा और हमेशा कामियाबी उन्हीं को मिलेगी।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि शैतान का वादा हमेशा धोखे का होता है। फिर शैतान से कहा कि मेरे जो मुख़्लिस बन्दे होंगे, उन पर तुम्हारी नहीं चलेगी, तुम उन्हें गुमराह नहीं कर सकोगे, तुम्हारा रब उन का मददगार होगा, वह अपने रब पर भरोसा करेंगे और हर ह़ाल में उसी के पास पनाह लेंगे और वह उन के लिए काफ़ी होगा।

लगभग 100 साल पहले 'डारविन' ने दावा किया था कि इन्सान बन्दर की औलाद है, जो धीरे-धीरे इन्सान बन गया। इस ने अपनी कमअ़क़्ली का ऐसा सुबूत दिया जिसे ख़ुद ईसाइयों ने भी झुठला दिया। दुनिया का कोई मज़हब उस की ह़िमायत नहीं कर सकता। सन् 1955 ई० में ही इस बात का एह़सास हो चुका था कि मुख़्तलिफ़ जानदारों में DNA का कीमियाई इस्ट्रैक्चर 100 फ़ीसद एक जैसा ही है, उन के दर्मियान फ़र्क़ उन के रियाज़ियाती (मैथमेटिकल) प्रोग्राम्ज़ में है, इस तरह़ यह एक नामुम्किन चीज़ है। इस के ह़ामी कहते हैं कि क़दीम और जदीद इन्सान को जोड़ने वाली गुमशुदा कड़ी मौजूद है जिसे Pilt Down man कहा गया है, मगर Radio Active टेस्ट से उस का फ़्राड भी साबित हो चुका है।

66-70

رَبُّكُمُ الَّذِیْ یُزْجِیْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِی الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِیْمًا ۝ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ
فِی الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّاۤ اِیَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ۝ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ
یَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ یُرْسِلَ عَلَیْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِیْلًا ۝ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ یُّعِیْدَكُمْ فِیْهِ
تَارَةً اُخْرٰی فَیُرْسِلَ عَلَیْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّیْحِ فَیُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَیْنَا بِهٖ تَبِیْعًا ۝
وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِیْۤ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِی الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰی كَثِیْرٍ
مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِیْلًا ۝

आयत नं० (66) से आयत नं० (70) तक अल्लाह तआ़ला ने अपनी निशानियाँ बयान की हैं। उस ने इन्सान से फ़रमाया कि तुम्हारा रब वह है जो कश्तियों को समुद्र में हवाओं के सहारे चलाता है ताकि तुम अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जहाँ चाहो जाओ और अल्लाह की पैदा की हुई रोज़ी ह़ासिल करो। यक़ीनन वह तुम पर बहुत मेहरबान है कि समुद्र तक को तुम्हारे लिए तैयार कर दिया, ताकि तुम उसे अपने सफ़र

और तिजारत के लिए बआसानी इस्तेमाल कर सको और जब तुम कश्ती में सवार होते हो और बीच समुद्र में तुम्हें कोई बीमारी या परेशानी हो जाती है या रास्ता खो बैठते हो या किसी भंवर में फँस जाते हो और कश्ती डूबने लगती है तो तुम अपने तमाम छोटे-मोटे उपास्यों को भूल जाते हो और फ़ित्रत के मुताबिक़ केवल एक अल्लाह को पुकारने लगते हो, जिस के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को पैदा किया है, लेकिन वह तुम्हें ख़ैर के साथ साहिल (किनारे) पर पहुँचा देता है तो उस की याद से ग़ाफ़िल हो जाते हो और फिर अपने झूठे मअ़बूदों को पुकारने लगते हो, इसलिए कि इन्सान बड़ा एहसान फ़रामोश है।

आयत नं० (68) में इस नाशुक्री पर धमकी देते हुए और डराते हुए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क्या तुम्हें डर नहीं लगता कि समुद्र से निकल कर जिस हिस्से पर उतरे हो, अल्लाह तआ़ला उस को धंसा दे और तुम ज़मीन के नीचे चले जाओ या किसी सख़्त आँधी को भेज दे जो तुम पर पत्थरों की बारिश कर के तुम्हें हलाक कर दे और कोई तुम्हारी मदद के लिए न आए या तुम इस बात से नहीं डरते कि वह तुम्हें दोबारा समुद्र में पहुँचा दे और फिर किसी सख़्त तूफ़ान में डालकर कुफ़्र व हठधर्मी की वजह से फ़िरऔनियों की तरह डुबो दे और तुम्हारा कोई साथ देने वाला न हो जो पूछ सके कि हम ने तुम्हें अ़ज़ाब क्यों दिया?

जब अल्लाह के सिवा कोई तुम्हारा सहारा नहीं, कोई तुम्हारी मदद करने वाला नहीं तो क्यों नहीं तुम उस पर दिल से ईमान लाते? क्यों नहीं सारे झूठे मअ़बूदों को छोड़कर हमेशा के लिए उस की ग़ुलामी और बन्दगी का अ़हद कर लेते? और क्यों नहीं केवल उसी के हो जाते हो?

आयत नं० (70) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, ह़क़ीक़त यह है कि हम ने आदम की औलाद को बोलने की क्षमता, अ़क़्ल व होश, इ़ल्म व मअ़रिफ़त (पहचान) अच्छी शक्ल व सूरत और ज़मीन पर पाई जाने वाली तमाम चीज़ों से फ़ायदा उठाने की ताक़त देकर उन्हें बड़ी इ़ज़्ज़त दी है, हम ने उन के लिए ख़ुश्की (सूखा) और पानी में सफ़र करने के तमाम ज़रिये आसान कर दिये और तरह़-तरह़ की रोज़ी दी और तमाम जानवरों पर फ़ज़ीलत दी, उन के ख़ास लोगों को फ़रिश्तों तक पर फ़ज़ीलत दी।

लेकिन आदमी जब कुफ़्र की राह अख़्तियार करता है, अ़िबादत में अल्लाह के साथ ग़ैरों को शरीक करता है, फिर उसे छोड़कर दूसरों से मुह़ब्बत करने लगता है तो वह अल्लाह की बद्तरीन मख़्लूक़ बन जाता है। अल्लाह तआ़ला ने सूरः अल् बय्यिनः की आयत नं० (6) में फ़रमाया है:-

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَٰبِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۚ أُولَٰئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ

"बेशक जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हुए और मुश्रिकीन दोज़ख़ की आग में जाएँगे, जहाँ वह हमेशा रहेंगे यही लोग (अल्लाह की) बद्तरीन मख़्लूक़ हैं।"

❐❐❐

आयत नं० 71 से 85 तक

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧١﴾ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى
فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾
وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾ وَاِنْ كَادُوْا
لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ
لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً
لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ
سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾ وَقُلْ جَاۗءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿٨١﴾ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَاۗءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ
وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَي الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ﴿٨٣﴾ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰي
شَاكِلَتِهٖ ۭ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ۭ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾

अनुवाद-

(71) (उस दिन से डरो) जिस दिन हम' हर इन्सानी गिरोह को उनके रहनुमाओं के साथ बुलाएंगे, तो जिनको उनका आ़मालनामा, दाहिने हाथ में दिया जाएगा, वह अपना आ़मालनामा पढ़ेंगे, और उन पर धागे बराबर भी ज़ुल्म न होगा, (72) और जो व्यक्ति यहाँ अन्धा हो कर रहा , वह आख़िरत में भी अन्धा रहेगा, और वह राह से बहुत दूर जा पड़ा होगा। (73) और जो 'हमने' वह्य तुम्हारी ओर भेजी है, क़रीब था कि ये (काफ़िर) लोग तुम को इससे बिचला दें ताकि इस (क़ुर्आन) को छोड़ कर तुम कुछ और झूठ 'हमारे' नाम पर गढ़ लो, और तब तुमको वह दोस्त बना लेते। (74) और अगर 'हमने' आप को जमाए न रखा होता, तो आप उनकी ओर थोड़ा झुकने के क़रीब हो गये थे; (75) उस समय 'हम' आप को दुगना अ़ज़ाब चखाते- ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी, फिर आप 'हमारे' मुक़ाबले में किसी को भी मददगार न पाते। (76) और क़रीब था कि यह लोग (काफ़िर) इस ज़मीन (मक्का) से आप के क़दम उखाड़ दें, ताकि आप को वहाँ से निकाल दें, और इस ह़ालत में यह भी आप के बाद बहुत ही कम ठहरने पाते। (77) यही तरीक़ा 'हमारे' उन रसूलों के विषय में रहा है, जिन्हें 'हमने' तुम से पहले भेजा था और तुम 'हमारे' नियम में कोई अन्तर न पाओगे। (78) नमाज़ क़ायम करो, सूरज के ढ़लने से लेकर रात के छा जाने तक और फज्र (सुबह़) में क़ुर्आन पढ़ने की पाबन्दी करो, बेशक फज्र का क़ुर्आन पढ़ना हुज़ूरी (साक्षात) की चीज़ है। (79) और रात के कुछ हिस्से में भी, (तहज्जुद की नमाज़ पढ़ लिया करो,) यह आप के हक़ में (फर्ज़ से) ज़्यादा चीज़ (नफ्ल) है, उम्मीद है कि आप का 'रब' आप को मक़ामे मह़मूद (प्रशंसा योग्य स्थान) दे। (80) और कहिए, "ऐ मेरे रब'! मुझको दाख़िल कीजिए, तो सच्चाई के साथ दाख़िल कीजिए, और मुझे निकालिए तो सच्चाई के साथ निकालिए, और 'अपनी' ओर से मुझे ग़ल्बा (शक्ति) प्रदान कीजिए"। (81) और कह दीजिए, "ह़क़ (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य) मिट गया, बेशक बातिल तो था ही मिटने के लिए"। (82) और 'हम' क़ुर्आन के ज़रिये ऐसी बातें उतारते हैं, जो ईमान वालों के लिए शिफ़ा (इलाज) और रह़मत है; और ज़ुल्म करने वालों का तो इससे

नुक़्सान ही बढ़ता है। (83) और जब 'हम' इन्सान को कोई नेअ़मत आता करते हैं, तो वह मुँह मोड़ लेता है, और पहलू बचा कर चलता है; और जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो नाउम्मीद हो जाता है। (84) कह दीजिए, "हर व्यक्ति अपने-अपने तरीक़े पर काम करता है, तुम्हारा 'रब' ही खूब जानता है कि कौन ज़्यादा सही रास्ते पर है?" (85) और आप से रुह़ के विषय में पूछते हैं, कह दीजिए, "रुह़ मेरे रब' के हुक्म में से है, और तुम्हें जो इल्म दिया गया है वह बहुत थोड़ा ही है"।

आयत नं० 71 से 85 तक की व्याख्या

71 يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝

क़ियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किये जाने और बदला मिलने के अक़ीदे (विश्वास) को इन्सानों के लिए अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया कि आप उस दिन को याद कीजिए जब हम तमाम लोगों को उन के इमामों के नाम के साथ पुकारेंगे।

मुफ़स्सिरीन ने 'इमाम' के कई अर्थ बयान किये हैं। कुछ ने इस से मुराद नबी लिया है, कुछ ने हर ज़माने का दीनी पेश्वा, कुछ ने वह किताबे इलाही जो हर क़ौम के लिए नाज़िल हुई थी, कुछ ने इस से दीन मुराद लिया है। 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' 'ह़ज़रत ह़सन' 'ह़ज़रत क़तादा' आदि ने इस से मुराद हर आदमी का नाम-ए-आ़माल लिया है।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने इसी को अपनाया है और कहा है कि इसी की ताईद सूरः इन्शिक़ाक़ की आयत नं० (7) से होती है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ और सूरः यासीन आयत नं० (12) में फ़रमाया وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ और सूरः जासिया आयत नं० (28) में फ़रमाया है كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا "हर उम्मत को उस के नाम-ए-आ़माल की तरफ़ बुलाया जाएगा"।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जिन का नाम-ए-आ़माल उन के दाएँ हाथ में दिया जाएगा वह उसे पढ़ेंगे और उस में अपने नेक आ़माल को देखकर ख़ुश होंगे और उन के अज्र व सवाब में थोड़ी सी भी कमी नहीं की जाएगी, यह अल्लाह तआ़ला का वादा है। जैसा कि सूरः मरयम आयत नं० (60) में आया है وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا कि "अ़द्ल व इन्साफ़ वाले अल्लाह की ओर से उन पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा"।

72 وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝

जो बद्नसीब इन्सान इस दुनिया में बसीरत से महरूम होकर ह़क़ को क़ुबूल नहीं करेगा और सीधे रास्ते पर नहीं होगा वह आख़िरत में भी निजात नहीं पाएगा, यहाँ तक कि धीरे-धीरे जहन्नम में पहुँच जाएगा।

73 وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ۝

मुश्रिकीने अ़रब ने थोड़ी सी भी कसर नहीं उठा रखी है कि नबी करीम (सल्ल०) को ह़क़ से हटा

दें, उन्हें तक्लीफ़ें दें और ज़ुल्म व ज़्यादती का हर तरीक़ा अख़्तियार किया ताकि आप तौहीद की दअ़वत से बाज़ आ जाएँ, शिर्क पर उँगली न उठाएँ, उन के साथ बातिल की ताईद पर सुलह़ कर लें और उन के झूठे मअ़बूदों (उपास्यों) के बारे में उन की मर्ज़ी की बात करें।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि आप (सल्ल०) ऐसा करते तो मुश्रिकीन बज़ाहिर आप को अपना दोस्त बना लेते और लोगों से कहते कि मुह़म्मद ने हमारे कुफ़्र की ताईद कर दी और हमारे शिर्क से राज़ी है, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने आप की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई। मुश्रिकीन की तमाम साज़िशों के बावजूद आप केवल अल्लाह की ताईद से ह़क़ पर क़ायम रहे और उन की तरफ़ न झुके।

74 وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ۝

यह आयत दलील है कि नबी करीम (सल्ल०) के दिल में काफ़िरों की तरफ़ ज़रा सा भी मैलान पैदा नहीं हुआ।

'क़तादा' कहते हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

"اللهم لاتكلني إلى نفسي طرفة عين"

"ऐ मेरे अल्लाह! मुझे एक लम्ह़े के लिए भी मेरे नफ़्स के ह़वाले न कर।"

75 اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ۝

इस आयत में बहुत बड़ी धमकी दी गई है कि आप ने अल्लाह की ताईद से ऐसा किया तो नहीं, लेकिन अगर ऐसी ग़लती आप से हो जाती तो अपने ह़क़ में बहुत ही बुरा करते कि हम अ़ज़ाबे दुनिया और अ़ज़ाबे आख़िरत दोनों ही को आप के लिए दो गुना कर देते और आप को कोई निजात दिलाने वाला न होता।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि दो गुना अ़ज़ाब इसलिए होता कि अल्लाह तआ़ला अम्बिया-ए-किराम को अपनी ख़ुसूसी नेअ़मतों से नवाज़ता है और उन के गुनाह भी बड़े शुमार किये जाते, फिर उन की सज़ा भी उसी ह़िसाब से बड़ी होती है।

76-77 وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ۝

नबी करीम (सल्ल०) को उन की दअ़वत से रोकने की जब तमाम शैतानी चालें नाकाम हो गईं तो काफ़िरों ने आप को परेशान करना शुरु कर दिया, ताकि आप तंग होकर मक्का से बाहर चले जाएँ। उसी की तरफ़ इस आयते करीमा में इशारा है कि अगर मुश्रिकीन आप को निकाल देते तो आप के बाद वह लोग कुछ ही दिन ज़मीन पर ज़िन्दा रहते।

अल्लाह की सुन्नत यही रही है कि जब भी किसी क़ौम ने अपने नबी को शहर से निकाला, अल्लाह ने उन्हें हलाक कर दिया या जब भी अल्लाह ने किसी क़ौम को हलाक करना चाहा तो पहले अपने नबी

को वहाँ से निकल जाने का हुक्म दिया, लेकिन अल्लाह ने उन के दिलों से यह बात निकाल दी, चुनाँचे उन्होंने आप को मक्का से निकाल देने का इरादा ख़त्म कर दिया। इस के बाद आप ख़ुद ही अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ हिजरत कर के मदीना चले गए।

78 أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ إِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ إِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾

क़ियामत के दिन की सज़ा और मुश्रिकीने अ़रब की साज़िशों को बयान करने के बाद इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को नमाज़ क़ायम करने का हुक्म दिया, जो सब से अहम अ़िबादत है और अल्लाह तआ़ला से मदद माँगने का सब से बेहतर तरीक़ा है। जैसा कि अल्लाह ने सूरः बक़रः आयत नं० (45) में फ़रमाया हैः-

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ कि "ऐ मुसलमानों! तुम लोग सब्र और नमाज़ के ज़रिए अल्लाह से मदद माँगो।"

मुफ़स्सिरीन की सहमति है कि इस से मुराद पाँच नमाज़ें हैं। जिन की अदाएगी उन के वक़्तों में फ़र्ज़ है। अक्सर मुफ़स्सिरीन की राय है कि لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ के माने ज़वाल आफ़्ताब है जो ज़ुह्र और अ़स्र की नमाज़ पर दलालत करता है और غَسَقِ الَّيْلِ से मुराद रात की तारीकी (अन्धेरा) है, जो मग़्रिब और अ़िशा के दर्मियान का है और قُرْاٰنَ الْفَجْرِ से मुराद नमाज़े फ़ज्र है।

'इमाम अबू ह़नीफ़ा' (रह़०) के अ़िशा के वक़्त की शुरुआ़त उस वक़्त से बताई गई है जबकि 'शफ़क़ अहमर' के बाद 'शफ़क़ अबयज़' भी ख़त्म हो जाए यानी सुर्ख़ी के बाद जो सफ़ेदी होती है जब वह भी ख़त्म हो जाए।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' कहते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) की मुतवातिर क़ौली और फ़ेअ़ली सुन्नतों के ज़रिये इन अवक़ात की तफ़्सील बयान की जा चुकी है और शुरु से आज तक उम्मत इस पर अ़मल पैरा है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने हर नमाज़ का वक़्त बयान कर दिया और नबी करीम (सल्ल०) ने हर नमाज़ के रकआ़त को बयान फ़रमा दिया।

إِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا से मुराद फ़ज्र की नमाज़ का वक़्त है। जब रात और दिन के फ़रिश्ते जमा हो जाते हैं। बुख़ारी शरीफ़ की ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से मरवी ह़दीस से यही साबित है और जम्हूर मुफ़स्सिरीन की भी यही राय है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "नमाज़ बाजमाअ़त अकेले पढ़ने से पच्चीस गुना ज़्यादा फ़ज़ीलत रखती है और सुबह़ की नमाज़ के वक़्त रात और दिन के फ़रिश्ते इकट्ठे हो जाते हैं।" **(बुख़ारी)**

79 وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾

नमाज़े पंचगाना के बाद इस आयते करीमा में आप को तहज्जुद की नमाज़ का हुक्म दिया गया है।

यह नमाज़ आप पर इसलिए वाजिब की गई थी ताकि आप के दर्जात बुलन्द हों, वरना आप के तो अगले पिछले सभी गुनाह माफ़ कर दिये गये थे। दूसरे मुसलमानों के लिए यह नमाज़ मुस्तहब है।

नमाज़े पंचगाना और नवाफ़िल की अदाएगी पर अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से यह वादा किया कि उन का रब उन्हें 'मक़ामे महमूद' यानी शफ़ाअ़त की इजाज़त देगा, जिस की वजह से आप क़ियामत के दिन मख़्लूक़ के लिए अल्लाह से सिफ़ारिश करेंगे, ताकि उन के बारे में अल्लाह अपना फ़ैसला सुना दे, जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में भेज दिये जाएँ और मख़्लूक़ को हश्र के मैदान में लम्बा क़याम और वहाँ की मुसीबतों से निजात मिल जाए।

'सहीह़ अह़ादीस' से 'मक़ामे महमूद' का यही मअ़ना साबित है। 'इब्ने जरीर' और अक्सर मुफ़स्सिरीन की भी यही राय है।

80 وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝

'इमाम अह़मद' और 'तिर्मिज़ी' ने 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत की है कि यह आयत मक्का से मदीना की तरफ़ हिजरत का हुक्म आने से पहले नाज़िल हुई। इस में आप को तअ़लीम दी गई है कि नमाज़ और ग़ैर नमाज़ में यह दुआ़ पढ़ा करें। यानी यह ख़ुशख़बरी थी कि जल्द ही हिजरत का हुक्म सादिर होने वाला है।

इस का मतलब यह है कि आप अपनी दुआ़ में यूँ कहा कीजिए कि ऐ मेरे रब! मुझे मदीना में दाख़िल कर दे जो मेरा दारुल् हिज्रह है और जहाँ मुझे कोई तक्लीफ़ नहीं देगा और मुझे मक्का से निकाल दे, यहाँ तक कि मेरे दिल में दोबारा वहाँ लौट कर जाने का जज़्बा बाक़ी न रहे और अपनी ओर से मेरा कोई मददगार तैयार कर दे, जो तेरे दीन के दुश्मनों के ख़िलाफ़ मेरी मदद करे।

"ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल०) मक्का में थे, फिर आप को हिजरत का हुक्म हुआ तो यह आयत नाज़िल हुई"। **(तिर्मिज़ी)**

81 وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝

इस आयते करीमा में आप (सल्ल०) को ख़ुशख़बरी दी गई है कि मक्का फ़तेह़ होगा और आप इस में फ़ातेह़ की ह़ैसियत से दाख़िल होंगे। कअ़बः के इर्द-गिर्द रखे हुए तीन सौ साठ बुतों को तोड़ देंगे और अपनी ज़बाने मुबारक से कहेंगे कि अब ह़क़ आ पहुँचा और बातिल की कमर टूट गई और ह़क़ के सामने बातिल कब ठहर सकता है।

'बुख़ारी' 'मुस्लिम' 'ह़ाफ़िज़ अबू यअ़ला' और दूसरे मुह़द्दिसीन ने इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत की है कि जब नबी करीम (सल्ल०) मक्का में दाख़िल हुए तो कअ़बः के इर्द गिर्द तीन सौ साठ बुत थे। आप उन्हें एक लकड़ी से ठोकर लगाकर गिराते रहे और جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا पढ़ते रहे।

82 وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَاۗءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आने करीम को मोमिनों के लिए शिफ़ा और रह़मत बताया है। इस के ज़रिये मोमिनों को रूह़ानी और जिस्मानी दोनों क़िस्म की शिफ़ा मिलती है। क़ुर्आन करीम की तिलावत (Reading) करने और उस की तआ़लीमात पर अ़मल पैरा होने से गुमराही, शुकूक व शुब्हात, शैतानी वस्वसों और तमाम बुरे अख़्लाक़ व आ़दात से निजात मिलती है और इसे पढ़ कर दम करने से जिस्मानी रोगों से भी शिफ़ा मिलती है। जैसा कि 'इमाम बुख़ारी' (रह़०) की 'ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुद्री' (रज़ि०) से मरवी ह़दीस से साबित है कि सूरः फ़ातिह़ा सात बार पढ़कर दम करने से साँप का ज़हर उतर गया और उस के बदले सह़ाबा को तीस बकरियाँ मिलीं।

'इमाम इब्ने क़य्यिम' (रह़०) ने 'ज़ादुल् मआ़द' में लिखा है कि क़ुर्आन के ज़रिये तमाम क़ल्बी और बदनी बीमारियों से मुकम्मल शिफ़ा मिलती है और दुनिया व आख़िरत की भी तमाम बीमारियों से शिफ़ा मिलती है, लेकिन हर आदमी इस से फ़ायदा उठाने और इस के ज़रिये शिफ़ा ह़ासिल करने की सलाह़ियत (क्षमता) नहीं रखता और यह क़ुर्आन मोमिनों के लिए रह़मत भी है कि वह क़ुर्आन की तआ़लीमात पर अ़मल करते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन पर रह़म करता है और कुफ़्फ़ार चूंकि उस पर ईमान नहीं रखते, इसलिए जैसे-जैसे क़ुर्आन नाज़िल होता जाता है उन के कुफ़्र व हठधर्मी में इज़ाफ़ा होता जाता है और क़दम-ब-क़दम जहन्नम की तरफ़ बढ़ते जाते हैं।

83 وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ۝

इस आयते करीमा में उस काफ़िर इन्सान की ह़ालत बयान की गई है जो ईमान से मह़रूम होता है और दुनिया की मुह़ब्बत आख़िरत की फ़िक्र पर ग़ालिब होती है। ऐसा इन्सान अल्लाह का बड़ा ही नाशुक्र गुज़ार होता है। जब अल्लाह तआ़ला उसे हलाकत से निजात दे देते हैं तो नाशुक्री पर उतर आता है और उसे पुकारना भूल जाता है और जब उसे कोई परेशानी होती है जैसे- ख़ौफ़, मर्ज़ या भूख में मुब्तिला होता है तो अल्लाह पर ईमान न होने की वजह से नाउम्मीदी के गहरे बादल उस पर छा जाते हैं। इस के बरअ़क्स मोमिन नेअ़मत पाकर शुक्रगुज़ार बन जाता है और मुसीबत के वक़्त सब्र का दामन हाथ से नहीं जाने देता।

सूरः हूद की आयात नं० (9/ 10/ 11) में अल्लाह तआ़ला ने इसी ह़क़ीक़त को बयान फ़रमाया है और उन मोमिनों को अलग कर दिया है जो सब्र से काम लेते हैं और अच्छा अ़मल करते हैं यानी जब उन्हें नेअ़मत मिलती है तो शुक्र अदा करते हैं और अगर कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो सब्र करते हैं।

84 قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ۭ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ۝

इस आयत में मोमिन की तअ़रीफ़ और काफ़िर की मज़म्मत बयान की गई है कि हर इन्सान अपने मज़हब व तरीक़े के मुताबिक़ अ़मल करता है। काफ़िर अपने तरीक़े पर चलता है और मोमिन अपने तरीक़े पर और हर शख़्स दावा करता है कि वह ह़क़ पर है, लेकिन हिदायत वाला कौन है इस का सह़ी इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह को है और क़ियामत के दिन हर एक को उस के अ़मल के मुताबिक़ बदला देगा।

85 وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ۭ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ۝

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' और 'इमाम अह़मद' वग़ैरहुम ने इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत की है कि यहूदे मदीना ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से रुह़ के बारे में सवाल किया तो यह आयत नाज़िल हुई और 'इब्ने इस्ह़ाक़' ने रिवायत की है कि यहूदे मदीना ने क़ुरैश को कहला भेजा कि वह अहले क़ह़फ़, ज़ुल् क़रनैन और रुह़ के बारे में पूछें। अगर वह दो के बारे में बताएँ और तीसरी चीज़ के बारे में ख़ामोशी अख़्तियार करें तो वह नबी हैं। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने सूरः कहफ़ नाज़िल की, जिस में अस्ह़ाबे कहफ़ और ज़ुल्क़रनैन का वाक़िआ़ है और यह आयत नाज़िल की जिस में रुह़ का ज़िक्र है।

ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि मैं नबी (सल्ल०) के साथ मदीना जा रहा था और वह अपनी सवारी में टेक लगाए हुए थे, चन्द यहूदियों के पास से गुज़र हुआ, किसी ने कहा कि इन से कुछ पूछो। कहने लगे कि रुह़ के सम्बन्ध में हमें बतलाएँ। आप (सल्ल०) कुछ देर के लिए ठहरे, फिर आप (सल्ल०) ने सर उठाया मुझे मालूम हो गया कि आप (सल्ल०) पर वह्य आ रही है, जब वह्य ख़त्म हुई तो आप ने यह आयत पढ़ी। **(बुख़ारी)**

'रुह़' कहते हैं अ़ज़ीम फ़रिश्ता जिब्रईल (अ़लै०) को या उस छुपी हुई चीज़ को जो पूरे इन्सानी जिस्म में फैली हुई होती है और जिस की वजह से इन्सान का जिस्म ज़िन्दा रहता है। यहाँ भी दूसरा अर्थ मुराद है, जिस की ह़क़ीक़त किसी इन्सान को न मालूम हुई है और न होगी। वह एक ऐसी चीज़ है जिस की ह़क़ीक़त का इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह को है। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ इन्सानो! तुम्हें तो बहुत ही मामूली सा इ़ल्म दिया गया है, इसलिए इस में न पड़ो कि रुह़ की ह़क़ीक़त क्या है?

इस आयते करीमा से इस बात की मुमानिअ़त साबित होती है। इन्सान रुह़ के विषय में ग़ैर ज़रूरी बेकार बह़स में न पड़े, इसलिए कि रुह़ की ह़क़ीक़त अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता है।

आयत नं० 86 से 99 तक

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿٨٦﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ
كَبِيْرًا ﴿٨٧﴾ قُلْ لَّىِٕنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿٨٨﴾
وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٨٩﴾ وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ
الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ﴿٩٠﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَاۗءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا
اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾ اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَاۗءِ ۭ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا
نَّقْرَؤُهٗ ۭ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَاۗءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا
رَّسُوْلًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰۗىِٕكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَىِٕنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ
وَبَيْنَكُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِهٖ ۭ وَنَحْشُرُهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰي وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ۭ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿٩٧﴾ ذٰلِكَ جَزَاۗؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا
كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٩٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ
لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٩٩﴾

अनुवाद-

(86) और अगर 'हम' चाहें तो जो वह्य 'हमने' आप की ओर की है, वह छीन लें फिर तुम उसके लिए 'हमारे' मुक़ाबले में अपना कोई हिमायती न पाओगे। (87) यह तो बस तुम्हारे रब' की रहमत है, हक़ीक़त में 'उसका' तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है। (88) कह दीजिए, ''अगर इन्सान और जिन्न इस के लिए इकट्ठे हो जाएँ कि इस कुर्आन जैसी कोई चीज़ बना लाएँ, तो इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे, चाहे वे आपस में एक-दूसरे के मददगार हों। (89) और 'हमने' इस कुर्आन में लोगों के लिए सब बातें तरह-तरह से बयान कर दी हैं, फिर भी अक्सर लोगों ने इन्कार करने के सिवा क़ुबूल न किया। (90) और कहने लगे, 'हम' तुम पर हरगिज़ ईमान न लाएँगे, जब तक तुम हमारे लिए ज़मीन से एक चश्मा (स्रोत) न जारी कर दो; (91) या ख़ुद तुम्हारे लिए एक बाग़ खजूरों या अंगूरों का हो और तुम उसके बीच बहती नहरें निकाल दो; (92) या तुम 'हम' पर आसमान से टुकड़े गिरा दो जैसा कि तुम दावा करते हो, या तुम अल्लाह या फ़रिश्तों को सामने ले आओ; (93) या फिर तुम्हारे लिए कोई घर ही सोने का हो, या तुम आसमान पर चढ़ जाओ; हम तो तुम्हारे चढ़ने पर भी ईमान नहीं लाएंगे, जब तक कि तुम हम पर कोई किताब न लाओ, जिसे हम पढ़ सकें'' कह दीजिए, "पाक है मेरा रब! क्या मैं एक इन्सानी रसूल के सिवा कुछ और हूँ"? (94) और लोगों को ईमान लाने से, जबकि हिदायत उनके पास आ गयी, इसके सिवा कोई चीज़ रूकावट नहीं हुई, कि कहने लगे, "क्या अल्लाह ने आदमी को रसूल बना कर भेजा है"? (95) कह दीजिए कि "अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते आबाद हो कर चलते- फिरते तो 'हम' उनके लिए ज़रूर आसमान से किसी फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजते"। (96) कह दीजिए, "मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही गवाह काफ़ी है 'वह' अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखने वाला, देखने वाला है"। (97) और जिस व्यक्ति को अल्लाह राह दिखाता है, वही राह पाया हुआ

है; और 'वह' जिसे गुमराह (पथभ्रष्ट) करे तो तुम अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार नहीं पाओगे, और क़ियामत के दिन 'हम' उन लोगों को औंधे मुँह अन्धे, गूँगे, और बहरे उठाएँगे, और उनका ठिकाना जहन्नम है, जब आग बुझने को होगी तो 'हम' और भड़का देंगे; (98) यह सज़ा है उनकी, इस वजह से कि वे 'हमारी' आयतों का इन्कार किया करते थे; और कहते थे, "जब हम हड्डियाँ और बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाएँगे तो क्या हमें नये सिरे से पैदा करके उठा खड़ा किया जाएगा"? (99) क्या वह यह नहीं देखते! कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, 'उसे' उन जैसों को भी पैदा करने की क़ुदरत है? और 'उसने' तो उनके लिए एक समय निश्चित कर रखा है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, इस पर भी ज़ालिमों ने इन्कार करने के सिवा कुछ नहीं माना।

आयत नं० 86 से 99 तक की व्याख्या

86-87 وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ۝ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ۝

अल्लाह तआ़ला अपने रसूल (सल्ल०) पर क़ुर्आन जैसी नेअ़मत का एह़सान जता रहा है, जो मोमिनों के हर मर्ज़ का इलाज और पूरी तरह़ रह़मत है। अगर वह चाहता तो आप (सल्ल०) के सीने से और काग़ज़ से मिटा देता और एक आयत भी बाक़ी न रहती और दुनिया की कोई हस्ती ऐसी न होती जो अल्लाह तआ़ला को इस से रोक सकती, लेकिन उस का यह फ़ज़्ल व करम है कि उस ने ऐसा नहीं किया बल्कि वह क़ियामत के क़रीब तक उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा और आप (सल्ल०) की नुबूव्वत की सदाक़त (सच्चाई) पर दलील व हुज्जत बनाकर उसे बाक़ी रखेगा।

आप (सल्ल०) पर अल्लाह का सिर्फ़ यही फ़ज़्ल व करम नहीं है बल्कि उस के एह़सानात आप पर बेशुमार हैं। अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को आख़िरी नबी बनाया, आसमान की ज़ियारत कराई, मेअ़राज की रात बैतुल् मक़्दिस में आप ने नबियों की इमामत कराई और क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला आप को शफ़ाअ़त की इजाज़त देगा।

88 قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ۝

'इब्ने इस्ह़ाक़' 'इब्ने जरीर' और 'इब्ने अबी ह़ातिम' वग़ैरह ने 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत नक़्ल की है कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा, अगर हम चाहें तो तुम्हारे क़ुर्आन जैसा कलाम ला सकते हैं और उस वक़्त तुम्हारा यह दावा बातिल हो जाएगा कि यह अल्लाह का कलाम (कथन) है और तुम्हारी नुबूव्वत के सच्चाई की दलील है तो अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को हुक्म दिया कि आप उन से कह दीजिए कि अगर तमाम इन्सान और जिन्न जमा होकर कोशिश करें कि वह क़ुर्आन जैसा कलाम ले आएँ तो वह ऐसा नहीं कर सकेंगे, इसलिए कि यह अल्लाह का कलाम है जो उस ने वह्य के ज़रिये अपने बन्दे और रसूल मुह़म्मद (सल्ल०) पर नाज़िल किया और

ज़माना गवाह है कि चौदह सदी गुज़र गई और कोई शख़्स कुर्आन जैसा कलाम नहीं ला सका।

89 وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝

अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों की हिदायत के लिए इस कुर्आन में हर वह बात और मिसाल बयान कर दी है जिस में ग़ौर व फ़िक्र उन्हें राहे रास्त पर लाकर खड़ा कर दे, लेकिन इन्सान का ह़ाल अ़जीब रहा है कि अक्सर लोगों ने इस से कोई फ़ायदा नहीं उठाया बल्कि कुफ़्र की राह अख़्तियार कर ली, कुर्आन को झुठलाया और यह उस के मुताबिक़ हुआ जिसे क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला लश्करे इब्लीस से जहन्नम को भर देगा।

90-93 وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ۝ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ۝ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَاۗءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ قَبِيْلًا ۝ اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَاۗءِ ۭ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ۭ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝

कुफ़्फ़ारे कुरैश की माँग-

कुफ़्फ़ारे कुरैश जब कुर्आन जैसा कलाम नहीं ला सके और इस दलील के सामने अपने आप को बिल्कुल बेबस पाया तो दूसरी निशानियों का मुताल्बा (Demand) करने लगे, जिन में से कुछ का ज़िक्र इन आयतों में आया है। उन्होंने कहा कि हम तुम्हारी तौह़ीद की दअ़वत पर उस वक़्त तक ईमान नहीं लाएँगे और क़ियामत के दिन और तुम्हारी नूबव्वत की उस वक़्त तक तस्दीक़ नहीं करेंगे जब तक तुम कोई निशानी न पेश करो।

ज़मीन में कोई ऐसा स्रोत जारी कर दो जिस का पानी हमेशा जारी रहे या तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ अपने आप वजूद में आ जाए जिन के दर्मियान नहरें जारी कर दो या अपने गुमान के मुताबिक़ आसमान को ही बतौर अ़ज़ाब के हमारे सरों पर गिरा दो या अल्लाह और फ़रिश्तों को हमारे सामने ले आओ जो तुम्हारी सदाक़त की गवाही दें या तुम्हारे लिए सोने का कोई घर ही अचानक निकल आए या सीढ़ी लगाकर आसमान पर चढ़ो और देखो तुम्हारे केवल आसमान पर चढ़ जाने से ही हम ईमान नहीं लाएँगे बल्कि ज़रूरी है कि वहाँ से किताब लेकर आओ जिस में हमें हुक्म दिया गया हो कि तुम पर ईमान ले आएँ और तुम्हारी पैरवी करें।

अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) से फ़रमाया, आप उन काफ़िरों से कहिए कि मैं तो एक इन्सान हूँ जिसे अल्लाह ने अपना रसूल बनाया है। एक बन्दा इन बातों पर कहाँ क़ुद्रत रखता है जिन का तुम ने ज़िक्र किया है, यह सब बातें तो सिर्फ़ अल्लाह के अख़्तियार में हैं।

94 وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَاۗءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ारे कुरैश का एक सन्देह बयान किया है जिसे कुर्आन

में बार-बार दोहराया गया है। वह इस बात मानने के लिए तैयार नहीं थे कि अल्लाह तआ़ला किसी इन्सान को अपना रसूल बना सकता है और उन का यही सन्देह रसूल (सल्ल०) पर ईमान लाने से रुकावट बन रहा था।

सूरः यूनुस आयत नं० (2) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः-

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنذِرِ النَّاسَ

"क्या लोगों को इस बात पर तअ़ज्जुब है कि हम ने उन्हीं में से एक आदमी पर वह्य नाज़िल की और उसे हुक्म दिया कि आप लोगों को ख़ौफ़ दिलाइए"?

95 قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَّسُولًا ﴿٩٥﴾

उन की शंका को दूर करते हुए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यह तो उस का फ़ज़्ल व करम है कि बन्दों की रहनुमाई के लिए उन्हीं जैसा रसूल भेजा ताकि उस की बात समझें और उस की ज़िन्दगी उन के लिए रहनुमाई का ज़रिया बने। अगर ज़मीन पर रहने वाले फ़रिश्ते होते तो हिक्मत का तक़ाज़ा यही होता कि उन की रहनुमाई के लिए उन्हीं जैसा कोई फ़रिश्ता रसूल बनाकर भेजा जाता ताकि वह उन की बातों को समझता और उस की ज़िन्दगी उन के लिए नमूना बनती। इसीलिए ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का! नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत का इन्कार बहुत दूर की बात है।

बेअ़सत अम्बिया की इसी हिक्मत को बयान फ़रमाते हुए अल्लाह तआ़ला ने सूरः बक़रः आयत नं० (151) में मुसलमानों से कहा हैः-

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥١﴾

यानी "जैसा कि हम ने तुम्हारी रहनुमाई के लिए तुम ही में से एक रसूल भेजा जो हमारी आयतें पढ़ कर सुनाता और तुम्हें पाक करता और कुर्आन व सुन्नत की तअ़लीम देता है और तुम्हें वह कुछ सिखाता है जो तुम नहीं जानते थे।"

96 قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾

इस में कुफ़्फ़ारे मक्का के लिए एक क़िस्म की धमकी है। अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को हुक्म दिया कि आप उन से कह दीजिए मैंने बहैसियत रसूल, अल्लाह का पैग़ाम तुम तक पहुँचा दिया है और मेरी सच्चाई व अमानत पर ख़ुद अल्लाह गवाह है जो अपने बन्दों के तमाम ह़ालात से बाख़बर और उन्हें देख रहा है, क़ियामत के दिन हर-एक को अपने अ़द्ल व इन्साफ़ के साथ उस के आ़माल का बदला देगा। इसलिए ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का! तुम्हारे लिए ख़ैर इसी में है कि मेरी नुबूव्वत पर ईमान ले आओ और दीन-ए-इस्लाम को क़ुबूल कर लो।

97 وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِهِ ۖ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا ۖ مَّأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ﴿٩٧﴾

हिदायत और गुमराही अल्लाह की तरफ़ से है। वह जिसे हिदायत देना चाहता है वह राहे रास्त

पर आ जाता है और जिसे वह ग़लत राह को अख़्तियार करने की वजह से गुमराह कर देता है, उसे न कोई राहे रास्त पर ला सकता है और न ही उस के ग़ज़ब से बचा सकता है।

इस में हिदायत पाने वाले के लिए मुफ़रद (एकवचन) की ज़मीर इस्तेमाल हुई है فَهُوَ الْمُهْتَدِ और गुमराहों के लिए जमअ़ (बहुवचन) की। ज़मीर فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस में इस तरफ़ इशारा है कि ह़क़ का रास्ता एक है और उसे अख़्तियार करने वाले कम होते हैं और कुफ़्र व गुमराही की राहें बहुत सी हैं और गुमराहों की तअ़दाद ज़्यादा होती है।

अल्लाह तआ़ला ने आगे फ़रमाया कि क़ियामत के दिन काफ़िरों को हम उन के चेहरों के बल घसीटेंगे। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः क़मर आयत नं० (48) में फ़रमाया है يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ

"जिस दिन कुफ़्फ़ार जहन्नम में अपने चेहरों के बल घसीटे जाएँगे।"

चूंकि वह दुनिया में अपनी आँखों से राहे ह़क़ को नहीं देख पाते थे, अपनी ज़बानों से कलिमा ह़क़ अदा नहीं करते थे और कानों से ह़क़ बात सुनना गवारा नहीं करते थे, इसलिए क़ियामत के दिन अन्धे, गूंगे और बहरे उठाए जाएँगे, उन का ठिकाना जहन्नम होगा, जिस की तपिश जब भी कम होगी अल्लाह उसे और ज़्यादा तेज़ कर देगा।

'ज़ुमख़्शरी' ने लिखा है कि चूंकि उन्होंने मौत के बाद उठाए जाने का इन्कार कर दिया था, इसीलिए अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उन के जिस्मों पर आग को मुसल्लत कर देगा, जो उन को खा जाएगी तो अल्लाह उन्हें दोबारा फिर बना देगा और इसी तरह़ जलने और दोबारा बनाए जाने का अ़मल जारी रहेगा ताकि दुनिया में मौत के बाद उठाए जाने के इन्कार की वजह से उस दिन उन के अफ़्सोस में इज़ाफ़ा (वृद्धि) होता रहे।

98 ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٩٨﴾

इस आयत में इस की ताईद है कि ऐसा बर्ताव उन के साथ इसलिए होगा कि उन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार कर दिया था और कहते थे कि जब हम मरकर सिर्फ़ हड्डियाँ और राख हो जाएँगे तो क्या हमें नये सिरे से पैदा कर के उठाया जाएगा?

99 اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٩٩﴾

काफ़िरों के इस शुब्हा को रद्द किया जा रहा है कि उन्हें आख़िर मौत के बाद दोबारा उठाए जाने पर क्यों ह़ैरत है? क्या वह अल्लाह जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया इस बात पर क़ादिर नहीं है कि क़ियामत के दिन उन जैसा इन्सान दोबारा पैदा कर दे? इस दलील को अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन मजीद की बहुत सी आयतों में बयान किया है।

सूरः यासीन आयत नं० (81) में फ़रमाया हैः-

اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۭ بَلٰى ۡ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ कि "जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है क्या वह इन को पैदा करने पर क़ादिर नहीं है? बेशक क़ादिर (क्षमता रखता)

है और वह बड़ा पैदा करने वाला, इल्म वाला है।"

अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दोबारा क़ब्रों से उठाने और ज़िन्दा करने की एक मुद्दत मुक़र्रर कर रखी है, जिस में कोई शुब्हा नहीं है और जब वह घड़ी आ जाएगी तो सारे लोग ज़िन्दा होकर ह़श्र के मैदान में जमा हो जाएँगे, लेकिन जो लोग अपने आप पर ज़ुल्म करने वाले होते हैं उन का तरीक़ा कुफ़्र ही होता है, वह तमाम खुली और रौशन निशानियों के बावजूद ईमान नहीं लाते हैं।

आयत नं० 100 से 111 तक

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْۤ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿۱۰۰﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ
اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿۱۰۱﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَاۤ اَنْزَلَ هٰۤؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّيْ
لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿۱۰۲﴾ فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ﴿۱۰۳﴾ وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ
فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ﴿۱۰۴﴾ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۱۰۵﴾ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى
مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿۱۰۶﴾ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖۤ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿۱۰۷﴾
وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿۱۰۸﴾ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴿۱۰۹﴾ قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ
اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿۱۱۰﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ
وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿۱۱۱﴾

अनुवाद-

(100) कह दीजिए, "अगर तुम मेरे रब की रह़मत के ख़ज़ाने के मालिक होते, तो ज़रुर तुम खर्च हो जाने के डर से रोके रहते, और इन्सान तो है ही बड़ा तंगदिल। (101) और 'हमने' मूसा को नौ खुली निशानियाँ दी थीं, जबकि वह बनी इस्राईल के पास आए थे, तो आप उनसे पूछिये; तो फ़िरऔन ने उनसे कहा, ''ऐ मूसा! मेरी समझ में तुम पर जादू किया गया है"। (102) उन्होंने कहा; "तू खूब जानता है कि आसमानों और ज़मीन के 'रब' के सिवा किसी और ने इन निशानियों को नहीं भेजा; और मैं समझता हूँ कि, ऐ फ़िरऔन तुमने अपने को हलाकत में डाल दिया"। (103) फिर उसने चाहा कि उनके क़दम ज़मीन (मिस्र) से उखाड़ दे, तो 'हमने' उसको और उसके साथियों को डुबो दिया। (104) और उसके बाद 'हमने' बनी इस्राईल से कहा, "तुम इस ज़मीन में रहो-बसो फिर जब आख़िरत का वादा आएगा, तो 'हम' तुम सब को इकट्ठा कर देंगे"। (105) और 'हमने' इस (कुर्आन) को ह़क़ ही के साथ नाज़िल किया है, और यह ह़क़ ही के साथ नाज़िल हुआ है, और 'हमने' तो तुमको बस खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है। (106) और कुर्आन को 'हमने' थोड़ा-थोड़ा कर के इसलिए उतारा, ताकि तुम ठहर-ठहर कर लोगों को इसे पढ़ कर सुनाते रहो, और 'हमने' इसे धीरे-धीरे उतारा है। (107) कह दीजिए, "तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ, जिन लोगों को इससे पहले इल्म दिया जा चुका है, जब यह उनको पढ़ कर सुनाया जाता है, तो वे ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं"। (108) और कहते हैं, "पाक है हमारा रब! बेशक हमारे 'रब' का वादा तो पूरा होकर ही रहता है"। (109) और वे रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं और इससे उनका ख़ुशूअ़ (विनम्रता) और बढ़ जाता है। (110) कह दीजिए, "तुम अल्लाह को पुकारो या रह़मान को पुकारो, या जिस नाम से भी पुकारो, उसके सब अच्छे ही नाम हैं"। और अपनी नमाज़ न बहुत ऊँची आवाज़ से पढ़िए और न उसे बहुत चुपके से पढ़िये बल्कि इन दोनों के बीच का रास्ता अपनाइए। (111) और कह दीजिए, "हर तरह की तअ़रीफें अल्लाह ही के लिए हैं, 'जिसने' न तो अपना कोई बेटा बनाया और न बादशाही में 'उसका' कोई साझीदार है, और न ऐसा ही है कि 'वह' बेबस कि कोई 'उसका' मदद्गार हो, और उसको बड़ा समझ कर उसकी खूब बड़ाइयाँ बयान कीजिए"।

आयत नं० 100 से 111 तक की व्याख्या

100 قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْۤ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ۝

मुश्रिकीने मक्का रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मुताल्बा (Demand) करते थे कि वह सफ़ा की पहाड़ी को सोने में और मक्का के इर्द-गिर्द की ज़मीनों को बाग़ों और नहरों में बदल दें। इसी का जवाब अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी दिया है कि अगर तुम मेरे रब की रह़मत के तमाम ख़ज़ानों के मालिक बन जाते तो भी तुम्हारी कन्जूसी दूर न होती और इस डर से ख़र्च न करते कि कहीं यह ख़ज़ाने ख़त्म न हो जाएँ इसलिए कि कन्जूसी इन्सान की फ़ित्रत में दाख़िल है।

जम्हूर का क़ौल है कि यहाँ 'इन्सान' से मुराद तमाम इन्सान हैं और 'ह़सन बसरी' का ख़याल है कि इस से मुराद मुश्रिकीन हैं। अल्बत्ता इस से वह लोग अलग हैं जिन की सिफ़ात सूरः मआ़रिज आयात नं० (19) से (34) तक में बयान की गई है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है:-

اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۝ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۝ وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۝ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى
صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ فِيْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۝ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝ وَالَّذِيْنَ
هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۝ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝ اِلَّا عَلٰۤى
اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ
هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ عَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝

"बेशक इन्सान बड़े कच्चे दिल वाला बनाया गया है। जब उसे मुसीबत पहुँचती है तो हड़बड़ा उठता है और जब राह़त मिलती है तो कन्जूसी करने लगता है, मगर वह नमाज़ी जो अपनी नमाज़ पर हमेशगी करने वाले हैं और जिन के मालों में मुक़र्रर ह़िस्सा है माँगने वालों का भी और सवाल से बचने वालों का भी और जो इन्साफ़ के दिन पर यक़ीन रखते हैं और जो अपने रब के अ़ज़ाब से डरते रहते हैं, बेशक उन के रब का अ़ज़ाब बेख़ौफ़ होने की चीज़ नहीं और जो लोग अपनी शर्मगाहों की (ह़राम से) ह़िफ़ाज़त करते हैं। हाँ, उन की बीवियों और लौंडियों के बारे में जिन के वह मालिक हैं उन्हें कोई मलामत (निन्दा) नहीं, जो कोई इस के अ़लावा राह ढूंढेगा तो ऐसे लोग ह़द से गुज़र जाने वाले होंगे और जो अपनी अमानतों को, अपने क़ौल व क़रार को हर वक़्त मह़फ़ूज़ रखते हैं और जो अपनी गवाहियों पर सीधे और क़ायम रहते हैं और जो अपनी नमाज़ों की ह़िफ़ाज़त करते हैं"।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस आयते करीमा से यह बात साबित होती है कि रोज़ी के ख़ज़ानों का मालिक सिर्फ़ अल्लाह है और वह बड़ा ही सख़ी (ख़र्च करने वाला) है। उस ने जब से आसमानों और ज़मीन को पैदा किया ख़र्च कर रहा है और उस के दाएँ हाथ में जो कुछ है वह ख़त्म नहीं हुआ है।

जैसा कि 'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' की रिवायत से साबित है।

101 وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से जब उन छः निशानियों का मुताल्बा किया जिन का ज़िक्र अभी आयात नं० (90) से (93) तक में गुज़रा तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। जिस से यह बयान करना है कि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को जो नौ निशानियाँ दी गई थीं वह उन्हीं के माँग के अनुसार थीं, लेकिन फिर भी फ़िरऔ़न और उस के मानने वाले ईमान नहीं लाए तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हलाक कर दिया।

अहले मक्का की माँग (Demand) के मुताबिक़ निशानियाँ इसलिए नहीं भेजी जा रही हैं कि अगर उन के वजूद में आ जाने के बाद भी वह ईमान नहीं लाएँगे तो उन्हें हलाक कर दिया जाएगा और अल्लाह उन्हें बिल्कुल ख़त्म नहीं करना चाहता है।

अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को दी गई नौ निशानियाँ इस तरह़ थीः-

(1) यद् बीज़ा।
(2) अ़सा-ए-मूसा।
(3) ख़ून।
(4) समुद्र के पानी का दो ह़िस्सा हो जाना।
(5) आले फ़िरऔ़न के माल व दौलत की बर्बादी।
(6) तूफ़ान।
(7) टिड्डी।
(8) जुएँ।
(9) मेंढ़क।

इन तमाम निशानियों को देख लेने के बाद भी फ़िरऔ़न ईमान नहीं लाया और कहने लगा कि ऐ मूसा! मैं समझता हूँ कि तुम्हारी अ़क़्ल में जादू की वजह से ख़लल पैदा हो गया है कि ऐसी बहकी-बहकी बातें करते हो। बाज़ ह़ज़रात ने 'मस्हूरा' का माने साह़िर किया है कि तुम जादू के ज़ोर से आ़दत के उल्टा चीज़ें पेश कर रहे हो।

सूरः नम्ल आयात नं० (13/ 14) में अल्लाह तआ़ला ने इसी वाक़िये को यूँ बयान फ़रमाया हैः-

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾ وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾

"बस जब आँखें खोल देने वाले हमारे मोअ़जिज़े (चमत्कार) पहुँचे तो वह कहने लगे कि यह तो खुला हुआ जादू है और उन्होंने इन्कार कर दिया ह़ालांकि उन के दिल यक़ीन कर चुके थे, सिर्फ़ ज़ुल्म व घमण्ड की बिना पर बस आप देख लीजिए कि फ़साद बरपा करने वालों का कैसा अन्जाम हुआ"।

102-103 قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ۝ فَاَرَادَ اَنْ یَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِیْعًا ۝

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने फ़िरऔ़न को जवाब देते हुए कहा, तुम्हें मालूम है कि यह निशानियाँ उस अल्लाह ने नाज़िल की हैं जो आसमानों और ज़मीन का रब है और सीधे दिल से अल्लाह की हिदायत तलब करने वालों के लिए इन में बड़ी नसीह़तें हैं, लेकिन तुम अपने घमण्ड की वजह से इन का इन्कार कर रहे हो और इन्हें जादू का असर बता रहे हो।

"ऐ फ़िरऔ़न! मेरा ख़याल है कि तुम अल्लाह की रह़मत से दूर कर दिये गये हो और आख़ीर में तुम हलाक कर दिये जाओगे।"

104 وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِیْفًا ۝

फ़िरऔ़न ने जब अपने आप को अल्लाह तआ़ला की नाज़िल की हुई निशानियों के सामने मजबूर पाया तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और बनी इस्राईल के ख़िलाफ़ अपनी आर्थिक ताक़त इस्तेमाल करने पर तुल गया और उन्हें सरज़मीने मिस्र से जिलावतन (वतन से बाहर) करने का फ़ैसला कर लिया या सब को क़त्ल कर देना चाहा, लेकिन अल्लाह तआ़ला पर कौन ग़ालिब आ सकता है?

चुनाँचे अल्लाह ने फ़िरऔ़न और उस के लश्कर को डुबो दिया और बनी इस्राईल को ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की ज़बानी हुक्म दिया कि वह शाम व फ़िलिस्तीन की सरज़मीन में ठहरें और फिर एक वक़्त ऐसा आया कि बनी इस्राईल के लोग फ़िरऔ़न के माल व दौलत और ज़मीन व ज़ायदाद के मालिक बन गये।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि इस आयते करीमा में जो मक्का मुकर्रमा में हिजरत से पहले नाज़िल हुई थी, रसूलुल्लाह (सल्ल०) को फ़तेह़ मक्का की ख़ुशख़बरी दी गई है कि अल्लाह तआ़ला ने जिस तरह़ 'बनी इस्राईल' को मिस्र का मालिक बना दिया था, उसी तरह़ अगरचे आप मक्का में कमज़ोर हैं और यहाँ से आप को निकल जाना पड़ेगा, लेकिन एक वक़्त आएगा कि आप यहाँ फ़ातेह़ की ह़ैसियत से दाख़िल होंगे। चुनांचे ऐसा ही हुआ कि आपको मक्का से काफ़िरों के ज़ुल्म व सितम से तंग आकर निकल जाना पड़ा, लेकिन चन्द ही साल बाद वहाँ फ़ातेह़ की ह़ैसियत से दाख़िल हुए और अहले मक्का आप के क़ब्ज़े में आ गये जिन्हें आप ने अपने करम से छोड़ दिया।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि जब क़ियामत क़रीब होगी तो अच्छे और बुरे तमाम लोग एक साथ ज़िन्दा किये जाएँगे, फिर अल्लाह तआ़ला उन के दर्मियान अपना फ़ैसला फ़रमाएगा, नेक और बुरे लोगों को उन के आ़माल के मुताबिक़ बदला देगा।

105 وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِیْرًا ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उस ने क़ुर्आन में जो हुक्म बयान किये हैं वह उस के इ़ल्म का एक ह़िस्सा है और क़ुर्आन ऐसी किताब है जो तमाम शुब्हात से बालातर है, न इस

में इन्सानों की तरफ़ से कोई ज़्यादती हुई है और न ही कोई कमी। जैसा कि सूरः फ़ुस्सिलत आयत नं० (42) में आया है:-

لَّا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ

"जिस के क़रीब बातिल फटक भी नहीं सकता, न उस के आगे से न उस के पीछे से"।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को ख़िताब कर के फ़रमाया कि हम ने आप को यह क़ुदरत देकर नहीं भेजा है कि लोगों के दिलों में ईमान पैदा कर दें, आप का काम तो सिर्फ़ दअ़वत व तब्लीग़ है, अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करने वालों को जन्नत की ख़ुशख़बरी दे दें और नाफ़रमानी करने वालों को जहन्नम से डराएँ।

106 وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने क़ुर्आने करीम को तेईस सालों में हिक्मत के तक़ाज़े के मुताबिक़ नाज़िल किया है और ऐसा इसलिए किया है ताकि आप इस की तअ़लीम सह़ाबा को देते रहें और लोगों के ह़ालात के मुताबिक़ अल्लाह के आदेश नाज़िल होते जाएँ और उन के दिल व दिमाग़ में बैठते जाएँ।

107-109 قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖۤ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۝ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ۝ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ۝ सज्दः

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हुक्म दिया गया है कि काफ़िरों को एह़सास दिलाएँ कि अल्लाह और रसूल की निगाह में उन की कोई ह़ैसियत नहीं है, न उन का ईमान लाना कोई बड़ी अहम बात है और न ही उन के कुफ़्र व हठधर्मी से किसी और को कोई नुक़्सान पहुँचेगा। अगर वह अल्लाह पर ईमान नहीं लाएँगे और क़ुर्आन को उस की किताब तस्लीम नहीं करेंगे तो क्या होता है? इन से बहुत ही अच्छे लोग यानी अहले किताब के नेक उ़ल्मा जैसे- 'अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम' 'सल्मान फ़ारसी' और 'नज्जाशी' आदि इसे अल्लाह की किताब और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को रसूल मान चुके हैं, जिन की ख़ुशख़बरी तौरेत व इन्जील में दी जा चुकी है।

इन उ़ल्मा का ह़ाल यह है कि जब इन के सामने क़ुर्आन की तिलावत की जाती है तो अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए अपने ठुड्डियों और सरों के बल सज्दे में चले जाते हैं कि उस ने उन पर एह़सान किया है कि उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) का ज़माना पाया और उन पर और क़ुर्आन पर ईमान ले आए और उस की पाकी (पवित्रता) बयान करते हैं कि उस ने अपना वादा पूरा कर दिखाया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को दुनिया वालों की हिदायत व रहनुमाई के लिए भेज दिया और वह कहते हैं कि हमारे रब का हर वादा पूरा होकर रहता है और क़ुर्आन की नसीह़त को सुनकर शिद्दते तासीर से अपनी ठुड्डियों के बल सज्दे में गिर-गिर कर रोते हैं और अल्लाह के लिए इन्किसारी (अधर्मी) में इज़ाफ़ा हो जाता है।

110 قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝

इब्ने जरीर और इब्ने मरदूविया ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने एक दिन मक्का में नमाज़ पढ़ी तो दुआ़ में या अल्लाह! या रह़मान! कहा, काफ़िरों ने सुन कर कहा कि इस बेदीन (अधर्मी) को देखो हमें तो दो उपास्यों को पुकारने से रोकता है और ख़ुद उस पर अ़मल नहीं करता तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। "अल्लाह के बहुत से अच्छे-अच्छे नाम हैं, उसे इन नामों में से जिस नाम से चाहो पुकारो"।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि:-

यह आयत उस वक़्त उतरी जब आप मक्का में काफ़िरों से छुपते, जब आप सह़ाबा को नमाज़ पढ़ाते तो बुलन्द आवाज़ से पढ़ाते। जब मुश्रिक क़ुर्आन सुनते तो क़ुर्आन, 'साह़िबे क़ुर्आन' और क़ुर्आन लाने वाले जिब्रईल सब को बुरा भला कहते। उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को हुक्म दिया कि नमाज़ में क़ुर्आन बुलन्द आवाज़ से न पढ़िए कि मुश्रिक क़ुर्आन को बुरा भला कहें और न ही इतनी आहिस्ता पढ़ें कि आप (सल्ल०) के सह़ाबा (रज़ि०) भी न सुन सकें, बल्कि दर्मियानी राह अख़्तियार करें। (**बुख़ारी**

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ उस वक़्त नाज़िल हुई जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) मक्का में छुप कर अ़िबादत करते थे और जब सह़ाबा के साथ नमाज़ पढ़ते तो बुलन्द आवाज़ से क़ुर्आन करीम की तिलावत करते। मुश्रिकीन सुनकर क़ुर्आन और उस के नाज़िल करने वाले को गाली देते।

आप को हुक्म दिया गया कि अपनी आवाज़ ज़्यादा ऊँची न करें ताकि मुश्रिकीन न सुन सकें और न इतनी धीमी आवाज़ से तिलावत करें कि सह़ाबा न सुन सकें। यह हुक्म इस्लाम के शुरु में था, बाद में सुन्नत यह क़रार पाया कि फ़ज्र, मग़्रिब और अ़िशा की पहली दो रकअ़तों में बुलन्द आवाज़ से क़ुर्आन की तिलावत की जाए।

111 وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۝

इस आख़िरी आयत में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया है कि वह अल्लाह की बड़ाई बयान करते हुए कहें कि वही अकेला हर तरह़ की तअ़रीफ़ का ह़क़्दार है जिस की कोई औलाद नहीं। जैसा कि बाज़ अ़रबों ने फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ कहा और यहूद ने 'ह़ज़रत उ़ज़ैर' (अ़लै०) को और नसारा ने 'ह़ज़रत ईसा' (अ़लै०) को अल्लाह का बेटा क़रार दिया, उस अल्लाह का तो कोई शरीक नहीं है। जैसा कि मुश्रिकीन-ए-अ़रब ह़ज में तल्बिया पुकारते हुए कहते हैं कि:-

لبيك لاشريك لك لبيك إلا شريكا هو لك

"ऐ अल्लाह! तेरा कोई शरीक नहीं, मगर वह जो तेरा शरीक है।" और न ही इस में ज़िल्लत और आ़जिज़ी पाए जाने की वजह से उस का कोई वली और दोस्त है। जैसा कि बेदीन और मजूस कहा करते थे कि अगर अल्लाह के दोस्त न होते तो अल्लाह को ज़िल्लत होती।

यहाँ चेतावनी के तौर पर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (सल्ल०) से फ़रमाया, आप यह बयान कर दें कि मेरा रब इस से बुलन्द है कि उस में किसी तरह़ की ख़राबी या ऐ़ब या मुह़ताजी हो।

(भाग-18)

सूर-ए-कहफ़

(सूरः नं.18)

तफ़्सीर सूरः कहफ़

नाम- इस का नाम आयत नं० (10) إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ से लिया गया है और इसकी वजह यह है कि 'अस्हाबे कहफ़' के क़ब्ज़े में अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाने और उस पर जमे रहने के बहुत से फ़ायदे बयान किये गये हैं।

नाज़िल होने का ज़माना-

'क़ुर्तुबी' ने लिखा है कि यह सूरः तमाम मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक मक्की है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) का यही क़ौल है और आयतों को देखने से मालूम होता है कि यह सूरत उस वक़्त नाज़िल हुई जब मुसलमानों पर अहले मक्का का ज़ुल्म व सितम इन्तिहा को पहुँच रहा था, ताकि अस्हाबे कहफ़ का वाक़िआ़ सुनाकर मुसलमानों की हिम्मत अफ़्ज़ाई की जाए और उन्हें बतलाया जाए कि उन से पहले मुसलमानों पर इस से ज़्यादा ज़ुल्म किया गया, लेकिन उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

कुछ लोगों का ख़याल है कि इस के शुरु की आयतें (एक से आठ) और आयत नं० (28) और आयात नं० (107) से (110) तक मदनी है।

फ़ज़ीलत-

'इमाम अह़मद' 'मुस्लिम' 'अबूदाऊद' 'तिर्मिज़ी' और 'नसई' आदि ने रिवायत नक़्ल की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिस ने सूरः कहफ़ के शुरु की दस आयतें याद कर लीं वह दज्जाल के फ़ित्ने से महफ़ूज़ (सुरक्षित) हो गया" और ह़ाकिम ने ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो शख़्स जुमअ़ के दिन सूरः कहफ़ की तिलावत करेगा उस के लिए दोनों जुमों के दर्मियान 'एक नूर' रौशनी किये होगा"।

आयत नं० 1 से 16 तक

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ یَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۜ﴿۱﴾ قَیِّمًا لِّیُنْذِرَ بَاْسًا شَدِیْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَیُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ
یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ﴿۲﴾ مَّاكِثِیْنَ فِیْهِ اَبَدًا ۙ﴿۳﴾ وَّیُنْذِرَ الَّذِیْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۚ﴿۴﴾ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا
لِاٰبَآىِٕهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ یَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝﴿۵﴾ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰۤی اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ یُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِیْثِ
اَسَفًا ۝﴿۶﴾ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَی الْاَرْضِ زِیْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَیُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝﴿۷﴾ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَیْهَا صَعِیْدًا جُرُزًا ۝﴿۸﴾ اَمْ حَسِبْتَ
اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِیْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰیٰتِنَا عَجَبًا ۝﴿۹﴾ اِذْ اَوَی الْفِتْیَةُ اِلَی الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَیِّئْ
لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ۝﴿۱۰﴾ فَضَرَبْنَا عَلٰۤی اٰذَانِهِمْ فِی الْكَهْفِ سِنِیْنَ عَدَدًا ۙ﴿۱۱﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْۤا
اَمَدًا ۝﴿۱۲﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًی ۖ﴿۱۳﴾ وَّرَبَطْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا شَطَطًا ۝﴿۱۴﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ لَوْلَا یَاْتُوْنَ
عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ۝﴿۱۵﴾ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَی الْكَهْفِ
یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَیُهَیِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ۝﴿۱۶﴾

अनुवाद-

(1) सब तअ़रीफें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने अपने बन्दे पर (यह) किताब नाज़िल की और इस में कोई टेढ़ नहीं रखी (2) ठीक और दुरूस्त (किताब) ताकि वह सख़्त अ़ज़ाब से डराए जो 'उसकी' ओर से आ पड़ेगा, और ईमान लाने वालों को जो भले काम करते रहते हैं, खुशख़बरी सुना दें कि उनके लिए अच्छा बदला है; (3) जिस में वे हमेशा-हमेश रहेंगे। (4) और उन लोगों को भी डराए, जो कहते हैं ''अल्लाह ने (किसी के) बेटा बना लिया है। (5) उनको इस बात का कुछ भी इल्म नहीं और न उनके बाप-दादा ही को था, बड़ी सख़्त बात है, जो उनके मुहँ से निकलती है, यह केवल झूठ बकते हैं। (6) तो शायद, आप उनके पीछे अगर वह ईमान न लाएँ, तो अफ़सोस के मारे (क्या) अपनी जान दे देंगे। (7) जो चीज़ ज़मीन पर है उसको 'हमने' उसके लिए ज़ीनत (शोभा) बनाया ताकि लोगों को आज़माएं, कि उनमें बेहतर अ़मल करने वाला कौन है? (8) और जो कुछ उस (धरती) पर है उसे तो 'हम' एक चटियल मैदान बना देने वाले हैं। (9) क्या आप समझते हैं कि कहफ़ (गुफ़ा) और रक़ीम वाले हमारी अद्भुत निशानियों में से थे? (10) जब उन नौजवानों ने गुफ़ा में जाकर पनाह ली, तो कहा, "हमारे रब! हमें अपने यहाँ से रहमत उतार, और इस मामले में हमारी रहनुमाई का सामान कर दे"। (11) फिर 'हमने' उस गुफ़ा में सालों-साल तक उनके कानों पर पर्दा डाल दिया। (12) फिर 'हमने' उन्हें उठाया ताकि 'हम' मालूम करें कि कौन दोनों गिरोहों में से जानने वाला है, कि कितनी अवधि तक वे रहे। (13) 'हम' उनका क़िस्सा ठीक-ठीक बयान करते हैं, वे कुछ नौजवान थे जो अपने 'रब' पर ईमान लाए थे, और 'हमने' उन्हें हिदायत में तरक़्क़ी दी थी। (14) और 'हमने' उनके दिलों को मज़बूत कर दिया, जब वे उठे तो उन्होंने कहा, ''हमारा 'रब' वही है जो आसमानों और ज़मीन का 'रब' है, हम तो उसके अ़लावा किसी मअ़बूद (उपास्य) को न पुकारेंगे, (अगर हम ने ऐसा किया) तो उस समय हमने अ़क़्ल से दूर की बात कही। (15) यह हमारी क़ौम के लोग हैं, जिन्होंने उसके सिवा दूसरों

को मअ़बूद बना लिए हैं, भला यह उन पर कोई खुली दलील क्यों नहीं लाते। तो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा, जो अल्लाह पर झूठ गढ़े? (16) और जब तुम लोग इनसे, और जिन की यह अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं उनसे अलग हो गये हो; तो गुफ़ा में पनाह लो, तुम्हारा 'रब' तुम पर रह़मत फैला देगा, और तुम्हारे लिए तुम्हें कामियाबी का सामान पैदा कर देगा।

आयत नं० 1 से 16 तक की व्याख्या

1 اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ یَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ؕ

अल्लाह तआ़ला ने बहुत सी सूरतों की शुरुआ़त और ख़त्म में अपनी तअ़रीफ़ बयान की है और इस उस्लूबे कलाम से इस ओर इशारा होता है कि वह ज़ात हर ह़ाल में ह़म्द व तअ़रीफ़ के लायक़ है और बन्दों को यह तअ़लीम देनी होती है कि हर अच्छी चीज़ की शुरुआ़त और ख़ात्मा अल्लाह की ही तअ़रीफ़ के साथ होनी चाहिए।

इस आयते करीमा में अल्लाह ने अपनी बड़ाई इस बात पर बयान की है कि उस ने बन्दों की हिदायत के लिए क़ुर्आने करीम नाज़िल फ़रमाया, जो उस की बहुत बड़ी नेअ़मत है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को 'अब्द' शब्द के साथ इसलिए ज़िक्र किया गया है ताकि आप की और क़ुर्आन करीम की बड़ाई ज़ाहिर हो और यह भी ज़ाहिर हो कि आप (सल्ल०) अल्लाह के बन्दे हैं और यही आप का मक़ाम है, न यह कि उन्हें अल्लाह का बेटा कहा जाए। जैसा कि नसारा ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के बारे में गुमान रखते हैं कि वह अल्लाह के बेटे हैं।

क़ुर्आन में न शब्दिक एतिबार से कोई कमी है, न ही उस के मआ़नी में विरोध है और न लोगों को ह़क़ व बड़ाई की तरफ़ बुलाने के अ़लावा उस का कोई और पैग़ाम है।

'ह़ज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु' से रिवायत है कि वह रात को यह सूरः पढ़ रहे थे कि एक 'अबरिया ग़ुबार' (बवंडर, बगोले, गिर्दबार या हवा का चक्कर) की तरह़ एक चीज़ ने उन्हें ढ़ांप लिया। उन्होंने आप (सल्ल०) से इस का ज़िक्र किया तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, यह सकीनत है जो क़ुर्आन के लिए नाज़िल हुई। (**बुख़ारी**)

2 قَیِّمًا لِّیُنْذِرَ بَاْسًا شَدِیْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَیُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ

अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में क़ुर्आन करीम को "**क़ैयिम**" कहा यानी यह क़ुर्आन बड़ी संतुलित किताब है, हर कमी-ज़्यादती से पाक और तमाम पिछली आसमानी किताबों पर भारी है, जिस बात को यह ह़क़ बताता है वह ह़क़ है और जिसे बातिल क़रार देता है वह बातिल है, जैसा कि ऊपर बताया गया।

3 مَّاكِثِیْنَ فِیْهِ اَبَدًا ۙ

क़ुर्आन करीम का मिशन यह है कि अहले शिर्क और गुनाहगार को अल्लाह के दुनिया व आख़िरत

के अ़ज़ाब से डराता है और मोमिनीन सालिह़ीन को जन्नत की ख़ुशख़बरी देता है जिस के नीचे नहरें जारी होंगी और जिस में वह लोग हमेशा रहेंगे।

4 وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۝

इस आयत में बताया गया है कि यह क़ुर्आन बतौर ख़ास उन यहूद व नसारा और मुश्रिकीने अ़रब को डराता है जो अल्लाह पर आरोप लगाते हुए कहते हैं कि अल्लाह के बेटा है।

5 مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝

इस आयत में बयान किया गया है कि यह ऐसी झूठी बात है जिस की बुनियाद जिहालत पर है। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने इस की बुराई बयान करते हुए फ़रमाया कि इन्होंने अल्लाह रब्बुल् आ़लमीन के ख़िलाफ़ अपने मुँह से ऐसी ग़लत बात निकाली है जिस का ह़क़ीक़त या वाक़िआ़ से ज़र्रह बराबर भी सम्बन्ध नहीं है, यह केवल आरोप है।

6 فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ۝

इस आयते करीमा में आप (सल्ल०) को तसल्ली और नसीह़त की गई है कि अगर मुश्रिकीने मक्का आप पर और क़ुर्आन पर ईमान नहीं लाते तो आप को इस पर इतना ग़मग़ीन नहीं होना चाहिए कि अपनी जान को हलाकत में डाल लें, आप को सब्र से काम लेना चाहिए और अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रहना चाहिए कि वह जिसे चाहता है हिदायत देता है और जिसे चाहता है गुमराह कर देता है। उस के फ़ैसले में कोई रुकावट (Interfere) नहीं डाल सकता।

7-8 اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۝

यह दुनिया इम्तिह़ान की जगह है ठहरने की नहीं। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन पर विभिन्न प्रकार के ह़ैवानात पैदा किये और उसे दरख़्तों, नहरों और फूल पत्तों से ज़ीनत बख़्शी और विभिन्न प्रकार की नेअ़मतों से उसे भर दिया ताकि देखे कि कौन रंगीनियों में फँस कर रह जाता है और कौन शहवतों और ख़्वाहिशात पर प्रभावी होकर अल्लाह की बन्दगी की ओर आता है और एक दिन ऐसा आएगा कि ज़मीन और उस पर मौजूद तमाम चीज़ें ख़त्म हो जाएँगी और ज़मीन मैदान बन जाएगी।

'मुफ़स्सिरीन' लिखते हैं कि इन दोनों आयतों में भी नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि आप परेशान न हों और ग़म न करें, इसलिए कि जिस दुनिया और उस की लज़्ज़तों और शहवतों के लिए आप से कुफ़्फ़ार दुश्मनी करते हैं, उसे बहरह़ाल ख़त्म हो जाना है और सब को हमारे पास लौट कर आना है ताकि उन के आ़माल का उन्हें बदला चुकाया जाए।

9 اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝

अस्ह़ाबे कहफ़ और अस्ह़ाबे रक़ीम

यहाँ से 'अस्ह़ाबे कहफ़' का क़िस्सा शुरु हो रहा है। 'कहफ़' ग़ार या गुफ़ा को कहते हैं। चन्द

नौजवान अपने ज़माने के बादशाह और दूसरे काफ़िरों से अपनी जान और दीन व ईमान बचाने के लिए एक ग़ार में पनाह ले लिया था इसलिए उन्हें अस्ह़ाबे कहफ़ के नाम से याद किया जाता है, उन का वाक़िआ इन्शाअल्लाह आइन्दा आने वाले दो रुकूअ़ में बयान किया जाएगा, लेकिन चूंकि इस आयत में اَصۡحٰبَ الۡكَهۡفِ وَالرَّقِيۡمِ فरमाया है, इसीलिए 'रक़ीम' का अर्थ भी जानना चाहिए। इस के बारे में कुछ लोगों ने फ़रमाया कि यह अ़स्ह़ाबे कहफ़ के कुत्ते का नाम है।

यह ह़ज़रत अनस (रज़ि०) और ह़ज़रत शअ़बी ताबई़ (रह़०) से मन्कूल है कि 'ह़ज़रत सअ़ीद बिन जुबैर' (रज़ि०) ने फ़रमाया कि यह एक तख़्ती थी जो पत्थरों से तराशी (लिखी) हुई थी, इस में 'अस्ह़ाबे कहफ़' का क़िस्सा लिखा हुआ था, जो ग़ार (गुफ़ा) के दरवाज़े पर रखी हुई थी और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से मरवी है कि यह एक ऐसी किताब थी जिस में ह़ज़रत ई़सा (अ़लै०) की शरीअ़त की बातें लिखी हुई थीं और 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) का दूसरा क़ौल यह है कि यह 'ऐलिया' और 'फ़िलिस्तीन' के दर्मियान वादी का नाम है और इसी वादी में वह ग़ार था जिस में अस्ह़ाबे कहफ़ ने पनाह ली थी। 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) से यह भी मरवी है कि जब उन से 'रक़ीम' के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया कि मुझे मालूम नहीं, फिर फ़रमाया कि मैंने 'कअ़ब' से पूछा (जो यहूदियों के आ़लिम थे उन्होंने ह़ज़रात सह़ाब-ए-किराम के ज़माने में इस्लाम क़ुबूल किया) कि 'रक़ीम' उस बस्ती का नाम है जिस में से यह ह़ज़रात निकले थे। **(साह़िबे रूहुल् मआ़नी पेज नं० 409 भाग 15)**

सब को सामने रखने से मालूम हुआ कि 'अस्ह़ाबे कहफ़ वल् रक़ीम' की ह़क़्दार एक ही जमाअ़त है। फिर एक क़ौल नक़्ल किया है कि 'अस्ह़ाबे कहफ़' और 'अस्ह़ाबे रक़ीम' अलग-अलग दो जमाअ़तें थीं, लेकिन इस क़ौल की उन्होंने ताईद नहीं की और 'अस्ह़ाबे रक़ीम' के बारे में सह़ीह ह़दीसें मिलती भी नहीं हैं।

अस्ह़ाबे कहफ़-

'अस्ह़ाबे कहफ़' के बारे में 'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने "अल् बिदाया वल् निहाया" (पेज 114 भाग 2) में लिखा है कि यह लोग बादशाहों की औलाद में से थे। एक दिन ई़द के मौक़े पर अपनी क़ौम के साथ इकट्ठा होने का इत्तिफ़ाक़ हो गया उन्होंने देखा कि उन की क़ौम मूर्तियों को सज्दः कर रही है और मूर्तियों के सम्मान में लगी हुई है उन का यह ह़ाल देखकर उन से नफ़रत हो गई।

अल्लाह तआ़ला ने उन के दिलों के पर्दे उठा दिये और उन के दिलों में हिदायत डाल दी, उन्होंने समझ लिया कि यह लोग सह़ी दीन पर नहीं हैं इसलिए उन लोगों को छोड़ कर अलग हो गये और अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद को अपना दीन बना लिया, चूंकि वह यह समझते थे कि अगर हम उन लोगों में रहेंगे तो यह हमें एक अल्लाह को मानने पर नहीं रहने देंगे, इसलिए उन्होंने ग़ार (गुफ़ा) में पनाह ले ली, उन के साथ एक कुत्ता भी था जो उनके दरवाज़े पर बैठा रहता था।

कहफ़ और रक़ीम वाले हमारी निशानियों में से अ़जीब चीज़ थे, मगर इस से बढ़कर दूसरी अ़जायबात और आयात भी मौजूद हैं।

जैसे- आसमान व ज़मीन को पैदा फ़रमाना। जो चीज़ें न थीं उन को अल्लाह तआ़ला ने पैदा फ़रमा दिया। 'अस्ह़ाबे कहफ़' के क़िस्से में इतनी बात है कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें लम्बे वक़्त तक सुला दिया और उनके जिस्म नहीं गले। विरोधी उन के वाक़िये को तो तअ़ज्जुब की चीज़ समझते हैं इसीलिए आप से सवाल कर रहे हैं और इस से बढ़कर जो तअ़ज्जुब की चीज़े हैं उन में ग़ौर नहीं करते। अल्लाह तआ़ला ने اَمْ حَسِبْتَ फ़रमा कर आप को मुख़ातब फ़रमाया और फिर दूसरों से भी ख़िताब हो गया और उन को भी बता दिया कि यह क़िस्सा चाहे अ़जीब हो, लेकिन इस से बढ़ कर जो अ़जीब चीज़ें हैं उन के मुक़ाबिले में यह कुछ भी अ़जीब नहीं है।

10-12 اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ۝ فَضَرَبْنَا عَلٰۤى اٰذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۝ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْۤا اَمَدًا ۝

अस्ह़ाबे कहफ़ का ग़ार (गुफ़ा) में दाख़िल होना

इस के बाद 'अस्ह़ाबे कहफ़' के वाक़िये का बयान शुरु फ़रमाया। इर्शाद फ़रमाया कि उस वक़्त को याद करो जबकि नौजवानों की जमाअ़त ने 'कहफ़' को ठिकाना बनाया और ठिकाना बनाते हुए उन्होंने अल्लाह तआ़ला के सामने यूँ दुआ़ की कि رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ऐ रब! हमें अपने पास से रह़मत अ़ता फ़रमा وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ۝

और हमारे लिए हमारे काम में अच्छी सूरतेह़ाल मुहैया कर दीजिए।

सब कुछ अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी और इरादे से होता है और वह जिस पर फ़ज़्ल फ़रमाना चाहे हर जगह फ़ज़्ल फ़रमा सकता है। कोई शख़्स जहाँ भी हो, जिस ह़ाल में हो, तन्हा हो, बाजमाअ़त (समूह) हो, आबादी में हो या जंगल में, पहाड़ में हो या ग़ार (गुफ़ा) में, अल्लाह तआ़ला उसे दुश्मनों से भी महफ़ूज़ रख सकता है उस के दीन ईमान को भी सलामत और उस के तमाम ह़ालात को भी दुरुस्त फ़रमा सकता है।

चूंकि 'अस्ह़ाबे कहफ़' अपनी क़ौम को कुफ़्र व शिर्क में मुब्तिला देखकर फ़रार हुए थे और उस इलाक़े में ग़ल्बा काफ़िरों ही का था, इसलिए उन्होंने अल्लाह तआ़ला की बारगाह में रह़मत, ख़ैर व ख़ूबी और अच्छी सूरतेह़ाल की दुआ़ की।

अल्लाह तआ़ला ने उन की दुआ़ क़ुबूल फ़रमाई, काफ़िरों से महफ़ूज़ फ़रमा दिया और उसी ग़ार (गुफ़ा) में उन्हें सुला दिया जिस में उन्होंने पनाह ली थी और वह इस में इतने लम्बे वक़्त तक सोये और सोकर उठने के बाद आपस में यूँ सवाल करने लगे कि भाई इस ग़ार में आप लोग कितने दिन ठहरे हैं? इसी को फ़रमायाः-

ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْۤا اَمَدًا ۝

फिर हम ने उन्हें उठाया ताकि हम जान लें कि दोनो गिरोह में कौन सा गिरोह उन के ठहरने की मुद्दत को अच्छी तरह़ शुमार करने वाला है।

क़ुर्आन करीम के इशारे, मुफ़स्सिरीन और तारीख़ी रिवायात से मालूम होता है कि यह सात नौजवान तौह़ीद परस्त थे, जो ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के मानने वाले थे, उन का समाज मुश्रिक था। उस वक़्त का रूमी बादशाह क़ैसर डीसिज़ Decius 249–251 ईसाईयों पर ज़ुल्म ढ़ाने में बहुत बद्नाम था। इस इलाक़े का नाम अफ़सस (Ephsus) था उस के खण्डरात तुर्की के मशहूर शहर 'इ़मरना' के क़रीब पाये गये हैं चुनाँचे नौजवानों ने ज़ुल्म व सितम और अपने ईमानों को बचाने के लिए एक ग़ार में छुपने का फ़ैसला किया।

अल्लाह से उन लोगों ने दुआ़ की कि अपनी रह़मत से हमें साबित क़दम रख और हमारी रहनुमाई फ़रमा, चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने उन की दुआ़एँ क़ुबूल फ़रमाई कि उन पर कई साल के लिए नींद तारी हो गई।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि पहले गिरोह से उन्हीं में की वह जमाअ़त मुराद है जिन्होंने सवाल किया था कि कितने दिन रहे और दूसरे गिरोह से उन की वह जमाअ़त मुराद है जिन्होंने जवाब में यूँ कहा:-

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ

तुम्हारा रब हीं ज़्यादा जानता है कि तुम कितने दिन ठहरे।

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से नक़्ल किया गया है कि एक गिरोह से 'अस्ह़ाबे कहफ़' और दूसरे गिरोह से वह बादशाह मुराद हैं जो इस लम्बी मुद्दत में (जिस में यह ह़ज़रात सोते रहे) एक के बाद दूसरे बादशाह बने। (रूहुल् मआ़नी पेज नं० 212 भाग 15)

अल्लाह तआ़ला ने 'अस्ह़ाबे कहफ़' पर जो नींद मुसल्लत फ़रमा दी थी उसे فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ फ़रमाया, इन्सान सोता तो है आँखों से लेकिन वह ग़हरी नींद होती है जबकि सोने वाला आवाज़ सुनकर भी बेदार न हो सके। 'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' लिखते हैं:-

والمراد انمناهم انامة ثقيلة لا تنبههم فيها الاصوات بان يجعل الضرب على الاذان كناية عن الانامة الثقيلة

13-16 نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ۝ وَّرَبَطْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ۝ هٰٓؤُلَاۗءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَيِّنٍ ۭ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا ۝ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ۝

अस्ह़ाबे कहफ़ का तफ़्सीली वाक़िआ़

जैसा कि इस से पहले हम ने ज़िक्र किया कि यह चन्द नौजवान अपनी बुत परस्त क़ौम से भाग निकले थे, उन का मक़्सद अपना ईमान और जान बचाना भी पेशे नज़र था क्योंकि वहाँ जो बादशाह था वह अहले ईमान को बुत परस्ती पर मजबूर करता था और जो शख़्स इन्कार कर दे उसे क़त्ल कर देता था।

'मुफ़स्सिर इब्ने कसीर' लिखते हैं कि यह नौजवान रोम के बादशाह और सरदारों की औलाद में से थे, उस ज़माने का बादशाह ज़ालिम आदमी था और वह लोगों को बुत परस्ती की दअ़वत देता था। जब यह नौजवान त्योहार के मौक़े पर अपने-अपने ख़ानदान के साथ निकले तो बुतपरस्ती का माहौल देखकर उन के दिलों में बहुत ज़्यादा नागवारी पैदा हो गई और वहाँ से भाग निकले।

हर शख़्स अकेले निकला था, लेकिन अल्लाह तआ़ला का करना ऐसा हुआ कि सब एक जगह इकट्ठे हो गये, पहले एक शख़्स एक दरख़्त के साये में आकर बैठा और फिर दूसरा और तीसरा आया और आते चले गये। दिलों में एक अल्लाह के मानने के जज़्बे ने सब को एक जगह जमा कर दिया।

अस्हाबे कहफ़ की बातचीत

सब लोग एक जगह जमा तो हो गये लेकिन एक दूसरे से डर रहे थे, इसलिए कि हर एक को एक दूसरे के अ़क़ीदे के बारे में मालूम न था। ऐसे ही उन में से एक ने कहा कि हर शख़्स यह बताए कि वह अपनी क़ौम से क्यों अलग होकर यहाँ आया है और अकेला रहना उस ने क्यों गवारा किया? उस पर एक शख़्स बोला कि मैं तो इसलिए क़ौम से अलग हुआ हूँ कि मेरे नज़्दीक मेरी क़ौम ग़लत रास्ते पर है और अपने पैदा करने वाले को छोड़कर दूसरों को सज्दः कर रही है।

अ़िबादत का हक़्दार केवल अल्लाह तआ़ला ही है, जिस ने आसमानों व ज़मीन को और जो कुछ उस के अन्दर है सब को पैदा किया। एक के बाद दूसरे लोगों ने यही जवाब दिया, इस पर वह आपस में सच्चे ईमानी भाई और एक दूसरे के हमदर्द बन गये। फिर उन्होंने मिलकर एक अ़िबादतख़ाना बना लिया, जिस में वह केवल अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत करते थे।

जब उन की क़ौम को मालूम हुआ तो बादशाह को यह बात पहुँचा दी। बादशाह ने उन को बुलवाया और उन से दर्याफ़्त किया कि तुम्हारा क्या ह़ाल है और क्या दीन है? अल्लाह तआ़ला ने उन के दिल मज़बूत कर दिये और उन्होंने बिना किसी ख़ौफ़ व ख़तर के निडर होकर अपने तौह़ीद (अद्वैतवाद) का अ़क़ीदा बयान कर दिया और बादशाह को भी तौह़ीद की दअ़वत दी, बादशाह ने उन की दअ़वते तौह़ीद क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया, फिर उन्हें डराया धमकाया और उन का लिबास उतरवा दिया जो वह उ़म्दह लिबास पहने हुए थे और उन्हें मोहलत दे दी कि तुम ग़ौर कर लो और अपनी क़ौम के धर्म पर वापस आ जाओ।

पूरी क़ौम को छोड़ दिया-

यह मोहलत मिलना उन के लिए मुबारक हुआ, इस से उन्होंने फ़ायदा उठाया और मौक़ा पाकर फ़रार हो गये। अल्लाह तआ़ला ने उन का दिल मज़बूत कर दिया था, उन्होंने बादशाह तक को तौह़ीद (अद्वैतवाद) की दअ़वत दी और तौह़ीद की दलील भी बता दी कि हमारा रब वही है जो आसमान व ज़मीन का रब है। इस में यह बता दिया कि ख़ालिक़े कायनात के अ़लावा किसी की अ़िबादत करना अ़क़्लमन्दी

के ख़िलाफ़ है और साथ ही لَنْ نَّدْعُوَا مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا भी कह दिया।

यानी हम हरगिज़ कभी अपने रब के अ़लावा किसी की अ़िबादत नहीं करेंगे और मज़ीद यूँ कहा لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا अगर बिल् फ़र्ज़ हम अपने रब के सिवा किसी को मअ़बूद बनाएँ तो यह तो बड़े ज़ुल्म और ज़्यादती की बात होगी।

आपस में बातचीत करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि यह जो हमारी क़ौम के लोग हैं इन्होंने अपने पैदा करने वाले के अ़लावा दूसरे उपास्य बना लिये हैं जिन की उन के पास कोई दलील नहीं है, अगर है तो बयान कर दें। जब कोई दलील नहीं है तो उन का अ़क़ीदा, अ़मल (कर्म) और क़ौल ज़ुल्म ही ज़ुल्म है, चूंकि मुश्रिकीन यूँ भी कहा करते हैं कि अल्लाह तआ़ला हमारे अ़मल से राज़ी है इसलिए उन नौजवानों ने यह भी कहा فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا (कि उस से बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे।)

आपसी मश्वरह से ग़ार में दाख़िल होना-

'अस्ह़ाबे कहफ़' जब अपनी क़ौम से अलग हुए और उन लोगों को छोड़कर बिल्कुल अलग हो गये तो आपस में कहने लगे कि तुम ने अपनी क़ौम को छोड़ा उन के उपास्यों से अलग हुए। यह मालूम है कि दोबारा उन्हीं में वापस होने और अपने घरों को लौटने में ख़ैर नहीं है, क्योंकि वह लोग फिर अपना धर्म अपनाने पर मजबूर करेंगे लिहाज़ा अब हमें किसी ग़ार (गुफ़ा) में ठिकाना पकड़ लेना चाहिए। आपस में मश्वरे से यह बात तय तो हुई, लेकिन इन्सानी ज़रूरियात का सवाल भी सामने था कि ग़ार में रहेंगे तो खाने-पीने और दूसरी ज़रूरियात का क्या होगा?

इस सवाल को ह़ल करने के लिए आपस में यूँ कहने लगे कि हम को अल्लाह तआ़ला से ख़ैर की उम्मीद रखनी चाहिए। इन्शाअल्लाह हम पर अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल होगा और वह हम पर अपनी रह़मत फैला देगा और हम जो अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी ह़ासिल करने के लिए निकले हैं उस के लिए आसानियाँ पैदा फ़रमा देगा, आपसी मश्वरह से ग़ार में जाना तय हुआ और अल्लाह तआ़ला से ख़ैर की उम्मीद बाँध कर ग़ार (गुफ़ा) में दाख़िल हो गये।

आयत नं० 17 से 28 तक

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۚ ذٰلِكَ مِنْ
اٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾ وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۚ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ
وَذَاتَ الشِّمَالِ ۚ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ۚ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾ وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ
لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ۚ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۚ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۚ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۚ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ
بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾ اِنَّهُمْ اِنْ
يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ
السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۚ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۚ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ
عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾ سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا ۢ بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ
وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۬ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۖ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٢﴾
وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۚ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ
مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۚ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ۚ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۚ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾ وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ
رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ
يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ۚ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ
اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾

अनुवाद-

(17) और तुम सूरज को देखते हो कि जब वह निकलता, तो उनकी गुफ़ा से दाहिनी ओर हटा रहता, और जब डूबता तो उनके बाईं ओर कतरा कर निकलता है। और वे उसके अन्दर एक कुशादा (विस्तृत) जगह में है; यह अल्लाह की निशानियों में से है, जिसको अल्लाह हिदायत दे, वही राह पाने वाला है, और जिसे 'वह' गुमराह करें (अर्थात भटकता छोड़ दे,) उसका आप कोई मददगार, रहनुमाई करने वाला न पाएंगे। (18) और तुम उनको जागता हुआ ख़याल करते हो हाँलाकि वह सोए हुए थे, हम ही उन्हें करवट दिलाते रहते हैं दाईं ओर भी और बाईं ओर भी-और उनका कुत्ता ड़योढ़ी पर अपने दोनों भुजाएँ फैलाए हुए था; अगर तुम उनको झाँक कर देखते तो तुम उनसे पीठ फेर कर भाग खड़े होते और तुम्हारे अन्दर उनकी दहशत बैठ जाती। (19) और इसी तरह 'हमने' उन्हें उठा खड़ा किया ताकि आपस में पूछ-ताछ करें, उनमें से एक कहने वाले ने कहा, "भला तुम कितनी देर ठहरे होगे? बोले, कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम," उन्होंने कहा, खूब "तुम्हारा 'रब' ही अच्छी तरह जानता है, जितनी देर तुम ठहरे, अब अपने में से किसी को यह (चाँदी का) सिक्का देकर शहर की ओर भेजो, फिर वह देख ले कि उसमें सबसे अच्छा खाना कौन सा मिलता है? तो उसमें से वह तुम्हारे लिए कुछ खाने को ले आए और चाहिए कि वह नर्मी और

होशियारी से काम ले, और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे। (20) अगर वह तुम्हारी ख़बर पा जाएँगे तो पत्थरों से मार-मार कर तुम्हें ख़त्म कर डालेंगे, या तुम्हें अपने दीन (धर्म) में लौटा लेंगे, और तुमको उस वक़्त कामियाबी न मिल सकेगी। (21) और इस तरह 'हमने' (लोगों को) उनकी सूचना देदी, ताकि वे जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि क़ियामत की घड़ी में कोई सन्देह नहीं है; उस वक़्त लोग उनके बारे में आपस में झगड़ने लगे, तो उन्होंने कहा, ''उन पर एक इमारत बनाओ, और उनके मामले को तो उनका 'रब' ही अच्छी तरह जानता है'' उनके बारे में और उनके मामले में जिन की राय ग़ालिब रही उन्होंने कहा, ''हम उन पर ज़रूर एक मस्जिद बनाएँगे"। (22) (कुछ लोग) अब कहेंगे, "वे तीन थे, और उनमें चौथा उनका कुत्ता था।'' और कहेंगे, ''वे पाँच थे, और उनमें छटा उन का कुत्ता था"- यह बिना निशाने के पत्थर चलाना है। और यह भी कहेंगे, "वे सात थे और उनमें आठवाँ उन का कुत्ता था"। कह दीजिए, "मेरा 'रब' ही उनकी संख्या को खूब जानता है"। उनको जानते भी हैं तो थोड़े ही लोग, तो आप उन (के मामले) में बहस न कीजिए सिवाय सरसरी बहस के, और न उनके बारे में किसी से कुछ पूछिए। (23) और आप किसी चीज़ के बारे में यह न कहा कीजिएः "मैं इसे कल कर दूँगा," (24) बल्कि (कहा कीजिए) ''इन्शाअल्लाह, (अल्लाह चाहे तो) जब आप भूल जाएं तो अपने रब को याद कर लिया कीजिए, और कहा कीजिए, "उम्मीद है कि मेरा 'रब' इससे भी ज़्यादा सही बात की ओर रहनुमाई कर दे"। (25) और वे अपनी गुफ़ा में तीन सौ साल और नौ साल ज़्यादा रहे। (26) कह दीजिए, "अल्लाह ही भली-भाँति जानता है जितना वे ठहरे, और आसमानों और ज़मीन की छिपी बात का सम्बन्ध 'उसी' से है, 'वह' क्या ही देखने वाला और सुनने वाला है! 'उस' के सिवा न कोई संरक्षक है? और न 'वह' अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है। (27) और आप पढ़ दिया कीजिए, जो कुछ वह्य आप पर, आप के 'रब' की किताब के ज़रिये भेजी गई है; कोई बदल उसकी बातों का नहीं हो सकता, और 'उसके' सिवा आप को कहीं पनाह नहीं मिल सकती। (28) और अपने आप को उन लोगों के साथ थामें रखा कीजिए, जो अपने रब को पुकारते रहते हैं, सुबह और शाम और 'उसी' की रज़ामन्दी चाहते हैं; और आप की दोनों आँखें उन पर से न हटने पाएँ जो दुनिया की ज़िन्दगी के साज़ व सामान की चाह में लग जाएँ; और ऐसे व्यक्ति का कहना न मानिएगा, जिसके दिल को 'हमने' अपनी याद से ग़ाफ़िल कर रखा है और जो अपनी वासना (इच्छा) के पीछे लगा है और उसका मामला ह़द से आगे बढ़ चुका है।

आयत नं० 17 से 28 तक की व्याख्या

17 وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَت تَّزَٰوَرُ عَن كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَت تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ ۗ مَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

ग़ार (गुफ़ा) के ह़ालात

इन आयात में 'अस्ह़ाबे कहफ़' की ह़ालत को बयान फ़रमाया गया है जो ग़ार (गुफ़ा) में दाख़िल होने के बाद पेश आई। यह लोग ग़ार (गुफ़ा) के अन्दर एक चौड़ी जगह में पहुँच कर लेट गये, उस ग़ार (गुफ़ा)

की जगह इस तरह़ से थी कि रोज़ाना सूरज पूरब से निकलता और पश्चिम में छिप जाता था, लेकिन उस की धूप उन पर नहीं पड़ती थी। जब सूरज निकल कर चढ़ता और धूप फैलती तो ग़ार (गुफ़ा) के दाहिनी ओर से इस तरह़ हटी हुई रहती थी कि उस के दरवाज़े तक न पहुँचती थी और जब सूरज छिपने लगता था तो उस वक़्त जो थोड़ी बहुत धूप होती है वह ग़ार (गुफ़ा) के बाईं ओर रह जाती थी यानी उस वक़्त भी दरवाज़े पर धूप न पड़ती थी।

'अस्ह़ाबे कहफ़' के अन्दर रहने की कैफ़ियत बताकर इर्शाद फ़रमाया कि यह अल्लाह की निशानियों में से है। अल्लाह तआ़ला ने उन के दिलों को मज़बूत किया, अपनी क़ौम से अलग होने में उन्होंने हिम्मत और जुर्रत से काम लिया, अल्लाह के भरोसे पर ग़ार (गुफ़ा) में दाख़िल हो गये और अल्लाह से रह़मत की उम्मीद बाँध ली, अल्लाह की तरफ़ से आसानी ह़ासिल होने की उम्मीद करते हुए ग़ार (गुफ़ा) में चले गये। यह सब कुछ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उस के क़ुद्रत की निशानियों में से है, उस ने दिल भी पक्का किया, हिम्मत भी दी, मख़्लूक़ से कटने का ह़ौसला भी दिया, उन्होंने ज़ाहिरी अस्बाब पर नज़र न की, अपने मौला-ए-ह़क़ीक़ी पर भरोसा कर के ग़ार (गुफ़ा) में दाख़िल हो गये। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ग़ार (गुफ़ा) भी वह नसीब फ़रमाई जिस में धूप का गुज़र ही न था, अगर धूप पड़ती तो उस से तक्लीफ़ पहुँचने और गर्मी से परेशान होने का अन्देशा न था।

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ (अल्लाह जिसे हिदायत दे वही हिदायत पाने वाला है।)

وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ۝ (और अल्लाह जिसे गुमराह कर दे तो उस के लिए कोई मदद्गार हिदायत देने वाला नहीं पाएगा।)

इस में एक तो अस्ह़ाबे कहफ़ की हिदायत की तरफ़ इशारा है कि वह मुश्रिक क़ौम में से थे, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हिदायत दी और दूसरी तरफ़ यहूदे मदीना और मुश्रिकीने मक्का की गुमराही की तरफ़ इशारा है कि उन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से अस्ह़ाबे कहफ़ के बारे में मालूम किया और जब आप ने उन्हें बता दिया तो वह फिर भी ईमान न लाए। इस के बाद अस्ह़ाबे कहफ़ के और भी ह़ालात बयान फ़रमाए।

18 وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۚ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۚ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ۭ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ۝

(ऐ मुख़ातब! अगर तू उन जवानों के कहफ़ के ज़माने में उन पर नज़र डालता तो उन के बारे में यह ख़याल करता कि वह जाग रहे हैं ह़ालांकि वह सोये हुए थे, उन के बारे में बाज़ ह़ज़रात ने तो यह फ़रमाया कि वह सो रहे थे, लेकिन आँखें खुली हुई थीं और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि आँखें तो बन्द थीं लेकिन जिस्मों पर कोई नींद का असर नहीं था यानी सोने की वजह से जो अंगों में फुतूर और ढ़ीलापन आ जाता है उन में कोई चीज़ ज़ाहिर न थी।

'अस्ह़ाबे कहफ़' की दूसरी ह़ालत और कैफ़ियत बताते हुए इर्शाद फ़रमायाः-

وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۚ

(और हम उन्हें पलट रहे थे दाहिनी ओर और बायीं ओर) चूंकि वह लोग एक बहुत बड़ी मुद्दत

तक सोते रहे और उन के जिस्म ज़मीन ही से लगे हुए थे, लिहाज़ा ज़मीन के प्रभाव से महफ़ूज़ रखने के लिए अल्लाह तआ़ला उन की करवटें बदल देता था (जिसकी वजह यह है कि अगर ज़मीन से कोई चीज़ बहुत दिनों तक लगी रहे (ख़ासकर गोश्त पोस्त वाला जिस्म) तो वह उसे खा जाती है। अल्लाह तआ़ला को यूँ भी कुद्रत है कि उलट-पुलट किये बग़ैर उन के जिस्मों को महफ़ूज़ फ़रमाता, लेकिन हिक्मत का तक़ाज़ा यह था कि उन की करवटें बदल दी जातीं। **(साहिबे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील् पेज नं० 154 भाग 2)**

وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ (और उन का कुत्ता दहलीज़ पर अपने हाथ बिछाए हुए था) जब अस्ह़ाबे कहफ़ ग़ार (गुफ़ा) की ओर रवाना हुए तो उन के साथ एक कुत्ता भी था, उस के बारे में एक क़ौल यह है कि अस्ह़ाबे कहफ़ ही में से एक शख़्स का शिकारी कुत्ता था और एक क़ौल यह है कि वह बादशाह के बावर्ची का कुत्ता था, यह बावर्ची भी अस्ह़ाबे कहफ़ में से एक था और उस का कुत्ता भी उस के साथ आ गया था, उस कुत्ते के रंग के बारे में अलग-अलग बाते हैं लेकिन किसी बात के बारे में कोई दलील नहीं है और न उस के ज़िक्र से कोई फ़ायदा है। शब्द 'वसीद' का तर्जुमः किसी ने दरवाज़ा और किसी ने मिट्टी और किसी ने दरवाज़े से बाहर की जगह और किसी ने दहलीज़ यानी चौखट किया है, चौखट तो वहाँ नहीं थी लिहाज़ा उस से चौखट ही मुराद ली जाएगी।

(इब्ने कसीर पेज नं० 76 भाग 3 मुआ़लिमुल् तन्ज़ील पेज नं० 154 भाग 3)

इस के बाद फ़रमाया لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا (तू उन्हें झांक कर देख लेता तो उन की तरफ़ से पीठ फेर कर भाग जाता और उन की वजह से तेरे अन्दर रोअ़ब भर जाता, उन लोगों को देखने से दिल में रोअ़ब समा जाने और भाग खड़े होने का सबब बयान करते हुए 'साह़िबे मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' लिखते हैं कि वह जिस ग़ार (गुफ़ा) में थे वह मशहूर ग़ार (गुफ़ा) थी और बाज़ लोगों ने कहा है कि उन की आँखें खुली हुई थीं ह़ालांकि वह सो रहे थे, यह सब था ख़ौफ़ और बाज़ ने कहा कि उन के बाल बहुत ज़्यादा थे और नाख़ून बढ़े हुए थे।

यह 'अस्ह़ाबे कहफ़' की ह़िफ़ाज़त के इन्तिज़ामात थे, उन की करवटों को बदलना मिट्टी से ह़िफ़ाज़त करने के लिए था और उन के पीछे कुत्ता भी लग लिया था जो वहीं दरवाज़े पर बैठा हुआ था (कुत्ते की आ़दत है कि हर आने वाले अजनबी पर भौंकता है, ज़ाहिरी अस्बाब के तौर पर यह कुत्ता भी ह़िफ़ाज़त का ज़रिया बना और मज़ीद यह बात थी कि अल्लाह तआ़ला ने ऐसी कैफ़ियत और सूरतेह़ाल पैदा फ़रमा दी कि अगर कोई शख़्स उन को देखता तो उन के क़रीब तक जाने की हिम्मत न करता था, बल्कि वापस जाने में ही अपनी ख़ैर समझता।

19-20 وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْۤا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَاۤ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ۝ اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْۤا اِذًا اَبَدًا ۝

खाना लाने के लिए शहर भेजना

'अस्हाबे कहफ़' लम्बे समय तक ग़ार (गुफ़ा) में सोते रहे। फिर जब अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी हुई तो उन्हें जगा दिया, उन का इतनी लम्बी मुद्दत तक सुला देना, फिर जगा देना भी अल्लाह तआ़ला की क़ुद्रत पर दलालत करता है।

قال صاحب الروح ووجه الشبه كون كل منهما آية دالة على كمال قدرته الباهرة عزوجل

जब यह लोग जाग गये तो इन में से एक शख़्स ने यह सवाल उठाया कि तुम यहाँ कितने दिन ठहरे? फिर आपस में जवाब दिया कि हाँ, एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा ठहरे। मतलब यह था कि हम यक़ीनी तौर पर तो कुछ नहीं कह सकते, लेकिन अन्दाज़ा यह है कि ज़्यादा से ज़्यादा एक दिन सोये हैं या एक दिन से भी कम।

कुछ लोगों ने फ़रमाया कि वह सुबह को सोये थे और जब बेदार हुए तो शाम का वक़्त था जैसे दिन जा रहा हो, इसलिए एक दिन या एक दिन से कुछ कम समझ कर सवाल करने वाले को जवाब दे दिया।

फिर कहने लगे कि हम यक़ीन के साथ कुछ भी नहीं कह सकते, तुम्हारे रब ही को तुम्हारे सोने की सही मुद्दत मालूम है। ऐसा मालूम होता है कि बहुत ज़्यादा सोने की वजह से जो दिमाग़ में एक क़िस्म का भारीपन होता है वह उसे महसूस कर रहे थे, इसलिए उन में से बाज़ ने यह समझा कि एक दिन की मुद्दत वाली बात सही नहीं मालूम होती, लिहाज़ा हमें अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कहना चाहिए क्योंकि सही इल्म अल्लाह तआ़ला ही को है। कुछ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि चूंकि उन के बाल व नाख़ून ज़्यादा बढ़े हुए थे इसलिए यह महसूस हुआ कि हमारा यह सोना एक दिन की मुद्दत से ज़्यादा था।

इस बातचीत के बाद कि कितने दिन सोते रहे खाने-पीने का सवाल पैदा हुआ, जब इन्सान सोकर उठता है तो आ़मतौर पर भूक लगी होती है। फिर उन का क्या हाल होगा जो लम्बी मुद्दत तक सोते रहे हों? कहने लगे कि अपने में से एक शख़्स को भेजो जो शहर में जाए और हमारे पास जो यह चाँदी के सिक्के हैं उन को ले जाए और खाना लेकर वापस आ जाए। ज़रा अच्छी तरह ध्यान से ख़रीदे पाकीज़ा और हलाल खाना लेकर आए (शहर में जो बुतों के नाम पर ज़ब्ह किया हुआ गोश्त मिलता है उस में से न लाए) और शहर में जाने और खाना ख़रीदने में समझदारी से काम ले और किसी को यह न बताए कि हम कौन हैं और कहाँ हैं।

जिस वक़्त यह ग़ार (गुफ़ा) में दाख़िल होकर सोये थे उस वक़्त मुश्रिकों और मूर्ति पूजकों की हुकूमत थी, बादशाह जबरन मुश्रिक बना लेता था और अहले तौहीद को जान से मारता और सज़ाएँ देता था, उन हज़रात ने यह समझ कर कि शहर में अभी उसी शिर्क का चर्चा होगा और बादशाह भी वही मूर्तिपूजक होगा, खाना ख़रीदने के लिए जाने वाले से कहा कि हलाल खाना लाना और इस का ध्यान रखना कि लोगों को हमारा पता न चले वरना शहर वाले हमें बुरी तरह क़त्ल और संगसार कर देंगे या अपने दीन

में वापस कर लेंगे।

ईमान छोड़कर कुफ़्र में चले जाना सब से बड़े नुक़्सान और सब से बड़ी नाकामी है। यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि अगर कोई शख़्स किसी मोमिन को कुफ़्र पर मजबूर करे और ज़ाहिरी तौर पर कुफ़्र का कलिमा कह दे तो काफ़िर नहीं होता, अगर वह लोग कुफ़्र पर मजबूर करते और अस्हाबे कहफ़ कुफ़्र का कलिमा कह देते तो हक़ीक़त में काफ़िर न होते और इस से नाकामी और तबाही न होती। जब दिल में ईमान बाक़ी है तो आख़िरत में नाकामी की कोई वजह नहीं, लिहाज़ा उन्होंने وَلَن تُفْلِحُوٓا إِذًا أَبَدًا क्यों कहा?

इस का जवाब यह है कि उनकी यह ईमानी कुव्वत थी कि कलिमा कुफ़्र कह देने को भी तबाही फ़रमाया, यह सब उन के अपने ख़याल के मुताबिक़ था।

उस की मिसाल यह है कि 'हज़रत हन्ज़ला' (रज़ि०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में यही अर्ज़ किया कि 'हन्ज़ला' मुनाफ़िक़ हो गया। आप ने फ़रमाया क्यों? कहने लगे कि हम आप के पास होते हैं तो आप हमें जन्नत-दोज़ख़ की बातें सुनाते हैं और ऐसा मालूम होता है कि सब कुछ हमारे सामने है, फिर जब हम अपने घरों को जाते हैं तो बीवी बच्चों में घुल-मिल जाते हैं और आप की बहुत सी बातें भूल जाते हैं।

आप ने फ़रमाया कि क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुम हर वक़्त इसी हालत में रहो जो मेरे पास तुम्हारी हालत होती है तो तुम से फ़रिश्ते बिछौनों पर और रास्तों में मुसाफ़हा (हाथ मिलाते) करते। लेकिन ऐ हन्ज़ला! ऐसा कभी-कभी होता है (यानी जो कैफ़ियत तुम्हारी मेरे पास होती है वह हमेशा बाक़ी नहीं रहती)

जिस तरह हज़रत हन्ज़ला (रज़ि०) ने अपने ख़याल में अपने को मुनाफ़िक़ ख़याल कर लिया उसी तरह 'अस्हाबे कहफ़' ने ज़बान से कलिमा-ए-कुफ़्र कहने को भी कुफ़्र समझ लिया।

कुछ हज़रात ने फ़रमाया कि इस से मुकम्मल कामियाबी मुराद है, जबरन कलिमा-ए-कुफ़्र ज़बान से जारी करना जायज़ है और यह रुख़्सत (छूट) है और अज़ीमत (बेहतर) यह है कि क़त्ल हो जाए और कलिमा-ए-कुफ़्र ज़बान पर न लाए। इस एतिबार से उन का मतलब यह था कि अगर हम ने जबरन कलिमा-ए-कुफ़्र कह कर जान बचा भी ली तो अज़ीमत से महरूम हो जाएँगे, इधर तो आपस में यह मश्वरह हुआ कि हमें छिपकर रहना है और अहले मदीना को अपना हाल और अपनी जगह नहीं बताई और उन में से जो एक शख़्स खाना ख़रीदने के लिए रक़म ले कर गया उस ने बाज़ार में जाकर कुछ ख़रीदा पुराना सिक्का देखकर दुकानदार हैरत में पड़ गया और लोगों में भी इस का चर्चा शुरु हो गया, उस वक़्त हुकूमत बदल चुकी थी और जो शख़्स बादशाह था वह मुसलमान था। जब उसे पता चला कि ऐसा-ऐसा वाक़िआ हुआ है तो वह शहर वालों के साथ सवार होकर ग़ार (गुफ़ा) की तरफ़ चला।

वह एक शख़्स जो खाना लेने के लिए आया था जिस का नाम 'तम्लीख़ा' बताया जाता है, वह जल्दी से ग़ार (गुफ़ा) के अन्दर गया और उस ने अपने साथियों को बता दिया कि बात खुल चुकी है और बादशाह तक पहुँच चुकी है, इस वक़्त जो लोग शहर में हैं वह मुसलमान हैं। यह लिखने के बाद 'अल्लामा क़ुर्तुबी'

(पेज नं० 389 भाग 10) ने दो रिवायतें लिखी हैं। पहले यह कि 'अस्हाबे कहफ़' को इस की बहुत ख़ुशी हुई बाहर निकले बादशाह से मुलाक़ात की, बादशाह ने उन का और उन्होंने बादशाह का इक्राम (सम्मान) किया और दूसरी रिवायत यह नक़्ल की है कि जब 'तम्लीख़ा' ने उन्हें वाक़िआ बताया तो वह उसी वक़्त वहीं ग़ार (गुफ़ा) में मर गये। क़ुर्आन करीम में इन बातों का ज़िक्र नहीं है, इस के अ़लावा बहुत सी बातें इस्राईली हैं।

21 وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۗ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۗ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ۝

'अ़ल्लामा क़ुर्तुबी' ने लिखा है कि 'दक़्यानूस' बादशाह मर गया था (जिस के ज़माने में यह ह़ज़रात गुफ़ा में दाख़िल हुए थे) सैंकड़ों साल गुज़र गए बादशाह आते जाते रहे, आख़िर में एक नेक शख़्स इस इलाक़े का बादशाह हुआ और वह उसकी रिआ़या इस बात को तो मानती थी कि मौत के बाद उठाया जाना है, लेकिन कुछ लोगों ने कहा कि रुहें ह़श्र में होंगी क्योंकि जिस्म को ज़मीन खा जाती है उन लोगों ने जिस्म के साथ होने को दूर की बात समझा और कुछ लोगों ने यह कहा कि जिस्म और रुह़ दोनों को उठाया जाएगा। बादशाह को इस इख़्तिलाफ़ से ह़ैरानी हुई और अस्ल ह़क़ीक़त जानने के लिए उस ने इतना एहतिमाम किया कि टाट के कपड़े पहन लिए और राख पर बैठ गया और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करता रहा कि हमें कोई ऐसी दलील मिल जाए जिस से यह वाज़ेह़ हो जाए कि रुह़ और जिस्म दोनों का जमा करना कोई मुश्किल नहीं।

इसी ज़माने में अल्लाह तआ़ला ने 'अस्हाबे कहफ़' को ज़ाहिर फ़रमा दिया, बादशाह ने उन को देखकर कहा कि यह तो वही लोग मालूम होते हैं जो 'दक़्यानूस' के ज़माने में शहर छोड़ कर चले गए थे। मैं दुआ़ करता था कि अल्लाह तआ़ला मुझे उन को दिखा दे, जब उन लोगों के कई सौ साल सोने के बाद उठ जाने का वाक़िआ़ मालूम हुआ तो लोगों को यक़ीन हो गया कि वाक़ई अल्लाह का वादा ह़क़ है, क़ियामत ह़क़ है।

وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ इस में इस बात को बताया गया है कि जब उन लोगों ने 'अस्हाबे कहफ़' के बारे में मालूम कर लिया तो उन्हें क़ियामत का यक़ीन आ गया। 'अस्हाबे कहफ़' बाहर निकल कर वापस ग़ार (गुफ़ा) में चले गए और बाद में उन्हें मौत आई हो रिवायात में इस का ज़िक्र नहीं मिलता।

क़ुर्आन मजीद के बयान से ज़ाहिर होता है कि वह ग़ार (गुफ़ा) ही में अन्दर वफ़ात पा गए। यह जो आपस में झगड़ा हुआ कि उन के बारे में क्या किया जाए? फिर कुछ लोगों ने कहा कि उन के ऊपर इमारत बनाओ और जो ग़ालिब थे उन्होंने कहा कि हम उन के ऊपर मस्जिद बना देंगे। इस से मालूम होता है कि उन के ग़ार (गुफ़ा) में होते हुए ही इस तरह़ का इख़्तिलाफ़ हुआ होगा।

'रूहुल् मआ़नी' पेज नं० 234 भाग 1 में लिखा है कि जब बादशाह को उन लोगों का पता चला तो उस ने वहाँ जाकर उन लोगों से मुलाक़ात की और देखा कि उन के चेहरे रौशन हैं और कपड़े भी

ख़राब नहीं हैं। उन्होंने बादशाह को वह ह़ालात सुनाए जो 'दक़ियानूस' के ज़माने में पेश आए थे अभी बातें हो ही रही थीं कि 'अस्ह़ाबे कहफ़' ने कहाः-

نستود عك الله تعالى والسلام عليك ورحمة الله تعالى حفظك الله تعالى وحفظ ملك نعيذك بالله تعالى من شرالانس والجن

तर्जुमः- "हम तुझे अल्लाह के सुपुर्द करते हैं। तुझ पर अल्लाह का सलाम हो और उस की रह़मत, अल्लाह तेरी ह़िफ़ाज़त करे और तेरे मुल्क की भी ह़िफ़ाज़त करे और हम तुझे इन्सानों और जिन्नात के शर से अल्लाह की पनाह में देते हैं"।

यह कहा और वह वापस अन्दर अपनी-अपनी जगहों पर चले गए और अल्लाह तआ़ला ने उन पर मौत तारी फ़रमा दी, फिर बादशाह ने उन्हें लकड़ी के ताबूतों (बाक्स) में दफ़न कर दिया और ग़ार (गुफ़ा) के मुँह पर मस्जिद बना दी।

'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' ने इस के बाद एक क़ौल यह लिखा है कि जब बादशाह के पास उस शख़्स को लाया गया जो ग़ार (गुफ़ा) में से जो खाना लेने के लिए आया था, बादशाह ने उस से पूछा कि तुम कौन हो? उस ने कहा कि मैं इस शहर का रहने वाला हूँ और यह बताया कि मैं कल ही शहर से निकला था, उस ने अपना घर भी बताया और कुछ लोगों के नाम भी बताए जिन्हें कोई भी न पहचान सका।

बादशाह ने सुन रखा था कि कुछ लोग पुराने ज़माने में रूपोश हो गये थे और यह भी सुना था कि उन के नाम सरकारी ख़ज़ाने में एक तख़्ती पर लिखे हुए रखे हैं, वह तख़्ती मँगाई और उन के नाम पढ़े तो वही नाम निकले जो 'अस्ह़ाबे कहफ़' के नाम थे, वह जो एक शख़्स खाना लेने के लिए आया था उस के साथ बादशाह और चन्द लोग चले। जब ग़ार (गुफ़ा) के दरवाज़े पर आए तो वह नौजवान अन्दर गया और उन्हें पूरी सूरतेह़ाल बता दी।

फिर अल्लाह तआ़ला ने उन की रुह़ों को क़ब्ज़ फ़रमा लिया, बादशाह और उसके साथियों की आँखों पर पर्दा डाल दिया जिस की वजह से वह अन्दर दाख़िल न हो सका, लोगों में यह इख़्तिलाफ़ हुआ कि इन के बारे में क्या किया जाए तो कुछ लोगों ने कहा कि उन के ऊपर यानी ग़ार (गुफ़ा) के दरवाज़े पर इमारत बना दी जाए और वह जमाअ़त जो उन के मामले में ग़ालिब हो गई यानी बादशाह और उस के साथी उन्होंने कहा कि हम मस्जिद बनाएँगे, चुनाँचे उन्होंने मस्जिद बना दी यह मस्जिद ग़ार (गुफ़ा) के दरवाज़े पर थी।

एक फ़रीक़ ने कहा कि इन पर इमारत बना दो, दूसरे फ़रीक़ ने कहा कि हम मस्जिद बना देंगे। इन दोनों के दर्मियान जो लफ़्ज़ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ आया है उस के बारे में 'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' लिखते हैं। मतलब यह है कि 'अस्ह़ाबे कहफ़' के साथ क्या किया जाए? इस बारे में दो राय आ रही थीं यह कौन लोग थे? किन ख़ानदानों से थे? यह किन ह़ालात से गुज़रे और कितने दिन ग़ार (गुफ़ा) में रहे? फिर जब इन चीज़ों का सह़ी इ़ल्म न हो सका और उस के ह़ासिल होने का कोई रास्ता भी न मिला तो कहने लगे कि इसे अल्लाह के सुपुर्द करो, वह हर बात को जानने वाला है सब को जानता है उन का

ह़ाल भी उसी को सह़ी मालूम है।

'ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' फ़रमाती हैं कि 'उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' और 'उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' ने आप से एक गिरजे का ज़िक्र किया जिसे उन्होंने ह़ब्शा में देखा। उस में मूर्तियाँ रखी हुई थीं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यह उन लोगों का तरीक़ा था कि जब उन में से कोई नेक आदमी मर जाता तो उस की क़ब्र पर मस्जिद बना देते और उस में यह मूर्तियाँ रखते। क़ियामत के दिन यह लोग अल्लाह के यहाँ सब मख़्लूक़ से बद्तर होंगे। **(बुख़ारी)**

'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास' (रज़ि०) कहते हैं कि जब आप (सल्ल०) का आख़ीर वक़्त हुआ तो आप (सल्ल०) एक चादर अपने मुँह पर डालते। जब घबराते तो मुँह खोल देते और फ़रमाते, यहूद व नसारा पर अल्लाह की लअ़नत हो, उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया। (यह कह कर आप (सल्ल०) अपनी उम्मत को ऐसे काम से डराते थे।) **(बुख़ारी)**

22 سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًۢا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۬ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿۲۲﴾

अस्ह़ाबे कहफ़ की तअ़दाद

जिस तरह़ 'अस्ह़ाबे कहफ़' गुफ़ा में कितने समय रहे, इस में इख़्तिलाफ़ हुआ कि वह कितने दिन रहे और ख़ुद वह भी इख़्तिलाफ़ कर बैठे और सह़ी बात तक न पहुँच सके। इसी तरह़ इस में भी इख़्तिलाफ़ हुआ कि उन की तअ़दाद कितनी थी?

इस आयत में तीन क़ौल नक़्ल फ़रमाए हैं। एक क़ौल यह है कि 'अस्ह़ाबे कहफ़' तीन थे और चौथा उनका कुत्ता था और दूसरा क़ौल यह है कि पाँच थे, छठा उनका कुत्ता था और तीसरा क़ौल यह है कि वह सात थे और आठवाँ उनका कुत्ता था।

'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' पेज नं० 480 भाग 15 ने कुछ उ़ल्मा से नक़्ल किया है कि यह नबी अक्रम (सल्ल०) के ज़माने का था। पहली बात यहूदियों की है और दूसरी बात नसरानियों की है। यह लोग नजरान से आए थे, रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुए तो उन में से एक शख़्स 'आ़क़िब' था और नसारा के फ़िर्क़े 'नस्तूरिया' का सरदार था, उस ने और उस के साथियों ने पहली दो बातें कही थीं, तीसरा क़ौल कुछ मुसलमानों का है। पहले दो क़ौलों का ज़िक्र फ़रमाने के बाद 'रज्मम् बिल्ग़ैब' फ़रमाया (कि अट्कल पच्चू बात कह रहे हैं) और तीसरे क़ौल को अलग से ज़िक्र किया और साथ ही यूँ फ़रमायाः-

قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۬

(आप फ़रमा दीजिए कि मेरा रब उन की तअ़दाद को ख़ूब जानता है उन को सिर्फ़ थोड़े से लोग जानते हैं।)

इस से कुछ ह़ज़रात ने दलील लिया है कि अस्ह़ाबे कहफ़ की तअ़दाद सात थी। अल्लाह तआ़ला

ने फ़रमाया कि उन की तअ़दाद को अल्लाह ही ख़ूब जानता है और साथ ही यह भी फ़रमा दिया कि उन्हें सिर्फ़ थोड़े लोग जानते हैं।

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) फ़रमाते थे कि मैं भी उन ही में से हूँ जिन को उन की तअ़दाद का इ़ल्म है, वह फ़रमाते थे कि उन की तअ़दाद सात थी और आठवाँ उन का कुत्ता था। आ़मतौर से उम्मते मुस्लिमा में यही क़ौल मशहूर है और उन के नाम भी तफ़्सीर की किताबों में लिखे हैं।

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) से उन के यह नाम नक़्ल किये गये हैं। मक्सलमीना, यम्लीख़ा मरतूस, सियोनिस, दर्दूनस, कफ़ा शीतीतोस, मुन्तन्वासीस और कुत्ते का नाम क़ित्मीर नक़्ल किया है। बज़ाहिर ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने अहले किताब से उन के नाम सुने होंगे जिन को उन्होंने आगे रिवायत कर दिया। यह नाम चूंकि अ़ज्मी हैं और बहुत पुरानी किसी ज़बान के अल्फ़ाज़ हैं, इसलिए इनका सह़ी एराब के साथ यक़ीनी तौर पर तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) करना किसी को मालूम नहीं है।

'साह़िब रूहुल्' मआ़नी लिखते हैं:-

وذكر الحافظ ابن حجر فى شرح البخارى ان فى النطق باسمائهم اختلافا كثيرا ولا يقع الوثوق من ضبطها وفى البحران اسماء اصحاب الكهف اعجمية لا تنضط بشكل ولا نقط والسند فى معرفتها ضعيف

आयत के आख़िर में दो बातों की मनाही फ़रमाई है:-

पहली यूँ फ़रमाया فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا जिस का मतलब यह है कि अस्ह़ाबे कहफ़ की संख्या के बारे में बह़स न कीजिए और दूसरी मुमानिअ़त यह फ़रमाई وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا (कि उन के बारे में किसी से सवाल न कीजिए) अल्लाह तआ़ला ने जो बता दिया इस से आगे बढ़ने की ज़रूरत नहीं उन में जो लोग बातें करते हैं वह अट्कल और गुमान से कहते हैं, लिहाज़ा उन से पूछने की न कोई ज़रूरत है और न इस से कोई फ़ायदा।

23-24 وَلَا تَقُولَنَّ لِشَايْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَاذْكُر رَّبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰ أَن يَهْدِيَنِ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾

वादा करते वक़्त इन्शाअल्लाह

तफ़्सीर 'इब्ने कसीर' में लिखा है कि क़ुरैशे मक्का ने 'नज़र बिन ह़ारिस' और 'उ़क़्बा बिन अबी मुअ़ीत' को मदीना मुनव्वरह भेजा (यह हिजरत से पहले का वाक़िआ़ है) कि यहूद के उ़ल्मा से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के बारे में दर्याफ़्त करो और उन से कहो कि आख़िरी नबी की सिफ़ात बता दें। यहूदी पहली किताबों से वाक़िफ़ हैं और हमारे पास अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) के उ़लूम में से कुछ नहीं है, लिहाज़ा तुम जाओ उन लोगों से दर्याफ़्त करो।

क़ुरैश के नुमाइन्दे (दूत) मदीने पहुँचे और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बारे में मालूम किया और उन

से कहा कि तुम तौरेत वाले हो, हम तुम से उस शख़्स के बारे में मालूम करते हैं। इस पर यहूदियों ने कहा कि उन से तीन बातें मालूम कर लो अगर वह इन बातों को बता दें तो वह वाक़ई आख़िरी रसूल हैं, उन से एक बात तो यह दर्याफ़्त करो कि पुराने ज़माने में कुछ नौजवान अपने घरबार को छोड़ कर चले गये थे, वह कौन लोग थे उन का क़िस्सा अ़जीब है और उन से यह भी पूछो कि वह कौन शख़्स था जिस ने पूरब-पश्चिम के बड़े-बड़े सफ़र किये और उन से रुह़ के बारे में दर्याफ़्त करो कि वह क्या है? यह बातें सुनकर क़ुरैश के दोनों नुमाइन्दे मक्का वापस हुए और उन्होंने कहा कि ऐ क़ुरैश की जमाअ़त! हम तुम्हारे पास एक अहम बात लेकर आए हैं।

यहूदियों ने तीन बातें बताई। इस के बाद वह लोग रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुए और वह तीनों बातें मालूम कीं जिन की यहूदियों ने पट्टी पढ़ाई थी। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, मैं कल को बता दूँगा, लेकिन इन्शाअल्लाह नहीं कहा, वह लोग चले गए और इधर यह हुआ कि पन्द्रह दिन तक आप (सल्ल०) पर कोई वह्य नहीं आई, इस पर अहले मक्का ने यह बात उड़ानी शुरु कर दी कि मुह़म्मद (सल्ल०) ने कहा था कि कल बता दूँगा, लेकिन पन्द्रह दिन गुज़र गए हैं अभी तक कुछ भी नहीं बताया।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को वह्य के रुक जाने और अहले मक्का के बातें बनाने से सख़्त दुःख हुआ। फिर जिब्रईल (अ़लै०) ह़ाज़िर-ए-ख़िद्मत हुए और सूरः कहफ़ लेकर आए जिस में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से डाँट भी है (कि इन्शाअल्लाह क्यों नहीं कहा) और अस्ह़ाबे कहफ़ की ख़बर भी है और पूरब व पश्चिम के सफ़र करने वाले की ख़बर भी है (यानी ज़ुल्क़रनैन) और सूरः बनी इस्राईल की आयत وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ में रुह़ का ज़िक्र भी आ गया है।

इस तफ़्सील से मालूम हुआ कि यहूदियों के सिखाने पर जो क़ुरैशे मक्का ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से तीन बातों का सवाल किया उन का जवाब देने के लिए इर्शाद फ़रमा दिया कि कल को बता दूँगा, लेकिन पन्द्रह दिन तक वह्य नहीं आई। आप इस से बहुत ज़्यादा ग़मगीन हुए और मुश्रिकीन को हँसने का मौक़ा मिल गया। फिर जब वह्य आई तो मुश्रिकीन के सवालात के जवाबात के साथ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तम्बीह भी नाज़िल हुई और वादा करते वक़्त इन्शाअल्लाह छोड़ने पर पकड़ भी हुई।

कभी-कभी कुछ ऐसी बातों पर भी पकड़ हो जाती है, जो फ़र्ज़ वाजिब के दर्जे में नहीं होतीं और रसूलुल्लाह (सल्ल०) तो सब से ज़्यादा अल्लाह के क़रीबी हैं। सब कुछ अल्लाह की मर्ज़ी और इरादा ही से होता है, अल्लाह के बन्दों को चाहिए कि जब किसी से वादा करें या किसी अ़मल को करने का इज़्हार करें तो इन्शाअल्लाह भी साथ में कह दें क्योंकि बन्दों को यह मालूम नहीं होता कि हमारी ज़िन्दगी कब तक है।

जिस दिन का वादा या इरादा कर रहा हूँ उस दिन तक ज़िन्दा रहूँगा या नहीं और ज़िन्दा भी रहा तो इरादा और वादा के मुताबिक़ अ़मल हो सकेगा या नहीं, लिहाज़ा इसी में बेहतरी और ख़ूबी है कि जब किसी काम का वादा या इरादा करे तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ज़ात पर भरोसा करे और ज़बान से भी इन्शाअल्लाह कह दे।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को जो अल्लाह तआ़ला ने तम्बीह फ़रमाई और वादा के साथ इन्शाअल्लाह कहने की तल्क़ीन फ़रमाई तो इस में आप (सल्ल०) की उम्मत को भी यह नसीह़त हो गई कि वादा और इरादा के साथ इन्शाअल्लाह कहना चाहिए। जो भी वादा करे सच्चा और पक्का करे और शब्द 'इन्शाअल्लाह' इसलिए न लगाए कि मैं जानबूझकर ख़िलाफ़वर्ज़ी करुँगा और कह दूँगा कि मैंने तो इन्शाअल्लाह कहँ दिया था। ऐसी ग़लत नियत करने से वादा की ख़िलाफ़वर्ज़ी का गुनाह होगा।

वादा के साथ इन्शाअल्लाह कहने का हुक्म देने के बाद फ़रमाया:-

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ

(और आप अपने रब को याद कर लीजिए जब आप भूल जाएँ।)

इस का मतलब कुछ उ़ल्मा से यह नक़्ल किया गया है कि जब वादा करते वक़्त इन्शाअल्लाह कहना भूल जाए तो जब भी याद आ जाए इन्शाअल्लाह कह ले, यह ऐसा ही होगा जैसा वादा के साथ तुरन्त कह दिया।

'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) और बाज़ ताबिअ़ीन से यह मतलब नक़्ल किया गया है कि आयत से इस मतलब की कुछ ताईद भी होती है, लेकिन चूंकि आयत इस अर्थ में साफ़ नहीं है जो ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) की तरफ़ मन्सूब किया जाता है, इसलिए 'इमाम अबू ह़नीफ़ा' (रह़०) ने फ़रमायाँ कि बाद में इन्शाअल्लाह कह लेना तबर्रुक और तलाफ़ी भरपाई के तौर पर होगा। अगर इन्शाअल्लाह शर्त और क़सम के साथ तुरन्त न कहा तो बाद में कह देने से पिछले असर और नतीजे का असर न होगा क्योंकि आयत में सिर्फ़ इतनी बात कही गई है कि जब याद आ जाए अपने रब का ज़िक्र कर लीजिए। दूसरे दलायल से इमाम साह़ब के मस्लक की ताईद होती है और दूसरे आइम्मा भी उन के मुवाफ़िक़ हैं।

قال صاحب الروح وعامة الفقهاء على اشتراط اتصال الاستثناء في عدم الحنث ولو صح جواز الفصل وعدم تاثيره في الاحكام لاسيما الى الغاية المروية عن ابن عباس لما تقرر اقرار ولا طلاق ولا عتاق ولم يعلم صدق ولا كذب (صفحہ ۲۰۵ ج ۱۵) و في روح المعاني ايضا حكى انه بلغ المنصور ان ابا حنيفة رضي الله تعالى عنه خالف ابن عباس رضي الله تعالى عنهما في هذه المسئلة فاستحضره ليذكر عليه فقال له ابو حنيفة هنا يرجع اليك انك تاخذ البيعة بالايمان افترضي ان يخرجوا من عندك فيستثنونه عليك فيخرجوا عنك فاستحسن كلامه

जो ह़ज़रात अलग से शर्त के क़ायल हैं उन के नज़्दीक आयत का मतलब यह है कि जब भी अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र को भूल जाओ फिर जैसे ही याद आ जाए अल्लाह तआ़ला को याद करने लगो और यह ऐसा ही है जैसे एक मौक़े पर जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) और आप के सह़ाबा सोते रह गये थे और फिर जब सूरज के तुलूअ़ होने पर बेदार हुए तो आप ने फ़रमाया कि जब तुम में से कोई शख़्स किसी

नमाज़ को भूल जाए और सोता रह जाए तो जब याद आ जाए उसे पढ़ ले, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِىْ (रवाहु मुस्लिम)

وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّىْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا

(और आप यूँ कह दीजिए कि उम्मीद है मेरा रब मुझे वह बात बता देगा जो हिदायत के एतिबार से उस से क़रीबतर है।)

'साहिबे रूहुल् मआ़नी' लिखते हैं:-

ای لشئی اقرب واظہر من نباء اصحاب الکہف من الآیات والدلائل الدالۃ علی نبوتی यानी मुझे रब से उम्मीद है कि मुझे 'अस्हाबे कहफ़' के वाक़िये से बढ़कर ऐसी चीज़ें बताएगा जो मेरी नुबूव्वत पर दलालत करने वाली होंगी। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला का यह इन्आ़म हुआ कि 'अस्हाबे कहफ़' से भी ज़्यादा पुराने वाक़िआ़त का इ़ल्म हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को दिया गया और आप ने उन चीज़ों के मुख़ातिबीन को ख़बरें दीं। जिन का वह्य के बग़ैर इ़ल्म नहीं हो सकता था और जो ख़बर बिल् ग़ैब के एतिबार से 'अस्हाबे कहफ़' के क़िस्से से भी ज़्यादा साफ़ थीं।

25-26 وَلَبِثُوْا فِىْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ۝ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا يُشْرِكُ فِىْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ۝

अस्हाबे कहफ़ का ज़माना

पहली आयत में ग़ार (गुफ़ा) में अस्हाबे कहफ़ के रहने की मुद्दत बयान फ़रमाई और फ़रमाया कि वह अपनी गुफ़ा में तीन सौ नौ साल रहे। फिर दूसरी आयत में फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उन के ठहरने की मुद्दत को ख़ूब जानने वाला है, वह आसमानों और ज़मीन के ग़ैब को जानता है, उस का इ़ल्म हर चीज़ पर अ़हाता किये हुए है। 'अस्हाबे कहफ़' की गुफ़ा भी ज़मीन ही में है और वह लोग भी ज़मीन ही में थे, फिर उन का और उन की गुफ़ा का उसे क्यों इ़ल्म न होगा? मज़ीद ताकीद के लिए फ़रमाया اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ अ़रबी ज़बान में यह दोनों तअ़ज्जुब के शब्द हैं और मतलब यह है कि अल्लाह से बढ़कर कोई देखने वाला या सुनने वाला नहीं है, वह सब से बड़ा 'समीअ़' और 'बसीर' है। (इन दोनों शब्दों का तर्जुमः ह़क़ीक़त में उर्दू ज़बान में अदा नहीं हो सकता।)

مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا يُشْرِكُ فِىْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا

(इस के अ़लावा उन के लिए कोई मददगार नहीं और वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं फ़रमाता।)

अल्लाह का कोई शरीक नहीं वह जो चाहे फ़ैसला फ़रमाए। इसलिए लाज़िम है कि उसी से मदद माँगे और उस के अ़लावा किसी को अपना वली और मददगार न बनाए।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने यह बात उठाई है कि 'अस्हाबे कहफ़' की मुद्दत बताते हुए जो ثلث مائۃ وتسع سنین फ़रमाया। यह इस वजह से कि इस में शम्सी और क़मरी साल का फ़र्क़ है यानी तीन सौ साल शम्सी

एतिबार से थे और तीन सौ नौ क़मरी एतिबार से थे, लेकिन 'साहिबे रूहुल् मआ़नी' फ़रमाते हैं कि यह शब्दों से वाज़ेह़ नहीं है।

अगर 'शम्सी और क़मरी' सन् का फ़र्क़ सामने रखते हुए ह़िसाब लगाया जाए तो तीन सौ साल शम्सी पर नौ साल तिहत्तर दिन, नौ घंटे, अड़तालिस मिनट का फ़र्क़ निकलता है।

27 وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ज़िक्र करने वालों के साथ बैठने का हुक्म

'दुर्रे मन्सूर' पेज नं० 219 भाग 4 में ह़ज़रत सल्मान फ़ारसी (रज़ि०) से नक़्ल किया है कि 'ऐ़निया बिन बद्र' और 'इक़्रअ़ बिन ह़ाबिस' जो मुअल्लिफ़तुल्क़ुलूब में से थे, रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुए और उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अगर आप बड़ों की मजलिस में बैठते और यह लोग यानी 'सल्मान' 'अबू ज़र' और दूसरे फ़ुक़रा-ए-मुस्लिमीन से दूर रहते ताकि उनके कपड़ो की बू न आती तो हम आपके साथ बैठते और आप से बातें करते और आप से कुछ ह़ासिल करते।

इस पर अल्लाह तआ़ला ने وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ से اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا नाज़िल फ़रमाई।

'ह़ज़रत सहल बिन हुनैफ़' (रज़ि०) से नक़्ल किया है कि एक मर्तबः रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने एक घर में थे, आप (सल्ल०) पर अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ नाज़िल फ़रमाई। इस पर आप बाहर तशरीफ़ लाए और उन लोगों को तलाश किया जिनका आयते करीमा में ज़िक्र है।

यानी जो लोग सुबह़-शाम अपने रब को पुकारते हैं, यह फ़ुक़रा-ए-सह़ाबा थे। उन में वह लोग थे जिन के बाल बिखरे हुए थे, खाल सूखी हुई थी, वह सिर्फ़ एक ही कपड़ा पहने हुए थे।

जब आप (सल्ल०) ने उनको देखा तो उनके साथ बैठ गए और साथ ही यूँ कहा कि सब तअ़रीफ़ अल्लाह के लिए है, जिस ने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा फ़रमा दिये जिनके साथ मुझे बैठने का हुक्म दिया गया है।

क़ौमों के सरदारों और मालदारों को अपनी सरदारी और मालदारी पर जो ग़ुरूर और घमंड होता है उसकी वजह से वह अल्लाह के नेक बन्दों को ह़क़ीर (नीचा) समझते हैं, ह़ालांकि यह चीज़ें ख़त्म होने वाली हैं। ईमान और आ़माले सालिह़ा आख़िरत में काम आने वाली चीज़े हैं, जहाँ हमेशा की ज़िन्दगी होगी और ऐसी नेअ़मतें होंगी जो ख़त्म होने वाली नहीं। फ़ानी (मिटने वाली) पर ग़ुरूर (घमण्ड) कर के आ़माले सालिह़ा की मश्ग़ूलियत रखने वालों को नीचा समझना बहुत बड़ी ह़िमाक़त है, जो लोग चौधरी क़िस्म के थे और पूरी तरह़ इस्लाम क़ुबूल नहीं किया था, तालीफ़े क़ल्ब (दिलों को नर्म करने) के लिए उन्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) कुछ देते रहते थे। ऐसे लोगों को مولفةالقلوب कहा जाता था। उन में से कुछ वह लोग भी थे जिनका ऊपर ज़िक्र हुआ, उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से ज़िक्र किया है कि यह ग़रीब लोग

आप के पास बैठे रहते हैं इन के ऊन के कपड़े हैं इन में से बद्बू आती है इनके पास आप न बैठें, अगर बैठने की अलग जगह हो तो हम आपकी ख़िद्मत में ह़ाज़िर हो जाया करेंगे।

अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों की गुज़ारिश क़ुबूल करने से मना फ़रमा दिया और यूँ फ़रमाया कि आप के रब की तरफ़ से जो किताब नाज़िल की गई है आप उसकी तिलावत किया करें।

इस किताब की तिलावत करना लोगों तक पहुँचाना यह आप का काम है जो लोग दुनियावी एतिबार से बड़े लोग हैं अगर ईमान न लाएँ और आप के पास बैठने के लिए कोई ऐसी शर्त लगाएँ जिसमें अहले ईमान को दूर रखना पड़ता हो तो उसे क़ुबूल न कीजिए। अल्लाह तआ़ला के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं। अल्लाह तआ़ला ने जो आप से वादे किये हैं वह पूरे होकर रहेंगे, आप अल्लाह के सिवा कोई पनाह की जगह न पाएँगे।

28 وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ۝

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ (यानी जो लोग सुबह़ व शाम अपने रब को पुकारते हैं आप उनके साथ बैठा कीजिए यह वह लोग हैं जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं) इस में सह़ाबा की दो तरह़ से तअ़रीफ़ है। पहली यह कि वह सुबह़ व शाम अपने रब को पुकारते हैं, दूसरे यह कि वह अल्लाह की रज़ा चाहते हैं।

وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا (और आप ऐसे शख़्स की बात न मानिए जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया) وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ (और जो अपनी ख़्वाहिश के पीछे लग गया।)

وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا (और उसका ह़ाल ह़द से बढ़ गया।)

इसमें यह फ़रमाया कि जिन लोगों को हमारी याद का ध्यान नहीं है, अपनी ख़्वाहिश के पीछे चलते हैं और इस सिल्सिले में आगे बढ़ गये हैं उनकी पैरवी न कीजिए उन से बड़े दर्जे के काफ़िर मुराद हैं।

और यह जो फ़रमाया कि आप ऐसा न करें कि दुनियावी ज़ीनत का ख़याल करते हुए उन लोगों से आपकी आँखें हट जाएँ जो सुबह़ शाम अपने रब को याद करते हैं। इसमें यह बता दिया कि दुनिया की ज़ाहिरी ज़ीनत की कोई ह़क़ीक़त नहीं है, इसके लिए ईमानी चीज़ों को न छोड़ा जाए।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को यह ख़याल था कि यह सरदार मुसलमान हो जाएँ तो इस्लाम और अहले इस्लाम को ताक़त ह़ासिल हो जाए। फ़रमाया कि इस्लाम की ख़ूबसूरती के लिए इख़्लास (निःस्वार्थ भाव) और इताअ़त ही उसके लिए काफ़ी है। मुख़्लिसीन को मजलिस से हटा कर अस्ह़ाबे दुनिया के ज़रिये ह़ासिल होने वाली दुनिया को न देखा जाए।

आयत नं० 29 से 44 तक

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۟ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا
يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ ۚ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ
مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ۝ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا
خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ ۚ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ
جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۝ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ
شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۝ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۝ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ
ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ۝ وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّىْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا
مُنْقَلَبًا ۝ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِىْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝
لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّىْٓ اَحَدًا ۝ وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ
اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝ فَعَسٰى رَبِّىْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا
زَلَقًا ۝ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ۝ وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِىَ خَاوِيَةٌ
عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّىْٓ اَحَدًا ۝ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۝
هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۗ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ۝

अनुवाद-

(29) और कह दीजिए, "यह (क़ुर्आन) हक़ है, तुम्हारे रब की ओर से, तो जिसका जी चाहे ईमान लाए और जिस का जी चाहे इन्कार करे," 'हमने' ज़ालिमों के लिए आग तैयार कर रखी है, जिसकी क़नातें उन को घेरे होंगी, और अगर वह फ़रियाद करेंगे, तो ऐसे पानी से उनकी फ़रियाद पूरी की जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा, और चेहरों को भूँन डालेगा; कितना बुरा होगा वह पानी! और कैसी बुरी होगी वह जगह! (30) बेशक जो लोग ईमान लाए, और भले काम किये, तो 'हम' भले काम करने वालों का बदला कभी बरबाद नहीं करते। (31) ऐसे ही लोगों के लिए हमेशा-हमेश के लिए बाग़ हैं, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनको उसमें सोने के कंगन पहनाये जाएँगे और वह हरे रंग के महीन और मोटे रेशमी कपड़े पहनेंगे, और ऊँचे तख्तों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। क्या ही अच्छा बदला है! और क्या ही खूब आराम की जगह है? (32) और उनसे दो व्यक्तियों की मिसाल बयान कीजिए: जिनमें से एक को 'हमने' दो बाग़ अंगूर के दे रखे थे, और उनको 'हमने' खजूरों से घेर रखा था, और उन दोनों के बीच 'हमने' खेती उगा रखी थी; (33) दोनों बाग़ अपना पूरा फल देते थे और किसी की पैदावार में कोई कमी न रहती थी; और 'हमने' उन दोनों के बीच एक नहर जारी कर रखी थी; (34) और उस (व्यक्ति) को खूब पैदावार मिलती थी; तो उसने अपने साथी से बातें करते-करते बोल उठा, "मैं तुझ से माल में और आदमियों में बढ़ कर इज़्ज़त में हूँ"। (35) और वह अपने बाग़ में इस ह़ाल में दाख़िल हुआ, कि अपने आप पर ज़ुल्म कर रहा

था, उसने कहा! मैं नहीं समझता कि यह बाग़ कभी तबाह होगा; (36) और न मैं यह समझता हूँ कि क़ियामत आने वाली है, और अगर मैं अपने रब की ओर लौटाया भी जाऊँ, तो ज़रुर उसमें अच्छी जगह पाऊँगा"। (37) उसका दोस्त जो उससे बातें कर रहा था बोल उठा, "क्या तू 'उसका' इन्कार करता है, 'जिसने' तुझको मिट्टी से, फिर नुत्फ़े (वीर्य) से पैदा किया, फिर तुझे एक पूरा आदमी बना दिया; (38) लेकिन मेरा 'रब' 'वही' अल्लाह है, और मैं किसी को अपने रब के साथ साझीदार नहीं बनाता; (39) और जब तुम अपने बाग़ में दाख़िल हुए तो तुमने 'माशाअल्लाह ला हौ़ला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि' (जो अल्लाह चाहे होता वही है अल्लाह के अ़लावा कोई शक्ति नहीं है।) क्यों न कहा (चाहे) तू भले ही देख रहा हो कि मैं माल और औलाद में तुझ से कम हूँ। (40) तो उम्मीद है, कि मेरा 'रब' मुझे तेरे बाग़ से अच्छा दे दे और तेरे इस बाग़ पर आसमान से कोई ऐसी आफ़त भेज दे, कि वह चटयल मैदान हो कर रह जाए; (41) या उसका पानी नीचे उतर जाए फिर तू उसको हासिल न कर सके"। (42) और उसकी सारी पैदावार (अज़ाब के) घेरे में आ गयी, और वह अपने उस माल पर जो उसने ख़र्च किया था, और वह बाग टट्टियों पर गिरा पड़ा था, और वह कह रहा था, "क्या ही अच्छा होता कि मैं अपने रब के साथ किसी को साझीदार न बनाया होता"! (43) और कोई जत्था ऐसा न हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद करता, और न वह खुद ही मुक़ाबला कर सका। (44) (उस समय यह बात खुल गयी) कि सारा अधिकार अल्लाह ही के लिए है, 'वही' बदला देने में सब से अच्छा है और अंजाम की दृष्टि से सब से बेहतर है।

आयत नं० 29 से 44 तक की व्याख्या

29 وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۟ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۟ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ؕ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ؕ بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ۝

इस आयत में पहले तो यह फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने किसी को ईमान या कुफ़्र अख़्तियार करने पर मजबूर नहीं किया, बन्दों के सामने अपनी किताबों और नबियों के ज़रिये ह़क़ वाज़ेह़ फ़रमा दिया है, अब जिस का जी चाहे ईमान को अपना ले और जिस का जी चाहे कुफ़्र पर जमा रहे। जो ईमान लाएगा अपना भला करेगा, आख़िरत की नेअ़मतों से फ़ायदा उठाएगा और जो शख़्स कुफ़्र अख़्तियार करेगा वह उसकी सज़ा भुगत लेगा, जो दोज़ख़ में हमेशा की आग के अ़ज़ाब की सूरत में होगी।

कोई जाहिल आयत का मतलब यह न समझ ले कि कुफ़्र अख़्तियार करने की इजाज़त दे दी गई है यह इजाज़त नहीं है, बल्कि यहाँ बन्दों को जो ईमान और कुफ़्र दोनों सूरतें अपने इरादे से अख़्तियार करने की कुद़रत दी गई है उसका बयान है। इसीलिए इस के तुरन्त बाद अहले कुफ़्र की सज़ा और अहले ईमान का बदला बता दिया कि अगर कुफ़्र अख़्तियार करने की इजाज़त होती तो मुश्रिकों और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल क्यों किया जाता? यह ऐसा ही है जैसे कोई शख़्स अपने मातह़तों (अधीन) से कहे कि जो चाहे नाफ़रमानी कर लो, सज़ा तो मिल ही जाएगी।

ज़ालिमों यानी काफ़िरों की सज़ा बताते हुए इर्शाद फ़रमाया कि हम ने उन के लिए दोज़ख़ की आग

तैयार कर रखी है, उसकी दीवारें उन्हें घेरे होंगी। जो दाख़िल होगा कहीं भाग कर न जा सकेगा और निकलने की कोई राह न पाएगा। आग में जलने के अ़ज़ाब के अ़लावा उन्हें प्यास भी लगेगी। जब पानी तलब करेंगे तो बहुत ज़्यादा तेज़ गर्म पानी दिया जाएगा यह पानी बहता हुआ ख़ुशगवार न होगा, बल्कि तेल की तलछट की तरह़ गाढ़ा पानी होगा, पिया तो न जा सकेगा लेकिन प्यास की तेज़ी से पीना पड़ेगा। यह पानी इतना गर्म होगा कि जैसे ही मुँह के क़रीब आएगा चेहरों को भून डालेगा यह तो उनके पीने की चीज़ होगी और खाने के लिए ज़क़्क़ूम का दरख़्त होगा जैसा कि दूसरी आयात में ज़िक्र हुआ है।

'सूरः साफ़्फ़ात' रुकूअ़ नम्बर 2 और सूरः दुख़ान रुकूअ़ नम्बर तीन और सूरः वाक़िआ़ रुकूअ़ नम्बर 2 में मौजूद है, ज़क़्क़ूम का दरख़्त खाएँगे जो बहुत ही ज़्यादा कड़वा और बद्बूदार होगा जिसे पेट भर कर खाएँगे और ऊपर से खौलता हुआ गर्म पानी पियेंगे जो उनके मुँहों को भून देगा और आंतों को काट डालेगा।

यह पानी भी थोड़ा बहुत नहीं, बल्कि इस तरह़ पियेंगे जैसे प्यासे होंठ पीते हैं। بِئْسَ الشَّرَابُ यानी वह पानी पीने की बुरी चीज़ है। आख़ीर में फ़रमाया وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا और दोज़ख़ आराम की बुरी जगह है।) यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि इतने बड़े सख़्त अ़ज़ाब में आराम कहाँ होगा? जवाब यह है कि यह शब्द उन के मज़ाक़ के तौर पर लाया गया है और वह लोग दुनिया में अपनी मस्तियों में लगे रहे, दुनियावी आराम के सामने अल्लाह तआ़ला के हुक्मों की तरफ़ बिल्कुल तवज्जोह नहीं देते थे।

दुनिया के आराम को देखते हुए उन्होंने ईमान क़ुबूल नहीं किया क्योंकि ईमान क़ुबूल करने पर तक्लीफ़ें पहुँचने का अन्देशा था और उन्होंने चेतावनी सुनने के बावजूद दोज़ख़ ही के कामों को अख़्तियार किया और कुफ़्र ही को अपने लिए आराम का ज़रिया समझा।

इसलिए अ़ज़ाब की जगह को उन के लिए आराम की जगह फ़रमाया क्योंकि दुनिया के आराम ही की वजह से उन्होंने इस तक्लीफ़ को अपने सर लिया और यह समझा कि आख़िरत में भी हम आराम ही से रहेंगे ثم هو على سبيل المشاكلة في مقابلة قوله تعالى (وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا)

ह़ज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि दोज़ख़ को चार दीवारें घेरे हुए हैं जिन में हर दीवार की चौड़ाई चालीस साल चलने के बराबर है।

(रवाहुल् तिर्मिज़ी)

यानी उसकी दीवारें इतनी मोटी हैं कि सिर्फ़ एक दीवार की चौड़ाई तय करने के लिए कोई चलने वाला चले तो चालीस साल ख़र्च हों।

30-31 إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ ۚ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۝

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दो जन्नतें चाँदी की होंगी, उन के बर्तन और दूसरी चीज़ें चाँदी की होंगी और दो जन्नतें सोने की होंगी, उन के बर्तन और

दूसरी चीज़ें सोने की होंगी। जन्नत वालों को अल्लाह का दीदार करने से कोई चीज़ न रोकेगी सिवाय यह कि पर्दा के अ़लावा जो उस के चेहरे पर होगा"। (बुख़ारी)

जन्नत के लिबास और ज़ेवर का ज़िक्र

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम नेक अ़मल करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करते। नेक अ़मल वही है जो ईमान और इख़्लास (अच्छे व्यवहार) के साथ शरीअ़त के मुताबिक़ हो। फ़रमाया कि यह लोग हमेशा रहने के बाग़ो में रहेंगे, उन बाग़ों के नीचे नहरें जारी होंगी और साथ ही उनके ज़ेवर और लिबास का ज़िक्र भी फ़रमाया और फ़रमाया कि उन्हें सोने के कंगन पहनाये जाएँगे और वहाँ सब्ज़ कपड़े पहनेंगे जो सुन्दुस और इस्तिबरक़ के होंगे, फिर उन मसेहरियों का ज़िक्र फ़रमाया जिन पर यह लोग तकिया लगाये हुए बैठे होंगे। (यह बैठना आमने-सामने होगा एक दूसरे के मुक़ाबिल होंगे।)

आख़िर में फ़रमाया نِعْمَ الثَّوَابُ (उनके आ़माल का अच्छा बदला है) وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا (और यह जन्नत आराम की अच्छी जगह है) (वहाँ दुःख और थकान न होगा आराम ही आराम होगा।)

यह जो फ़रमाया कि सोने के कंगन पहनाए जाएँगे इसमें बज़ाहिर यह सवाल पैदा होता है कि ज़ेवर तो औ़रतें पहनती हैं मर्दों पर क्या अच्छा लगेगा, फिर उस के पहनने की मनाही भी है? इसका यह जवाब है कि आख़िरत के ह़ालात को दुनिया पर क़यास (Imagination) करना सह़ी नहीं, पहले तो वहाँ दुनिया वाले शरई़ हुक्म लागू न होंगे, वहाँ मर्दों को सोना पहनना जायज़ होगा। दूसरे मर्द वहाँ कंगन पहनने में ख़ूबी और ख़ुशी महसूस करेंगे, दुनिया में भी हर जगह का रिवाज अलग-अलग है। बाज़ इलाक़ों में मर्द भी ज़ेवर पहनते हैं और ख़ासतौर से बादशाहों के बारे में तो ज़ेवरात पहनना मशहूर ही है।

कपड़ों के बारे में फ़रमाया कि अहले जन्नत के कपड़े हरे रंग के होंगे। हरा रंग चूंकि नज़रों को भला लगता है। इसलिए उन के कपड़ों का यह रंग होगा, यह कपड़े सुन्दुस और इस्तबरक के होंगे।

सूरः हज (आयत नं० 23) में फ़रमाया وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ (और उनका लिबास रेशम होगा।)

मालूम हुआ कि 'सुन्दुस' और 'इस्तबरक़' रेशम के होंगे। सुन्दुस के बारे में मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस से बारीक रेशम मुराद है और 'इस्तबरक' के बारे में लिखते हैं कि इस से मोटा रेशम मुराद है। 'इब्ने कसीर' फ़रमाते हैं कि 'इस्तबरक' से वह मोटा रेशम मुराद है जिसमें चमक हो। सतर औ़रत के लिए हो तो मोटे कपड़े की ज़रूरत होगी और आयत में तफ़्सील नहीं बताई कि 'सुन्दुस' का कौन सा कपड़ा होगा और 'इस्तबरक' का कौन सा कपड़ा होगा।

मालूम होता है कि नीचे के कपड़े 'इस्तबरक़' के होंगे और 'सुन्दुस' के कपड़े ऊपर पहनने के होंगे। जैसे कुर्ता वग़ैरह। 'इब्ने कसीर' फ़रमाते हैं:-

فالسندس ثياب رقاع رقاق كالقمصان وماجرى مجراها واما الاستبرق فغليظ الديباج وفيه بريق-

32-44 وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۝ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۝

وَكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ
قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ﴿٣٥﴾ وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا
مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ
سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٣٨﴾ وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا
شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾ فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ
جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ
لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ
يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾
هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۚ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾

दो शख़्सों की मिसाल

इन आयात में एक वाक़िआ ज़िक्र है। जिस में एक बाग़ वाले काफ़िर व मुश्रिक और दूसरे मोमिन की बातचीत नक़्ल फ़रमाई है।

'अ़ल्लामा बग़्वी' मुआ़लिमुल् तन्ज़ील पेज नं० 161 भाग 3 में लिखते हैं कि यह आयात अहले मक्का में से दो शख़्सों के बारे में नाज़िल हुई, दोनों ही 'मख़्ज़ूम' में से थे। एक तो 'ह़ज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हु' थे जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पहले ह़ज़रात 'उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' के शौहर थे और दूसरा शख़्स जो काफ़िर था 'अस्वद बिन अ़ब्दुल् असद' था, यह एक क़ौल है।

दूसरा क़ौल यह नक़्ल किया है कि यह वाक़िआ़ बनी इस्राईल में से दो शख़्सों का है, जो आपस में दोनों भाई थे। एक मोमिन था और एक काफ़िर। इस वाक़िये को बतौर मिसाल पहला फ़रीक़ 'अ़तिया बिन हुसैन' और उस के साथियों और दूसरा फ़रीक़ ह़ज़रत सल्मान फ़ारसी और उन के साथियों (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) के बारे में ज़िक्र फ़रमाया। (याद रहे कि यह उन लोगों में से थे जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यूँ कहा था कि आप उन ग़रीबों और मिस्कीनों को अपने पास से हटा दीजिए ताकि हम आप के पास बैठ सकें।)

'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से नक़्ल किया है कि इस आयत में जिन दो शख़्सों का ज़िक्र फ़रमाया है यह बनी इस्राईल में से एक बादशाह के बेटे थे, एक ने अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च कर दिया था और दूसरे शख़्स ने कुफ़्र अख़्तियार किया और वह दुनिया की ज़ीनत में मश्ग़ूल हो कर माल को बढ़ाने में लग गया।

वाक़िआ़ की तफ़्सील यूँ है कि एक शख़्स को अल्लाह तआ़ला ने ख़ूब माल दिया, उस के अंगूर के दो बाग़ थे और उन दोनों बाग़ों के चारों तरफ़ खजूरों के दरख़्त थे, जिन्होंने बाड़ की तरह़ से उन दोनों बाग़ों को घेर रखा था। उन दोनों बाग़ों में खेती भी थी, दरख़्तों के फलों और खेती की पैदावार से वह

बड़ा मालदार बना हुआ था उन बाग़ों के दर्मियान नहर भी जारी थी, दोनों बाग़ भरपूर फल देते थे ज़रा सी भी कमी न होती थी।

यह तो बाग़ वाले का ह़ाल था (जो ऊपर ज़िक्र हुआ) इस के ख़िलाफ़ एक दूसरा शख़्स था, जो माल और औलाद के एतिबार से ज़्यादा ह़ैसियत वाला न था। जिस शख़्स के बाग़ थे उसे बड़ा ग़ुरूर था, उस ने अपने इसी कम ह़ैसियत वाले साथी से कहा कि मैं माल के एतिबार से तुझ से ज़्यादा हूँ और लोगों के एतिबार से तुझ से बढ़ कर हूँ क्योंकि मेरी जमाअ़त ज़बरदस्त है।

पहला तो उस ने उस कम ह़ैसियत वाले साथी से घमण्ड के साथ ख़िताब किया और दूसरा काम यह किया कि वह अपने बाग़ में अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करने की ह़ालत में यानी कुफ़्र पर क़ायम होते हुए दाख़िल हुआ, वहाँ भी उस ने वही कुफ़्र की बातें कीं। कहने लगा कि मैं तो यह नहीं समझता कि मेरा यह बाग़ कभी भी बर्बाद होगा और यह जो क़ियामत क़ायम होने वाली बातें करते हो यह यूँ ही कहने की बातें हैं, मेरे ख़याल में तो क़ियामत क़ायम होने वाली नहीं।

सोचो! कि अगर क़ियामत आ गई और मैं अपने रब की तरफ़ लौटा दिया गया तो इस दुनिया में जो मेरा बाग़ है, मुझे वहाँ इस से बढ़कर बहुत ज़्यादा अच्छी जगह मिलेगी। दुनिया वालों का यह तरीक़ा है कि वह काफ़िर और फ़ाजिर होते हुए यूँ समझते हैं कि हम अल्लाह के पसन्दीदा बन्दे हैं, जब उस ने हमें यहाँ दौलत दी है तो वहाँ भी हमें ख़ूब ज़्यादा नेअ़मत व दौलत मिलेगी।

यह लोग क़ियामत को मानते तो नहीं हैं, लेकिन अहले ईमान से क़ियामत की बातें सुनकर यूँ कह देते हैं कि अगर बिल्फ़र्ज़ क़ियामत आ भी गई तो वहाँ भी हमें कोई कमी न होगी, यह नहीं जानते कि वहाँ जो कुछ मिलेगा ईमान और नेक आ़माल की वजह से मिलेगा, चूंकि ह़ज़रात अम्बिया (अ़लै०) की तअ़लीम और तब्लीग़ की तरफ़ ध्यान नहीं देते, इसलिए बदला वाले दिन में जो नेअ़मतें मिलेंगी उन नेअ़मतों के मिलने के क़ानून से वाक़िफ़ नहीं होते और ह़क़ीक़त जानते हुए भी अहले ईमान के सामने कट हुज्जती कर के अपने आप को दोनों जहानों में बेहतर बताने की कोशिश करते हैं। ख़ुद ही ख़याल कर लेते हैं कि हम यहाँ भी बेहतर हैं वहाँ भी बेहतर होंगे।

वह जो उस का साथी था जिस से उस ने फ़ख़्र और घमण्ड की बातें की थीं और उसे अपने से घटिया बताया था उस ने पहले तो उसे शर्म दिलाई और एक अच्छे अन्दाज़ में उस की नादानी और बेवक़ूफ़ी पर ख़बरदार किया और कहा कि जिस ज़ात पाक ने तुझे मिट्टी से फिर नुत्फ़े से पैदा फ़रमाया फिर तुझे सह़ी सालिम आदमी बना दिया तूने उस के साथ कुफ़्र किया यानी तुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था, चूंकि ह़ज़रत आदम (अ़लै०) मिट्टी से पैदा हुए जो हर इन्सान के बाप हैं और फिर हर इन्सान नुत्फ़ा से पैदा होता है जो माँ के रह़म में जाता है, इसलिए दूर और क़रीब दोनों को ज़िक्र कर दिया और उस के साथ ही यह भी बता दिया कि देख माँ के रह़म में नुत्फ़ा पहुँच कर जो बच्चा बन कर बाहर आता है ज़रूरी नहीं है कि वह ठीक हो और उस के अंग सह़ी सालिम हों, तुझे अल्लाह तआ़ला ने पैदा फ़रमाया और मज़ीद करम यह फ़रमाया कि तेरे अंगों को सह़ी सालिम बनाया और फिर यह करम फ़रमाया कि

तुझे मर्द बना दिया, बजाए मोमिन बन्दे बनने के तू काफ़िर हो गया, धिक्कार है ऐसी समझ पर। इस के बाद उस मोमिन बन्दे ने अपना अ़क़ीदा बताया और यूँ कहा कि अल्लाह मेरा रब है और मैं अपने रब के साथ किसी को साझीदार नहीं करता।

इस में अपने दीन व अ़क़ीदा का ए़लान भी है कि तू मुश्रिक है और मुश्रिक होना बुरी चीज़ है। इस के बाद उस मोमिन बन्दे ने सामने वाले से कहा कि अल्लाह तआ़ला ने जो तुझे बाग़ की नेअ़मत दी है तुझे उस नेअ़मत पर शुक्रगुज़ार होना चाहिए। बाग़ में जाकर तूने यूँ कहा कि मेरे ख़याल में यह बाग़ कभी बर्बाद न होगा और तू क़ियामत आने का भी मुन्किर हो गया। इस के बजाए तुझे यूँ कहना चाहिए था कि 'माशा अल्लाह लाकुव्वता इला बिल्लाह' (यानी अल्लाह जो चाहता है वही होता है और अल्लाह की मदद के बग़ैर कोई कुव्वत नहीं।)

यह बाग़ सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी से वजूद में आया है, उसी ने तुझे इस पर क़ब्ज़ा दिया। जब वह चाहेगा इसे बर्बाद कर देगा और तू देखता रह जाएगा, रही यह बात कि मैं तुझ से माल और औलाद में कम हूँ तो यह बात मेरे लिए कोई अफ़्सोस की बात नहीं है।

मुझे अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि जल्द ही तेरे बाग़ से बेहतर अ़ता फ़रमा देगा। दुनिया में हो या आख़िरत में या दोनों में और वह वक़्त भी दूर नहीं, मालूम होता जबकि अल्लाह तआ़ला तेरे बाग़ पर आसमान से कोई आफ़त भेज दे और तेरा बाग़ एक साफ़ मैदान होकर रह जाए या उस का पानी ज़मीन पर उतर जाए फिर तू उस पानी को तलब करने की कोशिश भी न कर सके।

मतलब यह है कि तू जो यह कहता है कि मेरा बाग़ हमेशा रहेगा, यह इसलिए कहता है कि ज़ाहिरी अस्बाब मौजूद हैं, सींचने के लिए पानी है, बाग़ की सिंचाई के लिए आदमी मौजूद हैं। यह तेरी भूल है जिस ज़ात पाक ने तुझे यह बाग़ दिया है वह इस पर क़ादिर है कि आसमान से उस पर कोई आफ़त भेज दे। फिर न कोई दरख़्त रहे, न टहनी, उसे इस बात पर भी कुद्रत है कि जिस पानी पर तुझे घमंड है वह उस पानी को अन्दर ही अन्दर ज़मीन से नीचे उतार दे और यह पानी इतनी दूर चला जाए कि तू उसे मेह़नत और कोशिश कर के दोबारा अपनी खेती की सतह़ तक लाने की हिम्मत न कर सके। मोमिन बन्दे ने जो काफ़िर व मुश्रिक नाशुक्रा था उस को शिर्क छोड़ने और तौह़ीद अपनाने और अल्लाह तआ़ला की कुद्रत मानने और उसकी गिरफ़्त से बचने की नसीह़त की थी, इस पर उस काफ़िर ने ध्यान न दिया और अ़ज़ाब आ ही गया और उस के पास जो माल था और मालदार बनने के जो अस्बाब थे उन सब को एक आफ़त ने घेर लिया।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यह एक आग थी जिस ने उसकी मालियत को जला कर राख का ढ़ेर बना दिया। अब यह शख़्स ह़ैरान रह गया और अपने बाग़ पर जो कुछ ख़र्च किया था उस पर अपने हाथ को उलटता-पलटता रह गया, उस का बाग़ गिरा हुआ था (यानी जिन पर अंगूर वग़ैरह की बेलें चढ़ाई जाती हैं वह जल कर गिर गई थीं फिर ऊपर से पूरा बाग़ ही जल कर उन टट्टों पर गिर गया) वह शख़्स अफ़्सोस कर रहा था, कभी यूँ हाथ पीटता और कहता कि हाय अफ़्सोस! इस बाग़ पर माल ख़र्च न करता जैसा था वैसे ही बढ़ता रहता। अगर उस पर माल ख़र्च न करता तो बाग़ जल जाता, मगर

माल तो रह जाता, बाग़ भी हलाक हुआ और जो कुछ उस पर लगाया था वह भी गया। अब उसे अपने मोमिन साथी की नसीह़त याद आई और कहने लगा يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا (हाय काश! क्या ही अच्छा होता कि मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न करता।)

बाग़ की बर्बादी और साह़िबे बाग़ का अफ़्सोस बयान फ़रमाने के बाद अल्लाह तआ़ला ने उसकी आ़जिज़ी बयान करते हुए इर्शाद फ़रमायाः-

وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

और अल्लाह के सिवा उस के पास कोई ऐसी जमाअ़त और जत्था न था जो उसकी मदद करता।

وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۝

और वह बदला लेने वाला न था।

इतनी बड़ी आफ़त किसी पर नाज़िल हो जाए तो वह तो मख़्लूक़ से भी बदला लेने से बेबस हो जाता है और अल्लाह तआ़ला से तो कोई शख़्स बदला ले ही नहीं सकता। अल्लाह ने उस पर कुफ़्र व शिर्क की वजह से अ़जाब भेजा और वह इस ह़ाल में हो गया कि कहीं से भी कोई मदद पाकर किसी तरह़ का बदला लेने के क़ाबिल न रहा।

जब बाग़ बर्बाद हुए तो खेती भी ख़त्म हुई और जिन पर उन्हें घमण्ड था उन की कुव्वत और ताक़त भी धरी की धरी रह गई क्योंकि जमाअ़त और जत्था भी उसी वक़्त काम आता है जब उन पर ख़र्च करने के लिए माल मौजूद हो। आख़िर में फ़रमाया هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ऐसे मौक़े पर मदद करना अल्लाह ही का काम है (वह बन्दों के माल को तबाह कर के फिर से अ़ता फ़रमा सकता है।)

هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ۝

वह सवाब के एतिबार से सब से बेहतर है और अन्जाम के एतिबार से सब से बेहतर है।

मतलब यह है कि अपने माल को अल्लाह पाक की रज़ामन्दी के लिए ख़र्च करें, वह अच्छे से अच्छा बदला देगा और जो कुछ उसकी रज़ा के लिए ख़र्च किया जाएगा, उस का अन्जाम भी सब से अच्छा होगा। इस में यह बता दिया कि मोमिन बन्दों का अगर कोई नुक़्सान हो भी जाए तो अन्जाम के एतिबार से उसे कोई नुक़्सान नहीं क्योंकि वह दोनों जहान में या कम से कम आख़िरत में उस का बदला पा लेगा और आख़िरत में जो कुछ मिलेगा उस का इस दुनिया में ह़िसाब नहीं लगाया जा सकता।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मोमिन मर्द और मोमिन औ़रत को उस के जान माल और औलाद में तक्लीफ़ पहुँचती रहती है यहाँ तक कि जब वह अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात करेगा तो उस का एक गुनाह भी बाक़ी न रहेगा (तक्लीफ़ों की वजह से सब गुनाह धुल चुके होंगे।) **(रवाहुल् तिर्मिज़ी कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 136)**

इस क़िस्से में बहुत बड़ी नसीह़त है कि कोई शख़्स अपने माल पर घमंड न करे, अल्लाह का मोमिन बन्दा बने और जिन मोमिन बन्दों के पास माल नहीं है उन्हें ह़क़ीर (नीच) न जाने, अल्लाह तआ़ला की नाशुक्री न करे। नाशुक्री की वजह से नेअ़मतें छीन ली जाती हैं फिर कोई मदद्गार नहीं होता।

आयत नं० 45 से 53 तक

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿۴۵﴾ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿۴۶﴾ وَيَوْمَ
نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿۴۷﴾ وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿۴۸﴾ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ
هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿۴۹﴾ وَاِذْ قُلْنَا
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ
مِنْ دُوْنِیْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿۵۰﴾ مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ
مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿۵۱﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِیَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ
مَّوْبِقًا ﴿۵۲﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿۵۳﴾

अनुवाद-

(45) और उन्हें दुनिया के ज़िन्दगी की मिसाल सुनाइएः उसकी मिसाल ऐसी है कि पानी को 'हमने' आसमान से बरसाया, तो उससे ज़मीन की पैदावार खूब फली-फूली, फिर वह चूरा-चूरा हो कर रह गयी जिसे हवाएँ उड़ाये लिए फिरती हैं और अल्लाह को तो हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है, (46) माल और औलाद तो दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं, और बाक़ी रहने वाले अच्छे अ़मल हैं, जो तुम्हारे 'रब' के नज़दीक बदले की दृष्टि से बेहतर हैं और उम्मीद की दृष्टि से भी। (47) और जिस दिन 'हम' पहाड़ों को चलाएँगे, और तुम ज़मीन को देखोगे कि खुला मैदान है और 'हम' लोगों को इकट्ठा करेंगे तो उन में से किसी को भी न छोड़ेंगे; (48) और तुम्हारे रब के सामने सफ़ बाँध कर (पंक्तिबद्ध) तरीक़े से हाज़िर किये जाएँगे- तो तुम 'हमारे' सामने आ पहुँचोगे जैसा कि 'हमने' तुम्हें पहली बार पैदा किया था कि बल्कि तुम्हारा तो यह दावा था; कि 'हमने' तुम्हारे लिए कोई समय निश्चित ही नहीं किया। (49) और (अमलों की) किताब रख दी जाएगी, तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि जो कुछ उसमें लिखा है उससे डर रहे होंगे, और कह रहे होंगे, "हाय! हमारा दुर्भाग्य यह कैसी किताब है कि यह न छोटी बात छोड़ती है न बड़ी, बल्कि सभी को इसने अपने अन्दर सुमो लिया है" और जो कुछ उन्होंने किया होगा सब मौजूद पाएँगे, और आप का 'रब' किसी पर जुल्म नहीं करेगा। (50) और जब हमने फ़रिश्तों से कहा, "आदम को सज्दः करो," तो इब्लीस के सिवा सबने सज्दः किया, वह जिन्नों में से था, तो वह अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी कर बैठा, तो क्या तुम उसे और उनके नस्ल को 'मेरे' मुक़ाबले में दोस्त बनाते हो? हालाँकि वह तुम्हारे दुश्मन हैं; और ज़ालिमों के लिए बहुत बुरा बदला है। (51) 'मैंने' उनको न तो आसमानों और ज़मीन के पैदा करने के वक्त बुलाया था और न खुद उनके पैदा करने के वक्त, और 'मैं' ऐसा न था कि गुमराह करने वालों को मददगार बनाता। (52) और जिस दिन 'वह' कहेगा, "बुलाओ मेरे साझीदारों को, जिनके साझीदार होने का तुम्हें दावा था"। तो वे उनको पुकारेंगे, मगर वे उनको कोई जवाब न देंगे, और 'हम' उनके बीच एक आड़ कर देंगे। (53) और मुजरिम लोग

आग को देखेंगे, तो वे समझ जाएँगे, कि उन्हें उसमें गिरना है और उससे बच निकलने का कोई रास्ता न पाएँगे।

आयत नं० 45 से 53 तक की व्याख्या

45 وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝

क़ियामत में मुजरिमीन की ह़ैरत

दुनिया की ह़ालत बताते हुए इर्शाद फ़रमाया كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ यानी दुनिया की मिसाल ऐसी है जैसे अल्लाह तआ़ला ने आसमान से पानी बरसाया, उस पानी की वजह से ज़मीन से पैदा होने वाली चीज़ें ज़ाहिर हुईं।

इन्सानों ने जो बीज डाले थे वह भी निकले और उस के अ़लावा और भी घास-फूस और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की सब्ज़ियाँ पैदा हुईं। इस सरसब्ज़ पैदावार को देखकर लोग ख़ुश हो रहे हैं, लहलहाती हुई खेतियाँ दिलों को लुभा रही हैं और इतनी ज़्यादा पैदावार है कि गुन्जान होने की वजह से एक टहनी दूसरी टहनी में और एक पौधे के पत्ते दूसरे पौधों के पत्तों में घुसे हुए हैं। चन्द दिन तो यह पैदावार हरी-भरी रही, फिर सूख गई, किसानों ने खेती को काट कर दाना निकाल लिया, केवल भूसा ही रह गया और दूसरी सब्ज़ियाँ भी सूख कर रह गईं।

उन पर मवेशियों ने उन को रौंदा, इस तरह़ सब चूरा-चूरा होकर ख़स व ख़ाशाक बन कर रह गईं। अब हवाएँ आती हैं जो उस भूसे के ज़र्रात को उड़ाती फिरती हैं।

जो ह़ाल उन सब्ज़ियों और खेतों का हुआ वही ह़ाल दुनिया का है, चन्द दिन की चहल-पहल है जो हर शख़्स की मौत पर ख़त्म हो जाती है और क़ियामत के दिन तो सारी दुनिया ख़त्म हो ही जाएगी यह ज़मीन ही वह न रहेगी जो अब है, न मख़्लूक़ में ज़मीन का कोई मालिक रहेगा, न यह हरी-भरी होगी, न इस में पैदावार होगी। इस धरती की थोड़ी सी चहल-पहल पर भरोसा करना, उस में दिल लगाना, ख़ालिक को भूल जाना और आख़िरत के लिए फ़िक्रमन्द न होना यह इन्सान की नासमझी है।

ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुद्री (रज़ि०) ने बयान किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, दुनिया मीठी, हरी-भरी है। अल्लाह ने इस में तुम्हें अपना ख़लीफ़ा बनाया, सो वह देखेगा कि तुम क्या अ़मल करते हो? लिहाज़ा दुनिया (में दिल लगाने) से बचो और औ़रतों (के फ़ित्ने) से बचो। बनी इस्राईल में जो सब से पहला फ़ित्ना ज़ाहिर हुआ वह औ़रतों ही का फ़ित्ना था। **(रवाहु मुस्लिम)**

وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ مُّقْتَدِرًا और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (जब चाहे वजूद बख़्शे और जिन चीज़ों को चाहे तरक़्क़ी दे और जब चाहे फ़ना कर दे।)

46 اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ (माल और बेटे दुनिया वाली ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं) उन पर इतराना और उन में दिल लगाना होशमन्द आदमी का काम नहीं।

وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا

(बाक़ी रहने वाले नेक आ़माल आप के रब के नज़्दीक सवाब के एतिबार से बेहतर हैं और उम्मीद के एतिबार से भी) यानी होशमन्द बन्दों को नेक अ़मल में लगे रहना चाहिए जो अज्र व सवाब के एतिबार से बाक़ी रहने वाले हैं। अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक नेक अ़मल का बहुत बड़ा सवाब मिलेगा, अल्लाह तआ़ला से उन का सवाब मिलने की उम्मीद रखें, यह उम्मीद तमाम उम्मीदों से बेहतर है।

इसी सूरः के ख़त्म पर फ़रमाया فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا (सो जो शख़्स अपने रब की मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो वह नेक अ़मल करे और अपने रब की अ़िबादत में किसी को शरीक न बनाए।)

इस में इस तरफ़ इशारा है कि जो नेक आ़माल नहीं हैं या जिन नेक आ़माल को दूसरे आ़माल की वजह से ख़त्म कर दिया या हठधर्मी की वजह से बातिल कर दिया वह बाक़ी रहने वाले नहीं हैं यानी आख़िरत में उन का कोई सवाब न मिलेगा और उन पर सवाब मिलने की उम्मीद रखना बेकार है।

47-48 وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾ وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ۭ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

इस के बाद क़ियामत का ज़िक्र फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ (और जिस दिन हम पहाड़ों को चला देंगे और उन को उन की जगहों से हटा देंगे उस दिन को याद करो।)

وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ (और तू ज़मीन को इस ह़ाल में देखेगा कि खुला हुआ मैदान बनी हुई है) इस में न कोई पहाड़ अपनी जगह पर है न कोई घर, न दीवार, न बुलन्दी।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۙ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا सो मेरा रब उन पहाड़ों को बिल्कुल उड़ा देगा, फिर ज़मीन को एक हमवार मैदान बना देगा जिस में न तो बराबरी होगी और न कोई बुलन्दी। यह तो पहाड़ों का और ज़मीन का ह़ाल होगा और आसमान फट जाएँगे, चाँद सूरज भी बेनूर हो जाएँगे, फिर सितारे भी गिर पड़ेंगे। यह क़ियामत के शुरुआ़ती ह़ालात होंगे, सूर फूंके जाने पर मुर्दे क़ब्रों से निकल कर जमा किये जाएँगे وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا (और हम उन्हें जमा करेंगे सो उन में से किसी को भी न छोड़ेंगे।)

49 وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۭ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا जमा होने के बाद पेशी होगी, लाइन बनाए हुए पालनकर्ता के पास खड़े होंगे।

इर्शाद لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ होगा (हमारे पास उसी हालत में आ गए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था) सारा माल धन दौलत वहीं दुनिया में छोड़ आए और यहाँ इस हाल में आए हो कि न पैर में जूता न तन पर कपड़ा। **(कमा फ़ी सूरतुल् अनआम)**

وَتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ

और जो कुछ हम ने तुम को दिया है उसे तुम अपने पीठ पीछे छोड़ आए हो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, बिलाशुब्हा तुम इस हाल में जमा किये जाओगे कि नंगे पांव, नंगे बदन बिना ख़त्ने के होगे। फिर फ़रमाया यह आयत पढ़ लो-

كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ وَعْدًا عَلَيْنَا اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ

बाज़ हज़रात ने फ़रमाया है कि كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ में यह बताया है कि जिस तरह आसानी से हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, उसी तरह अब तुम को पैदा फ़रमा दिया। तुम समझते थे कि हम दोबारा पैदा न होंगे और दोबारा पैदा होने को नामुम्किन समझते थे, हालांकि जिस ने पहली बार पैदा किया वह दूसरी बार भी बाआसानी पैदा कर सकता है।

بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا (बल्कि बात यह है कि तुम ने ख़याल किया था कि हम तुम्हारे लिए कोई वक़्त मुक़र्रर न करेंगे।)

हज़रात अम्बिया-ए-किराम (अलै०) और उन की तअलीम और तब्लीग़ से जो तुम्हें क़ियामत का कुछ ध्यान आ जाता था तो तुम उसे यूँ कह कर छोड़ देते थे कि न दोबारा उठना है और न हिसाब किताब का मौक़ा आना है।

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ (الی قوله تعالی) وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا जब दरबारे ख़ुदावन्दी में हाज़िरी हो जाएगी और वहाँ हिसाब होगा और पेशी होगी तो अल्लाह तआला को हुज्जत क़ायम किये बिना भी सज़ा देने का अख़्तियार है, लेकिन वह हुज्जत क़ायम कर के सज़ा देगा यह हुज्जत आमाल नामों के ज़रिये भी और इन्सानों के अंगों की गवाही से भी क़ायम होगी और कुछ दूसरी चीज़ें भी गवाही देंगी, आमाल नामे पेश होंगे, हर शख़्स का आमाल नामा खुला होगा जो उस के हाथ में दे दिया जाएगा। अच्छे लोगों का आमाल नामा दाहिने हाथ में और बुरे लोगों का आमाल नामा पीठ के पीछे से बाएँ हाथ में दिया जाएगा।

अपने-अपने आमाल नामे देखेंगे, उन में हर छोटा-बड़ा अमल लिखा हुआ होगा। नाफ़रमान उसे देखकर डरेंगे और यूँ कहेंगे कि काश! यह आमाल नामा हमारे सामने न आता जैसा कि सूरः हाक़्क़ा (आयत नं० 26) में फ़रमायाः-

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۚ

और जिस के बाएँ हाथ में आमाल नामा दिया जाएगा वह कहेगा कि हाय काश! मेरा आमाल नामा मुझे न दिया जाता और मुझे पता न चलता कि मेरा क्या हिसाब है।

उन आ़माल नामों में सब कुछ होगा। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से किसी पर कोई ज़ुल्म न होगा कि जो गुनाह न किया होगा वह लिख दिया गया हो ऐसा न होगा और जो नेकी किसी ने की होगी छोटी या बड़ी वह आ़माल नामे में मौजूद होगी। न कोई गुनाह लिखने से रह गया होगा और न कोई बिना किये हुए गुनाह लिखा होगा और न कोई नेकी छोड़ी होगी। (जो गुनाह तौबः व इस्तिग़्फ़ार या नेकियों की वजह से कफ़्फ़ारा होने की वजह से दर्ज न होंगे, उन के बारे में कोई सवाल पैदा नहीं होता क्योंकि वह गुनाह में आते ही नहीं।)

50 وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ
اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۝

आदम को सज्दः

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत आदम (अ़लै०) को पैदा फ़रमा कर फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दः करो, फ़रिश्तों ने तो सज्दः कर लिया (यह सज्दः तअ़ज़ीमी या सम्मान के लिए है) लेकिन इब्लीस ने सज्दः नहीं किया वह भी वहीं रहता था, उस ने कट हुज्जती की और सज्दः करने से इन्कारी हो गया, जिस का ज़िक्र सूरः बक़रः के रुकूअ नं० 4 में और सूरः अ़राफ़ के रुकूअ़ नं० 2 और सूरः बनी इस्राईल में गुज़र चुका है। इब्लीस जिन्नात में से था जो बज़ाहिर अ़िबादत गुज़ारों और फ़रमाँबरदारों में शुमार होता था।

जब अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत आदम (अ़लै०) को सज्दः करने का हुक्म फ़रमाया तो उस ने हुक्म को मानने से इन्कार कर दिया और क़सम खाकर कहा कि मैं आदम की औलादों को बहकाने और वरग़लाने में कोई कसर नहीं रखूँगा, वह अपनी क़सम पर डटा हुआ था और वही नहीं उसकी औलादें भी उस के साथ इन्सानों को बहकाने, वरग़लाने, गुमराह करने और तक्लीफ़ें पहुँचाने में लगी हुई है, इस तरह़ इब्लीस खुला हुआ दुश्मन है।

क़ुर्आन मजीद में जगह-जगह ज़िक्र है कि उसकी औलादें भी उसी की तरह़ है उस के काम और प्रोग्राम में शरीक है। इस के बावजूद इन्सानों का अ़जीब ह़ाल है कि अल्लाह तआ़ला को तो अपना वली नहीं बताते, इब्लीस और उसकी ज़ुर्रियत को अपना दोस्त बताते हैं, उन की बात मानते और उन के बताए हुए तरीक़ों पर चलते हैं। इसी को फ़रमायाः-

أَفَتَتَّخِذُونَهُۥ وَذُرِّيَّتَهُۥٓ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِى

"क्या तुम मुझे छोड़ कर इब्लीस और उसकी ज़ुर्रियत को दोस्त बताते हो, ह़ालांकि वह तुम्हारे दुश्मन हैं"?

بِئْسَ لِلظَّٰلِمِينَ بَدَلًا

"ज़ालिमों के लिए यह बहुत बुरा बदला है"।

अल्लाह तआ़ला को वली बनाना लाज़िम था, अपने मालिक और ख़ालिक़ को छोड़कर जो उन्होंने इब्लीस और उसकी औलादों को वली बना लिया, यह उन्होंने अपने लिए बहुत बुरा किया।

51 مَّآ أَشْهَدتُّهُمْ خَلْقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنفُسِهِمْ ۖ وَمَا كُنتُ مُتَّخِذَ ٱلْمُضِلِّينَ عَضُدًا ﴿٥١﴾

इस आयत में इब्लीस और उसकी ज़ुर्रियत की पैरवी करने वालों और शिर्क करने वालों की जिहालत और गुमराही पर तम्बीह फ़रमाई गई है। अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि मैंने जब आसमान व ज़मीन को और उन लोगों को पैदा किया तो उन को अपनी मदद या मश्वरे के लिए नहीं बुलाया था। जब आसमान व ज़मीन की पैदाइश और ख़ुद उन की पैदाइश में मेरा कोई शरीक नहीं तो फिर इब्लीस और उसकी ज़ुर्रियत से दोस्ती क्यों करते हैं और उन के वरग़लाने से ग़ैरुल्लाह को अल्लाह तआ़ला का शरीक क्यों ठहराते हैं? यह तो बेवक़ूफ़ी और गुमराही है।

फ़रमाया وَمَا كُنتُ مُتَّخِذَ ٱلْمُضِلِّينَ عَضُدًا

"और मैं गुमराह करने वालों को मददगार बनाने वाला नहीं"।

मुश्रिकीन अल्लाह तआ़ला के साथ साझीदार ठहराते हैं, बेवक़ूफ़ी और गुमराही है और दूसरी बेवक़ूफ़ी यह है कि जिन का मिशन गुमराह करने और अल्लाह तआ़ला की फ़रमाँबरदारी से हटाने और उस के लिए शरीक ठहराने का है, उन के बारे में यह अ़क़ीदा बना लिया कि वह अल्लाह तआ़ला के मददगार हैं।

सूरः सबा में फ़रमायाः-

قُلِ ٱدْعُوا۟ ٱلَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ ۖ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِى ٱلْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُۥ مِنْهُم مِّن ظَهِيرٍ

(आप फ़रमा दीजिए कि जिन को तुम अल्लाह के सिवा उपास्य समझ रहे हो उन को पुकारो वह ज़र्रह (कण) बराबर भी अख़्तियार नहीं रखते, न आसमानों में और न ज़मीन में और न उन की इन दोनों में कोई शिरकत है और न उन में से कोई अल्लाह का मददगार है।)

52 وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا۟ شُرَكَآءِىَ ٱلَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا۟ لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُم مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾

(और उस दिन को याद करो जब अल्लाह तआ़ला का मुश्रिकीन से फ़रमान होगा कि तुम उन्हें पुकारो जिन्हें तुम ने मेरा शरीक बना रखा था।)

इस पर वह उन्हें पुकारेंगे यानी उन से कहेंगे कि हमारी मदद करो।

فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ

(सो वह उनका जवाब न देंगे।)

यानी मदद करने के लिए हाँ न करेंगे, वह ख़ुद अपनी मुसीबत में ही मुब्तिला होंगे, किसी की मदद करने की कहाँ मोहलत होगी।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا (और हम उन के दर्मियान आड़ बना देंगे जिस की वजह से एक दूसरे तक पहुँच भी न सकेंगे।

'साहिबे मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' इब्ने अल् अअ़राबी से नक़्ल करते हैं كل حاجز بين شيئين فهو موبق उन्होंने 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' का यह क़ौल भी नक़्ल किया है कि 'मौबिक़' दोज़ख़ में एक वादी का नाम है और 'ह़ज़रत इक्रिमा' का बयान है कि 'मौबिक़' दोज़ख़ में एक आग की नहर है जो इस के किनारे पर बहती है, उस में बड़े-बड़े साँप हैं जैसे काले रंग के खच्चर हों।

53 وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾

وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ (और मुजरिमीन दोज़ख़ को देखेंगे) فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاقِعُوهَا (सो वह यक़ीन कर लेंगे कि वह इस में गिरने वाले हैं) وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا (और वह इस से बचने की कोई राह न पाएँगे) यानी शिर्क करने वालों और शिर्क कराने वालों का अन्जाम यह होगा कि यह सब दोज़ख़ में गिर जाएँगे और कोई किसी की मदद न कर सकेगा।

मतलब यह है कि मुश्रिकीन उन लोगों को पुकारेंगे जिन्हें अल्लाह का शरीक बनाया था, उन के पुकारने पर वह उन्हें जवाब न देंगे और वही उन के हलाकत की जगह होगी यानी दोज़ख़ मौजूद होगी जिस में दोनों जमाअ़तें गिर जाएँगी। मौबिक़ का तर्जुमः जो आड़ से किया गया है, यह इब्ने अल् अअ़राबी से मन्क़ूल है।

आयत नं० 54 से 78 तक

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ
جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ
اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ
وَقْرًا ؕ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ
الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ
مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ
سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ۫ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾ قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ
اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ۫ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا
نَبْغِ ۚ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ
لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ
تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾ قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا
تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ
اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا
تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ
عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ ِۨاسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ
فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾

अनुवाद-

(54) और 'हमने' इस कुर्आन में लोगों के लिए तरह-तरह की मिसालें बयान कर दी, मगर इन्सान सबसे बढ़कर झगड़ालू है। (55) जब लोगों के पास हिदायत आ गई, तो इस बात से कि वे ईमान लाते, और अपने 'रब' से माफ़ी चाहते, इसके सिवा उन्हें किसी चीज़ ने नहीं रोका, कि उनके लिए वही कुछ सामने आए जो उनसे पहलों के साथ आ चुका है, यहाँ तक कि अ़ज़ाब उनके सामने आ मौजूद हो। (56) और हम जो रसूलों को भेजा करते हैं, तो केवल इसलिए कि खुशख़बरी सुनाएँ, और (अ़ज़ाब से) डराएँ; और जो काफ़िर हैं वह नाहक़ झगड़े निकालते हैं ताकि उसको हक़ से फ़िसला दें; और उन्होंने हमारी निशानियों को और उसको, जिससे उन्हें डराया गया है मज़ाक़ करते हैं। (57) और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा? जिसे उसके रब के कलाम (ईशवाणी) से समझाया गया, तो उसने उससे मुँह फेर लिया और जो आ़माल वह

आगे कर चुका उनको भूल गया, 'हमने' उनके दिलों पर पर्दे डाल दिये कि इसे समझ न सकें और कानों में डाट लगा दिये; और अगर आप उन्हें हिदायत की ओर बुलाएँ तो यह ऐसी हालत में हरगिज़ न आएँगे। (58) और आप का 'रब' बड़ा माफ़ करने वाला रहमत वाला है, अगर 'वह' उन्हें उस पर पकड़ता, जो कुछ कि उन्होंने कमाया है, तो उन पर जल्द ही अ़ज़ाब आ जाता, बल्कि उनके लिए तो वादे का एक समय निश्चित है, उस से हटकर वे बच निकलने की कोई राह न पाएँगे। (59) और यह बस्तियाँ वह हैं, जिन्हें 'हमने' हलाक कर डाला, जब उन्होंने जुल्म किया; और 'हमने' उन की हलाकत के लिए एक समय निर्धारित कर रखा था। (60) और जब मूसा ने अपने सेवक से कहा था, "मैं चलता रहूँगा यहाँ तक कि दो समुद्रों के मिलने की जगह पर पहुँच जाऊँ, चाहे मुझे कितना ही समय गुज़ारना पड़े"। (61) फिर जब दोनों दो समुद्रों के मिलने की जगह (संगम) पर पहुँचे, तो अपनी मछली को दोनों भूल गये, और उसने समुद्र में जाने के लिए सुरंग की तरह अपना रास्ता बना लिया। (62) फिर जब आगे बढ़े तो (मूसा ने) अपने सेवक से कहा, "लाओ हमारा नाश्ता, इस सफ़र से तो हमें बड़ी थकान हो गई है"। (63) (उसने) कहा, "अरे जब हम उस चट्टान के पास ठहरे थे तो मैं (वही) उस मछली को भूल गया- और शैतान ने भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करता उसने समुद्र में जाने का रास्ता विचित्र तरीक़े से निकाल लिया"। (64) (मूसा ने) कहा, ''वही तो था जिसे हम को तलाश थी; फिर दोनों अपने क़दमों के निशान पर वापस हुए। (65) फिर उन्होंने 'हमारे' बन्दों में से एक बन्दे को पाया, जिसे 'हमने' अपनी रहमत से नवाज़ा था, और अपने पास से विशेष इल्म सिखाया था। (66) मूसा ने उनसे कहा; "क्या मैं आप के साथ रह सकता हूँ, कि जो इल्म आप को सिखाया गया है? उसमें से आप मुझे भी सिखा दें"। (67) कहा, "आप मेरे साथ रह कर सब्र न कर सकेंगे, (68) और आप उन बातों पर सब्र कैसे कर सकेंगे! जो आप के दाइर-ए-इल्म (ज्ञान परिधि) से बाहर है"। (69) (मूसा ने) कहा, "इन्शाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएँगे और मैं किसी मामले में भी आप की नाफ़रमानी नहीं करुँगा"। (70) कहा अच्छा अगर आप मेरे साथ रहना चाहते हैं तो किसी चीज़ के बारे में मुझ से न पूछिएगा, जब तक कि मैं आप से खुद उस का ज़िक्र न करुँ। (71) तो दोनों चले, यहाँ तक कि जब वे एक नाव में सवार हो गये तो उसने उस (नाव) में दरार डाल दिया, (मूसा ने) कहा, "क्या आप ने उसमें इसलिए दरार डाल दी ताकि उसके सवारों को डुबो दें, यह तो आप ने बड़ी भारी बात की"। (72) कहा, "क्या मैंने आप से कहा न था कि आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे"? (73) (मूसा ने) कहा, "भूल-चूक पर पकड़ मत कीजिए, और मेरे मामले में सख़्ती से काम न लीजिए"। (74) फिर वे दोनों चले यहाँ तक कि जब एक लड़के से मिले तो उन्होंने उसे मार डाला (मूसा ने) कहा, क्या आप ने एक बेगुनाह व्यक्ति को मार डाला? हालाँकि उसने किसी की जान नहीं ली थी, यह तो आप ने बहुत ही बुरा किया! (75) (खिज़्र ने) कहा, "क्या मैंने आप से कहा नहीं था कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकेंगे"? (76) (मूसा ने) कहा, "अगर इसके बाद मैं आप से कुछ पूछूँ तो आप मुझे अपने साथ न रखिएगा, अब तुम मेरी ओर से पूरी तरह उज़्र को पहुँच चुके"। (77) फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब एक बस्ती वालों के पास पहुँचे और उनसे खाना माँगा, तो उन्होंने उनके मेहमानी से इन्कार कर दिया, फिर उनको एक दीवार मिली, जो गिरने वाली थी, तो उसे सीधा कर दिया (मूसा ने) कहा, ''अगर आप चाहते तो इसकी कुछ मज़दूरी ही ले लेते"। (78) (उन्होंने) कहा, "यह मेरे और आप के बीच जुदाई की बात हुई, अब मैं उन चीज़ों की हक़ीक़त बताता हूँ जिन पर आप सब्र नहीं कर सके"।

आयत नं० 54 से 78 तक की व्याख्या

54-56

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ۝
وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَاۗءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ
الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ
وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ۝

झगड़ालू हुज्जत बाज़ और ज़ालिम

इन आयात में इन्सान के एक ख़ास मिज़ाज का ज़िक्र फ़रमाया यानी इन्सान का झगड़ालू होना बताया, फिर उस झगड़े की कुछ तफ़्सील बताई। इर्शाद फ़रमाया कि हम ने इन्सानों के लिए इस क़ुर्आन में हर तरह़ के विषय बयान कर दिये, फिर भी इन्सान उन्हें क़ुबूल नहीं करता और झगड़ेबाज़ी से काम लेता है, यह झगड़े में सब से ज़्यादा बढ़-चढ़ कर है।

सूरः यासीन (आयत नं० 77) में इन्सान के इसी झगड़े वाले मिज़ाज को बयान फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमायाः- اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝ और सूरः ज़ुख़्रुफ़ (आयत नं० 58) में फ़रमायाः- مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ۝ इन्सान का यह मिज़ाज काम करता रहता है और मौक़ा बे-मौक़ा झगड़ता रहता है।

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि एक रात को रसूलुल्लाह (सल्ल०) मेरे और अपनी बेटी 'फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा' के पास तश्रीफ़ लाए और आप ने फ़रमाया क्या तुम नमाज़ नहीं पढ़ते? (तहज्जुद के लिए जगाना मक़्सूद था) मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! हमारी जानें अल्लाह तआ़ला के क़ब्ज़े में हैं वह जब चाहता है उठा देता है। यह सुनकर आप ने कोई जवाब नहीं दिया और वापस होते हुए अपनी रान पर हाथ मार कर यह आयत पढ़ीः-

وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا

(और इन्सान सब से ज़्यादा झगड़ालू है।)

इन्सान की झगड़ेबाज़ी की बातें बयान करते हुए कहा कि उन के पास हिदायत आ चुकी है, फिर भी ईमान नहीं लाते और अपने रब से माफ़ी नहीं माँगते (यानी कुफ़्र से तौबः नहीं करते) अपनी गुमराही पर जमे हुए हैं, अब तो उन्हें यही इन्तिज़ार है कि जैसे पहले लोगों को यानी पिछली उम्मतों के साथ मामला हुआ (यानी अ़ज़ाब ने उन को आकर दबा लिया) इसी तरह़ उन के साथ मामला कर दिया जाए या उनको यह इन्तिज़ार है कि उन के सामने अ़ज़ाब आ खड़ा हो। ह़क़ वाज़ेह़ हो जाने के बाद क़ुबूल न करना और अ़ज़ाब के आने का इन्तिज़ार करना यह भी झगड़ा करने की एक सूरत है।

फिर फ़रमाया कि हम पैग़म्बरों को केवल डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला बना कर भेजते

रहे हैं (उन के मोअ़जिज़ात (चमत्कार) और दलायल देखकर ईमान क़ुबूल करना लाज़िम है, लेकिन लोग ईमान क़ुबूल नहीं करते और फ़रमाइशी मोअ़जिज़ों (चमत्कार) की माँग करते हैं, तरह़-तरह़ से नाह़क़ बातें निकाल कर झगड़ते रहते हैं ताकि बातिल के ज़रिये ह़क़ को हटा दें और केवल झगड़े पर ही बात नहीं करते, बल्कि अल्लाह की आयात को और जिन चीज़ों से डराया गया (यानी अ़ज़ाब को और आख़िरत के दिन) को उन्होंने दिल्लगी और मज़ाक़ बना रखा है।

57-58 وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ۝ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِلًا ۝

फिर फ़रमाया, और उस से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जिसे उस के रब की आयात के ज़रिये नसीह़त की गई तो उस ने उन से मुँह मोड़ा और जो आ़माल उस ने आगे भेजे हैं उन को भूल गया?

'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' फ़रमाते हैं कि नुज़ूले क़ुर्आन के वक़्त चूंकि मुश्रिकीने मक्का पहले मुख़ातब (सम्बोधक) थे, इसलिए पहले यह विषय मुश्रिकीने मक्का को और दूसरे तमाम मुश्रिकों और काफ़िरों को शामिल है, जिन लोगों को ईमान लाना नहीं उन का यही ह़ाल है कि आयात सुनते हैं और मुँह फेर लेते हैं और जो आ़माल पहले भेज चुके हैं यानी कुफ़्र व शिर्क उन को उन्होंने फ़रामोश कर रखा है वह इस का यक़ीन नहीं रखते कि उन की वजह से अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे, जिन लोगों को ईमान लाना नहीं उन के बारे में फ़रमायाः-

اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ (बिलाशुब्हा हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिये हैं वह उन की वजह से क़ुर्आन को नहीं समझते।

وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ (और हम ने उन के कानों को बोझल कर दिया है यानी वह ह़क़ के सुनने से दूर भागते हैं। ऊपर जो कानों में डाट कर देने का तर्जुमः किया गया है, यह मुह़ावरे का तर्जुमः है।)

وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا

(और अगर आप उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाएँगे तो उस वक़्त वह हरगिज़ न आएँगे) वह आयात का मज़ाक़ बनाते और उन से एराज़ करते-करते इस ह़द तक पहुँच चुके हैं कि अब उन की हिदायत पर आने की आप कोई उम्मीद न रखें।

(और आप का रब बहुत मग़्फ़िरत करने वाला रह़म वाला है) वह ढ़ील देता है अ़ज़ाब देने में जल्दी नहीं करता। जब भी कोई शख़्स कुफ़्र और शिर्क से तौबः करे वह उसे बख़्श देगा और अपनी रह़मत के दामन में ले लेगा।

لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ

(अगर अल्लाह तआ़ला उन के आ़माल की वजह से उन का मुवाख़िज़ा फ़रमाए तो उन के लिए

जल्दी अ़ज़ाब भेज दे।)

بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْئِلًا (बल्कि उन के लिए एक दिन मुक़र्रर है कि उस दिन हरगिज़ पनाह की जगह न पाएँगे।

(यह लोग कैसे ही अ़ज़ाब की जल्दी करें और कैसा ही अ़ज़ाब माँगे अल्लाह तआ़ला ने जो वक़्त मुक़र्रर कर रखा है उसी वक़्त गिरिफ़्त की जाएगी और अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे, यह नहीं हो सकता कि उस वक़्त के आने से पहले कहीं चले जाएँ और छिप जाएँ और अ़ज़ाब से बच जाएँ।

'साहिबे रूहुल् मआ़नी' लिखते हैं कि مِنْ دُوْنِهٖ की ज़मीर **मौअ़िदा** की तरफ़ है और एक क़ौल यह है कि उस का इशारा अ़ज़ाब की तरफ़ है। **(रूहुल् मआ़नी भाग 15, सफ़ा 306)**

59 وَتِلْكَ الْقُرٰى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿۵۹﴾

और उन बस्तियों को हम ने हलाक कर दिया जब कि उन्होंने ज़ुल्म किया।

इस से पिछली उम्मतें मुराद हैं, जो ह़ज़रात अम्बिया (अ़लै०) की नाफ़रमानी की वजह से हलाक कर दी गईं, चूंकि क़ुर्आन मजीद में जगह-जगह उन का ज़िक्र आया है और अहले मक्का उन से वाक़िफ़ भी थे। शाम को जाते हुए हलाक शुदा बस्तियों पर गुज़रते थे, इसलिए 'तिल्कल् क़ुरा' फ़रमाया जिस में उन बस्तियों की तरफ़ इशारा फ़रमा दिया।

وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا (और हम ने उन की हलाकत के लिए वक़्त मुक़र्रर कर रखा था) वह उसी के मुताबिक़ हलाक हुए बस जिस तरह़ वह अपने-अपने वक़्त पर हलाक हुए। ऐ अहले मक्का! तुम भी अपने मुक़र्ररह वक़्त पर अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होगे, तुम्हारे जल्दी मचाने से अ़ज़ाब जल्द न आएगा और जब वह अपने मुक़र्रर वक़्त पर आएगा तो हटेगा नहीं, चुनाँचे ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर यह लोग मक़्तूल हुए, क़ैदी हुए, ज़लील हुए और आख़िरत का अ़ज़ाब तो बहरह़ाल हर काफ़िर के लिए ज़रूरी ही है।

60-78 وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَاۤ اَبْرَحُ حَتّٰۤى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِىَ حُقُبًا ﴿۶۰﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا
نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿۶۱﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ۫ لَقَدْ
لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿۶۲﴾ قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَاۤ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ۫ وَمَاۤ
اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿۶۳﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۚ
فَارْتَدَّا عَلٰۤى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿۶۴﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَاۤ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ
مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿۶۵﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰۤى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿۶۶﴾
قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿۶۷﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿۶۸﴾ قَالَ
سَتَجِدُنِىْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَاۤ اَعْصِىْ لَكَ اَمْرًا ﴿۶۹﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِىْ فَلَا تَسْـَٔلْنِىْ عَنْ شَىْءٍ
حَتّٰۤى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿۷۰﴾ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰۤى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا
لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿۷۱﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿۷۲﴾

قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ۝ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ
اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۭ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـــًٔا نُّكْرًا ۝ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ
صَبْرًا ۝ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ۝ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَآ
اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِۨ اسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ۭ قَالَ
لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ۝ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और ह़ज़रत ख़िज़िर का वाक़िआ़

इन आयात में अल्लाह तआ़ला ने 'ह़ज़रत मूसा' और 'ह़ज़रत ख़िज़िर' की मुलाक़ात का वाक़िआ़ बयान फ़रमाया है। यह वाक़िआ़ ह़दीस की किताबों में तफ़्सील से मौजूद है।

'इमाम बुख़ारी' (रह़०) ने 'किताबुल् इ़ल्म' में दो जगह लिखा है। पहली जगह पेज नं० 17 भाग-1 पर मुख़्तसर और फिर पेज नं० 23 पर तफ़्सील के साथ लिखा है, फिर किताबुल् तफ़्सीर (पेज नं० 687 भाग-2 ता 690) में 'सूरः कहफ़' की तफ़्सीर में तफ़्सीली रिवायत है और भी कई जगह ज़िक्र फ़रमाया गया है।

'सह़ीह़ मुस्लिम' में पेज नं० 269 भाग 2 में है, 'इमाम नसई' ने 'सुनन कुबरा' में पेज नं० 386 भाग 2 से पेज नं० 391 में ज़िक्र किया है, 'इमाम तिर्मिज़ी' ने भी इस वाक़िये को अब्वाबुल् तफ़्सीर (सूरः कहफ़) में ज़िक्र किया है। हम 'सह़ीह़ बुख़ारी' किताबुल् तफ़्सीर से वाक़िआ़ नक़्ल करते हैं। इस से वाक़िआ़ की तफ़्सील भी मालूम होगी और आयात की तफ़्सीर भी।

'ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब' (रज़ि०) ने बयान किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, एक दिन ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने बनी इस्राईल को नसीह़त की। इस नसीह़त की वजह से लोगों की आँखों से आँसू जारी हो गए और दिलों में नर्मी पैदा हो गई। जब नसीह़त फ़रमा कर वापस चल दिये तो एक शख़्स ने दर्याफ़्त कर लिया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या ज़मीन में कोई ऐसा शख़्स है जो इ़ल्म में आप से ज़्यादा हो? ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने जवाब में फ़रमाया कि कोई नहीं और एक रिवायत में है कि उन से दर्याफ़्त किया गया कि लोगों में सब से बड़ा आ़लिम कौन है? उन्होंने फ़रमा दिया कि मैं हूँ। इस पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तम्बीह हुई क्योंकि उन्होंने 'अल्लाहु आ़लम' नहीं कहा।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हुआ कि बिलाशुब्हा हमारा एक बन्दा मजमउ़ल् बह़रैन (बहरे फ़ारस और बहरे रूम के मिलने की जगह) में है वह तुम से ज़्यादा इ़ल्म रखने वाला है। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने अ़र्ज़ किया, मैं आप के उस बन्दे से किस तरह़ मुलाक़ात करुँ? मैं उसे जानता नहीं हूँ उसकी तलाश में निकलूँ तो मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं आप के उस बन्दे तक पहुँच गया?

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि एक मछली ले कर उसे टोकरी में रख लो यह मछली मुर्दा हो, फिर जिस जगह उस में जान डाल दी जाए समझ लेना कि वह साह़ब उसी जगह मिलेंगे जिन से तुम मिलना

चाहते हो, यह मछली ज़िन्दा होकर तुम से जुदा हो जाएगी। चुनांचे ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने एक मछली लेकर टोकरी में रख ली और अपने एक नौजवान ख़ादिम को साथ लिया जिस का नाम 'यूशअ़ बिन नून' था, फिर अपने ख़ादिम से फ़रमाया कि बस तुम्हारे ज़िम्मे इतना काम है कि जहाँ यह मछली अलग हो जाए वहाँ हमें बता देना। 'यूशअ़' ने कहा कि यह तो आप ने कोई बड़ी बात की ज़िम्मेदारी नहीं सौंपी (मैं इन्शाअल्लाह तआ़ला ज़रूर आप के फ़रमान के मुताबिक़ अ़मल करुँगा।)

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और उन के ख़ादिम 'ह़ज़रत यूशअ़ बिन नून' (जो ह़ज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के परपोते थे, जो ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद नबी बने) दोनों साथ-साथ चलते रहे, दिन का जो ह़िस्सा बाक़ी था सफ़र में गुज़रा और रात भी, रास्ते में एक पत्थर पर सर रख कर सो गये। इसी दौरान मछली ज़िन्दा होकर टोकरी से निकली और उस ने समुद्र में अपना रास्ता बना लिया।

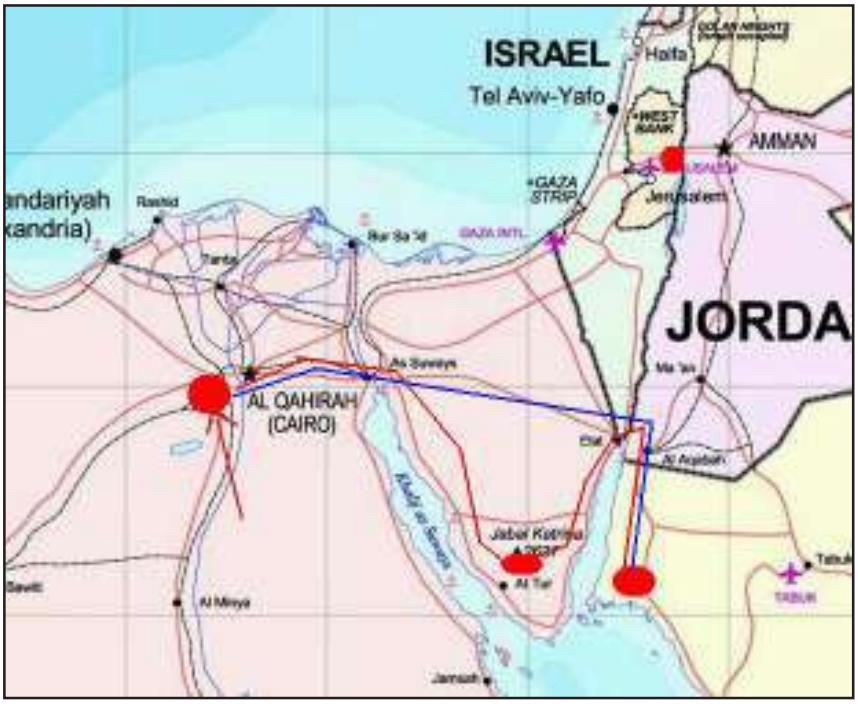

अ ल ला ह तआ़ला ने पानी में जिधर से मछली गई थी एक सुरंग जैसा बना दिया और उस मछली को वहीं ठहरा दिया। इस मन्ज़र को 'ह़ज़रत यूशअ़' ने देखा तो था, मगर ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को बताना भूल गये। जब उस जगह को छोड़कर आगे चले और अगले दिन सुबह़ हुई तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने फ़रमाया कि हमारा सुबह़ का खाना तो लाओ, इस सफ़र में हमें बड़ी तक्लीफ़ पहुँची है। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) बराबर चलते जा रहे थे, जब उस जगह से आगे बढ़ गये जहाँ तक पहुँचना था यानी जो ह़ज़रत ख़िज़िर से मिलने की जगह थी तो ख़ूब थकान महसूस हुई। उस वक़्त अपने ख़ादिम से खाना तलब किया, ख़ादिम ने जवाब दिया, क्या आप को इ़ल्म नहीं जब हम लोग पत्थर के पास रुके थे उस वक़्त मछली समुद्र में चली गई थी? जब हम वहाँ से चलने लगे तो मुझे यह याद न रहा कि आप को बताता।

एक रिवायत में है कि जब मछली ज़िन्दा होकर समुद्र में चली गई तो 'ह़ज़रत यूशअ़ बिन नून'

ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को क़िस्सा इसलिए नहीं बताया कि वह उस वक़्त सो रहे थे, उन्होंने अपने दिल में कहा कि बेदार करना ठीक नहीं ख़ुद ही जाग जाएँगे तो बता दूँगा।

जब रवाना होने लगे तो बताना भूल गये, यह भूल शैतान ही के भुलाने से हुई कोई भूलने वाली बात नहीं थी बल्कि याद रखने और याद रहने की बात थी, मछली जो समुद्र में गई उस पर ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और उन के ख़ादिम को बड़ा तअ़ज्जुब हुआ।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने फ़रमाया कि यही तो वह जगह है जिस की तलाश में हम चले थे। मछली का हम से जुदा हो जाना ही इस बात की निशानी थी कि हम जिन साह़ब की तलाश में निकले हैं वह वहीं हैं। अब क्या हो सकता है अब तो वापस ही लौटना पड़ेगा, लिहाज़ा जिधर से आए थे पैर के निशानात देखते हुए वापस हुए।

'ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब' (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने अपने ख़ादिम से कहा कि खाना लाओ "उस ने कहा भला देखो जब ***(आयत नम्बर 63)*** ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को उस वक़्त तक थकावट मह़सूस नहीं हुई जब तक वह उस जगह से आगे नहीं निकल गये जिस के बारे में अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया था। **(बुख़ारी)**

ह़ज़रत ख़िज़िर से मुलाक़ात

जब वापस होकर उसी पत्थर के पास पहुँचे जिस पर सर रख कर सो गये थे तो वहाँ एक साह़ब को देखा कि समुद्र के दर्मियान पानी पर कपड़ा ओढ़े हुए लेटे हैं {यह साह़ब ह़ज़रत ख़िज़िर थे} ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने उन्हें सलाम किया, उन्होंने मुँह खोला और फ़रमाया कि इस सरज़मीन में सलाम कहाँ से आ गया?

आप कौन हैं? ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने जवाब दिया कि मैं मूसा हूँ। उन्होंने दर्याफ़्त किया कि 'बनी इस्राईल' वाले मूसा हो? ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने फ़रमाया कि हाँ, मैं वही हूँ! उन्होंने सवाल किया कैसे तशरीफ़ लाना हुआ? फ़रमाया आप से इ़ल्म सीखने के लिए जो आप को इ़ल्म मुफ़ीद सिखाया गया है। उन्होंने जवाब में कहा, ऐ मूसा! मुझे अल्लाह ने वह इ़ल्म दिया है जिसे आप नहीं जानते और आप को अल्लाह ने वह इ़ल्म दिया है जिसे मैं नहीं जानता।

यह बातें हो ही रही थीं कि एक चिड़िया आई जिस ने समुद्र से अपनी चोंच में कुछ पानी लिया। ह़ज़रत ख़िज़िर ने फ़रमाया कि ऐ मूसा! अल्लाह के इ़ल्म के सामने तुम्हारा इ़ल्म और मेरा इ़ल्म इतना भी नहीं है जितना इस परिन्दा ने समुद्र से अपनी चोंच में पानी भर लिया है।

'ह़ज़रत ख़िज़िर' के पास जो इ़ल्म था वह अल्लाह का ख़ास फ़ज़्ल था। जैसा कि आयत नं० (65) में बयान हुआ, इसलिए बाज़ लोगों का यह कहना सह़ी नहीं कि अल्लाह तआ़ला नबियों के अ़लावा कुछ दूसरों को 'इ़ल्म लदुन्नी' भी देता है जो ज़ाहिरी इ़ल्म शरीअ़त के ख़िलाफ़ होता है।

यह गुमराह करने वाली राय है और शरीअ़त से आज़ादी ह़ासिल करने का बहाना है। अल्लाह

तआ़ला ने ख़िज़िर को कुछ ग़ैबी बातों का इ़ल्म दिया था जिसे क़ुर्आन में बयान कर दिया गया था। अगर कोई शख़्स खुद से 'इ़ल्म लदुन्नी' का दावा करेगा तो वह झूठा होगा, इसलिए कि उस के पास ह़ज़रत ख़िज़िर की तरह़ क़ुर्आन से दलील मौजूद नहीं है कि अल्लाह ने उसे कोई ख़ास 'इ़ल्म लदुन्नी' दिया हो।

यहाँ ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का ह़ज़रत ख़िज़िर से इ़ल्म ह़ासिल करने का सवाल करना इस बात की दलील नहीं है कि 'ह़ज़रत ख़िज़िर' ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से अफ़्ज़ल थे, इसलिए कि कभी ऐसा भी होता है कि कोई बड़ा इ़ल्म व मर्तबे वाला अपने से छोटे आदमी से कोई ख़ास इ़ल्म ह़ासिल करता है जो उस के पास नहीं होता। जैसे डाक्टर के पास एक बड़ा आ़लिम भी मालूम करने के लिए जाता है कि क्या मर्ज़ है? इसका यह मतलब नहीं कि आ़लिम से डाक्टर बड़ा हो गया।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को अल्लाह तआ़ला ने तौरेत दी थी, जिस में शरीअ़त के हुक्मों के साथ दूसरे बहुत से इ़ल्म थे और उन पर वह़्य नाज़िल होती थी और ख़िज़िर को एक ख़ास इ़ल्म ग़ैब दिया था जिसका मक़्सद ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को तम्बीह करना था कि सब से बड़ा इ़ल्म वाला अल्लाह है, वह अपने जिस बन्दे को जो चाहता है देता है।

इस आयत से बाज़ लोग समझते हैं कि नबी से वली अफ़्ज़ल होता है इसलिए कि यहाँ अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को जो नबी थे हुक्म दिया कि वह ह़ज़रत ख़िज़िर से इ़ल्म ह़ासिल करें, यह खुला हुआ कुफ़्र है।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का वादा

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने जो उन से दरख़्वास्त की थी कि मुझे इ़ल्म सिखा दें, इस पर उन्होंने कहा कि मेरे साथ रह कर आप सब्र नहीं कर सकते। ह़जरत मूसा (अ़लै०) ने जवाब दिया कि इन्शाअल्लाह आप मुझे साबिर (धैर्यवान) पाएँगे और मैं आपकी कोई नाफ़रमानी नहीं करुँगा।

जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने वादा कर लिया तो दोनों एक साथ समुद्र के किनारे-किनारे चल दिये। यहाँ तक कि एक कश्ती पर पहुँचे, वह कश्ती सवारियों को इस किनारे से दूसरे किनारे तक पहुँचाया करती थी। दोनों ने कश्ती वालों से कहा कि हमें भी सवार कर लें, उन लोगों ने ह़ज़रत ख़िज़िर को पहचान लिया और जान पहचान की वजह से मुफ़्त में बिठा लिया।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का एतिराज़

'ह़ज़रत ख़िज़िर' ने एक कुल्हाड़ा लिया और कश्ती के एक तख़्ते को उखाड़ दिया। 'ह़ज़रत मूसा' (अ़लै०) से न रहा गया और फ़रमाया कि एक तो उन लोगों ने हमें बिना कुछ माल लिए सवार कर लिया और ऊपर से आप ने यह क्या किया कि उन की कश्ती में सूराख़ कर दिया। अब इस सूराख़ से पानी भरेगा तो कश्ती डूबेगी, कश्ती के साथ वह सब भी डूबेंगे जो कश्ती में सवार हैं। आप का यह काम तो ऐसा ही है कि इन लोगों को डुबो दे।

لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا इस में ह़ज़रत ख़िज़िर की नियत पर ह़मला करना मक़्सूद नहीं था। इस में जो लाम है, इस का मतलब यह है कि आप ने ऐसा काम किया है जिस का अन्जाम यह है कि कश्ती पर जो लोग सवार हैं सब डूब जाएँगे, यह तो बड़ा भारी ज़ुल्म है।

ह़ज़रत ख़िज़िर ने फ़रमाया, क्या मैंने नहीं कहा था कि मेरे साथ रहते हुए आप सब्र नहीं कर सकते? ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने जवाब में फ़रमाया कि मैं भूल गया, आप भूलने पर मेरी पकड़ न फ़रमाइए।

एक लड़के का क़त्ल

इस के बाद (नाव से उतर कर) आगे बढ़े दोनों साथ-साथ जा रहे थे कि चन्द लड़कों पर से गुज़र हुआ जो खेल रहे थे। 'ह़ज़रत ख़िज़िर' ने उन में से एक लड़के को पकड़ा और उस के सर को मरोड़ कर जिस्म से अलग कर दिया (और एक रिवायत में है कि उसे छुरी से ज़ब्ह़ कर दिया) ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से फिर न रहा गया और फ़रमाया, क्या तुम ने एक पाक जान को क़त्ल कर दिया जिस ने किसी को क़त्ल नहीं किया? जान का बदला जान होता है।

(यह लड़का न जवानी को पहुँचा, जिस का कोई अ़मल गुनाहों में शुमार किया जाए और न ही उस ने किसी को क़त्ल किया था, उस को क़त्ल करना तो बिल्कुल ग़लत है) आप ने यह तो बड़ा ही ग़लत काम किया।

ह़ज़रत ख़िज़िर ने फ़रमाया, क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ रहते हुए सब्र नहीं कर सकोगे? ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने समझ लिया कि मेरा और इन का जोड़ नहीं बैठ सकता, लिहाज़ा अब इन्हें अख़्तियार दे देना चाहिए लिहाज़ा ह़ज़रत ख़िज़िर से फ़रमाया कि मैं इस के बाद आप से किसी चीज़ के बारे में सवाल करुँ तो मुझे साथ न रखिएगा, आप मुझे अलग कर दीजिएगा।

आपस में जुदाई

इस के बाद फिर चले और चलते-चलते एक बस्ती में आए। खाने की ज़रूरत मह़सूस हो रही थी, अर्थात भूक लगी हुई थी। बस्ती वालों से खाने के लिए कुछ तलब किया, उन लोगों ने मेहमानी करने से इन्कार कर दिया (मेहमानी तो क्या करते तलब करने से भी न दिया) अभी ज़्यादा देर नहीं गुज़री थी कि वहाँ एक दीवार को देखा जो झुकी हुई थी और क़रीब था कि गिर पड़े, ह़ज़रत ख़िज़िर ने खड़े होकर उसे अपने हाथ से सीधी कर दी।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने फ़रमाया कि यह ऐसे लोग हैं जिन्होंने न हमें कुछ खिलाया, न हमारी मेहमानी की, आप ने उन का काम मुफ़्त में कर दिया। अगर आप चाहते तो उन लोगों से अपने इस काम पर कुछ मज़दूरी ले लेते, ताकि हमारे खाने का काम चल जाता। ह़ज़रत ख़िज़िर ने फ़रमाया कि यह मेरे और तुम्हारे दर्मियान जुदाई (का वक़्त) है। हाँ, इतनी बात ज़रूर है कि जिन बातों पर तुम ने सब्र

नहीं किया तुम्हें उन की ह़क़ीक़त बताए देता हूँ।

यह पूरा वाक़िआ़ सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 223 भाग-एक और पेज नं० 687 से 690 भाग-दो (किताबुल् तफ़्सीर) से नक़्ल किया गया है और एक रिवायत की कमी दूसरी रिवायत से पूरी कर दी। (रिवायात में कुछ कमी बेशी है।)

'ह़ज़रत ख़िज़िर' को अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल से अपना वली बनाया था और बाज़ चीज़ों का इ़ल्म दिया था जो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के पास भी नहीं था। अक्सर लोगों की यही राय है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने आयत में जो **'रहमः'** का मतलब नुबूव्वत लिया है। इस तरह़ कुछ लोगों की राय यह है कि ख़िज़िर नबी थे। **(वल्लाहु आ़लम)**

अक्सर लोगों का यही कहना है कि 'ह़ज़रत ख़िज़िर' का इन्तिक़ाल हो चुका है, इसलिए कि अगर ज़िन्दा होते तो नबी करीम (सल्ल०) के पास आकर उन पर ईमान लाना वाजिब हो जाता।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो अल्लाह तआ़ला और आख़िरत पर ईमान रखता हो उसे चाहिए कि वह मेहमान का इक्राम करे।" **(बुख़ारी)**

'ह़ज़रत सअ़ीद बिन जुबैर' (रज़ि०) की ह़दीस जो 'सह़ीह़ बुख़ारी' के मुताबिक़ 'ह़ज़रत ख़िज़िर' ने शुरु में ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को बता दिया था कि "अल्लाह तआ़ला ने अपने उ़लूम में से एक इ़ल्म मुझे सिखलाया है जिसे आप नहीं जानते और एक इ़ल्म आप को सिखलाया है जिसे मैं नहीं जानता। इसके अ़लावा यह भी बतला दिया कि मेरा और तुम्हारा दोनों का इ़ल्म मिल कर भी दरिया से चिड़िया अपनी चोंच से जितना पानी लेती है उतना ही है।

आयत नं० 79 से 101 तक

اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَاَمَّا الْغُلٰمُ
فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَاَمَّا الْجِدَارُ
فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً
مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ۚ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ۭ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ
ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ
حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۭ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ
ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَاۗءَ ۨ الْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾
حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰي قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذٰلِكَ ۚ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾
حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ
فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّيْ فِيْهِ رَبِّيْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾
اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ۭ حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِيْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾ فَمَا اسْطَاعُوْٓا
اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّاۗءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ
يَوْمَىِٕذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَىِٕذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا ﴿١٠٠﴾ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ
عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾

अनुवाद-

(79) कि वह नाव ग़रीब लोगों की थी जो दरिया में काम करते थे, तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ, क्योंकि उनके आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) नाव को ज़बर्दस्ती छीन लेता था। (80) और वह, जो लड़का था उसके माँ- बाप दोनों ईमान वाले थे, तो हम को डर हुआ कि वह इन दोनों को सरकशी और कुफ़्र में न फँसा दे; (81) फिर 'हमने' चाहा कि उसके बदले में उनका रब उन्हें ऐसी औलाद दे, जो उससे ज़्यादा पाक और मुहब्बत वाला हो। (82) और रही वह दीवार तो वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी, और उसके नीचे उन का ख़ज़ाना गड़ा हुआ था और उनका बाप एक नेक आदमी था, तो तुम्हारे रब ने चाहा कि वह लड़के अपनी जवानी को पहुँच कर अपना गड़ा हुआ ख़ज़ाना निकाल लें; यह आप के रब की मेहरबानी थी, मैंने तो इसमें अपनी ओर से कुछ भी नहीं किया, यह उन बातों की हक़ीक़त है जिन पर आप सब्र न कर सके। (83) यह आप से ज़ुलक़रनैन के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए, "उनका ज़िक्र मैं अभी तुम्हारे सामने बयान करता हूँ"। (84) 'हमने' उसे ज़मीन पर हुकूमत दी थी, और उसे हर तरह का सामान दिया था। (85) फिर उसने (सफ़र की) एक राह अपना ली; (86) यहाँ तक कि जब सूरज के डूबने की जगह पहुँचा, तो उसे मटमैले काले पानी के एक स्रोत में डूबते हुए पाया, और उसी के क़रीब उसे एक क़ौम मिली, हमने कहा, "ऐ ज़ुलक़रनैन! तुझे अधिकार है कि चाहे तकलीफ़ पहुँचाए और चाहे उनके साथ

अच्छा व्यवहार करे"। (87) उसने कहा "जो कोई ज़ुल्म करेगा उसे तो हम सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की ओर पलटेगा तो वह भी उसे सख़्त अज़ाब देगा; (88) और जो ईमान ले आए, और भले काम करे तो उसके लिए अच्छा बदला है और 'हम' उसके लिए नर्मी का हुक्म देंगे"। (89) फिर उसने एक (और) राह अपना ली; (90) यहाँ तक कि जब वह सूरज के निकलने की जगह पहुँचा तो उसने उसे एक ऐसी क़ौम पर निकलते हुए देखा, जिनके लिए 'हमने' उसके ऊपर कोई आड़ नहीं रखी थी। (91) ऐसा ही ('हमने' किया) था और जो कुछ उसके पास था, उस की 'हमें' पूरी ख़बर थी। (92) फिर उसने एक (और) राह अपना ली, (93) यहाँ तक कि जब चलते-चलते दो पहाड़ों के बीच पहुँचा, तो देखा कि उनके उस ओर कुछ लोग हैं।, जो कोई बात ही नहीं समझते थे। (94) उन्होंने कहा, "ऐ ज़ुलक़रनैन! याजूज और माजूज इस जमीन पर बड़ा फ़साद मचाते हैं, तो क्या हम आप के लिए कुछ खर्च जमा कर दें, ताकि आप हमारे और उनके बीच कोई रोक बना दें"? (95) (ज़ुलक़रनैन ने) कहा, मेरे रब ने मुझे जो कुछ अधिकार और शक्ति दी है वह बहुत है, तुम तो बस ताक़त के ज़रिये मेरी मदद करो, मैं तुम्हारे और उनके बीच एक मज़बूत दीवार बनाए देता हूँ; (96) तुम मुझे लोहे के टुकड़े ला दो।" यहाँ तक कि जब दोनों पहाड़ों के बीच की खाली जगह को पाटकर बराबर कर दिया तो कहा, "धौंको"! यहाँ तक कि जब उसे आग कर दिया तो कहा, "मुझे पिघला हुआ ताँबा ला दो, ताकि मैं उस पर उँडेल दूँ"। (97) फिर उनमें यह शक्ति न रही कि (याजूज-माजूज) उस पर चढ़ सकें और न यह शक्ति रही कि उसमें सेंध लगा सकें। (98) कहा, "यह मेरे 'रब' की रहमत है, फिर जब मेरे रब का वादा आ पहुँचेगा तो वह उसे (ढा कर) बराबर कर देगा, और मेरे रब का वादा सच्चा है"। (99) और 'हम' उस दिन उन्हें छोड़ देंगे कि वे एक-दूसरे से मौजों की तरह आपस में गुत्थम-गुत्था हो जाएँगे, और 'सूर' फूँका जाएगा, तो 'हम' उन सब को एक साथ इकट्ठा कर देंगे। (100) और उस दिन 'हम' जहन्नम को इन्कार करने वालों के सामने कर देंगे। (101) जिनकी आँखों पर 'हमारी' याद से पर्दा पड़ा हुआ था; और वह सुन ही नहीं सकते थे।

आयत नं० 79 से 101 तक की व्याख्या

79-82

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ
سَفِينَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ﴿٨٠﴾
فَأَرَدْنَا أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ
وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً
مِنْ رَبِّكَ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾

ह़ज़रत ख़िज़िर का ह़क़ीक़त बताना

'ह़ज़रत ख़िज़िर' जब 'ह़ज़रत मूसा' (अ़लै०) को अलग करने लगे तो फ़रमाया कि मैं आपको उन बातों की ह़क़ीक़त बताए देता हूँ जिन पर आप सब्र न कर सके। 'ह़ज़रत ख़िज़िर' ने तीन काम किये थे, जिन में से दो तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के नज़्दीक बहुत ही ज़्यादा क़ाबिले एतिराज़ थे और तीसरी

जो बात थी वह कोई ख़ास न थी, लेकिन बस्ती वालों ने चूंकि तलब करने पर भी खाने को कुछ नहीं दिया था, इसलिए ह़ालत और ज़रूरत के पेशेनज़र फ़रमा दिया कि अगर आप चाहते तो उन लोगों से कुछ मज़दूरी ले लेते, जिस के ज़रिये हम कुछ ख़रीद कर खा लेते। **(सह़ीह़ बुख़ारी भाग 2, पेज नं० 689)**

कश्ती (नाव) का तख़्ता-

'ह़ज़रत ख़िज़िर' ने तीनों बातों की ह़क़ीक़त बयान फ़रमा दी और फ़रमाया कि नाव का मामला यह है कि ग़रीब लोगों की नाव थी जो समुद्र में नाव को चलाते और सवारियाँ बिठाकर मेह़नत मज़दूरी कर के पैसे ह़ासिल करते थे, लेकिन साथ ही एक दुश्मन भी लगा हुआ था जो एक ज़ालिम बादशाह था, जिस कश्ती को अच्छी ह़ालत में देखता उसे छीन लेता था। मुझे अन्दाज़ा था कि यह लोग आगे बढ़ेंगे तो उन के साथ यही मामला होगा लिहाज़ा मैंने ऐसा अ़मल किया जिस से कश्ती में ऐ़ब पैदा हो गया, वक़्ती तौर पर उस ऐ़ब की वजह से ख़तूरे से निकल गई, इस के बाद उन्होंने उसे दुरुस्त कर लिया और आगे बढ़ गये।

लड़के का क़त्ल-

अब रही लड़के की बात तो इस का मामला यह है कि वह काफ़िर था और कुफ़्र पर पल बढ़ रहा था, बालिग़ होकर कभी भी वह मुसलमान होने वाला न था। **(मुस्लिम भाग 2, पेज नं० 71)**

उस के माँ-बाप को उस से बहुत ज़्यादा मुह़ब्बत थी, अन्देशा था कि बड़ा होकर अपने माँ-बाप को भी कुफ़्र पर न डाल दे। ऐसा न हो कि मुह़ब्बत के जोश में वह उस के कुफ़्र के साथी बन जाएँ। प्यारी औलाद का माँ-बाप पर जो ज़ोर चलता है उस ज़ोर को इस्तेमाल कर के यह उन्हें सरकश और काफ़िर न बना दे, लिहाज़ा उस को तो क़त्ल कर दिया और उसके बदले अल्लाह तआ़ला ने उन को दूसरी औलाद अ़ता फ़रमा दी जो पाकीज़ा होने के ए़तिबार से भी उस लड़के से बेहतर थी (क्योंकि यह औलाद मोमिन थी) और वालिदैन के साथ रह़मत और मुह़ब्बत का बर्ताव करने में भी उस से बहुत ज़्यादा बेहतर थी।

दीवार को सीधी करना-

अब रही दीवार की बात तो उसकी ह़क़ीक़त यह है कि यह दो बच्चों की दीवार थी। यह बच्चे यतीम थे और दीवार के नीचे ख़ज़ाना था। अगर दीवार गिर पड़ती तो शहर वाले उन का ख़ज़ाना ले उड़ते और वह दोनों अपने माँ-बाप की मीरास (विरासत) से मह़रूम होकर फ़क़ीरी का शिकार हो जाते।

पहले तो यह बच्चे यतीम थे दूसरे नेक आदमी की औलाद थे, इसलिए यूँ भी उन के साथ अच्छे सुलूक की ज़रूरत थी, इसीलिए हम ने दीवार को खड़ा कर दिया ताकि बालिग़ हो जाएँ तो अपना ख़ज़ाना निकाल लें। अल्लाह तआ़ला ने उन दोनों यतीमों पर रह़म फ़रमाया और गिरने वाली दीवार को सीधी करवा दिया। अगर शहर के बालिग़ लोगों ने हमें खाने के लिए कुछ न दिया तो इस का बदला उन यतीमों से तो नहीं लेना चाहिए था, उन का काम तो बिना बदला लिए ही करना था।

तीनों बातों की हक़ीक़त बताकर ह़ज़रत ख़िज़िर ने फ़रमाया وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِیْ यह जो कुछ मैंने कहा है अपनी राय से नहीं किया (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मुझ से यह काम लिए गये) ذٰلِكَ تَاْوِیْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَیْهِ صَبْرًا (यह ह़क़ीक़त है उन बातों की जिन पर आप सब्र न कर सके।)

अहम बातें

1- ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने जो सवाल करने वाले के जवाब में यूँ फ़रमाया कि मुझ से बढ़ कर कोई आ़लिम नहीं, वह इस एतिबार से उन का फ़रमाना सह़ी था कि वह साह़िबे शरीअ़त थे। एक बहुत बड़ी क़ौम के नबी थे, उन पर तौरेत शरीफ़ नाज़िल हुई थी, लेकिन शब्दों में चूंकि एक क़िस्म का दावा है इसलिए अल्लाह तआ़ला ने पकड़ फ़रमाया।

इस से मालूम हुआ कि कोई शख़्स कितना ही बड़ा आ़लिम हो तब भी उसे यह न कहना चाहिए कि मैं सब से बड़ा आ़लिम हूँ। इस में एक तो दावा है, जो मुकम्मल होने की शान के ख़िलाफ़ है। दूसरे हो सकता है कि दूसरा शख़्स भी इतना बड़ा या इस से बड़ा आ़लिम हो जिस की उसे ख़बर न हो। (चाहे उस के अपने उ़लूम (ज्ञान) के अ़लावा दूसरे ही उ़लूम (ज्ञान) का माहिर हो।)

2- मालूम हुआ कि ज्ञान ह़ासिल करने के लिए सफ़र करना चाहिए और यह कि मुअ़ल्लिम (टीचर) को अपने पास बुलाने की फ़िक्र न करे, बल्कि उस के पास ख़ुद जाए। इमाम बुख़ारी (रह़०) ने किताबुल् इ़ल्म में 'बाबुल् ख़ुरूज फ़ी तलिबे इ़ल्म' में ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और ह़ज़रत ख़िज़िर का वाक़िआ़ लिखा है واحل جابر ابن عبدالله مسيرة شهر الى عبدالله ابن انيس فى حديث واحد

'ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह' (रज़ि०) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अनस (रज़ि०) सह़ाबी के पास एक ह़दीस लेने के लिए एक माह का सफ़र कर के गये।

3- 'तालिबे इ़ल्म' के लिए कोई उ़म्र ख़ास नहीं अगरचे बचपन और जवानी में इ़ल्म अच्छी तरह़ ह़ासिल होता है, लेकिन बुढ़ापे में भी उस से बेनियाज़ (लापरवाही) नहीं होना चाहिए। इ़ल्म सह़ी जहाँ मिले, जब मिले और जिस से मिले ह़ासिल करना चाहिए। 'इमाम बुख़ारी' बाबुल् एतिबार فى العلم والحكمة में लिखते हैं:-

وقد تعلّم اصحاب النبى صلى الله عليه وسلم بعد كبر سنهم (रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बड़ी उ़म्र हो जाने के बाद इ़ल्म ह़ासिल किया है।)

4- अगर किसी को किसी भी एतिबार से कोई फ़ज़ीलत (बड़ाई) ह़ासिल हो और उसे अपने कम फ़ज़ीलत (बड़ाई) वाले के पास कोई इ़ल्म की बात मिलती हो तो उस में शर्म न होनी चाहिए। जैसा कि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) 'ह़ज़रत ख़िज़िर' के पास उस इ़ल्म के ह़ासिल करने के लिए तशरीफ़ ले गए जो उन के अपने इ़ल्म के अ़लावा था।

5- इ़ल्म (Student) के लिए सफ़र करने में सुस्ती और कोताही न की जाए चाहे जितना बड़ा सफ़र हो और उस पर जो तक्लीफ़ पहुँचे उसे बर्दाश्त किया जाए।

आयते करीमा में जो शब्द اَوۡ اَمۡضِیَ حُقُبًا फ़रमाया है, उस के बारे में 'साहिबे रूहुल् मआ़नी' ने 'ह़ज़रत इब्ने उ़मर' और 'ह़ज़रत अबूहुरैरा' (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) से नक़्ल किया है कि यह शब्द इसी साल की मुद्दत के लिए बोला जाता है और ह़ज़रत ह़सन से नक़्ल किया है कि यह शब्द सत्तर साल की मुद्दत के लिए आता है और 'फ़रा' ने कहा है कि यह कुरैश की लुग़त (Dictionary) में एक साल के लिए इस्तेमाल होता है। यह सब क़ौल तो 'सह़िबे रूहुल् मआ़नी' ने नक़्ल कर दिये लेकिन तर्जुमः यूँ लिखा है:- والمعنی حتی یقع امابلوغی المجمع اومضی حقبا ای سیری زمانا طویلا हम ने भी उस के मुताबिक़ यूँ तर्जुमः कर दिया है कि "मैं ज़माने दराज़ (लम्बे समय) तक चलता रहूँगा"।

6- शब्द 'ख़िज़िर' का मअ़ना है 'सरसब्ज़'। उन का यह नाम क्यों मशहूर हुआ? इस के बारे में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि उन का नाम ख़िज़िर इसलिए रखा गया कि वह एक ऐसी जगह बैठे थे जो ख़ुश्क चट्यल मैदान पड़ी हुई थी वह उस पर बैठ गये तो उन के पीछे ज़मीन पर हरियाली निकल कर लहलहाने लगी। **(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 483 भाग 1)**

7- अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया था कि हमारा यह बन्दा 'मजमउ़ल बह़रैन' में मिलेगा। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इस से 'बह़र फ़ारस' और 'बह़र रोम' के मिलने की जगह मुराद है।

8- जिस जगह 'ह़ज़रत ख़िज़िर' से मुलाक़ात हुई उस के लिए किसी निशानी की ज़रूरत थी। जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने अल्लाह तआ़ला से निशानी का सवाल किया तो इर्शाद फ़रमाया एक मछली ले लो जिस जगह वह मछली गुम हो जाए और तुम्हें छोड़कर चली जाए वह साह़ब तुम्हें वहीं मिलेंगे।

'सह़ीह़ मुस्लिम' में है कि यह मछली उन्होंने बतौर सफ़र के सामान के लिए ली थी, वह बेजान थी, जिस पर नमक लगाया हुआ था। **(सह़ीह़ मुस्लिम भाग 2, पेज नं० 270)**

मछली साथ लेने से मालूम हुआ कि सफ़र में खाने का सामान ले जाना तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं।

9- जब वापस होकर फिर उसी जगह आए जहाँ मछली दरिया में चली गई थी तो एक साह़ब को देखा कि वह चादर ओढ़े हुए लेटे हैं। यह 'ह़ज़रत ख़िज़िर' थे। 'ह़ज़रत मूसा' (अ़लै०) ने सलाम किया इस से मालूम हुआ कि जब किसी मोमिन बन्दे से मुलाक़ात हो और अपनी तरफ़ मुतवज्जेह (ध्यान आकर्षित) करना हो तो पहले सलाम करे। ह़दीस में है अल् सलाम क़ब्लल् कलाम। **(मिश्कात पेज नं० 390)**

10- जब 'ह़ज़रत ख़िज़िर' से तआ़र्रुफ़ हो गया तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने अपना मतलब ज़ाहिर किया कि मैं आप के साथ रहना चाहता हूँ ताकि मुझे उन उ़लूम का कुछ ह़िस्सा मालूम हो जाए जो आप को अ़ता किये गये हैं। इस से मालूम हुआ कि जिस से जितना इ़ल्म मिले ले लेना चाहिए।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के अ़मल से यह भी मालूम हुआ कि वही शर्तें और वादे पूरे किये जाएँगे जिन के पूरा करने से शरीअ़त की कोई ख़िलाफ़वर्ज़ी न होती हो, ख़ामोशी का वादा करने के बावजूद दीनी ह़म्मियत ने उन्हें ख़ामोश न रहने दिया।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर' (रह़०) लिखते हैं कि उन्होंने उन के साथ चलने और दूसरे कामों में सब्र करने का वादा किया था, यह वादा था ही नहीं कि जो चीज़ ज़ाहिरी तौर पर शरीअ़त के ख़िलाफ़ होगी उस के

बारे में न बोलूँगा।

وكان المراد بالصبر انه صبر عن اتباعه والمشى معه وغير ذلك لا الانكار عليه فيما يخالف ظاهر الشرع

(पेज नं० 418 भाग 1)

11- ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने जो यूँ फ़रमाया कि अगर मैं आप से कोई बात दर्याफ़्त करुँ तो मुझे साथ न रखिए। इस से मालूम हुआ कि जब साथ रहने की सूरत बनती नज़र न आए तो ख़ूबसूरती से जुदा होने की सूरत निकाल ले।

كما قال موسى عليه السلام قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي عُذْرًا

12- अगर शेख़ किसी तालिब को अपने से जुदा करने लगे और उसे मालूम हो कि तालिब को मेरे फ़लाँ-फ़लाँ आ़माल पर एतिराज़ है और ह़क़ीक़त में वह क़ाबिले एतिराज़ नहीं तो तालिब को ह़क़ीक़ते ह़ाल बता दे और वाक़ई सूरतेह़ाल समझा दे, ताकि तालिबे इ़ल्म इस ग़लत फ़हमी में होते हुए जुदा न हो कि शेख़ के आ़माल अच्छे न थे। अगर ऐसा होगा तो मुम्किन है वह दूसरी जगह भी इन बातों का चर्चा करे और ख़ुद भी ग़ीबत में मुब्तिला हो और दूसरों की नज़रों में भी शेख़ का वक़ार गिरे।

13- ह़ज़रत ख़िज़िर के तरीक़े से यह भी मालूम हुआ कि ख़्वाह मख़्वाह अपने को मतऊन (दोषी) बनाना कोई दीनदारी और समझदारी की बात नहीं, अपनी पोज़ीशन साफ़ रखनी चाहिए। अगर कोई शख़्स नादानी से उस के बारे में कोई ऐसी बात कहे जिस से बद्नामी होती हो तो अपनी सफ़ाई दे दे, यह बात कह कर गुज़र जाना कि हमारा क्या नुक़्सान करेगा, हमारा ह़ाल ठीक है किसी के बद्गुमानी से हमें कोई कुछ कहता है तो वह ज़िम्मेदार होगा आ़म्मतुल् मुस्लिमीन की ख़ैर ख़्वाही के ख़िलाफ़ है। सब मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही पेशे नज़र रहनी चाहिए अपना ह़ाल भी दुरुस्त हो और दूसरों को ग़ीबत (चुग़लख़ोरी) से बचाए।

14- اِسْتَطْعَمَآ اَهْلَ से मालूम हुआ कि मजबूरी के वक़्त किसी से खाना तलब करना भी जायज़ है।

15- यह भी मालूम हुआ कि कश्ती में उजरत पर मुसाफ़िरों को इधर से उधर ले जाना जायज़ है और यह भी मालूम हुआ कि अगर कोई शख़्स मिस्कीन हो और उस के पास रोज़ी की कोई भी चीज़ हो जो उसकी ज़रूरियात के लिए काफ़ी न हो तो वह मिस्कीन ही कहा जाएगा।

16- ह़ज़रत ख़िज़िर ने जो तीन काम किये उन में लड़के को क़त्ल कर देना सब से ज़्यादा संगीन था, इसलिए ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) इस से बहुत ज़्यादा प्रभावित हुए। (सह़ीह़ मुस्लिम)

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) (فزع موسى عليه السلام فزعة منكرة) के एतिराज़ करने पर ह़ज़रत ख़िज़िर ने तम्बीह फ़रमाई तो समझ लिया कि हमारा उन के साथ होना मुश्किल है और साफ़ कह दिया कि अगर आप से आइन्दा कुछ पूछूँ तो मुझे साथ न रखना। यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि ह़ज़रत ख़िज़िर ने जो लड़के को क़त्ल किया शरअ़न उस के क़त्ल का क्या जवाज़ था? यह बात कि उस लड़के के ख़ौफ़ के बारे में था कि बड़ा होकर अपने माँ-बाप को कुफ़्र पर लगा देगा क्या यह दलील शरई है जिस की

वजह से क़त्ल जाँयज़ है? इस का जवाब यह है कि यह सवाल हमारी शरीअ़त को सामने रखकर होता है, हो सकता है कि उन की शरीअ़त में जायज़ हो। फिर जब उन्होंने आख़िर में साफ़ कर दिया कि यह जो कुछ मैंने किया है अपनी राय से नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला के फ़रमान से है तो हर तरह़ के सवालात ख़त्म हो गये।

قال النووی فی شرح صحیح مسلم و منها بیان اصل عظیم من اصول الاسلام و هو وجوب التسلیم فکل ما جاء به الشرع و ان کان بعضه لا تظهر حکمة للعقول و لا یفهمه اکثر الناس و قد لا یفهمونه کلهم کالقدر موضع الدلالة قتل الغلام و خرق السفینة فان صورتهما صورة المنکر و کان صحیحا فی نفس الامر له حکم مبنیة لکنها لا تظهر للخلق فاذا اعلمهم الله تعالی بها علموها و لهذا قال وما فعلته عن امری یعنی بل بامر الله تعالی اهـ

وقال الحافظ فی الفتح فلا یسوغ الاقدام علی قتل النفس ممن یتوقع منه ان یقتل انفسا کثیرة قبل ان یتعاطی شیئا من ذلک . و انما فعل الخضر ذلک لاطلاع الله تعالی علیه . وقال ابن بطال : قول الخضر و اما الغلام فکان کافرا هو باعتبار ما یئول الیه امره ان لو عاش حتی یبلغ ، و استحباب مثل هذا القتل لا یعلمه الا الله ، و لله ان یحکم فی خلقه بما یشاء قبل البلوغ و بعده انتهی .

17- 'ह़ज़रत ख़िज़िर' ने जिस लड़के को क़त्ल किया था उस के बदले अल्लाह तआ़ला ने उस के वालिदैन को दूसरी लड़की अ़ता फ़रमाई। इस के बारे में 'इमाम बुख़ारी' (रह़०) ने बाज़ उ़ल्मा से नक़्ल किया है कि उन्हें एक लड़की दे दी। यह ह़ज़रत 'इब्ने जरीह़' का फ़रमान है। जैसा कि 'फ़त्हुल् बारी' भाग-8 पेज 421 में लिखा है और सुनन नसई से यह भी नक़्ल किया है कि उन्हें जो लड़की अ़ता की गई थी उस के पेट से एक नबी की विलादत हुई और इब्ने अ़बी ह़ातिम से नक़्ल किया गया है कि उस नबी का नाम 'शमऊन' था और यह वही नबी थे जो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के बाद मब्अूस हुए, जिन से बनी इस्राईल ने दरख़्वास्त की थी कि अल्लाह तआ़ला से हमारे लिए दुआ़ कीजिए कि हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर फ़रमा दे जिस के साथ मिलकर हम अल्लाह के रास्ते में जिहाद करें और एक क़ौल यह नक़्ल किया है कि वह लड़की सत्तर नबियों की माँ बनीं।

18- इ़ल्म के फ़ौत हो जाने पर अफ़्सोस करना अहले इ़ल्म की ख़ास शान है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जब ह़ज़रत ख़िज़िर की यह बात नक़्ल फ़रमाई कि अब हमारे और तुम्हारे दर्मियान जुदाई है तो फ़रमाया یرحم الله موسی لوددنا لو صبر حتی یقص علینا من امرهما (सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 23)

यानी अल्लाह तआ़ला ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) पर रह़म फ़रमाए (कि उन्होंने तीसरी बार सवाल कर ही लिया जिस की वजह से जुदा होने की नौबत आ गई) अगर सब्र कर लेते तो मज़ीद बातें भी मालूम होतीं जो तुम्हें बता दी जातीं और सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० 271 भाग 2 में है:-

لو صبر لرأی العجب ولکنه اخذته من صاحبه ذمامة (कि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) अगर सब्र कर लेते तो और अ़जीब चीज़ें देखते, लेकिन ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ह़ज़रत ख़िज़िर से सवाल करते हुए शर्मा गये। आगे

सवाल करने को मुनासिब न जाना।

19- काफ़िर का हदिया क़ुबूल करना जायज़ है जैसा कि कश्ती वालों की पेशकश पर दोनों ह़ज़रात कश्ती में सवार हो गए और बस्ती वालों से खाना तलब किया।

20- जिस बस्ती में ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और 'ह़ज़रत ख़िज़िर' ने पहुँच कर खाने के लिए तलब किया यह कौन सी बस्ती थी? उस के बारे में मुख़्तलिफ़ बातें कहीं जाती हैं। कुछ लोगों ने 'इन्ताकिया' और कुछ ने 'ईला' और कुछ ने 'जज़ीरे अल् उन्दुलुस' और कुछ ने 'नासिरह' और कुछ ने 'बोक़ा' बताया है, इस के बारे में कोई क़तई फ़ैसला नहीं किया जा सकता। मशहूर यह है कि यह बस्ती 'इन्ताकिया' थी, जो 'शाम' की सरह़द पर वाक़ेअ़ है।

साह़िबे रुहुल् मआ़नी पेज नं० 17 भाग 15 अ़ल्लामा शअ़रानी से नक़्ल करते हैं:-

وقدضل فی هذاالباب خلق کثیر فضلوا واضلوا ह़ज़रत ख़िज़िर ने जो कुछ किया था वह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हुक्म पाकर था, इल्हाम की वजह से नहीं था।

21- बहुत से जाहिल सूफ़ी यह भी समझते हैं कि तरीक़त का रास्ता शरीअ़त के अ़लावा कोई दूसरी चीज़ है और साह़िबे तरीक़त के लिए शरीअ़त पर चलना ज़रुरी नहीं। यह गुमराही और कुफ़्र की बात है। तरीक़त, शरीअ़त से हटकर कोई चीज़ नहीं है वह तो शरीअ़त की ख़ादिम है। नफ़्स को अह़कामे शरीअ़त पर डालने और ख़ुशी के साथ अह़कामे शरीअ़त को अदा करने की मेह़नत के लिए ह़ज़रात सूफ़िया-ए-किराम ने कुछ आ़माल बताए हैं, मुरीदों से उन की मेह़नत कराते हैं कोई कितना ही बड़ा फ़क़ीर और साह़िबे तसव्वुफ़ हो अह़कामे शरअ़िया की पाबन्दी उस पर भी फ़र्ज़ व वाजिब है। जो शख़्स फ़रायज़ व वाजिबात का छोड़ने वाला होगा वह फ़ासिक़ होगा और जो शख़्स यूँ कहे कि मैं या मेरा शेख़ शरीअ़त का मुकल्लफ़ (ह़क़्दार) नहीं वह काफ़िर होगा, काफ़िर और फ़ासिक़ किसी तरह़ भी पीर बनाने का ह़क़्दार नहीं होता।

जो शख़्स यह दावा करता है कि जो तरीक़े अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) से आए हैं उन के अ़लावा भी कोई ऐसा तरीक़ा है जिस के ज़रिये वह अल्लाह को पहचान लेता है और उसे रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पैरवी की ज़रूरत नहीं, ऐसा शख़्स काफ़िर है।

22- यह जो कुछ जाहिल कहते हैं कि शरीअ़त आ़म्मतुन्नास और कम समझ लोगों के लिए है और ख़वास व पीरों को शरीअ़त की ज़रूरत नहीं उन के दिल साफ़ हैं, उन पर अल्लाह का इ़ल्म नाज़िल होता हैं, लिहाज़ा वह उस के पाबन्द हैं जो उन के दिलों पर ज़ाहिर होता हो या सरापा कुफ़्र है। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर फ़त्हुल् बारी पेज नं० 221 भाग 8 'अ़ल्लामा क़ुर्तुबी' से नक़्ल करते हैं:-

23- 'ह़ज़रत ख़िज़िर' का लक़ब ख़िज़िर क्यों हुआ? उन का नाम क्या था? इस बारे में इमाम नव्वी (रह़०) ने शरह़ मुस्लिम में एक क़ौल तो यह लिखा है कि उन का नाम 'बलिया' था और एक क़ौल यह है कि 'कलियान' था। उन की कुन्नियत 'अबू अल् अ़ब्बास' और वालिद साह़ब का नाम 'मुल्कान'

बताया जाता है और चन्द पुश्तों के वास्ते से उन्हें 'साम बिन नूह़ अ़लैहिस्सलाम' की औलाद में शुमार किया है और यह भी बताया जाता है कि उन के वालिद बादशाह थे।

(शरह़ मुस्लिम पेज नं० 269 भाग 2)

24- इस में इख़्तिलाफ़ है कि वह नबी थे या वली थे। बाज़ ह़ज़रात ने उन को वली बताया है। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह़०) ने अल्असाबा में दोनों क़ौल लिखे हैं। 'अबू अल् क़ासिम' कुशैरी से नक़्ल किया है कि वह वली थे और 'अबू ह़यान' का क़ौल नक़्ल किया है जो उन्होंने अपनी तफ़्सीर में लिखा है कि जम्हूर (यानी अक्सर उ़ल्मा) का मज़हब यह है कि वह नबी थे और नबी होने पर इस बात से दलील किया है कि उन्होंने सारी बातें बताने के बाद ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से फ़रमाया ومافعلتهعن امری (कि यह जो कुछ मैंने किया है अपनी राय से और अपनी तरफ़ से नहीं किया) इस से बज़ाहिर यही मालूम होता है कि उन्होंने सब कुछ अल्लाह के हुक्म से किया और इस में यह शक है कि दूसरे नबी के वास्ते से हो, लेकिन यह शक है।

अब सवाल यह है कि वह सिर्फ़ नबी थे या नबी मुरसल भी थे। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से मन्क़ूल है कि वह नबी थे, मुरसल नहीं थे। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर का फ़रमाना यह भी है कि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के साथ उन की जो बातें हुईं उन में अक्सर बातें इस बात को बताती हैं कि जिन लोगों ने उन्हें नबी बताया उन का क़ौल सह़ी है। **(अल् असाबा पेज नं० 430-431, भाग-1)**

25- 'ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर' ने फ़त्हुल् बारी पेज नं० 221 भाग-1 में लिखा है कि कुछ जाहिल यूँ कहते हैं कि 'ह़ज़रत ख़िज़िर' ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से अफ़्ज़ल हैं और यह लोग उस क़िस्से से दलील लेते हैं जो कुर्आन मजीद में ज़िक्र है। उन लोगों ने सिर्फ़ इसी क़िस्से को देखा और यह न देखा कि ह़ज़रत मूसा रसूल और कलीमउल्लाह थे।

अल्लाह तआ़ला ने उन को तौरेत अ़ता फ़रमाई, जिस में हर चीज़ का इ़ल्म था और उन लोगों ने इस बात को भी न देखा कि 'बनी इस्राईल' में जितने भी नबी हुए हैं वह ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की शरीअ़त के ताबेअ़ हैं और उन की नुबूव्वत की वजह से जो अह़काम पहुँचे हैं दूसरे अम्बिया 'बनी इस्राईल' भी उन के मुख़ातब हैं जिन में ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) भी दाख़िल हैं और 'ख़िज़िर' अगर नबी थे तो रसूल नहीं थे (यानी मुस्तक़िल किताब और मुस्तक़िल शरीअ़त उन को अ़ता नहीं की गई) और जो नबी रसूल भी हो वह उस नबी से अफ़्ज़ल है जो रसूल नहीं और अगर हम ज़रा देर को मान लें कि 'ह़ज़रत ख़िज़िर' रसूल थे, तब भी ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) उन से अफ़्ज़ल हैं क्योंकि उन की रिसालत बड़ी है और उन की उम्मत बड़ी है।

'ह़ज़रत ख़िज़िर' के बारे में इतनी बात कही जा सकती है कि वह 'बनी इस्राईल' के अम्बिया में से एक नबी थे और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) उन सब से अफ़्ज़ल हैं और अगर हम यूँ कहें कि ख़िज़िर नबी नहीं थे बल्कि वली थे, फिर तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का अफ़्ज़ल होना ज़ाहिर ही है क्योंकि हर नबी हर वली से अफ़्ज़ल है और अ़क़्लन व नक़्लन यह बात यक़ीनी है और इस के

ख़िलाफ़ जो शख़्स कहेगा वह काफ़िर है क्योंकि यह ज़रुरियाते शरअ़िया में से है।

रही यह बात कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को ह़ज़रत ख़िज़िर के पास भेजा था (और उ़मूमन मफ़ज़ूल ही जाया करता है तो इसका जवाब है कि यह भेजना इम्तिह़ान के लिए था, ताकि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) इ़बरत ह़ासिल करें (कि मैंने जो अपने को सब से बड़ा आ़लिम बता दिया ऐसा नहीं कहना चाहिए था।) **(फ़त्ह़ुल् बारी पेज नं० 221 भाग 1)**

26- ह़ज़रत ख़िज़िर की वफ़ात हो गई है या ज़िन्दा हैं। इस के बारे में 'ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर' (रह़०) ने 'अल् असाबा' में सत्रह अट्ठारह पेज लिखे हैं। अव्वल तो उन ह़ज़रात का क़ौल लिखा है जिन्होंने फ़रमाया है कि वह वफ़ात पा गये हैं और उन लोगों के दलायल लिखे हैं। उन में मज़बूत दलील यह है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दौर में एक दिन अ़िशा की नमाज़ पढ़ाई, उस के बाद सलाम फेर कर फ़रमाया कि जो लोग ज़मीन की पुश्त पर हैं उन में से कोई भी सौ साल के ख़त्म होने तक बाक़ी न रहेगा। यह ह़दीस इमाम बुख़ारी ने किताबुल् इ़ल्म **(बाबुल समर फ़िल् इ़ल्म)** और किताबुस्सलाह (باب ذكر العشاء والعتمة ومن راه واسعا) और बाबुल् समर फ़िल् नफ़्क़ा वल् ख़ैर बाद अ़िशा में नक़्ल की है।

इस ह़दीस से मालूम हुआ कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के फ़रमान के वक़्त से लेकर सौ साल पूरे होने तक जो भी शख़्स ज़मीन पर मौजूद होगा ज़िन्दा नहीं रहेगा।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़ज़र' फ़त्ह़ुल बारी पेज नं० 75 भाग 2 शरह़ मुस्लिम अ़ल्लामा नव्वी से नक़्ल करते हैं कि 'इमाम बुख़ारी' और वह ह़ज़रात जो 'ह़ज़रत ख़िज़िर' की मौत के क़ायल हैं उन्होंने इस ह़दीस से दलील लिया है और जम्हूर इस राय के ख़िलाफ़ हैं और ह़दीस से दलील लेने वालों को उन्होंने यह जवाब दिया है कि 'ह़ज़रत ख़िज़िर' उस वक़्त समुद्र के रहने वालों में से थे, लिहाज़ा ह़दीस के उ़मूम में दाख़िल नहीं हुए क्योंकि फ़रिश्ते और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) भी हैं।

इस ह़दीस के अ़लावा ह़ज़रत ख़िज़िर की मौत के बारे में 'ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर' ने 'ह़ाफ़िज़ इब्ने अल् जौज़ी' से एक दलील और नक़्ल की है और वह यह कि ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ करते हुए यूँ अ़र्ज़ किया थाः-

ऐ अल्लाह! अगर आप चाहें तो आज के बाद आप की अ़िबादत न की जाए।

और सह़ीह़ मुस्लिम (पेज नं० 84 भाग 2) में यूँ है कि आप ने यूँ दुआ़ कीः-

(ऐ अल्लाह! अगर आप चाहें तो ज़मीन में आप की अ़िबादत न की जाए।)

'ह़ाफ़िज़ इब्ने जौज़ी' ने इस से दलील लिया है कि अगर 'ह़ज़रत ख़िज़िर' इस वक़्त ज़िन्दा होते तो वह भी इस में आ जाते क्योंकि वह तो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत करने वालों में से थे, अगर वह ज़िन्दा रह जाएँ और पूरी उम्मत हलाक हो जाए तो यह कहना कैसे सह़ी होगा कि अगर ऐ

अल्लाह! यह जमाअ़त हलाक हो गई तो ज़मीन में आप की कोई अ़िबादत करने वाला न रहेगा और एक दलील वफ़ात की यह पेश करते हैं कि अगर ह़ज़रत ख़िज़िर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के वक़्त में ज़िन्दा होते तो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ख़िद्मत में ज़रूर आते और आप पर ईमान लाते और आप की इत्तिबअ़ करते।

मुह़द्दिसीन में 'इमाम बुख़ारी' और बाज़ दूसरे ह़ज़रात शिद्दत से उन की ह़यात का इन्कार करते थे।

83-101

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِى الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ
كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِىْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّ وَجَدَ
عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَ اِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ
فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ِۨالْحُسْنٰى ۚ
وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ
لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذٰلِكَ ۚ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ
مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَ مَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ
فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ
اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾ اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ۭ حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ۭ حَتّٰٓى اِذَا
جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾ فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ
مِّنْ رَّبِّىْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّىْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِىْ بَعْضٍ
وَّ نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا ﴿١٠٠﴾ ۙ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِىْ غِطَآءٍ
عَنْ ذِكْرِىْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾

जुल्क़रनैन के लिए दीवार

इन आयात में जुल्क़रनैन की शख़्सियत और उन के मग़्रिब और मश्रिक़ के सफ़र और एक क़ौम की दरख़्वास्त करने पर याजूज-माजूज से ह़िफ़ाज़त करने के लिए दीवार बना देने का ज़िक्र फ़रमाया है।

उ़ल्मा-ए-यहूद ने क़ुरैशे मक्का से कहा था कि तुम मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) से तीन बातें दर्याफ़्त करो, अगर वह उन का जवाब दे दें तो समझ लेना कि वह अपने दावे में सच्चे हैं और वह रसूल हैं। वह तीन बातें जिन का सवाल करने को कहा था उन में एक सवाल 'रुह़' के बारे में था और दूसरा सवाल 'अस्ह़ाबे कहफ़' के बारे में और तीसरा सवाल 'जुल्क़रनैन' के बारे में था।

'सूरः बनी इस्राईल' में 'रुह़' के बारे में सवाल व जवाब गुज़र चुका है और सूरः कहफ़ के रुकूअ़ नम्बर 2 और रुकूअ़ नम्बर 3 में अस्ह़ाबे कहफ़ का ज़िक्र हो चुका है। जुल्क़रनैन के बारे में जो सवाल किया गया था यहाँ उस का जवाब है।

'ज़ुल्क़रनैन' कौन थे और 'याजूज-माजूज' कहाँ थे और जो दीवार 'याजूज-माजूज' के फ़साद से बचाने के लिए बनाई थी वह कहाँ है? यह सवाल दिलों में उभरते हैं। एक मोमिन आदमी के लिए तो क़ुर्आन का बयान ही काफ़ी है, लेकिन इन तीनों सवालों का जवाब आ जाए तो बेहतर है।

'ज़ुल् क़रनैन' क्यों कहा जाता था

पहला सवाल कि 'ज़ुल्क़रनैन' कौन थे और उन का नाम क्या था और उन को 'ज़ुल्क़रनैन' क्यों कहा जाता था?

क़ुर्आन के बयान से मालूम होता है कि 'ज़ुल्क़रनैन' (ज़िन्होंने याजूज-माजूज की हिफ़ाज़त के लिए दीवार बनाई थी) वह एक मोमिन नेक आदमी थे (और कुछ लोगों ने उन्हें नबी भी माना है।)

وانما نبهنا عليه لان كثيرا من الناس يعتقدانهما واحد وان المذكور في القرآن هو الذي كان ارطاطاليس وزيره فيقع بسبب ذلك خطا كبير وفساد عريض طويل كثير فان الاول كان عبدا مومنا صالحا وملكا عادلا وكان وزيره الخضر وقد كان نبيا على ماقررنا قبل هذا واما الثاني فكان مشركا وكان وزيره فيلسوفا وقد كان بين زمانيهما ازيد من الف سنة فان هذا من هذا لا يستويان ولا يشتبهان الا على غبي لا يعرف حقائق الامور (البداية والنهاية ١٠٦ ج٢)

"हम ने इस बात पर इसलिए तम्बीह की है कि बहुत से लोग यूँ समझते हैं कि क़ुर्आन मजीद में जिस 'ज़ुल्क़रनैन' का ज़िक्र है वही 'ज़ुल्क़रनैन' है जिस का वज़ीर अरस्तू था और उसकी वजह से बहुत बड़ी ग़ल्ती और बहुत बड़ी ख़राबी पैदा हो जाती है क्योंकि 'ज़ुल्क़रनैन' अव्वल (जिस का ज़िक्र क़ुर्आन मजीद में है) वह अ़ब्द मोमिन थे, सालेह़ इन्सान और आ़दिल (इन्साफ़ करने वाला) थे। उन के वज़ीर 'ह़ज़रत ख़िज़िर' थे और दूसरा ज़ुल्क़रनैन मुश्रिक था और उस का वज़ीर एक फ़ल्सफ़ी था और इन दोनों के दर्मियान दो हज़ार से ज़्यादह मुद्दत का फ़ासला था, सो यह कहाँ और वह कहाँ? दोनों में लोगों को सन्देह हो सकता है जो ह़क़ीक़त को न जानते हों।)

यह बात मालूम होने के बाद कि ज़ुल्क़रनैन कौन थे जिन का ज़िक्र क़ुर्आन मजीद में है, ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर ने उन के नाम के बारे में चन्द बातें नक़्ल की हैं:-

(1) अ़ब्दुल्लाह बिन ज़िह़ाक़ बिन मअ़द
(2) मुसअ़ब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन कन्आ़न
(3) मरज़ोबान बिन मरज़बा
(4) सअ़ब बिन ज़ी मरायद
(5) हरमस
(6) हरदेस

फिर लिखा है कि वह 'साम बिन नूह़' (अ़लै०) की नस्ल में से थे और यह भी लिखा है कि वह

नबी 'ह़िमयर' में से थे, चूंकि क़ुर्आन मज़ीद में उन का लक़ब ही ज़िक्र किया है नाम और नस्ल का ज़िक्र नहीं फ़रमाया, इसलिए इतना ज़्यादा इख़्तिलाफ़ हुआ और अस्ल मक़्सूद में इस इख़्तिलाफ़ से कोई फ़र्क़ नहीं होता।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने ह़ज़रत 'इब्ने उ़मर' (रज़ि०) से यह भी नक़्ल किया है कि 'ज़ुल्क़रनैन' नबी थे और इस्ह़ाक़ बिन बिश्र से नक़्ल किया है कि उन के वज़ीर और मुशीर 'ह़ज़रत ख़िज़िर' उन के लश्कर के सब से अगले ह़िस्से के अमीर थे। फिर यह भी लिखा है कि 'अज़रक़ी' वग़ैरह ने ज़िक्र किया है कि 'ज़ुल्क़रनैन' ने ह़ज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अ़लै०) के हाथ पर इस्लाम क़ुबूल किया और ह़ज़रत इब्राहीम और उन के बेटे इस्माईल के साथ कअ़बः का तवाफ़ किया (अ़लैह़िमुस्सलाम) और यह भी लिखा है कि ह़ज़रत ज़ुल्क़रनैन ने पैदल ह़ज किया और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को उन के आने का इ़ल्म हुआ तो उन का इस्तिक़बाल (स्वागत) किया और उन के लिए दुआ़ फ़रमाई और यह भी लिखा है कि अल्लाह तआ़ला ने 'ज़ुल्क़रनैन' के लिए बादल को मुसख़्ख़र कर दिया था, वह जहाँ चाहते थे उन को ले जाते थे।

'ज़ुल्क़रनैन' का यह लक़ब क्यों मशहूर हुआ? इस सवाल के जवाब में अव्वल तो यह समझना चाहिए कि क़रनैन **तस्निया** बहुवचन है और क़र्न आ़मतौर से सींग के लिए इस्तेमाल किया जाता है और सौ साल की मुद्दत के लिए भी शब्द 'क़र्न' का इस्तेमाल होता है।

'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' ने उन के नाम की वजह बताते हुए (भाग 16 पेज 24) पर ग्यारह क़ौल नक़्ल किये हैं और उनके लिखने के बाद तह़रीर फ़रमाते हैं **फ़ीहा मा यकाद यसह़**

(यानी उन में वह बातें हैं जो सह़ी होने के क़रीब भी नहीं हैं।)

इन ग्यारह वजह में से बाज़ बातें दिल को लगती हैं। एक तो यह कि उन के ज़माने सल्तनत में दो सदी ख़त्म हो गई थीं यानी दो सौ साल से ज़्यादा उन की हुकूमत रही।

दूसरा यह कि उन के सर में दो सींग थीं जैसे बकरी के खुर होते हैं और यह पहले शख़्स हैं जिन्होंने अ़मामा इस्तेमाल किया ताकि उन्हें छुपा कर रखा जाए। तीसरा यह कि उन के ताज में दो सींग थे और चौथा यह कि उन्होंने मश्रिक़ और मग़्रिब का सफ़र किया था, इसलिए हर दिशा को भी एक क़र्न कहा गया है।

पश्चिम का सफ़र-

क़ुरैशे मक्का के सवाल करने पर 'ज़ुल्क़रनैन' के बारे में अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि हम ने 'ज़ुल्क़रनैन' को ज़मीन में हुकूमत दी थी और हम ने उन को हर क़िस्म का सामान दिया था जो हुकूमत की ज़रूरत को पूरा करने के लिए ज़रूरी होता है, चुनांचे वह एक राह पर चल दिये यानी पश्चिम की तरफ़ सफ़र करना शुरु कर दिया।

सफ़र करते-करते (दर्मियानी शहरों को फ़तेह़ करते हुए) ऐसी जगह पर पहुँचे जो सूरज के डूबने की जगह थी। मतलब यह है कि पश्चिम की दिशा में आबादी के आख़िरी छोर पर पहुँच गये। वहाँ उन्हें एक काली मिट्टी वाले चश्मे (स्रोत) में सूरज डूबता हुआ नज़र आया, उस से समुद्र का पानी मुराद है।

'ऐ़न' अ़रबी में चश्मे (स्रोत) को कहते हैं। **हमअता** حمئة काले रंग के कीचड़ और दलदल को कहा जाता है।

'साहि़बे रुहुल मआ़नी' (पेज नं० 32 भाग 16) लिखते हैं कि ऐ़न **हमअता** से या तो कोई ऐसा चश्मा मुराद है जो समुद्र में था या उस से समुद्र ही मुराद लिया और समुद्र को ऐ़न यानी चश्मा (स्रोत) रखने में कुछ ह़र्ज नहीं क्योंकि वह अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत के सामने एक क़त्रा (बूँद) भी ह़ैसियत नहीं रखता, लेकिन काली मिट्टी वाले चश्मे में सूरज डूबता हुआ नज़र आता है और यह बताता है कि समुद्र में दूर दराज़ दूसरे किनारे पर सूरज डूबता हुआ मालूम हुआ क्योंकि आ़म मुह़ावरे में कीचड़ उसी मिट्टी को कहा जाता है जो थोड़े पानी में हो (और आ़मतौर से किनारों पर पानी थोड़ा रहता है।)

सूरज ह़क़ीक़त में समुद्र में ग़ुरूब नहीं होता, मगर समुद्र से आगे निगाह न पहुँचने की जगह से समुद्र ही में डूबता हुआ मालूम होता है। जिन ह़ज़रात ने समुद्री सफ़र किये हैं उन्होंने अक्सर पानी के जहाज़ में यह मन्ज़र देखा होगा।

वहाँ जो पहुँचे तो देखा कि एक क़ौम आबाद है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ ज़ुल्क़रनैन! तुम्हें अख़्तियार है चाहे उन को अ़ज़ाब दो यानी शुरु ही में (उन के कुफ़्र की वजह से) क़त्ल कर दो या उन के बारे में नर्मी का मामला करो यानी उन को ईमान की दअ़वत दो, फिर न मानें तो क़त्ल कर देना।

(ऐसा मालूम होता है कि उन लोगों को पहले दअ़वते ईमान पहुँच चुकी थी वह इस के बावजूद काफ़िर थे, इसलिए मुस्तक़िल तौर पर दअ़वत दिये बग़ैर भी क़त्ल करने का अख़्तियार अ़ता फ़रमा दिया।) 'ज़ुल्क़रनैन' ने अ़र्ज़ किया कि (हम पहले उन्हें ईमान की दअ़वत देंगे दअ़वत देने के बाद) जिस शख़्स ने ज़ुल्म की राह अख़्तियार की यानी कुफ़्र पर ही जमा रहा तो हम उसे सज़ा देंगे (क़त्ल करें या और कोई सूरत अख़्तियार करें और यह सज़ा दुनियावी होगी) फिर जब वह अपने रब के पास वापस लौटाया जाएगा यानी मौत के बाद अल्लाह के यहाँ ह़ाज़िर होगा तो वह उसे बुरी सज़ा देगा और जो शख़्स दअ़वते ह़क़ को क़ुबूल करेगा और ईमान ले आएगा और नेक अ़मल करेगा तो आख़िरत में उस के लिए ईमान व अ़मल के बदले भलाई मिलेगी (यानी जन्नत में दाख़िल होगा और हम भी अपने बर्ताव में उसको आसान बात कहेंगे यानी हमारी तरफ़ से उस पर कोई अ़मली या ज़बानी सख़्ती न होगी।

पूर्वी दिशा का सफ़र-

सुम्मा अतबअ़ा सबाबा पश्चिम के सफ़र के बाद 'ज़ुल्क़रनैन' ने पूर्वी देशों का रुख़ किया और पश्चिमी दिशा की ओर चल दिये, चलते-चलते जब ऐसी जगह पहुँचे जहाँ सूरज निकलने की जगह थी (यानी पूर्वी दिशा में आबादी के आख़िरी छोर पर पहुँच गये) तो देखा कि सूरज ऐसी क़ौम पर निकल रहा है कि सूरज और उन के दर्मियान अल्लाह तआ़ला ने कोई आड़ नहीं रखी यानी यह क़ौम ऐसी थी जो धूप से बचने के लिए कोई मकान या ख़ेमा (टेन्ट) नहीं बनाते थे, खुले मैदान में रहते थे (मुम्किन है कि उन के यहाँ धूप की तेज़ी ज़्यादा न होती हो और धूप में रहने की आ़दत पड़ गई हो। जैसे जंगली जानवर उसी धूप

में गुज़ारा करते और रहते सहते हैं) बारिश भी कम होती है और थोड़ी बहुत बारिश होने पर नीचे पनाह ले लेते हों।

कज़ालिका यह क़िस्सा उसी तरह़ है **वक़द अह़तना बिमा लदैहि ख़ुबरा** और ज़ुल्क़रनैन के पास जो कुछ सामान वग़ैरह था और उन को जो ह़ालात पेश आए हम को उस की पूरी ख़बर है।

'ह़ज़रत ज़ुल्क़रनैन' ने जिस क़ौम को पूरब के आख़िरी ह़िस्से में पाया क़ुर्आन मजीद में उन के बारे में यह नहीं बताया कि वह मोमिन थे या काफ़िर और न यह बताया कि उन के साथ ज़ुल्क़रनैन ने क्या मामला किया। अगर यह लोग काफ़िर थे तो बज़ाहिर वही मामला किया होगा जो पश्चिम की ओर रहने वालों के साथ किया। (वल्लाहु आ़लम)

तीसरा सफ़र-

सुम्मा अतबआ़ सबाबा ज़ुल्क़रनैन जब आगे बढ़े तो चलते-चलते ऐसे मक़ाम पर पहुँचे जो दो पहाड़ों के दर्मियान एक जगह थी। (यह **बैना अल् सदैन** का तर्जुमः है और सद्दैन से दो पहाड़ मुराद हैं उस के दर्मियान खाली जगह थी। उन दोनों के दर्मियानी जगह जहाँ याजूज-माजूज ह़मला आवर हुए थे।)

उन पहाड़ों से आगे एक ऐसी क़ौम को देखा जो कोई बात समझने के क़रीब भी न थी। (ज़ुल्क़रनैन की ज़बान तो क्या समझते वह समझबूझ में भी कमज़ोर थे, लेकिन दुश्मनों की वजह से परेशान थे।)

याजूज-माजूज से ह़िफ़ाज़त के लिए दीवार-

'ज़ुल्क़रनैन' की सत्ता को देखते हुए अपनी मुसीबत से छुट्कारा के लिए (इशारा के ज़रिये) उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ ज़ुल्क़रनैन! याजूज-माजूज ज़मीन में फ़साद मचाते हैं (घाटी के उस तरफ़ रहते हैं यह लोग हम पर ह़मला आवर होकर क़त्ल व फ़साद करते हैं और हम उन के मुक़ाबिले की ताक़त नहीं रखते) सो क्या आप ऐसा कर सकते हैं कि हम आप के लिए चन्दा कर के माल जमा कर दें और इस शर्त पर आप को दे दें कि आप हमारे और उन के दर्मियान रोकने वाली एक आड़ बना दें (ताकि वह हमारी तरफ़ न आ सकें।)

दीवार की तअ़मीर-

'ज़ुल्क़रनैन' ने जवाब दिया कि माल जमा करने की ज़रूरत नहीं, मुझे मेरे रब ने जो अख़्तियार व सत्ता अ़ता फ़रमाया है जिस में माली तसर्रुफ़ात (ख़र्चे) भी शामिल हैं वह बेहतर है। हाँ, इतनी बात ज़रूर है कि तुम अपने हाथ पैर की ताक़त यानी मेह़नत व हिम्मत के ज़रिये मेरी मदद करो मैं तुम्हारे और उन के दर्मियान एक मज़बूत आड़ बना दूँगा।

तुम ऐसा करो कि लोहे के टुकड़े लाओ (चुनाँचे टुकड़े लाए गये और उन को ईटों की जगह इस्तेमाल किया और इस तरह़ उन की चुनाई की कि उन के दर्मियान लकड़ी और कोयले रखते चले गये) यहाँ तक कि जब पहाड़ों के दर्मियान वाले ख़ाली ह़िस्से को पहाड़ों के बराबर कर दिया तो हुक्म दिया कि अब धौंको।

(साहिबे जलालीन लिखते हैं कि धौंकने की चीज़ें रख दी गईं और चारों तरफ़ आग जला दी गई) चुनांचे उन लोगों ने धौंकना शुरु किया और इतना धौंका कि वह लोहा आग बन गया। (अन्दर की लकड़ियाँ और कोयला तो जल गया और लोहे के टुकड़े आग की तरह लाल होकर आपस में जुड़ गये।

मज़बूत दीवार के लिए तो यही काफ़ी था, लेकिन उन्होंने मज़ीद मज़बूती के लिए यह किया कि ताँबा मँगाया और उन लोगों से फ़रमाया कि मेरे पास ताँबा ले आओ ताकि मैं ताँबा को उस पर डाल दूँ चुनांचे पिघला हुआ ताँबा उस लोहे पर डाल दिया जो ख़ूब गर्म था। पहले तो वह ख़ुद ही आपस में मिल कर जाम हो चुका था फिर उस के ऊपर पिघला हुआ ताँबा डाल दिया गया जो लोहे के टुकड़ों के अन्दर बची खुची जगहों में दाख़िल हो गया और इस तरह से एक मज़बूत दीवार बन गई।

उस दीवार की बुलन्दी व मज़बूती और चिकनेपन की वजह से याजूज-माजूज न उस पर चढ़ सके और न ही उस में नक़ब (सेंद या सूराख) लगा सके। जब 'ज़ुल्क़रनैन' दीवार बनाकर फ़ारिग़ हुए तो कहने लगे هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ कि यह मेरे रब की तरफ़ से बड़ी रहमत है, इस दीवार का तैयार हो जाना मुझ पर अल्लाह तआ़ला की बड़ी रहमत है। मुझे उस ने इस काम में लगाया और उन लोगों के लिए भी रहमत है जिन को याजूज-माजूज दुःख देते थे और फ़साद करते थे अब दीवार के इधर रहने वालों को अल्लाह तआ़ला ने याजूज-माजूज से महफ़ूज़ (सुरक्षित) फ़रमा दिया।

فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ (सो जब मेरे रब का वादा पहुँचेगा यानी जब उस के फ़ना होने का वक़्त मौऊद आ जाएगा तो मेरा रब उसे चूरा-चूरा बना देगा।)

وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا "और मेरे रब का वादा सच्चा है"।

यानी उस ने जो कुछ वादे फ़रमाए हैं और अपनी मख़्लूक़ के बारे में ख़बरें दी हैं वह सब सच्ची हैं उन का वक़ूअ़ होना ही होना है।

इस वादे के बारे में मुफ़स्सिरीन के बहुत से क़ौल (कथन) हैं। बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि इस से क़ियामत का होना मुराद है और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि याजूज-माजूज का निकलना मुराद है। जब वह निकलेंगे तो यह दीवार ख़त्म हो जाएगी और चूरा-चूरा होकर ज़मीन के बराबर हो जाएगी। यह क़ौल इस एतिबार से ज़्यादा बेहतर है कि इस के बाद इसी आयत में (एक क़ौल के मुताबिक़) याजूज-माजूज के निकलने का ज़िक्र है और फिर इस के बाद सूर के फूंके जाने का ज़िक्र है।

याजूज-माजूज का निकलना क़ियामत की अ़लामत में से है। जैसा कि सूरः अम्बिया की आयत حَتّٰٓى إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوْجُ وَمَأْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ से और अह़ादीसे शरीफ़ा से साबित हो रहा है।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ और हम उस दिन उन को इस ह़ाल में छोड़ देंगे कि एक दूसरे में घुसते रहेंगे। (यानी क़ियामत से पहले जब याजूज-माजूज निकलेंगे तो एक दूसरे में गुडमुड हो जाएँगे और इसी तरह दुनिया में फैल पड़ेंगे।

وروی عن ابن عباس رضی الله عنه انه اراد به الذین تقوم علیهم الساعة ای یضطربون اضطراب البحر یختلط انسهم وجتهم من شدة الهول ذکره صاحب الروح (صفحه ۴۳ ج)

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا और सूर फूंक दिया जाएगा सो हम उन सब को जमा करेंगे।
وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكَافِرِينَ عَرْضًا (और उस दिन हम काफ़िरों के सामने दोज़ख़ को पेश कर देंगे।)
الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَن ذِكْرِي (जिन की आँखों पर मेरी याद से पर्दा पड़ा हुआ था।)
وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا (और वह सुन भी न सकते थे।)

चूंकि 'जुल्क़रनैन' का वाक़िआ कुरैशे मक्का के सवाल पर बयान किया गया था और यह सवाल उन्हें यहूदियों ने समझाया था और जवाब मिलने पर भी न मुश्रिकीने मक्का ने इस्लाम क़ुबूल किया और न यहूदे मदीना ने, इसलिए आख़िर में उन को क़ियामत का दिन याद दिलाया और बताया कि हम सब को एक-एक कर के जमा कर लेंगे और कोई बच कर न निकल सकेगा, काफ़िर दोज़ख़ में जाएँगे उन्होंने अपनी आँखों पर पर्दा डाल रखा था और ह़क़ सुनने को तैयार न थे। अपने सुनने और देखने की ताक़त को खो रखा था, लिहाज़ा उन्हें ह़क़ से मुँह मोड़ने की सज़ा मिलेगी।

याजूज-माजूज का निकलना

حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُم مِّن كُلِّ حَدَبٍ يَنسِلُونَ "यहाँ तक कि जब याजूज-माजूज खोल दिये जाएँगे और वह हर ऊँची जगह से जल्दी-जल्दी निकल पड़ेंगे"।

इस आयत में क़ियामत के क़रीब याजूज-माजूज के निकलने और फैल पड़ने का ज़िक्र है। 'सह़ीह़ मुस्लिम' पेज नं० 393 भाग 2 में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि "बिलाशुब्हा क़ियामत उस वक़्त तक वाक़ेअ़ न होगी जब तक कि दस निशानियाँ ज़ाहिर न हो जाएँ"।

1- पूर्वी इलाक़े में लोगों के ज़मीन में धँस जाने का वाक़िआ (घटना) होगा।
2- इसी तरह़ पश्चिम इलाक़े में ज़मीन धँस जाने का वाक़िआ (घटना) होगा।
3- जज़ीर-ए-अ़रब में धँस जाने का वाक़िआ (घटना) होगा।
4- धुवाँ ज़ाहिर होगा।
5- दज्जाल निकलेगा।
6- दाब्बतुल अर्ज़ का ज़ाहिर होना। (यह एक ख़ास क़िस्म का चौपाया होगा जो ज़मीन से निकलेगा जिस का ज़िक्र सूरः नम्ल में है।)
7- याजूज-माजूज निकलेंगे।
8- पश्चिम की ओर से सूरज निकलेगा।
9- अ़द्न के दर्मियान से एक आग निकलेगी।
10- ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) नाज़िल होंगे।

'सह़ीह़ मुस्लिम' पेज नं० 401 भाग-2 में दज्जाल के क़त्ल हो जाने और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के लोगों के पास पहुँच कर चेहरों पर हाथ फेरने का ज़िक्र करने के बाद याजूज-माजूज के निकलने का ज़िक्र है, जिस की तफ़्सील यह है कि:-

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) इसी ह़ाल में (यानी क़त्ल दज्जाल के बाद लोगों से मिलने जुलने में) होंगे कि उन की तरफ़ अल्लाह पाक की वह्य आएगी कि बेशक मैं अपने ऐसे बन्दों को निकालने वाला हूँ कि किसी को उन से लड़ने की ताक़त नहीं है, लिहाज़ा तुम मेरे (मोमिन) बन्दों को तूर पर ले जाकर मह़फ़ूज़ कर दो (चुनाँचे ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) मुसलमानों को साथ लेकर तूर पर तश्रीफ़ ले जाएँगे) और अल्लाह तआ़ला याजूज-माजूज को भेज देगा और वह हर बुलन्दी से तेज़ी के साथ दौड़ पड़ेंगे। (उन की कसरत का यह आ़लम होगा कि) जब अगला गिरोह 'बुहैरह' तबरीया तक होगा (उर्दुन के क़स्बात में से एक क़स्बा है वहाँ एक नहर है, उसी को बुहैरा की संज्ञा दी जाती है।

याजूज-माजूज का फ़साद-

'सह़ीह़ मुस्लिम' में यह जो रिवायत है कि याजूज-माजूज की जमाअ़त का पहला ह़िस्सा 'बुहैरा तबरिया' पर से गुज़र जाएगा तो सारा पानी पी लेगा, यहाँ तक कि पीछे आने वाली उन्हीं में की जमाअ़तों के लोग उसे देखेंगे तो यूँ कहेंगे कि यहाँ कभी पानी नहीं था। इस से 'उर्दुन' वाला 'बुहैरा तबरिया' मुराद है।

'अ़ल्लामा याक़ूत ह़म्वी' ने अ़ल्लामा मज़हरी से नक़्ल किया है कि यह 'बुह़ैरा' दस मील लम्बा और छः मील चौड़ा है) के उस पानी पर जब उन का अगला गिरोह गुज़रेगा तो तमाम पानी पी जाएगा (और उसे सुखा देगा) उन के पिछले लोग उस तालाब पर गुज़रेंगे तो कहेंगे कि इस में क्या कभी पानी भी था।

इस के बाद चलते-चलते 'ख़मर' नामी पहाड़ तक पहुँचेंगे जो 'बैतुल् मक़्दिस' का एक पहाड़ है। यहाँ पहुँच कर कहेंगे हम ज़मीन वालों को क़त्ल कर चुके, आओ! अब आसमान वालों को क़त्ल करें। चुनांचे अपने तीरों को आसमान की तरफ़ फेकेंगे जिन्हें अल्लाह तआ़ला (अपनी क़ुद्रत से) ख़ून में डूबा हुआ वापस फ़रमा देगा।

(याजूज-माजूज ज़मीन में शर व फ़साद मचा रहे होंगे) और अल्लाह के नबी ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) अपने साथियों के साथ (कोहेतूर पर) घिरे हुए होंगे, यहाँ तक कि (इतने ज़रूरतमन्द होंगे कि) उन में से एक शख़्स के लिए बैल का सर उन सौ दीनारों से बेहतर होगा जो आज तुम में से किसी के पास हो (परेशानी दूर करने के लिए) अल्लाह के नबी ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) और उन के साथी अल्लाह से गिड़गिड़ाएँगे (और याजूज-माजूज की हलाकत के लिए दुआ़ करेंगे) चुनाँचे अल्लाह तआ़ला याजूज-माजूज पर (बकरियों और ऊँटों की नाक में निकलने वाली) बीमारी भेज देगा।

याजूज-माजूज की बीमारी-

यह बीमारी उन की गर्दनों में निकल आएगी और वह सब के सब एक ही वक़्त में मर जाएँगे। जैसे एक ही शख़्स को मौत आई हो और सब ऐसे पड़े हुए होंगे जैसे किसी जानवर ने फाड़ डाले हों, उन के मर जाने के बाद अल्लाह के नबी ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) और उन के साथी (कोहेतूर से) उतर कर ज़मीन पर आएँगे और ज़मीन पर एक बालिश्त जगह भी ऐसी न पाएँगे जो उन की चर्बी और बद्बू से खाली हो, इसलिए अल्लाह के नबी ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) और उन के साथी अल्लाह से गिड़गिड़ाएँगे

और दुआ करेंगे कि ऐ अल्लाह! इन की चर्बी और बद्बू से हमें महफ़ूज़ फ़रमा दे, लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला बड़े-बड़े परिन्दे भेज देगा जो लम्बे-लम्बे ऊँटों की गर्दनों के बराबर होंगे। यह परिन्दे याजूज-माजूज की लाशों को उठा कर जहाँ अल्लाह तआ़ला चाहेगा फेंक देंगे, फिर अल्लाह तआ़ला बारिश भेज देगा जिस से कोई मिट्टी का घर या कोई ख़ेमा न बचेगा और बारिश सारी ज़मीन को धोकर आईना की तरह साफ़ कर देगी।

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) का ज़मीन पर उतरना-

(फिर ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) और आप के साथी आराम से ज़मीन पर रहने लगेंगे और अल्लाह तआ़ला का उन पर बड़ा फ़ज़्ल व करम होगा) और उस वक़्त ज़मीन को (अल्लाह तआ़ला की ओर से) हुक्म दिया जाएगा कि अपने फल उगा दे और अपनी बरकत वापस कर दे, चुनाँचे ज़मीन ख़ूब फल उगाएगी और वह अपनी बरकतें ज़ाहिर करेगी। (जिस का नतीजा यह होगा कि) एक जमाअ़त एक अनार को खाया करेगी (क्योंकि अनार बहुत बड़ा होगा) और अनार के छिलके की छत्री बना कर चला करेंगे और दूध में भी बरकत दे दी जाएगी। यहाँ तक कि एक ऊँटनी का दूध बहुत बड़ी जमाअ़त के (पेट भरने के) लिए काफ़ी होगा और एक गाय का दूध एक बड़े क़बीले के लिए और एक बकरी का दूध एक छोटे क़बीले के लिए काफ़ी होगा।

मुसलमानों की रुह़-

मुसलमान इसी ऐ़श व आराम और ख़ैर व बरकत में ज़िन्दगी गुज़ार रहे होंगे कि (क़ियामत बहुत ही क़रीब आ जाएगी और चूंकि क़ियामत काफ़िरों ही पर क़ायम होगी इसलिए) अचानक अल्लाह तआ़ला एक उ़म्दा हवा भेजेगा जो मुसलमानों की बग़लों में लगकर हर मोमिन और मुस्लिम की रुह़ क़ब्ज़ कर लेगा और बद्तरीन लोग बाक़ी रह जाएँगे जो गधो की तरह़ (सब के सामने बेह़याई के साथ) औ़रतों से ज़िना करेंगे उन्हीं पर क़ियामत क़ायम होगी।

क़ियामत के क़रीब-

'सूरतुल् अम्बिया' की आयत के सियाक़ (सन्दर्भ) से और 'सह़ीह़ मुस्लिम' की अह़ादीस से मालूम हुआ कि याजूज-माजूज का निकलना और दुनिया में फैल जाना यह क़ियामत के क़रीब होगा। सह़ीह़ मुस्लिम की रिवायत से मालूम हुआ कि पहले ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) का नुज़ूल होगा, फिर दज्जाल ज़ाहिर होगा। ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) उसे क़त्ल कर देंगे, फिर याजूज-माजूज ज़ाहिर होंगे।

कुछ उ़ल्मा-ए-सलफ़ ने उन के बहुत से क़बीले बताये हैं।

وفی عبدالرزاق عن قتادة ان یاجوج ماجوج ثنتان و عشرون قبیلة بنی نوالقرنین السد علی احدی و عشرین و کانت واحدة منهم خارجة للغزو و بقیت خارجه و سمیت الترک لذالک

(रुहुल् मआ़नी पेज नं० 38 भाग 16) وقیل یاجوج من الترک وما جوج من الدیلم

लेकिन वह ख़ुरूज जिस का कुर्आन व ह़दीस में ज़िक्र है वह क़ियामत के क़रीब होगा, क़ियामत के क़रीब की दो सूरतें हैं। एक यह कि क़ियामत के बिल्कुल ही क़रीब कोई निशानी ज़ाहिर हो और दूसरी सूरत यह है कि उस वक़्त से पहले हवा भी यानी क़ियामत के वाक़ेअ़ होने में देर हो। क़ियामत की निशानियाँ तो बहुत दिनों से शुरु हैं, ख़ुद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की बेअ़सत भी क़ियामत आने की ख़बर देती है। आप ने फ़रमाया कि मैं और क़ियामत इस तरह़ भेजे गये और आप ने शहादत और बीच की उंगली को मिला कर बताया। (मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 480)

आप के बाद भी बहुत सारी निशानियाँ ज़ाहिर हो चुकी हैं और ज़ाहिर हो रही हैं। याजूज-माजूज का ख़ुरूज बहुत देर में होगा जैसा कि दुनिया के ह़ालात बता रहे हैं।

'सह़ीह़ मुस्लिम' की रिवायत से मालूम हुआ कि याजूज-माजूज जब निकलेंगे तो उन का पहला ह़िस्सा 'बुह़ैरा तिबरिया' का सारा पानी पी जाएँगे और वह लोग आसमान पर भी तीर फेकेंगे तो फिर वह नग़ाफ़ बीमारी भेज कर हलाक कर दिये जाएँगे और उन के बाद ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) दुनिया में मुसलमानों के साथ अम्न व अमान से रहेंगे और ज़मीन अपनी बरकतें निकाल देगी फलों में और दूध में ख़ूब ज़्यादा बरकत होगी।

'सुनन इब्ने माजा' में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मेअ़राज की रात में ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ने बयान किया कि याजूज-माजूज की हलाकत के बाद उन की लाशों को समुद्र में डाल दिया जाएगा और उस के बाद ही क़ियामत आने वाली होगी।

فعهد الی متی کان ذالک کانت الساعة من الناس کالحامل التی لا یدری اهلها متی تفجؤهم بولادتها

(سنن ابن ماجه باب فتنة الدجال و خروج عیسٰی بن مریم و خروج یاجوج و ماجوج

(मुझे बताया गया है कि जब ऐसा होगा लोगों से क़ियामत ऐसे क़रीब होगी जैसे कोई ह़मल वाली औ़रत (गर्भवती) हो, जिस के दिन पूरे हो चुके हों पता नहीं कि वह कब अचानक बच्चा दे दे।)

قال صاحب مصباح الزجاجة هذا اسناد صحیح و رجاله ثقات (पेज नं० 202 भाग 4)

याजूज-माजूज की तअ़दाद-

फिर 'सह़ीह़ बुख़ारी' की रिवायत से मालूम होता है कि याजूज-माजूज की तअ़दाद बहुत ज़्यादा है, उस तअ़दाद के ह़िसाब से भी उन लोगों का ख़ुरूज अभी नहीं हुआ।

एक हज़ार में एक जन्नती होगा-

'इमाम बुख़ारी' ने बाब क़िस्सा याजूज-माजूज के विषय पर बाब (Chapter) क़ायम किया है जिस में सूरः कहफ़ और सूरः अम्बिया की आयात लिखने के बाद तीन ह़दीसें नक़्ल की हैं, उन में से एक यह ह़दीस है कि क़ियामत के दिन ह़ज़रत आदम (अ़लै०) से अल्लाह तआ़ला का इर्शाद होगा कि (अपनी ज़ुर्रियत में से) दोज़ख़ का ह़िस्सा निकालो। वह अ़र्ज़ करेंगे कि वह कितना ह़िस्सा है? अल्लाह तआ़ला

का फ़रमान होगा कि हर हज़ार में से नौ सौ निन्यान्वें अलग करो। (जिस का मतलब यह है कि ह़ज़रत आदम (अ़लै०) की ज़ुर्रियत में से एक आदमी जन्नती और नौ सौ निन्यान्वें दोज़ख़ी होंगे।) यह सुनकर बच्चे बूढ़े हो जाएँगे और ह़मल वालियों का ह़मल गिर जाएगा (यानी इस मौक़े पर अगर ह़मल वालियाँ हों तो सख़्त ख़ौफ़ की वजह से उन के ह़मल गिर जाएँगे) और तू लोगों को देखेगा कि वह बेहोश हैं ह़ालांकि वह बेहोश नहीं हैं, लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त होगा।

सह़ाबा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! हज़ार में जो एक जन्नती होगा वह हम में से कौन-कौन होगा। आप ने फ़रमाया कि तुम ख़ुशख़बरी क़ुबूल कर लो क्योंकि (तुम्हारे और याजूज-माजूज के दर्मियान इस तरह़ होगा कि तुम में से एक शख़्स और याजूज-माजूज में से हज़ार शख़्स होंगे। **(सह़ीह़ बुख़ारी पेज नं० 472 भाग 1)**

इस ह़दीस से मालूम हुआ कि याजूज-माजूज भी ह़ज़रत आदम (अ़लै०) की ज़ुर्रियत में से हैं। 'ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर' ने इस ह़दीस की शरह़ लिखने के बाद लिखा है (कि यहाँ इस ह़दीस को जो इमाम बुख़ारी ने ज़िक्र किया है इस में 'याजूज-माजूज' के तअ़दाद की संख्या की तरफ़ इशारा करना मक़्सद है और यह उम्मत उन की बनिस्बत 1/1000 के रेशियो रखती है) ज़ाहिर है कि इतनी बड़ी तअ़दाद में उन क़ौमों का ज़ह़ूर नहीं हुआ जिन्हें बाज़ लोग याजूज माजूज के ज़ाहिर होने का मिस्दाक़ बता रहे हैं।

सद्दे ज़ुल्क़रनैन-

इतिह़ासकारों ने लिखा है कि याजूज-माजूज के फ़साद और शरारतों और दूसरी क़ौमों पर ह़मला करने के वाक़िआ़त बराबर पेश आते रहे, उन के शर से बचने के लिए एक से ज़्यादा दीवारें बनाई गईं। उन में से ज़्यादा मशहूर दीवार चीन है, उस का बानी 'तग़फ़ूर' चीन का बादशाह बताया जाता है, लेकिन दीवार चीन वह दीवार नहीं है जो 'ज़ुल्क़रनैन' ने बनाई थी। इस के बारे में तो तस्रीह़ है कि लोहे और तांबे से बनाई गई और दीवार चीन में यह बात नहीं है। दूसरी दीवार मध्य एशिया में बुख़ारा और तरमूदा के क़रीब है, उस जगह का नाम 'दरबन्द' है।

तीसरी दीवार 'दाग़िस्तान' में है यह 'दरबन्द' और 'बाबुल् अबवाब' के नाम से मशहूर है। चौथी दीवार इसी 'दाग़िस्तानी' दीवार के मग़्रिब में है जो दो पहाड़ों के दर्मियान है, यह चौथी दीवार 'क़फ़्क़ाज़िया' 'कोहे क़ौक़ा' के क़रीब है जैसा कि 'इब्ने ख़ल्दून' के बयान से मालूम हुआ। कुछ अहले तारीख़ का रुझान इस तरफ़ है कि यही 'ज़ुल्क़रनैन' की बनाई हुई है।

यह तो ज़ाहिर है कि जो दीवार लोहे ताँबे की बनी हुई नहीं है वह बहरह़ाल ह़ज़रत 'ज़ुल्क़रनैन' की बनाई हुई नहीं है।

इस ज़माने में जो रिसर्च के नाम से कुछ मालूमात करते हैं और जितना मालूम हो जाए उस के अ़लावा बाक़ी का इन्कार कर देते हैं, यह उन लोगों की जिहालत है। उन का यह कहना कि हम सब जगह जा चुके हैं यह दीवार नहीं मिली। इस से दीवार का मौजूद न होना लाज़िम नहीं आता यह उन लोगों

की कम इल्मी है। हर जगह पहुँच जाने का दावा ही नाक़ाबिले क़ुबूल है।

अमरीका, आस्ट्रेलिया के ज़ाहिर होने से पहले इन्सान यही समझता था कि एशियाई अफ़्रीका और योरोप के अ़लावा कोई बर्रे आ़ज़म नहीं है। फिर ग़ल्ती से कोलम्बस अमरीका के किनारे पर पहुँचा तो उसे हिन्दुस्तान समझ कर उतर गया, बाद में मालूम हुआ कि यह हिन्दुस्तान नहीं बल्कि यह एक मुस्तक़िल बर्रे आ़ज़म (टापू) है। फिर बहुत दिनों के बाद 'आस्ट्रेलिया' ज़ाहिर हुआ। इसी तरह़ याजूज-माजूज का इलाक़ा और दीवार ज़ुल्क़रनैन का उन रिसर्च स्कालरों को इ़ल्म न होना इस बात की दलील नहीं कि उस का वजूद ही नहीं है।

दीवार कहाँ है और याजूज-माजूज का कौन सा इलाक़ा है, इस के जानने का कोई इस्लामी अ़क़ीदा नहीं और क़ुर्आन की किसी आयत का समझना भी इस पर नहीं है। मोमिन का काम है कि वह अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) की ख़बर पर ईमान लाए।

आदम की औलाद-

'सह़ीह़ बुख़ारी' की ह़दीस से मालूम हुआ कि याजूज-माजूज भी ह़ज़रत आदम (अ़लै०) की औलाद में से हैं, मगर सब से ज़्यादा दोज़ख़ में जाने वाले यही हैं। इस पर 'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने अल् बिदाया वल् निहाया में यह सवाल उठाया है कि जब उन के पास कोई नबी नहीं आया तो वह दोज़ख़ में कैसे जाएँगे। फिर इस का जवाब देते हुए फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है **वमा कुन्ना मुअ़ज़्ज़िबीना ह़त्ता नब्अ़सा रसूला** इस से मालूम होता है कि जो भी शख़्स या जमाअ़त अ़ज़ाब में मुब्तिला हुई सब के पास कोई न कोई रसूल ज़रूर भेजा गया। (अल्बत्ता उस रसूल के मअ़ने में उ़मूम है चाहे अल्लाह तआ़ला का भेजा हुआ रसूल पहुँचा हो चाहे उस के रसूलों में से किसी का भेजा हुआ क़ासिद (दूत) आया हो) और किसी जगह रसूल का पहुँचना उन के किसी क़ासिद (दूत) का पहुँचना हमारे इ़ल्म में होना ज़रूरी नहीं। अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ कहाँ-कहाँ है? उसे अपनी मख़्लूक़ का इ़ल्म है और अपनी मख़्लूक़ पर किस तरह़ हुज्जत क़ायम फ़रमाई है, वह उस को जानता है।

आयत नं० 102 से 110 तक

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِن دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾
الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ
أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ﴿١٠٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُل لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ
قَبْلَ أَن تَنفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾ قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَمَن كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ رَبِّهِ
فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ﴿١١٠﴾

अनुवाद-

(102) क्या फिर भी काफ़िरों का ख़याल है, कि मुझे छोड़कर मेरे बन्दों को अपना हिमायती बना लें? बेशक 'हमने' "ऐसे काफ़िरों की मेहमानी के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है। (103) कह दीजिए, "क्या हम तुम्हें उनकी ख़बर दें, जो अपने अ़मल की दृष्टि से सबसे बढ़कर घाटा उठाने वाले हैं"? (104) यह वह लोग हैं, जिनकी पूरी कोशिश दुनिया ही की ज़िन्दगी में बरबाद हो कर रही, और वह अपने आप को यही समझते रहे, कि वह अच्छे काम कर रहे हैं, (105) यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों और उसके सामने हाज़िर होने को न माना, तो इनके काम अकारथ हो गये, फिर क़ियामत के दिन 'हम' उन्हें कोई वज़न न देंगे। (106) उनका बदला वही दोज़ख़ है, इस लिए कि उन्होंने कुफ़्र (इन्कार) किया, और 'हमारी' आयतों, और 'हमारे' रसूलों की हँसी उड़ाई। (107) जो लोग ईमान लाए, और भले काम किये, उनकी मेहमानी के लिए जन्नत के बाग़ हैं; (108) जिनमें वे हमेशा रहेंगे, वहाँ से और कहीं न जाना चाहेंगे"। (109) कह दीजिए, अगर समुद्र मेरे रब की बातों के (लिखने के) लिए स्याही हो, तो इससे पहले कि मेरे रब की बातें पूरी हों, समुद्र ख़त्म हो जाए चाहे हम उस जैसा एक और भी (समुद्र) उनकी मदद के लिए ले आएँ। (110) कह दीजिए, ''मैं भी तुम्हीं जैसा एक आदमी (बशर) हूँ; मेरे पास तो बस यह वह्य आती है कि तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) एक ही मअबूद है। तो जो कोई अपने रब से मिलने की उम्मीद रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छे काम करता रहे, और अपने रब की इ़बादत में किसी को साझीदार न बनाए।

आयत नं० 102 से 110 तक की व्याख्या

102-108

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِن دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾
قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ
صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ﴿١٠٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾

'ह़ज़रत मुसअ़ब बिन सअ़द' (रज़ि०) ने अपने बाप (सअ़द बिन अबी वक़ास) से पूछा कि 'अख़सरीन आ़माला' से क्या मुराद है? क्या यह ह़रबी (ख़ारजी) हैं? उन्होंने जवाब दिया कि नहीं बल्कि यहूद व नसारा मुराद हैं। यहूद ने आप (सल्ल०) को झुठलाया, इसलिए उनके आ़माल ज़ाया हुए और नसारा ने जन्नत का इन्कार किया, कहने लगे कि "वहाँ खाना-पीना न होगा और ह़रबी तो उन लोगों में दाख़िल हैं"।

(सूरः बक़रः आयत नं० 27) الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ

"जो अल्लाह के पुख़्ता अ़हद को तोड़ते हैं।" (बुख़ारी)

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया "क़ियामत के दिन एक इ़ज़्ज़त वाला मोटा ताज़ा आदमी अल्लाह के सामने आएगा, मगर अल्लाह के क़रीब उसकी क़द्र मच्छर के पर के बराबर भी न होगी और आप (सल्ल०) ने फ़रमाया यह आयत पढ़ो।" (बुख़ारी)

काफ़िर के लिए ख़सारा और अ़मल बेवज़न

इस आयत में पहले तो काफ़िरों को उन के कुफ़्रिया आ़माल पर तम्बीह फ़रमाई और आख़िरत में उन के अ़ज़ाब से बाख़बर किया, फिर अहले ईमान के इनआ़मात का ज़िक्र फ़रमाया।

काफ़िरों के बारे में फ़रमाया कि इन्हें पहले से बता दिया गया है कि कुफ़्र का अन्जाम बुरा है, उन के लिए दोज़ख़ है, फिर भी कुफ़्र पर जमे और शिर्क अपनाए हुए हैं, मेरे बन्दों को अपना कारसाज़ बना रखा है और इस को अपने लिए बेहतर समझते हैं। कुफ़्र और शिर्क को बेहतर समझना बेवक़ूफ़ी और जिहालत है। काफ़िरों के लिए हम ने जहन्नम तैयार कर रखी है उसी से उन की मेहमानी होगी।

काफ़िरों की कई क़िस्में हैं, उन में से बहुत से तो ऐसे हैं जो अल्लाह तआ़ला के वजूद ही के क़ायल नहीं और दुनिया कमाने में लगे हुए हैं और उसी को सब कुछ समझते हैं और कुछ लोग ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला को मानते हैं, लेकिन शिर्क में फंसे हुए हैं और अल्लाह तआ़ला ने जो दीन भेजा है उसे नहीं मानते, दूसरे दीनों को अख़्तियार किये हुए हैं उन में बाज़ वह भी हैं जो अ़िबादत के नाम से बड़ी-बड़ी मेह़नतें करते हैं और बहुत से ऐसे हैं जो दुनिया ही में रीझे हुए हैं, इन लोगों की दुनियावी मेह़नतें और मज़हबी मेह़नतें सब बर्बाद हैं। यह लोग आ़माल के एतिबार से बद्तरीन ख़सारा में हैं क्योंकि आख़िरत में इन आ़माल पर कुछ नहीं मिलना, नतीजा यह होगा कि न सिर्फ़ इनआ़मात से मह़रूम होंगे बल्कि अ़ज़ाब में पड़ेंगे और वह समझ यूँ रहे हैं कि हम अच्छे काम कर रहे हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ (यह वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयात और उसकी मुलाक़ात यानी क़ियामत के दिन का इन्कार किया, सो उन के सब आ़माल बर्बाद हो गये उन पर उन्हें कुछ नहीं मिलेगा।

فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا (सो हम क़ियामत के दिन उन के लिए कोई वज़न क़ायम न करेंगे।)

ह़ज़रत अबूहुरैराज़(रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि (क़ियामत

के दिन) कुछ लोग बड़े (और) मोटे ताज़े आएँगे, जिन का वज़न अल्लाह के नज़्दीक मच्छर के पर के बराबर भी न होगा। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि (मेरी ताईद के लिए) तुम चाहो तो यह आयत पढ़ लो فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا (सहीह़ बुख़ारी पेज नं० 691 भाग 2)

उ़लमा-ए-किराम ने इसका मतलब तो यह बताया है कि उन लोगों की अल्लाह के यहाँ कोई इ़ज़्ज़त न होगी और कुछ लोगों ने यह मतलब बताया है कि उन के लिए तराज़ू ही नहीं लगाया जाएगा यानी उन लोगों के आ़माल तौले ही नहीं जाएँगे और काफ़िर दोज़ख़ में बिना ह़िसाब के चले जाएँगे। आ़माल उन के तौले जाएँगे जो पूरे मोमिन निकलेंगे और जो रियाकार (दिखावा करने वाले) मुनाफ़िक़ थे उनके आ़माल के बारे में मुफ़स्सिरीन के अक़्वाल (कथन) हम सूरः अअ़राफ़ की आयत وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ الْحَقُّ की तफ़्सीर में लिख चुके हैं।

ह़दीस शरीफ़ में शब्द 'अल् अ़ज़ीम' 'अल् समीन' आया है। इसका ज़ाहिरी अनुवाद तो वही है जो शब्द से मालूम हो रहा है कि बड़े और मोटे ताज़े लोग आएँगे जिन का वज़न अल्लाह के नज़्दीक मच्छर के पर के बराबर भी न होगा। इस में जो शब्द अ़ज़ीम है इस से दुनियावी पोज़ीशन और पोस्ट मुराद है। बड़ी-बड़ी पोस्टों वाले, बादशाह, प्रबन्धक, मालदार, जायदाद वाले, मैदाने क़ियामत में आएँगे वहाँ उन की ह़ैसियत मच्छर के पर के बराबर भी न होगी।

हर तरह़ की साह़िबी का ख़ात्मा-

अध्यक्ष साह़ब दुनिया से गये, जज साह़ब अपनी ज़िन्दगी से हारे, मुख्यमंत्री साह़ब चल बसे, लोग कोठियों पर जमा हैं, लाश पर हवाई जहाज़ से फूल बरसाये जा रहे हैं, अख़बारात में स्याह कालम छप रहे हैं। रेडियो और टी०वी० से मौत की ख़बरें जारी हो रही हैं, लोग समझ रहे हैं कि उन की मौत बड़ी क़ाबिले रश्क है, दुनिया का तो यह ह़ाल है लेकिन यह कोई नहीं सोचता कि मरने वाला मोमिन है या काफ़िर, नेक है या फ़ासिक़ व फ़ाजिर। अगर कुफ़्र पर मरा है तो हमेशा के लिए बड़े दर्दनाक अ़ज़ाब में जा रहा है, क़ियामत तक बरज़ख़ में मुब्तिला-ए-अ़ज़ाब रहेगा, फिर क़ियामत के दिन जो पचास हज़ार साल का होगा मुसीबतों में मुब्तिला होगा। फिर दोज़ख़ में दाख़िल होगा जिस की आग दुनियावी आग से उन्हत्तर गुना ज़्यादा गर्म है, इस में से कभी भी निकलना न होगा।

ख़ालिदीना फ़ीहा अबादा इस में हमेशा-हमेश रहना होगा भला ऐसे शख़्स की मौत व ह़यात कैसे क़ाबिले रश्क हो सकती है? यह हवाई जहाज़ों के फूल बरज़ख़ के अ़ज़ाब को क्या नफ़ा देंगे? और अख़बारात के इदारिये टी०वी० और रेडियो के एलानात क्या फ़ायदामन्द होंगे? ख़ूब ग़ौर करने की बात है। जिन लोगों ने अल्लाह को न माना, उसकी आयतों का इन्कार किया, क़ियामत के दिन की ह़ाज़िरी को झुठलाया केवल दुनिया की तरक़्क़ियात और कामियाबी को बड़ी मेअ़राज समझते रहे यह लोग जब क़ियामत के दिन ह़ाज़िर होंगे तो कुफ़्र और जब दुनिया और दुनिया की कोशिशें ही उन के आ़माल नामों में होंगी। वहाँ यह चीज़ें बेवज़न होंगी और दोज़ख़ में जाना पड़ेगा, उस वक़्त आँखें खुलेंगी और समझ लेंगे कि यह सरासर नाकाम रहे।

यहूद व नसारा और मुश्रिकीन व कुफ़्फ़ार जो दुनिया की ज़िन्दगी में अपने ख़याल में नेक काम करते हैं। जैसे-पानी पिलाने के लिए जगह का इन्तिज़ाम करते हैं और मजबूर की मदद करते हैं या अल्लाह के नामों का जाप करते हैं, इस क़िस्म के काम निजात न दिलाएँगे। साधू जो बड़ी-बड़ी मेहनतें करते हैं और मुजाहिदा कर के नफ़्स को मारते हैं और नसारा के पादरी जो नेकी के ख़याल से शादी नहीं करते उन के तमाम काम बेकार हैं, आख़िरत में कुफ़्र की वजह से कुछ न पाएँगे। काफ़िर की नेकियाँ बर्बाद होंगी, वह क़ियामत के रोज़ नेकियों से खाली हाथ होंगे।

सूरः इब्राहीम (आयत नं० 18) में इर्शाद हैः-

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ اِشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ۭ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰي شَيْءٍ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ

(यानी काफ़िरों को अगर अपनी निजात के बारे में यह ख़याल हो कि हमारे आ़माल हम को नफ़ा देंगे तो इस के बारे में सुन लें कि जो लोग अपने परवरदिग़ार के साथ कुफ़्र करते हैं उन की ह़ालत ऐसी है जैसे कुछ राख हो जिसे तेज़ आँधी के दिन में तेज़ी के साथ हवा उड़ा ले जाए कि इस सूरत में उस राख का नाम व निशान न रहेगा।

इसी तरह़ उन लोगों ने जो अ़मल किये थे उन का कोई ह़िस्सा उन को ह़ासिल न होगा (बल्कि राख की तरह़ सब ज़ाया व बर्बाद हो जाएँगे और कुफ़्र व गुनाह ही क़ियामत के रोज़ साथ होंगे) यह बड़े दूर की गुमराही है (कि उम्मीद तो यह है कि हमारे अ़मल फ़ायदेमन्द होंगे, मगर ज़रूरत के वक़्त कुछ काम भी न आएँगे।)

ذٰلِكَ جَزَاۗؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا

यह उन की सज़ा है यानी दोज़ख़ जो उन के कुफ़्र की वजह से है, उन्होंने दीने ह़क़ को क़ुबूल नहीं किया और कुफ़्र में मज़ीद तरक़्क़ी कर गये कि उन्होंने अल्लाह की आयात का और उस के रसूलों का मज़ाक़ बनाया।

ईमान और नेक आ़माल वालों का ठिकाना-

काफ़िरों की सज़ा बताने के बाद ईमान वालों के इनआ़मात का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमायाः-

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۙ

"बिलाशुब्हा जो लोग ईमान लाए और नेक काम किये उन की मेहमानी 'फ़िरदौस' के बाग़ात होंगे।"

शब्द 'जन्नात' जन्नत का बहुवचन है। अ़रबी ज़बान में जन्नत बाग़ को कहते हैं और फ़िरदौस के बारे में उ़ल्म-ए-तफ़्सीर के बहुत से कथन हैं।

मशहूर यह है कि वह 'रूमी या इबरानी' ज़बान में बाग़ के माने में है। एक क़ौल यह है कि ह़ब्शी ज़बान में फ़िरदौस घने बाग़ को कहते हैं, जिस में दरख़्त ख़ूब ज़्यादा हों और आपस में एक दूसरे से लिपटे हुए हों। यह शब्द रूहुल् मआ़नी पेज नं० 50 भाग 16 में नक़्ल किये हैं।

ह़दीस शरीफ़ में है कि जब अल्लाह तआ़ला से सवाल करो तो 'फ़िरदौस' का सवाल करो क्योंकि

वह जन्नत का आ़ला हिस्सा और उस पर 'रह़मान जुल् जलाल' का अ़र्श है और उसी से चारों नहरें निकलती हैं। **(बुख़ारी पेज नं० 391 भाग 1)**

मालूम हुआ कि फ़िरदौस जन्नत का सब से आ़ला दर्जा है। उस पर 'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' ने यह सवाल किया है कि ईमान वालों के दर्जात मुख़्तलिफ़ होंगे। अगर सभी फ़िरदौस में चले जाएँ तो फ़र्क़ ही क्या रहा? फिर इस के तीन जवाब दिये हैं, उन में से एक जवाब यह है कि बहुत सारी जन्नतों में से एक जन्नतुल् फ़िरदौस भी है (क्योंकि सभी एक दूसरे से क़रीब हैं और सब से ऊपर 'जन्नतुल् फ़िरदौस' है और जन्नात बाग़ों के माने में है। मतलब यह है कि जिस बिहिश्त का अहले ईमान से वादा किया गया है, वह उस बिहिश्त के बाग़ों में होंगे।

यह मतलब लेने से जन्नतुल् फ़िरदौस बिहिश्त के तमाम दर्जों को शामिल हो जाता है और इश्काल ख़त्म हो जाता है। خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ईमान वाले, नेक आ़माल वाले इन जन्नतों में हमेशा-हमेश रहेंगे। वहाँ से कहीं जाना न चाहेंगे क्योंकि उस से बेहतर कहीं भी कोई जगह कभी भी न होगी और वहाँ से निकाले भी न जाएँगे।

सूरः ह़िज्र **(आयत नं० 48)** में फ़रमाया لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ (न उन्हें वहाँ कोई तक्लीफ़ पहुँचेगी और न वहाँ से निकाले जाएँगे।)

109 قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾

अल्लाह तआ़ला के गुण

सूरः के ख़त्म पर फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की ख़ूबियाँ और कमालात बेइन्तिहा हैं। अगर इन कलिमात को लिखने के लिए एक समुद्र को रौशनाई की जगह इस्तेमाल किया जाए तो उन ख़ूबियों व कमालात का बयान ख़त्म न होगा। एक समुद्र के साथ अगर एक और समुद्र भी मिला लिया जाए और उसको भी बतौर रौशनाई इस्तेमाल किया जाए तब भी उसकी ख़ूबियाँ ख़त्म न होंगी। यहाँ तक कि अगर सातों समुद्रों को भी रौशनाई की जगह इस्तेमाल कर लिया जाए और दुनिया में जितने भी पेड़ हैं उन सब के क़लम बना लिए जाएँ और एक समुद्र में सातों समुद्र मिला दिये जाएँ तो उन क़लमों से और उन समुद्रों की रौशनाई से अल्लाह तआ़ला के कमालात व अवसाफ़ का अह़ाता नहीं हो सकेगा। जैसा कि सूरः लुक़्मान में है:-

وَلَوْ اَنَّمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ और यह सात समुद्र भी बतौर मिसाल के हैं। कभी न ख़त्म होने वाली क़लम और कभी न ख़त्म होने वाला समुद्र हो तब भी ख़ालिक़े क़ायनात के गुणों व कमालात का अह़ाता नहीं हो सकता।

यहाँ पर अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद बयान फ़रमाई गई है। जब अल्लाह तआ़ला के गुण और कमालात अनन्त हैं और किसी ख़ूबी में उस का कोई शरीक नहीं तो उस के सिवा दूसरे को मअ़बूद बनाना

सरापा अ़क़्ल के ख़िलाफ़ है।

110 قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ۝

इन्सान होना रिसालत व नुबूव्वत के ख़िलाफ़ नहीं-

फिर फ़रमाया قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ आप फ़रमा दीजिए कि मैं तुम्हारे ही तरह़ का बशर हूँ (न ख़ुदाई का दावेदार हूँ और न कोई फ़रिश्ता यानी तुम ही में रहता-सहता हूँ। कोई ऐसी बात नहीं कहता जिस से तुम्हें दूरी मालूम हो) अल्बत्ता यह बात ज़रूर कहता हूँ कि मेरे पास अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से वह्य आती है। जिस में मुझे यह बताया गया है और तुम्हें भी बताता हूँ कि तुम्हारा मअ़बूद एक ही मअ़बूद है। यह बात कोई नाराज़ होने की नहीं है, अल्लाह तआ़ला ने मुझे रिसालत से सरफ़राज़ फ़रमा दिया और मेरे ज़रिये तुम्हें भी बता दिया कि सिर्फ़ अपने पैदा करने वाले की अ़िबादत करो। (इस में तौह़ीद व रिसालत दोनों की दलील है।)

اِنَّمَآ शब्द مِّثْلُكُمْ में तफ़्सील है कि मैं बशर ही नहीं बल्कि तुम्हारी ही तरह़ बशर हूँ। (यानी माँ के पेट से पैदा हुआ) नफ़्स रुह़ इस के बाद है। बशरी गुण में रसूल (सल्ल०) उम्मत के साथ यकसाँ हैं। जैसे- भूक, प्यास, नींद, थकान ज़ख़्म होना आदि। **(तफ़्सीर माजदी, भाग 3, पेज नं० 168)**

लेकिन इस का यह मतलब नहीं है कि इस से आप की बुलन्दी में कोई कमी आती हो। आप का मक़ाम मख़्लूक़ (सृष्टि) में सब से अफ़्ज़ल है। आप (सल्ल०) अल्लाह के सबसे मक़्बूल व मह़बूब बन्दे हैं। बशरियत से तो आप की शान बढ़ती है कि सारी चीज़ों का आप (सल्ल०) को एह़सास होता है यानी भूक, प्यास, ग़म, नींद, ग़ुस्सा लेकिन इस के बावजूद सब्र से काम लेते हुए अल्लाह के हुक्मों पर अ़मल कर के आप उम्मत को दिखाते हैं ताकि पूरी उम्मत आप (सल्ल०) को नमूना मान कर अ़मल करे और जन्नत की ह़क़्दार बने।

अगर हम बशरियत के गुण को आप (सल्ल०) से अलग कर देंगे तो फिर शैतान को आप (सल्ल०) के अ़मल और सुन्नतों से दूर करवाने का मौक़ा मिल जाएगा।

इसलिए आप (सल्ल०) का मक़ाम इस धरती और पूरे आ़लम में मख़्लूक़ में सबसे आ़ला है।

अपने रब की अ़िबादत-

फिर फ़रमाया فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا सो जो शख़्स अपने रब से मिलने की उम्मीद रखता हो और चाहता हो कि उस का मह़बूब बन कर क़ियामत के मैदान में ह़ाज़िर हूँ तो नेक काम करे, जिस में सारे नबियों और ख़ासतौर से ख़ातिमुन्नबीय्यीन (सल्ल०) पर ईमान लाना और उन की शरीअ़त के मुताबिक़ अ़मल करना है।

ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो अल्लाह से मुलाक़ात करना

पसन्द करे, अल्लाह उस से मुलाक़ात करना पसन्द करता है।" **(बुख़ारी)**

وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا (और अपने रब की इ़बादत में किसी को भी शरीक न करे।)

मुश्रिक और काफ़िर की निजात नहीं वह अपने ख़याल में कैसे ही नेक काम करे। इस आख़िरी आयत में क़ियामत के अ़क़ीदे को भी दोहराया गया है और यह भी बता दिया कि वहाँ वह नेक आ़माल काम देंगे जिन में शिर्क की आमेज़िश न हो। यहाँ शिर्क से अक्सर मुफ़स्सिरीन ने शिर्क ख़फ़ी यानी रियाकारी का शिर्क मुराद लिया है।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि यह आयत दलील है कि अल्लाह के यहाँ आ़माल के क़ुबूल होने की दो शर्तें हैं। एक तो यह कि वह शरीअ़ते मुह़म्मदिया के अनुसार हो और दूसरी यह कि उस से मक्सद केवल अल्लाह को राज़ी करना हो, शोहरत, नाम, दिखावा या कोई दुनियावी चीज़ क़ुबूल न की जाएगी।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मैं शरीक ठहराने वालों के शरीक से बेनियाज़ हूँ। जो व्यक्ति कोई नेक अ़मल करता है फिर उसमें मेरे साथ किसी और को भी शरीक कर लेता है तो मैं वह पूरा अ़मल उसी शरीक के लिए छोड़ देता हूँ और एक रिवायत में है कि मैं उस अ़मल से बरी हूँ उस को तो ख़ालिस उसी शख़्स के लिए कर देता हूँ जिसको मेरे साथ शरीक किया। **(मुस्लिम)**

ह़ज़रत अबूदर्दा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जिस व्यक्ति ने सूरः कहफ़ की पहली दस आयतें याद रखीं, वह दज्जाल के फ़ित्ना से सुरक्षित रहेगा।

(मुस्लिम, अह़मद, अबूदाऊद, नसई)

'इमाम अह़मद' 'मुस्लिम' और 'नसई' ने ह़ज़रत अबूदर्दा (रज़ि०) से ही इस रिवायत में यह शब्द भी नक़्ल किये हैं कि जिस व्यक्ति ने 'सूरः कहफ़' की आख़िरी दस आयतें याद रखीं, वह फ़ित्न-ए-दज्जाल से मह़फ़ूज़ (सुरक्षित) रहेगा।

अल्लाह के फ़ज़्ल से इस वक़्त कुर्आन करीम का आधे से ज़्यादा ह़िस्सा पूरा करने की तौफ़ीक़ मिली। अल्लाह तआ़ला मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

दुआ़ओं का तालिब

मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी

(दारुल् उलूम नद्वतुल् उ़लमा, लखनऊ यू०पी०)

(भाग–19)

सूर–ए–मरयम

(सूरः नं.19)

तफ़्सीर सूरः मरयम

नाम– इस का नाम आयत नं० (16) وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا से लिया गया है। 'साहिबे फ़तुलु बयान' लिखते हैं कि पूरे कुर्आन में ह़ज़रत मरयम (अ़लै०) के अ़लावा किसी दूसरी औ़रत का नाम नहीं आया है। उन का नाम कुर्आन में तीसरी बार दोहराया गया है।

नाज़िल होने का ज़माना–

यह सूरः मक्का मुकर्रमा में मुसलमानों की ह़ब्शा हिजरत से पहले नाज़िल हुई थी। मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने अपनी किताब 'अलु यस्रा' में 'उम्मे सलुमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' और 'इमाम अह़मद बिन ह़म्बल' ने मुस्नद में 'इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु' से रिवायत की है कि जब मुहाजिरीन ह़ब्शा में नज्जाशी के सामने पेश हुए और उस ने 'जाफ़र बिन अबी तालिब' से कुर्आन का कोई ह़िस्सा सुनाने को कहा तो उन्होंने इसी सूरः के शुरु की आयतों की क़िरात की थी, जिन से प्रभावित होकर नज्जाशी इतना रोया था कि उस की दाढ़ी आँसू से भीग गई थी। फिर उस के दरबार के दूसरे उ़ल्मा नसारा भी रोने लगे थे और नज्जाशी ने कहा था कि यह कलाम और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) जो कलाम लेकर आए थे दोनों का एक ही स्रोत है।

इस में ह़ज़रत ज़करिया, ह़ज़रत यह़या, ह़ज़रत ईसा, ह़ज़रत इब्राहीम और दूसरे अम्बिया (अ़लै०) के वाक़िआ़त बयान किये गये है और मुश्रिकीने मक्का की सोसाईटी से निकल कर यहूद व नसारा के सामने दअ़वते इस्लाम पेश करने के लिए ज़मीन हमवार की गई है और उन्हें बताया गया है कि नबी करीम (सल्ल०) कोई नया और अजनबी दीन लेकर नहीं आए बल्कि यह वही दीन है जो तमाम पिछले अम्बिया-ए-किराम ने अपनी क़ौमों के सामने पेश किया था। जिस का निचोड़ यह है कि यह ज़मीन अल्लाह की है, उस ने तमाम इन्सानों को केवल अपनी अ़िबादत के लिए पैदा किया है।

आयत नं० 1 से 26 तक

كٓهٰيٰعٓصٓ ۝١ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝٢ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ۝٣ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ
شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝٤ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝٥
يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝٦ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝٧ قَالَ رَبِّ
اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝٨ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ
مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۝٩ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْۤ اٰيَةً ۚ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝١٠ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ
فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝١١ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝١٢ وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ۝١٣ وَّبَرًّا
بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝١٤ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝١٥ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ
اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۝١٦ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۡ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝١٧ قَالَتْ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ
مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۝١٨ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۡ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ۝١٩ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝٢٠
قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝٢١ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا
قَصِيًّا ۝٢٢ فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۝٢٣ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَاۤ اَلَّا تَحْزَنِيْ
قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝٢٤ وَهُزِّيْۤ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ۝٢٥ فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ
الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْۤ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۝٢٦

अनुवाद-

(1) काफ़्-हा-या-ऐन-साद, (2) ज़िक्र है आप के रब की मेहरबानी का, जो उसने अपने बन्दे ज़करीया पर की। (3) जब उन्होंने अपने 'रब' को चुपके-चुपके पुकारा; (4) कहा, ''ऐ मेरे रब! मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गईं, और सर में बालों की सफ़ेदी फैल गई; और तुझ को पुकार कर, ऐ मेरे 'रब' मैं कभी महरूम नहीं रहा; (5) और अपने (मरने के) बाद रिश्तेदारों की ओर से डरता हूँ, और मेरी पत्नी बाँझ है, तो 'तू' ही मुझे अपनी ओर से एक वारिस (बेटा) दे, (6) जो मेरा वारिस हो और याकूब के घराने का, और ऐ रब! 'तू' उसे पसंदीदा (चहीता) बना।'' (7) ऐ ज़करीया! 'हम' तुम को खुशख़बरी देते हैं एक लड़के की, नाम उसका 'यहया' होगा, 'हमने' उससे पहले किसी व्यक्ति को उस जैसा नहीं बनाया। (8) उन्होंने कहा, "मेरे रब! लड़का कैसे होगा, जबकि मेरी पत्नी बाँझ है, और मैं बुढ़ापे की आख़िरी उम्र को पहुँच चुका हूँ"। (9) फ़रमाया, ''ऐसा ही होगा तेरे 'रब' ने कहा है कि यह 'मेरे' लिए आसान है, इससे पहले भी 'मैं' आप को पैदा कर चुका हूँ और आप तो (इस से पहले) कुछ भी न थे।'' (10) (ज़करीया ने) कहा, ''मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी निश्चित कर दे।'' फ़रमाया, ''आप के लिए निशानी यह है कि आप भले चंगे (तन्दुरूस्त) रह कर भी तीन रात (और दिन) लोगों से बात-चीत न कर सकेंगे। (11) तो वह मेहराब (कमरे) से निकल कर अपनी क़ौम के पास आए और उन्हें इशारे से समझाया, "सुबह और शाम (अल्लाह की) याद में लगे रहो।'' (12) ''ऐ यहया! किताब को मज़बूती से थाम लें"। और 'हमने' उन्हें बचपन ही में समझ दे दी थी।

(13) और अपने पास से ख़ास नर्मी और पाकीज़गी दी, और वह बड़े परहेज़गार थे; (14) और अपने माँ-बाप के साथ भलाई करने वाले थे और वह सरकश नाफ़रमान न थे। (15) "और 'सलाम' हो उन पर जिस दिन वह पैदा हुए और जिस दिन उन की मौत हो, और जिस दिन वह ज़िन्दा कर के उठाये जाएँ"! (16) और इस किताब में मरयम का ज़िक्र कीजिए, जब वह अपने घर वालों से अलग हो कर पूरब की ओर एक मकान में चली गई; (17) फिर उसने उनकी ओर से पर्दा कर लिया, तो 'हमने' उसके पास अपनी रूह़ (फ़रिश्ता) को भेजा, और वह उसके सामने पूरा मनुष्य बन गया। (18) वह बोल उठीं, "मैं तुझ से बचने के लिए रह़मान की पनाह माँगती हूँ, अगर तुम परहेज़गार हो"। (19) (फ़रिश्ते ने) कहा, "मैं तो तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुम्हें एक पाकीज़ा लड़का दूँ" (20) (मरयम) बोली, "मेरे लड़का कैसे होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं, और न मैं बद्कार हूँ"। (21) (फ़रिश्ते ने) कहा, ''ऐसा ही होगा, तुम्हारे 'रब' ने फ़रमाया है, कि ऐसा करना मेरे लिए आसान है, और 'हम' यह इस लिए करेंगे ताकि 'हम' उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएँ और अपनी ओर से रह़मत, और यह एक ऐसी बात है जिस का फैसला हो चुका है।'' (22) तो उनको ह़मल (गर्भ) ठहर गया, और वह उसे लिए हुए एक दूर स्थान पर (अलग) चली गयीं। (23) फिर उसे दर्दज़ेह (बच्चा पैदा होने के वक़्त का दर्द) खजूर के तने की ओर ले आया, कहने लगीं, "क्या ही अच्छा होता, कि मैं इससे पहले मर चुकी होती और भूली बिसरी हो गयी होती"। (24) उस समय उसके नीचे से फ़रिश्ते ने पुकारा, ''दुखी न हो! तुम्हारे रब ने तुम्हारे नीचे से एक स्रोत जारी कर दिया है; (25) और खजूर के तने को पकड़ कर अपनी ओर हिलाओ, ताज़ा-ताज़ा खजूर तुम पर झड़ पड़ेंगी, (26) तो खाओ और पियो, और आँखें ठंडी करो, फिर अगर कोई आदमी नज़र आए तो कह दो मैंने रह़मान के लिए रोज़े की नज़र मानी है, इसलिए आज किसी आदमी से हरगिज़ बात नहीं करुँगी।''

आयत नं० 1 से 26 तक की व्याख्या

1-6 كٓهٰيٰعٓصٓ ۝ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝ يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝

यह 'हुरूफ़ मुक़त्तआ़त' हैं। इन का अर्थ अल्लाह ही बेहतर जानता है।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे ह़ज़रत ज़करिया (अ़लै०) पर अपने फ़ज़्ल व करम का ज़िक्र किया है, जो 'बनी इस्राईल' के बहुत ही बड़े नबी और ह़ज़रत यह़या (अ़लै०) के वालिद थे। 'सह़ीह़ बुख़ारी' में है कि वह पेशे के एतिबार से लकड़ी का काम करते थे और अपने हाथ की कमाई खाते थे, उन्होंने रात में जब दुनिया सो रही थी अपने रब से ख़ुफ़िया तौर पर दुआ़ की और कहा कि ऐ मेरे रब! मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो चुकी हैं और सर के बाल बिल्कुल सफ़ेद हो गये हैं और इस से पहले कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि तूने मेरी दुआ़ कुबूल न की हो।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि यह अल्लाह के साथ एक क़िस्म का वसीला था कि ऐ अल्लाह! मैं बूढ़ा हो चुका हूँ, मेरी ह़ालत क़ाबिले रह़म हो चुकी है और इस से पहले तू मेरी दुआ़एँ कुबूल करता रहा है,

इसलिए इस बार भी मेरी दुआ क़ुबूल कर ले, मुझे नाउम्मीद न कर और मेरे बाद मेरी क़ौम की बागडोर जिन रिश्तेदारों के हाथ में जाएगी वह इस लायक़ नहीं हैं कि उन पर भरोसा किया जाए। उन में कोई ऐसा नहीं जो दअ़वत व तब्लीग़ का काम जारी रख सके, मुझे डर है कि वह लोग मेरी दअ़वत के काम को नुक़्सान पहुचाएँगे और मेरी बीवी जवानी के ज़माने ही से बांझ है, इसलिए तू अपने फ़ज़्ल व करम से मुझे एक लड़का अ़ता फ़रमा जो इ़ल्म व नुबूव्वत और दअ़वत व तब्लीग़ के कामों में मेरा और ख़ानदान याक़ूब के दूसरे अम्बिया का वारिस बने और ऐ मेरे रब! तू उसे बुलन्द अख़्लाक़ व किरदार वाला बना।

सूरः आले इ़मरान आयत नं० (38) और उस के बाद की आयतों में ह़ज़रत ज़करिया (अ़लै०) का यह वाक़िया गुज़र चुका है कि जब उन्होंने ह़ज़रत मरयम (अ़लै०) के पास मेह़राब में विभिन्न क़िस्म के फल देखे तो अल्लाह की क़ुद्रत से प्रभावित होकर अपने बुढ़ापे और अपनी बीवी के बाँझपन के बावजूद अल्लाह से दुआ की कि ऐ अल्लाह! मुझे एक लड़का अ़ता कर, तो अल्लाह ने उन की दुआ क़ुबूल कर ली और उन्हें लड़के की ख़ुशख़बरी दे दी, उन्होंने नेक लड़के की तमन्ना इसलिए की ताकि उन के बाद उन की दअ़वत व तब्लीग़ का काम जारी रहे।

7 يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ اِسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝

अल्लाह तआ़ला ने उन की दुआ क़ुबूल फ़रमा ली और कहा, ज़करिया! हम आप को लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं जिस का नाम 'यह़या' होगा और जिस की मिसाल हम ने इस से पहले पैदा नहीं की।

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत है कि बाँझ औ़रतों ने उन के पहले उन जैसा बच्चा नहीं जना था। एक रिवायत यह भी है कि उन्होंने कभी कोई गुनाह नहीं किया और न गुनाहों का इरादा किया।

8 قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝

ह़ज़रत ज़कारिया (अ़लै०) ने यह ख़ुशख़बरी पाकर ज़ाहिरी ह़ालात के पेशेनज़र अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम क़ुद्रत पर ह़ैरत का इज़्हार किया और कहा, मेरे रब! मुझे लड़का कैसे होगा? मेरी बीवी बाँझ है और मैं बुढ़ापे के उस दौर में दाख़िल हो चुका हूँ जिस के बाद कोई तद्बीर और कोई इ़लाज फ़ायदेमन्द नहीं होता। एक दूसरी राय है कि उन्होंने ख़ुशख़बरी पाने के बाद अपने बीवी की ह़ालत को सामने रखते हुए बच्चा पैदा होने की कैफ़ियत जाननी चाही।

9 قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, जैसा आप ने चाहा वैसा ही होगा। फिर उन की ह़ैरत व तअ़ज्जुब दूर करने के लिए मज़ीद कहा, आप का रब कहता है कि ऐसा करना यानी बहुत ही बूढ़े बाप और हमेशा से बाँझ माँ से बच्चा पैदा करना मेरे लिए आसान है और मेरी क़ुद्रत को सामने रखते हुए इस में ह़ैरत की आप के लिए कोई बात भी नहीं होनी चाहिए। मैं तो ख़ुद आप को इस से पहले एक तुच्छ बूँद के

ज़रिये अ़दम से वजूद में ला चुका हूँ। माँ और बाप के ज़रिये पैदा करना तो ज़्यादा आसान है।

10-11 قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝ فَخَرَجَ عَلٰي قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝

ह़ज़रत ज़कारिया (अ़लै०) ने कहा, मेरे रब! मुझे कोई निशानी बता दीजिए ताकि जान सकूँ कि वाक़ई ह़मल (गर्भ) क़रार पा गया है और मेरे दिल को मज़ीद इत्मिनान ह़ासिल हो। इस सवाल से मक़्सद यह था कि जब ह़मल (गर्भ) क़रार पा जाए तो उन्हें पता चल जाए क्योंकि कोई निश्चित वक़्त नहीं बताया गया था।

मगर इस ख़ुशख़बरी को सुनकर उन के दिल में यह ख़्वाहिश पैदा हुई कि अब जल्द ही उन के घर बेटा पैदा हो, इसीलिए उन्होंने चाहा कि अल्लाह की ओर से उन पर जो एह़सान होने वाला है उस की कोई जल्द निशानी बता दी जाए।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया आप के लिए निशानी यह होगी कि ज़बान व जिस्म के बिल्कुल सह़ी सालिम होने के बावजूद तीन दिन और तीन रात किसी से बात न कर सकेंगे। यहाँ तीन रात का ज़िक्र आया है और सूरः आले इ़मरान आयत नं० (41) में तीन दिन का, इसलिए मुराद तीन दिन और तीन रातें हैं। जब ह़ज़रत ज़करिया (अ़लै०) की आवाज़ बन्द हो गई तो मेह़राब से निकल कर फ़ौरन अपनी क़ौम के पास आए और उन से इशारा की ज़बान में कहा कि तुम लोग सुबह़ व शाम अल्लाह की तस्बीह़ में मश्ग़ूल हो जाओ। यहाँ **'اَوْحٰى'** के माने 'इशारा' के किया है जैसा कि सूरः आले इ़मरान में **'रम्ज़ा'** का लफ़्ज़ आया है, जिस के माने इशारा करना होता है।

मुजाहिद कहते हैं कि उन्होंने ज़मीन पर लिखकर लोगों से बात की थी। अ़रबी ज़बान में **'वह्य'** लिखने के माने में भी इस्तिमाल होता है।

12-15 يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝ وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ۝ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝

ह़ज़रत ज़करिया (अ़लै०) के घर वह लड़का पैदा होगा, उस का नाम ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने 'यह़या' रखा और जब उस ने होश संभाला तो अल्लाह ने उस से कहा, ऐ यह़या! तौरेत का इ़ल्म अच्छी तरह़ ह़ासिल करो, इसलिए कि 'बनी इस्राईल' के लोग तौरेत ही पढ़ते थे और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के बाद तमाम अम्बिया-ए-बनी इस्राईल और उ़ल्मा लोगों के दर्मियान उस की तअ़लीमात के मुताबिक़ फ़ैसला करते थे। उन के लिए ज़रूरी था कि वह तौरेत को अच्छी तरह़ पढ़ते और उस में मौजूद हुक्मों की समझ ह़ासिल करते।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत यह़या (अ़लै०) को बचपन ही में इ़ल्म व ह़िक्मत, तौरेत की समझ और आ़माले सालिह़ा की तौफ़ीक़ दे दी थी। उन के अन्दर अपने वालिदैन, रिश्तेदारों और अल्लाह की तमाम मख़्लूक़ के लिए रह़मत व शफ़्क़त का बेपनाह जज़्बा पाया जाता था।

حَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا का एक मतलब यह भी बयान किया है कि अल्लाह की शफ़्क़त व रह़मत हमेशा उन को शामिले ह़ाल थी, वह गुनाहों से पाक और ऐसे नेक थे कि गुनाह को कभी सोचा भी नहीं और अपने माँ-बाप के ऐसे फ़रमाँबरदार थे कि कभी भी उन के सामने किसी बात पर नहीं अकड़े और न उन की नाफ़रमानी की।

عَصِيًّا का एक मतलब यह भी बयान किया है कि वह अपने रब के नाफ़रमान बन्दे नहीं थे और अल्लाह तआ़ला ने उन्हें तमाम आफ़ात व बलाओं से अम्न व सलामती की ख़बर दे दी थी और उन के लिए सलाम भी दिया, जिस दिन वह पैदा हुए उस दिन शैतान के कचोका लगाने से अमान में रहे और जब वफ़ात पाई तो क़ब्र के फ़ित्नों से महफ़ूज़ रहे और जब दोबारा उठाए जाएँगे तो उन्हें कोई घबराहट नहीं होगी। यह अल्लाह तआ़ला का ह़ज़रत यह़या (अ़लै०) पर इन्आ़म ख़ास था कि इन तीनों ह़ालात में उन्हें अल्लाह का अम्न व अमान ह़ासिल रहा, जिस वक़्त आदमी वह़शत और ज़रूरत महसूस करता है वह चाहता है कि उस वक़्त कोई उस के साथ हो।

16-19 وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۙ﴿۱۶﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۖ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿۱۷﴾ قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿۱۸﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿۱۹﴾

चूंकि ह़ज़रत यह़या (अ़लै०) और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की पैदाइश लगभग एक जैसी है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत यह़या (अ़लै०) को निहायत बूढ़े बाप और बिल्कुल बाँझ माँ से पैदा किया और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को बिना बाप के पैदा किया और दोनों की पैदाइश में अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम क़ुद्रत का इज़्हार है, इसीलिए सूरः आले इ़मरान और सूरतुल् अम्बिया में दोनों का ज़िक्र एक दूसरे के बाद हुआ है।

ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मर्दों में कामिल कई लोग हुए हैं, मगर औ़रतों में आसिया जो फ़िरऔ़न की पत्नी हैं और मरयम बिन्त इ़मरान के अ़लावा कोई कामिला नहीं हुई।" **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया कि आप इस क़ुर्आन में ह़ज़रत मरयम का वाक़िआ़ पढ़िए और लोगों को सुनाइए। 'मरयम बिन्त इ़मरान' ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) की नस्ल से 'बनी इस्राईल' के एक दीनदार और शरीफ़ घराने की लड़की थीं, उन की पैदाइश का क़िस्सा 'सूरः आले इ़मरान' में गुज़र चुका है। पैदा होने के बाद उन्होंने अपने ख़ालू ह़ज़रत ज़करिया (अ़लै०) के घर में परवरिश पाई और होश संभालने के बाद से ही बड़ी मेह़नती, आ़बिदा और रात मे इ़बादत करने वाली बन गईं। जब अल्लाह तआ़ला ने उन के पेट से ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को पैदा करना चाहा तो मस्जिदे अक़्सा से ज़रा हट कर मश्रिक़ की ओर चली गईं।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि वहाँ लोगों की निगाहों से ओझल होकर तन्हाई में बैठकर इ़बादत के लिए गई थीं। किसी ने कहा कि उन को माहवारी आई थी और वहाँ पर्दे में तहारत ह़ासिल करने के लिए गई थीं। वहाँ ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) अल्लाह तआ़ला के हुक्म से उन के सामने एक मुकम्मल

इन्सान की शक्ल में आए।

'इब्ने अ़ब्बास' रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की रिवायत है कि अहले किताब पर भी कअ़बः की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ना वाजिब था, लेकिन ह़ज़रत मरयम (अ़लै०) के इसी अ़मल की वजह से उन्होंने क़िब्ला मश्रिक़ को अपना बना लिया और उसी तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ने लगे।

जब ह़ज़रत मरयम (अ़लै०) ने देखा कि एक आदमी उन के पर्दे का लिह़ाज़ किये बग़ैर उन के सामने आ गया तो उन के ज़ेहन में शुब्हा हुआ कि कहीं यह आदमी किसी बुरी नियत से तो नहीं आया है, इसीलिए अपनी पाक दामिनी की वजह से कहने लगीं कि ऐ आदमी! अगर तुझे अल्लाह का ख़ौफ़ है तो मैं बेह़द रह़म करने वाले अल्लाह के ज़रिये तुझ से पनाह माँगती हूँ तू मेरे क़रीब न आए। ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने फ़ौरन उनके दिल से ख़ौफ़ दूर करने और ह़क़ीक़ते ह़ाल बयान करने के लिए कहा, मैं तुम्हारे उसी रब का पैग़म्बर हूँ जिस के ज़रिये तुम ने पनाह माँगी है, मुझे उसी ने तुम्हारे पास भेजा है ताकि तुम्हारे गिरेबान में फूँक मार कर अल्लाह की ओर से बतौर अ़तिया एक लड़का दिये जाने का ज़रिया बने जो गुनाहों से पाक होगा। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरतुल् तह़रीम आयत नं० (12) में फ़रमाया है وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا और सूरः अम्बिया आयत (91) में फ़रमाया :-

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا दोनों आयतों में यही बताया गया है कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी तरफ़ से बज़रिये जिब्रईल उन के रह़म में ईसा की रुह़ फूँक दी।

एक मतलब यह बयान किया गया है कि मैं तुम्हारे रब का पैग़म्बर हूँ। इसलिए आया हूँ ताकि तुम्हारे पेट से एक लड़का पैदा होने की ख़बर दूँ जो गुनाहों से पाक होगा। एक क़िरात में **ليهب لك** आया है यानी मैं तुम्हारे रब का पैग़म्बर हूँ तुम्हारे पास एक ख़बर लेकर आया हूँ कि वह तुम्हें एक ऐसा लड़का देगा जो गुनाहों से पाक होगा।

20-21 قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝

ह़ज़रत मरयम (अ़लै०) को इस ख़बर से बहुत ज़्यादा तअ़ज्जुब हुआ, कहने लगीं कि मुझे लड़का कैसे होगा? न मेरा कोई शौहर है और न ही मैं कोई बद्कार औरत हूँ? ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा हाँ, ऐसा ही होगा, तुम्हारा कोई शौहर नहीं और तुम कोई बद्कार औ़रत नहीं, इसलिए कि तुम्हारा रब हर चीज़ पर कुद्रत रखता है।

वह कहता है ऐसा करना मेरे लिए बहुत ही आसान है। उस ने आदम को बिना माँ-बाप के पैदा किया और ह़व्वा को केवल मर्द से पैदा किया और बाक़ी आदम की औलाद को उन के माँ-बाप के ज़रिये पैदा किया सिवाय ह़ज़रत ईसा के, जिन्हें अल्लाह ने बिना बाप के पैदा किया और इस तरह़ इन्सानों की पैदाइश के चारों तरीक़े अख़्तियार कर के अल्लाह ने इन्सानों की हिदायत के लिए अपनी अ़ज़ीम कुद्रत और बेमिसाल अ़ज़्मत की दलील पेश कर दी और अल्लाह ने ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को उन की क़ौम

के लिए रह़मत बनाया था, जैसा कि हर नबी अपनी क़ौम के लिए रह़मत होता है। चुनाँचे वह अपनी क़ौम को अल्लाह की इ़बादत की तअ़लीम देने लगे।

आख़िर में ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने ह़ज़रत मरयम (अ़लै०) से कहा कि ऐसा होना अल्लाह के इ़ल्म में मुक़द्दर हो चुका है, ऐसा होकर रहेगा। एक राय यह भी है कि मुम्किन है وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا अल्लाह का कलाम नबी करीम (सल्ल०) से हो कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) का बिना बाप के पैदा होना अल्लाह के इ़ल्म में पहले से मुक़द्दर था।

22 فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि जब ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने उन्हें अल्लाह का फ़ैसला सुना दिया तो राज़ी हो गईं और एक तरह से इत्मिनान महसूस करने लगीं तो ह़ज़रत जिब्रईल ने उन के क़रीब आकर उन के गिरेबान में फूँक दिया।

एक क़ौल यह है कि उन के दामन में फूँक मारी और एक तीसरी रिवायत है कि उन के मुँह में फूँक मारी, बहरह़ाल फूँक का असर उन के रह़म तक पहुँच गया और अल्लाह के हुक्म से ह़मल क़रार पा गया। इस के बाद वह लोगों की बातों के डर से अपनी क़ौम से दूर पहाड़ के पीछे या वादी में चली गईं।

23 فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۝

ह़ज़रत मरयम (अ़लै०) के ह़मल (गर्भ) की मुद्दत के बारे में कई बातें कहीं गईं हैं। एक यह है कि ह़मल (गर्भ) और पैदाइश के दर्मियान कोई फ़ासला नहीं था, लेकिन अक्सर का कहना यह है कि ह़मल की मुद्दत नौ माह थी। बहरह़ाल ह़मल की मुद्दत जो भी हो रिवायात से इतनी बात समझ में आती है कि गर्भ आने के बाद जब लोगों की बातों का उन्हें डर हुआ तो बैतुल् मक़्दिस और अपनी क़ौम से दूर बैतुल् लहम की बस्ती में चली गईं, जो बैतुल् मक़्दिस से आठ मील की दूर पर है, जहाँ वह लोगों की नज़रों से ओझल हो गईं ताकि उन के तअ़नों से बची रहें।

जब विलादत (पैदाइश) का वक़्त क़रीब आ गया और दर्द की शिद्दत बढ़ गई तो एक खजूर के दरख़्त के पास चली गईं ताकि विलादत के वक़्त उस का सहारा ले सकें और जब उन्हें लोगों के आ़र दिलाने का ख़याल आया तो इन्सानी ज़रूरत के मुताबिक़ कहने लगीं, काश! मुझे इस से पहले मौत आ गई होती। काश! मैं एक भूली बिसरी कहानी बन गई होती।

24 فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝

ह़ज़रत मरयम (अ़लै०) एक टीले पर थीं और ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) टीले के नीचे थे। जब उन्होंने ह़ज़रत मरयम की ग़म से भरी बात सुनी तो उन्हें पुकार कर कहा ऐ मरयम! ग़म न कर, अल्लाह ने तुझे एक ऐसा तरीक़ा दिया है जो सरदारे क़ौम और बड़ी इ़ज़्ज़त वाला होगा।

एक दूसरा क़ौल यह है कि سَرِيًّا छोटी नहर के माने में है यानी अल्लाह ने तेरे क़दमों में बतौर

मोअ़जिज़ह (चमत्कार) नहर जारी कर दी है।

25-26 وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿٢٦﴾

खजूर की शाख़ को पकड़ कर हिलाओ, उस से तुम्हारे लिए ताज़ा खजूरें गिरेंगी। खजूर खाओ, नहर का ताज़ा पानी पियो और प्यारे बच्चे को देखकर अपनी आँखें ठन्डी करो और ग़म न करो और जब तुम किसी आदमी को देखो जो तुम से बच्चे के बारे में सवाल करे तो इशारा की ज़बान में कह दो कि मैंने अल्लाह के लिए ख़ामोश रहने की नज़र मानी है, आज मैं किसी इन्सान से बात नहीं करुँगीं।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि उन्हें यह हुक्म इसलिए दिया गया था ताकि नादानों से बात करने की उन्हें नौबत न आए और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की बातचीत ही उन की बराअत व पाक दामिनी की दलील बनकर सब को ख़ामोश कर दे।

आयत नं० 27 से 50 तक

فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ؕ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿۲۷﴾ يٰۤاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿۲۸﴾ فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ؕ
قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِى الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿۲۹﴾ قَالَ اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ ۖ اٰتٰنِىَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِىْ نَبِيًّا ﴿۳۰﴾ وَّجَعَلَنِىْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۖ وَاَوْصٰنِىْ بِالصَّلٰوةِ
وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿۳۱﴾ وَّبَرًّا بِوَالِدَتِىْ ۫ وَلَمْ يَجْعَلْنِىْ جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿۳۲﴾ وَالسَّلٰمُ عَلَىَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿۳۳﴾ ذٰلِكَ
عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِىْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿۳۴﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۳۵﴾
وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۳۶﴾ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۳۷﴾
اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۸﴾ وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِىَ الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِىْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿۴۰﴾ وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۘ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿۴۱﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ
يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِىْ عَنْكَ شَيْـًٔا ﴿۴۲﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّىْ قَدْ جَآءَنِىْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِىْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿۴۳﴾
يٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿۴۴﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّىْۤ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿۴۵﴾
قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِىْ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِىْ مَلِيًّا ﴿۴۶﴾ قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِىْ
حَفِيًّا ﴿۴۷﴾ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّىْ ۖ عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّىْ شَقِيًّا ﴿۴۸﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿۴۹﴾ وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿۵۰﴾

अनुवाद-

(27) फिर वह उसको लिए हुए अपनी क़ौम के पास आई; लोग कहने लगे, ''ऐ मरयम! यह तो 'तूने' बुरा काम किया, (28) ऐ हारून की बहन! न तो तेरा बाप ही बुरी आदतों वाला था और न तेरी माँ ही बद्‌कार थी।'' (29) तो (मरयम ने) उस बच्चे की ओर इशारा किया, लोगों ने कहा, ''हम इस बच्चे से क्या बात करें जो अभी पालने में है।'' (30) (बच्चे ने) कहा, ''मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उसने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है; (31) और मुझे बरकत वाला बनाया, जहाँ भी मैं रहूँ, और 'उसने' मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की, जब तक कि मैं ज़िन्दा रहूँ; (32) और अपनी माँ का हक़ अदा करने वाला बनाया, और 'उसने' मुझे सरकश और बद बख़्त नहीं बनाया; (33) और सलाम है मुझ पर कि जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन मैं मरुँगा, और जिस दिन ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा!'' (34) यह मरयम का बेटा ईसा है, सच्ची बात है, जिसमें लोग सन्देह करते हैं। (35) अल्लाह ऐसा नहीं, कि 'वह' किसी को अपना बेटा बनाए, 'वह' पाक है, जब 'वह' किसी बात का फ़ैसला कर लेता है, तो बस कहता है, "हो जा" और वह हो जाती है। (36) और बेशक अल्लाह मेरा भी 'रब' है और तुम्हारा भी, तो उसी की इबादत करो, यही सीधी राह है।'' (37) तो उनमें कितने ही गिरोहों ने आपस में विभेद किया, तो जिन लोगों ने इन्कार किया, उनके लिए बड़ी तबाही है एक बड़े दिन के हाज़री पर; (38) जिस दिन यह 'हमारे' सामने हाज़िर होंगे, उस दिन वह खूब सुनेंगे, और खूब देखेंगे; मगर आज यह ज़ालिम खुली गुमराही में पड़े हुए हैं। (39) और उनको पछतावे के दिन से ख़बरदार कर दो जबकि मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा और वे

ग़फ़लत में हैं, और ईमान नहीं लाते। (40) बेशक हम ही ज़मीन के, और उस पर बसने वालों के वारिस हैं, और 'हमारी' ही ओर उनको लौटना है। (41) और इस किताब में इब्राहीम का ज़िक्र कीजिए, बेशक "वह बड़े सच्चे नबी थे"। (42) जब उन्होंने अपने बाप से कहा, "ऐ मेरे अब्बा जान! आप क्यों ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं, जो न सुनते हैं, और न देखते हैं और न आप के किसी काम आते हैं? (43) ऐ मेरे अब्बा जान! मेरे पास वह इल्म आ चुका है; जो आप के पास नहीं था; तो आप मेरे पीछे चलें, मैं आप को सीधी राह दिखा दूँगा; (44) ऐ मेरे अब्बाजान! शैतान की इबादत न कीजिए, शैतान तो रहमान का नाफ़रमान है। (45) ऐ मेरे अब्बाजान! मैं डरता हूँ कि कहीं रहमान का अज़ाब न आ पड़े, और आप शैतान के साथी हो कर रह जाएँ।" (46) (आज़र ने) कहा, "ऐ इब्राहीम क्या तू मेरे मअबूदों (उपास्यों) से फिर गया है? अगर तू बाज़ न आया, तो मैं तुझे संगसार (पत्थर मार-मार कर मार डालूँगा) करूँगा, और तू मुझसे हमेशा के लिए अलग हो जा" (47) (इब्राहीम ने) कहा, "सलाम हो आप पर! मैं आप के लिए अपने 'रब' से माफ़ी की दरख़्वास्त करूँगा, बेशक 'वह' तो मुझ पर बहुत मेहरबान है; (48) और मैं आप लोगों से और उनसे जिन को आप लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, अलग होता हूँ और अपने 'रब' ही को पुकारता हूँ, उम्मीद है कि मैं अपने 'रब' को पुकार कर महरूम नहीं रहूँगा। (49) तो जब वह उन लोगों से और जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजते थे, उन से अलग हो गये, तो 'हमने' उन्हें इस्हाक़ और याक़ूब प्रदान किये और उन में से हर एक को नबी बनाया; (50) और उनको अपनी रहमत से हिस्सा दिया, और उनके लिए सच्चाई की ज़बाने (बेहतर ज़िक्र) बुलन्द कीं।

आयत नं० 27 से 50 तक की व्याख्या

27-28 فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ؕ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ۝ يٰۤاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ اِمْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ۝

जब हज़रत मरयम (अलै०) निफ़ास से फ़ारिग़ हो गईं और अल्लाह के इन्आमात व इक्रामात को देखकर इत्मिनान हुआ तो अपने बच्चे हज़रत ईसा (अलै०) को गोद में लेकर अपनी क़ौम के पास आईं। लोगों ने उन की गोद में बच्चा देखकर ग़म व हैरत के मिले-जुले जज़्बे का इज़्हार किया क्योंकि मरयम बहुत ही बड़े दीनी ख़ानदान की बेटी थीं। लोगों ने उन पर ताना देते हुए कहा, ऐ मरयम! तूने बहुत बुरा किया है कि नाजायज़ बच्चा उठाए चली आ रही है और डाँट फटकार करते हुए कहा, ऐ हारून की बहन! तेरा बाप तो कोई बदकार आदमी नहीं था और न तेरी माँ ही ज़ानिया औरत थी।

हज़रत हारून से मुराद हज़रत मूसा (अलै०) के भाई हारून हैं, इसलिए कि 'हज़रत मरयम' उसी नस्ल से थीं या इसलिए कि लोग 'मरयम' को हारून (अलै०) की तरह अिबादतगुज़ार और नेक समझते थे, इसीलिए उन का नाम लेकर उन्हें शर्म दिलाई। एक दूसरा क़ौल यह है कि इस नाम का उन का एक भाई था जो नेकी में मशहूर था, सही हदीस से इसी की ताईद होती है।

'इमाम अहमद' 'मुस्लिम' 'तिर्मिज़ी' और 'नसई' वग़ैरहुम ने 'मुग़ीरा बिन शोअबा' से रिवायत की

है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन्हें नज़्रान के ईसाइयों के पास भेजा, उन्होंने कहा कि तुम लोग अपने क़ुर्आन में मरयम के बारे में يَٰٓأُخۡتَ هَٰرُونَ पढ़ते हो, हालांकि हज़रत मूसा, हज़रत ईसा से सैकड़ों साल पहले गुज़रे हैं वापस आकर उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से ज़िक्र किया तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम ने उन से क्यों नहीं कहा कि लोग अपने बच्चों के नाम अम्बिया व नेक लोगों के नाम से रखते थे यानी हारून, मरयम के भाई का नाम था।"

29-33 فَأَشَارَتۡ إِلَيۡهِۚ قَالُواْ كَيۡفَ نُكَلِّمُ مَن كَانَ فِي ٱلۡمَهۡدِ صَبِيّٗا ۝ قَالَ إِنِّي عَبۡدُ ٱللَّهِ ءَاتَىٰنِيَ ٱلۡكِتَٰبَ وَجَعَلَنِي نَبِيّٗا ۝ وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيۡنَ مَا كُنتُ وَأَوۡصَٰنِي بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱلزَّكَوٰةِ مَا دُمۡتُ حَيّٗا ۝ وَبَرَّۢا بِوَٰلِدَتِي وَلَمۡ يَجۡعَلۡنِي جَبَّارٗا شَقِيّٗا ۝ وَٱلسَّلَٰمُ عَلَيَّ يَوۡمَ وُلِدتُّ وَيَوۡمَ أَمُوتُ وَيَوۡمَ أُبۡعَثُ حَيّٗا ۝

हज़रत मरयम (अ़लै०) ने बच्चे की तरफ़ इशारा कर के लोगों से कहा कि इसी से पूछ लो, तो लोगों ने कहा कि हम लोग गोद के बच्चे से कैसे बात करें? हज़रत ईसा (अ़लै०) उन की बात सुनकर बोल पड़े और कहा कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उस ने फ़ैसला किया है कि वह मुझे इन्जील देगा और मुझे नबी बनाएगा और मैं जहाँ भी रहूँगा उस ने मुझे 'साहिबे ख़ैर व बरकत' और 'साहिबे दअ़वत' बनाया है, मैं अपने रब का पैग़ाम लोगों तक पहुँचाता रहूँगा।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि जब हज़रत ईसा (अ़लै०) ने पहली बार बात की तो अपने को अल्लाह का बन्दा बताया और उस का बेटा होने का इन्कार किया और कलाम जारी रखते हुए कहा और मुझे वसीयत की गई है कि ज़िन्दगी भर नमाज़ पढ़ूँ और ज़कात अदा करुँ और अपनी माँ का फ़रमाँबरदार रहूँ।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि यह हज़रत ईसा (अ़लै०) की ज़बान से एतिराफ़ व एलान था कि अल्लाह ने उन्हें बिना बाप के पैदा किया है। हज़रत ईसा (अ़लै०) ने यह भी कहा और अल्लाह ने मुझे घमण्डी और गुनाहगार नहीं बनाया और अल्लाह की ओर से अम्न व सलामती मेरे लिए शामिले हाल रही है उस दिन जब मैं पैदा हुआ और उस दिन भी रहेगी जब मेरी मौत आएगी और जब मैं दोबारा ज़िन्दा उठाया जाऊँगा। कहा जाता है कि इस कलाम के बाद फिर हज़रत ईसा (अ़लै०) ने जब तक बात करने की उ़म्र को न पहुँच गए कोई बात न की।

34 ذَٰلِكَ عِيسَى ٱبۡنُ مَرۡيَمَۚ قَوۡلَ ٱلۡحَقِّ ٱلَّذِي فِيهِ يَمۡتَرُونَ ۝

यह अल्लाह तआ़ला का क़ौल है कि अब तक जो कुछ 'हज़रत ईसा' के बारे में बयान हुआ और जो उन्होंने ख़ुद अपनी ज़बान से अपने बारे में कहा, यही हक़ीक़त है और यही वह क़ौले हक़ है जिस में लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं। हज़रत ईसा (अ़लै०) वह नहीं हैं जो उन के बारे में यहूद कहते हैं कि वह जादूगर थे और यूसुफ़ नज्जार के बेटे थे और न वह हैं जो उन के बारे में 'नसारा' की एक जमाअ़त कहती है कि वह अल्लाह थे और दूसरी जमाअ़त कहती है कि वह अल्लाह के बेटे थे और तीसरी जमाअ़त कहती है कि वह तीन मअ़बूदों में से एक थे। उन में से जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह के बन्दे, उस के रसूल, उस की रुह़ और उस का कलिमा थे, वह लोग मुसलमान हो गए।

35 مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۳۵﴾

अल्लाह तआ़ला के लिए यह बात किसी तरह़ भी सह़ी नहीं कि वह अपने लिए कोई बेटा बनाए। वह जाहिलों और नादानों की इस बात से बिल्कुल पाक है, वह तो जब किसी चीज़ का फ़ैसला करता है तो कहता है कि हो जा, वह चीज़ हो जाती है।

और जिस ज़ात बारी तआ़ला की यह सिफ़त है, उस के बेटा कैसे हो सकता है? अल्लाह तआ़ला ने सूरः आले इ़मरान आयत नं० (59/ 60) में फ़रमायाः-

اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۵۹﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۶۰﴾

"अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक ह़ज़रत ईसा की मिसाल वैसी है जैसे आदम की मिसाल, जिसे मिट्टी से बना कर कह दिया कि हो जा बस हो गया, आप के रब की तरफ़ से ह़क़ यही है। ख़बरदार! शक करने वालों में न होइये।"

36 وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۳۶﴾

यह ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के कलाम का आख़िर है कि बेशक अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा रब है, इसलिए उसी की अ़िबादत करो। यही सीधी राह है, जो इस पर चलेगा हिदायत की राह पाएगा और जो इस की मुख़ालिफ़त करेगा वह गुमराह हो जाएगा।

37 فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۳۷﴾

अहले किताब ने ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की ह़क़ीक़त के बारे में सब कुछ वाज़ेह़ हो जाने के बाद इख़्तिलाफ़ किया जैसा कि ऊपर बयान किया जा चुका है कि यहूद ने उन्हें जादूगर और उन की माँ को ज़ानिया कहा और नसारा इतने गिरोहों में बँट गये कि उन्हें शुमार नहीं किया जा सकता और उन काफ़िराना अ़क़ायद की वजह से सभी अल्लाह की निगाह में काफ़िर हो गए। इसीलिए अल्लाह ने धमकी दी और कहा कि क़ियामत के दिन जब वह अल्लाह के सामने ह़ाज़िर होंगे तो हलाकत व बर्बादी उन की क़िस्मत बन जाएगी और जहन्नम में ढ़केल दिये जाएँगे।

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' ने 'ह़ज़रत उ़बादह बिन सामित' (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसुलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिस ने गवाही दी कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, उस का कोई शरीक नहीं और मुह़म्मद उस के बन्दे और रसूल हैं और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल और उस का कलिमा हैं जो उस ने 'मरयम' पर डाल दिया था और उस की ओर से एक 'रुह़' है और जन्नत और जहन्नम ह़क़ है तो अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत में दाख़िल कर देगा, चाहे उस का अ़मल जैसा हो"।

38 اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۸﴾

क़ियामत के दिन काफ़िरों का जो ह़ाल होगा उसी की अल्लाह तआ़ला ख़बर दे रहा है कि जब वह

लोग हिसाब व बदला के लिए मैदाने महशर में आएँगे तो उन के सुनने और देखने की ताक़त हैरत अंगेज़ हद तक तेज़ होगी जबकि दुनिया में उन का हाल यह था कि न वह हक़ बात सुनते थे और न ही हक़ की राह उन्हें नज़र आती थी, इसीलिए उन्होंने हक़ समझने के लिए कभी अल्लाह की आयात की निशानियों में ग़ौर व फ़िक्र की कोशिश नहीं की। अल्लाह तआला ने सूरः सज्दः आयत नं० (12) में फ़रमाया है:-

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا

"मुजरिमीन अपने रब के सामने सर झुकाए हुए कहेंगे, ऐ हमारे रब! हम ने अच्छी तरह देख और सुन लिया, लेकिन उस दिन का देखना और सुनना उन्हें कोई काम न आएगा।"

39 وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब कर के कहा जा रहा है कि आप, लोगों को उस दिन से डराइए जिस दिन सब लोग अफ़्सोस कर रहे होंगे, गुनाहगार अपने गुनाहों को याद कर के और नेक आदमी यह सोच कर कि उस ने और ज़्यादा नेक काम क्यों नहीं किये थे। उस दिन तमाम चीज़ों का फ़ैसला हो जाएगा, नाम-ए-आमाल लपेट कर रख दिये जाएँगे। जन्नत वाले जन्नत में और जहन्नम वाले जहन्नम में भेज दिये जाएँगे, लेकिन आज हाल यह है कि लोगों पर सख़्त ग़फ़्लत तारी है और आख़िरत में उन का अन्जाम क्या होगा इस की फ़िक्र ही नहीं, बल्कि अक्सर व बेशतर लोग तो आख़िरत पर ईमान ही नहीं रखते हैं।

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' और दूसरे मुहद्दिसीन ने हज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में चले जाएँगे तो मौत को लाया जाएगा जो सफ़ेद और काले रंग के मेंढ़े में होगी, उसे जन्नत व जहन्नम के दर्मियान खड़ा कर दिया जाएगा, फिर कहा जाएगा ऐ जन्नत वालों! क्या तुम लोग इसे पहचानते हो? तो वह लोग गर्दन उठा कर देखेंगे फिर कहेंगे हाँ, यह मौत है और इसे तमाम जन्नती देखेंगे।

फिर पुकारा जाएगा, ऐ अहले जहन्नम! क्या तुम लोग इसे पहचानते हो? तो वह लोग गर्दन उठा कर देखेंगे फिर कहेंगे हाँ, यह मौत है और इसे तमाम जहन्नमी देखेंगे। फिर हुक्म दिया जाएगा तो उसे ज़ब्ह कर दिया जाएगा और कहा जाएगा ऐ अहले जन्नत! हमेशा के लिए यहाँ रहो, अब तुम्हें मौत नहीं आएगी और ऐ अहले जहन्नम! हमेशा के लिए यहाँ रहो, अब तुम्हें मौत नहीं आएगी। फिर आप ने यह आयत وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ आख़िर तक पढ़ी और हाथ से इशारा कर के कहा कि दुनिया वाले ग़फ़्लत में हैं।

40 اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝

अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि एक दिन ऐसा आएगा कि ज़मीन पर मौजूद तमाम मख़्लूक़ात फ़ना के घाट उतार दी जाएँगी कोई बाक़ी नहीं रहेगा, केवल अल्लाह तआला की ज़ात रह जाएगी। वही ज़मीन और अपनी तमाम मख़्लूक़ात का तन्हा वारिस होगा और फिर सब के सब दोबारा ज़िन्दा होकर

उसी के पास आएँगे और उस के पास खड़े होकर अपने आ़माल का हिसाब चुकाएँगे जिस से अच्छा या बुरा बदला पाएँगे।

41-42 وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۘ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ۝

यहाँ से ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और उन के काफ़िर बाप आज़र का वाक़िआ़ बयान किया जा रहा है। नबी करीम (सल्ल०) से कहा गया है कि जो लोग अपने आप को ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की औलाद कहते हैं और इस पर फ़ख़्र करते हैं ज़रा उन्हें आप क़ुर्आन करीम में उन का वाक़िआ़ सुना दीजिए जो उन्हें अपने बाप 'आज़र' के साथ पेश आया था, जो मक्का के मूर्तिपूजकों की तरह़ मूर्तिपूजक था और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) बहुत सच्चे अल्लाह के नबी थे।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपने बाप को मूर्ति पूजा से रोकने के लिए बड़े अदब के साथ कहा, ऐ मेरे अब्बा! आप ऐसी मूर्ति की क्यों पूजा करते हैं जो न सुनता है, न देखता है और न आप को कोई नफ़ा या नुक़्सान पहुँचाने की क़ुद्रत रखता है? यानी इ़बादत तो बड़ी तअ़ज़ीम है, यह बेजान मूर्तियाँ तो इस लायक़ भी नहीं कि कोई अ़क़्ल वाला इन्सान इन्हें कोई ह़ैसियत दे, फिर आप क्यों इन की इ़बादत करते हैं?

इस आयत में और आगे आने वाली तीन आयतों में यह बात क़ाबिले ग़ौर है कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपने बाप को हर नसीह़त पेश करने से पहले (ऐ मेरे अब्बा!) कहा, इस से नर्मी और मुह़ब्बत का इज़्हार कर के उन के दिल को अपनी तरफ़ मायल करना था और अल्लाह तआ़ला के हुक्म पर अ़मल करना था कि बेटे को बहरह़ाल अपने बाप का एह़तिराम करना है।

43 يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْٓ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۝

उन्होंने दोबारा निहायत नर्मी और अदब के साथ अपने बाप को ह़क़ की तरफ़ बुलाया और कहा, अब्बा जान! मेरे पास कुछ ऐसा इ़ल्म है जो आप के पास नहीं है इसलिए नाराज़ न होइए और मेरी बात मान लीजिए ताकि मैं आप को उस राह पर ले चलूँ जो दर्मियानी राह है, न उस में यह ज़्यादती है कि जो इ़बादत का ह़क़्दार नहीं है उस की इ़बादत की जाए और न कमी है कि जो इ़बादत का ह़क़्दार है उस की इ़बादत छोड़ दी जाए और यही ह़ाल अख़्लाक़ व आ़माल में भी है कि यह राह हर अच्छे अख़्लाक़ व आ़माल की तरफ़ ले जाती है और बुरे अख़्लाक़ व आ़माल से दूर रखती है और यह भी सिखाती है कि आ़मतौर से बेटा बाप की पैरवी करता है, लेकिन ह़क़ यह है कि ह़क़ की पैरवी की जाए और जो हिदायत का मोह़ताज है, वह अच्छे इन्सान की पैरवी करे।

44 يٰٓاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ۝

तीसरी बार भी उन्होंने अपने बाप को नर्मी और अदब के साथ ही कहा, लेकिन जिस मूर्ति पूजा में वह मुब्तिला था उस की बुराई को उन्होंने खोल कर बयान किया और उस से रोकने की कोशिश की।

कहा, अब्बा जान! आप शैतान की अ़िबादत न कीजिए यानी इन्सान बुत की पूजा शैतान के हुक्म से ही करता है और शैतान ही इस काम को उस की नज़र में अच्छा बना कर पेश करता है, इसलिए मूर्ति की पूजा ह़क़ीक़त में शैतान की पूजा होती है और इस इन्कार में ताकीद पैदा करने के लिए ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने कहा कि शैतान तो अल्लाह का सरकश व नाफ़रमान बन्दा है, इसलिए उस की पैरवी अल्लाह की नाफ़रमानी है।

45 يٰٓاَبَتِ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿۴۵﴾

चौथी बार उन्होंने अपने बाप को अदब के साथ पुकार कर मूर्ति पूजा के बुरे अन्जाम से डराया और कहा कि अगर उस ने उन की बात न मानी तो डर है कि अल्लाह का कोई अ़ज़ाब उन पर नाज़िल हो जाए। इसलिए कि जो अल्लाह की नाफ़रमानी करेगा और उस के दुश्मन को अपना दोस्त बनाएगा उसे वह अपनी रह़मत से दूर कर देगा, जैसा कि शैतान के साथ हुआ है। फिर वह अ़ज़ाब व लअ़नत में शैतान का साथी और उस का शरीक हो जाएगा।

46 قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ﴿۴۶﴾

आज़र ने इन पैग़म्बराना नसीह़तों का असर क़ुबूल नहीं किया और सख़्ती के साथ तौह़ीद की दअ़वत को ठुकरा दिया और धमकी देते हुए कहा, ऐ इब्राहीम! क्या तुम्हें मेरे मअ़बूदों (उपास्यों) से नफ़रत है कि तुम उन की बुराई कर रहे हो? याद रखो! अगर तुम उन्हें बुरा कहने से बाज़ न आए और अपनी नसीह़तें बन्द न कीं तो तुम्हें पत्थर से मार-मार कर हलाक कर दूँगा।

एक दूसरा मतलब यह भी बयान किया है कि फिर मैं भी बुरे शब्दों के साथ तुम्हें पूरी क़ौम में मशहूर करुँगा और देखो! बेहतर यह है कि तुम मुझ से दूर हो जाओ इस से पहले कि तुम्हारे सह़ी सालिम जिस्म को मेरी ओर से नुक़्सान पहुँचे।

47 قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ﴿۴۷﴾

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) अपने काफ़िर बाप का जवाब सुनकर भी सम्मान करते रहे और उन के लिए सलामती की दुआ़ की और कहा कि "अगरचे आप मुझे बाहर निकलने की धमकी दे रहे हैं, लेकिन मुझ से आप को कोई तक्लीफ़ नहीं पहुँचेगी, मैं अपने रब से आप के लिए मग़्फ़िरत की दुआ़ करुँगा, वह मुझ पर बहुत ही करम फ़रमा है मुझे नाउम्मीद नहीं करेगा"।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने बुराई का जवाब भलाई से दिया जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों का गुण बयान करते हुए सूरः फ़ुर्क़ान आयत नं० (63) में फ़रमाया हैः-

وَاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا "जब बेइ़ल्म लोग उन से बात करने लगते हैं तो वह कह देते हैं कि सलाम हो (यानी मैं तुमसे झगड़ना नहीं चाहता हूँ"।)

मुफ़स्सिरीन ने यह भी लिखा है कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का अपने बाप से यह वादा कि वह अल्लाह से उस के लिए मग़्फ़िरत तलब करेंगे, इस उम्मीद की बुनियाद पर था कि वह इस्लाम ले आएगा

और कुफ़्र पर नहीं मरेगा, चुनाँचे एक लम्बी मुद्दत तक वह इस के लिए मग़्फ़िरत माँगते रहे। शाम की तरफ़ हिजरत कर जाने, मस्जिदे हराम बनाने और इस्हाक़ व इस्माईल की पैदाइश के बाद भी उस के लिए दुआ करते रहे। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरः इब्राहीम आयत नं० (41) में फ़रमाया है:-

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ

"ऐ हमारे रब! क़ियामत के दिन मुझे माफ़ कर देना और मेरे माँ-बाप को और तमाम मोमिनों को भी।"

लेकिन जब उन्हें यक़ीन हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो उस से अलग होने का एलान कर दिया। जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरः तौबः आयत नं० (114) में फ़रमाया है:-

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ۚ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ

"और इब्राहीम का अपने बाप के लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत माँगना सिर्फ़ उस वादे की वजह से था जो उन्होंने उस से कर रखा था। फिर जब उन पर यह बात ज़ाहिर हो गई कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो उन्होंने उस से अलग होने का एलान कर दिया, इब्राहीम बड़े नर्म दिल और संयमी थे।"

48 وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۖ عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿٤٨﴾

हज़रत इब्राहीम (अलै०) ने कहा, आप का घर और शहर छोड़कर कहीं और जा रहा हूँ और अल्लाह के सिवा जिन उपास्यों की आप लोग अिबादत करते हैं, मैं उन से अपनी नाराज़गी का एलान करता हूँ और मैं सिर्फ़ अपने रब की अिबादत करुँगा। मुझे उम्मीद है कि मेरा रब मेरी दुआ को बेकार नहीं करेगा और मुझे घर वाले अता करेगा जो ग़रीबी में मेरे लिए सुकून का ज़रिया बनेंगे।

49-50 فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾ وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾

हज़रत इब्राहीम (अलै०) जब अल्लाह के लिए अपने ख़ानदान, घर-बार और शहर को छोड़कर बैतुल् मक़्दिस चले गए तो अल्लाह ने उन्हें इस्हाक़ जैसा बेटा और याकूब जैसा पोता अता किया, दोनों ही उन की ज़िन्दगी में नबी हुए और जिन्हें पाकर उन की तन्हाई दूर हुई और आँखों को ठंडक नसीब हुई और सब को यानी इब्राहीम, इस्हाक़ और याकूब (अलै०) को अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल व करम और अपनी रहमत का बड़ा हिस्सा अता किया, नुबूव्वत दी, नेक औलाद दी, रोज़ी दी और बैतुल् मक़्दिस की सरज़मीन का मालिक बनाया और दुनिया में उन सब को नेक नामी दी, चुनाँचे तमाम लोग हज़रत इब्राहीम (अलै०) और औलादे इब्राहीम (अलै०) की तअरीफ़ करते हैं।

'बुख़ारी व मुस्लिम' की सही हदीस है कि नबी करीम (सल्ल०) से पूछा गया कि सब से अच्छे लोग कौन हैं? तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, यूसुफ़ बिन याकूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम ख़लीलुल्लाह। एक दूसरी रिवायत में है, करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन याकूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम हैं।

आयत नं० 51 से 70 तक

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى ۫ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾ وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗ
مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾ وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ
بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۗ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۗ وَمِمَّنْ
هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۗ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿٥٨﴾ सज्दः فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ
وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾ جَنّٰتِ عَدْنِ
ِالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ۗ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ۗ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾ تِلْكَ
الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾ وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا
كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ۭ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا
مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾ اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿٦٧﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ
حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾

अनुवाद-

(51) और आप इस किताब में मूसा का ज़िक्र कीजिए, बेशक वह चुने हुए और भेजे हुए नबी थे। (52) और 'हमने' उस को तूर (पहाड़) के दायीं ओर से पुकारा, और बात करने के लिए क़रीब कर लिया। (53) और अपनी रह़मत से उनके भाई 'हारून' को नबी बना कर उन्हें दिया। (54) और इस किताब में इस्माईल का ज़िक्र कीजिए, वह वादे के सच्चे थे, और वह भेजे हुए नबी थे। (55) और अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे, और अपने रब के नज़दीक पसंदीदा थे। (56) और इस किताब में इद्रीस का भी ज़िक्र कीजिए, वह भी बड़े सच्चे नबी थे; (57) और 'हमने' उन्हें बुलन्द दर्जे तक पहुँचाया। (58) यही वे नबी हैं, जिन पर अल्लाह का इन्आ़म हुआ, आदम की औलाद में से और उन लोगों की नस्ल से जिनको 'हमने' नूह़ के साथ सवार किया, और इब्राहीम और याकूब की औलाद में से, और उन लोगों में से जिनको 'हमने' हिदायत दी, और चुन लिया; जब उनके सामने रह़मान की आयतें सुनाई जाती थीं तो वे सज्दः करते, और रोते हुए गिर पड़ते थे। (59) फिर उनके बाद कुछ बुरे लोग उनके जानशीन (उत्तराधिकारी) हुए, जिन्होंने नमाज़ को बरबाद किया, और मन की इच्छाओं के पीछे पड़ गये, तो जल्द ही उनकी गुमराही (उनको आगे) मिलेगी; (60) सिवाय उनके जो तौबः कर लें, और ईमान ले आएँ और नेक काम करने लगें, तो ये लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उनका कुछ भी नुक़्सान न किया जाएगा। (61) हमेशा के लिए जन्नत़, जिन का रह़मान ने अपने बन्दों (की आँखों) से छिपा हुआ वादा किया है, बेशक 'उसेक' वादे पर हाज़िर होना है। (62) वहाँ वे कोई व्यर्थ (बकवास) की बात न सुनेंगे, जो कुछ सुनेंगे सलामती ही की बात होगी, और उन्हें सुबह़ और शाम अपनी रोज़ी (खाना) मिलती रहेगी; (63) यह है वह जन्नत जिसका वारिस 'हम' अपने बन्दों में से उनको बनाएँगे जो परहेज़गार होंगे। (64) और हम आप के रब के हुक्म के बिना नहीं उतर

सकते, जो कुछ हमारे आगे है, और जो कुछ पीछे है, और जो उसके बीच में है, सब 'उसी' का है; और आप का रब भूलने वाला नहीं। (65) 'वह' रब है आसमानों और ज़मीन और उनके बीच की चीज़ों का, तो 'उसी' की इबादत करो, और 'उसी' की इबादत पर जमे रहो, क्या तुम्हारे इल्म में उस जैसा कोई (और) नाम है? (66) और इन्सान कहता है, ''क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर ज़िन्दा कर के निकाला जाऊँगा?'' (67) क्या इन्सान को याद नहीं कि 'हम' इससे पहले उसे पैदा कर चुके हैं, और जबकि वह कुछ भी न था। (68) तो क़सम है आप के रब की! हम उनको इकट्ठा करेंगे, और शैतानों को भी, फिर उन को दोज़ख के आस-पास हाज़िर करेंगे, (जो) घुटनों के बल गिरे हुए होंगे। (69) फिर 'हम' हर गिरोह में से, उनको अलग कर लेंगे, जो रहमान की सरकशी में सब से ज़्यादा बढ़े हुए थे। (70) फिर 'हम' उन्हें खूब जानते हैं, जो इस में झोंके जाने के ज़्यादा हक़दार है।

आयत नं० 51 से 70 तक की व्याख्या

51 وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى ۫ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝

हज़रत इब्राहीम (अलै०) के बाद अब हज़रत मूसा (अलै०) का ज़िक्र हो रहा है, जिन का मक़ाम अल्लाह की निगाह में बहुत ऊँचा था। अल्लाह तआला ने नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब कर के फ़रमाया कि आप कुर्आन करीम में मौजूद 'हज़रत मूसा बिन इमरान' से सम्बन्धित आयतों की भी लोगों के सामने तिलावत कीजिए इसलिए कि हम ने उन्हें भी अपनी पैग़म्बरी के लिए चुन लिया था।

जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरः अअ़राफ़ आयत नं० (144) में फ़रमाया है اِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ "मैंने आप को लोगों के मुक़ाबिले में चुन लिया" और अगर "مُخْلِص" को लाम के ज़ेर के साथ पढ़ा जाए तो मतलब यह होगा कि उन्होंने भी अपनी अ़िबादत को हमारे लिए ख़ालिस कर लिया था और अपना माथा सिर्फ़ हमारे सामने झुकाया था और वह भी हमारे रसूल और नबी थे, हम ने उन के अन्दर दोनों गुण जमा कर दिये थे। जो पाँच बड़े रसूलों में से थे जिन के नाम यह हैं:-

हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अजमईन।

उलमा ने लिखा है कि रसूल वह होता है जिसे किताब दी गई है और नबी वह होता है जिस पर वह्य नाज़िल होती है और अल्लाह की ओर से अपनी उम्मत को पैग़ाम पहुँचाता है लेकिन उसे कोई अलग और मुस्तक़िल किताब नहीं दी जाती।

52 وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ۝

हज़रत मूसा (अलै०) मद्यन से वापसी में तूर पहाड़ के पास से गुज़रे, वहाँ उन्हें आग की ज़रूरत पड़ी देखा कि पहाड़ की तरफ़ एक दरख़्त था, जिस के दर्मियान से आवाज़ आई कि ऐ मूसा! मैं अल्लाह हूँ। अल्लाह ने उन्हें क़रीब किया और उन से बातचीत की और बिना किसी वह्य के अल्लाह ने उन की

बात सुन रहा था और वह अल्लाह की बात सुन रहे थे।

53 وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ۝

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) पर अल्लाह तआ़ला ने एक दूसरा एह़सान यह किया कि उन की दुआ़ क़ुबूल कर के उन के बड़े भाई हारून को नबी बना दिया। सूरः ताहा आयात नं० (29/30) में उन की दुआ़ नक़्ल की गई हैः-

وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ هٰرُوْنَ اَخِي "और मेरा सेक्रेट्री मेरे कुन्बे में से निश्चित कर दे यानी मेरे भाई हारून को" तो अल्लाह ने उन की दुआ़ क़ुबूल कर ली और फ़रमाया قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ऐ मूसा! तेरी माँग पूरी कर दी गई। **(सूरः ताहा आयत नं० 36)**

54-55 وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝ وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۚ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि जिस तरह़ आप ने ह़ज़रत मरयम, ह़ज़रत ईसा, ह़ज़रत इब्राहीम और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से सम्बन्धित क़ुर्आनी आयतों की तिलावत कर के लोगों को सुनाया है अब 'इस्माईल बिन इब्राहीम' से सम्बन्धित आयतों की भी तिलावत कीजिए। इसलिए कि वह वादे के बहुत ही सच्चे इन्सान थे। जब भी किसी इन्सान से कोई वादा करते तो बहरह़ाल उसे पूरा करते और सब से बड़ा और ख़तरनाक वादा अपनी जान की क़ुर्बानी से सम्बन्धित अपने बाप इब्राहीम से किया और कहाः-

سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ "आप मुझे इन्शाअल्लाह सब्र करने वाला पाएँगे।" **(अल् साफ़्फ़ात-102)**

इस वादे को ऐसे विश्वास के साथ पूरा किया कि रहती दुनिया तक के लिए सुपुर्दगी और मर मिटने का नमूना बन गए और वह ह़ज़रत मूसा की तरह़ रसूल और नबी थे और अपने घरवालों को नमाज़ व ज़कात और दूसरे कामों का हुक्म देते थे, ताकि दूसरों के लिए अच्छी मिसाल बनें (और इसलिए भी उन के घरवाले दीनी ख़ैर ख़्वाही के ज़्यादा ह़क़्दार थे, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमायाः-

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ "आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइए।" **(सूरः शुअ़रा-214)**

और फ़रमाया وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ "आप अपने घरवालों को नमाज़ का हुक्म कीजिए।" **(ताहा-132)**

और फ़रमाया قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا "(मोमिनो!) अपने आप को और अपने बाल बच्चों को आग से बचाओ।" **(अल् तह़रीम-6)**

और वह अपने रब की निगाह में बड़े पाकबाज़ और बहुत नेक इन्सान थे।

56-57 وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝

नबी करीम (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि आप ह़ज़रत इद्रीस (अ़लै०) से सम्बन्धित क़ुर्आनी

आयतों की भी तिलावत कर के लोगों को सुनाइए इसलिए कि वह भी अपने क़ौल व अ़मल में बहुत ही सच्चे इन्सान और नबी थे और हम ने उन्हें बहुत ही ऊँचे दर्जे पर रखा था, शर्फ़े नुबूव्वत से नवाज़ा था और अपने क़रीबी बन्दों में से बनाया था।

एक दूसरा मतलब यह बयान किया गया है कि हम ने उन्हें ज़िन्दा उठा कर एक बुलन्द मक़ाम यानी चौथे आसमान पर पहुँचा दिया। जैसा कि 'सह़ीह़ मुस्लिम' की रिवायत से साबित है कि वह चौथे आसमान पर हैं। ह़ज़रत इद्रीस (अ़लै०) शीस के बेटे और ह़ज़रत आदम (अ़लै०) के पोते थे। कहा जाता है कि ह़ज़रत आदम के बाद वह पहले रसूल थे। (वल्लाहु अ़लम)

58 أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِنْ ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَائِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۚ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَٰنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا ﴿٥٨﴾ सज्दः

ह़ज़रत ज़करिया (अ़लै०) से लेकर ह़ज़रत इद्रीस (अ़लै०) तक जिन अम्बिया-ए-किराम का इस सूरः में ज़िक्र आया है, उन्हीं की तरफ़ इशारा है कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें बहुत सी दुनियवी और दीनी नेअ़मतें दी थीं। यह अम्बिया-ए-किराम ह़ज़रत आदम, ह़ज़रत इब्राहीम और ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) की औलाद में से थे, उन सब को अल्लाह ने ह़क़ की राह की तरफ़ हिदायत दी थी और नुबूव्वत जैसे अ़ज़ीम तरीन मक़ाम व मर्तबः के लिए चुन लिया था और यह लोग जब अल्लाह का कलाम सुनते जिस में तौह़ीद की दलीलें और नसीह़त की दूसरी बातें होती थीं, तो अल्लाह के सामने सज्दे में गिर जाते और ख़ौफ़ की वजह से रोते थे।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' कहते हैं उ़लमा की सहमति है कि उन अम्बिया-ए-किराम की बात मानने में इस आयत की तिलावत के बाद सज्दः करना मुस्तह़ब है।

59 فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾

यहाँ तक अम्बिया-ए-किराम के फ़ायदों का ज़िक्र हुआ ताकि लोग उन की पैरवी करें और उन की राह को अपनाएँ। अब उन लोगों का ज़िक्र हो रहा है जो अम्बिया के बाद आए और उन के नक़्शे क़दम पर नहीं चले, उन की दअ़वत को पीठ पीछे डाल दिया और नमाज़ को ज़ाया कर दिया यानी वक़्त गुज़र जाने के बाद पढ़ी या उस का कोई ज़रूरी ह़िस्सा या कोई शर्त छोड़ दी और जिस शख़्स ने नमाज़ पढ़नी बिल्कुल छोड़ दी या उस का इन्कार कर दिया वह तो सबसे ज़्यादा इस आयत के ह़ुक्म में दाख़िल है।

मुफ़स्सिरीन के दर्मियान इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि इस आयते करीमा में नमाज़ ज़ाया करने वालों से कौन लोग मुराद हैं? किसी ने कहा, यहूद मुराद हैं और किसी ने कहा नसारा मुराद हैं और मुजाहिद ने कहा, इन से मुराद उम्मते मुह़म्मदिया के वह लोग हैं जो आख़िरी ज़माने में आएँगे, जानवरों की तरह सड़कों पर सम्भोग करेंगे, न इन्सानों से शरमाएँगे और न ही अल्लाह से डरेंगे। अपने नफ़्स की पैरवी करेंगे, गुनाहों में डूब जाएँगे, शराब पिएँगे, झूठी गवाही देंगे, ह़राम खाएँगे, ग़ैर ज़रूरी बातों में मश्गूल होंगे और गुनाह करेंगे। यही लोग बद्तरीन जानशीन होंगे उन का अन्जाम बहुत ही बुरा होगा।

एक राय यह है कि **'ग़य्या'** जहन्नम में एक कुआँ या एक वादी है यानी क़ियामत के दिन ऐसे लोग जहन्नम के उसी कुआँ या वादी में डाल दिये जाएँगे।

60-62 إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ﴿٦٠﴾ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا ۖ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ﴿٦٢﴾

उन बुरे जानशीनों में से जो लोग तौबः कर लेंगे, नमाज़ की हिफ़ाज़त करेंगे, अपनी ग़ुलामी छोड़ देंगे और नेक आ़माल वाली ज़िन्दग़ी अख़्तियार करेंगे, अल्लाह तआ़ला उन्हें उन के नेक लोगों के साथ जन्नत में दाख़िल करेगा और उन के नेक आ़माल का मामूली सा हिस्सा भी ज़ाया नहीं करेगा, इसलिए कि तौबः तमाम पिछले गुनाहों को ख़त्म कर देती है और वह जन्नत, जिस में यह लोग दाख़िल होंगे उस का नाम 'जन्नते अ़द्न' है जिस का वादा अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों से कर रखा है, जो अपने पैदा करने वाले पर बिना देखे ईमान रखते हैं।

फिर ताकीद के तौर पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अल्लाह का यह वादा पूरा होकर रहेगा। इस में शक करने की कोई गुन्जाइश नहीं है और उस जन्नत में रहने वाले जन्नती कोई फ़ुज़ूल और बेकार बात नहीं सुनेंगे, बल्कि फ़रिश्ते उन्हें सलाम करेंगे या आपस में एक दूसरे को सलाम किया करेंगे। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः वाक़िआ़ आयत नं० (25/ 26) में ज़िक्र फ़रमाया है:-

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ﴿٢٥﴾ إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾

"न वहाँ बक्वास सुनेंगे और न गुनाह की बात, सिर्फ़ सलाम ही सलाम की आवाज़ होगी" और हर खाने के वक़्त उन का मनचाहा खाना उन्हें मिलता रहेगा।

63 تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यह वह जन्नत होगी जिसे हम अपने बन्दों को देंगे जो अल्लाह का ख़याल रखने वाले होंगे, ख़ुशी और ग़म हर हाल में हमारे फ़रमाँबरदार होंगे, ग़ुस्से को दबाएँगे और लोगों को माफ़ करेंगे।

जैसा कि अल्लाह ने सूरः मोमिनून के शुरु की आयतों में मोमिनों की सिफ़ात बयान फ़रमाते हुए कहा है قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ और आख़िर में फ़रमाया है:

أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١﴾ "जिन मोमिनों की इन आयतों में सिफ़ात बयान की गई हैं, वही लोग फ़िरदौस के वारिस बनेंगे जहाँ वह हमेशा रहेंगे।"

64 وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾

इस आयत के नाज़िल होने की वजह यह है कि कुछ दिनों के लिए वह्य का नुज़ूल बन्द हो गया तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) परेशान हुए। उस के बाद जब ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) आप के पास तश्रीफ़ लाए तो आप ने उन से कहा कि आप लगातार क्यों नहीं आते? तो यह आयत नाज़िल हुई।

'इमाम अह़मद' 'इमाम बुख़ारी' और दूसरे इमामों ने 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से यही रिवायत की है। आयत का मतलब ह़ज़रत जिब्रईल की ज़बानी यह है कि ऐ मुह़म्मद (सल्ल०)! हम (फ़रिश्ते) ज़मीन पर या एक आसमान से दूसरे आसमान पर आप के रब के हुक्म के बिना नहीं उतारते। उस का इ़ल्म हर चीज़ को घेरे हुए है, कोई चीज़ उस से छुपी हुई नहीं है, एक ज़र्रह भी उस की नज़र से ओझल नहीं है, हम कोई काम उस की इजाज़त के बाद ही करते हैं। इसलिए मेरा आप के पास न आना उस का हुक्म न होने की वजह से था। इस का कारण यह नहीं है कि अल्लाह आप को भूल गया था या आप को छोड़ दिया था। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः ज़ुहा (**आयत नं० 3**) में फ़रमाया है مَاوَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَاقَلَىٰ "न तो आप के रब ने आप को छोड़ा है और न वह आप से बेज़ार हुआ है।"

ह़ज़रत अबूदर्दा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो चीज़ अल्लाह ने अपनी किताब में ह़लाल कर दी है वह ह़लाल है और जो ह़राम की वह ह़राम है। जिस से ख़ामोशी अख़्तियार फ़रमाया वह माफ़ है, लिहाज़ा तुम अल्लाह की दी हुई माफ़ी क़ुबूल करो क्योंकि अल्लाह भूलने वाला नहीं। फिर आप ने यह आयत पढ़ी।" وَمَاكَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا (**मुस्तदरक ह़ाकिम**)

65-68 رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿۶۵﴾ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَامِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿۶۶﴾ اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿۶۷﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿۶۸﴾

आप का रब आसमानों ज़मीन का रब है और उन के दर्मियान जितनी मख़्लूक़ात हैं उन सब का रब है। उस ज़ाते बारी तआ़ला के बारे में यह कैसे तसव्वुर किया जा सकता है कि गफ़्लत और भूल-चूक उस पर तारी हो, इसलिए ऐ मेरे नबी! आप उसी की अ़िबादत कीजिए और जीवन भर उस पर जमे रहिए।

क्या आप के इ़ल्म में आप के रब के समान कोई और है जिस की तरफ़ आप ध्यान करें ताकि वह आप की ज़रूरियात पूरी कर दे? जब ऐसी बात नहीं है तो इस के सिवा कोई रास्ता नहीं कि उसी के सामने सर झुकाया जाए उसी की अ़िबादत की जाए और इस राह में पेश आने वाली हर तक्लीफ़ पर सब्र किया जाए।

इन आयात में मरने के बाद उठाए जाने के अ़क़ीदे को साबित किया गया है। दोबारा ज़िन्दा किये जाने और क़ियामत के बारे में काफ़िर कहता है कि क्या मर जाने के बाद मैं दोबारा ज़िन्दा किया जाऊँगा? तो अल्लाह ने उस के इस काफ़िराना अ़क़ीदे को रद्द करते हुए फ़रमाया, क्या वह भूल गया है कि उसे जब पहली बार पैदा किया था तो इस से पहले वह मौजूद नहीं था तो क्या मैं उसे दोबारा पैदा करने पर क़ादिर नहीं हूँ? इस के बाद अल्लाह ने अपनी ज़ात की क़सम खाकर कहा, ऐ मेरे नबी! हम उन तमाम क़ियामत का इन्कार करने वालों और शैतानों को क़ियामत के मैदान में जहन्नम के गिर्द जमा करेंगे, वह मारे दहशत के ज़िल्लत में घिरे हुए घुटनों के बल बैठे जहन्नम को देख रहे होंगे, खड़े होने की उन के अन्दर ताक़त ही न होगी। जैसा कि अल्लाह ने सूरः जासिया आयत नं० (28) में फ़रमाया है:-

وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً "और आप देखेंगे कि हर उम्मत घुटनों के बल गिरी होगी"। मुफ़स्सिरीन (व्याख्याकारों) ने लिखा है कि अल्लाह तआ़ला अपनी ज़लील तरीन मख़्लूक़ को शैतानों के साथ उन का हश्र, उन की हिक़ारत ज़ाहिर करने के लिए करेगा। जिस से इस तरफ़ भी इशारा होगा कि उन का शिर्क व कुफ़्र शयातीन की पैरवी का नतीजा था, इसलिए अ़िबादत करने वाले और जिन लोगों की अ़िबादत की गई दोनों को जहन्नम में इकट्ठा कर दिया जाएगा।

69-70 ثُمَّ لَنَنزِعَنَّ مِن كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَٰنِ عِتِيًّا ۝ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ۝

फिर उन तमाम जमाअ़तों में से अल्लाह तआ़ला उन लोगों को अलग करेगा जो दुनिया में ज़्यादा फ़सादी और घमण्डी थे, अपने मन की पैरवी करते और अल्लाह के हुक्म को तोड़ देते थे।

अल्लाह तआ़ला कहते हैं, हम जानते हैं कि वह जहन्नम में जलाए जाने के ज़्यादा ह़क़्दार हैं, चुनाँचे पहले उन्हें जहन्नम में डाला जाएगा, फिर दूसरे जहन्नमी डाले जाएँगे।

आयत नं० 71 से 98 तक

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ
قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿٧٤﴾ قُلْ
مَنْ كَانَ فِى الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ۭ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا
وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾ وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ۭ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ
كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا ۭ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ
مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ۭ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ
عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى
الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ
وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ
لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾ اِنْ كُلُّ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِى الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾ لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ
اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ۭ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

अनुवाद-

(71) और तुम में से कोई भी ऐसा नहीं जिसको वहाँ तक न पहुँचना हो, यह आप के रब पर ज़रूरी है जो पूरा होकर रहेगा। (72) फिर उन्हें 'हम' बचा लेंगे, जो परहेज़गार थे, और ज़ालिमों को उसमें पड़ा रहने देंगे, घुटनों के बल झुके हुए। (73) और जब उन्हें 'हमारी' खुली हुई निशानियाँ बताई जाती हैं, तो जो लोग काफ़िर हैं; वह ईमान वालों से कहते हैं, "दोनों फ़रीक़ों में से किसका स्थान (मकान) सबसे बेहतर है और मजलिस किसकी बेहतर है"? (74) और 'हम' उनसे पहले कितने ही गिरोहों को हलाक कर चुके हैं, वे इनसे भी बढ़-चढ़ कर थे, सामान और दिखावे में। (75) कह दीजिए, "जो (व्यक्ति) गुमराही में पड़ा हुआ था, रहमान उसको धीरे-धीरे ढ़ील दिये जाता है, यहाँ तक कि जिस चीज़ का उनसे वादा किया गया है, जब वह उसको देख लेंगे- चाहे वह अ़ज़ाब हो, या क़ियामत उस समय उन्हें पता चल जाएगा कि किस की जगह बुरी और किसका जत्था बिल्कुल कमज़ोर है"। (76) और जो लोग हिदायत की राह अपनाते हैं, अल्लाह उनकी हिदायत को बढ़ाता रहता है, और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ आप के रब के नज़दीक बदले के एतिबार से भी बेहतर और अंजाम के एतिबार से भी बेहतर हैं। (77) क्या आपने उस व्यक्ति को देखा! जो 'हमारी' निशानियों से कुफ़्र करता है? और कहता है, "मुझे तो ज़रूर माल और औलाद मिल कर रहेंगे"? (78) तो क्या इसने ग़ैब (परोक्ष) की ख़बर पा ली? या रहमान से कोई वादा ले रखा है? (79) हरगिज़ नहीं, यह जो कुछ कहता है 'हम' उसको लिखते जाते हैं, और उसके अ़ज़ाब को बढ़ाते चले जाते हैं। (80) और जो कुछ वह बताता है उसके हम वारिस होंगे, और वह अकेला ही हमारे पास आएगा। (81) और इन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे मअ़बूद बना रखे हैं ताकि वे इनके मददगार हों; (82) हरगिज़ नहीं, वे (क़ियामत

के दिन) उनकी इबादत का इन्कार कर बैठेंगे, और उनके विरोधी बन जाएँगे। (83) क्या आपने देखा नहीं! कि हमने काफ़िरों पर शैतानों को छोड़ रखा है, जो इन्हें खूब उभारते रहते हैं? (84) तो आप इनके लिए जल्दी न कीजिए, हम इनके (दिन) गिन रहे हैं। (85) जिस दिन 'हम' पहरहेज़गारों को रह़मान की ओर मेहमान बना कर इकट्ठा करेंगे; (86) और मुजरिमों को जहन्नम की ओर प्यासे (जानवरों की तरह) हाँक ले जाएँगे। (87) (उस दिन) किसी को सिफ़ारिश का अधिकार न होगा, मगर वही सिफ़ारिश कर सकेगा जिसने रह़मान से वादा (इजाज़त) लिया हो। (88) और कहते हैं, "रह़मान ने किसी को अपना बेटा बना रखा है"। (89) बड़ी भारी बात है जो तुम (ज़बान पर) लाते हो। (90) क़रीब है कि इस (झूठ) से आसमान टूट पड़े और ज़मीन फट जाए और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर पड़ें, (91) (इस बात पर) कि इन्होंने रह़मान के लिए बेटा होने का दावा किया। (92) और रह़मान की यह शान नहीं कि किसी को बेटा बनाए। (93) आसमानों और ज़मीन में जो भी है, एक बन्दे के रूप में रह़मान के पास हाज़िर होंगे। (94) सब को 'उसने' घेर रखा है और (एक-एक को) गिन रखा है। (95) और सभी क़ियामत के दिन उस (रह़मान) के सामने अकेले-अकेले हाज़िर होंगे। (96) जो लोग ईमान लाए, और अच्छे काम किये, रह़मान उनकी मुह़ब्बत पैदा कर देगा। (97) 'हमने' इस (क़ुर्आन) को आप की ज़बान में आसान किया है, ताकि आप इससे परहेज़गारों को खुशख़बरी पहुँचा दें और झगड़ालू लोगों को इसके ज़रिये डरा दें। (98) और 'हमने' इससे पहले बहुत से गिरोहों को हलाक कर दिया है, क्या तुम उनमें से किसी की आहट पाते हो या तुम्हें उनकी भनक भी सुनाई देती है।

आयत नं० 71 से 98 तक की व्याख्या

71-72 وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने अपना एक फ़ैसला सुनाया है कि मोमिन हो या काफ़िर, हर एक को जहन्नम से वास्ता पड़ेगा। फिर अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से अपने से डरने वालों को इस से निजात देगा और जिन लोगों ने दुनिया में कुफ़्र व घमण्ड की ज़िन्दगी गुज़ारी होगी और बड़े-बड़े गुनाहों को किया होगा, जहन्नम में सख़्त अ़ज़ाब झेलने के लिए छोड़ दिये जाएँगे।

उ़लम-ए-तफ़्सीर का इस बारे में मतभेद है कि आयत **'वदूद'** से क्या मुराद है? एक राय यह है कि सभी जहन्नम में दाख़िल होंगे, लेकिन नेक लोगों के लिए आग ठंडी बना दी जाएगी और फिर उस से निकाल दिये जाएँगे और जो लोग जहन्नम के अ़ज़ाब के ह़क़्दार होंगे उसी में छोड़ दिये जाएँगे और आग न पहले उन के लिए ठंडी होगी और न अहले तक़्वा के, इस में से निकल जाने के बाद। इस राय के मानने वालों ने **'वदूद'** का मअ़ना दाख़िल होना किया है।

'ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह' की इस ह़दीस से साबित किया है जिस में नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया है कि हर नेक व बुरा जहन्नम में दाख़िल होगा, लेकिन मोमिन के लिए आग ठंडी हो जाएगी और सलामती बन जाएगी।

दूसरी राय यह है कि **'वदूद'** से मुराद 'मुरूर' गुज़रना है। यानी मोमिन व काफ़िर, नेक व बुरे सभी उस पुल पर से गुज़रेंगे जो जहन्नम पर बनाया जाएगा, नेक लोग अपने-अपने आ़माल के मुताबिक़ तेज़ या आहिस्ता गुज़रेंगे और जो जहन्नम के अ़ज़ाब के ह़क़्दार होंगे, वह भी अल्लाह के हुक्म से गुज़र जाएँगे।

कुर्आनी आयात और सह़ी अह़ादीस की रौशनी में यही राय ज़्यादा सह़ी मालूम होती है, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः अम्बिया आयत नं० (101) में फ़रमाया है:-

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ۝

"बेशक जिन के लिए हमारी तरफ़ से पहले भी भलाई ठहर चुकी है वह सब जहन्नम से दूर रखे जाएँगे"। और इमाम अह़मद, तिर्मिज़ी, ह़ाकिम और बैहक़ी आदि ने इस आयत की तफ़्सीर में इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "सभी लोग जहन्नम पर इकट्ठे होंगे, फिर अपने-अपने आ़माल के मुताबिक़ उस के ऊपर से गुज़र जाएँगे"।

इमाम अह़मद, तिर्मिज़ी, ह़ाकिम और बैहक़ी आदि ने इस आयत की तफ़्सीर में इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "सभी लोग जहन्नम पर इकट्ठे होंगे, फिर अपने-अपने आ़माल के मुताबिक़ उस के ऊपर से गुज़र जाएँगे"।

और 'मुस्लिम' ने 'उम्मे बिश्र' से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो बद्र और हुदैबिया में शरीक हुए उन में से कोई जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा तो ह़फ़्सा ने कहा, क्या अल्लाह ने नहीं कहा है وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا "तुम में से हर एक इस पर से गुज़रेगा"? तो आप ने फ़रमाया, क्या उस का यह क़ौल नहीं सुना ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا "फिर हम परहेज़गारों को निजात दे देंगे"?

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "सब लोग जहन्नम पर पहुँचेंगे, फिर अपने-अपने आ़माल के लिह़ाज़ से वापस होंगे। पहला गिरोह तो बिजली के चमक की तरह़ निकल जाएगा, दूसरा हवा की तरह़, तीसरा घुड़सवार की तरह़, चौथा ऊँट सवार की तरह़, पाँचवां दौड़ने वाले की तरह़ और छठा जैसे आदमी पैदल चलता है"। **(तिर्मिज़ी)**

73-74

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئْيًا ۝

यहाँ कुफ़्फ़ारे कुरैश का ह़ाल बयान किया जा रहा है कि जब उन के सामने कुर्आन करीम की उन आयात की तिलावत की जाती है जो तौह़ीद व रिसालत, मौत के बाद दोबारा उठाया जाना और ह़िसाब व किताब को खोल कर बयान करती हैं और मोमिनों के लिए जन्नत के वादे और काफ़िरों के लिए जहन्नम की धमकी का ज़िक्र करती है तो वह लोग अपना अन्दुरुनी दर्द व दुःख छिपाने के लिए कहते हैं कि हम दुनियावी एतिबार से मुह़म्मद के मानने वालों से अच्छी ह़ालत में हैं।

हमारे मकानात अच्छे हैं, हमारी मजलिसें आबाद हैं, लोगों की भीड़ लगी है, कोई आ रहा है, कोई

जा रहा है तो यह कैसे मुम्किन है कि हम गुमराह हों और जो लोग 'दारे अरक़म' में छुपे हुए हैं वह सही रास्ते पर हों? तो अल्लाह तआ़ला ने उन का जवाब दिया कि जिस दुनियावी माल की वजह से वह लोग ग़ुरूर में फँसे हैं वह बाक़ी नहीं रहेगा, उन से पहले भी बहुत सी क़ौमें गुज़री हैं जो माल व मताअ़ और ज़ाहिरी हुस्न व जमाल में उन से बढ़ कर थीं, लेकिन उन के कुफ़्र की वजह से हम ने उन्हें हलाक कर दिया।

75 قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ۝

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि वह दुनियावी माल और सत्ता पर फ़ख़्र करने वाले काफ़िरों को यह जवाब दें कि जो लोग कुफ़्र व शिर्क और घमण्ड को अपना मक़्सद बना लेते हैं, अल्लाह का ऐसे लोगों के बारे में यह तरीक़ा रहा है कि वह उन की रस्सी ढ़ीली कर देता है और उन्हें उन के ह़ाल पर छोड़ देता है, यहाँ तक कि मोहलत ख़त्म हो जाती है और उन के लिए कोई बहाना बाक़ी नहीं रहता तो अल्लाह उन्हें पकड़ लेता है या तो मोमिनों के हाथों क़ैद व बन्द से गुज़रते हैं और क़त्ल किये जाते हैं या उसी ह़ाल में उन्हें मौत आ जाती है तो क़ियामत के दिन उन का ठिकाना जहन्नम होगा। तब दोनों ही ह़ालतों में उन्हें मालूम हो जाएगा कि वही लोग बद्तरीन ठिकाना वाले और निहायत ज़लील होने वाले लोग थे।

76 وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ۝

जो लोग हिदायत की राह पर चलते रहते हैं, जब उन के सामने क़ुर्आन करीम की आयात की तिलावत की जाती है तो उन का ईमान बढ़ जाता है और हिदायत की राह पर ज़्यादा तेज़ बढ़ जाते हैं।

इस के बाद नबी करीम (सल्ल०) और मुसलमानों को तसल्ली दी गई है कि काफ़िरों का दुनियावी सामान तो बिल्कुल वक़्ती चीज़ है, ह़क़ीक़ी चीज़ तो नेक आ़माल हैं जिन के बदले में अल्लाह तआ़ला जन्नत देगा।

77-80 اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ۝ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۝ كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۝ وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ۝

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' ने इन आयात के शाने नुज़ूल में 'ह़ज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अ़न्हु' से रिवायत की है कि मैं लोहे का काम करता था और 'आ़स बिन वायल' के ज़िम्मे मेरा क़र्ज़ था। मैंने माँगा तो उस ने कहा, अल्लाह की क़सम! जब तक तुम मुह़म्मद की नुबूव्वत का इन्कार नहीं करोगे तुम्हारे पैसे नहीं दूँगा। तो मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं उस दिन तक ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की नुबूव्वत का इन्कार नहीं करुँगा यहाँ तक कि दोबारा उठाए जाऊँ। तो उस ने कहा, मैं जब मरकर दोबारा उठाया जाऊँगा और मेरे पास माल और औलाद होंगे तब आना, तुम्हारे पैसे अदा कर दूँगा।

उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई कि क्या उसे ग़ैब (Future) की ख़बर है कि क़ियामत के दिन उस

के पास माल और औलाद होगी या उस ने अल्लाह से कोई वादा ले रखा है? हरगिज़ नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है हम उस की ज़बान दराज़ी और झूठ बयानी को लिख रहे हैं और क़ियामत के दिन उस की वजह से उस के अ़ज़ाब को बढ़ा देंगे और मौत के ज़रिये उस से तमाम दुनियावी माल व मताअ़ और औलाद छीन लेंगे और वह मैदाने ह़श्र में तन्हा खाली हाथ आएगा, कुछ भी उस के पास नहीं होगा।

'ह़ज़रत ख़ब्बाब इब्ने अरत रज़ियल्लाहु अ़न्हु' कहते हैं किः-

"मैं मक्का में लोहारी का पेशा करता था। मैंने 'आ़स बिन वायल' के कहने पर उस के लिए एक तल्वार बनाई। मैं उसकी मज़दूरी माँगने के लिए 'आ़स' के पास गया तो वह कहने लगा कि मैं उस वक़्त तक तुम्हें मज़दूरी नहीं दूँगा जब तक तू मुह़म्मद (सल्ल०) का साथ न छोड़ दे। मैंने कहा जब अल्लाह तुझे मौत देगा, तो वह फिर तुझे ज़िन्दा करेगा, मैं तो उस वक़्त तक भी मुह़म्मद (सल्ल०) का इन्कार न करुँगा। वह कहने लगा अच्छा अगर अल्लाह मुझे मरने के बाद ज़िन्दा करेगा तो फिर मुझे माल और औलाद भी देगा। (उस वक़्त मैं तुम्हारा ह़िसाब चुका दूँगा) उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।" (बुख़ारी)

81-82 وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾

मुश्रिकीन ने अल्लाह के सिवा अपने लिए दूसरे मअ़बूद (उपास्य) बना लिए ताकि वह अल्लाह के नज़्दीक सिफ़ारिशी बन कर उन की इ़ज़्ज़त का ज़रिया बनें, लेकिन क़ियामत के दिन मामला उन के ख़याल के उल्टा होगा, वह छोटे मअ़बूद (उपास्य) उन की अ़िबादत का इन्कार कर के दुश्मन बन जाएँगे। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः अह़क़ाफ़ आयत नं० (6) में फ़रमाया हैः-

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ أَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿٦﴾ "जब लोग मैदाने मह़शर में जमा होंगे तो उन के शुरका (जिन को साझीदार बनाते थे वह) उन के दुश्मन बन जाएँगे और उन की अ़िबादत का इन्कार कर देंगे।"

83-84 اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾

नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब कर के कहा जा रहा है, क्या आप देख नहीं रहे हैं? यह बात तो बहुत ही खुली है कि हम ने जिन्नों और इन्सानों के शयातीन को काफ़िरों पर मुसल्लत कर दिया है जो उन्हें शहवतों की ग़ुलामी और जरायम व गुनाह के करने पर उभारते हैं, इसीलिए तो वह लोग शर व फ़साद की तरफ़ बहुत तेज़ी से बढ़ते हैं, लेकिन आप इस बात की जल्दी न करें कि उन्हें जल्द हलाक कर दिया जाए ताकि ज़मीन उन से पाक हो जाए। हम उन के आ़माल क्या, उन के साँसों तक की गिनती कर रहे हैं और जब उन का मुक़र्रर वक़्त आ जाएगा तो उन के आ़माल का बदला उन्हें चुका दिया जाएगा।

85 يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾

क़ियामत के दिन अहले तक़्वा अल्लाह तआ़ला के सामने जमाअ़त की शक्ल में पहुँचेंगे।

अ़रबी ज़बान में **'वफ़्द'** का माना बादशाहों के सामने इन्आ़मात ह़ासिल करने के लिए आना होता है। आयते करीमा में इस बात की तरफ़ इशारा है कि अल्लाह तआ़ला के दरबार में उस के परहेज़गार बन्दे पहुँचेंगे, उस की तरफ़ से इन्आ़मात पाएँगे और ह़सीन व जमील ऊँटों पर सवार होकर जन्नत के दरवाज़े पर पहुँच जाएँगे और जो मुजरिम होंगे वह ज़िल्लत से प्यासे जानवरों की तरह़ जहन्नम की तरफ़ हांक दिये जाएँगे।

86-87 وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَّا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِندَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने इस आयत का सम्बन्ध पिछली आयत से बताया है और माना यह बयान किया है कि मोमिनीन एक दूसरे की शफ़ाअ़त करेंगे, लेकिन जिन मुजरिमों को जहन्नम की तरफ़ हांक कर ले जाया जाएगा उन का कोई सिफ़ारशी नहीं होगा। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः शुअ़रा आयात नं० (100/ 101) में फ़रमायाः-

فَمَا لَنَا مِن شَافِعِينَ وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ "अब तो हमारा कोई सिफ़ारशी भी नहीं और न कोई सच्चा ग़मख़्वार दोस्त" और आयत के दूसरे ह़िस्से إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِندَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا के बारे में लिखा है कि इस से मुराद वह मोमिनीन हैं जो **'लाइलाहा इल्लल्लाह'** की गवाही देते हैं और उस के मुताबिक़ दुनियावी ज़िन्दगी में अ़मल करते हैं। यही लोग दूसरे मोमिनों की शफ़ाअ़त करेंगे और उन के लिए दूसरे मोमिनीन की शफ़ाअ़त क़ुबूल की जाएगी।

88-93 وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَّقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ أَن دَعَوْا لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنبَغِي لِلرَّحْمَٰنِ أَن يَتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾ إِن كُلُّ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمَٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾

इस आयते करीमा में 'यहूद व नसारा' और बाज़ अ़रब के क़बीलों की तर्दीद की गई है, जो अल्लाह तआ़ला के लिए औलाद साबित करते थे। यहूद ह़ज़रत उ़ज़ैर (अ़लै०) को और नसारा ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को अल्लाह का बेटा और अ़रब फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ बताते थे। अल्लाह तआ़ला ने उन से फ़रमाया कि तुम लोगों ने एक बद्तरीन गुनाह, अल्लाह के लिए औलाद साबित किया है।

ह़क़ीक़त यह है कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ औलाद की निस्बत करना ऐसी बुरी बात है कि मक़ामे रब्बानी के लिए ग़ैरत की वजह से क़रीब है कि आसमान फट जाए ज़मीन में दरार पड़ जाए और पहाड़ रेज़ा-रेज़ा हो जाए इसलिए कि यह बात किसी तरह़ मुनासिब ही नहीं कि अल्लाह की कोई औलाद हो, वह तो तमाम मख़्लूक़ात का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) है, औलाद तो मख़्लूक़ के होती है और जब क़ियामत होगी तो आसमान व ज़मीन में पाये जाने वाले तमाम इन्सान व जिन्न और फ़रिश्ते अपनी बन्दगी का इज़्हार करते हुए निहायत ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ उस के हुज़ूर खड़े होंगे। उस के लिए औलाद का होना ख़िलाफ़े अ़क़्ल है, वह तो अपनी तमाम मख़्लूक़ात से बेनियाज़ है, औलाद तो मख़्लूक़ के होती है जो अपने लिए दुनियावी ज़िन्दगी में यार व मददगार का मोह़ताज होता है।

94-95 لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿۹۴﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿۹۵﴾

अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन में पाई जाने वाली तमाम मख़्लूक़ात का पूरी तरह़ अह़ाता कर रखा है और एक-एक को गिन रखा है। अगर उन में कोई मअ़बूद (उपास्य) होता या अल्लाह का बेटा होता तो उसे ज़रूर इस की ख़बर होती और क़ियामत के दिन हर मख़्लूक़ात का एक-एक शख़्स अल्लाह के हुज़ूर तन्हा आएगा, उन का न कोई यार व मददगार होगा और न ही कोई सिफ़ारशी।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयत नं० (95) में उन कुफ़्फ़ार की बात रद्द की गई है जो अपने घमण्ड की वजह से कहते थे कि अगर क़ियामत आएगी तो उस दिन भी हमारे पास ग़रीब व बद्ह़ाल मुसलमानों से ज़्यादा माल व औलाद होगी।

96 اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿۹۶﴾

कुर्आन करीम के तरीक़े के मुताबिक़ कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन के बाद अब अल्लाह के नेक बन्दों का ज़िक्र हो रहा है कि जो लोग अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाते और नेक अ़मल करते हैं, अल्लाह तआ़ला उन की मुह़ब्बत अपने नेक बन्दों के दिलों में दाख़िल कर देता है।

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' और दूसरे मुह़द्दिसीन ने ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे से मुह़ब्बत करता है तो ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से कहता है कि मैं फ़लाँ से मुह़ब्बत करता हूँ तुम भी उस से मुह़ब्बत करो, तो ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) उस से मुह़ब्बत करते हैं। फिर आसमान में ए़लान कर देते हैं कि अल्लाह फ़लाँ से मुह़ब्बत करता है, तुम सब भी उस से मुह़ब्बत करो, तो अहले आसमान उस से मुह़ब्बत करने लगते हैं। फिर अहले ज़मीन के दिलों में उस की मुह़ब्बत डाल दी जाती है"। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

'साह़िबे मुह़ासिनुल् तन्ज़ील' ने मुफ़स्सिर 'अबू मुस्लिम' के ह़वाले से आयत नं० (96) का मतलब यह बयान किया है कि नेक बन्दों से अल्लाह तआ़ला के उस वादे का तअ़ल्लुक़ क़ियामत के दिन से है यानी जन्नत में अल्लाह तआ़ला अपने नेक बन्दों को उन की मह़बूब चीज़ें देगा और उस की वजह यह बयान की है कि दुनिया में तो नेक आदमी कुफ़्फ़ार और बहुत से मुसलमानों की निगाह में अच्छा नहीं होता है, दुनियावी मुह़ब्बत तो कभी-कभी काफ़िर व फ़ासिक़ को ज़्यादा ह़ासिल होती है और तीसरी वजह यह बयान की है कि दुनिया वाले अगर नेकियों से मुह़ब्बत करते हैं तो यह उन के नेक आ़माल का नतीजा होता है और इस आयते करीमा में तो अल्लाह की देन का वादा है जो आख़िरत के फ़ायदे के ज़रिये पूरा होगा।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे से मुह़ब्बत करते हैं तो ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) को पुकार कर कहते हैं कि मैं फ़लाँ बन्दे से मुह़ब्बत करता हूँ तुम भी उस से मुह़ब्बत करो। फिर ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) आसमान से पुकारते हैं और अहले ज़मीन में उसकी मुह़ब्बत नाज़िल कर दी जाती है। अल्लाह तआ़ला के इस क़ौल का यही मतलब है। जब

अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से नाराज़ हो जाता है तो ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) से कहता है कि मैं फ़लाँ बन्दे से नाराज़ हूँ तुम भी उस से नाराज़ हो जाओ फिर यही बात उस के लिए अहले ज़मीन पर नाज़िल की जाती है।" (तिर्मिज़ी)

97 فَإِنَّمَا يَسَّرْنَٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ ٱلْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِۦ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾

'साह़िबे कश्शाफ़' ने लिखा है कि सूरः के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने यूँ कहा है कि ऐ मेरे नबी! आप इस कुर्आन को लोगों तक पहुँचा दीजिए या उन्हें कुर्आन की आयतें सुना कर जन्नत की ख़ुशख़बरी और जहन्नम से डरा दीजिए। इसलिए कि हम ने उसे आप की ज़बान में उतार कर उस की क़िरात और उस को समझना आसान बना दिया है, ताकि अल्लाह के अ़ज़ाब से डरने वालों को आप जन्नत की ख़ुशख़बरी दें और कुफ़्फ़ारे कुरैश को जो बद्तरीन झगड़ालू हैं आग के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाएँ।

98 وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ ۖ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُم مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

इस आख़िरी आयत में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) के ज़रिये कुफ़्फ़ारे कुरैश को नसीह़त की है कि हम ने उन से पहले बहुत सी क़ौमों को हलाक कर दिया, जिन्होंने हमारे रसूलों को झुठलाया और हमारी दअ़वत के ख़िलाफ़ साज़िशें कीं। अब उन का वजूद बाक़ी नहीं है, उन के नाम व निशान ऐसे मिट गये कि वह भूली बिसरी याद बन गए हैं, तो आप की क़ौम उन लोगों के अन्जाम से इ़बरत क्यों नहीं ह़ासिल करती और अल्लाह के साथ शिर्क व गुनाह से तौबः करके मुसलमान क्यों नहीं हो जाती?

(भाग-20)

सूर-ए-त़ाहा

(सूरः नं.20)

तफ़्सीर सूरः ताहा

नाम- इस सूरः की शुरुआ़त शब्द 'ताहा' से हुई है, यही इस का नाम है।

सूरः के नाज़िल होने का ज़माना-

'क़ुर्तुबी' कहते हैं कि तमाम मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस के नाज़िल होने का ज़माना मक्की दौर है। 'सियोती' ने 'अल्इत्क़ान' में सिर्फ़ एक आयत ﴿فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ﴾ को अलग क़रार दिया है। सुनन दार क़ुत्नी में ह़ज़रत अनस बिन मालिक से ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) के इस्लाम लाने का वाक़िआ़ मरवी है। इस में है कि जब वह अपनी बहन और बहनोई के इस्लाम लाने की ख़बर सुन कर उन के घर पहुँचे तो उन को ख़ूब डाँटा और अपनी बहन के सर से ख़ून को निकलता देख कर और उन की ईमानी ताक़त से मुतास्सिर होकर (कि तुम्हें जो करना हो कर लो हम इस्लाम को अब नहीं छोड़ेंगे) कहा कि ज़रा मुझे भी वह कलाम दिखाओ जो तुम लोग पढ़ रहे थे।

इस रिवायत में आता है कि वह लोग सूरः ताहा की तिलावत कर रहे थे और उसे ही सुनकर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) इस्लाम लाने के लिए तैयार हो गये थे और ह़ज़रत ख़ब्बाब बिन उरैक़ित (जो उन की बहन और बहनोई को क़ुर्आन पढ़ा रहे थे) के साथ रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास जाकर अपने इस्लाम का ए़लान कर दिया था।

इस वाक़िये से यह बात साबित होती है कि यह सूरः ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) के मुसलमान होने से पहले नाज़िल हो चुकी थी। उस ज़माने में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुसलमानों पर मुसीबतों के पहाड़ तोड़ रहे थे। कुछ मुसलमान उन के ज़ुल्म व सितम से तंग आकर ह़ब्शा की तरफ़ हिजरत कर गये थे और जो लोग मक्का में नबी करीम (सल्ल०) के साथ रह गये थे उन को जीना मुश्किल हो गया था, इन्हीं ह़ालात के पेशेनज़र सूरः के शुरु में नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि यह क़ुर्आन आप पर इसलिए नाज़िल नहीं हुआ कि आप और आप के साथी ग़लत बातों में मुब्तिला हों, आप सब्र से काम लीजिए। आख़िर में जीत और इ़ज़्ज़त आप ही लोगों को ह़ासिल होगी।

इस के बाद ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का वाक़िआ़ बयान कर के आप (सल्ल०) की हिम्मत बढ़ाई गई है कि वह भी आप ही की तरह़ अकेले तौह़ीद की दअ़वत को लेकर फ़िरऔ़न और उस के पैरोकारों के सामने गये थे, उन के पास कोई ताक़त नहीं थी, उन के भाई के सिवा कोई नहीं था जो उन की मदद करता, लेकिन आख़िर में जीत उन्हीं को नसीब हुई और अल्लाह ने फ़िरऔ़न को उस की फ़ौज के साथ बह़रे क़ुल्ज़ुम (बह़ेर अह़मर) की मौजों के ह़वाले कर दिया।

इस के अ़लावा इस सूरः में दूसरे विषय भी क़ुर्आन के मशहूर दअ़वती तरीक़े बयान किये गये हैं।

❐❐❐

आयत नं० 1 से 24 तक

طٰهٰ ۝ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ۝ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ۝ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ۝
لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ۝ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفَى ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۝
وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝ فَلَمَّآ اَتٰىهَا
نُوْدِيَ يٰمُوْسٰٓى ۝ اِنِّيْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝ وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ۝ اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ
اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ۝ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعٰى ۝ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا
وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ۝ وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ۝ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ۝ قَالَ
اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ۝ فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ۝ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۖ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ۝ وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ
مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى ۝ لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرَى ۝ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝

अनुवाद-

(1) ता-हा (2) (ऐ मुह़म्मद) 'हमने' आप पर यह क़ुर्आन इसलिए नहीं उतारा, कि आप मुसीबत में पड़ जाएँ; (3) यह तो एक नसीह़त है, उसके लिए जो डर रखें; (4) यह उसका उतारा हुआ है 'जिसने' पैदा किया, ज़मीन को और ऊँचे-ऊँचे आसमानों को; (5) (वह) रह़मान, जो अ़र्श (राजसिंहासन) पर विराजमान हुआ। (6) 'उसी' का है जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और जो कुछ इन दोनों के बीच में है, और जो कुछ मिट्टी के नीचे है। (7) और अगर तुम बात पुकार कर कहो (या चुपके से) 'वह' तो चुपके से कही हुई बात, और छिपी हुई बात तक को जानता है। (8) (वह) अल्लाह, कि 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'उसके' (सब) नाम अच्छे हैं। (9) और क्या आप को मूसा की ख़बर मिली है? (10) जब उन्होंने आग देखी! तो अपने घर वालों से कहा, ''ठहरो! मुझे आग दिखाई दी है। शायद उसमें से मैं तुम्हारे लिए अंगारा ले आऊँ, या हो सकता है उस आग पर मैं रास्ते का पता पा लूँ।''(11) फिर जब वह वहाँ पहुँचे तो आवाज़ आई ''ऐ मूसा! (12) मैं ही तुम्हारा रब हूँ, तो अपने जूते उतार दो; तुम 'तुवा' की पाक घाटी (या मैदान) में हो; (13) और 'मैंने' तुम्हें चुन लिया है, तो जो वह़्य (हुक्म) की जा रही है उसे सुनो; (14) बेशक 'मैं ही' अल्लाह हूँ, 'मेरे' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, तो 'मेरी' ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो; (15) क़ियामत की घड़ी आने वाली है, मैं चाहता हूँ कि उसको छिपाए रखूँ, ताकि हर व्यक्ति अपनी कोशिश के अनुसार बदला पा सके; (16) तो जो व्यक्ति उस पर ईमान नहीं लाता, और अपनी इच्छाओं के पीछे चलता है, वह तुम्हें इस (नमाज़) से रोक न दे, कि फिर तुम हलाक हो जाओ; (17) और ऐ मूसा! यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है?'' (18) (मूसा ने) कहा, ''यह मेरी लाठी है, इस पर मैं टेक लगाता हूँ, और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ, और इसमें मेरे और भी कई फ़ायदे हैं।'' (19) फ़रमाया, ''डाल दो इसको ऐ मूसा।''(20) तो उन्होंने, उसको डाल दिया; अचानक वह एक साँप बन कर दौड़ने लगा; (21) (अल्लाह ने) फ़रमाया, ''उसे पकड़ लीजिए, और मत डरिए; 'हम' उसे फिर उसकी पहली ह़ालत पर लौटा देंगे, (22) और अपना हाथ अपने बाज़ू से लगा लीजिए, वह रौशन हो कर निकलेगा, बिना किसी ऐब के, (यह) दूसरी निशानी है। (23) ताकि 'हम' आप को अपनी बड़ी

निशानियाँ दिखाएँ। (24) आप फिरऔ़न के पास जाइए, (कि) वह सरकश (उद्दंड) हो रहा है''।

आयत नं० 1 से 24 तक की व्याख्या

1-3 طٰهٰ ۝ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ۝ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝

शब्द **'ताहा'** के बारे में एक क़ौल यह है कि यह अल्लाह के नामों में से एक नाम है। एक दूसरा क़ौल (कथन) यह है कि यह नबी करीम (सल्ल०) का एक नाम है।

अक्सर मुफ़स्सिरीन का यह क़ौल है कि यह **'यारजुल'** यानी **'ऐ शख़्स'** के माने में है और इस से मुराद नबी करीम (सल्ल०) की ज़ाते गिरामी है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा, ह़सन बसरी, इक्रिमा, सई़द बिन जुबैर, ज़ि़ह़ाक, क़तादा और मुजाहिद आदि का यही क़ौल है।

'इब्ने कसीर' ने 'ज़ि़ह़ाक' से और 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत नक़्ल की है कि जब कुर्आन नाज़िल हुआ तो आप (सल्ल०) और सह़ाबा-ए-किराम ने उस के हुक्मों और मना की गई बातों पर अ़मल करना शुरु कर दिया, यह देख कर नज़र बिन ह़ारिस और दूसरे कुफ़्फ़ारे मक्का कहने लगे कि यह कुर्आन तो इन मुसलमानों के लिए मुसीबत बन गया।

आयात नं० (2/3) में नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब कर के उन्हीं काफ़िरों की काट की गई है कि यह कुर्आन आप और आप के सह़ाबा के लिए बद्बख़्ती का ज़रिया नहीं है, बल्कि यह तो अल्लाह से डरने वालों के लिए अपनी आयतों में नसीह़त लिए हुए हैं ताकि वह इस से फ़ायदा ह़ासिल करते हुए अच्छी नियत के साथ अल्लाह की बन्दगी करें और इस राह में काफ़िरों व मुश्रिकों की ओर से जो भी तक्लीफ़ पहुँचे उसे ख़ुशी-ख़ुशी बर्दाशत करें।

4 تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ۝

आयत नं० (4) में कुर्आने करीम की अ़ज़्मते शान को बयान किया गया है कि ऐ मेरे नबी! यह कुर्आन आप पर आप के रब की ओर से नाज़िल हुआ है, जिस ने ज़मीन और ऊँचे आसमान पैदा किये हैं। मख़्लूक़ात में से ज़मीन व आसमान का बतौरे ख़ास इसलिए ज़िक्र आया है कि बन्दे अल्लाह की उन अ़ज़ीम मख़्लूक़ात का हर वक़्त मुशाहिदा करते रहते हैं।

5 اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ۝

ज़मीन व आसमान का मालिक, दुनिया व आख़िरत में रह़म करने वाला वह अल्लाह है जो अ़र्श पर मुस्तवा है। अल्लाह के गुण (इस्तवा) के बारे में सूरः अअ़राफ़ आयत नं० (54) और सूरः यूनुस आयत नं० (3) में लिखा जा चुका है।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि कुर्आन व सुन्नत में अल्लाह तआ़ला की जो सिफ़ात साबित हैं उन के सिलसिले में पिछलों की राय यही है कि उन्हें उसी तरह़ बिना किसी खींचतान और तब्दीली के मान लिया जाए। इसमें किसी चीज़ की मिसाल (संज्ञा) देकर समझाने से या उस की कोई कैफ़ियत बयान किये जाने से परहेज़ किया जाए।

6 لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ وَمَا بَیۡنَهُمَا وَمَا تَحۡتَ الثَّرٰی ۝

आसमान और ज़मीन में और उन के दर्मियान और सातों ज़मीन में जो कुछ भी है वह सब अल्लाह की मिल्कियत हैं, सब अल्लाह के अधीन हैं, उन में से कोई भी चीज़ अल्लाह की मर्ज़ी के बिना न ह़रकत करती है, न ठहरती है, न बदलती है और न सुकून पाती है।

7-8 وَاِنۡ تَجۡهَرۡ بِالۡقَوۡلِ فَاِنَّهٗ یَعۡلَمُ السِّرَّ وَاَخۡفَی ۝ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰی ۝

यानी अगर आप बाआवाज़ बुलन्द अल्लाह को याद करते हैं और दुआ़ करते हैं तो जान लीजिए कि अल्लाह उस से बेनियाज़ है क्योंकि वह तो छुपे हुए राज़ों को भी जानता है, जिन्हें इब्ने आदम नहीं जानता है, जिन का इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही को होता है।

इस तरह़ इस में ऊँची आवाज़ से ज़िक्रे इलाही की मुमानिअ़त मालूम होती है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः अअ़राफ़ आयत नं० (205) में फ़रमाया हैः-

وَاذۡكُرۡ رَّبَّكَ فِیۡ نَفۡسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِیۡفَةً

"आप अपने रब को दिल में गिड़गिड़ा कर और ख़ौफ़ के साथ याद कीजिए"।

'साह़िबे फ़त्ह़ुल् बयान' लिखते हैं कि इस आयत में इस बात पर तम्बीह की गई है कि बुलन्द आवाज़ से ज़िक्रे इलाही और दुआ़ अल्लाह तआ़ला को सुनाने के लिए नहीं होनी चाहिए बल्कि मक़्सूद ज़िक्रे इलाही को दिल में रासिख़ करना ख़यालात को दूर कर के ज़ेहन में सुकून पैदा करना हो।

आयत नं० (8) में फ़रमाया गया कि इस अ़िबादत के तरीक़े का ह़क़्दार वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं है, तमाम पाकीज़ा नामों का सिर्फ़ वही ह़क़्दार है जिन की तअ़दाद के बारे में 'इमाम नव्वी' ने उ़लमा की सहमति नक़्ल की है कि अल्लाह के एक हज़ार नाम हैं।

9-14 وَهَلۡ اَتٰىكَ حَدِیۡثُ مُوۡسٰی ۝ اِذۡ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهۡلِهِ امۡكُثُوۡۤا اِنِّیۡۤ اٰنَسۡتُ نَارًا لَّعَلِّیۡۤ اٰتِیۡكُمۡ مِّنۡهَا بِقَبَسٍ اَوۡ اَجِدُ عَلَی النَّارِ هُدًی ۝ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوۡدِیَ یٰمُوۡسٰۤی ۝ اِنِّیۡۤ اَنَا رَبُّكَ فَاخۡلَعۡ نَعۡلَیۡكَ ۚ اِنَّكَ بِالۡوَادِ الۡمُقَدَّسِ طُوًی ۝ وَاَنَا اخۡتَرۡتُكَ فَاسۡتَمِعۡ لِمَا یُوۡحٰۤی ۝ اِنَّنِیۡۤ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعۡبُدۡنِیۡ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكۡرِیۡ ۝

तमाम अम्बिया-ए-किराम की दअ़वत का मक़्सद अल्लाह का परिचय कराना था। चुनाँचे ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) जो एक बड़े नबी और रसूल थे, उन से जब अल्लाह तआ़ला ने कोहेतूर पर बात किया तो उन्हें उन के रसूल होने की ख़बर देने के बाद जो पहली बात कही वह यही थी कि उस के सिवा कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं है।

इस आयते करीमा से ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) पर नाज़िल वह्य की शुरुआ़त और अल्लाह तआ़ला से बात करने का वाक़िआ़ बयान किया जा रहा है। इस वाक़िये के ज़रिये नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि पैग़ाम पहुँचाने की राह में आप को जो तक्लीफ़ें उठानी पड़ रही हैं, यह केवल आप ही के साथ नहीं है ऐसा तो तमाम अम्बिया-ए-किराम के साथ हुआ है।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) 'मद्यन' में दस साल गुज़ार कर अपनी बीवी के साथ मिस्र की तरफ़ रवाना

हुए तो कोहेतूर के क़रीब रास्ता खो बैठे, ठंडक और अँधेरी रात थी, उन्हें रौशनी और आग दोनों की ज़रुरत थी। कोहेतूर की तरफ़ से उन्हें आग की रौशनी नज़र आई जिस पर अपनी बीवी से बतौर ख़ुशख़बरी कहा कि तुम यहीं रुकी रहो मैं तुम्हारे लिए आग लेकर आता हूँ या शायद वहाँ कोई आदमी मिल जाए जो हमारी रहनुमाई करे।

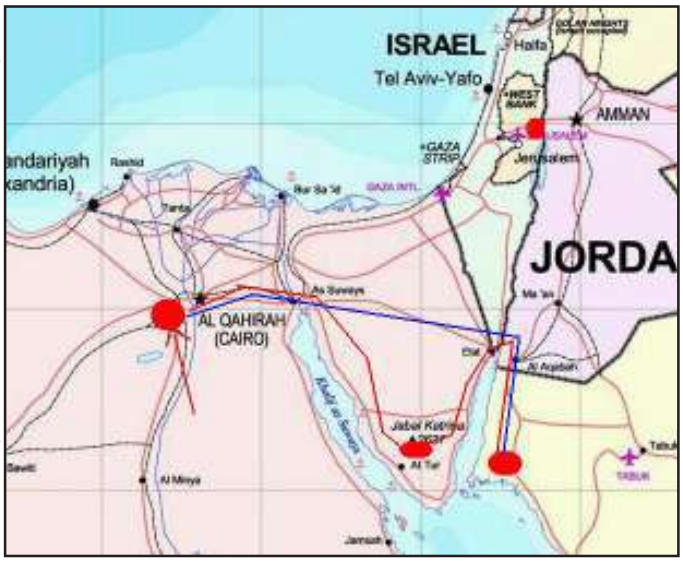

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) जब आग के क़रीब पहुँचे तो वहाँ मामला ही दूसरा था। वहाँ वादी के दाहिनी ओर एक दरख़्त था जो पूरा रौशन (प्रकाशित) था, वहाँ से आवाज़ आई ऐ मूसा! मैं आप का रब हूँ और आप से बात करने वाला हूँ और आप इस वक़्त पाक वादी तुवा में खड़े हैं। अपने रब के लिए इ़ज़्ज़त व सम्मान और अदब का इ़ज़्हार करते हुए जूता उतार दीजिए।

मतलब यह है कि अपने जूते उतार दीजिए ताकि वादी मुक़द्दस की बरकात क़दमों के रास्ते आप के जिस्म में सरायत कर जाएँ और मैंने आप को इस ज़माने के तमाम लोगों के दर्मियान अपनी पैग़म्बरी के लिए चुन लिया है, इसलिए अब आप पर जो वह्य नाज़िल होने जा रही है उसे ग़ौर से सुनिए और इस की ज़िम्मेदारी क़ुबूल करने के लिए तैयार हो जाइए। मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं। इसलिए सिर्फ़ मेरी अ़िबादत कीजिए और मुझे याद करने के लिए नमाज़ क़ायम कीजिए।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि यही वजह है कि जो नमाज़ नहीं पढ़ता वह अल्लाह को याद करने वाला नहीं कहलाता, बल्कि उस का इन्कार करने वाला होता है।

15 إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ﴿١٥﴾

क़ियामत का होना यक़ीनी बात है इस में कोई शक नहीं है, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उस के आने का वक़्त तमाम इन्स व जिन्न से इतना छुपा रखा है कि क़रीब था उस का ज़िक्र ही नहीं करता, उसे राज़ में रखता यहाँ तक कि अचानक वाक़ेअ़ हो जाती, लेकिन अपने मोमिन बन्दों पर रह़म करते हुए उन्हें नेक आ़माल की तर्ग़ीब दिलाने के लिए ताकि ग़ैर मोमिनों के लिए कोई उ़ज़्र बाक़ी न रहे, इस का ज़िक्र कर दिया।

उस दिन अल्लाह तआ़ला तमाम इन्सानों को उन के नेक व बुरे आ़माल का बदला चुकाएगा जो उन्होंने दुनिया में अपनी मर्ज़ी से किये होगें। इसलिए (जैसा कि आयत नं० 14 में गुज़र चुका है) उस

दिन की पकड़ से बचने के लिए अल्लाह की इ़बादत करना और नमाज़ क़ायम करना वाजिब हुआ।

16 فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ۝

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को नसीह़त की कि कहीं ऐसा न हो कि आख़िरत के इन्कारी और ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाले आप को आख़िरत पर ईमान लाने से रोक दें यानी आप ऐसे लोगों की पैरवी न कीजिए जो आख़िरत का इन्कार करते हैं और जिन की ज़िन्दगी का मक़्सद दुनिया की लज़्ज़त है, वह अल्लाह की रज़ा से बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं।

17-18 وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ۝ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَآرِبُ أُخْرٰى ۝

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को जो मोअ़जिज़ात दिये जाने वाले थे, उन ही से सम्बन्धित बात की शुरुआ़त हो रही है और यह साबित करना है कि उन के हाथ में सूखी लकड़ी की एक लाठी है, जिसे अल्लाह तआ़ला बतौर मोअ़जिज़ा (चमत्कार) एक ज़िन्दा साँप बना देगा और उस मोअ़जिज़े (चमत्कार) का इ़ज़्हार उन्हें फ़िरऔ़नियों के सामने करना होगा।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से पूछा कि आप के दाएँ हाथ में क्या है? तो उन्होंने कहा कि यह मेरी लाठी है जिस पर मैं टेक लगाता हूँ और इस के ज़रिये मैं अपनी बकरियों के खाने के लिए दरख़्तों से पत्ते गिराता हूँ और मैं इसे दूसरे कामों के लिए भी इस्तेमाल करता हूँ।

19-21 قَالَ أَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ۝ فَأَلْقٰهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ۝ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۖ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْأُوْلٰى ۝

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, ऐ मूसा! आप अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दीजिए। उन्होंने उसे ज़मीन पर डाल दिया तो अल्लाह ने उस के गुण बदल कर उसे एक लम्बे चौड़े मुँह वाला साँप की शक्ल में कर दिया, जो तेज़ी के साथ डरावनी ह़रकतें करने लगा और पत्थरों को निगलने लगा।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने जब अपनी लाठी का यह ह़ाल देखा तो डर कर भागने लगे। अल्लाह ने उन से कहा कि आप इसे पकड़ लीजिए और डरिए नहीं, हम इस को पहले की तरह़ लाठी बना देंगे। चुनाँचे उन्होंने ऐसा ही किया तो वह लाठी बन गई जो उन के हाथ में पहले से थी।

22-23 وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ آيَةً أُخْرٰى ۝ لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ۝

यहाँ ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को दिये गये दूसरे मोअ़जिज़े का ज़िक्र है। 'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' कहते हैं कि इस आयते करीमा में **'जिन्नाह'** से मुराद गिरेबान (ऊपर गले से हाथ के नीचे) है, जैसा कि इस को दूसरी आयतों में स्पष्ट किया गया है। इन की मुराद सूरः नम्ल की आयत नं० (12) وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ और सूरः क़सस की आयत नं० (32) اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ में है।

इन दोनों आयतों में जेब (गिरेबान) की मुराद को स्पष्ट कर किया गया है। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से फ़रमाया कि आप अपना हाथ अपने गिरेबान यानी बगल में डाल कर निकालिए वह

बिना किसी बीमारी के ख़ूबसूरत चमकता हुआ होगा। यह आप की नुबूव्वत के सच्चा होने पर दलालत करने वाला दूसरा मोअ़जिज़ह होगा और ह़क़ तो यह था कि यह दोनों निशानियाँ फ़िरऔन के सामने ज़ाहिर की जातीं, लेकिन हम ने आप को पहले ही इसलिए दिखा दिया है ताकि आप का दिल मज़बूत रहे और फ़िरऔन का चैलेंज क़ुबूल करते वक़्त इत्मिनान रहे कि आप के पास हमारे दिये हुए मोअ़जिज़ात हैं, जिन के ज़ाहिर होते ही उस का फ़रेब सब पर खुल जाएगा और आप विजयी होंगे।

24 اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۟

इस में ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को मोअ़जिज़ात दिये जाने का मक़्सद बयान किया जा रहा है कि ऐ मूसा! मोअ़जिज़ात लेकर हमारे रसूल की हैसियत से आप फ़िरऔन के पास जाइए जो अपनी ह़द से बढ़ कर मअ़बूद (उपास्य) होने का दावा कर बैठा है, उसे उस की हैसियत दिखाइए और हमारी अ़िबादत का हुक्म दीजिए।

आयत नं० 25 से 48 तक

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿٢٨﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ﴿٢٩﴾ هٰرُوْنَ اَخِي ﴿٣٠﴾
اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ﴿٣١﴾ وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٣٢﴾ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾ اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿٣٦﴾
وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿٣٧﴾ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ﴿٣٨﴾ اَنِ اقْذِفِيْهِ فِي التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ۭ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰي عَيْنِيْ ﴿٣٩﴾ اِذْ تَمْشِيْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰي مَنْ يَّكْفُلُهٗ ۭ فَرَجَعْنٰكَ
اِلٰٓى اُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۭ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ۭ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰي
قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ﴿٤٠﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ ﴿٤١﴾ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ﴿٤٢﴾ اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٣﴾ فَقُوْلَا لَهٗ
قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٥﴾ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِيْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴿٤٦﴾
فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۡ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۭ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ۭ وَالسَّلٰمُ عَلٰي مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا
قَدْ اُوْحِيَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰي مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾

अनुवाद-

(25) (मूसा ने) कहा, ''ऐ रब! (इस काम के लिए) मेरा सीना खोल दीजिए। (26) और मेरा काम आसान कर दीजिए। (27) और मेरी ज़बान की गिरह खोल दीजिए। (28) ताकि वह मेरी बात समझ लें, (29) और मेरे घर वालों में से (एक को) मेरा वज़ीर (सहायक) नियुक्त कर दीजिए; (30) (अर्थात) मेरे भाई हारून को (31) उसके ज़रिये मेरी कमर (ताक़त) को मज़बूत कर दीजिए (32) और उसे मेरे काम में शरीक कर दीजिए (33) ताकि हम खूब 'तेरी' तस्बीह़ बयान करें। (34) और 'तेरा' खूब ज़िक्र करें। (35) बेशक 'तू' हमें देख रहा है।'' (36) फ़रमाया, ''दिया गया तुझे जो 'तू ने' माँगा, ऐ मूसा! (37) और 'हमने' तो आप पर एक बार और एह़सान किया था (38) जबकि 'हमने' आप की माँ को इल्ह़ाम किया, (दिल में बात डाली) जो आपको बताया जाता है; (39) कि उसको सन्दूक़ में रख फिर उसको दरिया में डाल दे, फिर दरिया उसे किनारे पर डाल देगा, तो उन्हें वह (दुश्मन) उठा लेगा, जो मेरा भी दुश्मन है उनका और इनका भी, और 'मैंने' आप पर अपनी ओर से मुह़ब्बत डाल दी, और ताकि आप मेरी देख-रेख में परवरिश पाएँ। (40) जबकि आपकी बहन (फ़िरऔन के यहाँ) चलती हुई आईं, फिर बोलीं कि 'क्या मैं तुम्हें उस व्यक्ति का पता बता दूँ जो इनका पालन पोषण अपने ज़िम्में ले ले? इस तरह 'हमने' फिर आप को आप की माँ के पास पहुँचा दिया, ताकि उनकी आँखें ठंडी हों; और वह ग़म न करें; आपने एक व्यक्ति को मार डाला था, तो 'हमने' आपको उस ग़म से छुटकारा दिया, और 'हमने' आप को तरह-तरह से आज़माया, और आप कई वर्ष मद्यन वालों में रहे, फिर आप ठीक समय पर आ गये, ऐ मूसा! (41) और 'मैंने' आप को अपने (काम के) लिए चुन लिया है (42) आप और आप के भाई 'मेरी' निशानियों के साथ जाएँ, और 'मेरी' याद में सुस्ती न करें; (43) जाएँ दोनों, फ़िरऔन के पास, वह सरकश हो रहा है। (44) उससे नर्मी से बात करें, शायद कि वह नसीह़त ह़ासिल कर ले या डर जाए।'' (45) दोनों बोले, ''ऐ हमारे रब! हमें इसका डर है कि वह हम पर कहीं ज़्यादती न करे या ज़्यादा सरकश हो जाए।'' (46) (अल्लाह ने) फ़रमाया, ''आप डरें नहीं, 'मैं' आप दोनों के साथ हूँ, सुनता

और देखता हूँ; (47) आप उसके पास जाएँ, फिर उससे कहें, 'हम 'तेरे' 'रब' की ओर से भेजे गये हैं, तो तू हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे, और उन्हें दुःख न दे, हम तेरे पास, तेरे 'रब' की निशानी लेकर आए हैं; और सलामती हो उसके लिए जो सीधी राह पर चले। (48) हमारे पास तो वह्य आ चुकी है कि अ़ज़ाब उसी के लिए है, जो झुठलाए और मुँह फेरे''।

आयत नं० 25 से 48 तक की व्याख्या

25-28 قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ۝ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ۝ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ۝ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ۝

जब उन्हें फ़िरऔ़न के सामने दअ़वत देने का हुक्म मिला तो सोचा कि उन के ऊपर बड़ी ज़िम्मेदारी डाल दी गई है। एक तरफ़ अपनी कम हिम्मती और अस्बाबों की कमी याद आ रही थी तो दूसरी तरफ़ फ़िरऔ़न जैसे अ़ज़ीम बादशाहे मिस्र की ताक़त और उस का नाम व शोहरत उन की आँखों में घूम रहा था और उस के घमण्ड और इन्कार का आ़लम यह था कि उस ने अल्लाह का इन्कार कर दिया और ख़ुद उपास्य होने का दावा कर बैठा था, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को अपनी पैग़म्बरी के लिए चुन लिया था और उन्हें बहरह़ाल यह काम करना था, इसीलिए उन्होंने अल्लाह से दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! मेरा सीना खोल दे और मुझ पर जो ज़िम्मेदारी डाली है उसे आसान कर दे, इसलिए कि तेरी मदद के बिना इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी मेरे कमज़ोर कन्धे बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे और मेरी ज़बान की लुकनत (अटकना) को दूर कर दे, ताकि जब मैं फ़िरऔ़नियों के सामने तेरी दअ़वत पेश करूँ तो वह मेरी बात समझ सके।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि बचपन में उन्होंने अपने मुँह में चिंगारी डाल ली थी जिस की वजह से उन की ज़बान में लुकनत (अटकना) पैदा हो गई थी। जब रिसालत की ज़िम्मेदारी उन के ऊपर आई तो सोचा कि इस काम के लिए साफ़-साफ़ बात कर सकने वाले आदमी की ज़रूरत है, इसीलिए उन्होंने अपने रब से दुआ़ की तो वह अटकना दूर होता रहा। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने उन की इस दुआ़ के जवाब में फ़रमाया قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى "ऐ मूसा! आप की माँग पूरी हो गई" और जो उन्होंने दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! मेरे भाई हारून को भी इस ज़िम्मेदारी के उठाने में मेरा शरीक बना दे, क्योंकि वह मुझ से ज़्यादा अच्छी बात कर सकते हैं।

29-35 وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ۝ هٰرُوْنَ اَخِي ۝ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ۝ وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ ۝ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ۝ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ۝ اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ۝

ऊपर बयान किया जा चुका है कि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने दुआ़ की, ऐ मेरे रब! मेरे ख़ानदान वालों में से मेरे भाई हारून को रिसालत की ज़िम्मेदारी उठाने में मेरा शरीक व मददगार बना दे, ताकि हम तेरी ख़ूब तस्बीह़ बयान करें और तुझे ख़ूब याद करें, तू हमारे तमाम ह़ालात से बाख़बर है और जानता है कि मैंने तुझ से जो माँगा है वह हमारे लिए फ़ायदेमन्द है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आयात नं० (33/34) तस्बीह़ व ज़िक्रे इलाही की फ़ज़ीलत की बहुत बड़ी दलील है, इसलिए कि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को इ़ल्म था कि अल्लाह तआ़ला को यह अ़मल बहुत ज़्यादा पसन्द हैं, इसीलिए उन्होंने अपनी दुआ़ की मक़्बूलियत के लिए अपना वसीला बनाया।

36 قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿۳۶﴾

अल्लाह तआ़ला ने उन की दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली, उन का सीना खोल दिया और उन की मदद का वादा कर दिया, उन की लुकनत (अटकना) जाती रही और उन के भाई हारून को जो उन से उ़म्र में बड़े थे, नबी बना कर फ़िरऔ़न के सामने दअ़वत पेश करने की ज़िम्मेदारी में उन का शरीक व मददगार बना दिया।

37 وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰى ﴿۳۷﴾

इस में ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के दिल को मज़ीद इत्मिनान बख़्शने के लिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इस से पहले भी तलब व दुआ़ के बग़ैर आप को बहुत सी नेअ़मतों से नवाज़ चुका हूँ। अब जबकि आप मुझ से मांग रहे हैं तो आप ज़्यादा ह़क़्दार हैं कि आप की माँग पूरी करुँ।

'साह़िबे फ़त्हुल् बयान' ने उन नेअ़मतों का तर्तीब से ज़िक्र किया है जो अल्लाह ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को बिना माँगे बचपन से लेकर नबी होने के ज़माने तक दिया था।

1- उन की माँ को वह़्य के ज़रिये हुक्म दिया कि बच्चे को सन्दूक़ में रख कर समुद्र के ह़वाले कर दें।
2- अल्लाह ने बचपन में उन की मुह़ब्बत लोगों के दिलों में डाल दी थी कि जो भी उन्हें देखता, उन से मुह़ब्बत करने लगता था।
3- उन की परवरिश अल्लाह तआ़ला की निगरानी में होती रही।
4- उन्हें उन की माँ के पास दोबारा पहुँचा दिया।
5- बारह साल की उ़म्र में ग़ल्ती से एक क़िब्ती को क़त्ल कर दिया था तो अल्लाह ने फ़िरऔ़नियों से उन्हें बचा लिया और उन का गुनाह माफ़ कर दिया।
6- रसूल होने से पहले जब भी किसी आज़्माइश में पड़े, अल्लाह ने उन्हें उस से निजात दी।
7- एक क़ौल के मुताबिक़ बीस साल और एक दूसरे क़ौल के मुताबिक़ अट्ठाईस साल मद्यन में रहे और वहीं लड़की की शादी की।
8- अल्लाह ने उन्हें नबी व रसूल बनाया ताकि 'बनी इस्राईल' तक अल्लाह का पैग़ाम पहुचाएँ।

38 اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ﴿۳۸﴾

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की माँ को वह़्य के ज़रिये हुक्म दिया कि वह अपने बच्चे को सन्दूक़ में रख कर अपने मालिक पर भरोसा करते हुए समुद्र में डाल दें, ताकि समुद्र अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ उस सन्दूक़ को ऐसी जगह पहुँचा दे जिस समुद्र के किनारे फ़िरऔ़न नहाया करता था। चुनांचे ऐसा ही हुआ, सन्दूक़ तैरता हुआ उस नहर तक पहुँच गया जो समुद्र से निकल कर फ़िरऔ़न

के महल तक पहुँचता था। जब अल्लाह और उस के रसूल ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के दुश्मन फ़िरऔन ने वह सन्दूक़ देखा तो उसे निकालने का हुक्म दिया। उस में बच्चे को पाकर अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ फ़िरऔन बहुत ही ख़ुश हुआ, अल्लाह ने उस के और दूसरों के दिल में ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की मुह़ब्बत डाल दी ताकि अल्लाह की निगरानी के साथ फ़िरऔन के घर में ही उन की परवरिश हो।

39-40

اَنِ اقْذِفِيْهِ فِي التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِيْ ۘ﴿۳۹﴾ اِذْ تَمْشِيْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ؕ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ؕ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ﴿۴۰﴾

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) जब फ़िरऔन के घर पहुँच गये तो वह और उस की बीवी उन से ख़ूब मुह़ब्बत करने लगे, लेकिन अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ वह किसी भी दूध पिलाने वाली दाईया का दूध पीने से मुँह बन्द कर लेते थे। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः क़सस आयत नं० (12) में फ़रमाया है:-

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ

"हम ने उन पर दाईयों का दूध ह़राम कर दिया था।"

उन की बहन 'मरयम बिन्त इमरान' ने जो बराबर उन की ख़बर ले रही थी, जब सुना कि फ़िरऔन और उस की बीवी 'आसिया' किसी दाईया की तलाश में हैं तो कहा मैं आप लोगों को एक दाईया का पता दूँ जो इस बच्चे को दूध पिलाएगी और इस की परवरिश करेगी?

उन्होंने पूछा कि वह कौन है? तो कहा वह मेरी माँ है, जिन की गोद में इस वक़्त मेरा एक साल का भाई हारून है। चुनाँचे जब उन्हें बुलाया गया तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) फ़ौरन उन का दूध पीने लगे। इस तरह़ अल्लाह ने उन्हें उन की माँ के पास पहुँचा दिया ताकि उन की माँ की आँखें ठन्डी हों और बच्चे को समुद्र में डाल देने की वजह से उन्हें जो ग़म हुआ था वह दूर हो।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) पर एक एह़सान यह भी किया कि उन्होंने फ़िरऔन के घर में बड़े होकर एक किब्ती को ग़ल्ती से क़त्ल कर दिया तो सभी फ़िरऔनी उन के क़त्ल के दर पे हो गये, ह़ज़रत मूसा वहाँ से जान बचा कर भाग निकले और अल्लाह ने उन का यह गुनाह माफ़ कर दिया और नबी होने से पहले आज़्माईशों से गुज़रे और हर बार अल्लाह ने उन की मदद की और जब फ़िरऔनियों के डर से भाग कर मद्यन पहुँचे तो ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) ने सारा क़िस्सा सुनकर कहा कि अब तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं, यहाँ आकर ज़ालिमों से तुम निजात पा चुके हो। चुनाँचे वहाँ बीस या अट्ठाईस साल तक ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) के पास रहे और फिर ह़िक्मते इलाही के मुताबिक़ वहाँ से अपनी बीवी को लेकर चले और कोहेतूर के पास पहुँचे तो अल्लाह ने उन्हें पैग़म्बरी अ़ता की और उन से बातचीत की।

कोहेतूर तक उस वक़्त उन का पहुँचना अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म में पहले से मुक़द्दर था, जिस की उन्हें कोई ख़बर न थी।

41 وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ ﴿٤١﴾

इस में अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से फ़रमाया कि मैंने आप को रिसालत के लिए चुन लिया है और तरह़-तरह़ के ह़ालात से गुज़ार कर इस की ज़िम्मेदारियाँ पूरी करने के लिए इस क़ाबिल बनाया है, ताकि मेरा पैग़ाम फ़िरऔ़न और बनी इस्राईल तक पहुचाएँ। फ़िरऔ़न को मेरे अ़िबादत की दअ़वत दीजिए और बनी इस्राईल को भी मुझ पर ईमान लाने और नेक आ़माल करने की ओर बुलाइए ताकि उन्हें दुनिया व आख़िरत की भलाई ह़ासिल हो।

42 اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ﴿٤٢﴾

आप और आप के भाई हारून जिन के लिए आप ने दुआ़ की है, मेरे दोनों मोअ़जिज़ात (चमत्कार) लेकर जिन का ज़ाहिर होना मेरी क़ुद्रत से आप के सामने हो चुका है दअ़वत के लिए आगे बढ़िये और आप दोनों पर अब तक मैंने जो एह़सानात व इनआ़मात किये हैं उन्हें याद रखिए और तब्लीग़-ए-रिसालत में मेह़नत से काम लीजिए।

43-44 اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٣﴾ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾

इस में बताया गया है कि आप दोनों मेरा पैग़ाम लेकर फ़िरऔ़न के पास जाइए जिस ने सरकशी की राह अख़्तियार कर ली है और अपने आप को रब और मअ़बूद (उपास्य) होने का दावा कर बैठा है और देखिए! आप दोनों के बयान का तरीक़ा नर्म होना चाहिए इसलिए कि नर्म बातचीत बड़े ज़ालिमों और सरकशों को भी कभी-कभी मोम बना देती है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः नह़ल आयत नं० (125) में फ़रमाया है:-

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ

"अपने रब की राह की तरफ़ ह़िक्मत और अच्छी नसीह़त के साथ बुलाइए और उन से बेहतरीन तरीक़े से बातचीत कीजिए।"

शायद कि आप दोनों की बातें उसे ग़ौर व फ़िक्र पर मजबूर कर दें और वह ईमान व हिदायत की राह अपना ले या डरे कि अगर कुफ़्र व ज़ुल्म पर जमा रहा तो अल्लाह का अ़ज़ाब उसे अपनी गिरिफ़्त में ले लेगा।

45-48 قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٥﴾ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِيْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴿٤٦﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۫ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا قَدْ اُوْحِيَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾

दोनों भाईयों ने अल्लाह का यह ह़ुक्म पाने के बाद जब ह़ालात पर ग़ौर किया, फिर अपनी बेकसी और फ़िरऔ़न के क़हर व ज़ुल्म का तसव्वुर किया तो इन्सानी फ़ित्रत के मुताबिक़ डरे और इस का अपने रब से इज़्हार करते हुए कहा, ऐ हमारे रब! हम डरते हैं कि कहीं ग़ुस्से में वह हमें क़त्ल न कर दे

या कोई सख़्त सज़ा दे दे या उस की सरकशी और बढ़ जाए और तेरी शान व अज़्मत के ख़िलाफ़ कोई बात न कर बैठे, तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इत्मिनान दिलाया और कहा कि डरने की ऐसी कोई बात नहीं, मैं तुम दोनों के साथ रहूँगा और तुम दोनों और उस के दर्मियान जो बातचीत होगी उसे मैं सुनूँगा, देखूँगा और आप दोनों की ह़िफ़ाज़त करता रहूँगा।

इसलिए आप दोनों उस के पास जाइए और उस से कहिए कि हम दोनों तुम्हारे रब के पैग़म्बर हैं, तुम्हारे पास इसलिए भेजे गये हैं ताकि तुम बनी इस्राईल को ज़ुल्म से आज़ाद कर दो, उन्हें कष्ट देना बन्द कर दो और हमारे साथ उन्हें हमारे वतन 'फ़िलिस्तीन' जाने दो और यह भी कहिए कि हमारे पास तुम्हारे रब की ओर से हमारे रसूल होने की दलील यानी मोअ़जिज़े (चमत्कार) मौजूद हैं।

और उस से कहिए कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की निशानियों की तस्दीक़ (पृष्टि) करते हुए उस के भेजे हुए दीन की पैरवी करेगा, वह अल्लाह के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा और जो उस की निशानियों को झुठलाएगा और उस के दीन से फिरेगा, वह उस के अ़ज़ाब का ह़क़्दार होगा।

आयत नं० 49 से 76 तक

قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿٤٩﴾ قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿٥١﴾ قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ
لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۭ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ
شَتّٰى ﴿٥٣﴾ كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿٥٤﴾ مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً
اُخْرٰى ﴿٥٥﴾ وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾ فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ
فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾ قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾
فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ
افْتَرٰى ﴿٦١﴾ فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾ قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا
وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ
وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ
فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۭ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۭ وَلَا
يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۭ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ
الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۡ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾
قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰي مَا جَاۗءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ۭ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا
لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿٧٣﴾ اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ۭ لَا يَمُوْتُ
فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٤﴾ وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٥﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾

अनुवाद-

(49) (फ़िरऔ़न ने) कहा, ''तो कौन है, तुम्हारा रब! ऐ मूसा?'' (50) (मूसा ने) कहा, ''हमारा रब वह है 'जिसने' हर चीज़ को उसकी आकृति (शक्ल सूरत) दी, फिर राह दिखाई।'' (51) (फ़िरऔ़न ने) कहा, ''अच्छा तो उन नस्लों का क्या ह़ाल हुआ, जो पहले थीं?'' (52) (मूसा ने) कहा, ''उसका इल्म मेरे रब के पास एक किताब में है, मेरा 'रब' न भटक सकता है न भूल सकता है।'' (53) ''वह (वही तो है) जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फर्श बना दिया, और तुम्हारे लिए उसमें रास्ते बना दिये; और आसमान से पानी उतारा, फिर 'हमने' उससे तरह-तरह की पैदावारें (उपज) निकालीं; (54) खाओ और अपने चौपायों को भी चराओ; बेशक इसमें निशानियाँ हैं अक़्ल वालों के लिए। (55) इसी (ज़मीन) से 'हमने' तुम्हें पैदा किया, और इसी में 'हम' तुम्हें लौटाएँगे, और इसी से फिर तुम्हें दोबारा निकालेंगे।'' (56) और 'हमने' उसे (फिरऔ़न को) अपनी सभी निशानियाँ दिखाईं मगर वह झुठलाता और इन्कार ही करता रहा। (57) (फिरऔन ने) कहा, ''ऐ मूसा! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि अपने जादू से हम को, हमारे अपने ही ज़मीन से निकाल

दे? (58) अच्छा, हम भी तुम्हारे मुक़ाबले में वैसा ही जादू लाएंगे; तुम हमारे और अपने बीच एक निर्धारित समय तय कर लो, न हम उससे फिरें और न तुम, (और यह) एक समतल मैदान में (हो)। (59) (मूसा ने) कहा, ''तुम्हारे लिए ज़ीनत (उत्सव) के दिन का वादा है, और यह कि लोग दिन चढ़े (चाश्त के वक़्त) इकट्ठा हो जाएँ।'' (60) तो फ़िरऔन पलटा और अपने सारे दाँव जुटाए, फिर (मुक़ाबले में) आ गया। (61) मूसा ने उन लोगों से कहा, ''तबाही है तुम्हारे लिए, झूठ गढ़ कर अल्लाह पर न थोपो, कि 'वह' तुम्हें एक अ़ज़ाब से तबाह कर देगा और जिसने झूठ गढ़ा, वह नाकाम (असफल) रहा।'' (62) तो वे आपस में अपने मामले में झगड़ने और चुपके-चुपके काना-फूसी करने लगे। (63) कहने लगे, ''यह दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल दें, और तुम्हारे सुन्दर तरीक़े (धर्म) को मिटा दें; (64) तो तुम सब मिलकर अपना दाँव जुटा लो, और एक पंक्ति बना कर आओ, आज जो ग़ालिब (प्रभावी) रहा वही कामियाब हुआ।'' (65) वे बोले, ''ऐ मूसा! या तुम (अपनी लाठी) डालो, या हम पहले (रस्सियाँ) डालते हैं।''(66) (मूसा ने) फ़रमाया, ''नहीं, बल्कि तुम्हीं (रस्सियाँ) डालो,'' (जब उन्होंने रस्सियाँ डालीं) तो अचानक उनकी रस्सियां और लाठियाँ मूसा के ख़याल में ऐसी आने लगीं कि वह दौड़ रही हैं। (67) तो मूसा अपने जी में डरे। (68) 'हमने' कहा, ''मत डरो! बेशक तुम ही ग़ालिब (प्रभावी) हो (69) और जो चीज़ तुम्हारे दाहिने हाथ में (लाठी) है, उसे डाल दो, वह उसको निगल जाएगी, जो कुछ उन्होंने रचा है, वह तो बस जादूगर का फ़रेब है और जादूगर कामियाब नहीं हो सकता, चाहे (जहाँ) आए।'' (70) तो जादूगर सज्दः में गिर गये, (और) बोले, ''हम, हारून और मूसा के 'रब' पर ईमान ले आए।'' (71) (फ़िरऔन ने) कहा, ''तुम उस पर ईमान ले आए, इससे पहले कि मैं तुम्हें इसकी इजाज़त देता, ज़रुर यह तुम्हारा उस्ताद है, जिसने तुम्हें जादू सिखाया है, तो मैं तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा दूँगा, और खजूर के तनों पर तुम्हें सूली दे दूँगा; तब तुम्हें ज़रूर मालूम हो जाएगा कि हममें से किस का अ़ज़ाब ज़्यादा सख़्त और देर तक रहने वाला है। (72) उन्होंने कहा, ''जो स्पष्ट निशानियाँ हमारे सामने आ चुकी हैं, और उस हस्ती पर, 'जिसने' हमको पैदा किया है, उसके मुक़ाबले में हम तुमको किसी तरह तर्जीह (प्राथ्मिकता) देने वाले नहीं, तो तुझ को जो करना है, कर गुजर, और तू तो बस इसी दुनिया की ज़िन्दगी पर हुक्म दे सकता है। (73) ''हम तो अपने रब पर ईमान ले आए, ताकि वह हमारी ख़ताओं को माफ़ कर दे, और इस जादू को भी जिस पर 'तूने' हमें मजबूर किया, और अल्लाह ही बेहतर और बाक़ी रहने वाला है।'' (74) जो व्यक्ति अपने 'रब' के पास मुजरिम हो कर हाज़िर होगा, तो उसके लिए जहन्नम है, जिसमें न वह मरेगा और न जियेगा। (75) और जो व्यक्ति आएगा मोमिन (मुस्लिम) हो कर, और अच्छे काम भी किये होंगे, तो ऐसे लोगों के लिए ऊँचे-ऊँचे दर्जे हैं; (76) हमेशा-हमेश रहने के बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उनमें वे हमेशा रहेंगे; और यह बदला है उसका जिसने पाकी अपनाई।

आयत नं० 49 से 76 तक की व्याख्या

49

قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ۝

फ़िरऔन ने उन दोनों की पूरी बात सुनने के बाद कहा, ऐ मूसा! तुम दोनों का रब कौन है?

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि चूंकि वह अल्लाह का इन्कारी और अपने पालनहार होने का दावेदार था, इसीलिए कहा कि मेरे सिवा तुम दोनों का रब कौन है? तो हज़रत मूसा (अ़लै०) ने कहा कि हमारा रब वह है जिस ने हर मख़्लूक़ को उस की मख़्सूस शक्ल व सूरत में पैदा किया और हर अंग में एक ख़ास फ़ायदा रखा। फिर हर एक को रोज़ी हासिल होने के तरीक़े और उन की नस्लों के बाक़ी रखने के तरीक़े सिखाए।

50-54 قَالَ رَبُّنَا الَّذِیْٓ اَعْطٰی كُلَّ شَیْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰی ﴿۵۰﴾ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰی ﴿۵۱﴾ قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّیْ فِیْ كِتٰبٍ ۚ لَا یَضِلُّ رَبِّیْ وَلَا یَنْسَی ﴿۵۲﴾ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِیْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۭ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰی ﴿۵۳﴾ كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ۭ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی النُّهٰی ﴿۵۴﴾

'हाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि जब हज़रत मूसा (अ़लै०) ने फ़िरऔ़न को बताया कि उन का रब वह है जिस ने सारी मख़्लूक़ात को पैदा किया, उन्हें रोज़ी दी और उन्हें ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा सिखा दिया, तो वह लाजवाब हो गया और हारी मानकर कहने लगा कि फिर उन पिछली क़ौमों के बारे में तुम क्या कहोगे जो बुतों की पूजा करती थीं? जैसे नूह, हूद, लूत और सालेह़ की क़ौमें जो एक अल्लाह पर ईमान नहीं लाई और बुतों की पूजा करती हुई दुनिया से रुख़सत हो गईं? तो हज़रत मूसा (अ़लै०) ने कहा कि उन तमाम क़ौमों के आ़माल का अल्लाह को पूरा-पूरा इ़ल्म है, उन का हर क़ौल व अ़मल उन के आ़माल में महफ़ूज़ है और वह क़ियामत के दिन उन्हें उन का बदला चुकाएगा।

मेरे रब के इ़ल्म से कोई छोटी सी चीज़ भी बाहर नहीं है और न ही उस पर भूल होती है। मेरा रब इन दोनों ऐबों और दूसरे तमाम नुक्स से पाक है। मेरा रब वह है जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए फ़र्श बना दिया है ताकि तुम उस पर ज़िन्दगी गुज़ार सको और मेरा रब वह है जिस ने ज़मीन पर तुम्हारे लिए रास्ते आसान कर दिए ताकि तुम एक जगह से दूसरी जगह जा सको और मेरा रब वह है जो आसमान से बारिश नाज़िल करता है जिस से नहरें बनती हैं और कुएँ भरते हैं।

हज़रत मूसा (अ़लै०) का जवाब ख़त्म हो जाने के बाद अल्लाह तआ़ला ने अहले किताब को ईमान लाने की नसीह़त के तौर पर फ़रमाया कि हम ही इस पानी के ज़रिये मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के पौधे, फल और दरख़्त वग़ैरह पैदा करते हैं जो रंग, मज़ा, बू और दूसरे गुणों में एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ होते हैं, इसलिए ज़रूरी है कि तुम हम पर ईमान ले आओ और उन पौधों और फलों में से जो तुम्हारे खाने के हैं उन्हें ख़ुद खाओ और जो तुम्हारे जानवरों के लिए हैं उन्हें खिलाओ।

यह तमाम आ़माल इस बात की दलील हैं कि हम हर बात पर क़ादिर हैं, हमारा इ़ल्म हर चीज़ तक है और हमारी रह़मत तमाम मख़्लूक़ात को शामिल है। इसलिए हम सिर्फ़ इ़बादत के ह़क़्दार हैं, लेकिन इन दलीलों से सिर्फ़ अहले अ़क़्ल व दानिश ही फ़ायदा उठाते हैं।

55 مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِیْهَا نُعِیْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰی ﴿۵۵﴾

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि ऐ इन्सान! हम ने तुम्हें उसी मिट्टी से पैदा किया है जिस से नबातात

व ह़ैवानात को पैदा किया। आदम को मिट्टी से और उस की औलाद को उस नुत्फ़े से पैदा किया है जो ज़मीन से तैयार होता है और मौत देकर उसी मिट्टी में लौटा देंगे। जैसे- पौधे, फलों और दरख़्तों के बीज ज़मीन में डाल दिये जाते है और क़ियामत के दिन फिर दोबारा तुम्हें तुम्हारी क़ब्रों से ज़िन्दा कर के निकालेंगे और तुम्हारे आ़माल का बदला तुम्हें चुकाया जाएगा।

56-60

وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾
فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَاۤ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾
قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾

यहाँ 'आयात' से मुराद वह नौ निशानियाँ हैं जो अल्लाह ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को दी थीं और जिन का ज़िक्र सूरः बनी इस्राईल आयत नं० (101) में आया है وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍ "हम ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को नौ निशानियाँ दी थीं" वह निशानियाँ यह हैं:-

"लाठी, यदे बैज़ा, क़ह़त साली, फलों की कमी, तूफ़ान, टिड्डी, जुवें, मेंढ़क और खून"।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) कई साल तक फ़िरऔ़न को दअ़वत देते रहे और इस लम्बी मुद्दत में अल्लाह तआ़ला ने इन निशानियों को भेज कर उसे राह दिखाई, लेकिन वह घमण्ड में सब को झुठलाता रहा और ईमान लाने से इन्कार करता रहा और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से कहा कि तुम मिस्र वालों को अपने जादू के ज़ोर से इस वहम में मुब्तिला करना चाहते हो कि तुम्हें अल्लाह ने अपना नबी बना कर भेजा है ताकि हमारी सल्तनत और मुल्क मिस्र पर क़ाबिज़ हो जाओ और यहाँ से निकाल दो, तो सुन लो कि हम तुम्हारे जादू का तोड़ इस से ज़्यादा तेज़ जादू से करेंगे, ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि तुम नबी नहीं बल्कि जादूगर हो, इसलिए तुम ख़ुद ही हमारे दर्मियान मुक़ाबिले का एक वक़्त मुक़र्रर कर दो जिस की हम में से कोई ख़िलाफ़वर्ज़ी न करे और उस के लिए एक ऐसी जगह निश्चित कर दो जहाँ खड़े होकर सभी लोग मुक़ाबिला देख सकें।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस बातचीत में फ़िरऔ़न की ओर से इस बात का इज़्हार था कि मूसा ने जादू दिखाया है और जादू दिखाने पर वह पूरी तरह़ क़ादिर है। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने कहा हमारे दर्मियान मुक़ाबिले का वक़्त ईद के दिन होगा और लोग मुक़ाबिला देखने के लिए सुबह़ के वक़्त जमा हो जाएँ ताकि दिन की पूरी रौशनी में उसे देख सकें।

इस बातचीत के बाद फ़िरऔ़न ने अपनी मीटिंग ख़त्म कर दी और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को हराने के लिए अपनी साज़िश के ताने-बाने दुरुस्त करने शुरु कर दिये और मुल्क के तमाम बड़े जादूगरों को जमा कर के मुक़ाबिला जीतने के लिए पूरी तैयारी कर ली।

61-64

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾
فَتَنَازَعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾ قَالُوْۤا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ
مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ

اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ۝

जब जादूगर वक़्त मुक़र्रर पर ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के सामने आए तो उन्होंने उन से कहा कि तुम लोग अल्लाह के बारे में झूठी बात न करो और अपने जादू के ज़रिये ख़याली चीज़ पेश कर के लोगों को धोका न दो। अगर तुम ऐसा करोगे तो एक दर्दनाक अ़ज़ाब के ज़रिये अल्लाह तुम्हें बर्बाद कर देगा और जान लो कि झूठा हमेशा घाटे में रहता है। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की बात सुनकर जादूगरों के दर्मियान इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हो गया और आपस में बातें करने लगे कि यह कोई जादूगर है या वाक़ई अल्लाह का रसूल है।

आख़िर में उन की यही राय हुई कि यह दोनों जादूगर ही हैं, अपने जादू के ज़रिये फ़िरऔ़न और हमें सरज़मीने मिस्र से निकाल कर ख़ुद सल्तनत पर क़ाबिज़ होना चाहते हैं और हमारी जगह अपनी क़ौम को यहाँ बसाना चाहते हैं और हमारे अच्छे भले दीन और अख़्लाक़ का ख़ात्मा करना चाहते हैं। इसलिए हम लोग एक बात पर मुत्तफ़िक़ हो जाएँ और सफ़ बनाकर आगे बढ़ें ताकि देखने वालों पर हमारा रोअ़ब पड़े और फिर आपस में एक दूसरे से कहने लगे कि आज जो ग़ालिब (प्रभावी) होगा वह फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों की ओर से ख़ूब इन्आ़म पाएगा।

65-69 قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ۝ قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ۝ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ۝ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ۝ وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۭ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۭ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ۝

जब जादूगरों के दर्मियान सहमति हो गई कि मुक़ाबिला कैसे किया जाए तो उन्होंने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से पूछा कि पहले तुम अपनी लाठी ज़मीन पर डालोगे या हम डालें? ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने कहा कि पहले तुम ही डालो और उन्होंने ऐसा इसलिए कहा कि जब जादूगर अपना करतब दिखला चुकेंगे और उन के ख़याली साँपों को ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की लाठी निगल जाएगी तो मोअ़जिज़-ए-नबवी (नबी का चमत्कार) ज़्यादा स्पष्ट शक्ल में इ़बरत बनकर लोगों के सामने आएगा।

जादूगरों ने जब अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ ज़मीन पर डालीं तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने देखा कि वह जादू के असर से दौड़ रही हैं। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) बह़ैसियत इन्सान उन साँपों से डर गये कि कहीं लोग जादूगरों के करतब से प्रभावित न हो जाएँ इसलिए कि उन की लाठियाँ और रस्सियाँ भी ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की लाठी की तरह़ भी साँप बन कर लोगों के सामने दौड़ रही थीं तो अल्लाह ने उन से फ़रमाया कि आप डरिए नहीं, बहरह़ाल जीत आप ही को नसीब होगी और मोअ़जिज़ह इलाही के सामने उन की नहीं चलेगी।

आप के दायें हाथ में जो लाठी है उसे ज़मीन पर डाल दीजिए उन्होंने ऐसा ही किया और वह लाठी एक बड़ा 'अस्दहा' बन कर जादूगरों की लाठियों और रस्सियों को निगलने लगी, तमाम लोग और जादूगर

अपनी आँखों से यह सब कुछ देखते रहे, यहाँ तक कि मैदान में एक साँप भी बाक़ी न रहा, जादू हार गया और अल्लाह का मोअ़जिज़ह जीत गया।

इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने आगे फ़रमाया कि उन्होंने जो कुछ बनाया था वह जादूगरों का करतब था और जादूगर कोई भी चाल चले कामियाब नहीं हो सकता।

70-71 فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ ﴿٧٠﴾ قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ ۖ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ﴿٧١﴾

जब जादूगरों ने तमाम माजरा अपनी आँखों से देख लिया और उन्हें यक़ीन हो गया कि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के हाथों उन्होंने अभी जो कुछ देखा है वह कोई जादू नहीं है, वह तो ह़क़ है जिस की सच्चाई में कोई शुब्हा नहीं है और यह सब कुछ उस अल्लाह की क़ुद्रत से हुआ है जो कहता है कि 'हो जा' तो वह चीज़ हो जाती है। इसलिए तमाम जादूगर अल्लाह के लिए सज्दे में गिर गये और पुकार उठे कि हम हारून व ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के रब पर ईमान ले आए। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का क़ौल है कि वह सत्तर (70) जादूगर थे, सुबह़ के वक़्त जादूगर थे और शाम के वक़्त अल्लाह की गवाही देने वाले बन गये।

फ़िरअ़ौन ने जब देखा कि उन जादूगरों ने तमाम लोगों के सामने अपने ईमान लाने का ए़लान कर दिया और उसे डर हुआ कि कहीं दूसरे लोग भी उन की पैरवी न करने लगें तो उसने अपनी ताक़त के ग़ुरूर में उन से कहा कि मेरी इजाज़त के बग़ैर तुम लोग मूसा पर ईमान ले आए हो। मुझे यक़ीन हो गया है कि यही मूसा वह बड़ा जादूगर है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है और तुम सब ने मिलकर साज़िश कर रखी है ताकि अहले मिस्र को तुम उन के मुल्क से निकाल दो। उन की इसी बात को क़ुर्आन करीम ने सूरः अअ़राफ़ आयत नं० (123) में यूँ बयान किया है

إِنَّ هَٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَا أَهْلَهَا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿١٢٣﴾

"यह यक़ीनन एक साज़िश है, जो तुम लोगों ने शहर में इस वजह से की है ताकि उस के रहने वालों को यहाँ से निकाल दो। बस तुम जल्द ही जान लोगे कि तुम्हारा अन्जाम क्या होता है"।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस बात से फ़िरअ़ौन का मक़्सूद लोगों के दिलों में मोअ़जिज़ा की सदाक़त के बारे में शुब्हा डालना था, ताकि वह भी जादूगरों की तरह़ ईमान न ले आएँ वरना उसे मालूम था कि मूसा उन के उस्ताद नहीं थे। फ़िरअ़ौन ने उन नये मुसलमानों को धमकी देते हुए कहा कि मैं तुम में से हर एक का एक हाथ और दूसरी ओर का एक पाँव काट दूँगा और खजूरों के दरख़्तों पर सूली देकर लट्का दूँगा, तब तुम्हें मालूम हो जाएगा कि मेरा अ़ज़ाब ज़्यादा सख़्त है या मूसा के रब का, जिस के डर से तुम मूसा पर ईमान ले आए हो।

72 قَالُوا لَن نُّؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا ۖ فَاقْضِ مَا أَنتَ قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِي هَٰذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾

उन जादूगर मुसलमानों पर इस की धमकी का कोई असर नहीं हुआ। सच है कि सच्चे ईमान के सामने दुनिया की कोई ताक़त नहीं ठहर सकती। उन्होंने कहा कि हमारे सामने मोअ़जिज़ाते इलाहिया (अल्लाह की ओर से चमत्कार) का ज़ुहूर हो चुका है, उन पर और उस ज़ाते बरह़क़ पर जिस ने हमें पैदा किया है, हम तुम्हें हरगिज़ नहीं मानेंगे। इसलिए तुम्हें जो करना है कर डालो, तुम्हारे फ़ैसले और हुक्म तो केवल इसी दुनिया में चलेंगे जो एक वक़्ती ठिकाना है। हमारी ज़िन्दगी का मक़्सद तो अब केवल आख़िरत की कामियाबी है।

'मुफ़स्सिर अबू अल् सऊद' लिखते हैं कि अगरचे तफ़्सीर की बाज़ किताबों में आया है कि फ़िरऔन ने उन मुसलमानों को सूली दे दी थी, लेकिन क़ुर्आन करीम या रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सह़ीह़ ह़दीसों से सुबूत नहीं मिलता कि फ़िरऔन ने अपने क़ौल पर अ़मल किया था और उन्हें सूली दे दी थी।

73 اِنَّاۤ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَاۤ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝

जादूगर मुसलमानों ने जोश-ए-ईमानी में बिलाख़ौफ़ कहा कि हम अपने रब पर ईमान ले आए हैं ताकि वह हमारे पिछले गुनाहों को माफ़ कर दे और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) व ह़ज़रत हारून (अ़लै०) का मुक़ाबिला करने के लिए जिस जादूगरी पर तुम ने हमें मजबूर किया था उसे भी माफ़ कर दे और ईमान व नेक अ़मल वालों के लिए अल्लाह का सवाब बेहतर होता है और नाफ़रमानों के लिए उस के अ़ज़ाब की मुद्दत लम्बी होती है।

74-76 اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝ وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ۝

इस में जादूगर मुसलमानों का नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला का क़ौल है, जिस में काफ़िर व मोमिन का अन्जाम बयान किया गया है कि जिस की मौत कुफ़्र पर होगी उस का ठिकाना जहन्नम होगा। जहाँ न उसे मौत आएगी कि अ़ज़ाब से छुट्कारा पा ले और न ऐसी ज़िन्दगी होगी जिस में उसे सुकून ह़ासिल हो, वहाँ वह ज़िन्दा होते हुए आग के अ़ज़ाब से ऐसी शदीद तक्लीफ़ उठाएगा कि हर वक़्त उस पर मौत की कैफ़ियत तारी रहेगी और जो इस दुनिया में ईमान व नेक आ़माल वाली ज़िन्दगी गुज़ारेगा, क़ियामत के दिन उस के दर्जे बुलन्द होंगे उस का ठिकाना वह जन्नत अ़द्न होगी जिस के नीचे नहरें जारी होंगी, वहाँ वह हमेशा के लिए रहेंगे और यह बदला उस को मिलेगा जिस ने दुनिया में अपने आप को कुफ़्र व गुनाह की बुराईयों से पाक रखा होगा।

अह़मद व मुस्लिम ने 'अबू सई़द ख़ुद्री' (रज़ि०) से रिवायत की है, रसलुल्लाह (सल्ल०) ने ख़ुत्बः दिया और जब यह आयत पढ़ी तो फ़रमाया, "जो लोग जहन्नमी होंगे जहन्नम में उन्हें न मौत आएगी, न ही ज़िन्दा रहेंगे" और अबू दाऊद ने अबू सई़द ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत की है रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जन्नत में बुलन्द मक़ामात वालों को उन के नीचे वाले इस तरह़ देखेंगे जैसे तुम लोग रौशन सितारे को आसमान में देखते हो और अबू बक्र व उ़मर उन्हीं में से होंगे और क्या ही ख़ूब मक़ाम होगा दोनों का।"

आयत नं० 77 से 94 तक

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ۝ فَاَتْبَعَهُمْ
فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝ وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ۝ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ
وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۝ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ
فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ۝ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ۝
وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ۝ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ۝ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ
بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝ فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا
حَسَنًا ۚ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ۝ قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا
مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ۝ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا
لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۙ فَنَسِيَ ۝ اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ۝
وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ۝ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ
عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ۝ قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ۝ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ۭ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ۝ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ
بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ۝

अनुवाद-

(77) और 'हमने' मूसा की ओर वह्य की, कि 'हमारे' बन्दों को रातों-रात निकाल ले जाओ, फिर उनके लिए दरिया में (लाठी) मार कर सूखा रास्ता बना दो, फिर तुमको न तो (फ़िरऔ़न के) पकड़ने का डर होगा, और न (डूबने का) डर।'' (78) तो फ़िरऔ़न ने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया, तो दरिया (की मौजें) उनको ढांप ली, जैसा कि उसे उनको ढ़ाँपना था। (79) और फिरऔ़न ने अपनी क़ौम को गुमराह कर दिया,और सीधी राह न दिखाई। (80) ऐ बनी इस्राईल! (याकूब की औलाद) 'हमने' तुमको तुम्हारे दुश्मन से छुटकारा दिया, और तुमसे 'तूर' के दाहिनी छोर का वादा किया, और तुम पर 'मन्न' और 'सल्वा' उतारा; (81) ''खाओ, जो कुछ पाक अच्छी चीज़ें 'हमने' तुम्हें दी हैं, और इसमें ह़द से आगे न बढ़ना कि तुम पर मेरा ग़ज़ब टूट पड़े, और जिस पर 'मेरा' ग़ज़ब टूटा, वह तो गिर कर ही रहा; (82) और 'मैं' बड़ा माफ़ करने वाला हूँ उसके लिए जो तौबः कर ले, और ईमान ले आए, और भले काम करे, फिर सीधी राह पर चले।'' (83) ''और अपनी क़ौम से (आगे चले आने में) क्यों जल्दी की, ऐ मूसा?'' (84) (मूसा ने) कहा, ''वह मेरे पीछे हैं और मैंने तेरी ओर आने की जल्दी इस लिए की, ऐ रब! ताकि तू राज़ी हो जाए।'' (85) फ़रमाया, ''अच्छा, तो 'हमने' तुम्हारे पीछे तुम्हारे क़ौम को आज़माइश में डाल दिया, और सामरी ने उन्हें गुमराह कर डाला।'' (86) तब मूसा अपनी क़ौम के पास वापस आए, ग़ुस्सा और अफ़सोस से भरे हुए, कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम्हारे 'रब' ने तुम से अच्छा वादा नहीं किया था? तो क्या तुम पर लम्बा ज़माना गुज़र गया था या तुमने यह चाहा था कि तुम पर तुम्हारे 'रब' का ग़ज़ब उतर पड़े, इसलिए तुमने मुझसे वादा

ख़िलाफ़ी की।'' (87) उन्होंने कहा, ''हमने आप से किये हुए वादे के ख़िलाफ़ अपने से कुछ नहीं किया, बल्कि क़ौम के ज़ेवरों के बोझ हम उठाए हुए थे, फिर हमने उनको (आग में) फेंक दिया, तो इसी तरह सामरी ने भी डाल दिया।'' (88) तो वह उनके लिए एक बछड़े का जिस्म बना लाया जिसकी आवाज़ बछड़े की सी थी, फिर उन्होंने कहा, ''यही तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) है और मूसा का भी, मगर वह भूल गया है।'' (89) क्या वे लोग इतना भी नहीं देख रहे थे, कि वह न तो किसी बात का जवाब दे सकता है और न उनको नुक़सान पहुँचाने का अधिकार है और न नफ़ा का। (90) और हारून ने उनसे पहले ही कह दिया था कि ''लोगो तुम इसके ज़रिये फ़ित्ने में पड़ गये हो, और तुम्हारा 'रब' तो रह़मान है, तो मेरी बताई राह पर चलो और मेरी बात मानो।'' (91) उन्होंने कहा, ''हम तो इसी (की इबादत) पर जमे रहेंगे, जब तक कि मूसा वापस न आएँ।'' (92) उन्होंने कहा, ''ऐ हारून तुम्हें किस चीज़ ने रोका, जब तुम ने देख लिया था कि यह भटक गये हैं; (93) इस बात से कि तुम मेरे पीछे चले आते तो तुमने मेरे हुक्म की नाफ़रमानी की?'' (94) (हारून ने) कहा, ''ऐ मेरी माँ के बेटे, मेरी दाढ़ी न पकड़िए और न मेरा सर! मुझे डर हुआ कि आप कहेंगे कि 'तू ने बनी इस्राईल में फूट डाल दी, और मेरी बात को ध्यान न दिया'।''

आयत नं० 77 से 94 तक की व्याख्या

77-79

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ۝ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝ وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ۝

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) एक लम्बी मुद्दत तक फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों को इस्लाम की दअ़वत देते रहे, लेकिन वह अपने कुफ़्र पर जमे रहे तो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को हुक्म दिया कि वह 'बनी इस्राईल' को लेकर मिस्र से निकल जाएँ।

इस वाक़िये की तफ़्सील सूरः बक़रः, सूरः अअ़राफ़ और सूरः यूनुस में गुज़र चुकी है। जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) बनी इस्राईल के साथ बह़रे कुल्ज़ुम की तरफ़ जाने लगे तो फ़िरऔ़न ने अपनी फ़ौज के साथ उन का पीछा किया और अल्लाह के फ़ैसले के मुताबिक़ समुद्र के किनारे मुठभेड़ हो गई।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने अल्लाह के हुक्म से अपनी लाठी पानी पर मारी, पानी दो तरफ़ हो गया और बीच में सूखा रास्ता बन गया। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) अपनी क़ौम को लेकर डरते हुए चल पड़े और पीछे-पीछे फ़िरऔ़न और उस का लश्कर भी। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) अपनी क़ौम के साथ दूसरे किनारे पर पहुँच गये और फ़िरऔ़न अपने लश्कर के साथ जब बीच में पहुँचा तो पानी ने उन्हें हर तरफ़ से आ घेरा और सभी उस में डूब गये। फ़िरऔ़न ने अपने कुफ़्र व घमण्ड की वजह से अपनी क़ौम को हलाकत में डाल दिया और सच्चे रास्ते की तरफ़ उन की रहनुमाई नहीं की।

80-82

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۝ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ

وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ۝ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ۝

'बनी इस्राईल' को अल्लाह तआ़ला ने जो नेअ़मतें दी थीं और उन पर जो एह़सानात किये थे उन्हीं का ज़िक्र हो रहा है और उन्हें नसीह़त की जा रही है कि वह अल्लाह का शुक्र बजा लाएँ ताकि वह नेअ़मतें बाक़ी रहें और नाशुक्री न करें और अल्लाह के अ़ज़ाब व ग़ज़ब से बचे रहें। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें उन के दुश्मन फ़िरऔ़न से निजात दी, फिर उन की दीनी रहनुमाई के लिए उन्हें हुक्म दिया कि मूसा के साथ कोहेतूर के पास जाएँ ताकि अल्लाह जब उन से बात करे तो इस मन्ज़र को देखकर उन का ईमान मज़बूत हो और तौरेत लेकर ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के साथ वापस आकर उस पर अ़मल करें।

अल्लाह ने उन पर यह भी एह़सान किया कि 'मैदाने तीह' में उन्हें खाने के लिए 'मन्न व सल्वा' अ़ता किया और नसीह़त की, कि हमारी दी हुई ह़लाल रोज़ी खाओ और ह़द से आगे न बढ़ो, वरना हमारे ग़ज़ब के ह़क़दार हो जाओगे और जिस पर हमारा ग़ज़ब नाज़िल हो जाता है वह हलाक हो जाता है और जो कुफ़्र व शिर्क और गुनाह व निफ़ाक़ से तौबः करता है, ईमान व नेक आ़माल की ज़िन्दगी अपनाता है और उस पर साबित क़दम रहता है तो हम उसे माफ़ कर देते हैं।

83-86

وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ۝ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ۝
قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝ فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ
غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ
اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ۝

फ़िरऔ़न की हलाकत के बाद जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) 'बनी इस्राईल' को लेकर आगे बढ़े तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हुक्म दिया कि वह अपनी क़ौम को लेकर तूर पहाड़ के पास जाएँ और वहाँ चालीस दिन और रात का रोज़ः रखें, ताकि अल्लाह उन्हें तौरेत अ़ता करे।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने अपने रब से बात करने के शौक़ में जल्दी से काम लिया और अकेले कोहेतूर की तरफ़ रवाना हो गये और अपने भाई ह़ज़रत हारून (अ़लै०) से कहा कि वह 'बनी इस्राईल' को लेकर इत्मिनान से आएँ। उन के जाने के बाद 'सामरी' ने 'बनी इस्राईल' को फ़ित्ना में डाल दिया। उस ने फ़िरऔ़नियों के छोड़े हुए ज़ेवरात से एक बछड़ा बनाया और उसमें ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) के घोड़े के खुर के नीचे की एक मुट्ठी मिट्टी डाल दी जिस की वजह से उस से एक आवाज़ निकलने लगी और 'बनी इस्राईल' इस से प्रभावित होकर अ़िबादत करने लगे और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के पास नहीं गये। जब चालीस दिन की मुद्दत पूरी हो गई तो अल्लाह ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को बज़रिये वह्य 'बनी इस्राईल' के गुमराही की ख़बर दी।

इस आयते करीमा में इसी वाक़िये की तरफ़ इशारा है और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को उन की जल्दी पर पकड़ की, कि आप ने बनी इस्राईल को छोड़कर तन्हा आने की क्यों जल्दी की, जबकि आप को हुक्म यह था कि उन्हें साथ लेकर आते? तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने जवाब दिया कि वह लोग मेरे पीछे आ

रहे हैं और मैंने शौक़ में जल्दी की थी ताकि तेरे हुक्म की पाबन्दी में मुझ से ज़रा भी ताख़ीर न हो और तू मुझ से राज़ी हो जाए तब अल्लाह ने उन्हें बताया कि हम ने आप की रवानगी के बाद आप की क़ौम को आज़्माइश में डाल दिया तो सामरी ने उन्हें गुमराह कर दिया।

यह सुनकर ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) बहुत ही नाराज़ हुए और 'बनी इस्राईल' के ह़ाल पर अफ़्सोस करने लगे और वापस आकर उन से पूछा और उन्हें अल्लाह का वादा याद दिलाया कि उस ने मुझे कोहेतूर के पास इसलिए बुलाया था कि तुम्हें तौरेत दे, लेकिन तुम एह़सान फ़रामोश निकले और चन्द दिन भी मेरा इन्तिज़ार न कर सके और मुझ से तौह़ीद पर साबित क़दमी का जो वादा किया था, उस की ख़िलाफ़वर्ज़ी करके अल्लाह के ग़ज़ब को दअ़वत दे दी।

87-89

قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ
اَلْقَى السَّامِرِيُّ ۝ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۙ فَنَسِيَ ۝
اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ۝

'बनी इस्राईल' ने कहा कि हम ने अपनी मर्ज़ी से आप से किये गये वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं की है बल्कि हुआ यह कि हमारी औ़रतों के पास फ़िरऔ़नियों के जो ज़ेवरात थे, जब आप की वापसी में देरी हुई तो 'सामरी' ने हम से कहा कि यह देरी इसलिए हो रही है कि तुम्हारे पास फ़िरऔ़नियों की औ़रतों के जो ज़ेवरात हैं वह तुम्हारे लिए ह़लाल नहीं हैं, इसलिए तुम लोग उन से छुट्कारा ह़ासिल कर लो, चुनांचे हम ने तमाम ज़ेवरात को एक गड्ढे में फेंक दिया। फिर 'सामरी' ने उन ज़ेवरात से एक बछड़ा बना लिया जिस से एक आवाज़ निकलने लगी तो 'सामरी' और उस के साथियों ने लोगों से कहा कि यही हमारा और मूसा का रब है, मूसा ने ग़ल़ती की है कि अपने रब की तलाश में कोहेतूर की तरफ़ गये हैं।

आयत नं० (89) में अल्लाह तआ़ला ने उन्हीं बछड़े के पुजारियों की अ़क़्ल पर मातम किया है कि क्या वह देख नहीं रहे हैं कि वह बछड़ा न उन की किसी बात का जवाब देता है और न ही उन का कोई नफ़ा व नुक़्सान उस के अख़्तियार में है, फिर उस की अ़िबादत क्यों करते हैं?

90-94

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ۝
قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ۝ قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ۝ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ۭ
اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ۝ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ
وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ۝

ह़ज़रत हारून (अ़लै०) ने 'बनी इस्राईल' को तम्बीह की थी कि तुम लोग बछड़े को अपना मअ़बूद (उपास्य) बना कर गुमराह कर गये हो। तुम्हारा रब वह अल्लाह है जिस की सिफ़त रह़मान है, इसलिए मेरी बात मानो और उसी की अ़िबादत करो, तो उन गुमराहों ने जवाब दिया कि ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के वापस आने तक हम अपने उसी मअ़बूद (उपास्य) की अ़िबादत करेंगे।

ह़ज़रत हारून (अ़लै०) ने जब इस बुत परस्ती पर उन का इस्रार देखा तो उन बारह हज़ार लोगों को लेकर अलग हो गये जिन्होंने बछड़े की पूजा नहीं की थी।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) जब वापस पहुँचे और लोगों को बछड़े के आस-पास नाचते और गाते देखा तो अपने भाई ह़ज़रत हारून (अ़लै०) से कहने लगे कि जब आप ने उन को गुमराह होते देखा तो आकर मुझे ख़बर क्यों नहीं की? आप ने मेरे हुक्म की कैसे मुख़ालिफ़त की?

शिद्दते नाराज़गी में उन के सर और दाढ़ी के बाल पकड़ कर खींचने लगे तो ह़ज़रत हारून (अ़लै०) ने कहा, मेरे भाई! मेरी दाढ़ी और सर के बाल न खींचो, मैंने तो यह सोचा था कि अगर मैं सिर्फ़ तौह़ीद वालों को लेकर तुम्हारे पास आ जाता हूँ और बछ़ड़े की अ़िबादत करने वालों को छोड़ देता हूँ तो तुम कहोगे कि आप ने बनी इस्राईल को दो ह़िस्सों में बाँट दिया और मेरी बात का ख़याल नहीं किया कि मेरी ग़ैर मौजूदगी में उन की देखभाल कीजिए।

'क़ुर्तुबी' लिखते हैं इस्लाम क़ुर्आन व सुन्नत का नाम है। अ़िबादत के लिए नाच गाने का इस्तेमाल सब से पहले 'सामरी' ने किया था, उसी ने बछड़ा बनाकर उस के अ़िबादत की ओर दअ़वत दी थी और उस के आस-पास नाच-गाना की मह़फ़िलें जमाई थीं।

नबी करीम (सल्ल०) और सह़ाबा-ए-किराम की मजलिस तो ऐसी होती थी कि जैसे उन के सरों पर चिड़िया बैठी हों। इसलिए किसी मुसलमान के लिए ऐसी मजलिसों में शरीक होना ह़लाल नहीं है जो अ़िबादत के नाम पर नाच-गाना के लिए इकट्ठा हुए हों। आइम्मा-ए-किराम में इमाम मालिक, अबू ह़नीफ़ा, शाफ़ई और अह़मद बिन ह़म्बल वग़ैरहुम का यही मज़हब है।

आयत नं० 95 से 114 तक

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾
قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ ۖ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ
عَاكِفًا ۚ لَّنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾ اِنَّمَآ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾ كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ
مِنْ اَنْۢبَاۗءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾ مَّنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ۭ وَسَاۗءَ لَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىِٕذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا
يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا قَاۗعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾
لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَىِٕذٍ
لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ
الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ۭ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾ وَكَذٰلِكَ
اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا
تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۡ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾

अनुवाद-

(95) (मूसा ने) कहा, ''ऐ सामरी! तेरा क्या मामला है।'' (96) उसने कहा, ''मुझे ऐसी चीज़ नज़र आयी, जो दूसरों को नज़र नहीं आयी, तो मैंने रसूल के पैर के निशान से एक मुट्ठी मिट्टी उठा ली, फिर उसको छोड़ दिया, और मुझे मेरे मन ने ऐसा ही सुझाया है।'' (97) कहा, ''अच्छा, तू जा! अब ज़िन्दगी भर तुझे यह कहते रहना है कि, 'कोई छुए नहीं', और तेरे लिए एक निश्चित वादा है, जो तुझ पर से हरगिज़ न टलेगा, और देख अपने इस मअ़बूद को जिस पर तू जमा बैठा है, हम अभी इसे जलाए डालते हैं, फिर इस (की राख) को दरिया में बहा देते हैं।'' (98) ''तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) वही अल्लाह है, जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, 'वह' अपने इल्म से हर चीज़ पर छाया हुआ है।'' (99) इसी तरह 'हम' आप से गुज़रे हुए किस्सों की ख़बरें बयान करते हैं, और 'हमने' आप को अपने पास से एक नसीह़त नामा दिया। (100) जिस व्यक्ति ने इससे मुँह फेरा, तो वह क़ियामत के दिन एक बोझ उठाएगा; (101) (वह लोग) हमेशा उसी में रहेंगे और यह बहुत बुरा बोझ होगा जिसको वह क़ियामत के दिन लादे होंगे। (102) जिस दिन सूर फूँका जाएगा और हम मुजरिमों को (इस ह़ालत में) इकट्ठा करेंगे और उनकी आँखें नीली पड़ गयी होंगी; (103) वे आपस में चुपके-चुपके कहेंगे ''तुम (दुनिया में) बस दस ही दिन रहे होगे।'' (104) 'हम' खूब जानते हैं, ''जो कुछ यह कहेंगे, उस समय उनमें सब से बेहतर अन्दाज़ा लगाने वाला कहेगा कि, तुम तो बस एक ही दिन ठहरे हो।'' (105) और यह लोग आपसे पहाड़ों के बारे में पूछते हैं कह दीजिए कि, ''मेरा 'रब' इन्हें (धूल की तरह) उड़ा देगा, (106) फिर ज़मीन को एक समतल मैदान बना कर छोड़ेगा। (107) न तुम उसमें कोई टेढ़-मेढ़ देखोगे और न कहीं ऊँच नीच।'' (108) उस दिन लोग एक पुकारने वाले के पीछे चलेंगे और 'उसकी' पैरवी से अकड़ न दिखा सकेंगे, और सारी आवाज़ें रह़मान के सामने दब जाएँगी तो एक आहट के सिवा

तुम कुछ न सुन सकोगे। (109) उस दिन सिफ़ारिश कुछ काम न आएगी, मगर उस व्यक्ति की जिसको रह़मान इजाज़त दे, और उसके बोलने को पसंद करे। (110) 'वह' जानता है, सब के अगले पिछले ह़ालात को; और वे अपने इल्म से उस पर अहाता (घेरा) नहीं कर सकते। (111) तमाम चेहरे झुके होंगे, उस ज़िन्दा बाक़ी रहने वाले (अल्लाह) के सामने, नाकाम रहेगा वह, जो जुल्म लेकर आएगा। (112) और जिसने भले काम किये होंगे, और वह ईमान वाला भी होगा, तो उसके लिए न किसी जुल्म का डर होगा, और न ह़क़ मारे जाने का। (113) और इसी तरह 'हमने' इसे अ़रबी क़ुर्आन के रूप में उतारा है, और इसमें तरह-तरह से चेतावनी दी, ताकि लोग उससे डरें या (अल्लाह) उनके लिए समझ पैदा करे। (114) तो सबसे ऊँचा अल्लाह, सच्चा बादशाह है; और आप क़ुर्आन के बारे में जल्दी न किया कीजिए, जब तक कि इसकी वह़्य आप पर पूरी न कर दी जाए, और कहिये कि "ऐ मेरे रब, मेरे इल्म में ज़्यादती कर।"

आयत नं० 95 से 114 तक की व्याख्या

95-96 قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾

'सामरी' ह़क़ीक़त में मुनाफ़िक़ था और बज़ाहिर इस्लाम क़ुबूल करने से पहले गाय की पूजा करता था, इसलिए जैसे ही उसे मौक़ा मिला अपने कुफ़्र की तरफ़ लौट गया और लोगों को बछड़े की अ़िबादत करवाने लगा। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने उस से पूछा कि तुम ने ऐसा क्यों किया और लोगों को बछड़े की अ़िबादत की तरफ़ क्यों बुलाया? तो जवाब दिया कि मैंने अपनी आँखों से वह चीज़ देख ली थी जो तुम्हारी क़ौम ने नहीं देखी थी।

अक्सर मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने 'सामरी' को फ़ित्ना में डालना चाहा, इसलिए उस ने ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) को एक घोड़े पर सवार देखा और देखा कि जहाँ घोड़े की टाप पड़ी उस जगह निशानात आ गये। सामरी देखकर समझ गया कि अगर ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) के घोड़े के खुर की मिट्टी किसी ज़मीन पर डाल दी जाएगी तो उस में ज़िन्दगी़ आ जाएगी। इसलिए उस ने उस मिट्टी को मह़फ़ूज़ कर लिया और जब बछड़ा बनाया तो उस के अन्दर वह मिट्टी डाल दी जिस के असर से उस से बछड़े की आवाज़ आने लगी।

97 قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ ۖ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۚ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने सामरी की ज़बानी तफ़्सीलात सुनने के बाद अल्लाह के हुक्म से उसे शहर से निकाल दिया और 'बनी इस्राईल' को हुक्म दिया कि कोई आदमी भी उस से बात न करे और हर शख़्स उस से अलग हो जाए।

एक मतलब तो यह है और दूसरा मतलब यह है कि उन्होंने उसे अल्लाह का यह फ़ैसला सुना दिया

कि उसे हमेशा के लिए छूत की बद्तरीन बीमारी लग गई। वह जब तक ज़िन्दा रहेगा उस का ह़ाल यह होगा कि किसी को अपने क़रीब न आने देगा और हर शख़्स से कहेगा कि मेरे क़रीब न आओ। لَامِسَاسَ के शाब्दिक माने यह है कि "मुझे कोई न छुए और मैं किसी को न छुओं"।

उल्म-ए-तफ़्सीर ने इस का सब से बेहतर मतलब यह बयान किया है कि अल्लाह तआ़ला ने सामरी पर लोगों को क़रीब जाने से रोक दिया था, वह जब भी किसी को छूता तो उसे सख़्त बुख़ार आ जाता। इसलिए किसी आदमी को अपने से क़रीब होते देखकर भाग लेता ओर चीखने लगता कि मेरे क़रीब न आओ।

चुनाँचे वह शहर से निकल कर जंगल में चला गया और जानवरों की सी ज़िन्दगी गुज़ारने लगा और इसी ह़ाल में मर गया। क़ुर्आन के ज़ाहिरी शब्द इसी मतलब की तस्दीक़ करते हैं, उस ने ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) के घोड़े के खुर की मिट्टी छोड़कर 'बनी इस्राईल' को गाय की अ़िबादत पर लगा दिया था, इसीलिए अल्लाह ने उसे यह सज़ा दी कि उस के बाद ज़िन्दगी भर वह किसी आदमी को न छू सका।

यह दुनियावी सज़ा थी जो 'सामरी' को अल्लाह की ओर से मिली और आख़िरत के अ़ज़ाब के बारे में उसे बताया गया कि उस के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, जब वह वक़्त आ जाएगा तो तुम्हें भुगतना पड़ेगा, किसी ह़ाल में भी तुम उस से बच न सकोगे।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने सामरी से कहा कि तुम अपने जिस मअ़बूद के सामने हर वक़्त झुके रहते थे, हम उसे जला कर राख बना देंगे और उस की राख समुद्र में बिखेर देंगे ताकि उस का कोई निशान बाक़ी न रहे, चुनाँचे उन्होंने ऐसा ही किया, उन का मक़्सद 'सामरी' और दूसरे बुत परस्तों के सामने उन के उस झूठे और ह़क़ीर मअ़बूद की ह़िक़ारत का इज़्हार था।

98 إِنَّمَآ إِلَٰهُكُمُ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

'सामरी' के मुश्रिकाना अ़क़ीदे और बुत परस्ती को रद्द करने के बाद ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने 'बनी इस्राईल' के अ़क़ीद-ए-तौह़ीद को बयान किया है कि तुम सब का मअ़बूद (उपास्य) अल्लाह है, जिस के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं है, न कि वह बछड़ा जिस के ज़रिये 'सामरी' ने तुम सब को गुमराह कर दिया था।

फिर कहा कि उस अल्लाह का इ़ल्म हर चीज़ को घेरे हुए है और उस के सिवा हर शख़्स का इ़ल्म और उस की क़ुद्रत नाक़िस है, इसलिए उस के सिवा कोई दूसरे मअ़बूद (उपास्य) कैसे हो सकते हैं?

99-101 كَذَٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ ءَاتَيْنَٰكَ مِن لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾ مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُۥ يَحْمِلُ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خَٰلِدِينَ فِيهِ ۖ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾

नबी करीम (सल्ल०) से कहा जा रहा है कि जिस तरह़ हम ने आप के लिए इन आयतों में मूसा व फ़िरऔ़न और मूसा व 'बनी इस्राईल' के वाक़िआ़त बयान किये हैं, उसी तरह़ आइन्दा भी पिछली क़ौमों के वाक़िआ़त सुनाएँगे और हम ने आप को ख़ासतौर से क़ुर्आन जैसी अ़ज़ीम किताब दी है, जिस में

मोमिनों के लिए नसीह़त वाली ख़बरें हैं।

ऐसी मुकम्मल किताब किसी भी 'बनी इस्राईल' को नहीं दी गई हैं। जो इस से मुँह मोड़ेगा और इस पर ईमान नहीं लाएगा, अ़मल नहीं करेगा, वह अपने इन्कार की वजह से मैदाने मह़शर में बहुत सारे गुनाहों के साथ आएगा, जो उस के कमज़ोर कन्धे पर बहुत भारी बोझ होंगे जिन की वजह से वह जहन्नम में चला जाएगा।

102-103 يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۝ يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۝

यहाँ मुराद दूसरा 'सूर' है, जिस के फूंके जाने के बाद तमाम लोग ज़िन्दा होकर मैदाने मह़शर की तरफ़ चल पड़ेंगे और इस की दलील आयत का दूसरा ह़िस्सा है, जिस में अल्लाह तआ़ला ने स्पष्ट कर दिया है कि उस दिन हम मुजरिमों को जमा करेंगे इस ह़ाल में कि उन के चेहरे मारे रोअ़ब व दहशत के काले ज़र्द होंगे और एक दूसरे से चुपके-चुपके कहेंगे कि दुनिया में हमारी ऐ़श परस्ती की ज़िन्दगी दस दिन से ज़्यादा की नहीं थी।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि आख़िरत की हौलनाकियों को देखकर दुनिया में गुज़ारे हुए ख़ुशियों के दिन चन्द रोज़ के हैं, क़ियामत के दिन लोग अफ़्सोस करेंगे कि काश! हम ने परहेज़गारी वाली ज़िन्दगी गुज़ारी होती तो इस हमेशा की ज़िन्दगी में रुस्वाई और अ़ज़ाब का मुँह न देखना पड़ता।

104 نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ۝

उन मुजरिमीन में कुछ लोग ऐसे होंगे जिन की राय दुनियावी ज़िन्दगी और उस की ख़ुशरंगियों के बारे में ह़क़ीक़त के ज़्यादा क़रीब होगी। उन पर क़ियामत की हौलनाकियों का ऐसा असर होगा कि वह मुजरिमों की बात को रद्द करते हुए कहेंगे कि हमारी दुनियावी ज़िन्दगी तो केवल एक दिन की थी।

आयत का मक़्सद दुनिया के ज़िन्दगी की ह़िक़ारत और कमतरी साबित करनी है और यह कि यह बात मुजरिमों की ज़बानों पर क़ियामत के दिन खुलकर आएगी और अफ़्सोस करते हुए कहेंगे कि ऐ काश! हम ने ज़िन्दगी की ऐ़श में मश्ग़ूल होकर आख़िरत की तैयारी को भुलाया न होता?

105-107 وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۝ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝ لَّا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۝

मुश्रिकीने मक्का ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा कि क़ियामत के दिन उन पहाड़ों का क्या ह़ाल होगा? तो अल्लाह ने आप (सल्ल०) से फ़रमाया, आप उन्हें जवाब दीजिए कि मेरा रब उन्हें जड़ से उखाड़ कर रेत बना देगा, फिर रूई के गाले की तरह़ उन्हें उड़ा देगा और उन की जगहें बराबर और चिकनी हो जाएँगी जिन में न कोई पैदाइश होगी और न कोई इ़मारत और न ज़मीन का कोई ह़िस्सा ऊँचा-नीचा होगा।

108 يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ۖ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَٰنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۝

उस दिन तमाम लोग हमेशा-हमेश के लिए चल पड़ेंगे, कोई भी उस की राह से इधर-उधर नहीं होगा और अल्लाह तआ़ला के रोब व दबदबे से पूरे मैदाने महशर पर सुकून तारी होगा, कोई धीमी आवाज़ भी नहीं सुनाई देगी।

109 يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾

क़ियामत के दिन उसी शख़्स की शफ़ाअ़त किसी दूसरे के ह़क़ में क़ुबूल होगी जिस को अल्लाह तआ़ला शफ़ाअ़त करने की इजाज़त देगा और उस की शफ़ाअ़त उसी शख़्स के ह़क़ में क़ुबूल होगी जिस के लिए शफ़ाअ़त की इजाज़त दी जाएगी और उसी के लिए शफ़ाअ़त करने वाले की शफ़ाअ़त क़ाबिले क़ुबूल होगी।

जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः अम्बिया आयत नं० (28) में फ़रमाया है وَلَا يَشْفَعُونَ ۙ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ "वह किसी की सिफ़ारश नहीं करेंगे सिवाय उन के जिन से अल्लाह ख़ुश हो।"

'मुफ़स्सिर ब़ग़वी' लिखते हैं यह आयत दलील है कि ग़ैर मोमिनों के लिए कोई शफ़ाअ़त नहीं होगी। साह़िबे 'फ़त्ह़ुल बयान' लिखते हैं कि यह आयत बहुत बड़ी दलील है कि फ़ासिक़ों के ह़क़ में शफ़ाअ़त होगी, इसलिए कि कलिम-ए-शहादत ऐसा क़ौल है जो अल्लाह को पसन्द है।

110 يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١٠﴾

क़ियामत में क्या फ़ैसला होगा? कौन जन्नत में दाख़िल किया जाएगा और किसे जहन्नम में ढ़केल दिया जाएगा? और उन सब ने दुनिया में क्या अच्छे या बुरे आ़माल किये थे, इन तमाम बातों का इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह को है। इसलिए क़ियामत के दिन उस का फ़ैसला इन्साफ़ के मुताबिक़ होगा और उस की रह़मत हर हाल में अ़ज़ाब पर ग़ालिब (प्रभावी) होगी। मख़्लूक़ का इ़ल्म उस की ज़ात व सिफ़ात और उस के इ़ल्म का अह़ाता नहीं कर सकती।

111 وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

क़ियामत के दिन तमाम लोगों की गर्दनें अल्लाह के सामने झुकी होंगी। जिस की सिफ़त **'ह़य्यि'** है यानी जो हमेशा से ज़िन्दा है और हमेशा ज़िन्दा रहेगा और जिस की सिफ़त **'क़य्यूम'** है यानी जिसे कभी नींद न आई और न कभी आएगी, जो हर चीज़ की योजना बनाने वाला है, वह अपनी ज़ात व सिफ़ात में मुकम्मल और हर चीज़ उस की मोह़ताज है।

112 وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾

दुनिया में जिस की मौत शिर्क पर होगी, वह आख़िरत में बहुत बड़ा घाटा उठाने वाला होगा और जो ईमान की ह़ालत में नेक आ़माल कर के दुनिया से रुख़सत होगा, न उस के गुनाहों में ज़्यादती की जाएगी और न ही उस की नेकियाँ कम की जाएँगी।

113 وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۝

चूंकि क़ियामत का आना और नेकी व बुराई का बदला पाना यक़ीनी है, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम को फ़सीह़ व बलीग़ अ़रबी ज़बान में नाज़िल फ़रमाया, ताकि वह इन्सानों को जन्नत की ख़ुशख़बरी दे और जहन्नम से डराए।

इस में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की धमकियाँ हैं ताकि लोग कुफ़्र और गुनाह से बचें और इस में पिछली क़ौमों की हलाकतों के वाक़िआ़त भी हैं ताकि उन्हें सुनकर अपने सुधार की कोशिश करें।

114 فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۡ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ۝

अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा कोई बुलन्द व अ़ज़ीम नहीं है, उस के क़ब्ज़े क़ुद्रत से कोई चीज़ बाहर नहीं है और उस के इरादा व चाहत में कोई दख़्ल अन्दाज़ नहीं हो सकता है और उस से ज़्यादा कोई इन्साफ़ करने वाला नहीं है, वह हर एक को उस का पूरा-पूरा ह़क़ देता है।

जब ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) नबी करीम (सल्ल०) को क़ुर्आन पढ़ाते तो एह़तियात की वजह से हर शब्द और हर कलिमा उन के साथ-साथ पढ़ते जाते। अल्लाह तआ़ला ने आप से फ़रमाया कि ऐसा न कीजिए बल्कि इन्तिज़ार कीजिए ताकि आप आयतों को अच्छी तरह़ सुन और समझ लें और फिर उन्हें याद कीजिए जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः क़ियामः आयात नं० (16/ 17) में फ़रमाया है

لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۝ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۝

"ऐ नबी! आप क़ुर्आन को जल्दी याद करने के लिए अपनी ज़बान को ह़रकत न दीजिए उस को जमा करना और आप की ज़बान से उस को पढ़वाना हमारे ज़िम्मे है"।

आयते करीमा के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने आप को नसीह़त की है कि अपने रब से इ़ल्म की ज़्यादती की दुआ़ करते रहें।

साह़िबे 'फ़त्हुल् बयान' लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को इ़ल्म के सिवा किसी चीज़ में ज़्यादती तलब करने की नसीह़त नहीं की।

आयत नं० 115 से 135 तक

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾
فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾ اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ وَاَنَّكَ
لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾
فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ اجْتَبٰهُ
رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا
يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى
وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾ وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ
رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿١٢٨﴾ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ
رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا
مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٣١﴾ وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ
عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي
الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ
اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٤﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾

अनुवाद-

(115) और 'हमने' इससे पहले आदम से एक वादा लिया था, लेकिन वह भूल गये, और 'हमने' उनमें इरादे की मज़बूती न पाई। (116) और जब 'हमने' फ़रिश्तों से कहा कि ''आदम को सज्दः करो, तो उन्होंने सज्दः किया, मगर इब्लीस ने इन्कार किया।'' (117) तो 'हमने' कहा, ''ऐ आदम! यह आप का और आपकी पत्नी का दुश्मन है, तो ऐसा न हो कि यह आप दोनों को जन्नत से निकलवा दे, तो आप मुसीबत में पड़ जाएँ। (118) आप के लिए तो ऐसा (आराम) है कि न आप यहाँ भूखे रहेंगे और न नंगे; (119) और यह कि न यहाँ आप को प्यास लगेगी और न धूप।'' (120) तो शैतान ने उनको बहकाया, कहा ''ऐ आदम! क्या मैं तुमको (ऐसा) पेड़ बताऊँ (जो) हमेशा की ज़िन्दगी दे और (ऐसी) बादशाहत, जो कभी न खत्म हो?'' (121) फिर दोनों ने उस पेड़ का फल खा लिया, तो उन पर उनकी शर्मगाहें (गुप्त अंग) खुल गईं और वे जन्नत के पत्तों से अपने को ढ़ांपने लगे, और आदम ने अपने 'रब' की नाफ़रमानी की, तो वह राह से भटक गये। (122) फिर उनके रब ने उन्हें चुन लिया और उनकी तौबः कुबूल कर ली और सीधी राह बताई। (123) कहा, ''आप दोनों(जन्नत से) उतरे! आप में कुछ लोग कुछ के दुश्मन होंगे'' तो अगर 'मेरी' ओर से आप के पास कोई हिदायत आए, तो जो व्यक्ति मेरी राह पर चलेगा, वह न भटकेगा, न महरूम रहेगा; (124)

और जो मेरी नसीह़त से मुँह मोड़ेगा तो उसकी ज़िन्दगी तंगी में गुज़रेगी और क़ियामत के दिन 'हम' उसको अन्धा उठाएँगे।'' (125) वह कहेगा, ''ऐ मेरे रब! 'तूने' मुझे अन्धा क्यों उठाया, जबकि मैं आँखों वाला था।'' (126) 'वह' कहेगा, ''इसी तरह तेरे पास 'हमारी' निशानियाँ आयीं तो 'तूने' उन्हें भुला दिया, इसी तरह आज हम तुझ को भुला देंगे।'' (127) और इसी तरह 'हम' उसे बदला देते हैं जो व्यक्ति ह़द से गुज़र जाता है, और अपने 'रब' की निशानियों पर ईमान नहीं लाता; और आख़िरत का अ़ज़ाब बहुत सख़्त और बहुत देर तक बाक़ी रहने वाला है। (128) तो क्या यह बात लोगों के लिए हिदायत का ज़रिया न बनी, कि 'हम' उनसे पहले कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं, जिनकी बस्तियों में यह चलते-फिरते हैं? इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक़्ल रखते हैं (129) और अगर आप के रब की ओर से पहले ही एक बात तय न हो गयी होती, और समय निश्चित न किया जा चुका होता, तो अ़ज़ाब उनको ज़रूर पकड़ लेता। (130) तो जो कुछ यह कह रहे हैं, उस पर सब्र से काम लीजिए, और अपने 'रब' की तअ़रीफ़ के साथ तस्बीह़ किया कीजिए, सूरज के निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले, और रात की कुछ घड़ियों में और दिन के किनारों पर तस्बीह़ किया कीजिए, ताकि आप राज़ी हो जाएँ। (131) और उनकी ओर आँख उठा कर न देखिए जो कुछ 'हमने' उनमें से कुछ लोगों को दुनिया के आराम की चीज़ें दे रखी हैं, ताकि 'हम' उसके ज़रिये उन्हें आज़माएँ; और आप के 'रब' की रोज़ी बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। (132) और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म कीजिए, और खुद भी उस पर जमे रहिए 'हम' आप से रोज़ी नहीं माँगते, (बल्कि) आप को 'हम' ही रोज़ी देते हैं, और अच्छा अंजाम तो परहेज़गारों के लिए है। (133) और कहते हैं, ''यह अपने रब की ओर से कोई निशानी हमारे पास क्यों नहीं लाते?'' क्या इनके पास उसका स्पष्ट प्रमाण नहीं आ चुका, जो कुछ पहले की किताबों में मौजूद है? (134) और अगर 'हम' इस पहली (रसूल के आने) से पहले ही इन्हें अ़ज़ाब के ज़रिये हलाक कर देते, तो वे कहते कि ''ऐ हमारे रब! 'तूने' हमारे पास कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि ज़लील और बदनाम होने से पहले, हम 'तेरे' हुक्म पर चलते?'' (135) कह दीजिए, ''हर एक इन्तिज़ार में है, तो तुम भी इन्तिज़ार करो, जल्द ही तुम जान लोगे कि कौन सीधी राह पर चलने वाले हैं और कौन हिदायत (सीधी राह) पाए हुए हैं।

आयत नं० 115 से 135 तक की व्याख्या

115 وَلَقَدْ عَهِدْنَآ إِلَىٰٓ ءَادَمَ مِن قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهُۥ عَزْمًا ﴿١١٥﴾

इस आयते करीमा में नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत आदम (अ़लै०) व ह़व्वा को जब जन्नत में ठहराया तो उन से अ़हद लिया कि वह एक ख़ास पेड़ का फल नहीं खाएँगे और शैतान के किसी बहकावे में नहीं आएँगे, लेकिन वह इस अ़हद पर क़ायम नहीं रहे और शैतान की बात मान कर उन्होंने मना किये हुए दरख़्त का फल खा लिया।

ह़ज़रत आदम (अ़लै०) के बाद उन की औलाद का भी यही ह़ाल रहा, वह भी अपने बाप की तरह़ वादा ख़िलाफ़ रही और अपने दुश्मन शैतान की पैरवी करती रही और अल्लाह के हुक्मों को पीठ पीछे डालती रही। इसलिए ऐ मेरे नबी (सल्ल०)! अगर आप की क़ौम भी शैतान की पैरवी करती है और ईमान

नहीं लाती तो आप को ग़मग़ीन नहीं होना चाहिए।

116-117 وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ۝ فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ۝

अल्लाह से वादा करने के बाद ह़ज़रत आदम (अ़लै०) ने इरादा किया था कि वह उस के हर ह़ाल में पाबन्द रहेंगे, लेकिन शैतान उन के पीछे लगा रहा यहाँ तक कि उन के इरादे की मज़बूती जाती रही। इन आयतों में उसी की तफ़्सील (विस्तार) है।

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया कि आप लोगों को यह वाक़िआ़ सुना दीजिए। जब हम ने फ़रिश्तों को आदम के लिए सम्मान (तअ़ज़ीम) के तौर पर सज्दः करने का हुक्म दिया तो तमाम फ़रिश्तों ने हुक्म माना, लेकिन इब्लीस जो जिन्नों में से था उस ने घमण्ड व ग़ुरूर में आकर सज्दः करने से इन्कार कर दिया। फिर हम ने आदम से कहा कि यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है, ऐसा न हो कि तुम दोनों उस की बात मान लो और तुम्हें जन्नत से निकल जाना पड़े और दुनिया में जाकर अपने और अपनी बीवी के खाने के लिए खेती और मेह़नत व मज़दूरी करनी पड़े जो तुम्हारी परेशानी का बाइस हो। यह क़िस्सा पूरी तफ़्सील के साथ सूरः बक़रः में गुज़र चुका है।

118-119 اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ۝ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ۝

अल्लाह तआ़ला ने यह भी कहा, ऐ आदम! हम ने तुम्हें बड़ी नेअ़मत दी है, उस की ह़िफ़ाज़त करना और कोई ऐसा काम न करना कि यह नेअ़मत तुम से छिन जाए। यह वह जन्नत है जिस में तुम्हें न भूक लगेगी न ही इस में कपड़ों की ज़रूरत होगी, न प्यास लगेगी और न धूप की तपिश तुम्हें तक्लीफ़ देगी।

120-122 فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ۝ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۛ

وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ۝ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ۝

लेकिन शैतान जो घात में लगा था, उस ने ह़ज़रत आदम (अ़लै०) के दिल में वस्वसा पैदा करना शुरु किया और कहा ऐ आदम! क्या मैं तुम्हें एक ऐसा दरख़्त बताँऊ जिसे खाने के बाद तुम दोनों जन्नत से कभी न निकलोगे और हमेशा के लिए यहाँ तुम्हारा राज रहेगा? दोनों उस के बहकावे में आ गये और उस मना किये हुए पेड़ का फल खा लिया, जिस के नतीजे में दोनों नंगे हो गये तो दरख़्तों के पत्ते तोड़-तोड़ कर पर्दापोशी करने लगे, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत आदम (अ़लै०) की तबीअ़त में यह बात रख दी थी कि वह नंगा रहना गवारा नहीं करेंगे। ह़ज़रत आदम (अ़लै०) ने अपने रब की नाफ़रमानी की और शैतान की बात मान कर मना किये हुए पेड़ का फल खा लिया तो ग़लत राह पर पड़ गये।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि उन से यह ग़लती पहले हुई थी। उस ग़लती की उन्होंने अपने रब से मग़्फ़िरत माँगी तो अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया और अपनी पैग़म्बरी के लिए उन्हें चुन लिया।

123 قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ۝

कुछ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि اهْبِطَا से मुराद इब्लीस व आदम हैं और जो ह़व्वा अपने शौहर आदम के अधीन है और कुछ लोगों का ख़याल है कि इस से मुराद ह़ज़रत आदम व ह़व्वा हैं। इसलिए कि बाक़ी इन्सान उन्हीं दोनों से वजूद में आए हैं। उस के बाद बहुबवचन शब्द से वह दोनों और उन की औलाद सभी मुराद हैं।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत आदम (अ़लै०) व ह़व्वा और 'इब्लीस' से कहा कि तुम लोग जन्नत से निकल कर ज़मीन पर चले जाओ, जहाँ तुम लोग एक दूसरे के दुश्मन होगे, इब्लीस इन्सानों का दुश्मन होगा और इन्सान आपस में एक दूसरे के दुश्मन होंगे, वहाँ जब तुम्हारे पास मेरा कोई रसूल आए और मेरा पैग़ाम पहुँचाए तो जो शख़्स मेरे भेजे गये दीन की पैरवी करेगा वह न दुनिया में गुमराह होगा और न आख़िरत में बद्बख़्त होगा।

124-126 وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ۝ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ۝ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ۝

जो शख़्स अल्लाह के दीन से मुँह मोड़ेगा और क़ुर्आन करीम की तिलावत और उस पर अ़मल करना छोड़ देता है, अल्लाह तआ़ला उसे उस बुरे अ़मल का यह बदला देता है कि हर तरफ़ से उसे तंगी घेर लेती है और रोज़ी की ज़्यादती के बावजूद उस का सुकून व इत्मिनान छिन जाता है और मरने के बाद उस की क़ब्र भी उस पर तंग हो जाती है और उस की बरज़ख़ की लम्बी ज़िन्दगी बद्बख़्ती वाली बन जाती है और क़ियामत के दिन उसे अन्धा उठाया जाएगा और जब अपनी इस ह़ालत पर तअ़ज्जुब करते हुए अल्लाह तआ़ला से सवाल करेगा कि ऐ मेरे रब! तूने मुझे अन्धा क्यों बना दिया, मैं तो दुनिया

में और क़ब्र से उठने तक आँखों वाला था? तो अल्लाह तआ़ला उस से कहेंगे कि तुम दुनिया में इसी तरह़ आँखे रखने के बावजूद दिल के अन्धे थे और हमारी आयतों को ठुकराते थे, इसलिए आज तुम जहन्नम में डाल दिये जाओगे और कोई तुम्हारा पूछने वाला नहीं होगा।

127 وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَ اَبْقٰى ۝

इस में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो लोग अपनी जी चाही ज़िन्दगी में मस्त हैं और अल्लाह के दीन को पीठ पीछे डाल देते हैं, अल्लाह उन्हें दुनिया व आख़िरत में ऐसा ही बदला देता है और आख़िरत का अ़ज़ाब बड़ा ही दर्दनाक और बहुत ही लम्बा होगा।

128 اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝

मुश्रिकीने क़ुरैश के बारे में कहा जा रहा है कि क्या हमारी किताब और हमारे रसूल को झुठलाने वाले उन काफ़िरों की नसीह़त के लिए बहुत सी पिछली क़ौमों की हलाकतों के क़िस्से काफ़ी नहीं हैं। वह तो 'आ़द' व 'समूद' और 'लूत' की बस्तियों से गुज़रते हैं और देखते हैं कि अब उन का नाम व निशान भी बाक़ी नहीं है। बेशक अच्छी अ़क़्ल रखने वालों के लिए इन वाक़िआ़त में बड़ी नसीह़त की बातें होती हैं।

सूरः ह़ज आयत नं० (46) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَاۤ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ۝

"क्या उन्होंने ज़मीन में सैर व सियाह़त नहीं की जो उन के दिल इन बातों को समझने वाले होते या कानों से ही इन वाक़िआ़त को सुन लेते, बात यह है कि सिर्फ़ आँखें ही अन्धी नहीं होतीं बल्कि वह दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।

129 وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّ اَجَلٌ مُّسَمًّى ۝

इस उम्मत के बारे में अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला है कि वह इन्हें बिल्कुल तबाह व हलाक नहीं करेगा, इसलिए कि नबी करीम (सल्ल०) सरापा रह़मत हैं। यही वजह है कि मुश्रिकीने मक्का के हज़ार कुफ़्र व सरकशी के बावजूद अल्लाह तआ़ला ने उन पर अ़ज़ाब नाज़िल नहीं किया, बल्कि उन का मामला आख़िरत के दिन तक के लिए छोड़ दिया वरना उन का कुफ़्र व घमण्ड तो ऐसा था कि अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब उन्हें इसी दुनिया में अपनी गिरिफ़्त में ले लेता।

130 فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ قَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ۝

नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी जा रही है कि यह कुफ़्फ़ारे मक्का जो आप को जादूगर, शायर और झूठा कहा करते हैं, तो आप इन बातों का ख़याल न कीजिए। उन को अ़ज़ाब दिये जाने का जो वक़्त

मुक़र्रर है उस वक़्त उन्हें कोई नहीं बचा सकेगा, आप सब्र व सुकून के साथ अपने रब की ह़म्द व सना में लगे रहिए। सूरज के निकलने और सूरज के डूबने से पहले अपने रब की तअ़रीफ़ बयान करने के लिए तस्बीह़ पढ़िए यानी फ़ज्र व अ़स्र की नमाज़ों का ख़ूब एहतिमाम कीजिए और रात के वक़्त में भी अपने रब की पाकी बयान कीजिए यानी मग़्रिब व अ़िशा की नमाज़ों का भी ख़याल कीजिए और देखिए! दिन के दोनों किनारों में अपने रब की पाकी बयान करने का ज़्यादा ख़याल कीजिए।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इस से मुराद फ़ज्र और अ़स्र की नमाज़ें हैं। उन का दोबारा ज़िक्र ख़ुसूसी एहतिमाम की वजह से किया गया है। कुछ लोग कहते हैं कि इस से मुराद ज़ुह्र की नमाज़ है और कुछ इस से दिन के मुख़्तलिफ़ अवक़ात में नफ़्ल नमाज़ें मुराद लेते हैं।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि आप इस पर अ़मल कीजिएगा तो आप को अपने रब की ओर से ऐसा अज्र मिलेगा कि आप ख़ुश हो जाएँगे।

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' ने ह़ज़रत जरीर (रज़ि०) से रिवायत की है, नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमायाः तुम लोग अपने रब को देखोगे जैसे उस चाँद को देखते हो, उस को देखने से तुम्हें कोई चीज़ न रोक सकेगी। अगर तुम से हो सके तो सूरज के निकलने और सूरज के डूबने से पहले की नमाज़ों की अदाएगी में सुस्ती न करो, फिर आप (सल्ल०) ने यही आयत पढ़ी।

131 وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٣١﴾

अहले कुफ़्र व शिर्क को दुनिया की ज़िन्दगी में आराम व राह़त के जो अस्बाब दिये गये हैं वह दीनी एतिबार से कोई अच्छी चीज़ नहीं है बल्कि उन के लिए आज़्माइश और फ़ित्ना का ज़रिया हैं, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को उन की ख़्वाहिश करने से मना फ़रमाया और बताया कि आप का रब नेक अ़मल करने वालों को आख़िरत में जो अज्र व सवाब देगा वह बहुत ही बेहतर और हमेशा का होगा।

एक दूसरा अर्थ यह भी बयान किया गया है कि अल्लाह ने आप को जिस दर्जे पर रखा है और जो आख़िरी दीन, दीने इस्लाम देकर भेजा गया है, वह उन दुनियावी नेअ़मतों से कहीं ज़्यादा बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला है जो मुश्रिकीन को दिया गया है, दोनों के दर्मियान दूर-दूर की भी मुनासिबत नहीं है। इसलिए कि दीने इस्लाम दुनिया व आख़िरत की कामयाबी का ज़रिया है और उन्हें जो चीज़ मिली है वह कुछ ही दिनों के बाद ख़त्म हो जाने वाली है।

'बज़्ज़ार' 'अबू यअ़ला' और 'इब्ने अबी शैबा' वग़ैरहुम ने ह़ज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़ि०) से रिवायत की है कि एक दिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास एक मेहमान आया, आप के घर में कोई चीज़ नहीं थी तो आप ने मुझे एक यहूदी के पास भेजा कि वह 'माहे रजब' का चाँद निकलने तक के वादे पर आटा उधार दे दे। उस ने 'रहन' का मुताल्बा किया वापस आकर मैंने आप (सल्ल०) को ख़बर दी तो आप

(सल्ल०) ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैं आसमान में अमीन हूँ और ज़मीन में भी, अगर वह मुझे उधार दे देता तो मैं ज़रूर उस के पैसे अदा कर देता, मेरी लोहे की ज़िरह (कवच) लेकर उसे दे दो। मैं अभी वहाँ से वापस भी न हुआ था कि यह आयत नाज़िल हुई, जिस में आप (सल्ल०) को दुनिया की लालच न करने की नसीह़त है।

132 وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ۖ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया है कि वह अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दें।

कुछ लोगों का ख़याल है कि यहाँ पूरी उम्मत मुराद है यानी सब लोग अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दें। आप (सल्ल०) इस हुक्म में सबसे पहले दाख़िल हैं। आप से कहा गया है कि आप नमाज़ की पाबन्दी कीजिए और दुनिया के कामों में मश्ग़ूल होकर इस से ग़ाफ़िल न हो जाइए।

'तब्रानी' और 'बैहक़ी' वग़ैरह ने अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम से रिवायत की है, जिस की सनद को 'ह़ाफ़िज़ सियोती' ने सह़ी कहा है कि नबी करीम (सल्ल०) के घराने को जब कोई परेशानी होती तो आप उन्हें नमाज़ पढ़ने का हुक्म देते और وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ पूरी आयत पढ़ते।

अल्लाह तआ़ला ने आगे फ़रमाया हम आप से यह नहीं कहते हैं कि अपने लिए और बाल बच्चों के लिए रोज़ी की फ़िक्र में लग जाएँ और नमाज़ से ग़ाफ़िल हो जाएँ। आप को और आप के घर वालों को रोज़ी हम देंगे और अच्छा अन्जाम तक़्वा वालों के लिए है।

"ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल् आ़स से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब बच्चे सात बरस के हो जाएँ (नमाज़ बाक़ायदा अदा न करें) तो उन्हें मार कर पढ़ाओ"। **(अबूदाऊद)**

133 وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّن رَّبِّهِ ۖ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ۝

कुफ़्फ़ारे मक्का कहा करते थे कि मुह़म्मद अगर नबी है तो पिछले अम्बिया की तरह़ अपनी सच्चाई की कोई निशानी क्यों नहीं पेश करते या हम लोग जिन निशानियों का मुताल्बा करते हैं उन में से कोई निशानी क्यों नहीं लाते? अल्लाह तआ़ला ने उन का जवाब दिया है कि कुफ़्फ़ारे मक्का पिछली आसमानी किताबों पर यक़ीन करते हैं और उन में नबी करीम (सल्ल०) की बशारत (भविष्यवाणी) और निशानियाँ मौजूद हैं तो फिर कौन सी बात उन पर ईमान लाने से रोकती है।

जवाब का दूसरा मतलब यह हो सकता है कि जिन क़ौमों ने अपने नबियों से निशानियों का मुताल्बा किया था, वह क़ौमें निशानियाँ आने के बाद भी ईमान न लाने की वजह से हलाक कर दी गई थीं, अगर यह लोग भी ईमान न लाएँ तो इन्हें अ़ज़ाबे इलाही से कौन बचा सकेगा।

कुछ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि आयत में **'बय्यिनः'** से मुराद कुर्आने करीम है, जो अल्लाह तआ़ला की ओर से नबी करीम (सल्ल०) के सच्चाई की सब से बड़ी दलील है। इसी बात को अल्लाह तआ़ला ने सूरः अ़न्कबूत आयात नं० (50/ 51) में यूँ बयान फ़रमाया हैः-

وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٤﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾

"उन्होंने कहा, इस पर कुछ निशानियाँ उस के रब की तरफ़ से क्यों नहीं उतारी गई? आप कह दीजिए कि निशानियाँ तो सब अल्लाह तआ़ला के पास हैं, मैं तो केवल खुली हुई नसीह़त करने वाला हूँ। क्या उन के लिए यह काफ़ी नहीं है कि हम ने आप पर किताब नाज़िल फ़रमा दी जो उन के सामने पढ़ी जा रही है? इस में रह़मत और नसीह़त है उन लोगों के लिए जो ईमान वाले हैं।"

134-135

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को भेजकर और क़ुर्आन करीम नाज़िल कर के अब किसी मुश्रिक व काफ़िर के लिए कोई उ़ज़्र बाक़ी नहीं रखा। यही बात इस आयते करीमा में बयान की गई है कि अगर हम लोगों को नबी और किताब भेजने से पहले हलाक कर देते तो वह कहते कि ऐ हमारे रब! हमें हलाक व बर्बाद करने से पहले हमारे पास अपना रसूल क्यों नहीं भेज दिया था ताकि हम ईमान ले आते, लेकिन अब जबकि हम ने अपना आख़िरी रसूल भेज दिया और अपनी आख़िरी किताब नाज़िल कर दी है तो ईमान लाने से अब उन के लिए कोई भी चीज़ रुकावट नहीं है।

आयत नं० (135) में नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया गया है कि आप सरकश काफ़िरों से कह दीजिए कि हम और तुम सभी अपने अन्जाम के इन्तिज़ार में हैं, इन्तिज़ार कर लो, जब मुसलमानों को अ़नूक़रीब फ़तेह़ व नुस्रत ह़ासिल होगी तो जान लोगे कि कौन दीने इस्लाम पर क़ायम था, किसे अल्लाह ने निजात की तरफ़ राह दिखाई और कौन गुमराह होकर हलाक व बर्बाद हुआ।

इस तरह़ इतिह़ास गवाह है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल से किया हुआ वादा पूरा किया, मुसलमान धीरे-धीरे प्रभावी होते गये और कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन जज़ीर-ए-अ़रब से साफ़ कर दिये गये।

(भाग–21)

सूर–ए–अम्बिया

(सूरः नं. 21)

तफ़्सीर सूरः अम्बिया

नाम– चूंकि इस सूरः में कई अम्बिया-ए-किराम के फ़ज़ायल व वाक़िआ़त बयान किये गये हैं, इसीलिए इस का नाम 'सूरतुल् अम्बिया' रखा गया है।

सूरः के नाज़िल होने का ज़माना–

'कुर्तुबी' कहते हैं कि तमाम मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक यह सूरः मक्की है। 'इमाम बुख़ारी' वग़ैरह ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत की है कि सूरः बनी इस्राईल, सूरः अल् कहफ़, सूरः मरयम, सूरः ताहा और सूरः अम्बिया यह वह सूरतें हैं जिन्हें मैंने मक्की दौर के शुरु में ह़ासिल किया था।

जैसा कि तमाम मक्की सूरतों की ख़ुसूसियत है, इस में भी नबी करीम (सल्ल०) और कुर्आन करीम की सदाक़त पर दलील पेश की गई है। अ़क़ीद-ए-तौह़ीद और मरने के बाद उठाए जाने पर कुफ़्फ़ारे मक्का को ईमान लाने की दअ़वत दी गई है और पिछले अम्बिया-ए-किराम की तारीख़े दअ़वत और उन की क़ौमों का ह़ाल बयान कर के कुफ़्फ़ारे मक्का को बताया गया है कि ख़ातिमुन्नबीय्यीन जो दीन तुम्हारे सामने पेश कर रहे हैं वह कोई नया दीन नहीं है और नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने जो आप के साथ मामला कर रखा है और दअ़वत की राह में आप को जो मुसीबतें झेलनी पड़ रही हैं, यह कोई तअ़ज्जुब की बात नहीं है।

आप से पहले जितने अम्बिया-ए-किराम दुनिया में इन्सानों की हिदायत के लिए आए उन्हें भी ऐसे ही ह़ालात से दो चार होना पड़ा और आख़िर में उन के दुश्मनों को मुँह की खानी पड़ी और अम्बिया (अ़लै०) को कामियाबी ह़ासिल हुई।

आयत नं० 1 से 20 तक

*

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۝ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ؕ
وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۡ هَلْ هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝ قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ بَلْ قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَاۤ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۝
مَاۤ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْۤ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ
وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا
بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝ فَلَمَّاۤ اَحَسُّوْا بَاْسَنَاۤ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْۤا اِلٰى مَاۤ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تُسْـَٔلُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ
وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝ لَوْ اَرَدْنَاۤ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّاۤ ۙ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى
الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ۝ وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ
عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۝ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ۝

अनुवाद-

(1) क़रीब आ गया है लोगों का हिसाब, और वे ग़फ़लत में (पड़े हुए,) मुँह फेरे हुए हैं। (2) उनके पास उनके 'रब' की ओर से, जो भी नई नसीहत आती है, मगर वे उसे हँसी-खेल बनाते हुए सुनते हैं। (3) उनके दिल ग़ाफ़िल हैं और यह ज़ालिम लोग चुपके-चुपके काना-फूसी करते हैं कि ''यह तुम जैसा ही तो एक आदमी है; फिर क्या तुम देखते हुए जादू में फँस जाओगे?'' (4) (मुहम्मद ने) कहा, ''मेरा 'रब' जानता है उस बात को, जो आसमान और ज़मीन में है, 'वह' खूब सुनने वाला, जानने वाला है।'' (5) (नहीं,) बल्कि वे कहते हैं ''यह तो उड़ते हुए सपने हैं, बल्कि उसने इसे खुद ही गढ़ लिया है, बल्कि यह शायर (कवि) है, इसे हमारे पास कोई निशानी लानी चाहिए, जैसे कि (निशानियाँ दे कर) पहले (रसूल) भेजे गये थे।'' (6) इनसे पहले जिन बस्तियों को 'हमने' हलाक किया, वे ईमान न ले आयी थीं तो क्या यह ईमान ले आएँगी? (7) और आप से पहले 'हमने' मर्दों ही को (रसूल बना कर) भेजा, जिनकी ओर 'हम' वह्य करते थे अगर आप नहीं जानते तो ज़िक्र वालों (किताब वालों) से पूछ लीजिए; (8) और 'हमने' उनके जिस्म (शरीर) ऐसे नहीं बनाए थे जो खाना न खाते हों और न वे हमेशा रहने वाले ही थे; (9) फिर 'हमने' उनके बारे में वादा सच्चा कर दिखाया, तो उन्हें 'हमने' छुटकारा दिया, और जिसे 'हम' चाहें, और हद से निकल जाने वालों को 'हमने' हलाक कर दिया। (10) 'हमने' तुम्हारी ओर ऐसी किताब उतारी है, जिसमें तुम्हारे लिए नसीहत है, क्या तुम नहीं समझते? (11) और कितनी ही ज़ालिम बस्तियाँ हैं, जिनको 'हमने' हलाक कर दिया, और उनके बाद 'हमने' दूसरे लोगों को उठा खड़ा किया। (12) जब उन्हें 'हमारा' अ़ज़ाब महसूस हुआ, तो लगे वहाँ से भागने। (13) ''मत भागो, और जिन (नेअ़मतों) में तुम ऐश व आराम करते थे उनकी और अपने घरों

की ओर लौट जाओ, ताकि तुमसे (इस बारे में) पूछा जाए। (14) वे पुकार उठे, ''हाय! हमारा दुर्भाग्य बेशक हम ज़ालिम थे।'' (15) तो उनकी लगातार यही पुकार रही, यहाँ तक कि 'हमने' उन्हें ऐसा कर दिया, जैसे कटी हुई (खेती), बुझी हुई आग का ढ़ेर; (16) और 'हमने' आसमान और ज़मीन को और इन दोनों के बीच जो कुछ है, इसलिए नहीं बनाया कि 'हम' कोई खेल करने वाले हों। (17) अगर 'हम' कोई खेल-तमाशा करना चाहते, तो अपने ही पास से कर लेते, अगर 'हमे' ऐसा करना ही होता; (18) (नहीं,) बल्कि 'हम' तो सच को झूठ पर चोट लगाते हैं, तो वह उसका सर तोड़ देता है, फिर क्या देखते हैं कि वह मिट कर रहता; और तबाही हो उन बातों की वजह से जो तुम बनाते हो। (19) और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब 'उसी' का है, और जो (फ़रिश्ते) 'उसके' पास हैं, वे न तो अपने को बड़ा समझ कर 'उसकी' इबादत से मुँह मोड़ते हैं, और न थकते। (20) रात और दिन तस्बीह़ करते रहते हैं, दम नहीं लेते हैं।

आयत नं० 1 से 20 तक की व्याख्या

1-2 اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۝ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝

इस आयते करीमा में आ़म इन्सानों को कुफ़्फ़ारे मक्का का ह़ाल बयान किया गया है कि वह हर दिन क़ियामत से क़रीब होते जा रहे हैं और इस तरह़ वह मैदाने मह़शर में अल्लाह के पास अपने आ़माल का ह़िसाब चुकाने से क़रीब होते जा रहे हैं, बेहतर तो यह था कि वह नबी करीम (सल्ल०) पर ईमान लाकर उस दिन की कामियाबी के लिए तैयार रहते, लेकिन मामला बिल्कुल उल्टा है कि वह ह़िसाब और जज़ा व सज़ा से बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं और आख़िरत से बहुत दूर चन्द रोज़ा दुनिया के ऐ़श व आराम को अपनी ज़िन्दगी का मक़्सद बना रखा है।

ह़िसाब का दिन इसलिए क़रीब है कि हर आने वाली चीज़ क़रीब ही होती है चाहे वह एक मुद्दत के बाद ही क्यों न आए। अल्लाह तआ़ला ने सूरः मआ़रिज आयात नं० (6/7) में फ़रमाया है:-

اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۝ وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ۝

"वह लोग बेशक क़ियामत को दूर समझ रहे हैं और हम उसे क़रीब देख रहे हैं"।

और इसलिए भी क़रीब है कि हर आदमी की मौत ही ह़क़ीक़त में उस की क़ियामत का वक़्त होता है और इसलिए भी कि दुनिया की बाक़ी उ़म्र उस की पिछली उ़म्र से कम रह गई है।

यानी ह़िसाब व किताब की घड़ी सर पर खड़ी है, लेकिन यह लोग (मुश्रिकीन वग़ैरह) सख़्त ग़फ़्लत व जिहालत में फँसे हुए हैं। कोई तैयारी क़ियामत की जवाबदेही के लिए नहीं करते और जब नसीह़त की जाती हैं तो नसीह़त सुनकर लापरवाही के साथ टाल देते हैं जैसे कभी उन को अल्लाह तआ़ला के पास पेश होना और ह़िसाब देना ही नहीं।

ह़ज़रत सुहैल बिन सअ़द (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मैं इस तरह़ भेजा गया हूँ कि मैं और क़ियामत ऐसे हैं और आप ने शहादत और वुस्ता वाली उंगली के बीच की दूरी की तरफ़ इशारा किया।" **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

नई सूरः या नई आयत जिस में अन्जाम से डराया जाता है या नसीह़त की जाती है। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) नबी (सल्ल०) से रिवायत करते हैं, अल्लाह जो नये अह़काम चाहे नाज़िल फ़रमाता है। अल्लाह तआ़ला ने जो हुक्म जारी फ़रमाया है, वह यह है कि तुम नमाज़ में कलाम न करो। (बुख़ारी)

3 لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ ۗ وَأَسَرُّوا النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا هَلْ هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۖ أَفَتَأْتُونَ السِّحْرَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ۝

यानी कुर्आन करीम की बड़ी नसीह़तों को एक खेल तमाशा की ह़ैसियत से सुनते हैं। उन में अगर इख़्लास के साथ ग़ौर करते तो सब दीन व दुनिया दुरुस्त हो जाती, लेकिन जब दिल ही उधर से ग़ाफ़िल हैं और खेल तमाशा में पड़े हैं तो ग़ौर करने की नौबत कहाँ से आए।

जब नसीह़त सुनते-सुनते तंग आ गये तो चन्द बेइन्साफ़ों ने ख़ुफ़िया मीटिंग कर के कुर्आन और पैग़म्बर के बारे में कहना शुरु किया कि यह पैग़म्बर तो हमारी ही तरह़ के एक आदमी हैं, न फ़रिश्ता हैं, न हम से ज़्यादा कोई ज़ाहिरी चीज़ रखते हैं। अल्बत्ता इन को जादू आता है जो कलाम पढ़ कर सुनाते हैं, वह जादू का ही कलाम है। फिर तुम को किस मुसीबत ने घेरा है कि आँखों से देखते हुए उन के जादू में फँसते हो? इसलिए उन के क़रीब भी न जाओ।

कुर्आन को जादू शायद उन के प्रभाव और ह़ैरत अंगेज़ तब्दीली को देखकर कहा और छुपकर मीटिंग इसलिए की कि आइन्दा ह़क़ के ख़िलाफ़ जो योजना करने वाले थे या उस का सन्दर्भ था और ज़ाहिर है कि होशियार दुश्मन अपनी कार्रवाईयों को वक़्त से पहले बताना पसन्द नहीं करता, अन्दर ही अन्दर आपस में प्रोपगण्डा किया करता है।

4 قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

पैग़म्बर ने फ़रमा दिया कि तुम कितने ही छुपा कर मश्वरे करो, अल्लाह को सब ख़बर है। वह तो आसमान व ज़मीन की हर बात को जानता है, फिर तुम्हारे राज़ और साज़िशें उस से कहाँ छुपी रह सकती हैं।

5 بَلْ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ بَلِ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ ۝

कुर्आन सुनकर ज़िद और हठधर्मी से ऐसे बद्ह़वास हो जाते थे कि किसी एक राय पर क़रार न था, कभी उसे जादू बताते, कभी परेशान सपने कहते, कभी दावा करते कि आप अपने जी से कुछ बातें झूठ गढ़ लाए हैं जिन का नाम कुर्आन रख दिया है। न सिर्फ़ यही बल्कि आप एक उ़म्दह शायर हैं और शायरों की तरह़ बुलन्द परवाज़ी से कुछ विषय अ़िबादत में पेश कर देते हैं। अगर ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं तो आप को चाहिए कि आप कोई ऐसा खुला मोअ़जिज़ा (चमत्कार) दिखलाएँ जैसे मोअ़जिज़ात पहले पैग़म्बरों ने दिखलाए थे।

यह कहना भी केवल हठधर्मी के लिए था क्योंकि अव्वल तो मक्का के यह जाहिल मुश्रिक पैग़म्बरों और उनके मोअ़जिज़ात को क्या जानते, दूसरे आप के बीसों खुले निशानात देख चुके थे जो पिछले नबियों

के निशानात से किसी तरह़ कम न थे, जिन में सब से बढ़ कर यह क़ुर्आन मोअ़जिज़ा (चमत्कार) था। वह दिल में समझते थे कि न जादू की आयते हैं, न बेहूदा ख़्वाब हैं, न शायरी है।

इसीलिए जब कोई एक बात भी न होती तो उसे छोड़ कर दूसरी बात कहने लगते थे انْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا (सूरः फ़ुरक़ान-9)

6 مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝

यानी पहली क़ौमों के फ़रमाइशी निशान दिखलाए गये, वह उन्हें देखकर भी न माने, आख़िर में हलाक किये गये। अगर उन मुश्रिकीने मक्का की फ़रमाइशें पूरी की जातीं तो भी यह मानने वाले न थे, इसलिए यह तबाह कर दिये गये।

7 وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

यह उन के क़ौल **'हल हाज़ा इल्ला बशरुम् मिस्लुकुम'** का जवाब हुआ। यानी पहले भी जो पैग़म्बर आए जिन की तरह़ निशानियाँ दिखलाने की ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से माँग करते हो, वह ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की तरह़ इन्सान थे, फ़रिश्ता न थे।

अगर इतने मश्हूर बात की भी अपनी जिहालत की वजह से तुमको ख़बर नहीं, तो ख़बर रखने वालों से मालूम कर लो। आख़िर यहूद व नसारा अहले किताब से तुम्हारे सम्बन्ध हैं, इतनी मोटी बात उन से ही पूछ लेना कि पहले ज़मानों में जो अम्बिया व रसूल तशरीफ़ लाए वह बशर (इन्सान) थे या आसमान के फ़रिश्ते।

8 وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝

यानी इन्सानी ख़ुसूसियत उन में मौजूद थीं। न फ़रिश्तों की तरह़ उन का शरीर ऐसा था कि न कभी खाना खा सकते, न वह ख़ुदा थे कि कभी मौत और फ़ना न आए और हमेशा ज़िन्दा रहा करें।

9 ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝

उन की विशेषता दूसरे बन्दों से यह थी कि अल्लाह तआ़ला की ओर से मख़्लूक़ की हिदायत व सुधार के लिए भेजे गये थे, अल्लाह उनकी तरफ़ वह्य भेजता और बावजूद बेसरो सामानी के मुख़ालिफ़ीन के मुक़ाबिले में उनकी मदद के वादे करता था, चुनाँचे अल्लाह ने अपने वादे सच्चे कर दिखाए उनको उन के साथियों के साथ महफ़ूज़ (सुरक्षित) रखा और बड़े-बड़े घमण्डी दुश्मन जो उन से टकराए वह तबाह व ग़ारत कर दिये गये, बेशक मुह़म्मद भी बशर (इन्सान) हैं, लेकिन उसी तरह़ हैं जिन की ह़िमायत सारी दुनिया के मुक़ाबिले में की जाती है। उन के मुख़ालिफ़ीन को चाहिए कि अपना अन्जाम सोच लें और पहली क़ौमों की मिसालों से नसीह़त ह़ासिल करें, कहीं आख़िरत के ह़िसाब से पहले दुनिया ही में ह़िसाब शुरु न कर दिया जाए।

10 لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝

यानी क़ुर्आन के ज़रिये तुम को हर क़िस्म की नसीह़त कर दी गई और सब बुरा भला अन्जाम समझा दिया गया। अगर कुछ भी अ़क़्ल होगी तो अ़ज़ाबे इलाही से अपने को मह़फ़ूज़ रखने की कोशिश करोगे और क़ुर्आन को पहचानोगे, जो ह़क़ीक़त में तुम्हारे लिए एक नसीह़त नामा है क्योंकि यह क़ुर्आन तुम्हारी ज़बान में और तुम्हारी क़ौम के एक व्यक्ति पर उतारा गया है और दुनिया में तुम को हमेशा की शोहरत अ़ता की गई है।

अगर तुम अपने ऐसे मोह़सिन को न मानोगे तो दुनिया में ज़लील होगे और आख़िरत का अ़ज़ाब अलग से मिलेगा। उन क़ौमों का दुनियवी अन्जाम बयान किया गया है जिन्होंने अम्बिया से दुश्मनी कर के अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था।

11-12 وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّ اَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝ فَلَمَّاۤ اَحَسُّوْا بَاْسَنَاۤ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝

यानी यह नहीं कि उन के ख़त्म कर देने से अल्लाह की ज़मीन उजड़ गई। वह गये, दूसरों को उनकी जगह बसा दिया।

13-14 لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْۤا اِلٰى مَاۤ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَ مَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝

यानी जब अ़ज़ाबे इलाही सामने आ गया तो चाहा कि वहाँ से निकल भागें और भाग कर जान बचा लें। उस वक़्त कहा गया कि भागते कहाँ हो? ठहराव और अधर्मी वापस चलो जहाँ ऐ़श किये थे और जहाँ बहुत सा ऐ़श का सामान जमा कर रखे थे। शायद वहाँ कोई तुम से पूछे कि ह़ज़रत! वह माल व दौलत और ज़ोर व क़ुव्वत का नशा क्या हुआ? वह सामान किधर गये? और जो नेअ़मतें ख़ुदा ने दे रखी थीं उन का शुक्र कहाँ तक अदा किया था? या यह कि आप बड़े आदमी थे जिन की हर मौक़े पर पूछ होती थी, अब भी वहीं चलिए भागने की ज़रूरत नहीं ताकि लोग आप से मश्वरे कर सकें और आप की रायें दर्याफ़्त कर सकें? (यह सब बातें तान के तौर पर कही गई हैं।)

15 فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝

यानी जब अ़ज़ाब आँखों से देख लिया तब अपने जुर्मों का एतिराफ़ किया और बराबर यही चिल्लाते रहे कि बेशक हम ज़ालिम और मुजरिम हैं, लेकिन "अब पछताने से क्या होता है जब चिड़िया चुग गई खेत" यह वक़्त क़ुबूले तौबः का न था, उस वक़्त की तौबः सब बेकार चीज़ें थीं। वह इस तरह़ ख़त्म कर दिये गये जैसे खेती काट कर ढ़ेर कर दी जाती है या आग में जलती हुई लकड़ी बुझ कर राख हो जाती है।

16 وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝

इसलिए अ़क़्लमन्द को चाहिए कि अपने मक़्सद को समझे और दुनिया को केवल खेल तमाशा समझ कर अन्जाम से ग़ाफ़िल न हो, बल्कि ख़ूब समझ ले कि दुनिया आख़िरत के लिए पैदा की गई है। हर नेक व बुरे का बदला मिलना और ज़र्रह-ज़र्रह का ह़िसाब होना है।

17-18 لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۙ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ۝

यानी अगर ऐसे खेल तमाशे के काम बिल्फ़र्ज़ हमारी शान के लायक़ होते और हम इरादा भी करते कि यूँ ही कोई काम और खेल तमाशा बनाकर खड़ा कर दें तो यह चीज़ हम अपनी क़ुद्रत से कर गुज़रते। तुम्हारी पकड़-धकड़ से उसको कुछ मतलब न होता, लेकिन वाक़िया यह है कि दुनिया केवल खेल तमाशा नहीं बल्कि एक मैदान है, जहाँ ह़क़ व बातिल की जंग होती है। ह़क़ ह़मला आवर बातिल का सर कुचल डालता है, उसी से तुम अपनी मुश्रिकाना बातों का अन्जाम समझ लो कि ह़क़ व सदाक़त का हथौड़ा जब पूरी क़ुव्वत से तुम पर गिरेगा उस वक़्त कैसी ख़राबी और बर्बादी तुम्हारे लिए होगी और कौन सी ताक़त बचाने आएगी।

19 وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۝

"फिर वह तबाह करना चाहे तो कौन बचा सकता है और कहाँ पनाह मिल सकती है"।

20 يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ۝

यानी फ़रिश्ते क़रीबी होने के बावजूद शेख़ी नहीं करते, अपने परवरदिगार की बन्दगी और ग़ुलामी को फ़ख़्र समझते हैं, कभी सुस्ती या काहिली गवारा नहीं करते, रात-दिन उस की तस्बीह़ और याद में लगे रहते हैं, न थकते हैं, न उकताते हैं बल्कि तस्बीह़ व ज़िक्रे इलाही उन की ग़िज़ा है।

जिस तरह़ हम हर वक़्त साँस लेते हैं और दूसरे काम भी करते रहते हैं, यही कैफ़ियत उन की तस्बीह़ व ज़िक्र की समझो। वह किसी काम पर लगे हों, किसी ख़िद्मत को बजा ला रहे हों, एक मिनट उधर से ग़ाफ़िल नहीं होते। जब बेगुनाह फ़रिश्तों का यह ह़ाल है तो ख़ताकार इन्सान को कहीं ज़्यादा अपने रब की तरफ़ झुकने की ज़रुरत है।

आयत नं० 21 से 41 तक

اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا
يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾
وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّىْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ
جَهَنَّمَ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۭ وَجَعَلْنَا مِنَ
الْمَاۗءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۭ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۠ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣١﴾
وَجَعَلْنَا السَّمَاۗءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚ وَهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ فِيْ
فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۭ اَفَاْىِٕنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿٣٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَاۗىِٕقَةُ الْمَوْتِ ۭ وَنَبْلُوْكُمْ
كُلُّ نَفْسٍ ذَاۗىِٕقَةُ الْمَوْتِ ۭ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۭ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ
اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٦﴾ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۭ سَاُوْرِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٣٧﴾
وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ
ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٣٩﴾ بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ
بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤١﴾

अनुवाद-

(21) क्या लोगों ने ज़मीन की चीज़ों से (कुछ को) मअ़बूद बना लिए हैं, (तो क्या) वह उनको (मरने के बाद) उठा खड़ा करेंगे (22) अगर इन दोनों (आसमान और ज़मीन) में अल्लाह के सिवा और मअ़बूद होते, तो दोनों (ज़मीन व आसमान) फ़साद से भर जाते तो पाक है अल्लाह, (जो) अर्श का 'रब' उन बातों से जो यह बयान करते हैं। (23) 'वह' जो कुछ करता है, उससे उसकी कोई पूछ नहीं होगी, और (जो काम यह करते हैं, उसकी) इनसे पूछ होगी। (24) क्या लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को मअ़बूद बना लिये हैं, कह दीजिए, ''लाओ, अपना प्रमाण, जो लोग मेरे साथ हैं उनकी किताब (कुर्आन) है, और जो मुझसे पहले (रसूल) गुज़र चुके हैं, उनकी किताबें भी हैं, बल्कि उनमें अक्सर लोग सच बात को नहीं जानते, इसलिए वह मुँह फेर लेते हैं; (25) और 'हमने' आप से पहले कोई ऐसा रसूल नहीं भेजा, कि जिसके पास 'हमने' वह्य न भेजी हो 'मेरे' सिवा कोई मअ़बूद नहीं, तो 'मेरी' ही इबादत करो।'' (26) और उन्होंने कहा, ''रह़मान औलाद रखता है।'' पाक है 'वह' बल्कि वे उसके सम्मानित बन्दे हैं; (27) 'वह' उससे बढ़ कर बात नहीं कर सकते, और 'उसी' के हुक्म पर अ़मल करते हैं। (28) 'वह' जानता है जो कुछ उनके आगे और पीछे है, और वह सिफ़ारिश नहीं कर सकते, 'मगर उस व्यक्ति की' जिससे अल्लाह खुश हो और वे 'उसके' जलाल से डरते हों। (29) और जो आदमी उनमें से अगर यह कह दे कि ''उसके सिवा मैं अल्लाह हूँ,'' तो 'हम'

उसे जहन्नम की सज़ा देंगे; 'हम' ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (30) क्या इन्कार करने वालों ने नहीं देखा! कि आसमान और ज़मीन आपस में मिले हुए थे, फिर 'हमने' उन्हें अलग-अलग कर दिया, और 'हमने' पानी से हर जानदार चीज़ को बनाया, क्या फिर भी वे ईमान नहीं लाएँगे? (31) और 'हमने' ज़मीन में पहाड़ इस लिए रख दिये, ताकि ऐसा न हो कि वह लोगों को लेकर हिलने लगे, और 'हमने' उसमें ऐसे कुशादा (चौड़े) रास्ते बनाए, ताकि लोग रास्ता पाते रहें। (32) और 'हमने' आसमान को एक सुरक्षित छत बना दिया, और इस पर भी वे 'हमारी' निशानियों से मुँह फेरे हुए हैं। (33) और 'वही' तो है जिसने रात और दिन को, और चाँद और सूरज को पैदा कर दिया; यह सब अपने-अपने मदार (मण्डल) में तैर रहे हैं। (34) और 'हमने' आप से पहले भी किसी इन्सान को हमेशा के लिए नहीं बनाया था, क्या अगर आप की मौत हो जाए, तो (क्या) यह लोग हमेशा रहेंगे? (35) हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है, और 'हम' तुम लोगों को आज़माते हैं, बुरी और अच्छी ह़ालत में डाल कर, और 'हमारी' ही ओर तुम लौट कर आओगे। (36) और जब काफ़िर आप को देखते हैं, तो आप का मज़ाक़ उड़ाते हैं, (कहते हैं) ''क्या यही वह व्यक्ति है, जो तुम्हारे मअ़बूदों की चर्चा किया करता है?'' और उनका अपना ह़ाल यह है कि रह़मान के ज़िक्र से इन्कार करते हैं। (37) इन्सान जल्दबाज़ बनाया गया है, 'मैं' जल्द ही तुमको अपनी निशानियां दिखा दूँगा, तो तुम जल्दी मत मचाओ। (38) और कहते हैं, ''यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो।'' (39) अगर इन काफ़िरों को उस वक़्त की ख़बर होती, जब आग को न रोक सकेंगे अपने चेहरों से, और न अपनी पीठों से, और न ही उनको कोई मदद पहुँच सकेगी; (40) बल्कि वह तो अचानक आ जाएगी और उन्हें बदहवास कर देगी, फिर न तो उन्हें उसको दूर करने की ताक़त होगी, और न उन्हें मोहलत ही मिलेगी। (41) और आप से पहले भी रसूलों की हँसी उड़ाई जा चुकी है, तो उनमें से जिन लोगों ने उनकी हँसी उड़ाई थी, उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा, जिसकी वे हँसी उड़ाते थे।

आयत नं० 21 से 41 तक की व्याख्या

21 اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ۝

यानी आसमान वाले फ़रिश्ते तो उसकी बन्दगी से कतराते नहीं, बल्कि हर वक़्त उस की याद और बन्दगी में लगे रहते हैं। फिर क्या ज़मीन में कुछ ऐसी हस्तियाँ हैं जिन को ख़ुदा के मुक़ाबिले में मअ़बूद (उपास्य) ठहराया जा सकता हो? और जब अल्लाह उन को अपने हुक्म से मौत दे देगा तो क्या यह उन को फिर ज़िन्दा कर सकते हैं? हरगिज़ नहीं।

22 لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝

'अ़िबादत' नाम है कामिल तज़ल्लुल (पूरी तरह़ नत्मस्तक होने) का और पूरी तरह़ नत्मस्तक सिर्फ़ उसी ज़ात के सामने किया जा सकता है <u>जो अपनी ज़ात व सिफ़ात में हर तरह़ मुकम्मल हो, उसी को हम **"अल्लाह"** कहते हैं।</u>

ज़रूरी है कि अल्लाह की ज़ात हर क़िस्म के ऐबों से पाक हो, न वह किसी हैसियत से कमज़ोर

हो, न बेकार, न बेबस हो, न मग़्लूब, न किसी दूसरे से दबे, न कोई उसके काम में रोक टोक कर सके। अब अगर फ़र्ज़ कीजिए आसमान व ज़मीन में दो अल्लाह हों तो दोनों उसी शान के होंगे। उस वक़्त देखना यह है कि दुनिया की पैदाइश दोनों की सहमति से हुई है या कभी-कभी के सहमति से। इस में दो बातें होंगी या तो अकेले एक से काम नहीं चल सकता था, इसलिए दोनों ने मिलकर इन्तिज़ाम किया तो मालूम हुआ कि दोनों में एक भी पूरी कुद्रत वाला नहीं और यदि एक पूरी दुनिया को संचालित कर सकता था तो दूसरा बेकार ठहरा, ह़ालाँकि अल्लाह का वजूद इसीलिए मानना है कि उस के माने बिना कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है और यदि मतभेद मान ले, मुक़ाबिला में या एक हारकर अपने इरादा को छोड़ बैठेगा तो वह ख़ुदा न रहा और या दोनों बिल्कुल बराबर ताक़त से एक दूसरे के ख़िलाफ़ अपने इरादा को अ़मल में लाना चाहेंगे।

पहले तो (मआ़ज़ल्लाह) ख़ुदाओं की इस रस्साकशी में सिरे से कोई चीज़ मौजूद ही न हो सकेगी और मौजूद चीज़ पर ज़ोर आज़माई होने लगेगी तो इस कशमकश में टूट-फूट कर बराबर हो जाएगी। यहाँ से यह नतीजा निकला कि अगर आसमान व ज़मीन में दो ख़ुदा होते तो आसमान व ज़मीन का यह निज़ाम कभी का दरहम-बरहम हो जाता वरना एक ख़ुदा का बेकार या नाक़िस होना लाज़िम आता है।

जो अ़र्श (तख़्त शाही) का अकेला मालिक है, उसके मिल्क में शिरकत की गुन्जाइश ही नहीं। दो ख़ुद मुख़्तार बादशाह जब एक मुल्क में नहीं रह सकते जिन की ख़ुद मुख़्तारी भी वक़्ती थोड़ी सी होती है तो दो मुख़्तारे कुल और क़ादिरे मुत्लक़ ख़ुदा एक बादशाहत में कैसे साझीदार हो सकते हैं।

23 لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿۲۳﴾

यानी **"अल्लाह"** तो उस हस्ती का नाम है जो क़ादिर और मुख़्तारे कुल हो। उसकी कुद्रत व मंशा को रोकना तो दूर की बात है कोई पूछ-ताछ भी नहीं कर सकता कि आप ने फ़लाँ काम इस तरह़ क्यों किया। हाँ, उसको ह़क़ है कि वह हर शख़्स से पूछ ले जो चाहे।

24 اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَ ذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۴﴾

इस में कहा जा रहा है कि अल्लाह के सिवा जो मअ़बूद तुम ने बना लिए हैं उन की क्या दलील है? अगर हो तो पेश करो। ज़ाहिर है उनके पास बाप-दादों की बातों के अ़लावा कुछ नहीं था। शिर्क की ताईद में न कोई दलील अ़क़्ली मिल सकती थी, न नक़्ली, जिसे पेश कर सकते।

25 وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْۤ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿۲۵﴾

यानी तमाम अम्बिया का इज्माअ़ (सहमति) अ़क़ीद-ए-तौह़ीद पर है। किसी पैग़म्बर ने कभी एक शब्द उसके ख़िलाफ़ नहीं कहा, हमेशा यही कहते आए हैं कि एक ख़ुदा के सिवा किसी की बन्दगी नहीं, तो जिस तरह़ अ़क़्ली और फ़ित्री दलायल से तौह़ीद का सबूत मिलता है और शिर्क का रद्द होता है, ऐसे ही नक़ली हैसियत से अम्बिया (अ़लै०) की सहमति दअ़व-ए-तौह़ीद के ह़क़ होने पर दलील है।

26 وَ قَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۙ﴿۲۶﴾

अ़रब के कुछ लोग फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ कहते थे, सो अल्लाह की शान के लायक़ यह नहीं कि वह बेटे बेटियाँ बनाए। इस में नसारा का भी रद्द हो गया जो ह़ज़रत मसीह़ (अ़लै०) को 'इब्नुल्लाह' (अल्लाह का बेटा) कहते हैं और यहूद के उस फ़िर्क़े का भी, जो ह़ज़रत उ़ज़ैर (अ़लै०) को अल्लाह का बेटा कहता था।

27 لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۷﴾

यानी जिन नेक हस्तियों को तुम अल्लाह की औलाद बतलाते हो वह औलाद नहीं। हाँ, उसके इ़ज़्ज़तदार बन्दे हैं और क़रीबी होने के बावजूद उनके फ़रमाँबरदारी का ह़ाल यह है कि जब तक अल्लाह की मर्ज़ी और इजाज़त न पाएँ उसके सामने ख़ुद आगे बढ़ कर ज़बान नहीं हिला सकते और न कोई काम उसके हुक्म के बिना कर सकते हैं यानी बन्दगी ही उन की शान है।

28 يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿۲۸﴾

अल्लाह तआ़ला का इ़ल्म उनके तमाम ज़ाहिरी व बातिनी ह़ालात पर ह़ावी है। उनकी कोई ह़रकत और कोई अ़मल उस से छिपा हुआ नहीं। चुनाँचे वह क़रीबी बन्दे इसी ह़क़ीक़त को समझ कर हर वक़्त अपने ह़ालात को समझते रहते हैं कि कोई ह़ालत उस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न हो।

यानी उसकी मर्ज़ी मालूम किये बिना किसी की सिफ़ारिश भी नहीं करते, चूंकि मोमिनीन से अल्लाह तआ़ला राज़ी होता है, इसलिए उनके ह़क़ में दुनिया व आख़िरत में इस्तिग़्फ़ार करना उन का काम है, फिर उनको ख़ुदा कैसे कहा जा सकता है। जब ख़ुदा नहीं तो ख़ुदा के बेटे या बेटियाँ भी नहीं बन सकते क्योंकि सह़ी औलाद वालिदैन से होनी चाहिए।

29 وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾

यानी जिन को तुम अल्लाह की औलाद या अल्लाह बता रहे हो, अगर थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाए कि उन में से कोई अपने आप को (मआ़ज़ल्लाह) ऐसी बात कह दे तो वही दोज़ख़ की सज़ा जो ह़द से गुज़रने वाले ज़ालिमों को मिलती है, हम उन को भी देंगे। हमारी सत्ता से वह भी बाहर नहीं जा सकते, फिर वह अल्लाह कैसे हो सकते हैं।

30 اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۰﴾

'रत्क़' के ह़क़ीक़ी माने मिलने और एक दूसरे में दाख़िल होने के हैं। शुरु में ज़मीन व आसमान दोनों एक साथ थे, फिर दोनों एक साथ मिले-जुले रहे, बाद में अल्लाह ने दोनों को एक दूसरे से जुदा कर दिया। इस के बाद हर एक के तब्क़ात अलग-अलग बने, इस पर भी मुँह बन्द थे, न आसमान से बारिश हुई थी न ज़मीन से कोई चीज़ पैदा हुई। आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने इन्सान के फ़ायदे के लिए

दोनों के मुँह खोल दिये, ऊपर से पानी का दहाना खुला, नीचे से ज़मीन के ज़र्रे खुल गये। उसी ज़मीन में से अल्लाह तआ़ला ने नहरें और कानें और तरह़-तरह़ के हरे-भरे वन निकाले, आसमान को कितने बेशुमार सितारों से सजा दिया जिन में हर एक का घर जुदा और चाल अलग रखी।

यानी आ़मतौर से जानदार चीज़ें जो तुम को नज़र आती हैं बिलवास्ता व बिला वास्ता पानी से बनाई गईं, पानी ही उन का माद्दह है सिवाय कोई ऐसी मख़्लूक़ के जिसकी निस्बत साबित हो जाए कि उस की पैदाइश में पानी को दख़ल नहीं वह अलग होगी।

यानी कुद्रत के ऐसे खुले निशान और इन्तिज़ामात को देखकर भी क्या लोगों को अल्लाह के वजूद और उसकी वह़दानियत पर यक़ीन नहीं आता? इस विषय में सूरः नह़ल में लिखा जा चुका है।

31 وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝

यानी एक मुल्क के लोग दूसरे मुल्क वालों से मिल सकेंगे। अगर पहाड़ ऐसी जगह होते कि राहें बन्द हो जातीं तो यह बात कहाँ होती। उन ही राहों को देखकर इन्सान अल्लाह तआ़ला की कुद्रत व ह़िक्मत और तौह़ीद की तरफ़ राह पा सकता है।

कोई चीज़ जो अपने मर्कज़ के गिर्द घूमती हो, अचानक उस के तवाज़ुन (Balance) में हल्की सी भी कमी आ जाए तो पूरा सिस्टम प्रभावित हो जाएगा। जैसे- गाड़ी का पहिया जब हचकोले खाने लगे तो उस के बैलेन्स को सह़ी करवाना पड़ता है। चुनाँचे ज़मीन में यह पहाड़ भी वही काम करते हैं जो (Wheel Balancing) में सीने के छोटे-छोटे टुकड़े करते हैं। यह सवाल पैदा हो सकता है कि ज़मीन को पहले ही ऐसा मुतवाज़िन (सन्तुलित) क्यों न बना दिया कि ऐसे पहाड़ों की ज़रूरत पेश न आती तो इस का जवाब सूरः नबा में मिलता है। "क्या हम ने ज़मीन को एक गहवारा नहीं बनाया और पहाड़ों को मेख़ों की तरह़ गाड़ दिया? **(सूरः अन्नबा आयत नं० 6,7)**

अगर ज़मीन शुरु ही से बैलेन्स (सन्तुलित) होती तो भी पहाड़ों की ज़रूरत रहती क्योंकि ज़मीन की ऊपर वाली तहें हवा के असरात से या किसी और वजह से एक जगह से दूसरी जगह ह़रकत करती फिरती और उस के तवाज़ुन (बैलेन्स) को बार-बार ख़राब कर देतीं।

32 وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ۝

यानी न गिरे, न टूटे-फूटे, न बदली जाए और शयातीन के सुनने से भी मह़फ़ूज़ रहे और छत इसलिए कहा कि देखने में छत की तरह़ मालूम होती है कि कैसी मज़बूत और वसीअ़ व बुलन्द छत इतनी मुद्दत से बिना सुतून और खम्बे के खड़ी है, ज़रा सा रंग रोग़न और प्लास्टर भी नहीं झड़ता।

जिस तरह़ छत घर के लिए ह़िफ़ाज़त होती है, उसी तरह़ आसमान भी अहले ज़मीन के लिए ह़िफ़ाज़त करता है। **(तफ़्सील के लिए देखें सूरः ह़िज्र आयत नं० 16 से 18)**

33 وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝

इसमें उन ही आसमानी निशानियों की तफ़्सील है।

युसब्बिहूना-

इस आयत से मालूम होता है कि सूरज व चाँद के अ़लावा दूसरे सय्यारे भी गर्दिश कर रहे हैं और यह ह़रकत सिर्फ़ यूँ ही नहीं है बल्कि एक जगह पहुँचना है। जिस वक़्त क़ुर्आन नाज़िल हुआ, उस वक़्त क़ायनात (Ptolemy) के बारे में यूनानी दृष्टिकोण था। यह दृष्टिकोण सोलहवीं सदी तक रायज रहा। यह दृष्टिकोण ज़मीन को कायनात का मर्कज़ क़रार देता था, जिस के मुताबिक़ ज़मीन रुकी और सूरज चाँद और सब सय्यारे उसी के आस-पास ह़रकत कर रहे थे। देखें (Merit students encyclopedia universe) तो क़ुर्आन ने ए़लान किया कि यह सब अपने मदार मण्डल में तैरते हैं।

34 وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَإِيْنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخَالِدُوْنَ ۝

यानी सूरज चाँद बल्कि हर सय्यारा (नक्षत्र) अपने मदार (भूमण्डल) पर पड़ा चक्कर खा रहा है। **'युसब्बिहूना'** के शब्द से यह मालूम होता है कि सय्यारे (नक्षत्र) अल्लाह के हुक्म से ख़ुद चलते हैं। वल्लाहु आ़लम

35 كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۗ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝

यानी जिस तरह़ इन मख़्लूक़ात का वजूद अल्लाह तआ़ला की ईजाद से हुआ। तमाम इन्सानों की ज़िन्दग़ी भी उसी की अ़ता की हुई है, जिस वक़्त चाहेगा छीन लेगा। मौत हर एक पर साबित कर देगी कि तुम्हारी हस्ती तुम्हारे क़ब्ज़े में नहीं, चन्द रोज़ की चहल पहल थी जो ख़त्म हुई।

ह़ज़रत शाह साह़ब (रह़०) लिखते हैं कि "काफ़िर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें सुन कर कहते थे कि यह सारी धूम केवल इस शख़्स की ज़िन्दग़ी तक है, यह दुनिया से रुख़सत हुए तो कुछ नहीं।" इस से अगर इन की चाहत यह थी कि मौत आना नुबूव्वत के ख़िलाफ़ है, तो इस का जवाब दिया गया है। وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ यानी अम्बिया में से कौन ऐसा है जिस पर कभी मौत तारी न हो, हमेशा ज़िन्दा रहे और अगर केवल आप की मौत के तसव्वुर से अपना दिल ठंडा करना ही मक़्सूद था तो इस का जवाब أَفَإِيْنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخَالِدُوْنَ में दे दिया यानी ख़ुशी किस चीज़ की? क्या तुम्हारा इन्तिक़ाल हो जाए तो तुम कभी नहीं मरोगे, जब तुम को भी आगे पीछे मरना है तो पैग़म्बर की वफ़ात पर ख़ुश होने का क्या मौक़ा है, इस रास्ते से तो सब को गुज़रना है। कौन है जिस को कभी मौत का मज़ा चखना न पड़ेगा?

यानी दुनिया में सख़्ती नर्मी, तन्दुरुस्ती, बीमारी, तंगी, फ़राख़ी और मुसीबत व ऐ़श वग़ैरह विभिन्न ह़ालात भेजकर तुम को जांचा जाता है ताकि खरा खोटा अलग हो जाए और ए़लानिया ज़ाहिर हो जाए कि कौन सख़्ती पर सब्र और नेअ़मतों पर शुक्र अदा करता है और कितने लोग हैं जो मायूसी या शिकायत और नाशुक्री के मर्ज़ में मुब्तिला हैं। वहाँ तुम्हारे सब्र व शुक्र और हर नेक व बुरे अ़मल का फल दिया जाएगा।

36 وَ اِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝

यानी अन्जाम से बिल्कुल बेफ़िक्र होकर यह लोग पैग़म्बर (अ़लै०) की हंसी उड़ाते हैं और उन से ठठा करते हैं और कहते हैं اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ "क्या यही शख़्स है जो तुम्हारे मअ़बूदों (उपास्यों) को बुराई से ज़िक्र करता है?" उन्हें शर्म नहीं आती कि ख़ुद हक़ीक़ी मअ़बूद के ज़िक्र और 'रह़मान' के नाम तक से चिढ़ते हैं, उस की सच्ची किताब के इन्कारी हैं और झूठे मअ़बूदों (उपास्यों) की बुराई सुनकर उलझते हैं।

37 خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۭ سَاُوْرِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ۝

शायद कुफ़्फ़ार की बेवकूफ़ी को सुन कर बाज़ों का जी चाहा होगा कि इन बेह़याओं पर फ़ौरन अ़ज़ाब आ जाए तो अच्छा हो और ख़ुद कुफ़्फ़ार भी बतौर मज़ाक जल्दी मचाया करते थे कि अगर वाक़ई हम तुम्हारे नज़्दीक अ़ज़ाब के ह़क़्दार हैं तो वह अ़ज़ाब फ़ौरन क्यों नहीं ले आते?

दोनों को बताया कि इन्सान बड़ा जल्दबाज़ है यानी उसके ख़मीर में जल्दी है, चाहिए कि थोड़ा सब्र करे, अ़नक़रीब मैं अपने अ़ज़ाब की निशानियाँ तुम को दिखला दूँगा।

38 وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

यानी यह काफ़िर कहते हैं कि क़ियामत कब आएगी और सब काफ़िर हमेशा के लिए दोज़ख़ में जलेंगे? आख़िर यह वादा कब पूरा होगा? अगर सच्चे हो तो क़ियामत और जहन्नम को अभी क्यों नहीं बुला लेते?

39-40 لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝

यानी अगर इन पर वह ह़क़ीक़त खुल जाए और उस ह़ौलनाक घड़ी को ठीक-ठीक समझ लें तो कभी ऐसी दरख़्वास्त न करें। यह बातें बेफ़िक्री की वजह से सूझ रही हैं, जब वह वक़्त सामने आ जाएगा कि आगे-पीछे हर तरफ़ से आग घेरे होगी तो न किसी तरफ़ से उस को रोक सकेंगे, न कहीं से मदद पहुँचेगी, न मोहलत मिलेगी, न पहले उसका पूरा अन्दाज़ा होगा। उस के अचानक सामने आ जाने से होश उड़ जाएँगे तब पता चलेगा कि जिस चीज़ की हँसी करते थे, वह ह़क़ीक़त में थी।

41 وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

यानी जिस चीज़ की हंसी उड़ाते थे उसकी सज़ा ने घेर लिया और उनकी हँसी उन ही पर उलट दी गई।

❐❐❐

आयत नं० 42 से 70 तक

قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ۝ بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا
مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۚ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ۝ وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ
مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ كَانَ
مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۝ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ
رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا
عٰبِدِيْنَ ۝ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ۝ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا
مُدْبِرِيْنَ ۝ فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ۝ قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قَالُوْا سَمِعْنَا
فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ۝ قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ۝ قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۝
قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ۝ فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى
رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ۝ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ۝ اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا
وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۝ وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ۝

अनुवाद-

(42) कह दीजिए, ''कौन रहमान के मुक़ाबले में रात और दिन तुम्हारी रक्षा करेगा?'' बल्कि बात यह है कि वे अपने रब के ज़िक्र से मुँह फेरे हुए हैं। (43) क्या उनके पास 'हमारे' सिवा और मअ़बूद हैं; जो उनको बचा सकते हों? वे तो खुद ही अपनी मदद नहीं कर सकते और न हमारे मुक़ाबले में उनका कोई साथ ही दे सकता हैं; (44) बल्कि 'हमने' उन्हें और उनके बाप-दादा को खूब सामान दिया, यहाँ तक कि उन पर एक लम्बा ज़माना गुज़र गया; तो क्या यह देखते नहीं! कि 'हम' इस धरती की ओर इसकी सीमाओं को घटाते हुए बढ़ रहे हैं, तो क्या यह लोग ग़ालिब रहेंगे? (45) कह दीजिए, मैं तो बस 'वह्य' के आधार पर तुम्हें डराता हूँ, और बहरे तो पुकार सुनते ही नहीं! जबकि उन्हें डराया जाए।'' (46) और अगर उनको आप के रब के अ़ज़ाब का एक झोंका भी छू जाए, तो यूँ कहने लगते हैं कि, ''हाय! हमारा दुर्भाग्य, बेशक हम ही ज़ालिम थे।'' (47) और 'हम' क़ियामत के दिन इन्साफ़ का तराज़ू क़ायम करेंगे, फिर किसी व्यक्ति पर कुछ भी जुल्म न होगा, अगर किसी का कोई अ़मल राई के दाने के बराबर भी होगा, तो 'हम' उसे ला हाज़िर करेंगे, और 'हम' हिसाब लेने के लिए काफ़ी हैं। (48) और 'हम' मूसा और हारून को फ़ुरक़ान

(फैसला) और रोशनी और नसीहत दे चुके हैं परहेज़गारों के लिए; (49) जो अपने रब से बिन देखे डरते हैं, और उन्हें क़ियामत की घड़ी का डर लगा रहता है। (50) और यह मुबारक नसीहत है, जिसे 'हमने' नाज़िल किया, तो क्या तुम्हें इससे इन्कार है? (51) और इससे पहले ही 'हमने' इब्राहीम को हिदायत, और समझ दी थी, और 'हम' उनको खूब जानते थे; (52) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, ''यह मूर्तियाँ क्या हैं, जिनसे तुम लगे बैठे हो?'' (53) वे बोले, ''हमने अपने बाप-दादा को इन्हीं की पूजा करते हुए पाया है।'' (54) (इब्राहीम ने) कहा, ''अगर तुम और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही में रहे हों।'' (55) उन्होंने कहा, ''क्या तू हमारे पास हक़ लेकर आया है या यूँ ही खेल कर रहा है?'' (56) कहा, ''(नहीं) बल्कि तुम्हारा 'रब' वह है जो आसमानों और ज़मीन का 'रब' है; 'उसी' ने उनको पैदा किया, और मैं इसका गवाह हूँ; (57) और अल्लाह की क़सम! मैं ज़रूर तुम्हारे बुतों के साथ एक उपाय करूँगा, जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे।'' (58) तो उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर डाला, सिवाय एक बड़े (बुत) के, ताकि वे उसकी ओर रुजूअ़ करें। (59) वे कहने लगे, ''किसने हमारे देवताओं के साथ यह हरकत की है? वह तो कोई ज़ालिम है।'' (60) लोगों ने कहा, ''हमने तो एक नौजवान को उनके बारे में कुछ कहते सुना है, जिसको इब्राहीम कहते हैं।'' (61) उन्होंने कहा, ''तो उसे ले आओ लोगों की आँखों के सामने, कि वे गवाह रहें।'' (62) उन्होंने कहा, ''क्या तूने हमारे मअ़बूदों के साथ यह हरकत की है, ऐ इब्राहीम।'' (63) (इब्राहीम ने) कहा, बल्कि उनके इस बड़े ने किया है तो इनसे पूछ लो, अगर यह बोलते हों।'' (64) तो वे अपने जी में सोचने लगे फिर बोले, वास्तव में ज़ालिम तो तुम ही हो। (65) फिर वे अपने सरों के बल औंधे हो गये, ''बोले तुम्हें मालूम है कि यह बोलते नहीं हैं।'' (66) (इब्राहीम ने) कहा, ''क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की पूजा करते हो, जो तुम को न फ़ायदा पहुँचा सकती हैं और न नुक़सान? (67) अफ़ूसोस है! तुम पर, जो तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजते हो, तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?'' (68) उन्होंने कहा, ''जला दो इसे और अपने मअ़बूदों की मदद करो, अगर तुम्हें कुछ करना है।'' (69) 'हमने' कहा, ''ऐ आग! तू ठंडी और सलामती हो जा, इब्राहीम पर।'' (70) और उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही थी, किन्तु 'हमने' उन्हीं को घाटे में डाल दिया।

आयत नं० 42 से 70 तक की व्याख्या

42 قُلْ مَنْ يَكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ۗ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُعْرِضُوْنَ ۝

यानी रहमान के ग़ुस्से और अ़ज़ाब से तुम्हारी हिफ़ाज़त करने वाला दूसरा कौन है? केवल उसकी रहमत है जो तुरन्त अ़ज़ाब नाज़िल नहीं करता, लेकिन ऐसे रहमत वाले हलीम (संयमी) के ग़ुस्से से डरना भी बहुत चाहिए।

यानी रहमान की हिफ़ाज़त का उन को एहसास व एतिराफ़ नहीं। ऐश की ज़िन्दगी ने परवरदिग़ार हक़ीक़ी की याद से ग़ाफ़िल कर रखा है। इसीलिए जब उस की ओर से कोई नसीहत की जाती है तो मुँह फेर लेते हैं कि यह कहाँ की बातें शुरु कर दीं।

43 اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ۭ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ۝

यानी क्या अपने फ़र्ज़ी मअ़बूदों के बारे में इनका ख़याल है कि वह इनकी हिफ़ाज़त करते हैं? और मौक़ा आने पर अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब से बचा लेंगे? सो वह मुहताज इनकी मदद और हिफ़ाज़त तो क्या करते ख़ुद अपने वजूद की हिफ़ाज़त भी नहीं कर सकते, अगर उन को कोई तोड़ने फोड़ने लगे या कोई चीज़ उनके पास से छीन कर ले जाए तो इतनी कुदरत नहीं कि उसको रोकने के लिए ख़ुद हाथ पैर हिला सकें या अपने बचाव के लिए हमारी मदद हासिल कर लें।

44 بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۭ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝

यानी रहमान की हिफ़ाज़त और बुतों की बेचारगी ऐसी चीज़ नहीं जिस को यह लोग समझ न सकें। बात यह है कि यह लोग बेफ़िक्री की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। कोई झटका अ़ज़ाबे इलाही का नहीं लगा और गफ़्लत के नशे में चूर होकर अल्लाह तआ़ला का पैग़ाम और पैग़म्बरों की नसीहत कुबूल करने से मुँह मोड़ लिया।

यानी अ़रब के मुल्क में इस्लाम फैलने लगा और कुफ़्र घटने लगा है। आहिस्ता-आहिस्ता वहाँ की ज़मीन काफ़िरों पर तंग होती जा रही है, उन की हुकूमतें और सरदारियाँ टूटती जा रही हैं। क्या ऐसे खुले हुए आसार को देखकर भी उन्हें अपना अन्जाम नज़र नहीं आता और क्या इस के बावजूद उसी के उम्मीदवार हैं कि पैग़म्बर (अ़लै०) और मुसलमानों पर हम ग़ालिब होंगे। अगर आँख है तो चाहिए कि अ़क़्ल से काम लें और हालात का अन्दाज़ा करें। क्या उन को मालूम नहीं कि उन के आस-पास की बस्तियाँ अम्बिया को झुठलाने की सज़ा में तबाह की जा चुकी हैं और हमेशा ख़ुदा के वफ़ादारों का ही मिशन कामियाब रहा है। फिर सय्यदुल् मुरसलीन और मोमिनीन कामिलीन के मुक़ाबिले में ग़ालिब आने की और क्या उम्मीद हो सकती है।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ (सूरः अह़क़ाफ़: 27)

45 قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۡ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاۗءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ۝

यानी हमारा काम अल्लाह की वह्य के मुताबिक नसीहत सुना देना और अन्जाम से आगाह कर देना है। दिल के बहरे अगर इस पुकार को न सुनें तो हमारा कुसूर नहीं। वह ख़ुद अपने बहरेपन का ख़ामियाज़ा भुगतेंगे।

46 وَلَىِٕنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝

यानी यह लोग जो बहरे बने हुए हैं, यह उस वक़्त तक है कि ज़ोर से खट्खटाए न जाएँ। अगर अ़ज़ाबे इलाही की ज़रा सी भनक कान में पड़ गई या ख़ुदा के क़हर व इन्तिक़ाम की ज़रा सी भाप भी उनको छू गई तो आँख कान सब खुल जाएँगे। उस वक़्त बद्हवास होकर चिल्लाएँगे कि बेशक हम बड़े भारी मुजरिम थे, जो ऐसी कम्बख़्ती आई।

47 وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝

यानी राई के दाने के बराबर यदि किसी का अ़मल होगा तो वह भी मीज़ान में तुलेगा, इधर-उधर ज़ाया न होगा, न किसी पर ज़ुल्म व ज़्यादती की जाएगी। रत्ती-रत्ती का हिसाब बराबर कर दिया जाएगा।

'मवाज़ीन' मीज़ान की जमा (बहुवचन) है। शायद बहुत सी तराज़ुएँ हों या एक ही हो मगर मुख़्तलिफ़ आ़माल व अमल के एतिबार से कई क़रार दे दी गई हों। (वल्लाहु आ़लम) इससे सम्बन्धित सूरः अअ़राफ़ में ज़िक्र किया जा चुका है उसे देख लिया जाए।

यानी हमारा हिसाब आख़िरी और फ़ैसलाकुन होगा, जिस के बाद कोई दूसरा हिसाब नहीं। हम को सारी मख़्लूक़ का हिसाब लेने में किसी मददगार की ज़रूरत नहीं। आज जिन बातों से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) डराते हैं पिछले नबियों ने भी उन से डराया है।

48 وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝

यानी 'तौरेत शरीफ़' हक़ व बातिल, हिदायत व गुमराही और हलाल व हराम को बताने वाली और जिहालत व ग़फ़लत की अँधेरियों में रौशनी पहुँचाने वाली और ख़ुदा से डरने वालों को नसीहत सुनाने वाली किताब थी।

49 الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۝

क़ियामत का ख़त्रा भी इसीलिए रखते हैं कि उन के दिल में ख़ुदा का डर है। हर वक़्त दिल में खट्का लगा रहता है कि देखिए वहाँ क्या सूरत पेश आएगी? कहीं अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी और अ़ज़ाब के हक़्दार न बन जाएँ। ज़ाहिर है ऐसे ही लोग नसीहत से फ़ायदा उठाते हैं।

50 وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝

यानी एक नसीहत की किताब यह कुर्आन तुम्हारे सामने मौजूद है। जिस का नफ़ा होना, तौरेत से भी ज़्यादा रौशन है। क्या ऐसी साफ़ और रौशन किताब के तुम इन्कारी होते हो जहाँ इन्कार की गुन्जाइश ही नहीं?

51 وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ۝

यानी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और हज़रत मूसा व हज़रत हारून (अ़लै०) से अक्सर हम ने इब्राहीम को उसकी क़ाबिलियत व शान के मुनासिब हिदायत दी थी, बल्कि जवानी से पहले ही बचपन में उसे नेक राह पर डाल दिया था जो ऐसे ऊलुल् अ़ज़्म अम्बिया के शायाने शान हों।

यानी उसकी अहलियत और कमालात की पूरी ख़बर हम ही रखते हैं, इसीलिए जो बेहतर था हम ने अ़ता कर दिया।

52 اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝

यानी ज़रा उन की हक़ीक़त तो बयान करें कि यह पत्थर की खुद तराशी मूर्तियाँ खुदा किस तरह बन गईं।

53 قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ۝

यानी अक़्ल व फ़ितरत की कोई चीज़ हमारी पुष्टि में नहीं है। बात यह है कि ऊपर से कहते हैं कि हमारे बाप-दादा इन ही की पूजा करते चले आए हैं, फिर हम अपने बड़ों का तरीक़ा कैसे छोड़ देंगे।

54 قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝

यानी इस दलील से तुम्हारी हक़्क़ानियत और अक़्लमन्दी साबित न हुई। हाँ, यह साबित हुआ कि तुम्हारे बाप-दादा भी तुम्हारी तरह गुमराह और बेवक़ूफ़ थे, जिन की पैरवी कर के तुम तबाह हो रहे हो।

55 قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ۝

पूरी क़ौम के अक़ीदा के ख़िलाफ़ हज़रत इब्राहीम (अलै०) की ऐसी सख़्त बातचीत सुनकर उन में हलचल मच गई और कहने लगे, क्या सचमुच तेरा ख़याल और अक़ीदा यही है या केवल हँसी और दिल्लगी करता है?

56 قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝

यानी मेरा अक़ीदा ही यह है और पूरे यक़ीन व बसीरत से इसकी गवाही देता हूँ कि मेरा तुम्हारा सब का रब वही एक अल्लाह है, जिस ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया और उन की देखभाल रखी। कोई दूसरी चीज़ उसकी ख़ुदाई में शरीक नहीं हो सकती।

57 وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝

यह बात ज़रा आहिस्ता कही कि कुछ ने सुनी, बहुतों ने न सुनी। जिन्होंने सुनी उसकी कुछ परवाह न की क्योंकि वह समझ रहे थे कि अकेला एक नौजवान सारी क़ौम के मअबूदों (उपास्यों) का क्या बिगाड़ सकता है।

58 فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ۝

जब यह लोग शहर से बाहर एक मेला में गये तब हज़रत इब्राहीम (अलै०) ने मन्दिर में जाकर मूर्तियों को तोड़ डाला। सिर्फ़ एक मूर्ति को बाक़ी रहने दिया जो उन के नज़दीक सब से बड़ी थी और जिस कुल्हाड़ी से तोड़ा था वह उस बड़े के गले में लट्का दी, ताकि वह लोग जब वापस आकर यह सूरतेहाल देखें तो क़ुदरती तौर पर उन का ख़याल उस बड़े मूर्ति की ओर हो।

59 قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

यानी यह गुस्ताख़ी और बेअदबी की हरकत हमारे मअबूदों (उपास्यों) के साथ किस ने की। यक़ीनन

जिस ने यह काम किया बड़ा ज़ालिम और बद्माश है। (अस्तग़्फ़िरुल्लाह) यह शायद उन लोगों ने कहा होगा जिन के कान तक यह تَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ आवाज़ न पहुँची थी।

60 قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗۤ اِبْرٰهِيْمُ ۝

यह कहने वाले वह लोग होंगे जो ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के शब्द सुन चुके थे यानी वही एक शख़्स है जो हमारे मअ़बूदों (उपास्यों) का ज़िक्र बुराई से किया करता है, यक़ीनन यह काम उसी ने किया होगा।

61 قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰۤى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ۝

यानी उस को बुलाकर सबके सामने बयान लिया जाए ताकि मामले को सब लोग देखें और ख़ुद उस की बातें सुन कर गवाह रहें कि जो सज़ा उस को क़ौम की तरफ़ से दी जाएगी, बेशक वह उस का ह़क़्दार था। यह तो उन की बात थी और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का मक़्सद भी यही होगा कि सबके सामने बात करने का उन को मौक़ा मिले कि मुश्रिकीन को बेबस करें और ह़क़ का इज़्हार हो।

62-63 قَالُوْۤا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۝ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ۝

यानी मुझ से पूछने की ज़रूरत नहीं बल्कि यह उस बड़े मूर्ति ने जो सह़ी सालिम खड़ा है और तोड़ने का हथौड़ा भी उस के पास मौजूद है, उससे मालूम कर लिया जाए कि यह काम किसने किया है। अब आप के पास क्या दलील है शायद इसी ने किया हो। क्या दुनिया में ऐसा होता नहीं कि बड़े साँप छोटे साँपों को, बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है और बड़े बादशाह छोटी सल्तनतों को तबाह कर डालते हैं, इसीलिए बेहतरीन सूरत मेरे तुम्हारे दर्मियान फ़ैसले की यह है कि तुम ख़ुद अपने मअ़बूदों (उपास्यों) ही से दर्याफ़्त कर लो कि यह माजरा किस तरह़ हुआ। अगर यह कुछ बोल सकते हैं तो क्या ऐसे अहम मामले में बोल कर मेरे झूठ सच का फ़ैसला न कर देंगे?

यहाँ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا कहना ख़िलाफ़े वाक़िआ़ ख़बर देने के तौर पर न था, जिसे ह़क़ीक़त में झूठ कहा जाए बल्कि उनकी ज़िल्लत के लिए एक फ़र्ज़ी बात को बसूरत दावा लेकर बतौर इल्ज़ाम पेश की गई थी, जैसा कि बह़स व मुनाज़िरा में होता है इसको झूठ नहीं कह सकते। हाँ, बज़ाहिर सूरत झूठ की मालूम होती है, इसीलिए बाज़ अह़ादीस में इस पर शब्द किज़्ब का प्रयोग किया गया है।

मुफ़स्सिरीन ने इस में और भी कई बातें बयान की हैं। वल्लाहु आ़लम

64 فَرَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْۤا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝

यानी वह समझ गये हैं कि बेकार पत्थर पूजने से क्या ह़ासिल? या यहाँ यह मतलब हो कि तुम ने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया है कि बावजूद ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की धमकी सुनने के यूँ ही लापरवाई से बुतख़ाना (मन्दिर) खुला छोड़ कर चले गये। अपने मअ़बूदों (उपास्यों) की ह़िफ़ाज़त का कोई सामान कर के न गये। **(इब्ने कसीर)**

65 ثُمَّ نُكِسُوا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ۝

शर्मिन्दगी से आँख नहीं मिला सकते थे, यानी जानबूझकर हम से ऐसी नामुम्किन बात का मुताल्बा क्यों करता है? कहीं पत्थर भी बोलते हैं।

66-67 قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ۝ اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝

यानी फिर तुम को डूब मरना चाहिए कि जो मूर्ति एक शब्द न बोल सके, न किसी आड़े वक़्त काम आ सके और न ज़र्रह बराबर नफ़ा व नुक़्सान उस के अख़्तियार में हो, ऐसे को ख़ुदाई का दर्जा दे रखा है। क्या इतनी मोटी बात भी तुम नहीं समझ सकते?

68 قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝

यानी बहस व मुनाज़िरा में तो उस से जीत नहीं सकते। अब केवल एक ही सूरत है कि (जो मअ़बूद हमारी बल्कि ख़ुद अपनी मदद नहीं कर सकते) हम उन की मदद करें और उनके दुश्मन को सख़्त तरीन सज़ा दें। अगर ऐसा न कर सके तो हम ने कुछ काम न किया। चुनाँचे इस मश्वरे के मुताबिक़ ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को आग में जलाने की सज़ा पास हो गई। यानी जिस तरह़ ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने बुत तोड़ कर उन के दिल जलाए थे, यह उन को आग में जला डालें। आख़िर ज़ालिमों ने जमा होकर बड़े एहतिमाम और बेरह़मी के साथ ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को सख़्त भड़कती हुई आग में डाल दिया।

69 قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۝

यानी आग को हुक्म हुआ कि इब्राहीम पर ठंडी हो जा, लेकिन इतनी ठंडी नहीं कि तक्लीफ़ पहुँचने लगे। ऐसी ठंडक हो जो जिस्म व जान को ख़ुशगवार मालूम होने लगे।

आग का ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) पर ठंडा हो जाना उन का मोअ़जिज़ा (चमत्कार) था। मोअ़जिज़े की ह़क़ीक़त यही है कि अल्लाह तआ़ला अपनी आ़म आ़दत के ख़िलाफ़ कर दे।

70 وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ۝

यानी ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का बुरा चाहते थे, लेकिन ख़ुद नाकामी, ज़िल्लत और ख़सारा में पड़ गये। ह़क़ की सदाक़त ज़ाहिर हुई और अल्लाह का कलिमा बुलन्द हुआ।

आयत नं० 71 से 88 तक

وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۭ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا
صٰلِحِيْنَ ۝ وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۗءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا
عٰبِدِيْنَ ۝ وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰۗىِٕثَ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ۝
وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝
وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي
الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۝ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۡ
وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۭ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ
اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ۝ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖٓ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ۝
وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۝ وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ
مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ ۡ وَاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ
عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ۝ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهُمْ
مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ
سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۭ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

अनुवाद-

(71) और 'हमने' उनको (इब्राहीम) और लूत को ऐसी ज़मीन की ओर भेजकर बचा लिया, जिसको 'हमने' दुनिया वालों के लिए बरकत बना दिया था। (72) और 'हमने' उन्हें इस्हाक़ और याकूब (पोता) दिये और सब को 'हमने' नेक बनाया। (73) और 'हमने' उनको इमाम (नायक) बनाया, कि 'हमारे' हुक्म से (लोगों को) राह बताएँ; और उनको नेक काम करने, और नमाज़ क़ायम करने, और ज़कात देने के लिए हुक्म भेजा, और वे हमारी ही इबादत में लगे रहते थे। (74) और लूत को 'हमने' हिकमत और समझ दी, और उसको उस बस्ती से छुटकारा दिया, जो गन्दे काम करते थे, बेशक वे बुरे बद्कार लोग थे। (75) और 'हमने' (लूत को) अपनी रहमत में दाख़िल कर लिया, बेशक वह बड़े नेक लोगों में से थे। (76) और इससे पहले 'नूह' को भी, जब उन्होंने 'हमें' पुकारा तो 'हमने' उनकी दुआ क़ुबूल की, तो 'हमने' उनको और उनके साथियों को बड़ी मुसीबत से बचा लिया; (77) और 'हमने' उनकी मदद की, उन के मुक़ाबले में, जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया था; बेशक वे बहुत बुरे लोग थे, तो 'हमने' उन सबको डुबो दिया। (78) और 'दाऊद' और 'सुलेमान' को जब वह खेत के बारे में फ़ैसला कर रहे थे, जबकि उसमें लोगों की बकरियां जा पड़ी थीं, और 'हम' उनके मामले को देख रहे थे। (79) तो 'हमने' इस फ़ैसले की समझ सुलेमान को दे दी, और हिकमत व इल्म हर एक को दिया था; और 'हमने' दाऊद के अधीन कर दिये थे पहाड़ों को, कि वह तस्बीह़ करते थे; और पक्षियों को भी, और (ऐसा) करने वाले 'हम' ही थे। (80) और 'हमने' उन्हें

कवछ (बख्तर) बनाना तुम्हारे लिए सिखा दिया, ताकि वह तुमको लड़ाई में बचाए, तो क्या तुम शुक्र अदा करते हो? (81) और 'हमने' सुलेमान के लिए तेज़ हवा को अधीन कर दिया था, कि वह उनके हुक्म से चलती, उस ज़मीन की ओर; जिसमें 'हमने' बरकत रख दी थी, और 'हम' तो हर चीज़ का इल्म रखते हैं। (82) और कितने शैतानों को उनके अधीन कर दिया था, जो सुलेमान के लिए ग़ोते लगाते, और दूसरे काम भी करते थे, और 'हम' ही उनको थामे रहते थे। (83) और अय्यूब को, जब उन्होंने अपने रब को पुकारा कि ''मुझको तकलीफ़ पहुँच रही है, और 'तू' सबसे बढ़ कर रहम करने वाला है।''(84) तो 'हमने' उनकी दुआ क़ुबूल की, और जो उनको तकलीफ़ थी दूर कर दी और उनको उनके परिवार के लोग दिये, और उनके साथ उनके जैसे और भी दिये, अपनी ओर से रहमत के तौर पर, ताकि नसीहत रहे, इबादत करने वालों के लिए। (85) और इस्माईल और इद्रीस और ज़ुल्क़िफ्ल को भी, यह सब सब्र करने वाले थे। (86) और उन्हें 'हमने' अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह नेक लोगों में से थे। (87) और 'ज़ुन्नून' जबकि वह (मछली वाले) ग़ुस्सा होकर चले गये, तो यह समझे कि 'हम' उन पर तंगी न करेंगे, तो उन्होंने अन्धेरों में पुकारा कि 'तेरे' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'तू' पाक है, बेशक मैं ही ख़ताकार हूँ।''(88) तो 'हमने' उनकी दुआ क़ुबूल की, और उन्हें ग़म से छुटकारा दिया और इसी तरह 'हम' ईमान वालों को, छुट्कारा दिया करते हैं।

आयत नं० 71 से 88 तक की व्याख्या

71 وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ۝

यानी ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ह़ज़रत लूत (अ़लै०) को अपने साथ मुल्क शाम ले गये, जहाँ बहुत सी ज़ाहिरी व बातिनी बरकतें ज़ाहिर हुईं यानी बुढ़ापे में बेटा माँगा था, हम ने बेटा और पोता भी दे दिया यानी ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) को।

72 وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۭ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ۝

ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम, ह़ज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम, ह़ज़रत इस्ह़ाक़ अ़लैहिस्सलाम, ह़ज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम बड़े दर्जे के नेक बन्दों में हैं, क्योंकि सब नबी थे और अम्बिया से बढ़कर नेकी किस में हो सकती है?

73 وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۗءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ۝

यानी ऐसे मुकम्मल थे कि दूसरों को भी बना देते थे। उन की तरफ़ वह्य भेजी जिस में इन बातों की तरफ़ ताकीद थी।

यानी यही कि हमारी बन्दगी में लगे रहते थे, किसी दूसरी तरफ़ आँख उठा कर भी नहीं देखते थे। यही अम्बिया की शान होती है कि उन का हर काम अल्लाह की बन्दगी का पहलू लिए हुए होता है, यह अ़मली कमाल हुआ।

74 وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ۝

यानी हिक्मत व हुकूमत और इल्म व समझ जो अम्बिया की शान के लायक़ हो। बस्ती से मुराद 'सुदूम' और उस के आस-पास के इलाक़े हैं, वहाँ के लोग ख़िलाफ़े फ़ित्रत बहुत से गन्दे कामों में मुब्तिला थे, उन का क़िस्सा पहले कई जगह गुज़र चुका है।

75 وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

यानी जब हज़रत लूत (अलै०) की क़ौम पर अज़ाब भेजा तो लूत और उस के साथियों को हम ने अपनी मेहरबानी और रहमत की चादर में ढाँप लिया, ताकि नेकों और बुरों का अन्जाम अलग-अलग ज़ाहिर हो जाए।

76-77 وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

हज़रत नूह (अलै०) साढ़े नौ सौ बरस तक क़ौम को समझाते रहे, इतनी लम्बी मुद्दत में तमाम हालात से गुज़रे और तक्लीफ़ें उठाईं।

आख़िर में दुआ की اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ (सूरः क़मरः10) और رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا (सूरः नूहः 26) अल्लाह तआला ने दुआ क़ुबूल फ़रमाई, काफ़िरों को तूफ़ान में डुबो दिया और हज़रत नूह (अलै०) को अपने साथियों के साथ तूफ़ान की घबराहट और कुफ़्फ़ार की तक्लीफ़ से बचा लिया। उन का मुफ़स्सल क़िस्सा पहले गुज़र चुका है।

78-79 وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۝ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۡ وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۭ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝

हज़रत दाऊद (अलै०) अल्लाह के पैग़म्बर थे, हज़रत सुलेमान (अलै०) उन के बेटे और ख़ुद नबी हैं। दोनों को अल्लाह ने हुकूमत, कुव्वत-ए-फ़ैसला और इल्म व हिक्मत अता फ़रमाई।

हज़रत सुलेमान (अलै०) बचपन ही में इतनी समझ की बातें करते थे कि सुनने वाले हैरान रह जाएँ। हज़रत दाऊद (अलै०) की ख़िद्मत में एक मुक़द्दिमा पेश हुआ कि एक शख़्स के खेत में रात के वक़्त दूसरे लोगों की बकरियाँ घुसीं और खेती को नुक़्सान हुआ। हज़रत दाऊद (अलै०) ने यह देखकर कि बकरियों की क़ीमत उस मालियत के बराबर है जिस खेत वाले का नुक़्सान हुआ था, यह फ़ैसला किया कि बकरियाँ खेत वाले को दे दी जाएँ।

हज़रत सुलेमान (अलै०) ने फ़रमाया कि मेरे नज़्दीक खेती वाला बकरियाँ अपने पास रखे और दूध पिये और बकरियों वाले खेत की ख़िद्मत करें। जब खेती जैसी थी वैसी हो जाए तो बकरियाँ लौटा दें और खेती ले लें, इस में दोनों का नुक़्सान न होगा।

हज़रत दाऊद (अलै०) ने यह फ़ैसला सुनकर पसन्द फ़रमाया कि यही बेहतर है और अपनी बात

से वापस हुए यानी ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) की बात को क़ुबूल फ़रमा लिया। बाप-बेटे दोनों ने जो फ़ैसला किया वह अल्लाह तआ़ला के सामने था और दोनों ही को अल्लाह तआ़ला ने अपनी ओर से फ़ैसला करने की समझ दी थी, लेकिन अस्ल बात उस ने ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) को समझा दी। वह इस नतीजे पर पहुँचे जो अल्लाह के नज़्दीक बेहतर था और जिसे ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) ने भी क़ुबूल किया।

इस वाक़िये से ज़ाहिर हुआ कि अम्बिया (अ़लै०) बादशाह होकर भी मख़्लूक़ के छोटे-छोटे मामलात की तरफ़ इस तरह़ तवज्जोह फ़रमाते हैं।

ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) की बहुत अच्छी आवाज़ थी, ह़ालत यह होती थी कि जब जोश में आकर ज़बूर पढ़ते या अल्लाह की तस्बीह़ व तम्ह़ीद करते तो पहाड़, परिन्दे और जानवर भी उन के साथ आवाज़ से तस्बीह़ पढ़ने लगते थे।

80 وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) के हाथ में लोहा मोम की तरह़ कर दिया था। उसे मोड़कर हल्की, मज़बूत, अच्छे क़िस्म की ज़िरहें (कवच) तैयार करते थे जो लड़ाई में काम देती। यानी तुम्हारे फ़ायदे के लिए हम ने ह़ज़रत दाऊद (अ़लै०) के ज़रिये ऐसी अ़जीब चीज़ें निकाल दीं, इसलिए कि तुम इस क़िस्म की नेअ़मतों का शुक्र अदा करते हो।

81 وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ۝

ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) ने दुआ़ की थीः-

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ (सूरः साद्-35)

अल्लाह तआ़ला ने हवा और जिन्न उन के अधिकार में कर दिये। ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) ने एक तख़्त तैयार कराया था, जिस पर पूरे मन्त्रिमण्डल के लोग बैठ जाते और ज़रूरी सामान भी रख लिया जाता, फिर हवा आती ज़ोर से उसको ज़मीन से उठाती, फिर ऊपर जाकर हवा उनकी ज़रूरत के अनुसार चलती। जैसा कि दूसरी जगह फ़रमाया رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ (सूरः साद्-36)

यमन से शाम को और शाम से यमन को महीने भर में तय करने वाली दूरी को चन्द लम्हे में पहुँचा देती। तअ़ज्जुब है कि आज अ़जीब व ग़रीब हवाई जहाज़ों के ज़माने में भी बहुत से लोग इस क़िस्म के वाक़िआ़त का इन्कार करते हैं। क्या एक इन्सान इलेक्ट्री की मदद से इस तरह़ कर सकता है और अल्लाह तआ़ला एक पैग़म्बर के लिए अपनी क़ुद्रत से नहीं कर सकता कि किस को क्या देना है और हवा आदि से काम किस तरह़ लिया जा सकता है?

82 وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۝

शयातीन से मुराद सरकश जिन्न हैं। उन से ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) दरिया में गोता लगवाते कि मोती और जवाहिरात उसकी तह में से निकालें और इमारत में भारी काम करवाते और ह़ौज के बराबर

ताँबे के लगन और बड़ी दींगे जो अपनी जगह से हिल न सकें बनवा कर उठवाते थे और सख़्त-सख़्त काम उन से लेते।

मालूम होता है कि जिस क़िस्म के हैरत अंगेज़ काम इस ज़माने में अल्लाह तआ़ला ने कराए उस वक़्त छिपे हुए-रूहानी कुव्वतों से कराये जाते थे। यानी हम ने अपनी क़ुदरत से उन शयातीन को सुलेमान की क़ैद में इस तरह़ कर रखा था कि जो चाहते उन से काम लेते थे और वह कोई नुक़सान सुलेमान को नहीं पहुँचा सकते थे, वरना आदमी को क्या ताक़त है कि ऐसी मख़्लूक़ को अपने क़ब्ज़े में कर ले और जंज़ीरों में जकड़ कर रख दे وَاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ (सूरः साद़ः 38)

83-84 وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۚ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ ۖ وَاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ۝

ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) को अल्लाह तआ़ला ने दुनिया में हर तरह़ से नवाज़ा था। खेत, मवेशी, लौंडी, गुलाम, नेक औलाद और औ़रत मर्ज़ी के मुताबिक़ अ़ता की थी। ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) बड़े शुक्रगुज़ार बन्दे थे, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उनको आज़्माइश में डाला, खेत जल गये, जानवर मर गये और औलाद ख़त्म हो गईं, बदन में आबले और कीड़े पड़ गये, एक बीवी साथ रही, आख़िर में वह भी उकताने लगी।

मगर ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) बड़े शुक्रगुज़ार और सब्र करने वाले थे। जब तक्लीफ़ और दुश्मनों की दुश्मनी ह़द से गुज़र गई बल्कि दोस्त भी कहने लगे कि यक़ीनन अय्यूब (अ़लै०) ने कोई ऐसा सख़्त गुनाह किया है जिस की सज़ा ऐसी ही सख़्त हो सकती थी तब दुआ़ की "رَبِّ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ" रब को पुकारना था कि दरिया-ए-रह़मत उमन्ड पड़ा, अल्लाह तआ़ला ने मरी हुई औलाद से बेहतर औलाद दी, ज़मीन से चश्मा (स्रोत) निकाला, उसी से पानी पीकर और नहाकर तन्दुरुस्त हुए। बदन का सारा रोग जाता रहा और जैसा कि ह़दीस में है सोने की टिड्डियाँ बरसाईं यानी हर तरह़ से बेहतर कर दिया।

ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) पर यह मेहरबानी हुई और तमाम बन्दगी करने वालों के लिए एक नसीह़त और यादगार क़ायम हो गई कि जब किसी नेक बन्दे पर दुनिया में बुरा वक़्त आए तो ह़ज़रत अय्यूब (अ़लै०) की तरह़ सब्र दिखलाना और सिर्फ़ अपने परवरदिगार से फ़रियाद करना चाहिए। अल्लाह तआ़ला उस पर नज़रे अ़िनायत फ़रमाएगा और केवल इस तरह़ की आज़्माइश को देखकर किसी शख़्स के बारे में यह गुमान नहीं करना चाहिए कि वह अल्लाह की नाराज़गी की वजह से है।

85 وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

उन सब नेक बन्दों को याद करो। ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) और ह़ज़रत इद्रीस (अ़लै०) का ज़िक्र पहले सूरः 'मरयम' में गुज़र चुका है। जुल्किफ़्ल के बारे में इख़्तिलाफ़ है कि नबी थे जैसा कि अम्बिया के बारे में ज़िक्र फ़रमाने से ज़ाहिर होता है या केवल एक नेक मर्द थे। कहते हैं कि एक शख़्स के अधीन होकर कई बरस क़ैद रहे और बड़ी तक्लीफ़ें उठाईं।

'मुस्नद अह़मद' और 'जामेअ़ तिर्मिज़ी' में एक शख़्स का क़िस्सा आता है जो पहले सख़्त बद्कार और फ़ासिक़ व फ़ाजिर था, बाद में तौबः किया तो अल्लाह तआ़ला ने उसके मग़्फ़िरत की बशारत इसी दुनिया में लोगों को सुना दी, उस का नाम ह़दीस में 'किफ़्ल' आया है। बज़ाहिर यह वह 'ज़ुल् किफ़्ल' नहीं जिस का ज़िक्र क़ुर्आन करीम ने किया है।

86-87 وَ اَدْخَلْنٰهُمْ فِیْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝ وَ ذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَیْهِ فَنَادٰی فِی الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝

'मछली वाला' फ़रमाया ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) को। उन का क़िस्सा यह है कि अल्लाह तआ़ला ने उन को शहर नैनवा की तरफ़ (जो मूसल के क़रीब है) भेजा था। ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) ने उनको बुतपरस्ती से रोका और ह़क़ की तरफ़ बुलाया लेकिन वह मानने वाले कहाँ थे, रोज़ बरोज़ हठधर्मी में तरक़्क़ी करते रहे। आख़िर में बद्दुआ़ की और क़ौम की ह़रकत से ख़फ़ा होकर शहर से निकल गये, हुक्म इलाही का इन्तिज़ार न किया और वादा कर के गये कि तीन दिन के बाद तुम पर अ़ज़ाब आएगा। उनके निकल जाने के बाद क़ौम को यक़ीन हुआ कि नबी की बद्दुआ़ ख़ाली नहीं जाएगी, कुछ आसार भी अ़ज़ाब के देखे होंगे, घबरा कर सब लोग बच्चों और जानवरों समेत बाहर जंगल में चले गये और माँओं को बच्चों से जुदा कर दिया। मैदान में पहुँचकर सब ने रोना चिल्लाना शुरु किया, बच्चे और माएँ, आदमी और जानवर सब शोर मचा रहे थे, कान से आवाज़ न सुनाई देती थी। इस तरह़ तमाम बस्ती वालों ने सच्चे दिल से तौबः की, बुत तोड़ डाले, अल्लाह तआ़ला की इताअ़त का अ़हद बाँधा और ह़ज़रत यूनुस(अ़लै०) को तलाश करने लगे कि मिलें तो उन की अब पैरवी की जाए।

अल्लाह तआ़ला ने आने वाला अ़ज़ाब उन पर से उठा लिया:-

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْیَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَاۤ اِیْمَانُهَاۤ اِلَّا قَوْمَ یُوْنُسَ ؕ لَمَّاۤ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْیِ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَ مَتَّعْنٰهُمْ اِلٰی حِیْنٍ ۝ (सूरः यूनुस-98)

उधर ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) बस्ती से निकल कर एक जमाअ़त के साथ कश्ती पर सवार हुए वह

कश्ती डूबने लगी, कश्ती वालों ने बोझ हल्का करने के लिए इरादा किया कि एक आदमी को नीचे फेंक दिया जाए (या अपनी सोच के मुताबिक़ यह समझे कि कश्ती में कोई ग़ुलाम अपने आक़ा से भागा हुआ है) बहरहाल इसके लिए (क़ुरअ़ अन्दाज़ी यानी) नाम खोला गया तो उसमें ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) का नाम निकला। दो तीन मर्तबः क़ुरअ़ अन्दाज़ी की, हर बार ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) का नाम निकलता रहा। यह देखकर ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) दरिया में कूद पड़े जिन्हें फ़ौरन एक मछली आकर निगल गई, अल्लाह तआ़ला ने मछली को हुक्म दिया कि ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) को अपने पेट में रख ले और कोई नुक़्सान न पहुँचाए। यह तेरी रोज़ी नहीं बल्कि तेरा पेट हम ने उस का क़ैदख़ाना (जेल) बनाया है। उस को अपने अन्दर ह़िफ़ाज़त से रखना। उस वक़्त ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) ने अल्लाह को पुकाराः-

"لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ" अपनी ग़ल्ती का एतिराफ़ किया कि बेशक मैंने जल्दी की कि तेरे हुक्म का इन्तिज़ार किये बिना बस्ती वालों को छोड़कर निकल खड़ा हुआ। ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) का यह इत्तिह़ाद (रिसर्च) था, जो उम्मत के ह़क़ में माफ़ है, मगर अम्बिया की तर्बियत है की गई कि जिस मामले में वह्य आने की उम्मीद हो बिना इन्तिज़ार किये क़ौम को छोड़कर चला जाना एक नबी की शान के लायक़ न था, इसी वजह से पकड़ हो गई, आख़िर में तौबः के बाद निजात मिली। मछली ने किनारे पर आकर उगल दिया और उसी बस्ती की तरफ़ सही सालिम वापस किये गये।

अल्लाह तआ़ला की आ़दत है कि वह क़रीबी बन्दों की थोड़ी सी भी ग़ल्ती को बहुत सख़्त अन्दाज़ में लेता है।

यानी दरिया की गहराई मछली के पेट और अन्धेरी रात के अन्धेरों में मेरी ग़ल्ती को माफ़ फ़रमाइए बेशक मुझसे ग़ल़ती हुई है।

अह़ादीस में इस दुआ़ (लाइलाहा इल्लल्लाह.....) की बहुत फ़ज़ीलत आई है और उम्मत ने किसी अ़हम ह़ालात में पढ़ने से बड़ी राह़त पाई है।

88 فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۭ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

यानी ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) के साथ यह ख़ास नहीं, जो ईमानदार लोग हम को इस तरह़ पुकारेंगे हम उनको बलाओं से निजात देंगे।

आयत नं० 89 से 112 तक

وَ زَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿۸۹﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۪ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَ اَصْلَحْنَا لَهٗ
زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّ رَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿۹۰﴾ وَالَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا
مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَ ابْنَهَاۤ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۱﴾ اِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّ اَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿۹۲﴾ وَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ
كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَ اِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿۹۴﴾ وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَاۤ
اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿۹۵﴾ حَتّٰۤى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَ مَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿۹۶﴾ وَ اقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ
شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۹۷﴾ اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿۹۸﴾ لَوْ كَانَ هٰۤؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۹۹﴾ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا
لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۤى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ
خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَ تَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ
كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَاۤ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ
الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿۱۰۶﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰۤى
اِلَيَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۰۸﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ وَاِنْ اَدْرِيْۤ اَقَرِيْبٌ اَمْ
بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿۱۰۹﴾ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿۱۱۰﴾ وَاِنْ اَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَ مَتَاعٌ اِلٰى
حِيْنٍ ﴿۱۱۱﴾ قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

अनुवाद-

(89) और ज़करीया (को याद करो) जबकि उन्होंने अपने रब को पुकारा, "ऐ मेरे 'रब'! मुझे अकेला न छोड़, और 'तू' सबसे अच्छा वारिस है।" (90) तो 'हमने' उनकी दुआ़ क़ुबूल की और उसे 'यह्या' को दिया, और उसकी पत्नी को उनके लिए ठीक (औलाद के क़ाबिल) कर दिया; बेशक वे नेकी के कामों में एक-दूसरे के मुक़ाबले में जल्दी करते थे, और हमें रग़बत (लगाओ) और डर के साथ पुकारते और 'हमारे' सामने नर्म (डरते) रहने वाले थे। (91) और वह (मरयम) जिन्होंने अपनी पाक दामनी (सतीत्व) को बचाए रखा, तो 'हमने' उनमें अपनी रुह़ फूँक दी और उनको और उनके बेटे को सारी दुनिया के लिए एक निशानी बना दिया। (92) यह तुम्हारी जमाअ़त एक ही जमाअ़त है और 'मैं' तुम्हारा 'रब' हूँ,' तो तुम 'मेरी' ही इबादत किया करो।" (93) और उन्होंने अपने मामले (दीन) को टुकड़े-टुकड़े कर डाला- सब 'हमारे' पास ही वापस आने वाले हैं, (94) तो जो कोई नेक काम करेगा, और वह ईमान वाला भी हो, तो उसकी कोशिश बेकार जाने वाली नहीं, और 'हम' तो उसे लिख लेते हैं। (95) और जिस बस्ती को 'हमने' हलाक कर दिया, कि (रूजूअ़ करें) वह रूजूअ़ नहीं करेंगे। (96) यहाँ तक कि याजूज और माजूज खोल दिये जाएँ, और वे हर ऊँची जगह से निकल पड़ें। (97) और सच्चा वादा क़रीब आ जाए तो अचानक उन लोगों की आखें फटी की फटी रह जाएँ जिन्होंने इन्कार किया, "हाय हमारा दुर्भाग्य! हम इससे ग़फ़लत में पड़े थे, बल्कि हम

ही ज़ालिम थे।'' (98) ''बेशक तुम और जिन की तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते रहे जहन्नम के ईंधन होंगे, उसमें तुम दाख़िल हो कर रहोगे।'' (99) अगर यह लोग मअ़बूद होते, तो इसमें क्यों जाते, और इन सब को हमेशा इसी में रहना होगा। (100) वहाँ भी चीख़ते-चिल्लाते रहेंगे, और कुछ न सुन सकेंगे। (101) जिन लोगों के लिए पहले ही 'हमारी' ओर से भलाई निश्चित हो चुकी है, वे इससे दूर रखे जाएँगे। (102) वे उसकी आहट तक न सुनेंगे, और अपनी मन चाही (नेअ़मतों में) हमेशा रहेंगे। (103) उन्हें सबसे बड़ी घबराहट ग़म में न डालेगी, और फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे, ''और यही है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा किया जाता था; (104) जिस दिन 'हम' आसमान को लपेट देंगे, जैसे तुमार (रोल) में काग़ज़ लपेटे जाते हैं, जिस तरह 'हमने' (दुनिया को) पहले पैदा किया था, फिर 'हम' उसे दोहरावेंगे, और यह वादा है, 'हमारे' ज़िम्मे, 'हम' इस काम को करके रहेंगे। (105) और 'हमने' ज़बूर में नसीह़त के बाद लिख दिया था कि ''धरती के वारिस 'हमारे' नेक बन्दे होंगे।'' (106) इसमें एक सन्देश है इबादत करने वालों के लिए। (107) और 'हमने' आप को सारी दुनिया के लिए रह़मत बना कर भेजा है। (108) कह दीजिए, ''मेरे पास यह वह्य आयी है कि, 'तुम्हारा मअ़बूद 'वही' एक अल्लाह है,' तो क्या तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते हो?'' (109) फिर भी अगर यह लोग मुँह फेरें तो कह दीजिए, ''मैंने तुम्हें खुल्लम- खुल्ला सचेत कर दिया, अब मैं यह नहीं जानता कि जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है वह क़रीब है या दूर।'' (110) 'वह' ऊँची आवाज़ में कही हुई बात को भी जानता है, और उसे भी जानता है जो तुम छिपा कर करते हो। (111) और मुझे नहीं मालूम, हो सकता है कि वह तुम्हारे लिए आज़माइश हो, और एक मुद्दत (अवधि) तक के लिए फ़ायदा, (112) कहा, ''ऐ मेरे रब! ह़क़ के साथ फ़ैसला कर दीजिए! और हमारा 'रब' रह़मान है, 'उसी' से मदद माँगी जाती है, उन बातों के मुक़ाबले में जो तुम बयान करते हो।

आयत नं० 89 से 112 तक की व्याख्या

89 وَ زَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۝

यानी ऐसी औलाद दे जो मेरे बाद क़ौम की ख़िद्मत कर सके और मेरी तअ़लीम को फैलाए। जैसा कि सूरः 'मरयम' में गुज़र चुका है कि वह वारिस तलब कर रहे थ يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ (सूरः मरयम :6) इसी तरह़ के नाम से अल्लाह को याद किया।

90 فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۪ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَ اَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّ رَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝

यानी बाँझ औ़रत को विलादत के क़ाबिल कर दिया।

91 وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

विलादत के ह़लाल व ह़राम दोनों तरीक़ों से मह़फ़ूज़ थीं और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को जो 'रुहुल्लाह' के लक़ब से पुकारा उस को उन के पेट में परवरिश किया।

92 إِنَّ هَٰذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ﴿٩٢﴾

उनका 'निशानी' होना सूरः आले इमरान और सूरः मरयम में बयान हो चुका है।

यानी ख़ुदा भी एक और तुम्हारा अस्ल दीन भी एक है। तमाम अम्बिया की बुनियाद एक है जो एक की तअ़लीम है वही दूसरों की है। रहा कुछ इख़्तिलाफ़ (मतभेद) तो वह ज़मान व मकान के इख़्तिलाफ़ (मतभेद) की वजह से मस्लहत व हिक्मत है। इख़्तिलाफ़ वह है जो उसूल (बुनियाद) में हो बस ज़रूरी है कि सब मिलकर अल्लाह की बन्दगी करें और जिन उसूलों में तमाम अम्बिया मुत्तफ़िक़ (सहमत) हैं उन को मज़बूती से पकड़ें।

93 وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ ۖ كُلٌّ إِلَيْنَا رَاجِعُونَ ﴿٩٣﴾

हम ने तो उसूल के एतिबार से एक दीन दिया था, लोगों ने ख़ुद इख़्तिलाफ़ (मतभेद) कर के उसके टुकड़े-टुकड़े कर लिए और आपस में फूट डाल दी।

यानी हमारे पास आकर तमाम इख़्तिलाफ़ात (मतभेद) का फ़ैसला हो जाएगा, जब हर एक को उस के किये का बदला मिलेगा।

94 فَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهِ ۖ وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ﴿٩٤﴾

यानी किसी की मेहनत अकारत न जाएगी, नेकी का मीठा फल मोमिन को मिलकर रहेगा, कोई थोड़ी सी नेकी भी ज़ाया न होगी, हर छोटा बड़ा अ़मल उसके आ़मालनामे में दर्ज कर देंगे जिसे क़ियामत के दिन सामने लाया जाएगा।

95 وَحَرَامٌ عَلَىٰ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٩٥﴾

यानी जिन के लिए हलाक होना मुक़द्दर हो चुका है, वह कभी अपने कुफ़्र व गुनाह को छोड़कर और तौबः कर के अल्लाह की ओर पलटने वाले नहीं। न कभी दुनिया में इस वजह से वापस किये जा सकते हैं कि दोबारा यहाँ आकर पिछली ज़िन्दगी की कमी को पूरा कर लें।

फिर उन को निजात की उम्मीद कहाँ से हो सकती है उन के लिए तो केवल एक ही वक़्त है। जब वह दोबारा ज़िन्दा होकर अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ होंगे और अपनी ज़्यादतियों का एतिराफ़ करके शर्मिन्दा होंगे, मगर उस वक़्त शर्मिन्दगी कुछ काम न आएगी वह वक़्त क़ियामत का है।

96 حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُم مِّن كُلِّ حَدَبٍ يَنسِلُونَ ﴿٩٦﴾

यानी क़ियामत के क़रीब हज़रत ईसा (अ़लै०) के आने के बाद ज़ुल्क़रनैन की बनाई हुई दीवार को तोड़कर याजूज-माजूज का लश्कर टूट पड़ेगा। यह लोग अपनी कसरत व भीड़ की वजह से हर जगह छा जाएँगे, हर तरफ़ उन ही का हुजूम नज़र आएगा।

उन का बेपनाह सैलाब ऐसी शिद्दत और तेज़ रफ़्तारी से आएगा कि कोई इन्सानी ताक़त रोक न सकेगी और मालूम होगा कि हर टीले और पहाड़ से उन की फ़ौजें फिसलती और लुढ़कती चली आ रही

हैं। सूरः 'कहफ़' के आख़िर में इस क़ौम के बारे में देखा जा सकता है।

'ह़ज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसैद ग़िफ़ारी' (रज़ि०) कहते हैं कि एक बार हम आपस में क़ियामत के विषय में बातें कर रहे थे कि आप (सल्ल०) हमारे पास तश्रीफ़ लाए और फ़रमाया, "क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक तुम यह दस निशानियाँ न देख लोगे"। फिर आप (सल्ल०) ने तर्तीब से उन का ज़िक्र फ़रमायाः-

1- धुवां।
2- दज्जाल।
3- दाब्बतुल् अर्ज़ का ज़ाहिर होना।
4- सूरज का पश्चिम से निकलना।
5- ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) का नुज़ूल।
6- याजूज व माजूज की परवरिश।
7- तीन मक़ामात पर ज़मीन का धंसना। मश्रिक़, मग़्रिब और जज़ीरतुल् अ़रब में।

इन निशानियों के बाद एक आग पैदा होगी जो यमन से निकलेगी और लोगों को उनके इकट्ठा होने की जगह शाम ले जाएगी। (मुस्लिम)

97 وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَإِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ أَبْصَارُ الَّذِينَ كَفَرُوا يَا وَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ مِنْ هَٰذَا بَلْ كُنَّا ظَالِمِينَ ۝

यानी बदले का वादा जब नज़्दीक आ जाएगा, उस वक़्त मुन्किरों की आँखें घबराहट की वजह से फटी की फटी रह जाएँगी और अपनी ग़फ़्लत पर अफ़्सोस करेंगे कि आज के दिन के बारे में हम कैसे बेख़बर थे जो ऐसी बर्बादी आई।

काश! हम दुनिया में इस आफ़त से बचने की फ़िक्र करते यानी बेफ़िक्री भी कैसे कहें। क्योंकि नबियों ने तो खोल-खोल कर आगाह कर दिया था, लेकिन हम ने ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म किया कि उन की बात न मानी और बराबर गुनाहों पर इस्रार करते रहे।

98 إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ أَنْتُمْ لَهَا وَارِدُونَ ۝

यह बात मक्का के पुजारियों से कही जा रही है यानी तुम और तुम्हारे यह मअ़बूद (पूज्य) सब दोज़ख़ का ईधन बनेंगे وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ (सूरः बक़रः 24)

इस के माने यह नहीं कि पत्थर का अ़ज़ाब दिया जाएगा, बल्कि मतलब यह है कि मूर्तिपूजकों पर और सख़्ती की जाएगी। जैसा कि आगे फ़रमाया لَوْ كَانَ هَٰؤُلَاءِ آلِهَةً مَا وَرَدُوهَا और उनका अफ़्सोस बढ़े और बेवक़ूफ़ी ज़्यादा साफ़ हो कि जिन से ख़ैर की उम्मीद रखते थे, वह आज ख़ुद अपने को न बचा सके, फिर हमारी ह़िफ़ाज़त क्या कर सकते हैं?

وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ से मुराद यहाँ सिर्फ़ मूर्तियाँ हैं क्योंकि बात उन्हीं के पुजारियों से है, लेकिन

अगर 'मा' को आम रखा जाए यानी जिन फ़र्ज़ी मअ़बूदों (उपास्यों) के आग में दाख़िल होने से कोई चीज़ रुकावट न हो तो वह अपने पुजारियों के साथ दोज़ख़ का ईंधन बनाये जाएँगे। जैसे- शयातीन व झूठे उपासक, मगर वह लोग नहीं जो अल्लाह के मक़्बूल हैं। जैसे- ह़ज़रत मसीह़ व उ़ज़ैर और मलाइका इसलिए आगे स्पष्ट कर दिया إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ ۙ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ

99 لَوْ كَانَ هَٰؤُلَاءِ آلِهَةً مَّا وَرَدُوهَا ۖ وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

यानी सब उपास्य और उपासक हमेशा दोज़ख़ में पड़े रहेंगे।

100 لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ۝

यानी शिद्दते हौलनाकी और अ़ज़ाब की सख़्त तक्लीफ़ और अपने चिल्लाने के शोर से कुछ सुनाई न देगा और ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि एक वक़्त आएगा जब हर दोज़ख़ी को एक लोहे की सन्दूक़ में बन्द कर के ऊपर मेख़ें ठोक दी जाएँगी और जहन्नम की तह में छोड़ दिये जाएँगे, शायद कुछ न सुन सकना उस वक़्त का ह़ाल हो।

101 إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ ۙ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ۝

यानी एक बार पुल सिरात पर से गुज़र कर फिर हमेशा दूर रहेंगे और उस पर से गुज़रते हुए भी दोज़ख़ की तक्लीफ़ महसूस करेंगे।

102 لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ۝

जन्नतियों को दोज़ख़ से इतनी दूरी होगी कि उसकी आहट तक महसूस न करेंगे और निहायत ऐ़श व आराम के साथ हमेशा जन्नत के मज़े लूटेंगे।

103 لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ۚ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝

यानी उस दिन जब सख़्त घबराहट होगी अल्लाह तआ़ला उन को रंज व ग़म से महफ़ूज़ रखेगा। क़ब्रों से उठने या जन्नत में दाख़िल होने के वक़्त फ़रिश्ते उन का इस्तिक़बाल (स्वागत) करेंगे और कहेंगे कि जिस हमेशा की राह़त का तुम से वादा किया गया था, आज उसके पूरा होने का वक़्त आ गया है।

104 يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ۝

यानी जब क़ियामत आएगी आसमानों की तह़ें लपेट दी जाएँगी, जिस तरह़ लिखा हुआ काग़ज़ लपेट कर रख दिया जाता है।

105 وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ۝

वफ़ादार बन्दों से अल्लाह का वादा है कि उनको दुनिया व आख़िरत की कामियाबी और इस ज़मीन और जन्नत की ज़मीन का वारिस बनाएगा। चुनाँचे फ़रमायाः-

إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ (अल् आराफ़ रुकूअ़ 15)

इसी तरह फ़रमायाः-

और "إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ" (सूरः मोमिन रुकूअः 6)

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हैः-

और "وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ"

(सूरः नूर रुकूअः 7)

यह ऐसा वादा है जिस की ख़बर उस ने अपनी किताब में दी। 'लौहे महफ़ूज़' और 'उम्मुल् किताब' में यह वादा दर्ज किया और अम्बिया (अ़लै०) की ज़बानी बार-बार एलान कराया। हज़रत दाऊद (अ़लै०) की किताब ज़बूर (29–37) में है कि सच्चे लोग ज़मीन के वारिस होंगे, चुनाँचे इस उम्मत में के कामिल वफ़ादार और सच्चे बन्दे लम्बी मुद्दत तक ज़मीन के वारिस रहे। पूरब व पश्चिम में उन्होंने आसमानी बादशाहत क़ायम की, अ़द्ल व इन्साफ़ के झंडे गाड़ दिये, दीने हक़ का डंका बजा दिया और नबी करीम (सल्ल०) की यह पेशीनगोई उन के हाथों से पूरी हुई।

إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى زَوَى لِيَ الْأَرْضَ فَرَأَيْتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا وَإِنَّ أُمَّتِي سَيَبْلُغُ مُلْكُهَا مَا زُوِيَ لِي مِنْهَا

और इसी क़िस्म की दूसरी पेशीनगोई इमाम मेंहदी (रह०) और हज़रत मसीह (अ़लै०) के ज़माने में पूरी होकर रहेगी।

106 إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ عَابِدِينَ ۝

यानी इस क़िस्म की बशारत सुनकर अल्लाह तआ़ला की बन्दगी करने वाले अपने मतलब को पहुँचते हैं या इस कुर्आन करीम में जो बशारत व हिदायत है, बन्दगी करने वालों के लिए काफ़ी फ़ायदा पहुँचाने वाली है।

107 وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝

यानी आप तो सारे जहान के लिए रहमत बनाकर भेजे गये हैं। अगर कोई बद्बख़्त इस रहमत से खुद ही फ़ायदा न उठाए तो यह उस का क़ुसूर है। सूरज से रौशनी और गर्मी का नफ़ा हर तरफ़ पहुँचता है, लेकिन कोई शख़्स अपने ऊपर तमाम दरवाज़े और सुराख़ बन्द कर ले तो यह उसकी दीवानगी होगी।

सूरज के आ़म नफ़ा में कोई शक नहीं हो सकता और यहाँ तो 'रहमतुल्लिल्आ़लमीन' का नफ़ा इतना है कि जो बद्बख़्त फ़ायदा न उठाना चाहे उस को भी किसी न किसी दर्जे बिना चाहे रहमत का हिस्सा पहुँच जाता है। चुनाँचे दुनिया में उ़लूमे नुबूव्वत और तहज़ीब व इन्सानियत के उसूल की आ़म सोच से हर मुस्लिम व काफ़िर अपने-अपने हिसाब से फ़ायदा उठाता है।

अल्लाह तआ़ला ने वादा फ़रमा लिया है कि पहली उम्मतों के मुक़ाबिले में इस उम्मत के काफ़िरों को आ़म अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखा जाएगा। रसूलुल्लाह (सल्ल०) के आ़म अख़्लाक़ के अ़लावा जिन काफ़िरों से आप जिहाद करते थे वह भी इन्सानियत के लिए सरासर रहमत था, क्योंकि उसके ज़रिये इन्सानियत जन्नत की हक़्दार बनती थी और बहुत से अन्धे जो आँखें बनवाने से भागते थे, इस सिल्सिले में उन

की आँखों में भी ईमान की रौशनी पहुँच जाती थी। एक ह़दीस में हैः-

"وَالَّذِی نَفْسِی بِیَدِهٖ لَاُقَتِّلَنَّهُمْ وَلَاُصَلِّبَنَّهُمْ وَلَاَهْدِیَنَّهُمْ وَهُمْ کَارِهُوْنَ اِنِّیْ رَحْمَةٌ بَعَثَنِیَ اللّٰهُ وَلَا یَتَوَفَّانِیْ حَتّٰی یُظْهِرَ اللّٰهُ دِیْنَهٗ"

(इब्ने कसीर)

इन शब्दों से आप के 'रह़मतुल्लिल्आलमीन' होने का मतलब ज़्यादा वुस्अ़त के साथ समझ में आ सकता है।

108 قُلْ اِنَّمَا یُوْحٰۤی اِلَیَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝

यह रिसालत के साथ तौह़ीद का बयान हुआ यानी जो रह़मत लेकर आप तशरीफ़ लाए हैं उस का निचोड़ तौह़ीद कामिल है और यह ऐसा साफ़ व स्पष्ट है जिस के क़ुबूल करने में आदमी को कुछ पसोपेश न होना चाहिए। तो क्या तुम हुक्म मानने और ह़क़ के सामने गर्दन डाल देने के लिए तैयार हो? अगर ऐसा है तो ठीक है वरना मैं बात पहुँचा चुका, तुम अपना अन्जाम सोच लो।

109 فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰی سَوَآءٍ ؕ وَاِنْ اَدْرِیْۤ اَقَرِیْبٌ اَمْ بَعِیْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ۝

यानी इतनी हुज्जत के बाद भी न मानो तो मैं तुम को ख़बर कर चुका हूँ कि अब मैं तुम से बेज़ार और तुम मुझ से अलग हो। तुम्हारा अ़मल तुम्हारे साथ और मेरा अ़मल मेरे साथ, हर एक का जो नतीजा होगा सामने आ जाएगा।

110 اِنَّهٗ یَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَیَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ۝

वही हर खुली-छुपी बात को जानता है और यह भी जानता है कि किस बात का क्या बदला मिलना चाहिए और कब मिलना चाहिए।

111 وَاِنْ اَدْرِیْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ اِلٰی حِیْنٍ ۝

ताख़ीर, अ़ज़ाब में मुम्किन है। तुम को जाँचना हो कि इस मुद्दत में कुछ समझ लो और शरारतों से बाज़ आ जाओ या केवल ढ़ील देना हो कि एक मुद्दत तक दुनिया में फँस कर बुराई का पैमाना पूरी तरह़ भर लो।

112 قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰی مَا تَصِفُوْنَ ۝

यानी जैसे हर मामले का फ़ैसला इन्साफ़ के साथ करना आप की शान है, उसी के अनुसार मेरे और मेरी क़ौम के दर्मियान जल्दी फ़ैसला फ़रमा दीजिए। यानी हम फ़ैसला चाहते हैं और काफ़िरों की ख़ुराफ़ात के मुक़ाबिले में मदद माँगते हैं। इसी तरह़ दुआ अम्बिया (अ़लै०) किया करते थेः- "رَبَّنَا افْتَحْ بَیْنَنَا وَبَیْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَیْرُ الْفٰتِحِیْنَ" (सूरः अअ़राफ़ रुकूअ़ 11) क्योंकि अपनी सदाक़त और अल्लाह तआ़ला के इन्साफ़ पर पूरा भरोसा होता था।

□□□

(भाग-22)

सूर-ए-ह़ज (सूरः नं.22)

आयत नं० 1 से 29 तक

तफ़्सीर सूरः हज

नाम- आयत नं० (27) وَأَذِّن فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ से यह नाम लिया गया है।

सूरः के नाज़िल होने का ज़माना-

इस बारे में उ़लमा के विचार अलग-अलग हैं कि यह सूरः मक्की है या मदनी। 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' का क़ौल है कि इन तीन आयतों के अ़लावा पूरी सूरः मदनी है। वह तीन आयतें هَٰذَانِ خَصْمَانِ से शुरु होती हैं। 'क़तादा' का ख़याल है कि चार आयतें मक्की हैं, जिन की शुरुआ़त وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ से होती है।

अक्सर मुफ़स्सिरीन का कहना है कि पूरी सूरः में मक्की और मदनी आयतें मिली हुई हैं। जिन आयतों की शुरुआ़त يَا أَيُّهَا النَّاسُ से है वह मक्की हैं और जिन की शुरुआ़त يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا से है वह मदनी हैं।

इस सूरः में ह़ज की फ़र्ज़ियत, उस के अरकान व वाजिबात और दूसरे शआ़यर ह़ज का बयान है और उस के ज़ाहिरी और अन्दुरूनी फ़ायदों का भी ज़िक्र आया है। 'कुर्तुबी' ने नक़्ल किया है कि यह सूरः उन अ़जीब सूरतों में से है जिन की आयतें नुज़ूल के एतिबार से कई तरह़ की हैं। कोई आयत रात में नाज़िल हुई है तो कोई दिन में, कोई सफ़र में तो कोई ह़ज़र में, कोई मक्की है तो कोई मदनी, किसी का विषय जंग है तो किसी का सुलह़, कोई नासिख़ है तो कोई मन्सूख़ और कोई मोह़कम है तो कोई मुतशाबेह।

पूरी सूरः को पढ़ने से मालूम होता है कि नुज़ूल का ज़माना अलग-अलग होने के एतिबार से उस के विषय भी विभिन्न हैं। कुछ आयतों का सम्बन्ध मुश्रिकीने मक्का से है तो कुछ का मुनाफ़िक़ीन से और कुछ का सम्बन्ध मुसलमानों से है।

अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः के शुरु में आ़म इन्सानों को सम्बोधित कर के फ़रमाया है कि तुम लोग अपने रब से डरते हुए ज़िन्दगी गुज़ारो, नेक अ़मल करो और बुराईयों से बचो, इसलिए कि क़ियामत का ज़लज़ला अ़ज़ीम होगा और वह इतना दहशतनाक होगा कि मारे ख़ौफ़ के माएँ अपने बच्चों को दूध पिलाना भूल जाएँगी, ह़ामिला औ़रतों के ह़मल गिर जाएँगे और हर आदमी अपना होश खो बैठेगा और ऐसा मालूम होगा कि जैसे सब ने कोई बेहोश करने वाली चीज़ पी ली है, ह़ालांकि ऐसी बात नहीं होगी बल्कि अ़ज़ाबे इलाही की सख़्ती के तसव्वुर से उन पर यह कैफ़ियत तारी होगी।

आयत नं० 1 से 13 तक

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ
ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۝ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝ يٰٓاَيُّهَا
النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ
مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۭ وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ۚ
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۭ وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ
اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْىِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِى الْقُبُوْرِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ
فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ ثَانِىَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى
حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ۨ اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨ انْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ
الْمُبِيْنُ ۝ يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ
لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ۝

अनुवाद-

① ऐ लोगो! अपने रब से डरो, क़ियामत का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ है; ② जिस दिन तुम उसे देखोगे, हर दूध पिलाने वाली, अपने दूध पीते (बच्चे) को भूल जाएगी, और जितनी ह़मल वालियां (गर्भवती) हैं सब अपना ह़मल डाल देंगी, और लोग तुझे नशा की ह़ालत में दिखाई देंगे, हालाँकि वे नशे में न होंगे, बल्कि अल्लाह का अ़ज़ाब है ही सख़्त चीज़। ③ और कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अल्लाह के बारे में बिना इल्म के झगड़ा किया करते हैं, और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं। ④ (जबकि) उसके लिए लिखा जा चुका है, कि जो उससे दोस्ती रखेगा, तो उसे वह गुमराह कर के रहेगा, और उसको दोज़ख के अ़ज़ाब की राह दिखा देगा। ⑤ ऐ लोगो! अगर तुमको (दोबारा) जी उठने में कुछ शक हो तो 'हमने' तुमको मिट्टी से, फिर बूँद से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर उससे बोटी बना कर पैदा किया जिस की बनावट अधूरी भी और पूरी भी होती है, ताकि 'हम' तुम्हारे सामने (हक़) ज़ाहिर कर दें, और 'हम' रह़िम (गर्भाशय) में जिसको चाहते हैं एक निश्चित समय तक ठहराए रखते हैं, फिर तुमको बच्चे की शक्ल में निकालते हैं कि तुम अपनी जवानी को पहुँचो; और तुम में से कोई तो पहले मर जाता है, और कोई बुढ़ापे की बदतरीन आयु तक पहुँचा दिया जाता है कि जानने के बाद भी वह कुछ नहीं जानता; और तुम देखते हो कि धरती सूखी पड़ी है, फिर जब 'हम' उस पर पानी बरसाते हैं, तो वह हरी भरी हो जाती है, और फूलने लगती है और हर तरह की सुन्दर चीज़ें उगाती है। ⑥ यह इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है, और यह कि 'वह' मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और यह कि 'उसे' हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है। ⑦ और यह कि वह घड़ी ज़रूर आनी है, इसमें

किसी तरह का सन्देह नहीं, और जो लोग क़ब्रों में हैं, अल्लाह उन्हें उठा खड़ा करेगा। (8) और इन्सानों में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, हालाँकि न उनके पास इल्म है, न सूझ-बूझ, और न कोई रौशन किताब; (9) अकड़ते हुए, ताकि लोगों को अल्लाह की राह से गुमराह करें, ऐसों के लिए दुनिया में भी रूसवाई है, और क़ियामत के दिन 'हम' उसको जलती हुई आग का अ़ज़ाब चखाएँगे। (10) कि ''यह तेरे ही हाथों के करतूतों का बदला है, और यह कि अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी जुल्म करने वाला नहीं।'' (11) और इन्सानों में कुछ ऐसे भी होते हैं, जो अल्लाह की इबादत किनारे पर (खड़े होकर) करते हैं, फिर अगर उसे कोई फ़ायदा पहुँच गया तो उस पर जमा रहता है, और अगर उस पर कोई आज़माइश आ गई तो वह मुँह के बल पलट जाता है, उसने दुनिया को भी खो दिया और आख़िरत को भी, यही है खुला हुआ घाटा; (12) यह अल्लाह को छोड़ कर उसे पुकारते हैं, जो न उन्हें नुक़सान पहुँचा सकें और न नफ़ा पहुँचा सकें, यही तो भटक कर दूर होना है। (13) वे उन्हें पुकारते हैं जिनका नुक़सान उनके फ़ायदे से ज़्यादा क़रीब है, बहुत ही बुरा दोस्त है वह और बहुत ही बुरा साथी।

आयत नं० 1 से 13 तक की व्याख्या

1-2 يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُوا۟ رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ ٱلسَّاعَةِ شَىْءٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى ٱلنَّاسَ سُكَٰرَىٰ وَمَا هُم بِسُكَٰرَىٰ وَلَٰكِنَّ عَذَابَ ٱللَّهِ شَدِيدٌ ۝

इस आयत में जिस ज़लज़ले का ज़िक्र है वह कब होगा? इस बारे में मुफ़स्सिरीन की दो रायें हैं। पहली राय यह है कि यह ज़लज़ला क़ियामत के क़रीब एक निशानी होगी यानी क़ियामत से पहले दुनिया की ज़िन्दगी में होगी। इस ज़लज़ले के बाद सूरज पश्चिम से निकलेगा, पहाड़ कण-कण बन कर उड़ने लगेंगे, ज़मीन पर ऐसा भूचाल होगा कि कोई चीज़ अपनी जगह पर बाक़ी नहीं रहेगी, माएँ अपने बच्चों को भूल जाएँगी, ह़ामिला औ़रतों के ह़मल गिर जाएँगें और बच्चे बूढ़े हो जाएँगें। यह ह़क़ीक़त में अल्लाह का एक अ़ज़ाब होगा जिस में वह अपनी बद्तरीन मख़्लूक़ को मुब्तिला करेगा।

दूसरी राय यह है कि इस से मुराद ख़ौफ़ व हिरास और वह परेशानी है जो क़ियामत के दिन लोगों को क़ब्रों से निकलने के बाद मैदाने मह़शर में होगी।

'इब्ने जरीर तब्री' ने इसी राय को तर्जीह़ दी है और इस की पुष्टि में कई ह़दीसें पेश की है, उन में से एक ह़दीस 'इमाम बुख़ारी' ने इस आयत की तफ़्सीर में रिवायत की है कि उस दिन मारे ख़ौफ़ व दहशत के ह़ामिला औ़रतों के ह़मल गिर जाएँगे और बच्चे बूढ़े हो जाएँगे। फिर आप ने **'वतरन्नासा सुकारा वमा हुम बिसुकारा वलाकिन्न अ़ज़ाबल्लाहि शदीद'** पढ़ी।

अक्सर मुफ़स्सिरीन ने पहली राय को तर्जीह़ (वरीयता) दिया है, लेकिन चूंकि बाज़ वह ह़दीसें भी सह़ी हैं जिन में क़ियामत के होने के बाद के ह़ालात बयान किये गये हैं और उन में बताया गया है कि उस दिन ह़ामिला (Pregnant) का ह़मल गिर जाएगा। इसलिए कुछ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि अगरचे इस आयत में वही ज़लज़ला मुराद है जो क़ियामत आने से पहले वाक़ेअ़ होगा, लेकिन उसी जैसे ह़ालात

मैदाने मह़शर में भी होंगे, जब हर आदमी परेशानी में होगा और मारे रोअ़ब व दहशत के सब की ह़ालत वैसी होगी जैसी ह़ामिला शिद्दते ख़ौफ़ से अपना ह़मल वक़्त से पहले गिरा देती है।

3-4 وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۙ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝

मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि यह आयते करीमा 'नज़र बिन ह़ारिस' के बारे में नाज़िल हुई थी, जो बड़ा झगड़ालू था और इस बात का मुन्किर था कि अल्लाह तआ़ला मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करेगा।

कुछ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि यह आयत 'वलीद बिन मुग़ीरा' और 'उ़त्बा बिन रबीआ़' के बारे में नाज़िल हुई थी, बहरह़ाल आयत चाहे जिस के बारे में भी नाज़िल हुई हो लेकिन इस का मतलब आ़म है और हर उस आदमी को शामिल है जो अल्लाह तआ़ला की कुद्रत और नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत का इन्कार करता है और अल्लाह के लिए औलाद साबित करता है और भलाई से दूर हर शैतान की पैरवी करता है।

आयत नं० (4) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया कि जो शख़्स भी शैतान को अपना दोस्त बनाएगा और उस की पैरवी करेगा, शैतान उसे ह़क़ की राह़ से दूर कर देगा और जहन्नम की आग तक पहुँचा देगा।

5 يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۭ وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَاۗءُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـــًٔا ۭ وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاۗءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝

क़ियामत के कुछ ह़ालात बयान किये जाने के बाद अब कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन के लिए मौत के बाद दोबारा उठाए जाने का अ़क़ीदा बयान किया जा रहा है, जिस का इन्कार ही ह़क़ीक़त में तमाम बीमारियों की जड़ है। इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने तमाम इन्सानों को सम्बोधित कर के मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाने के अ़क़ीदे पर दो अ़क़्ली दलीलें पेश की हैं।

पहली दलील यह है कि उस ने सब से पहले ह़ज़रत आदम को मिट्टी से पैदा किया है, फिर बाक़ी इन्सान को माँ और बाप की मनी से पैदा किया।

बाप का नुत्फ़ा (Semen) माँ के रह़म (Ovary) में पहुँचा, उसे पहले जमा हुआ ख़ून बना दिया, फिर उसे एक लोथड़ा बना दिया और वह लोथड़ा कभी तो अल्लाह की मर्ज़ी से बच्चे की शक्ल अख़्तियार कर लेता है और कभी उस में जान नहीं पड़ती और रह़म (Enterous) से बाहर हो जाता है और अल्लाह ऐसा इसलिए करता है ताकि इन्सान उस की कुद्रत, इ़ल्म और अच्छी तद्बीर पर ईमान ले आए। उस के अ़ज़्मत का एतिराफ़ करे, उस से मुह़ब्बत और उस की बन्दगी करे। फिर जो लोथड़ा बच्चे की शक्ल अख़्तियार कर लेता है वह एक निश्चित मुद्दत तक रह़म में रहने के बाद पैदा होता है जो बड़ा ही कमज़ोर

होता है, फिर बढ़ता जाता है यहाँ तक कि भरपूर जवान हो जाता है और कोई बच्चा बालिग़ होने से पहले ही मर जाता है, इसलिए कि ह़िक्मते इलाहिया का यही तक़ाज़ा होता है और कुछ लोग लम्बी उ़म्र पाते हैं यहाँ तक कि बुढ़ापे की आख़िरी उ़म्र तक पहुँच जाते हैं और अ़क़्ल व होश खो बैठते हैं।

ह़ज़रत आदम (अ़लै०) का मिट्टी से और उन की औलाद का मनी (वीर्य) से पैदा किया जाना इस बात की दलील (evidence) है कि जिस अल्लाह तआ़ला ने उन्हें पहली बार इस तरह़ पैदा किया, वह उन्हें दोबारा पैदा करने पर क़ादिर है, इस में किसी शुब्हा की गुन्जाइश नहीं है।

मौत के बाद उठाए जाने की दूसरी दलील यह है कि ज़मीन मुर्दा होती है और जब बारिश होती है तो उस में ज़िन्दगी आकर ह़रकत पैदा कर देती है और पानी के असर से मिट्टी फूल कर ऊँची हो जाती है, फिर उस में विभिन्न प्रकार के ख़ूबसूरत पौधे उग आते हैं। मिट्टी की ह़ैसियत माँ के पेट की तरह़ होती है और बारिश का पानी नुत्फ़ा (वीर्य) की तरह़ होता है। पानी जिस तरह़ नुत्फ़ा (वीर्य) माँ के रह़म (गर्भाशय) में परवरिश पाता है, उसी तरह़ बीज भी मिट्टी में परवरिश पाता है और कुछ दिनों के बाद एक ज़िन्दा पौधा लहलहाता हुआ ऊपर आ जाता है और फिर एक निश्चित मुद्दत के बाद जब खेती पक जाती है तो इन्सान उसे काट लेता है, वैसे ही जैसे इन्सान अपनी एक उ़म्र गुज़ार लेने के बाद रुख़सत (Dead) हो जाता है।

6-7 ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ﴿۶﴾ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿۷﴾

तख़्लीक़े इन्सानी और पौधों की पैदाइश से मुतअ़ल्लिक़ जो बात बयान की गई है वह इस बात की दलील है कि अल्लाह ह़क़ है और वह मुर्दों को ज़िन्दा करता और हर चीज़ पर क़ुद्रत रखता है और इस बात की भी दलील है कि क़ियामत आएगी, इस में कोई शुब्हा नहीं और अल्लाह तआ़ला मुर्दों को क़ब्रों से दोबारा ज़िन्दा कर के उठाएगा, फिर उन के आ़माल का उन्हें बदला देगा।

8-10 وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۙ﴿۸﴾ ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿۹﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۱۰﴾

आयत नं० (3/4) में उन जाहिल गुमराहों का ह़ाल बयान किया गया था जो ख़ुद तो इ़ल्म नहीं रखते, बल्कि दूसरे गुमराह करने वालों की पैरवी करने लगते हैं और अल्लाह तआ़ला के बारे में झूठी और बे-बुनियाद बातें करते हैं।

इस आयत के बारे में मुफ़स्सिरीन (Commentators) लिखते हैं कि यह आयत अबू जेहल के बारे में नाज़िल हुई थी जो कुफ़्र और घमण्ड का नमूना था और लोगों को सह़ी रास्ते से दूर रखने की कोशिश करता था, लेकिन आयत का मतलब आ़म है और यह कुफ़्र व बिद्अ़त के तमाम गुमराह लोगों को शामिल है जो अपनी इच्छापूर्ति में अल्लाह और रसूल (सल्ल०) के बारे में ऐसी बातें करते हैं जिन की कोई दलील

नहीं मिलती और ऐसे घमण्डी होते हैं कि गर्दन अकड़ कर और लोगों की तरफ़ से मुँह फेर कर चलते हैं, जिन का मक़्सद अल्लाह के बन्दों को गुमराह करना होता है।

अल्लाह तआ़ला ने ऐसे तमाम लोगों का अन्जाम यह बताया है कि वह उन्हें दुनिया में रुस्वा करता है और आख़िरत में जहन्नम उन का इन्तिज़ार कर रही है और उस दिन उन से कहा जाएगा कि यह ज़िल्लत व रुस्वाई और यह अ़ज़ाब तुम्हारे हाथों की ही कमाई है। अल्लाह अपने बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता है।

कुछ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि दोनों आयतों में एक ही क़िस्म के लोग मुराद हैं और बार-बार एक बात कहने का मतलब ऐसे लोगों की बुराई बयान करनी है, इसलिए कि दूसरी आयत में उन काफ़िरों के बारे में कहा गया है कि उन के पास अपने दावे की सच्चाई पर न कोई अ़मली दलील है, न अ़क़्ली, और न ही क़ुर्आने करीम की कोई आयत ही उन के क़ौल की ताईद (पुष्टि) करती है।

11 وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ِۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ِۨانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝

इस आयते करीमा में उन मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र हो रहा है कि जो केवल दुनियावी मक़्सद के लिए मुसलमान हो गये थे। जब तक वह मक़्सद ह़ासिल होते रहते थे और किसी दुःख और तक्लीफ़ में मुब्तिला नहीं होते थे, दीने इस्लाम पर बाक़ी रहते थे और जैसे ही उन्हें कोई तक्लीफ़ पहुँचती उन का असली चेहरा सामने आ जाता था और कुफ़्र की तरफ़ लौट जाते थे और अपनी दुनिया व आख़िरत दोनों ही बर्बाद कर लेते थे। यही इन्सान का खुला ख़सारा है, क्योंकि अगर वह लोग अपने ईमान में मुख़्लिस होते तो आख़िरत में कामियाब होते और जो दुनियावी घाटा हुआ था, अल्लाह उसे भी पूरा कर देता कि फिर माल व औलाद से नवाज़ देता।

'सह़ीह़ बुख़ारी' में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से इस आयत की तफ़्सीर में रिवायत है कि कुछ लोग मदीना आते थे (और मुसलमान होने का ए़लान कर देते थे) फिर अगर उन की बीवियाँ लड़के पैदा करतीं और उन के माल में बढ़ावा होता तो कहते कि यह अच्छा दीन है और अगर उन के यहाँ लड़के न पैदा होते और उन के माल में बढ़ौतरी न होती तो कहते कि यह बुरा दीन है।

12 يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝

इस आयत में उन्हीं मुनाफ़िक़ीन के बारे में कहा जा रहा है कि वह तो मुरतद (दीन से फिर जाने) हो जाने के बाद अल्लाह के सिवा उन मअ़बूदों को पुकारने लगते हैं जिन्हें अगर न पुकारें तो दुनिया में उन्हें वह मअ़बूद (उपास्य) कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते हैं और अगर उन्हें पुकारें और उन की अ़िबादत करें तो वह आख़िरत में कोई फ़ायदा न पहुँचा सकेंगे।

13 يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۚ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ۝

इस में बयान किया गया है कि जिन मूर्तियों की वह पूजा करते हैं वह उन्हें फ़ायदा तो क्या पहुचाएँगी बल्कि उन से नुक़्सान ही की ज़्यादा उम्मीद है, इसलिए कि दुनिया में उन बेजान मूर्तियों के सामने सज्दे कर के अपने आप को ज़लील करते हैं और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब उन का इन्तिज़ार कर रहा है।

इन आयतों में काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के जो गुण बयान किये गये हैं वही हर दौर के काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों में पाये जाते हैं, ऐसे लोगों का हर ज़माने में यही ह़ाल रहा है और जब तक दुनिया क़ायम है उन का यही ह़ाल होगा।

आयत नं० 14 से 29 तक

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝١٤ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ
لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ۝١٥ وَكَذٰلِكَ
اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ۝١٦ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ
اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝١٧ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ
وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ۝١٨ سجدہ [सज्दः] هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۫ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ۝١٩ يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ۝٢٠ وَلَهُمْ
مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ۝٢١ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۫ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٢٢ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ؕ وَلِبَاسُهُمْ
فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝٢٣ وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ۝٢٤ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ِۨالْعَاكِفُ فِيْهِ وَالْبَادِ ؕ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۭ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ
عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٢٥ وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ
السُّجُوْدِ ۝٢٦ وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ۝٢٧ لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ
لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ۝٢٨
ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝٢٩

अनुवाद-

(14) बेशक अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और उन्होंने भले काम किये, ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, बेशक अल्लाह जो चाहे करता है। (15) जो व्यक्ति यह समझता है कि अल्लाह दुनिया और आखिरत में उस (रसूल) की हरगिज़ कोई मदद न करेगा, तो उसे चाहिए कि वह आसमान की ओर एक रस्सी ताने, फिर (मदद) काट दे, फिर देख ले कि क्या उसका उपाय उस चीज़ को दूर कर सकता है, जो उसे गुस्से में डाले हुए है। (16) और इसी तरह़ 'हमने' इस (कुर्आन) को स्पष्ट दलीलों के रूप में उतारा है, और अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। (17) जो लोग ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और साबिई, और ईसाई, और मजूसी, और जिन लोगों ने शिर्क किया-इन सब के बीच अल्लाह क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा; बेशक अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है। (18) क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह ही को सज्दः करते हैं, वे सब जो आसमानों में हैं, और जो ज़मीन में है, और सूरज- चाँद, तारे, पहाड़, वृक्ष, जानवर,। और बहुत से इन्सान ऐसे हैं जिन पर अ़ज़ाब तय हो चुका, और जिसे अल्लाह अपमानित करे उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, बेशक अल्लाह जो चाहता है करता है। (19) यह दो फ़रीक़ (विवादी) हैं, जिन्होंने अपने 'रब' के बारे में झगड़ा किया; तो जो लोग काफ़िर हैं, उनके लिए आग के कपड़े

काटे जाएँगे, उनके सरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा; (20) इससे जो कुछ उनके पेटों में है, पिघल जाएगा और खालें भी। (21) और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज़ (हथौड़े) होंगे। (22) जब कभी वे घबरा कर उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिये जाएँगे और (कहा जाएगा), ''चखो दहकती आग का मज़ा।'' (23) जो लोग ईमान लाए, और भले काम किये, अल्लाह उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वहाँ उन्हें सोने के कंगनों और मोती के ज़ेवरात पहनाए जाएँगे, और वहाँ उनका पहनावा रेशम का होगा; (24) और उनको राह मिली अच्छी और पाक बातों की, और उनको तअ़रीफ़ वाले (अल्लाह) की राह दिखाई गयी। (25) जो लोग काफ़िर हैं, और रोकते हैं अल्लाह की राह से, और मस्जिदे ह़राम से, जिसको 'हमने' सब लोगों के लिए ऐसा बनाया है कि उसमें बराबर है, वहाँ का रहने वाला और बाहर से आया हुआ, और जो कोई भी उसके अन्दर किसी बेदीनी का इरादा जुल्म से करेगा, 'हम' उसे दुःख देने वाला अ़ज़ाब चखाएँगे। (26) और जब 'हमने' इब्राहीम के लिए (अल्लाह के) घर को ठिकाना बनाया, (और कहा) कि, ''मेरे साथ किसी को साझीदार न बनाइयेगा, और 'मेरे' घर को पाक रखिएगा, तवाफ़ करने वालों, और क़ियाम व रूकूअ़ और सज्दे करने वालों के लिए।'' (27) और लोगों में ह़ज का एलान कर दीजिए ''(लोग) आप के पास पैदल भी आएँगे, और दुबली-दुबली ऊँटनियों पर भी, जो दूर-दूर के रास्तों से पहुँची होंगी; (28) ताकि अपने फ़ायदे को देखें जो उनके लिए रखे गये, और (क़ुर्बानी) निश्चित दिनों में, मवेशी-चौपायों पर अल्लाह का नाम लें, जो (अल्लाह ने) उन्हें दिये हैं फिर उसमें से खुद भी खाओ और तंगदस्त मोहताजों को भी खिलाओ।'' (29) फिर उन्हें चाहिए कि लोग अपना मैल-कुचैल दूर करें, और अपनी मन्नतें पूरी करें और इस क़दीम (प्राचीन) घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें।

आयत नं० 14 से 29 तक की व्याख्या

14 إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿١٤﴾

कुर्आन करीम अपने मशहूर तरीक़े के मुताबिक काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के ह़ालात व अन्जाम बयान करने के बाद इस आयत में ईमान और नेक अ़मल वालों का ज़िक्र कर रहा है कि अल्लाह तआ़ला उन्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी होंगी और वह अपनी ह़िक्मतों के मुताबिक़ जो चाहता है करता है, अपनी फ़रमाँबरदारी करने वालों को अच्छा बदला और नाफ़रमानों को अ़ज़ाब देता है।

15 مَن كَانَ يَظُنُّ أَن لَّن يَنصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهُ مَا يَغِيظُ ﴿١٥﴾

इस आयते करीमा में उन यहूद, मुश्रिकीन और मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र है जो नबी करीम (सल्ल०) और मुसलमानों की हर कामियाबी पर ह़सद करते थे और उन के सीने ग़ुस्से से भर जाते थे। उन्हीं के बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो दुश्मनाने दीन इस ख़याल में मुब्तिला थे कि अल्लाह तआ़ला अपने दीन इस्लाम, अपने नबी (सल्ल०) और मुसलमानों की मदद नहीं करेगा, इसलिए शक व निफ़ाक़ में पड़कर ईमान नहीं लाते थे, जैसा कि 'बनी असद' और 'ग़त्फ़ान' ने किया था। अब जबकि अल्लाह

की मदद अपने दीन, अपने रसूल और मुसलमानों के लिए खुल चुकी है और उस की वजह से उन का गुस्सा इन्तेहा को पहुँच चुका है तो हम उन्हें अपना गुस्सा दूर करने का एक तरीक़ा बताते हैं कि वह एक रस्सी छत की लकड़ी से बाँध दें और फिर उसे अपनी गर्दन में बाँधकर पूरी ताक़त से खींचे, यहाँ तक कि वह रस्सी कट जाए और गला घुटकर उन की मौत हो जाए।

फिर वह और दूसरे लोग देखें कि क्या इस से वह दूर हो गया जिस की वजह से उन का गुस्सा भड़क गया था? मतलब यह है कि वह अपने गुस्सा में मरते रहें, अल्लाह अपने दीन व नबी की मदद करता रहेगा, यहाँ तक कि वह अपने दीन को तमाम दीनों पर ग़ालिब (प्रभावी) कर देगा।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः मोमिन आयत नं० (51) में फ़रमाया है:-

إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ﴿٥١﴾

"यक़ीनन हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की मदद दुनिया की ज़िन्दगी में भी करेंगे और उस दिन भी जब गवाही देने वाले खड़े होंगे"।

16 وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يُرِيدُ ﴿١٦﴾

कुर्आन करीम की तअ़रीफ़ बयान की जा रही है कि यह अ़रबी ज़बान की तमाम ख़ूबियों को अपने दामन में समेटे हुए है। इस की आयतें अपने मक़ासिद पर इन्तेहाई दर्जे दलालत करती हैं और अल्लाह तआ़ला जिस के लिए हिदायत चाहता है उसे इन आयाते कुर्आनिया में ग़ौर व फ़िक्र की तौफ़ीक़ देता है ताकि ह़क़ को पहचानें और उसे क़ुबूल करें।

17 إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾

नबी करीम (सल्ल०) के ज़माने में ह़क़ व बातिल के दर्मियान जो जंग जारी थी और ईमान वालों के ख़िलाफ़ जो लोग खड़े थे, उसी जंग और उन्हीं ग़लत लोगों का ज़िक्र किया गया है और उन्हें धमकी दी गई है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उन्हें उन की उस बातिल परस्ती का बदला चुकाएगा, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों से पूरी तरह़ वाक़िफ़ है बल्कि उन के दिलों के भेदों की ख़बर रखता है।

الصَّابِئِينَ से मुराद वह लोग हैं जो सितारों की पूजा करते थे और **'मजूस'** से मुराद वह लोग हैं जो आग की अ़िबादत करते थे, रौशनी और अंधेरों के दो अलग-अलग उपास्य होने के क़ायल थे।

कुछ का ख़याल है कि मजूस सूरज व चाँद की पूजा करते थे। एक तीसरा क़ौल यह है कि उन्होंने यहूदियत व नसरानियत दोनों से कुछ बातें ले ली थीं और **'मुश्रिकीन'** से मुराद ख़ासतौर पर क़ुफ़्फ़ारे अ़रब हैं, जो मूर्तियों की अ़िबादत करते थे।

18 أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ ۚ

إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۝ सज्दः

इस में अल्लाह तआ़ला की बड़ाई बयान की जा रही है कि आसमान में जितने फ़रिश्ते रहते हैं और ज़मीन में जितने जिन्न और चौपाये पाये जाते हैं, सभी अल्लाह के लिए हैं। इसी तरह़ सूरज व चाँद, सितारे, पहाड़, दरख़्त, चौपाये और बहुत से इन्सान अपने ख़ालिक़ व मालिक के सामने सज्दः किये हुए हैं। उस का हुक्म मानने से इन्कार नहीं करते हैं, लेकिन इन्सानों में बहुत से ऐसे भी हैं जो उस के सामने सज्दः नहीं करते हैं, इसलिए उन के ह़क़ में अ़ज़ाब लिख दिया गया है और यह लोग भी अगरचे अल्लाह की बन्दगी के लिए अपना सर नहीं झुकाते, लेकिन उस क़ानूने क़ुद्रत (Natural law) के तो यह भी फ़रमाँबरदार हैं। सेह़त व बीमारी, मालदारी व मोह़ताजी और ज़िन्दगी व मौत का क़ानून उन पर भी लागू होता है और अल्लाह की मर्ज़ी के सामने उन की एक नहीं चलती है।

19-22 هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۖ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ۖ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ۝ يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ۝ وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ۝ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۖ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝

आयत नं० (17) में जिन मोमिनों और काफ़िरों के बारे में कहा गया है कि अल्लाह तआ़ला उन के दर्मियान क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा, उन्हीं को इस आयते करीमा में दो फ़रीक़ (पक्ष) के नाम से ज़िक्र किया गया है। एक फ़रीक़ (पक्ष) मुसलमान है और दूसरा फ़रीक़ (पक्ष) पिछले पाँचों काफ़िर जमाअ़तों को मिलाकर है। दोनों फ़रीक़ (पक्ष) दुनिया में अपने रब और उस के दीन व शरीअ़त के बारे में झगड़ते रहे और हर फ़रीक़ (पक्ष) ने दावा किया कि वह ह़क़ पर है।

जब क़ियामत आएगी तो अल्लाह तआ़ला उन के दर्मियान फ़ैसला कर देगा कि कौन ह़क़ पर है और कौन बातिल पर। फिर काफ़िर जमाअ़तों को जहन्नम में दाख़िल कर देगा, जहाँ उन्हें आग के कपड़े पहनाए जाएँगे और उनके सरों पर गर्म पानी उंडेला जाएगा, जिस की गर्मी से उन के पेट की अन्तड़ियाँ गोश्त और चर्बियाँ पिघल कर बाहर निकल जाएँगी और उन के जिस्म के चमड़े भी कट-कट कर अलग हो जाएँगे और जहन्नम में उन के लिए लोहे के कोड़े होंगे जिन से उन्हें मारा जाएगा और ग़म व तक्लीफ़ से बेचैन होकर जब भी निकलना चाहेंगे तो जहन्नम वाले फ़रिश्ते उन्हें मार-मार कर दोबारा लौटा देंगे और एक लम्ह़े के लिए भी उन्हें निकलने नहीं देंगे और कहेंगे कि तुम आग के अ़ज़ाब का मज़ा चखते रहो।

ह़ज़रत क़ैस बिन उ़बादह (रज़ि०) कहते हैं कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन सब से पहले मैं रब के सामने दो ज़ानू बैठ कर अपना मक़्सद पेश करुँगा। ह़ज़रत क़ैस कहते हैं कि यह आयत उन लोगों के सिल्सिले में उतरी जो बद्र के दिन मुक़ाबिले के लिए निकले थे यानी मुसलमानों की तरफ़ से ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ह़ज़रत ह़म्ज़ह (रज़ि०) ह़ज़रत उ़बैदह (रज़ि०) और (काफ़िरों की तरफ़ से) शैबा बिन रबीआ़ और वलीद बिन उ़त्बा।" **(बुख़ारी)**

23-24 إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾

जो लोग दुनिया में ईमान वाले होंगे और उन्होंने नेक अ़मल किया होगा, उन्हें अल्लाह तआ़ला उस दिन ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी होंगी और जन्नत में उन्हें सोने और मोती के कंगन पहनाए जाएँगे, जो रेशमी लिबास पहने होंगे और आपस में एक दूसरे से अच्छी बातें करेंगे, एक दूसरे को सलाम करेंगे और जन्नत जैसी नेअ़मत के ह़ासिल करने पर अल्लाह का शुक्र अदा करते रहेंगे।

25 إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَن يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٥﴾

मस्जिदे ह़राम में अ़िबादत से रोकना

मक्का मुकर्रमा में जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने तौह़ीद की दअ़वत देना शुरु की, उस वक़्त मक्का वाले चूंकि मुश्रिक थे इसलिए पूरी तरह़ दुश्मनी पर तुल गये, ख़ुद भी ईमान नहीं लाते थे और दूसरों को भी ईमान लाने से रोकते थे और मस्जिदे ह़राम के चूंकि वही मुतवल्ली (संरक्षक) थे, इसलिए मुसलमानों को मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ने से रोकते थे।

उन की दुश्मनी का यह सिल्सिला बराबर जारी रहा यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) और आप के सह़ाबा (रज़ि०) वहाँ से हिजरत फ़रमा गये, चन्द साल मदीना मुनव्वरह में क़याम के बाद 6 हि० में रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने सह़ाबा के साथ उ़मरह के लिए तशरीफ़ ले गये तो मक्का वालों ने आप को शहर में जाने से रोक दिया और बहुत हुज्जत की। फिर आख़िर में दस शर्तों पर सुलह़ हो गई, लेकिन इस के बावजूद उस वक़्त उ़मरह नहीं करने दिया।

'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' ने लिखा है कि यह आयत अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब और उस के साथियों के बारे में नाज़िल हुई जिन्होंने आप को मक़ामे हुदैबिया में रोक दिया था, उ़मरह नहीं करने दिया और सुलह़ की शर्तों में एक शर्त यह लगाई कि अगले साल उ़मरह के लिए आएँ।

मस्जिदे ह़राम के विषय में बयान करते हुए इर्शाद फ़रमायाः-

جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ कि हम ने उस को तमाम इन्सानों के लिए मुक़र्रर किया है। इस में सब बराबर हैं वहाँ का रहने वाला भी और बाहर से आने वाला भी।)

उ़ल्मा ने फ़रमाया कि मस्जिदे ह़राम से पूरा मक्का मुकर्रमा मुराद है क्योंकि जब बाहर से आने वाले आएँगे तो ज़रूर उन्हें रात गुज़ारने, सोने और खाने-पीने के लिए किसी जगह की ज़रूरत होगी।

इस से मालूम हुआ कि मक्का वालों के लिए यह जायज़ नहीं कि बाहर से आने वालों को मक्का

मुकर्रमा या मस्जिदे ह़राम में आने से रोकें। आ़मतौर से इस पर मक्का मुकर्रमा के रहने वाले अ़मल करते रहे हैं, जो लोग मस्जिदे ह़राम से रोकेंगे अ़ज़ाब के ह़क़्दार होंगे। रही यह बात कि मक्का मुकर्रमा की ज़मीन को बेचना और उस के घरों को किराये पर देना जायज़ है या नहीं?

ह़ज के मौसम में किराया वसूलना-

ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) से नक़्ल किया गया है कि ह़ज के मौसम में मक्का मुकर्रमा के घर किराये पर देना मकरुह़ है और ह़ज़रत इमाम यूसुफ़ और ह़ज़रत इमाम मुह़म्मद (रह़०) से भी ऐसा ही नक़्ल किया गया है और चूंकि हुरमत की कोई दलील नहीं, इसलिए इन ह़ज़रात ने कराहत को अख़्तियार किया है। यह उन लोगों के लिए हैं जिन के निजी घर होते हैं वह उन घरों को पैसा कमाने का ज़रिया बना लेते हैं और हुज्जाज-ए-किराम से बहुत ज़्यादा किराया लेते हैं। उस किराये की वजह से बहुत से लोग ह़ज करने की हिम्मत भी नहीं करते क्योंकि मक्का मुकर्रमा तक आने जाने का किराया होने के साथ-साथ एक बड़ी रक़म किराये के लिए भी हो, तब कोई शख़्स ह़ज का इरादा करे।

बहुत से लोग मक्का मुकर्रमा में रहते ही इसलिए हैं कि मालिकों से बिल्डिंगे सस्ते किराये पर ले लें और फिर उन बिल्डिंगों में हुज्जाज को ठहरा कर बहुत ज़्यादा पैसा कमाएँ, हुज्जाज की ख़िद्मत के बजाय इस पर नज़रें लगी रहती हैं कि कब ह़ाजी आएँ और कब उन से भारी रक़में वसूल हों, ज़ाहिर है कि यह तरीक़ा पसन्दीदा नहीं है।

'ह़ज़रत इमाम साह़ब' ने फ़रमाया है कि ह़ज के मौसम के अ़लावा दूसरे दिनों में मक्का के घरों को किराये पर देना जायज़ है यानी इस में कराहत नहीं है। अब रही यह बात कि मक्का की सरज़मीन को बेचना जायज़ है या नहीं। इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) से इस बारे में दो क़ौल हैं और दूसरे लोगों के नज़्दीक बिला कराहत मक्का मुअ़ज़्ज़मॉ की ज़मीन बेचना जायज़ है।

आख़िर में फ़रमायाः-

وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ۝

(और जो शख़्स इस में ज़ुल्म के साथ कोई बेदीनी का काम करने का इरादा करेगा तो हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखा देंगे।)

इस में उन लोगों के लिए तम्बीह है जो ह़रम में ज़ुल्म व ज़्यादती का काम करें। ज़ुल्म से क्या मुराद है?

इस के बारे में बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि शिर्क और गुनाह करना इस में सब दाख़िल है। इमाम अबू दाऊद (रह़०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद नक़्ल किया है कि **احتكار الطعام فى الحرم الحادفيه** यानी ह़रम में ग़ल्ले का एह़तिकार (जमाखोरी) करना (ज़रुरत होते हुए फ़रोख़्त न करना) यह भी इल्ह़ाद की बात है।

गुनाह के इरादे पर पकड़-

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया कि **ومن يرد** से मालूम होता है कि मक्का मुकर्रमा में रहते हुए गुनाह का इरादा करना भी मुवाख़िज़ा का ज़रिया है, अगरचे अ़मल न करे। जबकि दूसरे शहरों में अ़मल करने पर मुवाख़िज़ा होता है।

ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) से आयत का एक मतलब यह नक़्ल किया गया है कि कोई शख़्स दुनिया में कहीं पर भी हो, वहाँ रहते हुए ह़रम मक्का में गुनाह करने का इरादा करेगा तो उस इरादे पर भी अल्लाह तआ़ला उसे अ़ज़ाब चखा देगा। **(दुर्रे मन्सूर भाग 4/ 351)**

ह़ज़रत मुजाहिद ताबई़ फ़रमाते थे कि मक्का मुकर्रमा में जिस तरह़ नेकियों का सवाब बढ़कर बहुत ज़्यादा मिलता है उसी तरह़ एक गुनाह कई गुना बढ़ा कर लिख दिया जाता है। ह़ज़रत मुजाहिद ने बयान किया कि 'ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर' का एक घर 'हुदूदे ह़रम' में और एक घर 'ह़िल' में था। जब नमाज़ पढ़ते तो ह़रम वाले घर में पढ़ते थे और बच्चों को डांटते डपटते तो ह़िल वाले घर में इस के बारे में सवाल किया गया तो फ़रमाया कि हम आपस में यह मुज़ाकिरह किया करते थे कि ह़रम में (किसी को डांटने के लिए) **كلا والله بلى والله** भी इल्ह़ाद है। **(दुर्रे मन्सूर पेज 352 भाग 4)**

ह़रम में गुनाह-

यह जो फ़रमाया कि जो शख़्स 'मस्जिदे ह़राम' में यानी 'मक्का मुकर्रमा' में कोई गुनाह का काम करेगा तो हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखाएँगे। इस से दुनिया और आख़िरत दोनों जगह में सज़ा देना मुराद है। अगर किसी को दुनिया में सज़ा न मिली तो आख़िरत में मिल जाएगी। 'अस्ह़ाबे फ़ील' को जो दुनिया में सज़ा मिली वह तो मशहूर ही है, उन की बर्बादी के लिए अल्लाह तआ़ला ने परिन्दों को भेजा जो अपने साथ कंकरियाँ लिये हुए थे, उन्होंने ऐसी कंकरियाँ डालीं कि सारा लश्कर हाथियों समेत वहीं **عصف ماكول** खाये हुए भूसे का ढ़ेर बन गया। यह तो दुनिया में हुआ और आख़िरत में जो अ़ज़ाब होगा वह इस के अ़लावा है।

'तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर' में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि 'तबअ़' (एक शख़्स

का नाम है) ने कअ़बः शरीफ़ पर ह़मलाआवर होने का इरादा किया था। कराउल् नईम (एक जगह का नाम है) में पहुँचा तो अल्लाह तआ़ला ने बहुत सख़्त हवा भेज दी जिस की वजह से खड़ा होना और बैठना सब दूभर हो गया, जब यह हुआ तो 'तबअ़' ने अपने दो आ़लिमों को बुलाया (जो उस के साथ सफ़र में थे) और उन से दर्याफ़्त किया कि यह मुसीबत हम पर क्यों आई? उन्होंने कहा कि अगर हमारी जान बख़्शी जाए तो हम बताएँ। इस पर उस ने कहा कि तुम बेख़ौफ़ रहो।

इस के बाद उन दोनों ने बताया कि चूंकि तू एक ऐसे घर पर ह़मला करने के लिए जा रहा है जिस की ह़िफ़ाज़त अल्लाह तआ़ला ख़ुद फ़रमाता है, इसलिए यह मुसीबत नाज़िल हुई है। इस पर तबअ़ ने कहा कि फिर मैं क्या करूँ? दोनों आ़लिमों ने बताया कि तू सिले हुए कपड़े उतार दे और दो चादरें पहन कर لبیک اللھم لبیک कहता हुआ दाख़िल हो, फिर तवाफ़ कर और वहाँ किसी को अपनी जगह से मत हटा। 'तबअ़' ने कहा कि अगर मैं यह सब कुछ कर लूँ तो क्या यह हवा चली जाएगी? उन दोनों ने कहा कि हाँ, ऐसा करने से हवा ख़त्म हो जाएगी। चुनाँचे उस ने चादरें पहनीं और 'तल्बिया' पढ़ा तो आँधी ख़त्म हो गई। **(दुर्रे मन्सूर भाग 4 पेज नं० 352)**

26 وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۲۶﴾

कअ़बः की तअ़मीर (निर्माण)

इन आयात में कअ़बः शरीफ़ की तअ़मीर (निर्माण) और लोगों को ह़ज की दअ़वत देने और मिना के दिनों में जानवरों के ज़ब्ह़ करने और उस में से खाने और खिलाने का एह़राम से निकलने के लिए सर मूंडने, नज़्रें पूरी करने और तवाफ़-ए-ज़ियारत करने का हुक्म है।

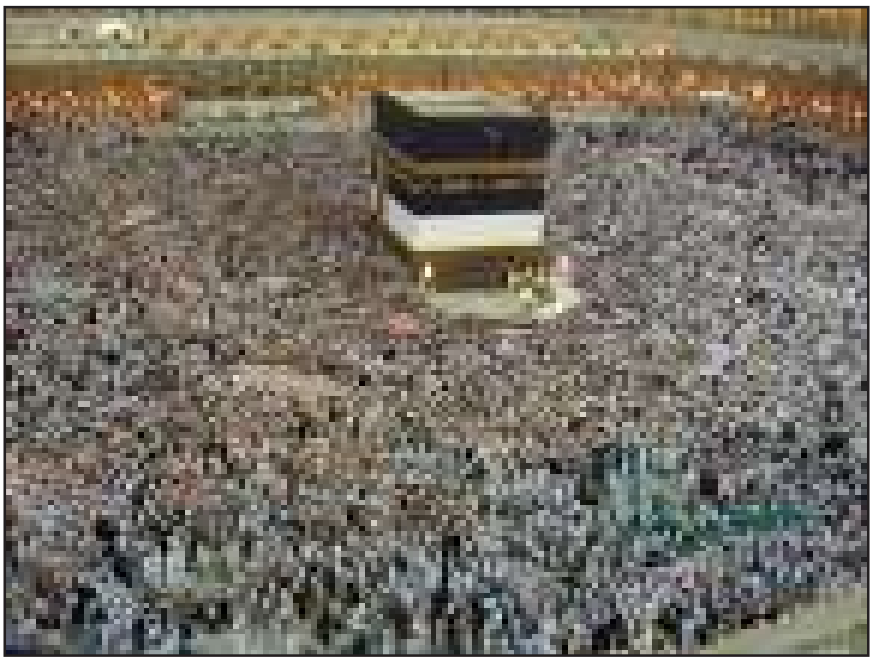

सबसे पहले फ़रिश्तों ने, फिर उन के बाद ह़ज़रत आदम (अ़लै०) ने कअ़बः शरीफ़

तअ़मीर किया। फिर जब तूफ़ाने नूह़ की वजह से उस की दीवारें ढ़ा गईं और इमारत की दीवारें नज़र न आईं तो ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपने बेटे इस्माईल (अ़लै०) को साथ लेकर कअ़बः शरीफ़ की बुनियादें उठाईं और कअ़बः बनाया, चूंकि जगह मालूम न थी इसलिए अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उन को निश्चित कर के उस की जगह बता दी गई जिस का ज़िक्र सूरः ह़ज की आयते करीमा وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ में ज़िक्र फ़रमाया है।

जब अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को हुक्म दिया कि बैतुल्लाह बनाएँ तो उन्हें उसकी जगह मालूम करने की ज़रूरत पड़ी, लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने हवा भेज दी जो ख़ूब तेज़ चली और उस ने पुरानी बुनियादों को ज़ाहिर कर दिया।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपने बेटे ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) से फ़रमाया कि बेशक मुझे अल्लाह तआ़ला ने एक काम का हुक्म दिया है, उन्होंने अ़र्ज़ किया कि आप अपने रब के हुक्म की फ़रमाँबरदारी कीजिए।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने फ़रमाया तुम मेरी मदद करना, अ़र्ज़ किया कि मैं आप की मदद करुँगा।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने एक ऊँचे टीले की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला ने मुझे हुक्म दिया है कि यहाँ एक घर बनाँऊ। इस के बाद दोनों ने बैतुल्लाह की बुनियादें उठाना शुरु कीं।

ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) पत्थर लाते और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) तअ़मीर करते जाते थे। यहाँ तक कि जब दीवारें ऊँची हो गईं तो यह पत्थर ले आए जिसे मक़ामे इब्राहीम कहा जाता है। यह ज़ीना (सीढ़ी) का काम देता था, जिस पर खड़े होकर तअ़मीर करते जाते थे।

सूरः ह़ज में फ़रमाया وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ और सूरः बक़रः में ह़ज़रत इब्राहीम व इस्माईल (अ़लै०) दोनों के बारे में फ़रमाया हैः-

وَعَهِدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٢٥﴾

और हम ने इब्राहीम और इस्माईल की तरफ़ हुक्म भेजा कि मेरे घर को तवाफ़ करने वालों के लिए और वहाँ के रहने वालों के लिए और रुकूअ़ और सज्दः करने वालों के लिए पाक रखो।

इस में 'कअ़बः शरीफ़' को पाक रखने का हुक्म है और 'कअ़बः शरीफ़' के साथ 'मस्जिदे ह़राम' के पाक रखने का भी हुक्म हो गया, क्योंकि तवाफ़ और नमाज़ की अदाएगी इसी में होती है, पाक करने में सब कुछ दाख़िल है अन्दुरुनी नापाकी, शिर्क व कुफ़्र, बुत परस्ती, गन्दी बातें, झूठ, फ़रेब और बद्अ़मली से पाक रखें और ज़ाहिरी नापाकी से भी पाक व साफ़ रखें, कूड़ा से बद्बूदार चीज़ों से मह़फ़ूज़ रखें।

'तवाफ़' एक ऐसी अ़िबादत है जो केवल मस्जिदे ह़राम ही में हो सकती है क्योंकि यह कअ़बः शरीफ़ के चारों तरफ़ होता है। सूरः बक़रः में जो शब्द **العاكفين** आया है उस के बारे में ह़ज़रत सअ़ीद बिन जुबैर का क़ौल है कि इस से मक्का मुकर्रमा के रहने वाले मुराद हैं और ह़ज़रत अ़ता ने फ़रमाया कि

इस से वह लोग मुराद हैं जो दूसरे शहरों से आते हैं और मस्जिदे ह़राम में क़ियाम कर लेते हैं और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि हम जब भी मस्जिदे ह़राम में बैठ गये तो आ़किफ़ीन में शुमार हो गये और इस में वह लोग भी दाख़िल हैं जो मस्जिदे ह़राम में एतिकाफ़ करें क्योंकि शब्द उकूफ़ उन पर भी साबित होता है।

दोनों सूरतों में जो الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ फ़रमाया है, इस से नमाज़ पढ़ने वाले मुराद हैं। सूरः ह़ज में الْقَآئِمِيْنَ से भी नमाज़ी मुराद हैं। इस तरह़ नमाज़ के तीनों अ़मली अरकान क़ियाम, रुकूअ़ और सज्दः का ज़िक्र आ गया।

बाज़ ह़ज़रात ने الْقَآئِمِيْنَ से मुक़ीमीन मुराद लिए हैं। बहरह़ाल मस्जिदे ह़राम का एहतिमाम और तौलियत (संरक्षता) संभालने वालों पर लाज़िम है कि कअ़बः शरीफ़ को और मस्जिदे ह़राम को पाक-साफ़ रखें और तवाफ़ करने वालों और नमाज़ पढ़ने वालों को हर वक़्त मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होने दें और नमाज़ व तवाफ़ में मश्गूल होने और एतिकाफ़ करने से मना न करें।

अल्ह़म्दु लिल्लाह, फ़तेह़ मक्का के दिन से आज तक इस पर अ़मल हो रहा है और मस्जिदे ह़राम के दरवाज़े बराबर रात-दिन खुले रहते हैं। जिस वक़्त फ़र्ज़ नमाज़ खड़ी होती है उस वक़्त तो तवाफ़ करने वाले नमाज़ में शरीक हो जाते हैं और उस के अ़लावा हर वक़्त तवाफ़ होता रहता है।

27 وَ اَذِّنْ فِی النَّاسِ بِالْحَجِّ یَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّ عَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ یَّاْتِیْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِیْقٍۙ

फिर फ़रमाया وَ اَذِّنْ فِی النَّاسِ بِالْحَجِّ یَاْتُوْكَ رِجَالًا जब ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपने बेटे ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) को साथ लेकर कअ़बः शरीफ़ की तअ़मीर पूरी कर ली तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हुक्म दिया कि लोगों में ह़ज का ए़लान कर दें, यानी पुकार कर कह दे कि ह़ज के लिए लोग आएँ। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मैं लोगों में इस बात का कैसे एलान करूँ, ह़ालांकि मेरी आवाज़ सारी दुनिया तक नहीं पहुँच सकती।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तुम पुकारो, आवाज़ का पहुँचाना हमारे ज़िम्मे है। चुनांचे 'सफ़ा' पहाड़ी पर और एक क़ौल के मुताबिक़ 'जबल अबूक़ैस' पर खड़े होकर उन्होंने यूँ आवाज़ दीः-

یا ایها الناس ان ربکم قد اتخذ بیتا فحجوه

(ऐ लोगों! यक़ीन जानो तुम्हारे रब ने एक घर बनाया है, लिहाज़ा तुम उस का ह़ज करो) उन के इस ए़लान को अल्लाह तआ़ला ने हर जगह पहुँचा दिया और हर वह शख़्स जिस की तक़्दीर में ह़ज करना था उसे ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की आवाज़ सुनवा दी, यहाँ तक कि जो लोग अभी पैदा नहीं हुए थे और अपनी माँओं के पेटों में और बापों की पीठों में थे, अल्लाह तआ़ला ने उन सब को ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की आवाज़ पहुँचा दी।

और जिस-जिस के लिए क़ियामत तक ह़ज करना मुक़द्दर था, उन सब ने उसी वक़्त **لبیك اللهم لبیك** पढ़ लिया।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से इसी तरह़ नक़्ल किया गया है। पहले के लोगों को तो समझ में नहीं आता था कि एक शख़्स की आवाज़ एक वक़्त में पूरी दुनिया में कैसे पहुँचे होगी? लेकिन अब तो स्पष्ट हो गया है कि यह कोई मुश्किल काम नहीं है। एक शख़्स एशिया में बोलता है तो उसी वक़्त उस की आवाज़ 'आस्ट्रेलिया' में सुनी जाती है और 'आस्ट्रेलिया' में बोलता है तो 'इण्डिया' वाले घरों में बैठे-बैठे सुन लेते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) से वादा फ़रमाया था कि जब तुम ह़ज की दअ़वत दे दोगे तो तुम्हारी इस दअ़वत पर आवाज़ सुनने वाले पैदल चल कर और ऊँटों पर सफ़र कर के दूर-दूर रास्तों से ह़ज के लिए चले आएँगे।

इस विषय को يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ में बयान फ़रमाया है। ضَامِرٍ से दुबली ऊँटनियाँ मुराद हैं। अ़रब के लोग तेज़ रफ़्तारी की वजह से घोड़ों और ऊँटों को कम खिलाते थे क्योंकि मोटे होंगे तो बोझल होने की वजह से चल न सकेंगे, ऐसे जानवरों को 'ज़ामिर' कहा जाता था।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) जब अपने घरवालों को मक्का मुकर्रमा की ज़मीन में आबाद किया था, उस वक़्त यह दुआ़ भी की थी فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ

अल्लाह तआ़ला ने उन की आवाज़ भी पहुँचा दी और उन की दुआ़ भी क़ुबूल फ़रमाई। उस वक़्त से लेकर आज तक करोड़ों इन्सान ह़ज व उ़मरह कर चुके हैं। हर मुसलमान के दिल में यह तमन्ना रहती है कि कअ़बः शरीफ़ को देखे, इसीलिए उस का तवाफ़ करने के लिए दूर-दूर से विभिन्न रास्तों से तरह़-तरह़ की सवारियों से मक्का मुकर्रमा पहुँचते और ह़ज व उ़मरह करते हैं, इस में बहुत से दीनी व दुनियवी फ़ायदे हैं। मक्का के रहने वालों को बाहर के आने वालों से तरह़-तरह़ के फ़ायदे ह़ासिल होते हैं और आने वाले भी दीनी व दुनियवी फ़ायदे ह़ासिल करते हैं।

28 لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۖ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٨﴾

इस की कुछ तफ़्सील सूरः माइदा की आयते करीमाः-

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ की तफ़्सीर में बयान हो चुका है।

وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ

(और ताकि मुक़र्ररह दिनों में इस नेअ़मत पर अल्लाह का नाम लें जो अल्लाह ने उन्हें दी हैं यानी चौपाये) पहले यह कि अय्याम मअ़लूमात का क्या मतलब है? दूसरे यह कि अल्लाह का नाम ज़िक्र करने का क्या मतलब है? यह कि بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ क्या है? चौथे यह कि जानवर किस मौक़े पर ज़ब्ह़ किये जाएँ?

أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ (मुक़र्ररह अय्याम) का क्या मतलब हैं? इस के बारे में कुछ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि अ़शरह ज़िल्ह़िज्ज (यानी ज़िल्ह़िज्ज के दस दिन) मुराद हैं। उन दिनों में अल्लाह तआ़ला का ख़ूब ज़िक्र करें। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि ह़ज़रत रसूल-ए-करीम (सल्ल०)

ने इर्शाद फ़रमाया कि ईदुल् अज़्हा (बकरअ़ीद) के दस दिन में जितने दूसरे नेक अ़मल अल्लाह को मह़बूब हैं उस से बढ़ कर किसी ज़माने में मह़बूब नहीं (यानी यह दिन फ़ज़ीलत में दूसरे दिनों से बढ़े हुए हैं।)

सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! क्या 'जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह' भी उन दिनों की अ़िबादत से अफ़्ज़ल नहीं है? आप ने इर्शाद फ़रमाया, 'जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह' भी उन अय्याम के आ़माल से अफ़्ज़ल नहीं सिवाय यह कि कोई शख़्स अपनी जान व माल लेकर निकले और उन में से कुछ भी वापस लेकर न लौटे। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 128 बुख़ारी)**

अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतें तो बहुत सी हैं उन सब का शुक्रिया अदा करना चाहिए। लेकिन चूंकि بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ (चौपाये) दस्वें दिन से ज़ब्ह़ होने शुरु हो जाते हैं और इस से पहले उन जानवरों की तलाश होती है, ख़रीदारी होती है, खिलाया पिलाया जाता है, सह़ी सालिम ज़ब्ह़ करने के लिए जानवरों को तैयार किया जाता है। इसलिए फ़रमाया कि मुक़र्ररह दिनों में इस नेअ़मत पर अल्लाह का ज़िक्र करें जो उन्हें अल्लाह तआ़ला ने चौपायों की शक्ल में अ़ता फ़रमाए हैं, उन में दीनी फ़ायदे भी हैं जो अल्लाह तआ़ला की रज़ा ह़ासिल करने के लिए उस के पास पेश किये जाते हैं, जिस में दुनियावी फ़ायदे भी हैं, उन का गोश्त भी खाते हैं, दूध भी पीते हैं और सवार भी होते हैं।

बाज़ ह़ज़रात ने अय्याम मअ़लूमात से आख़िर के दिन यानी दस, ग्यारह, बारह ज़िल्ह़िज्ज के माने लिए हैं। इन तीन दिनों में पूरी दुनिया में क़ुर्बानियाँ की जाती हैं जो साह़िबे निसाब पर वाजिब होती है और 'मिना' में भी जानवर ज़ब्ह़ किये जाते हैं, वहाँ ह़ज की क़ुर्बानियाँ भी होती हैं और बहुत से लोग अलग से क़ुर्बानियाँ भी करते हैं, जो मालिके निसाब होने की वजह से फ़र्ज़ होती हैं। मिना के दिनों में यूँ भी कसरत से अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करना चाहिए।

सूरः बक़रः में फ़रमाया وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ

"और चन्द दिनों में अल्लाह का ज़िक्र करो"।

इस से 'मिना' के दिनों में ज़िक्र करना मतलब है। ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि नबी करीमु (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि 'जमरात' को कंकरियाँ मारना और 'सफ़ा' व 'मरवह' की सअ़ी करना अल्लाह का ज़िक्र क़ायम करने के लिए किया गया है। **(रवाहुल् तिर्मिज़ी)**

ह़ज सरापा ज़िक्र है, तल्बिया ज़िक्र है, तवाफ़ ज़िक्र है, अ़रफ़ात में ज़िक्र है, मुज़्दल्फ़ा में ज़िक्र है। अय्याम मिना में ज़िक्र है रमी करते वक़्त ज़िक्र है, क़ुर्बानी करते वक़्त ज़िक्र है।

'मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' भाग 1 पेज 178 में लिखा है कि 'ह़ज़रत उ़मर' और 'अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' 'मिना' में तक्बीर कहते थे और मजलिस में भी और बिस्तर पर भी और रास्तों में भी। सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० 1/360 में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि:-

لا تصوموا فی هذه الایام فانها ایام اکل وشرب وذکر الله

उन दिनों में रोज़: न रखो क्योंकि यह खाने-पीने और अल्लाह का ज़िक्र करने के दिन हैं।

بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ (चार पैर पर चलने वाले जानवर) इन से वह जानवर मुराद हैं जो ह़ज के दिनों

में मिना में और पूरी दुनिया में कुर्बानी की अदाएगी के लिए ज़ब्ह़ किये जाते हैं। हर जानवर और हर चौपाए की कुर्बानी जायज़ नहीं होती, उस के लिए ऊँट, ऊँटनी, गाय, बैल, बकरा, बकरी, दुम्बा, दुम्बी, भेड़ ही हैं और चूंकि भैंस भी गाय की तरह़ है इसलिए उस की भी कुर्बानी दुरुस्त है। इन जानवरों की उ़म्रें भी मुक़र्रर हैं और यह बात भी लाज़िम है कि जानवर के जिस्म में ऐ़ब न हो।

नाक, कान, हाथ, पैर ठीक हों। अल्बत्ता थोड़ा सा कोई नुक़्स हो तो उस के ज़ब्ह़ करने की गुन्जाइश है। ऊँट और ऊँटनी की कुर्बानी के लिए चाहे ह़ज की कुर्बानी हो, चाहे कोई साह़िबे निसाब अपने वतन में कुर्बानी करना चाहे तो पाँच साल का ऊँट या ऊँटनी होना लाज़िम है। गाय, बैल, भैंस दो साल का होना और बकरा, बकरी, भेड़, भेड़ा और दुम्बा में एक साल की उ़म्र होना शर्त है। गाय और बैल, भैंस, भैंसा, ऊँट, ऊँटनी में सात ह़िस्से हो सकते हैं।

ह़ज में जो जानवर ज़ब्ह़ किये जाते हैं, कुर्आन मजीद में उस का नाम (हदी) रखा है। जिस शख़्स ने 'तमत्तुअ़' या 'क़िरान' किया हो उस पर कुर्बानी करना वाजिब है।

यह कुर्बानी दस ग्यारह बारह ज़िल्ह़िज्ज को किसी दिन कर दी जाए। बारहवीं तारीख़ का सूरज छिपने के बाद ज़ब्ह़ किया तो एक कुर्बानी मज़ीद वाजिब होगी जिसे 'दम जिनायत' कहते हैं। क़िरान और 'तमत्तोअ़' की हदी ज़ब्ह़ करने वाले के लिए यह भी ज़रूरी है कि इस से पहले ह़लक़ (सर मुँडाना) या क़सर (थोड़े बाल कटवाना) न करे, उस की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने से दम जिनायत वाजिब होगा, जिस ने ह़ज्जे 'इफ़राद' किया हो उस के लिए हदी का जानवर ज़ब्ह़ करना मुस्तह़ब है।

فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ۝

"सो उन में से खाओ और मुसीबतज़दह मोह़ताज को खिलाओ"।

ह़ज में जो कुर्बानियाँ की जाती हैं उन में एक 'तमत्तुअ़' और 'किरान' की कुर्बानी है। दूसरे दम 'जिनायात' है, तीसरे 'दम एह़सार' है और चौथे नफ़्ली कुर्बानी है।

इन में से जो दम जिनायात और दम एह़सार है उस में से सिर्फ़ फ़ुक़रा और मसाकीन ही खा सकते हैं, न कुर्बानी वाला ख़ुद खा सकता है, न अपने घरवालों को खिला सकता है और न किसी साह़िबे निसाब को इस में से देना जायज़ है और ज़रूरी नहीं कि यह गोश्त ह़रम में ही दिया जाए। अल्बत्ता ह़रम के फ़क़ीरों को देना अफ़्ज़ल है।

कुर्बानी का गोश्त-

'तमत्तुअ़' और 'किरान' की कुर्बानी और ह़ज की नफ़्ली कुर्बानी से ख़ुद खाना, घर वालों को खिलाना, दोस्त अह़बाब को देना यह सब न सिर्फ़ यह कि जायज़ है बल्कि मुस्तह़ब है। यही हुक्म उस कुर्बानी का है जो साह़िबे निसाब सारी दुनिया में करते हैं।

जिस (हदी) कुर्बानी के जानवर का गोश्त मालिक को खाना जायज़ है उस में से एक तिहाई गोश्त फ़क़ीरों को देना मुस्तह़ब है। अह़कामे ह़ज में किसी वाजिब के छूट जाने या बाज़ वाजिबात में

आगे-पीछे करने की वजह से जो क़ुर्बानी वाजिब होती है उसे 'दम जिनायत' कहा जाता है।

जो शख़्स ह़ज या उ़मरह का एह़राम बाँध कर रवाना हो गया, फिर किसी ने आगे बढ़ने से रोक दिया या किसी दुश्मन ने न जाने दिया या ऐसा सख़्त मरीज़ हो गया कि सफ़र के क़ाबिल न रहा उस को एह़सार कहा जाता है। अगर ऐसा वाक़िआ पेश आ जाए तो हुदूद ह़रम में सह़ी सालिम एक साल बकरा या बकरी ज़ब्ह़ कर के एह़राम से निकल जाए उसे 'दम एह़सार' कहते हैं। अगरचे मजबूरी की वजह से दम देकर एह़राम से निकल जाएगा, लेकिन ह़ज या उ़मरह की क़ज़ा फिर भी वाजिब रहेगी।

तफ़्सीली मसायल ख़ाकसार के ह़ज की किताब में देखे जा सकते हैं।

29 ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝

फिर अपने मैल कुचैल को दूर करें। दस तारीख़ की सुबह़ मुज़्दल्फ़ा से मिना आते हैं और उस रोज़ मिना में क़ुर्बानियाँ की जाती हैं। जिस शख़्स ने केवल 'ह़ज्जे इफ़्राद' किया हो, वह मुज़्दल्फ़ा से आकर पहले जमर-ए-उ़क़्बा की रमी करे, फिर ह़लक़ कराए यानी सर मुंडवाए और अगर ह़ज में क़ुर्बानी भी करनी हो (जो उस के लिए मुस्तह़ब) तो अफ़्ज़ल यह है कि रमी करने के बाद पहले क़ुर्बानी करे, फिर ह़लक़ कराए और जिस शख़्स ने 'तमत्तुअ़' या 'क़िरान' किया हो वह मिना में पहले 'जमरह उ़क़्बा' की रमि करे, फिर क़ुर्बानी करे, उस के बाद ह़लक़ करने के बाद नाख़ून वग़ैरह काटे। इसी को फ़रमाया कि फिर अपने मैल कुचैल को दूर कर लें, बालों को काटने से भी एह़राम से निकल जाता है, लेकिन ह़लक़ (मुंडाना) करना अफ़्ज़ल है और औ़रत के लिए कसर ही है क्योंकि उन को सर मुंडाना मना है।

ह़दीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़लक़ (मुँडाना) करवाने वालों के लिए तीन बार और क़सर करने वालों के लिए एक बार रह़मत की दुआ़ दी, पूरे सर का ह़लक़ या क़सर किया जाए। अगर सर न मुंडाए और सर यानी बाल कटाने को अख़्तियार करे तो उस में भी पूरे सर के बालों को काट दे और यह काट देना उस वक़्त मोअ़तबर होगा, जबकि बाल बड़े-बड़े हों और पूरे सर के या कम से कम चौथाई सर के बाल काटे जाएँ। अगर इतने बड़े बाल न हों जो एक उँगली की लम्बाई के बराबर कट सकें तो फिर ह़लक़ ही बेहतर होगा। ह़ज के एह़राम से निकलने वाले के लिए अफ़्ज़ल है कि 'मिना' में ह़लक़ या 'कसर' करे। अगरचे हुदूद ह़रम में किसी जगह भी ह़लक़ या कसर करना दुरुस्त है और यह भी समझ लेना चाहिए कि कुछ कसर मूंड देना और कुछ छोड़ देना मना है।

وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ (और अपनी नज़रों को पूरी करें) इस में नज़रें पूरी करने का हुक्म फ़रमाया है। जिस अ़िबादत की नज़र मान ली जाए उस का पूरा करना वाजिब हो जाता है। नमाज़ की, रोज़े की, ह़ज की, उ़मरह की, सद्क़ः करने की, क़ुर्बानी की, जो भी नज़र मान ले उसे पूरी करे।

सूरः هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ में अबरार यानी नेक बन्दों की जो तअ़रीफ़ फ़रमाई है उस में यह भी है कि

يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا

"वह नज़रों को पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिस दिन की सख़्ती आ़म होगी"।

जो लोग ह़ज को जाते हैं उन में से बाज़ का तो ह़ज वही होता है जो ह़ज की नज़र कर के वाजिब कर लिया था और कुछ लोग उ़मरा करने की नज़रें मान लेते हैं। कुछ लोग मिना में या मक्का में कुर्बानी करने की नज़र मानते हैं, इसलिए अह़कामे ह़ज में नज़र पूरी करने का भी हुक्म फ़रमा दिया।

وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ

(और बैत अ़तीक़ का तवाफ़ करें) "बैत अ़तीक़" कअ़बः शरीफ़ के नामों में से एक नाम है।

कअ़बः पर कोई ग़ालिब (प्रभावी) नहीं हो सकता-

'सुनन तिर्मिज़ी' में है कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का इर्शाद नक़्ल किया है कि अल्लाह तआ़ला ने कअ़बः शरीफ़ का नाम 'अ़तीक़' यानी 'आज़ाद' इसलिए रखा है कि उसे बड़े-बड़े सरकशों से मह़फ़ूज़ फ़रमाया है। कोई जाबिर और ज़ालिम उस पर ग़ालिब नहीं आ सकता। यह ह़दीस मरफ़ूअ़ है।

ह़ज के फ़रायज़-

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) और 'ह़ज़रत मुजाहिद' से भी ऐसा ही नक़्ल किया गया है। ह़ज में तीन फ़रायज़ हैं।

1- पहले ह़ज का एह़राम बाँधना।

2- दूसरे ह़ज का एह़राम बाँधकर ज़िल्ह़िज्ज की नवीं तारीख़ को ज़वाल के बाद से लेकर सुबह़ सादिक़ से पहले-पहले किसी भी तरह़ अ़रफ़ात में मौजूद होना, जिसे "उक़ूफ़ अ़रफ़ात" कहा जाता है।

3- तीसरे वक़ूफ़ अ़रफ़ात के बाद तवाफ़ करना। जिसे- 'तवाफ़ इफ़ाज़ा' जिसे 'तवाफ़ ज़ियारह' 'तवाफ़ रुक्न' और 'तवाफ़ फ़र्ज़' भी कहा जाता है।

मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि इस आयत में तवाफ़-ए-ज़ियारत अदा करने का हुक्म है क्योंकि मैल कुचैल दूर करने का हुक्म देने के बाद तवाफ़ करने का हुक्म दिया गया है। यह तवाफ़ तर्तीब मस्नून के मुताबिक़ दस्वीं ज़िल्ह़िज्ज को जमरह उक़्बा की रमी और फिर कुर्बानी फिर ह़लक़ के बाद करना चाहिए।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ऐसा ही किया था, लेकिन अगर कोई शख़्स मुज़्दल्फ़ा से सीधा मक्का चला जाए और पहले तवाफ़े ज़ियारत कर ले, फिर मिना में आकर रमी और ज़ब्ह़ और ह़लक़ करे तो यह भी जायज़ है यानी इस से कोई दम वाजिब नहीं होता, अगरचे अफ़्ज़लियत के ख़िलाफ़ है।

यह 'तवाफ़' दस ग्यारह बारह ज़िल्ह़िज्ज तीनों तारीख़ों में से किसी भी तारीख़ की रात में या दिन में अदा कर लिया जाए। अगर किसी ऐसी मजबूरी की बिना पर बारह तारीख़ का सूरज गुरूब होने के बाद किया जो मजबूरी शरअ़न मोअ़तबर हो तो दम वाजिब होगा, लेकिन अदा हो जाएगा।

'तवाफ़ ज़ियारत' छूटने या छोड़ने से उस का कोई भी बदल या दम देने से अदा नहीं हो सकता। हाँ, अगर कोई शख़्स उक़ूफ़ अ़रफ़ात के बाद मर गया और मरने से पहले उस ने वसीयत कर दी कि मेरा ह़ज पूरा कर दिया जाए तो तवाफ़-ए-ज़ियारत के बदले पूरा एक 'बुद्ना' यानी एक सह़ी सालिम ऊँट

या एक सह़ी सालिम गाय ज़ब्ह़ कर के मिस्कीनों को दे दें।

ह़ज में एक तवाफ़ मस्नून है और वह तवाफ़ 'कुदूम' है। जो मीक़ात के बाहर से आने वालों के लिए सुन्नत है और एक तवाफ़ वाजिब है वह तवाफ़ 'विदाअ़' है, जो तवाफ़ ज़ियारत करने के बाद मक्का से रवानगी के वक़्त किया जाता है। यह तवाफ़ उन लोगों पर वाजिब है जो ह़रम और ह़िल से बाहर रहते हैं। इन तवाफ़ों के अ़लावा जितने चाहें नफ़्ली तवाफ़ करें, अलबत्ता अगर किसी ने तवाफ़ की नज़र मान ली थी तो नज़र पूरा करना वाजिब हो जाएगा, हर तवाफ़ में सात ही चक्कर हैं, हर चक्कर ह़ज्रे अस्वद से शुरु करे और उसी पर ख़त्म करे।

Writer at a glance

Mufti Muhammad Sarwar Farooqui Nadwi (*Aacharya*)

Name : **Muhammad Sarwar Muhammad Sarwar Farooqui S/o. Mohd Haneef Farooqui S/o. Abdul Qayyum Farooqui S/o. Mahmood Ali Farooqui S/o. Ramzan Ali Farooqui S/o. Imam Baksh Farooqui S/o. Khairat Ali Farooqui S/o. Nisar Ahmad S/o. Muhammad Ali S/o. Athar Ali S/o. Abdul Hafeez S/o. Jalaluddin S/o. Mohd Suleman S/o. Allauddin S/o. Mohd Ishaq S/o. Nabiullah S/o. Khwaja Bakarullah S/o. Abdullah Yamni S/o. Abdul Aziz Yamni S/o. Salim S/o. Abdullah S/o. Sayyedna Umar Farooque Raziallahu Anhu.**

Educational Background.

Basic : Intermediate,

Higher Education : **M.A.**

Arabic : **Almiat, Fazeelat & Iftah,**
(Darul-Uloom- Nadwatul Ulama Lucknow (U.P.) India.

Islamic Tadreebi Course : **Jamia Islamiya**
Madina Munawarah (Saudi Arabia).

Urdu : **Adeeb Kamil & Mua'llim**

Sanskrit : **Shastri, Acharya**

Computer skill : **P.G.D.C.A**

Major Research : Qur'an and Fiqah,
Darul-Uloom Nadwatul-Ulama, Lucknow, U.P. (India)

Present Posts

President : ***Jamiat Payam-e-Amn,*** (Educational Society)
lucknow, U.P. (India)

Rafiq Ilmi : ***Majlis Tahqeeqat (Islamic Research) Darul Uloom Nadwatul Ulama,*** **Lucknow,** U.P. (India)

Director : ***Markaz- ul-Tawheed Al-Islami*** lucknow, U.P. (India)

Managing Director : **Jamia Dar-e-Arqam,** Fatehpur, Haswa, U.P. (India)

Manager : **Jamia Dar-e-Arqam**
(Educational Society) Allahabad (India)

Chairman : **Arqum Model School,** Lucknow, U.P. (India) .

General Secretary : ***All India, Jamiat Darul-Aml***
lucknow, U.P. (India)

Manager : ***Universal Peace Foundation***
lucknow, U.P. (India)

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी साहब नदवी द्वारा लिखित अहम हिन्दी पुस्तकें

नाम	मूल्य
1. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़ 20x30/8)	**300** रू.
2. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़ 20x30/16)	**110** रू.
3. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद) (साइज़-20x30/32)	**100** रू.
4. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	**180** रू.
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-1} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर)	**400** रू.
6. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-2} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर)	**400** रू.
7. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-3} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर)	**400** रू.
8. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-4} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर)	**400** रू.
9. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-5} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर)	**400** रू.
तफ़्सीर फ़ारूक़ी (मुकम्मल सेट) (भाग 1 से 7 तक)	**3000** रू.
10. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	**250** रू.
11. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	**180** रू.
12. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन	**80** रू.
13. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन **(Hard bound)**	**150** रू.
14. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन **(Paper back)**	**120** रू.
15. जन्नत के हालात और जन्नती (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**100** रू.
16. कुफ़्र और शिर्क की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**90** रू.
17. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	**80** रू.
18. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी	**200** रू.
19. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार (क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)	**200** रू.
20. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अज़्माले हस्ना की रौशनी में)	**50** रू.
21. सहाबा का इस्लाम और उसके बाद	**60** रू.
22. इस्लामी शासन और शासक ऐतिहासिक दृष्टि से	**100** रू.
23. अज़ान क्या है?	**30** रू.
24. आओ नमाज़ की ओर	**40** रू.
25. रोज़ः का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**40** रू.
26. हज और उमरा का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**30** रू.
27. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**40** रू.
28. उमरह का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**25** रू.
29. आपके सवालों का आसान हल (भाग एक)	**70** रू.
30. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे (शरीअ़त की रोशनी में)	**40** रू.
31. इस्लाम की बुनियादी मालूमात (सवाल व जवाब की रोशनी में)	**50** रू.
32. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (सवाल व जवाब की रोशनी में)	**40** रू.
33. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाकीज़ह ज़िन्दगी	**40** रू.

नाम	मूल्य
34. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ (शरीअ़त की रोशनी में)	**40** रू.
35. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन	**160** रू.
36. सूर-ए- फ़ातिह़ा की तफ़्सीर	**30** रू.
37. तौह़ीद की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	**40** रू.
38. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम	**30** रू.
39. इस्लाम धर्म तलूवार से फैला या सदाचार से	**60** रू.
40. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिह़ासिक दृष्टि से)	**60** रू.
41. ग़ैर मुस्लिमों से सम्बन्ध और धार्मिक आज़ादी	**60** रू.
42. इस्लामी विरासत की तक़्सीम एक नज़र में	**20** रू.
43. मीरास की तक़्सीम	**30** रू.
44. लाइलाह इल्लल्लाहु की गवाही	**40** रू.
45. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)	**20** रू.
46. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में	**20** रू.
47. सृष्टि का सृष्टा कौन?	**30** रू.
48. प्राकृतिक नियम, ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास	**40** रू.
49. इस्लाम?	**10** रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी द्वारा लिखित उर्दू पुस्तकें

50. मआ़नी क़ुर्आनुल् करीम (लफ़्ज़ी तर्तीब के एतिबार से रवाँ उर्दू तर्जुमः)	**500** रू.
51. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	**140** रू.
52. ग़ैर मुस्लिमों से तआ़ल्लुक़ात और मज़ह़बी आज़ादी	**40** रू.
53. इस्लाम में ज़िज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	**40** रू.
54. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	**40** रू.
55. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद	**40** रू.
56. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अह़मियत	**40** रू.
57. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम	**40** रू.
58. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल	**40** रू.
59. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तआ़ल्लुक़	**40** रू.
60 ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)	**50** रू.
61. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर	**50** रू.
62. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के ह़ुक़ूक़	**50** रू.
63. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रूफ़	**90** रू.
64. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में।	**40** रू.
65. बौद्ध धर्म और इस्लाम	**40** रू.

नाम	मूल्य
66. कलिमा-ए-तय्यबः की ह़क़ीक़त और उस के तक़ाज़े	**80** रू.
67. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	**70** रू.
68. अल्लाह तआ़ला का तआ़रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल	**70** रू.
69. क़ियामत तक के फ़ित्नें (रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई की रोशनी में)	**70** रू.
70. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**40** रू.
71. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	**50** रू.
72. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	**70** रू.
73. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**40** रू.
74. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद क़ुतुबे सीरत की रोश्नी में)	**40** रू.
75. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में)	**30** रू.
76. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	**100** रू.
77. जन्नत के ह़ालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र	**80** रू.
78. कुफ़्र व शिर्क की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	**80** रू.
79. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सह़ाबा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा	**80** रू.
80. क़ुर्आन के मुताबिक़ दअ़वत और इस्लामी जिहाद (क़ुर्आन व ह़दीस की रोश्नी में)	**60** रू.
81. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त	**60** रू.
82. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	**40** रू.
83. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा	**40** रू.
84. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल	**40** रू.
85. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअ़त की रोशनी में)	**40** रू.
86. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
87. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त	**40** रू.
88. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	**50** रू.
89. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़	**30** रू.
90. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़रुफ़	**30** रू.
91. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**120** रू.
92. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा	**30** रू.
93. इस्लाम का ज़रई निज़ाम	**40** रू.
94. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत	**40** रू.
95. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद	**80** रू.
96. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	**50** रू.
97. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)	**60** रू.
98. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें	**30** रू.
99. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात (अह़ादीस की रौशनी में)	**30** रू.
100. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
101. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ	**20** रू.

नाम	मूल्य
102. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर	**50** रू.
103. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा	**30** रू.
104. आ़माल सालिह़ा (भाग-1)	**100** रू.
105. आ़माल सालिह़ा (भाग-2)	**100** रू.
106. अल्लाह तआ़ला का तआ़रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल	**100** रू.
107. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की करीमाना अख़्लाक़ और आप (सल्ल०) की सीरत	**100** रू.
108. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**50** रू.
109. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**50** रू.
110. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**50** रू.
111. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**90** रू.
112. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**150** रू.
113. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
114. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**100** रू.
115. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
116. इ़ल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
117. तहारत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
118. ह़िफ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
119. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
120. ई़दैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50** रू.
121. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50** रू.
122. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
123. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
124. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
125. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
126. ह़िबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
127. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
128. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
129. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
130. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
131. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
132. तर्बियत, रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
133. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
134. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
135. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
136. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
137. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.

नाम	मूल्य
138. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
139. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
140. मुह़र्रम की ह़क़ीक़त और आ़शूरा के वाक़िआ़त	**25** रू.
141. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब	**50** रू.
142. ग़ैर अ़रबी रस्मुल्ख़त (फ़ॉन्ट) में क़ुर्आन की इशाअ़त	**12** रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी की अ़रबी पुस्तकें

143. मन्ज़तुल मराह फ़ी ज़ौइल इस्लाम वल्अद्यान वल्हज़ारात अल्मुख़्तलह	**60** रू.
144. अल् इन्सान फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह	**40** रू.
145. ग़ज़्व-ए-हुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् क़ुर्आन वल् सुन्नह	**120** रू.
146. अस्बाब तह़बतुल् अ़माल वल् ह़मियतुल् निया फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह	**120** रू.
147. अल् फ़ितन अल् वाक़िअ़: इला क़ियामः अल् साअ़ह फ़ी ज़ौइल अह़ादीस अल् शरीफ़ा	**100** रू.
148. अल् नबी अल् ख़ातिम मन, मता, वआईन फ़ी ज़ौइल क़ुतुब अल् हिन्दूसिया वसी वल् दियानात	**150** रू.
149. अल्हिन्दूसिया मुबादिओह़ा व अक़ाइदोह़ा, मुनज़्ज़िमातुह़ा व अहदाफ़ुह़ा	**140** रू.
150. अहमयतुल् दअ़वह वल् तब्लीग़ फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह	**100** रू.
151. ज़िक्र मुह़म्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद	**80** रू.
152. नब्ज़ह अ़न सिफ़ातु रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम	**80** रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी की अंग्रेज़ी पुस्तकें

153. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण	**40** रू.
154. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप	**30** रू.
155. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम	**80** रू.
156. दी स्वॉड आफ़ इस्लाम	**40** रू.
157. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यिूमेनिटी	**40** रू.
158. इस्लाम?	**10** रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी की अनुवाद की हुई पुस्तकें

159. मुन्तख़ब अह़ादीस (लेखक- ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०)	**60** रू.
160. क़ादियानियत नुबूवते मुह़म्मदी के ख़िलाफ बग़ावत (लेखक- इमामे ह़रम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल)	**40** रू.
161. दारे अरक़म का एह़सान इन्सानी दुनिया पर (लेखक-ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह़०)	**30** रू.
162. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है (लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)	**30** रू.
163. रमज़ान का तोह़फ़ा (लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)	**20** रू.
164. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार (लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)	**20** रू.
165. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन? (विचारक- मुह़म्मद मुस्तफ़ा क़ादरी) (तस्ह़ीह़ व तर्तीब- मु० मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी)	**30** रू.
166. यतीमों की किफ़ालत (लेखक-मुह़म्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)	**30** रू.

नाम	भाषा	मूल्य

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित दीगर पुस्तकें

167. दो मआ़शरती मसॉयल	उर्दू	**80** रू.
168. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द शशुम)	हिन्दी	**500** रू.
169. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द हफ़्तुम)	// //	**500** रू.
170. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द हश्तुम)	// //	**500** रू.
171. तारीखुल् इस्लाम	उर्दू	**500** रू.
172. क़ससुल् अम्बिया	// //	**500** रू.
173. मजमुआ़ अह़ादीस (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**200** रू.
174. दुआ़ के आदाब (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**20** रू.
175. इस्लाम के अ़दालती फ़ैसले (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
176. सीरत सह़ाबा	// //	**200** रू.
177. क़ुर्बानी से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**500** रू.
178. तह़ारत से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
179. इल्म से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
180. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
181. ई़दैन व जुमअ़ः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
182. मदारिस से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**30** रू.
183. हिबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**30** रू.
184. सूद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**30** रू.
185. सफ़र और सद्क़ः फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**30** रू.
186. तलाक़ व इ़द्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
187. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
188. निकाह़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
189. ज़कात से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
190. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
191. इमामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
192. क़िराअत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
193. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
194. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
195. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50** रू.
196. तर्बियत, रज़ाअत व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
197. अ़लामात क़ियामत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**80** रू.
198. सज्दः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
199. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.
200. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40** रू.

नाम	भाषा	मूल्य
201. इ़ल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	उर्दू	**40 रू.**
202. तक़्लीद व इज्तिहादी की शरई़ हैसियत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
203. सज्दः सहू से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
204. बिद्अ़त की नहूसत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
205. किरायेदारी से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
206. कारोबार में शिर्कत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
207. मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
208. सुन्नत व नवाफ़िल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
209. इस्लाह़ मुआ़शरह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
210. औ़रतों के मख़्सूस मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
211. इन्सानी अ़ज़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
212. मय्यत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
213. रमज़ान,रोज़ः और तरावीह़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**60 रू.**
214. एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**30 रू.**
215. ज़मीन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
216. रवय्यतुल हिलाल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**30 रू.**

अन्तिम सन्देष्टा

"वेद, पुराण, उपनिषद, बौद्ध, तौरेत, इन्जील, पारसी, अ़रब कवि, भारतीय कवि, विशेष रूप से तुलसीदास जी, कबीरदास जी की वाणियों सहित गुरू नानक जी की वाणियां तथा इतिहासकारों, वैज्ञानिकों और पवित्र कुर्आन की दृष्टि में, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०)।"

इस्लाम धर्म

क्या है

?

इसमें भाग एक से नौ तक इस्लाम, काफ़िर का मतलब, इस्लामी अ़क़ीदे, शिर्क, कुफ़्र, निफ़ाक़, इरतिदाद, जादू, टोना, झाड़ फूँक, बिद्अ़त, रिसालत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, नजासत का तफ़्सील और नमाज़ का मुकम्मल सुन्नत तरीक़ा बताने के बाद रोज़ः, ज़कात और ह़ज का तफ़्सील से ज़िक्र है, जो एक तरह़ से इस्लामी इन्साक्लोपीडिया है।

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी

मकतबः पयामे अम्न,
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ, (यू०पी०)

इस्लाम धर्म

तलवार से फैला या सदाचार से

?

प्रस्तुत पुस्तक में इस्लाम की परिभाषा, काफ़िर का अर्थ, इस्लाम पर लगाये गये आरोप, क़ुर्आन के अनुसार इस्लाम के प्रचार का तरीक़ा, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के समय में इस्लाम के फैलने का माध्यम, अ़रब में इस्लाम के फैलने का कारण, यमन में, नजरान में, बहरैन में, उमान में और हिन्दुस्तान में फैलने के माध्यमों का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के युद्ध के पूर्व की दशा का वर्णन करने के बाद विश्व प्रसिद्ध विद्वानों के विचारों को स्पष्ट किया गया है।

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी (आचार्य)

प्रकाशक
जमीअ़त पयामे अम्न, टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ-२०

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का हुलिया मुबारक

और

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुन्नतें

इसमें हुज़ूर (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) के खाने, पीने, सोने, जागने कपड़ा पहनने, कंघा करने, तेल लगाने, नाख़ून काटने, इस्तिंजा करने, जूता पहनने, अंगूठी पहनने, मस्जिद और घर में दाख़िल होने, बाज़ार जाने, गुफ़्तगू करने, वुज़ू, गुस्ल, अज़ान, नमाज़, दुआ, रमज़ान, ईदैन, सफ़र, सलाम, निकाह, मय्यित और उससे मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतों से लेकर आप (सल्ल०) के अख़लाक़ व आ़दात का तफ़्सील से ज़िक्र है।

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी

प्रकाशक-

मकतबः पयामे अम्न

नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ,२० (यू०पी०) इण्डिया

महत्वपूर्ण लेख